

प्रधान संपादक - उपाध्याय श्री कन्हैयालालजी म. स्ना. 'कमल'
संपादक - उपप्रवर्तक श्री विनयमुनिजी म. स्ना. 'वागीश'
सहसंपादिका - आगम विशारदा महासती डॉ. श्री मंजुश्री जी



श्री मिश्रीमलजी म. सा. 'मधुकर'

एव

उपाध्याय

श्री कन्हैयालालजी म. सा. 'कमल'

की पुण्य स्मृति में प्रकाशित

प्रधान संपादक
उपाध्याय प्रवर पं. रत्न मुनि
श्री कन्हैयालालजी म. सा. 'कमल'

प्रधान संपादक

उपाध्याय प्रवर पं. रत्न मूनि

श्री कन्हैयालालजी म. सा. 'कमल'

संपादक

उपप्रवर्तक श्री विनयमुनिजी म.सा. 'वागीश'

सहसंपादिका

आगम विशारदा महासती डॉ. श्री मंजुश्री जी

प्रकाशक

श्री अ.भा. श्वेताम्बर स्थानकवासी

जैन कान्फ्रेंस, नई दिल्ली

आगम अनुयोग दृष्ट

અહમદાબાદ

[illegible]

❁ जैनागम निर्देशिका पर विद्वानों के अभिमत ❁

जैनागम निर्देशिका— यह पैंतालीस जैनागमों की विशद विषय सूची अत्यंत उपादेय ग्रन्थ है। इस प्रकार के ग्रन्थ की चिरकाल से अपेक्षा की जा रही थी और इसके लिए दो-चार लेखकों ने छुट-पुट प्रयत्न भी किये परन्तु मुनि श्री कन्हैयालालजी म. सा. 'कमल' का प्रयास सर्वोपरि रहा।

इसमें विषय- निर्देशन भी काफी बौद्धिक सूक्ष्मता एवं आधुनिक वैज्ञानिक पद्धति से किया है। कमलजी म. ने श्वेतांबर परंपरा में मान्य 45 आगम लेकर बहुत ही उदार विचारधारा अपनाई है। संशोधक विद्वान तो इस ग्रन्थ के माध्यम से अल्प प्रयास से ही आगमों का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। तत्काल किसी विषय की यदि जानकारी प्राप्त करना हो तो आगम सागर में डुबकी लगाए बिना व समय और श्रम का विपुल उपयोग किये बिना कुछ भी शक्य नहीं था परन्तु प्रस्तुत ग्रन्थ ने इस कठिनाई का सरलतम समाधान किया है। ऐसे ग्रन्थ संपादन के लिए मुनि श्री विशेष रूप से धन्यवाद के पात्र हैं।

—उपाध्याय अमरमुनि, आगरा

सम्पूर्ण जैन साहित्य के मूल उद्गम उसके आगम हैं। आगम शब्द का सामान्य अर्थ शास्त्र है। जैनागम मुख्यतः संवाद एवं इतिहास शैली में लिखे गये हैं और उनमें भगवान महावीर के व्यक्तित्व चर्चाओं और उपदेशों के अलावा भारतीय सामाजिक जीवन की भी पूरी झलक मिलती है अतः आगमों का ऐतिहासिक और साहित्यिक दृष्टि से अत्यंत महत्व है।

आगमों के अध्ययन का मार्ग सुलभ नहीं था और न सर्वसाधारण रुचि ले पाता था व पढ़ना बहुत कठिन महसूस करता था अतः आगमों के प्रति रुचि जागृत हो इस हेतु मुनि श्री कन्हैयालालजी म. सा. 'कमल' ने भगीरथ प्रयास किया है और यह प्रस्तुत 'जैनागम निर्देशिका' के रूप में उन्होंने पैंतालीस जैनागमों की विषय निर्देशिका प्रस्तुत की है और इस प्रकार इसमें आगमों के निर्दिष्ट विषयों की झांकी देकर उन्होंने लोगों के अन्दर भी आगम साहित्य के प्रति उत्सुकता जागृत करने का प्रयत्न किया है। जिनकी आगम पढ़ने की रुचि नहीं है उनके लिए श्री कमलमुनिजी द्वारा प्रस्तुत यह निर्देशिका अत्यंत उपयोगी सिद्ध होगी व आगम पढ़ने की प्रेरणा मिलेगी ऐसा मेरा मतव्य है।

—डॉ. भरतसिंह उपाध्याय, बनारस

॥ णमो सिद्धाणं ॥

जैनागम-निर्देशिका

(पैतालीस जैनागमों का विषय-निर्देशन)

प्रधान संपादक

उपाध्याय प्रवर अनुयोग प्रवर्तक पं. रत्न

मुनि श्री कन्हैयालालजी म. सा. 'कमल'

संपादक

कमल कुल दिवाकर

उपप्रवर्तक श्री विनयमुनिजी म. सा. 'वागीश'

सहसंपादिका

आगम विशारदा महासतीजी डॉ. श्री मंजुश्रीजी म. सा.

मुख्य सहयोगी

श्री मोहनलालजी अजितकुमारजी पदमचंदजी

हंसराजजी भुरट परिवार कुचेरा-बैंगलोर

प्रकाशक

श्री अ. भा. श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कान्फ्रेंस, नई दिल्ली

आगम अनुयोग ट्रस्ट, अहमदाबाद



स्व. युवाचार्य श्री मिश्रीमलजी म. सा. 'मधुकर'

एवं

उपाध्याय श्री कन्हैयालालजी म. सा. 'कमल'

की पुण्य स्मृति में प्रकाशित



जैनागम निर्देशिका



प्रेरक

उपप्रवर्तक श्री गौतममुनिजी म. सा. 'गुणाकर'

तपोकेसरी श्री संजयमुनिजी म. सा. 'सरल'

तत्त्वचिंतक श्री सागरमुनिजी म. सा. 'शुभम्'

डॉ. श्री अभितरायजी जैन, बड़ौत

प्रथमावृत्ति- सन् 1966

द्वितीयावृत्ति- सन् 2022

प्राप्ति स्थल

आगम अनुयोग ट्रस्ट

28,29 स्थानकवासी सोसायटी नाराणपुरा रेल्वे क्रोसिंग के पास
नाराणपुरा, अहमदाबाद-13 (गुज.) फोन नं. : 079 27551426

श्री वर्धमान महावीर केन्द्र

सब्जी मण्डी के पास, देलवाड़ा रोड, आबूपर्वत-307501
जि. सिरोही (राज.) फोन नं. 02974 235566, 6378921378
राजेन्द्र मेहता मो. 9414227512

श्री अ. भा. श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस

12 जैन भवन, शहीद भगतसिंह मार्ग, नई दिल्ली
फोन : 23363729, 23365420

अनुयोग आदि के लिए सम्पर्क करें- महावीर 'मधुरम्' मो. 7976339010

मूल्य- 250/- दो सौ पच्चास रुपये

मुद्रक

स्वदेशी ऑफसेट, श्रीनाथ मार्ग, उदयपुर-313001 (राज.)

समर्पण



युवाचार्य श्री मधुकर मुनिवर, उपाध्याय गुरुराज 'कमल'।
जिनशासन के सच्चे प्रहरी, जय हो जय हो गुरु युगल॥

इन दोनों महापुरुषों का जन्म एक ही वर्ष वि. सं. 1970 में
विशिष्ट अध्ययन आगम आदि का साथ-साथ में
आगम मंथन दोनों द्वारा

युवाचार्य श्रीजी ने आगम संपादन व
उपाध्याय श्रीजी ने अनुयोग संपादन का विशिष्ट कार्य
कर ज्ञान पिपासुओं के लिए महत्वपूर्ण कार्य किया
उन दोनों महापुरुषों की मेरे ऊपर विशेष कृपा दृष्टि रही अतः

उन दोनों महापुरुषों को
जैनागम निर्देशिका

द्वितीय संस्करण

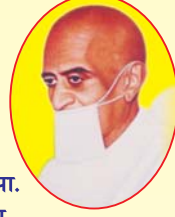
सादर समर्पित करता हूँ।



उपप्रवर्तक
विनयमुनि 'वागीश'

युवाचार्य श्री भिश्रीमलजी म.सा. 'मधुकर' जीवन परिचय

जन्म तिथि	: मागशीर्ष सुदी 14, वि. सं. 1970
जन्म स्थान	: तिंवरी नगर, जिला- जोधपुर (राज.)
माता-पिता	: श्रीमती तुलसीदेवी श्री जमनालालजी धाड़ीवाल
दीक्षा तिथि	: वैशाख सुदी 10, वि. सं. 1980
दीक्षा स्थान	: भिणाय ग्राम, जिला- अजमेर (राज.)
दीक्षा गुरु	: आचार्य श्री जयमलजी म. सा. की परंपरा के श्री जोरावरमलजी म. सा.
गुरु भ्राता	: परम पूज्य श्री हजारीमलजी म. सा., स्वामीजी श्री ब्रजलालजी म. सा.
उपाध्याय पद	: नागौर (राज.) वर्षावास, वि. सं. 2033
युवाचार्य पद	: श्रावण सुदी 1, वि. सं. 2036, दि. 25.7.1979 सिक्रन्द्राबाद (आ. प्र.)
स्वर्गवास	: मार्गशीर्ष वदी 7, वि. सं. 2040, दि. 26.11.1983 नासिक (महा.)
शिष्य	: उपप्रवर्तक श्री विनयमुनिजी म. सा. ' भीम '
पौत्र शिष्य	: श्री सन्मतिमुनिजी म. सा. 'साहिल'
विशेषता	: गौरवपूर्ण भव्य तेजस्वी ललाट, चमकदार बड़ी आंखें, मुख पर स्मित की खिलती आभा और स्नेह तथा सौजन्यवर्षाति कोमल वाणी, आध्यात्मिक तेज का निखार, गुरुजनों के प्रति अगाध श्रद्धा, विद्या के साथ विनय, अधिकार के साथ विवेक और अनुशासति श्रमण व गंभीर प्रकृति के धनी थे। प्राकृत, संस्कृत, व्याकरण, जैन आगम, न्याय दर्शन आदि के ज्ञाता थे। आप उच्च कोटि के प्रवचनकार, उपन्यासकार, कथाकार एवं व्याख्याकार थे।
विशेष	: आगम बत्तीसी के संयोजक व प्रधान सम्पादक थे।



उपाध्याय प्रवर श्री कन्हैयालालजी म.सा. 'कमल' का जीवन परिचय

जन्म भूमि	: जसनगर (केकीन्द), जि. नागौर (राज.)
माता-पिता	: श्रीमति यमुनादेवी, श्री गोविंदसिंहजी राजपुरोहित
जन्म तिथि	: चैत्र सुदी 9, वि. सं. 1970 (रामनवमी)
शिक्षा	: हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, ज्योतिष शास्त्र, आगम, व्याख्या साहित्य आदि का गहन अध्ययन
दीक्षा तिथि	: वैशाख सुदी 6, वि. सं. 1988
दीक्षा भूमि	: साण्डेराव, जि. पाली (राज.)
दीक्षा दाता गुरु	: महान् प्रभावशाली स्वामीजी श्री छगनलालजी म. सा.
पूर्वाचार्य परंपरा	: महान् क्रियोद्धारक आचार्य श्री जीवराजजी म. सा. के शिष्य आचार्य श्री स्वामीदासजी म. सा.
दीक्षा गुरु	: पूज्य श्री प्रतापमलजी म. सा., पूज्य श्री फतेहचंदजी म. सा.
विहार क्षेत्र	: राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, आन्ध्र प्रदेश, कर्नाटक, दिल्ली
उपाध्याय पद	: पौष सुदी 14, वि. सं. 2050 जयपुर, आचार्य श्री देवेन्द्रमुनिजी म. सा. द्वारा
शिष्य	: 1. उपप्रवर्तक श्री विनयमुनिजी म. सा. 'वागीश', 2. तपोकेसरी श्री संजयमुनिजी म. सा. 'सरल'
शिष्य सम	: उपप्रवर्तक श्री गौतममुनिजी म. सा. 'गुणाकर'
पौत्र शिष्य	: 1. साधकरत्न श्री फूलचंदजी म. सा. 'आत्मारथी', 2. श्री सागरमुनिजी म. सा. 'शुभम्'
पुण्य तिथि	: पौष वदी 8, वि. सं. 2057, 18 दिसम्बर 2000
पुण्य स्थली	: कमल कन्हैया विहार, आबूपर्वत (राज.)
विशेषता	: आपकी प्रवचन शैली बहुत ही अद्भुत थी। आपने 18 वर्ष तक अन्न जल नहीं लिया। सिर्फ गौदुग्ध व फलाहार पर रहे। जैन आगम अनुयोग का ऐतिहासिक विशेष कार्य किया।





जय सीमन्धर

श्रमण संघ जयवंत हो

जय महावीर

॥ जय आत्म ॥ ॥ जय आनन्द ॥ ॥ जय देवेन्द्र ॥ ॥ जय ज्ञान ॥ ॥ जय शिव ॥



आचार्य शिवमुनि

मंगल संदेश

अनुयोग प्रवर्तक उपाध्याय श्री कन्हैयालाल जी म.सा. 'कमल' की "जैनागम निर्देशिका" यह कृति अद्भुत है, उन्होंने 60 वर्ष पूर्व दिल्ली में रहकर अत्यंत परिश्रम कर यह ग्रन्थ प्रकाशित कराया। वे बहुत ही परिश्रमी थे, धुन के पक्के थे। मुझे भी उस महापुरुष के दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त हुआ, उनके आशीर्वाद से ही मैं आवूपर्वत की गुफा में 45 दिन तक साधनारत रहा, अपार शांति प्राप्त हुई।

उनका जैनागम निर्देशिका का प्रयास प्रशंसनीय रहा है। इससे आगमों की सूक्ष्म दृष्टि से जानकारी प्राप्त होती है। आगम पढ़ने की रुचि जागृत होती है। अध्येता सहज में अपना अभिष्ट विषय प्राप्त कर सकते हैं। बहुत समय से वह कृति अनुपलब्ध थी। अतः पुनः प्रकाशन हेतु उनके शिष्य उपप्रवर्तक श्री विनयमुनिजी म.सा. 'वागीश' ने पुरुषार्थ किया। पूर्व में ग्रन्थ में सूत्रांक जिन प्रतियों के दिये थे वे प्रतियां अभी अनुपलब्ध होने से ढूँढने में कठिनाई रहती थी अतः मुनि श्री ने 45 ही आगमों का दोहन किया व युवाचार्य प्रवर श्री मधुकर मुनि जी म.सा. की बत्तीसी को प्रधानता देकर उसके सूत्रांक दिये व 13 आगम में मूर्तिपूजक के उपलब्ध आगमों के सूत्रांक देकर विषय प्राप्त करने का बहुत सरल कार्य कर दिया।

इस कार्य को सम्पन्न कराने में उपप्रवर्तक श्री विनय मुनि जी म.सा. 'वागीश', उपप्रवर्तक श्री गौतम मुनि जी म.सा. 'गुणाकर', उपप्रवर्तिनी महासाध्वी डॉ. मंजूश्री जी म.सा. एवं महावीर 'मधुरम्' आदि जिन्होंने भी अत्यंत श्रम किया है वे साधुवाद के पात्र हैं।

जैन कॉन्फ्रेंस की 'श्रुत संवर्धन समिति' एवं आगम अनुयोग ट्रस्ट दोनों संयुक्त रूप से इस कार्य को कर रहे हैं जो अनुकरणीय है। श्रुत संवर्धन समिति द्वारा साहित्य प्रकाशित होने से यह ग्रन्थ सुलभता से सबको प्राप्त होगा।

इस निर्देशिका द्वारा आगम स्वाध्याय से व मुमुक्षुओं की यात्रा आध्यात्म की ओर बढ़े। सभी आध्यात्म के गुढ रहस्य भेद-विज्ञान, आत्म-ध्यान, कायोत्सर्ग तक पहुँचकर मिथ्यात्व मोह को त्यागकर, वैराग्य व वीतरागता को प्राप्त करें।

सहमंगल मैत्री,

दिनांक - 18.08.2022

स्थान - बलेश्वर, सूरत, गुजरात

शिवमुनि
(आचार्य शिवमुनि)

www.jainacharya.org
shivacharyaji@yahoo.co.in

09350111542

<http://www.facebook.com/shivmuni>
<http://www.twitter.com/jainacharya>
<http://acharyashivmuni.blogspot.in/>
<http://www.youtube.com/jainacharyaji>

JAINACHARYA

प्रकाशकीय

जैनागम निर्देशिका ग्रन्थ से ही पूज्य गुरुदेव श्री कन्हैयालालजी म. सा. 'कमल' का अनुयोग का कार्य प्रारंभ हुआ। सन् 1966 में इसका प्रकाशन समाज के कर्मठ कार्यकर्ता लाला बनारसीदासजी ओसवाल के नेतृत्व में हुआ व द्वितीय संस्करण में भी सहभागी बनने का सौभाग्य अ. भा. श्वे. स्था. जैन कॉन्फ्रेंस नई दिल्ली को प्राप्त हुआ है।

उस समय चरणानुयोग सानुवाद भी छप रहा था जो फाईलें चोरी होने से अधुरा ही रहा। समवायांग सूत्र, स्थानांग सूत्र व छेद सूत्र भी सानुवाद छपे।

गणितानुयोग सानुवाद का प्रकाशन 1971 में आगम अनुयोग प्रकाशन, साण्डेराव से हुआ। फिर धर्मकथानुयोग छपा। आगम अनुयोग ट्रस्ट की स्थापना हुई। जिसमें श्री बलदेवभाई डोसाभाई पटेल, श्री नवनीतभाई सी. पटेल, श्री हिममतलाल शामलदास, श्री विजयराजजी बोहरा, श्री अजयराजजी मेहता, श्री जयंतिभाई सिंघवी ने अमूल्य सेवाएं दीं। सर्वप्रथम धर्मकथानुयोग के दो भाग छपे। फिर गणितानुयोग संशोधन होकर पुनः छपा व चरणानुयोग दो भागों में तत्पश्चात् द्रव्यानुयोग तीन भागों में छपे। पूज्य गुरुदेव का जो लक्ष्य था वह पूर्ण हुआ उन्हें संतोष हुआ और वे देवलोक हो गये।

तत्पश्चात् गुजराती संस्करण के 10 भाग व धर्मकथानुयोग व गणितानुयोग के दो-दो भाग संशोधन होकर पुनः प्रकाशित हुए। आगम के 14 गुटके भी प्रकाशित हुए। इतना भगीरथ विशाल कार्य करवाने में साण्डेराव संघ के गुरुभक्तों का योगदान रहा जिसका उल्लेख पूज्य गुरुदेव ने संपादकीय में स्वयं ने किया है व आगम अनुयोग ट्रस्ट को प्रकाशन करने का अवसर मिला।

जैनागम निर्देशिका अप्राप्य हो गई थी और ज्ञान पिपासुओं की मांग बनी रहती थी अतः पुनः प्रकाशन हेतु उपाध्याय श्रीजी के शिष्य पूज्य गुरुदेव श्री विनयमुनिजी म. सा. 'वागीश' ने पुरुषार्थ किया व अत्यंत परिश्रम करके यह ग्रन्थ तैयार किया।

इसमें सर्व प्रथम बत्तीस आगमों के सूत्रांक युवाचार्य श्री मधुकरमुनिजी म. सा. की बत्तीसी के दिये हैं जिससे पाठक को ढूंढने में आसानी रहे।

यह ग्रन्थ युवाचार्य श्रीजी एवं उपाध्याय श्रीजी दोनों की स्मृति में निकल रहा है क्योंकि दोनों में घनिष्ठ प्रेम था व दोनों ने ही आगमों का महत्वपूर्ण कार्य किया।

यह ग्रन्थ जिनके पास युवाचार्य श्रीजी की बत्तीसी हो उनके लिए तो अत्यंत उपयोगी है, उस सेट के साथ रख सकें इस हेतु ही उसी साईज में यह प्रकाशित किया जा रहा है।

हमारी भावना थी कि इसके प्रकाशन में 'आगम प्रकाशन समिति, ब्यावर' भी जुड़े व जितने सदस्यों के पास बत्तीसी पहुंची है उनको भी यह ग्रन्थ भेजा जाए जिससे आगम पढ़ने की और रुचि बढ़े परन्तु समिति के कार्यकर्ताओं ने उदासीनता रखी। यदि उनका सहयोग मिलता तो इसका बहुत उपयोग बढ़ता।

आगमज्ञाता डॉ. श्री मंजुश्रीजी म. सा. ने फाईनल कॉपी का अवलोकन किया, संशोधन किया, अपना अमूल्य समय निकाला अतः हम उनके कृतज्ञ हैं।

इस ग्रन्थ का संशोधन आदि उपप्रवर्तक श्रीजी के समीप ही रहकर महावीरजी 'मधुरम्' ने अत्यंत परिश्रम करके किया यह कार्य उन्होंने प्रथम बार किया अतः धन्यवाद के पात्र हैं।

इसके प्रकाशन के मुख्य सहयोगी कुचेरा निवासी श्री मोहनलालजी भुरट, बैंगलोर अतः उनके व अन्य सभी सहयोगी बंधुओं के आभारी हैं कि जिनके आर्थिक सहयोग से हम यह कार्य सम्पन्न कर सके।

स्वदेशी ऑफसेट, उदयपुर के मालिक अक्रमजी चौधरी के भी आभारी हैं कि जिन्होंने शुद्ध व सुन्दर मुद्रण किया।

आनंदमल छल्लाणी

अध्यक्ष

अ. भा. श्वे. स्था. जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली

जयंतिभाई सी. पटेल

प्रमुख

आगम अनुयोग ट्रस्ट, अहमदाबाद

संपादकीय

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री कन्हैयालालजी म. सा. 'कमल' के मन में आगमों के अध्ययन के पश्चात् शुद्ध मूलपाठ के साथ आगम निकालने की भावना जगी व 40 वर्ष की युवावस्था में वि. सं. 2010 में मूल सुत्ताणी बड़े अक्षरों में निकालकर आगम का शुभारंभ किया। जिसका प्रकाशन श्री वर्धमान वाणी प्रचारक कार्यालय, लाडपुरा द्वारा हुआ।

फिर जर्मनी विद्वान के साथ वार्तालाप से स्फुरणा जगी व अनुयोग के कार्य में लगे। सर्व प्रथम अनुयोग विषय सूची में संलग्न हुए परन्तु वह कार्य नहीं हो सका व अधूरा ही पड़ा है। मैंने भी प्रयत्न किया परन्तु नहीं कर सका। कोई विद्वान शोध निबंध वाला पुरुषार्थ करे तो उनकी भावना को मूर्त रूप मिल सकता है।

आगमों की जो विषय सूची तैयार की गई है उसे जैनागम निर्देशिका के रूप में सन् 1966 में जब मेरा वैराग्य काल था तब प्रकाशित हुई। फिर अनुयोग के कार्य में संलग्न हुए। आचार्य श्री घासीलालजी म. सा. को अहमदाबाद जाकर व उपाध्याय श्री अमरचंदजी म. सा. को आगरा जाकर कार्य का अवलोकन कराया, सुझाव लिये। आगरा में 14 माह रहकर उपाध्याय श्री जी के सान्निध्य में निशीथ भाष्य का विशाल कार्य किया।

पूज्य गुरुदेव की अनुयोग के कार्य को करने की अत्यंत लगन रही, अनेक विद्वानों का योगदान लिया। महासतीजी श्री मुक्तिप्रभाजी, श्री दिव्यप्रभाजी म. सा. आदि ने भी अत्यंत श्रम किया। महासतीजी श्री अनुपमाजी की प्रेरणा से मेरे को भी इस कार्य में संलग्न होने का अवसर मिला। अनुयोग का कार्य 'द्रोपदी के चौर के तरह' बढ़ता ही गया, फाईनल होते-होते वापस संशोधन होता, आखिर गुरुदेव की अनुयोग के कार्य को पूर्ण करने की जो भावना थी उसे मूर्त रूप दिया गया और उनके सान्निध्य में ही लक्ष्य पूर्ण हुआ। चारों अनुयोग हिन्दी संस्करण आठ भागों में व गुजराती संस्करण ग्यारह भागों में प्रकाशित हुए। धर्मकथानुयोग व गणितानुयोग का पुनः संशोधन होकर द्वितीय संस्करण भी निकाला। 14 आगमों के मूलपाठ के गुटके भी निकाले।

जैनागम निर्देशिका बहुत समय से अनुपलब्ध थी व मांग भी बनी रहती थी। उसे पुनः प्रकाशित करने हेतु शांतक्रांति के पं. रत्न श्री प्रेममुनिजी म. सा. व श्री जितेन्द्रमुनिजी म. सा. की विशेष प्रेरणा मिली व इस कार्य में संलग्न हुआ। पूज्य गुरुदेव के समय आगमोदय समिति की संस्कृत टीकाएं उपलब्ध थी, उन्होंने सूत्रांक उन्हीं प्रतियों के दिये अतः यह ग्रन्थ सभी स्वाध्यायियों के लिए उपयोगी बने इस हेतु सूत्रांक युवाचार्य श्री मधुकरमुनिजी म. सा. की बत्तीसी के देने का निश्चय किया। 4-5 वर्ष संशोधन में ही लग गये फिर कोई सैद्धांतिक भूल न रह जाए इस हेतु अनेक संत-सतियांजी व विद्वानों से सम्पर्क किया परंतु उन्होंने अपनी असमर्थता प्रकट की जिसका मुझे अत्यंत खेद है।

पूना जैनम् जयति शासनम् में विराजित आगमज्ञाता महासतीजी श्री मंजुश्रीजी म. सा. से सम्पर्क किया उन्होंने इस कार्य को हाथ में लिया। वृद्धावस्था में स्वास्थ्य अनुकूल न होते हुए भी बहुत ही लगन के साथ ध्यानपूर्वक बत्तीस आगमों की विषय सूची देखी, संशोधन किया अतः उनका बहुत-बहुत आभारी हूं।

पूज्य गुरुदेव की दीर्घ दृष्टि रही व उन्होंने 45 आगमों की विषय सूची ली, शेष 13 आगम परम पूज्य श्री दीपरत्नसागरजी म. सा. के प्रकीर्णक, अहिंसा शोध संस्थान उदयपुर के प्रकीर्णक, महावीर विद्यालय के प्रकीर्णक देखकर संशोधन किया, सूत्रांक श्री दीपरत्नसागरजी म. सा. के गुजराती संस्करण भाग 11 से दिये हैं। मरण समाधि में श्री अरूणा मुकुन्दराय लट्ठा, अहमदाबाद की गुजराती पुस्तक के दिये गये हैं। कल्प सूत्र में आचार्य श्री देवेन्द्रमुनिजी म. सा. की प्रति के सूत्रांक दिये हैं। पिण्ड निर्युक्ति में जैन विश्व भारती, लाडनू के सूत्रांक दिये हैं। पूज्य गुरुदेव ने जीतकल्प छेद सूत्र में लिया मैंने कल्प सूत्र व जीतकल्प दोनों 32 आगमों के बाद में लिये।

परिशिष्ट में सभी सूत्रों की अध्ययन उद्देशक सूत्रांक की तालिकाएं दी गई हैं व जैनागम निर्देशिका के प्रथम संस्करण में स्थान-स्थान पर जो चार्ट तालिकाएं हैं वे भी परिशिष्ट में दिये हैं। पूज्य गुरुदेव का संपादकीय वैसा का वैसा दिया है जिससे उस समय की स्थिति का चित्रांकन हो जाता है। वैसे तो पुनः छपाने का जो संकल्प किया था उस अनुसार छप गया इसकी प्रसन्नता है। यदि विद्वानों का सहयोग मिलता व मेरा ज्ञान परिपक्व होता तो यह ग्रन्थ और अच्छा निकाल पाता।

प्रकीर्णक आदि 13 आगमों के लिए मूर्तिपूजक संतों व अनेक विद्वानों से सम्पर्क किया परन्तु किसी ने भी फाईनल देखने की स्वीकृति नहीं दी व आज मुझे अनुभव होता है कि पूज्य गुरुदेव की भावना अनुसार यदि संस्कृत व प्राकृत व्याकरण कर लेता तो आज यह स्थिति नहीं बनती, मन खिन्न नहीं होता। फिर भी गुरुदेव की कृपा से अपनी बुद्धि अनुसार संशोधन किया, इसमें जो भी त्रुटि हो, सुझाव हो अवश्य सूचित करें जिससे अगले संस्करण में सुधार किया जा सके।

मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म. सा., तपोकेसरी श्री संजयमुनिजी म. सा., तत्त्वचिंतक श्री सागरमुनिजी म. सा. का प्रवचन सेवा सुश्रुषा में अनुपम सहयोग रहा जिसके कारण मैं यह कार्य कर सका अतः अत्यंत ऋणी हूँ।

महावीर 'मधुरम्' मेरे सूचन अनुसार संशोधन करता रहा, जिस कारण पुष्प में श्रम नहीं करना पड़ा अतः उसके परिश्रम को धन्यवाद।

कुचेरा निवासी श्री मोहनलालजी भुरट परिवार व अन्य श्रद्धालुओं ने योगदान दिया तथा श्री अ. भा. श्वे. स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली व आगम अनुयोग ट्रस्ट ने प्रकाशन करवाया अतः वे भी साधुवाद के पात्र हैं।

स्वदेशी ऑफसेट, उदयपुर के **अकरमजी चौधरी** ने भी शुद्ध व सुन्दर मुद्रण किया अतः धन्यवाद।

पूज्य गुरुदेव सन् 1982 में जब अस्वस्थ थे तब **तीन भावनाएँ** अपनी प्रकट की थी- 1. अनुयोग का कार्य पूर्ण करना, 2. वृद्ध साधु-साध्वी का सेवा केन्द्र बनना, 3. **आगमों के शुद्ध-सुन्दर शीर्षक युक्त मूलपाठ** के गुटके निकालने। अनुयोग का कार्य उनके सम्मुख सम्पन्न हो गया व सेवा केन्द्र देवलाली जि. नासिक में पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य में प्रारंभ हो गया व अभी भी अच्छा चल रहा है। **तीसरी भावना** में 14 आगम गुटके प्रकाशित हो गये शेष आगम गुटकों का कार्य करना है। सर्वप्रथम- 1. अनुयोगद्वार सूत्र व 2. निशीथ सूत्र उपलब्ध नहीं है। जिसका कार्य करने की भावना है। कोई आगमज्ञ मुनिराज सहकार देने की भावना रखते हों तो अवश्य सहयोग दें, आपके सुझाव आमंत्रित हैं।

**उपप्रवर्तक
विनयमुनि 'वागीश'**



सहसंपादिका के विचार

उपाध्याय श्री कन्हैयालालजी म. सा. 'कमल' आगमों के प्रकाण्ड विद्वान थे, उन्होंने भगीरथ प्रयत्न करके **अनुयोग** का विशाल कार्य किया व **जैनागम निर्देशिका** जो आगमों की विषय सूची अर्थात् डायरेक्ट्री है उसे निकाली। अनुपलब्ध होने पर पुनः **उपप्रवर्तक श्री विनयमुनिजी म. सा. 'वागीश'** ने प्रकाशित करने का विचार बनाया।

**आगमज्ञा महासतीजी
डॉ. श्री मंजुश्रीजी म.सा.**

उपप्रवर्तक श्री विनयमुनिजी म. सा. पूज्य गुरुदेव की सेवा के साथ-साथ अनुयोग के कार्य में भी संलग्न हुए इनकी लगन रूचि बहुत ही प्रसंशनीय है।

महामंत्री श्री सौभाग्यमुनिजी म. सा. 'कुमुद' आपको '**परम पुरुषार्थी**' नाम से संबोधित करते थे अतः वास्तव में आप वैसे ही हैं। अनुयोग जैसे कार्य को सम्पन्न किया। **धर्मकथानुयोग, गणितानुयोग** का द्वितीय संस्करण भी निकाला। **बड़ी साधु वंदना कथा संग्रह** आदि अनेक ग्रन्थ निकाले।

जैनागम निर्देशिका का कार्य हाथ में लिया, अत्यंत परिश्रम किया, सूत्रांक बदले, बार-बार आगमों का दोहन किया, संशोधन किया, अनेक गूढ़ रहस्य प्रकट किये। मेरे को भी इसमें जोड़ा व कार्य करने का अवसर दिया। आगमों को पुनः बार-बार पढ़ने का अवसर दिया, मेरे ध्यान में भी जहां- जहां संशोधन उचित लगा वहां करने का प्रयत्न किया, फिर भी छद्मस्थ होने से त्रुटियां रह सकती हैं, आप अवश्य सुझाव प्रेषित करें। श्रमण संघ की मातृ संस्था अ. भा. श्वे. स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस भी ऐसे ज्ञान के कार्य में सहभागी बनकर आगम अनुयोग ट्रस्ट को सहकार दे रही है अतः अनुकरणीय है।

साध्वी डॉ. मंजुश्रीजी

प्रमुख सहयोगी श्री मोहनलालजी भुरट परिवार



कुचेरा-मारवाड़ निवासी श्री मोहनलालजी एवं श्रीमती गुलाबदेवी भुरट बहुत ही धर्म श्रद्धालु उदार हृदयी व भावनाशील दंपति हैं।

आपके सुपुत्र श्री अजितमलजी, पदमचंदजी, हंसराजजी के भी सामायिक आदि धर्म की अच्छी लगन है।

पौत्र-प्रपौत्र चेतन, संदीप, प्रशांत, पुनिथ, सिद्धार्थ, सौरभ, गौरव, मयूर, विवान, प्रेम समस्त भुरट परिवार संत-सतियांजी के प्रति बहुत ही आस्था रखते हैं।

आपके परिवार की आचार्य श्री जयमलजी म. सा. के प्रति

व विशेष रूप से युवाचार्य श्री मधुकरमुनिजी म. सा. आदि श्रमणसंघ के प्रति आस्था रही है।

राजाजीनगर स्थानक में भोजनशाला, मकराना महावीर भवन में आराधना कक्ष आदि अनेक स्थानों पर सुकृत कार्यों में आपने योगदान दिया है।

बस्वेश्वरनगर राजाजीनगर बैंगलोर के निवास स्थान पर उपप्रवर्तक श्री विनयमुनिजी म. सा. 'वागीश' आदि का पदार्पण हुआ व नवकार मंत्र का जाप कराया इस उपलक्ष में जैनगम निर्देशिका में विशेष सहयोग प्रदान किया।

जैनागम निर्देशिका विमोचनकर्ता

हरमाड़ा निवासी श्री मदनसिंहजी सकलेचा परिवार



श्री अशोककुमारजी सकलेचा विमोचन करते हुए

मूलतः झाड़ोल निवासी स्व. श्री मिलापचंदजी व श्रीमती गुलाबदेवी सकलेचा के सुपुत्र श्री मदनसिंहजी धर्म श्रद्धालु व उदार हृदयी श्रावक हैं। आपकी धर्मपत्नी स्व. श्रीमती विमलादेवी बहुत ही धर्मनिष्ठ थी।

आपके बड़े सुपुत्र श्री अशोककुमारजी, भायंदर मुंबई में रहते हैं बहुत ही भावनाशील हैं। आपकी धर्मपत्नी श्रीमती शिल्पीजी, सुपुत्र रक्षित, सुपुत्रियां अक्षिता, निक्षिता भी धर्म श्रद्धालु हैं। मुंबई में 'मणिभद्र डायमण्ड' के नाम से व्यवसाय है। छोटे सुपुत्र श्री अभिलेखकुमारजी, धर्मपत्नी श्रीमती मोनिका व सुपुत्रियां चार्मी, भव्या सुपुत्र

दिव्यांश भी धर्मानुरागी हैं। बैंकॉक में 'मणिभद्र डायमण्ड एण्ड ज्वेलरी' के नाम से व्यवसाय है।

उपाध्याय श्री कन्हैयालालजी म. सा. 'कमल' के प्रति सम्पूर्ण परिवार समर्पित रहा है। उनके शिष्य उपप्रवर्तक श्री विनयमुनिजी म. सा. 'वागीश', मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म. सा. आदि के प्रति वैसी ही श्रद्धा भक्ति है। सन् 2020 का भायंदर चातुर्मास में भी प्रमुख लाभार्थी थे। विजापुर चातुर्मास 2021 में संघ लेकर आये। उपाध्याय श्रीजी की दीक्षा भूमि साण्डेराव के कमल विहार में ए. सी. कमरे का लाभ लिया। श्री महावीर कल्याण केन्द्र, मदनगंज, श्री अंबेश गुरुकुल, मुंबई के ट्रस्टी हैं। श्री वर्धमान जैन मंच, मुंबई के कोषाध्यक्ष हैं। आपने मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म. सा. दीक्षा स्वर्ण जयंति पर दि. 20 फरवरी 2022 के मदनगंज के भव्य कार्यक्रम में इस ग्रन्थ के विमोचन किया।



श्री प्रसन्नचंदजी
दुगड़



श्रीमती ललितादेवी
दुगड़



मुमुक्षु लताबेन
(हिरलप्रभाजी)

आप कुरड़ायां-मारवाड़ निवासी श्री माणकचंदजी व श्रीमती गीता देवी दुगड़ के सुपुत्र हैं। आप संत-संतियांजी की सेवा का अच्छा लाभ लेते हैं। उदार हृदयी मधुर गायक व कुशल संचालक तथा कवि हैं। आपकी धर्मपत्नी श्रीमती ललिता देवी पीह-मारवाड़ निवासी 'पीह संघ गौरव' श्री पुखराजजी वेदमेहता की सुपुत्री हैं। बाल्यकाल से ही धर्म के

प्रति अगाढ़ श्रद्धा रही है। उपाध्याय श्री कन्हैयालालजी म. सा. 'कमल' के प्रति गहरी आस्था रही है। श्री तेजराजजी बंब ने आपकी विशेष रूप से ज्ञान-ध्यान में श्रद्धा उत्पन्न की है।

आपके सुपुत्र अरूणकुमार, डॉ. अभिषेककुमार पुत्रवधु पूजा, अक्षिता, पौत्री नम्या आदि की धर्म भावना प्रशंसीय है। आपका वेलेचेरी-चैन्नई में मेडिकल का व्यवसाय है।

दुगड़ परिवार ने श्रीमती ललिता दुगड़ के द्वितीय वर्षीतप के उपलक्ष में 3 मई अक्षय तृतीया को पुष्कर में वर्षीतप के पारणों का भव्य आयोजन किया व 6 मई 2022 को झींटिया निवासी नीतुदेवी सुखलालजी की सुपुत्री लता की भागवती दीक्षा कराने का भव्य आयोजन भी किया। प्रवर्तक श्री सुकनमुनिजी म. सा. ने दीक्षा मंत्र प्रदान कर महासतीजी श्री इन्दुप्रभा जी, दर्शनप्रभाजी की शिष्या घोषित की व नवदीक्षित महासतीजी का नाम हिरलप्रभाजी रखा। इस अवसर पर उपप्रवर्तक श्री विनयमुनिजी म. सा. 'वागीश', मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म. सा. आदि 45 ठाणा संत एवं संतियांजी भी पधारे।

आप श्रमण सूर्य मरूधरकेसरी श्री मिश्रीमलजी म. सा., लोकमान्य संत श्री रूपचंदजी म. सा., मरूधरा भूषण श्री सुकनमलजी म. सा. के परम भक्त हैं।

दुगड़ परिवार ने वर्षीतप एवं दीक्षा के उपलक्ष में इस ग्रन्थ में विशेष सहयोग प्रदान किया है।



श्री हीराचंदजी
साकरिया



श्रीमती सुशीलाबाई
साकरिया



स्व. श्री राजेन्द्रजी
साकरिया

आप बहुत ही उदार भावनाशील श्रद्धालु श्रावक हैं, उपाध्याय श्रीजी के प्रति अनन्य आस्था रही व प्रत्येक कार्य में अग्रणी रहे हैं। मुंबई में दिलीप टेक्सटाईल नामक कपड़े का व्यवसाय है व बदलापुर में प्रेमपूजा टेक्सटाईल प्रा. लि. नामक फैक्ट्री है। बाल्केश्वर में

रहते हैं। संत-संतियों की सेवा में हमेशा तत्पर रहते हैं। नियमित सामायिक करते हैं। आपके सुपुत्र- स्व. राजेन्द्र, दिलीप, नरेश, विपुल सुपौत्र- संजय, सुमित, यश प्रपौत्र- टिशन आदि सम्पूर्ण परिवार धर्मश्रद्धालु हैं। सन् 2013 में आबू पर्वत आर्यबिल ओली कराने का भी लाभ लिया है। स्व. श्री राजेन्द्रकुमारजी बहुत ही विनयवान् थे। उनकी स्मृति में आपने इस ग्रन्थ में सहयोग दिया।



श्री पारसमलजी
सुराणा



श्रीमती कमलादेवी
सुराणा

आप परम सेवाभावी संत-सतियों के प्रति समर्पित बहुत ही सरल परिणामी जोधपुर निवासी **श्री प्रेमराजजी सुराणा** के सुपुत्र हैं। बहुत ही उत्साही, उदार, भावनाशील श्रावक हैं। आप के बड़े भ्राता श्री रिखबराजजी, बहन सुशीला (त्रिशला) एवं पुत्र लोकेशकुमार आदि सभी परिवार के सदस्यों की पूज्य उपाध्याय **श्रीजी** के प्रति बहुत आस्था व समर्पण रहा, उन्हीं के आशीर्वाद से वृद्धि हुई एवं वर्तमान में **उपप्रवर्तकद्वय** के प्रति असीम श्रद्धा रखते हैं। आपकी जीवदया व साधु-साध्वियों के प्रति विशेष रुचि है। आपके घनिष्ठ मित्र **श्री प्रकाशमलजी लूंकड़** भी सेवा कार्यों में बराबर साथ देते हैं। **जैन मुनि कन्हैया लाल कमल स्मृति ट्रस्ट**, आबूपर्वत के कार्यकारी ट्रस्टी हैं। पीह **कबूतरशाला** के विशेष सहयोगी हैं।



श्री कमलेशजी माण्डोट



श्रीमती ललितादेवी

मेवाड़ की पावन धरा पर राजस्थान के राजसमन्द जिले में मोलेला भक्तिवान् क्षेत्र है जो पूज्य प्रवर्तक **श्री मदनमुनिजी म. सा. की दीक्षा भूमि** है। वहां के निवासी **श्री सुखलालजी माण्डोट** के सुपुत्र **श्री कमलेशकुमारजी** बहुत ही धर्मश्रद्धालु श्रद्धावान् व उदार हृदयी हैं। जिनकी धर्मपत्नी **श्रीमती ललितादेवी** व सुपुत्र मयूर तथा सुपुत्री रवीना भी धर्म के प्रति आस्थावान् हैं। मुंबई घाटकोपर में निवास है और झवेरी बाजार में **कृष्णा सिल्वर** नाम से व्यवसाय है। मेवाड़ संघ शिरोमणी पूज्य प्रवर्तक **श्री अंबालालजी म. सा.** के प्रति विशेष आस्था रही है।

सादड़ी में सन् 2022 के चातुर्मास में उपप्रवर्तक **श्री विनयमुनिजी म. सा.** 'वागीश', मधुर व्याख्यानी **श्री गौतममुनिजी म. सा.** आदि ठाणा के दर्शनार्थ संघ लेकर आये इस उपलक्ष में इस ग्रन्थ में विशेष सहयोग दिया।



समाज भूषण स्व.
श्री इन्द्रमलजी पगारिया



श्री रोशनलालजी
पगारिया

समाज भूषण स्व. **श्री इन्द्रमलजी पगारिया** रेलमगरा (राज.) के प्रमुख धर्मनिष्ठ सुश्रावक थे। आपके सुपुत्र **श्री रोशनलालजी**, **श्री दिनेशचन्द्रजी** एवं पौत्र **दिलीपजी**, **श्री महेन्द्रजी**, **श्री विजयजी**, **श्री अमितजी** एवं प्रपौत्र **विनय**, प्रीत आदि सम्पूर्ण पगारिया परिवार रेलमगरा गुरुदेवों के प्रति समर्पित सेवाभावी धर्म श्रद्धालु हैं। मेवाड़ संघ शिरोमणि पूज्य प्रवर्तक **श्री अंबालालजी म.**, महामंत्री **श्री सौभाग्यमुनिजी म.**, प्रवर्तक **श्री मदनमुनिजी म.** का इस परिवार को विशेष आशीर्वाद प्राप्त हुआ है एवं उपप्रवर्तक **श्री विनयमुनिजी म.**, मधुर व्याख्यानी **श्री गौतममुनिजी म.** के प्रति भी पूर्ण आस्था है। विहार में सेवा देने की व प्रेरणा देने की विशेष रुचि रहती है। **श्री दिलीपजी**, **श्री महेन्द्रजी** मेवाड़ संघ मुंबई के सक्रिय कार्यकर्ता हैं। आपका 'स्वस्तिक' नाम से मुंबई, सूरत, रेलमगरा में ज्वेलर्स का बहुत बड़ा व्यवसाय है। आपके परिवार की साधु सम्मेलन इन्दौर में प्रमुख भूमिका रही।



श्री गजराजसिंहजी
डांगी



श्रीमती प्रेमदेवी
डांगी

आप पूज्य गुरुदेव श्री प्रतापमलजी म. की जन्म भूमि शाहपुरा के निवासी है। वर्तमान में भीलवाड़ा रहते हैं। उपाध्याय श्री कन्हैयालालजी म. 'कमल' के प्रति बहुत आस्था रही है। आपकी धर्मपत्नी श्रीमती प्रेमदेवी बहुत ही धर्म श्रद्धालु है। आपके सुपुत्र किरणसिंहजी जो धर्मश्रद्धालु थे वे छोटी उम्र में दिवंगत हो गये। उनकी धर्मपत्नी रानीदेवी धर्म श्रद्धालु है। ज्येष्ठ पुत्र श्री कुलदीपसिंहजी व उनकी धर्मपत्नी मंजुदेवी, पौत्र-पौत्रवधु सर्वेश-श्वेता, सौरभ-पूजा व पौत्रियां प्रियंका अमितजी नाहर मुंबई, श्वेता अरविंदजी कोठारी भीलवाड़ा, एकता रविजी सिंधवी मालपुरा, प्रपौत्र-प्रपौत्री सम्यक्, संयम, आरना आदि सभी भावनाशील हैं। संत-सतियों के प्रति बहुत आस्था रखते हैं।

लोकमान्य संत वरिष्ठ प्रवर्तक श्री रूपचंद जी म. उपप्रवर्तक श्री विनयमुनिजी म. 'वागीश', राजस्थान सिंहजी महासतीजी श्री यशकंवरजी आदि के प्रति विशेष आस्था श्रद्धा है। वर्तमान में महिला आश्रम रोड, भीलवाड़ा एवं मुंबई में रहते हैं। श्री गजराजजी की सुपुत्रियां चन्द्रकला सरदारसिंहजी सकलेचा (झड़ोल) नसीराबाद व कुसुम महेन्द्रजी खमेसरा, उदयपुर भी भावनाशील हैं।



श्री मुन्नालालजी
मोहनोत



श्रीमती माधवीदेवी
मोहनोत

आप मूलतः सूरसागर जोधपुर निवासी श्री शांतिलालजी एवं श्रीमती चन्द्रादेवी मोहनोत के सुपुत्र हैं। आपकी धर्मपत्नी श्रीमती माधवीदेवी बहुत ही धर्मश्रद्धालु श्राविका हैं। आपके सुपुत्र रोहितकुमार व पुत्रवधु सपनादेवी व पौत्र गर्वित, हर्षित संस्कारवान् हैं। आपकी सुपुत्रियां सारिका- नरेशजी सामसुखा, बेलगांव, शीतल-संदीपजी भंडारी, अहमदाबाद, रूपीका-हितेशजी पुनमिया, मुंबई भावनाशील हैं। आप श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ निमाज की हवेली जोधपुर के मंत्री हैं। आचार्य आत्मानंद मानव जीव कल्याण ट्रस्ट एवं सिवांचीगेट गौशाला के पदाधिकारी रहे हुए हैं। जैन मुनि कन्हैयालाल कमल स्मृति ट्रस्ट, आबूपर्वत के कार्यकारी ट्रस्टी हैं। आपके परिवार को धर्म के संस्कार देने में स्व. युवाचार्य श्री

मधुकरमुनिजी म. एवं उपाध्याय श्री कन्हैयालालजी म. 'कमल' की विशेष भूमिका रही है। आपका 'आदिनाथ ट्रेडिंग कॉरपोरेशन 'चांदी हॉल व 'कल्पतरु केम कोरपोरेशन 'तथा 'ऋषभ कोटिंग प्रा. लि.' बोरानाडा जोधपुर में व्यवसाय है। उन दोनों महापुरुषों की स्मृति में यह ग्रन्थ प्रकाशित हो रहा है इसलिए आपने विशेष सहयोग दिया।



श्री जिनेन्द्रजी जैन



श्रीमती बीना जैन

आप दिल्ली निवासी श्री सरदारीलालजी-पूर्णदेवी के सुपुत्र हैं। सन् 1964 में पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री कन्हैयालालजी म. 'कमल' का चातुर्मास सब्जी मंडी कोल्हापुर रोड में था तब समीप ही कमलानगर में रहते थे व आप सिर्फ सात वर्ष के थे एवं उन्हीं के द्वारा धर्म का बीजारोपण हुआ तब ही से उनके प्रति गहरी आस्था रही व वर्तमान में उपप्रवर्तक श्री विनयमुनिजी म. 'वागीश', मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म., श्री संजयमुनिजी म., श्री

सागरमुनिजी म. के प्रति पूर्ण आस्था है। आप बहुत ही धर्मनिष्ठ व साधनाप्रिय हैं। अनेक बार आबूपर्वत की गुफा में बैठकर साधना की। आपकी धर्मपत्नी बीना बहुत ही भावनाशील हैं। पुत्र विपुल पुत्रवधु भारती एवं सुपुत्री सौम्या-निशांतजी ओसवाल भावनाशील हैं।



श्री अक्षयकुमारजी
सामसुखा



श्रीमती गुलाबदेवी
सामसुखा

आप मूलतः जोधपुर निवासी श्री सरदारमलजी-उच्छवकंवरबाई सामसुखा के सुपुत्र हैं। बहुत ही भावनाशील हैं व संत-सतियांजी की सेवा की विशेष रुचि रहती है। भजन भी बनाते रहते हैं। उपाध्याय श्रीजी के गुणगान 'नाम तुम्हारा कमल कन्हैया' आपकी ही रचना है। आपकी धर्मपत्नी गुलाबदेवी पुत्र शरदकुमार पुत्रवधु अनिता पौत्री महिता आदि सभी धर्मश्रद्धालु हैं।

आपके भ्राता श्री पुष्पेन्द्रकुमारजी भी सामायिक स्वाध्याय की रुचि वाले हैं। आपका मुंबई में 'मरूधर इलेक्ट्रिकल्स' व 'रूप रजत लाइट' के नाम से व्यवसाय है।

श्री वर्धमान ध्यान साधना केन्द्र, आबूपर्वत, जैन मुनि कन्हैयालाल कमल स्मृति ट्रस्ट, आबूपर्वत, श्री महावीर सेवा संस्थान, कामशेत-लोणावला, श्री जैन सेवा संघ, मुंबई के ट्रस्टी हैं। श्री मरूधर केसरी पावनधाम, जैतारण के कार्यकारिणी सदस्य हैं। श्रमणसूर्य मरूधर केसरी श्री मिश्रीमलजी म., लोकमान्य संत श्री रूपचंदजी म., उपाध्याय श्री कन्हैयालालजी म. 'कमल' के प्रति विशेष आस्था रही है। वर्तमान में मरूधरा भूषण प्रवर्तक श्री सुकनमलजी म., उपप्रवर्तक श्री विनयमुनिजी म., मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म., महासतीजी श्री अनुपमाजी के प्रति विशेष श्रद्धा भक्ति है।



श्रीमती सायरबाई
दीपचंदजी बंब

राबड़ियाद निवासी श्री नाहरमलजी बागरेचा की सुपुत्री श्रीमती सायरबाई दीपचंदजी बंब बहुत ही धर्मश्रद्धालु उदार हृदयी श्राविका थी। आपके सुपुत्र श्री उत्तमचंदजी पीह संघ के अच्छे कार्यकर्ता हैं। श्री विनय गुरु दीक्षा स्थली कबूतरशाला के ट्रस्टी हैं। भजन बोलने की रुचि है, आवाज बुलन्द है। आपकी धर्मपत्नी पुष्पाकंवर की भी संत-सतियों की सेवा की भावना रहती है। पौत्र दिनेशकुमार, अशोककुमार, प्रकाशचंद, सुमितकुमार, मनीषकुमार व पौत्रवधु नीलम, रेखा, दीपिका, मोनिका, रणजीता व प्रपौत्र प्रियंक, प्रतीक, पीयूष, हीरयांश, दर्शन, वियांश प्रपौत्री प्रियल, छवि आदि सम्पूर्ण परिवार



श्री उत्तमचंदजी
दीपचंदजी बंब

भावनाशील है। आपके भ्राता श्री ज्ञानचंदजी व भाभीजी का एकसीडेन्ट में स्वर्गवास हो गया वह भी बहुत धर्मश्रद्धालु थे। पौत्रियां सुनिता महावीर कल्याण केन्द्र के अध्यक्ष श्री शंभूसिंहजी चौरड़िया के सुपुत्र रविकुमारजी को विवाहित है व संगीता रविकुमारजी छाजेड़ चैन्नई श्रद्धावान् है। कोयम्बतूर में महावीर ग्रेनाईट एण्ड टाइल्स नामक मार्बल का व्यवसाय है व पीह में भी व्यवसाय है। अभी अजमेर में निवास है।



श्री शंकरलालजी
साकरिया



श्रीमती सुखीबाई
साकरिया

आप साण्डेराव-मारवाड़ निवासी थे। व्यापारार्थ मालेगांव (महाराष्ट्र) पहुंचे। जहां कपड़े का व्यवसाय था। वर्तमान में आपके बड़े सुपुत्र सोहनलालजी का मुंबई में 'महावीर गोल्ड' नाम से ज्वेलर्स का व्यापार है। छोटे सुपुत्र श्री घेवरचंदजी उदार हृदयी हैं। आपका बैंगलोर में 'मंगलदीप चैन्स' नामक ज्वेलर्स का व्यवसाय है। आपकी धर्मपत्नी श्रीमती मनफूलाबेन बहुत ही धर्मश्रद्धालु है। कमल विहार साण्डेराव जैसी विशाल संस्थान का उद्घाटन, गुरु मोती कमल - कन्हैया गौशाला का शिलान्यास व विशाल घास चारा गोदाम का निर्माण आपके परिवार के द्वारा ही हुआ है। सन् 2017 के राजाजीनगर बैंगलोर

चातुर्मास में अच्छा लाभ लिया। नेत्र शिविर, पैदल संघ यात्रा, उपधान आदि अनेक आयोजन करते ही रहते हैं। स्व. अशोक कुमार भी धर्मश्रद्धालु था व बिपिनकुमार भी भावनाशील है। मातुश्री सुखीबाई धर्म साधना में रत रहती है। सुपुत्र- कुशल, सफल, पुत्रवधु- पायल, केजल पौत्र-पौत्री- संयम, जिनय, द्विशा, विरति संस्कारवान् हैं।



श्री रोशनलालजी
झगड़ावत



श्रीमती भागवतीदेवी
झगड़ावत



स्मृति शेष
प्रिय अंकित जैन

उदयपुर निवासी श्री रोशनलालजी एवं आपकी धर्मपत्नी श्रीमती भागवतीदेवी झगड़ावत बहुत ही धर्म श्रद्धालु हैं व संत-सतियों की सेवा की उत्कृष्ट भावना रहती है।

आपके सुपुत्र श्री चन्द्रप्रकाशजी जे. के. सिमेन्ट वर्क्स के वाइस प्रेसिडेंट हैं। इतनी बड़ी पोस्ट पर होते हुए भी बहुत ही विनयवान् हैं व प्रतिदिन सामायिक आदि की आराधना करते हैं। आपकी

धर्मपत्नी श्रीमती उषादेवी भी बहुत भावनाशील हैं। पौत्र अंकित भी धर्मश्रद्धालु था, परन्तु छोटी उम्र में स्वर्गवास हो गया। द्वितीय पौत्र अर्पण, पौत्रवधु पूजा व प्रपौत्र मानित भी संस्कारवान् हैं। विश्व संत राजस्थान केसरी उपाध्याय श्री पुष्करमुनि जी म. के प्रति विशेष आस्था रही है। अभी जोधपुर में निवास है। प्रिय अंकित जैन की पुण्य स्मृति में ग्रन्थ प्रकाशन में विशेष सहयोग दिया है।



श्री मोहनलालजी
साकरिया



श्रीमती लीलादेवी
साकरिया

साण्डेराव मारवाड़ निवासी श्री भीमराजजी हजारीमलजी साकरिया के सुपुत्र आप बहुत ही धर्मश्रद्धालु, उदार हृदयी व सेवाभावी हैं। पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री कन्हैयालाल जी म. 'कमल' के प्रति पूर्ण समर्पित आस्थावान् व परम भक्त रहे हैं। उन्हीं की परम कृपा व प्रबल पुरुषार्थ से 'कला मंदिर ज्वेलर्स' के नाम से कोसंबा, सूरत, भरूच, वापी व अहमदाबाद में व्यवसाय है। श्री वर्धमान महावीर केन्द्र व श्री वर्धमान ध्यान साधना केन्द्र के ट्रस्टी हैं। साण्डेराव, लोणावला आदि संस्थाओं एवं कीम आदि अनेक स्थानकों में विशेष सहयोग दिया है।

आपकी धर्मपत्नी श्रीमती लीलादेवी बहुत ही धर्मश्रद्धालु है। सुपुत्र- शरदकुमार, राजेशकुमार, दिपेशकुमार, मिलनकुमार पुत्रवधु- जयश्री, ममता, ममता, नीलम सभी की धर्म में बहुत आस्था है। रुचिका, मोक्षा, प्रतिक, रितिक, क्रिश, डॉ. दिपान्शी, यश, चाहत, नक्षत्र आदि पौत्र-पौत्री संस्कारवान् हैं। वर्षातप, सिद्धितप, मासखमण आदि तपश्चर्याएं करते रहते हैं।



श्री खयालीलालजी
सिंघवी



श्रीमती इन्द्रादेवी
सिंघवी

आप पाखण्ड हाल- नाथद्वारा निवासी- स्व. श्री हीरालाल जी सिंघवी एवं धर्मपत्नी श्रीमति बदामबाई सिंघवी के सुपुत्र हैं। बहुत ही धर्मश्रद्धालु श्रावक हैं। संत-सतियों के प्रति सेवा की बहुत रुचि है। आपकी धर्मपत्नी श्रीमती इन्द्रा देवी व सुपुत्र सौरभ भी भावनाशील है। आपने प्रवर्तक श्री मदनमुनिजी म., उपप्रवर्तक श्री विनयमुनिजी म., मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म. के नाथद्वारा चातुर्मास 2012 में बहुत अच्छा लाभ लिया।

आपका नाथद्वारा में श्री स्वस्तिक ज्वेलर्स व गजानन्द डवलपर्स नाम से व्यवसाय है। गुरु मदन-पथिक विहार धाम, घोड़ाघाटी के ट्रस्टी हैं।

नवपद के प्रति गहरी आस्था है व अनुमोदन का भी बहुत लाभ लेते हैं।



स्व. श्री पारसमलजी
कावेड़िया



स्व. श्रीमती सज्जनबाई
कावेड़िया

सादड़ी मावारड़ निवासी श्री ओटरमलजी कावेड़िया के सुपुत्र श्री पारसमलजी बहुत ही धर्मनिष्ठ व उदार हृदयी थे। आपकी धर्मपत्नी श्रीमती सज्जनबाई अजमेर निवासी श्री नोरतमलजी कोटेचा की सुपुत्री थी, बहुत ही धर्मश्रद्धालु व संत-सतियों के प्रति समर्पित थी।

आपके सुपुत्र श्री धर्मीचंदजी व श्रीमती संगीतादेवी भी बहुत भावनाशील हैं। पौत्र सूरज व पौत्रवधु कोमल, पौत्र आकाश व पौत्री धनिका संस्कारवान् हैं।

आपके परिवार को ही सादड़ी **महावीर भवन** के उद्घाटन का लाभ मिला। आबूपर्वत चैत्री आयबिल ओली कराई।

उपप्रवर्तक श्री विनयमुनिजी म. सा. 'वागीश', मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म. सा. आदि ठा. 5 का होली चातुर्मास आपकी कर्मभूमि आरकाट तमिलनाडू में कराया। धर्मिचंद थंगा मालिगै ज्वेलर्स नाम से आरकाट में व्यवसाय है। श्री पारसमलजी की सुपुत्रियाँ- श्रीमती पन्नाबाई-स्व. सुरेशजी पुनमिया पूना, श्रीमती अनिताबाई-पदमचंदजी सिंधवी चैन्नई, श्रीमती सुनिताबाई-सुभाषजी सिंधवी आरनी, श्रीमती अभिमतीबाई-अशोकजी सुराणा चैन्नई, श्रीमती सुजाताबाई-स्व. देवेन्द्रजी बलदोटा पूना के भी धर्म के संस्कार अच्छे हैं। आपकी बहन श्रीमती मदनबाई नेमीचंदजी बांठिया बगड़ी वाले भी भावनाशील थी।

अनुकरणीय सहयोगी : सहप्रकाशक- श्रुत संवर्धन समिति जैन कॉन्फ्रेंस नई दिल्ली

एक परिचय- श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ की मातृ संस्था के रूप में श्री ऑल इण्डिया श्वेतांबर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस नई दिल्ली सर्व विख्यात है। श्रमण संघ के महान् आचार्य एवं वरिष्ठ मुनिराजों के मार्गदर्शन में जैन कॉन्फ्रेंस संगठन, सामाजिक उन्नयन के साथ अन्य क्षेत्रों में भी आगे कदम बढ़ाते हुए शिक्षा, चिकित्सा, साधर्मी सहयोग तथा राष्ट्र और विश्व मंगल के कार्यों को अपने स्थापना काल से ही आज तक बराबर क्रियान्वित कर रहा है। जैन कॉन्फ्रेंस के गौरवशाली अतीत के अंतर्गत स्थानकवासी जैन समाज के कई महत्वपूर्ण ग्रन्थ अर्धमागधी कोष आदि ग्रन्थों का प्रकाशन एवं प्रचार-प्रसार हुआ। अब पुनः **वर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री आनंदमलजी छल्लाणी, चैन्नई** के दिशा निर्देशन में जैन कॉन्फ्रेंस के अंतर्गत 'श्रुत संवर्धन समिति' का गठन किया गया। जिसके निम्न उद्देश्य निर्धारित किए गए- **1. स्थानकवासी परंपरा के प्राचीन पांडुलिपि भंडारों का वर्गीकरण, केन्द्रीय रूप से संग्रहण, संरक्षण व सूचीकरण एवं डिजिटाइजेशन करना तथा केन्द्रीय अभिलेखागार की स्थापना करना। 2. स्थानकवासी परंपरा के मान्य आगम एवं साहित्य का प्रकाशन, वितरण एवं केन्द्रीय रूप से संदर्भ पुस्तकालय समायोजित करना। 3. साधु एवं श्रावकों के उपयोगी धार्मिक उपकरणों व सम्पूर्ण स्थानकवासी जैन साहित्य की केन्द्रीय कार्यालय पर उपलब्धता एवं राष्ट्र स्तर पर वितरण करना।**

श्रुत संवर्धन समिति के अंतर्गत उपरोक्त सभी कार्य प्रारंभ कर दिए हैं। जिसके अंतर्गत उत्तर भारत के स्थानकवासी जैन पांडुलिपियों के **तीन शास्त्र भंडारों के लगभग पांच लाख पृष्ठों** का डिजिटाइजेशन कर लिया गया है। स्वाध्याय पुस्तिका '**जय जिनवाणी**' के तीन माह में ही दो संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं। '**श्रमण प्रतिक्रमण**' एवं '**25 बोल**' की पुस्तकें प्रकाशित की जा चुकी हैं। उसी श्रृंखला में **पूज्य उपाध्याय श्री कन्हैयालालजी म. सा. 'कमल'** के द्वारा संपादित प्रस्तुत महाग्रन्थ '**जैनागम निर्देशिका**' का प्रकाशन श्रुत संवर्धन समिति का अत्यंत गौरवशाली कार्य हुआ है।

-: श्रुत संवर्धन समिति के माननीय सदस्यगण :-

* 1. श्री रमेश भण्डारी जैन, इन्दौर (चैयरमेन)	* 4. श्री अतुल जैन दिल्ली
* 2. डॉ. श्री अमितराय जैन, बड़ोत (संयोजक)	* 5. श्री प्रशांत महेश जैन, दिल्ली
* 3. श्री दिनेश जैन चांदनी चौक, दिल्ली	* 6. श्री सुधीर जैन, कोटा

जैनागम निर्देशिका के प्रथम संस्करण से संपादकीय

अमूल्य आगम-निधि की सुरक्षा

वीर-निर्वाण के पश्चात् एक हजार वर्ष की अवधि में एक-एक युग लम्बे तीन दुर्भिक्ष आये और गये। इन दुर्भिक्षों में निर्ग्रन्थ श्रमणों से आगम-वाचना, पृच्छना-परिवर्तना और अनुप्रेक्षा न हो सकी। इसलिए क्रमशः प्रत्येक दुर्भिक्ष के अन्त में पाटलीपुत्र, मथुरा और वलभी में भद्रबाहु, स्कंदिलाचार्य और आचार्य नागार्जुन की अध्यक्षता में आगमों की सुरक्षा के लिए श्रमण संघ ने वाचनाओं का आयोजन किया।¹ यहाँ तक श्रुत परम्परा प्रचलित रही।²

वीर-निर्वाण के 980 वर्ष पश्चात् वलभी में देवर्धि गणि क्षमा श्रमण की अध्यक्षता में श्रमण-संघ ने आगमों को लिपिबद्ध किया।³ लिखना और पुस्तक रखना निर्ग्रन्थ श्रमण के लिए यद्यपि सर्वथा निषिद्ध था, किन्तु देवर्धिगणि ने जब स्मृति-दैर्बल्य का स्वयं अनुभव किया तो आगमों की सुरक्षा के लिए संघ के समक्ष पुस्तक लेखन के अपवाद का नया विधान किया। आगमों के लिपिबद्ध होने के पश्चात् 1400 वर्ष की अवधि में दुष्काल के कुचक्र ने जैन संघ से अनेक आगम छीन लिए। आचारांग का सातवाँ महापरिज्ञा अध्ययन और दसवाँ प्रश्नव्याकरण अंग पूर्ण⁴ टीकाकारों के युग में भी उपलब्ध नहीं थे। आगमों के लेखन काल में संकलित नन्दीसूत्र में जिन कालिक और उत्कालिक सूत्रों की एक लम्बी सूची अंकित है, उनमें से अनेक आगम वर्तमान में अनुपलब्ध हैं।⁵ ये आगम कब और कैसे अदृष्ट हुए, इस सम्बन्ध में पूर्ण विवरण प्रस्तुत करने का साधन हमारे पास नहीं है।

प्रकृतिक विपदाओं से जिन-वाणी की सुरक्षा का उत्तरदायित्व-अधिष्ठायक देव-देवियों का है। किन्तु हास-काल के प्रभाव से कहिए या हमारे दुर्भाग्य से कहिए वे भी आगम-सुरक्षा से सर्वथा उदासीन रहे। फिर भी जैसलमेर, पाटण आदि के विशाल ज्ञान भण्डार में प्रचुर अमूल्य आगम-निधि सुरक्षित है। जिनवाणी प्रेमी जिज्ञासु जन उनके संस्थापकों एवं संरक्षकों के सदैव आभारी रहेंगे।

स्वाध्याय-साधना

आगम-निधि की सुरक्षा के लिए स्वाध्याय की प्रवृत्ति बढ़ाना अत्यावश्यक है और इसके लिए एक व्यापक कार्यक्रम की आवश्यकता है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य सर्वसाधारण के लिए जैनागमों का महत्व समझाना तथा जन साधारण को जैनागमों के स्वाध्याय के लिए प्रोत्साहित करना है। इस कार्यक्रम के तीन प्रमुख अंग हैं :-

1. क. पाटलीपुत्र वाचना-वीर निर्वाण के 160 वर्ष पश्चात् ख. माथुरी वाचना-वीर निर्वाण के 827 वर्ष पश्चात्
ग. वलभी वाचना माथुरी वाचना के समकाल हुई है।
2. कुछ विद्वानों का मत है कि- माथुरी और वलभी वाचनाओं में आगम लिपिबद्ध हो गये थे।
3. वीर निर्वाण के 993 वर्ष पश्चात् वलभी में देवर्धि गणि ने आगम और प्रकीर्णक लिपिबद्ध करवाए यह भी एक मान्यता है।
4. स्थानांग में वर्णित प्रश्नव्याकरण के स्वरूप से उपलब्ध प्रश्नव्याकरण का स्वरूप सर्वथा भिन्न है।
5. बंध दशा, द्विगुद्धि दशा आदि अनेक प्रकीर्णक ग्रन्थ।

1. चतुर्विध संघ में जैनागमों के स्वाध्याय की प्रवृत्ति को बढ़ावा देना। 2. जैनागमों का वैज्ञानिक पद्धति से लोकप्रिय प्रकाशन।
3. विश्व की प्रमुख भाषाओं में जैनागमों का प्रकाशन। 4. विश्व के शोध संस्थानों को जैन आगमों का उपहार।

स्वाध्याय की प्रवृत्ति बढ़ाना

(क) प्रत्येक धर्म स्थान में एक आगम पुस्तकालय स्थापित करना। वह धर्म-स्थान मन्दिर हो या उपाश्रय, स्थानक हो या पौषध शाला। प्रत्येक क्षेत्र के स्थानीय संघ को आगम-स्वाध्याय के लिए उत्साहित करना। स्वाध्याय मण्डल की स्थापना करना। वर्षभर में समस्त आगमों का पारायण करने वाले स्वाध्यायशील श्रमणोपासक को अ.भा. जैन संघ द्वारा सम्मानित या पुरस्कृत किया जाना।

(ख) धर्मकथा करने वाले श्रमण वर्ग या श्रमणोपासक वर्ग को जैनागमों का विशाल ज्ञान प्राप्त करने के लिए प्रबल प्रेरणा दी जाय। आगम ज्ञान की अभिवृद्धि के लिए वे स्वयं उत्सुक बने, ऐसा वातावरण बनाया जाए। प्रत्येक धर्म-कथक के लिए प्रति वर्ष किसी एक आगमिक विषय पर शोध निबन्ध लिखना अनिवार्य कर दिया जाये। जो धर्म कथक सर्वश्रेष्ठ महत्वपूर्ण निबन्ध लिखे उसे अ.भा. जैन संघ द्वारा सम्मानित किया जाये।

(ग) आगम-पारायण का एक वार्षिक कार्यक्रम बनाया जाए और पारायण के माहात्म्य का इतना अधिक व्यापक प्रचार किया जाए कि-सर्वत्र वार्षिक पारायण प्रारम्भ हो जाये।

जैनागमों के लोकप्रिय प्रकाशन

आगम प्रकाशन का कार्य वैज्ञानिक पद्धति से होना आवश्यक है।

1. वृद्धों व अल्प-पठित स्वाध्याय प्रेमियों को बड़े सुवाच्य अक्षरों में प्रकाशित आगम प्रतियाँ प्रिय होती हैं।
2. युवा व अल्प वयस्क स्वाध्यायशील व्यक्तियों को सूक्ष्माक्षरों में लघुकाय संस्करण रुचिकर होते हैं।
3. विद्वद्गर्ग के लिए प्रौढ़ साहित्यिक सुललित सरल भाषा में आगमों का अनुवाद प्रभावोत्पादक होता है।
4. अल्प-पठित पुरुष एवं महिलाओं के लिए सरल भाषा में आगमों का अनुवाद अधिक रुचिकर एवं ज्ञानवर्धक होता है।

इस प्रकार आगमों को लोकप्रिय बनाने के लिए विविध प्रकार के संस्करणों का प्रकाशन आवश्यक है।

विश्व के विद्यालयों को जैनागमों का उपहार

विश्व को साहित्यिक भाषाओं में अनुवाद एवं मुद्रित जैनागमों का अति शुद्ध संस्करण विश्व के विश्वविद्यालयों में पहुँचाना तथा आगमिक विषयों पर शोध निबन्ध लिखने वाले जैन-जैनैतर बन्धुओं को समान भाव से सम्मानित करना या पुरस्कृत करना। इस प्रकार भारतीय जैन संघ प्रवचन की प्रभावना करके अमूल्य आगम-निधि की सुरक्षा करने में समर्थ हो सकेगा।

जैनागम-निर्देशिका में पैतालीस आगमों का विषय निर्देशन

उपलब्ध पैतालीस आगमों का जैनागम-निर्देशिका में उपयोग किया है, बत्तीस आगमों के अतिरिक्त तेरह आगमों में स्थानकवासी परम्परा से मौलिक मतभेद रखने वाला कोई सन्दर्भ नहीं है। यह निर्णय जैनागम-निर्देशिका के आद्योपात्त अध्ययन से पाठक स्वयं कर सकेंगे।

जैनागमों की रचना शैली

जैनागमों की रचना शैली चार प्रकार की है-

1. संवादात्मक शैली-

एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से प्रश्न करता है और वह उसका उत्तर देता है। यथा-भगवान महावीर और गौतम का संवाद। केशी और गौतम का संवाद। राजा प्रदेशी और केशी मुनि का संवाद। राजा श्रेणिक और अनाथी निर्ग्रन्थ का संवाद आदि।

2. वर्णनात्मक शैली-

किसी श्रमण या श्रमणी तथा श्रमणोपासक या श्रमणोपासिका के जीवन का वर्णन। यथा-दस उपासकों का तथा अन्तकृत आत्माओं का वर्णन अथवा ऐसे अन्य सभी वर्णन।

3. उपदेशात्मक शैली-

साधक या साधिका को किसी प्रकार का उपदेश देना। यथा-

जरा जाव न पीडेइ, वाही जाव न वड्ढइ। जाविदिया न हायति, ताव धम्मं समायरे।।

4. विधि-निषेधात्मक शैली-

साधक के लिए किसी प्रकार का विधान या निषेध करना। यथा-

कप्पइ निगंथाणं आउंचण-पट्टुगं धारेत्तए वा, परिहरित्तए वा।

नो कप्पइ निगंथीणं आउंचण-पट्टुगं धारेत्तए वा, परिहरित्तए वा।

जैनागमों के प्रमुख विषय-

1. आचार-सम्बन्धी विधि-निषेध।	2. आचार-सम्बन्धी उपदेश।
3. आचार-सम्बन्धी औत्सर्गिक और आपवादिक नियमों का विधान।	4. प्रायश्चित्त विधान।
5. भूगोल-खगोल वर्णन।	6. तत्त्व-निरूपण।
7. जैन धर्मानुयायी साधकों के जीवन।	8. कतिपय रूपक।
9. शुभाशुभ कर्मफलों का वर्णन।	

विषय निर्देशन में बाधाएँ

1. सर्वप्रथम आचारांग के प्रथम श्रुतस्कन्ध में समस्या सामने आई। यह समस्या श्री सूत्र संख्या की-
 क. जर्मन डॉ. शुब्रिंग सम्पादित प्रति, देवनागरी लिपि संस्करण। ख. प्रो. रवजी भाई देवराज सम्पादित, द्वितीय संस्करण।
 ग. आगमोदय समिति, सूत। घ. आचार्य श्री आत्माराम जी महाराज सम्पादित।
 इन सब प्रतियों में प्रथम श्रुतस्कन्ध के सूत्रों की संख्या भिन्न-भिन्न है, अतः प्रत्येक सूत्र का आदि और अन्त समान नहीं है। किस प्रति के सूत्रोंक सही हैं-यह निर्णय करना सामान्यतया कठिन है। जैनागम-निर्देशिका में प्रथम श्रुतस्कन्ध की सूत्र संख्या में एकरूपता नहीं है। अर्थात्- किसी एक प्रति के आधार पर सूत्र संख्या नहीं दी है। एक सूत्रान्तर्गत भिन्न-भिन्न विषयों का निर्देशन वर्णमाला द्वारा किया गया है।

2. सूत्रकृतांग, दशवैकालिक, उत्तराध्ययन आदि में अनेक औपदेशिक गाथाएँ ऐसी हैं जिनमें एक से अधिक विषय हैं, उन सब विषयों का निर्देशन वर्णमाला द्वारा किया गया है।

जिस अध्ययन का आद्योपान्त एक ही विषय है उसका मैंने भी एक ही विषय दिया है। यथा-सूत्रकृतांग अ. 4, 5, 6 का विषय। मुख्य विषय का शीर्षक 12 प्वाइंट हाइट में दिये हैं। यह क्रम जैनागम-निर्देशिका में सर्वत्र है।

3. स्थानांग के सूत्रांक आगमोदय समिति सूत्र की प्रति के अनुसार दिये हैं। इन सूत्रों में अनेक सूत्र ऐसे हैं जिनके अंतर्गत अनेक सूत्र हैं। टीकाकार भी यत्र-तत्र सूत्रों की संख्या का निर्देश स्वयं करते हैं। टीकाकार सम्मत सूत्र-संख्या सम्पूर्ण स्थानांग को जानने के लिए बहुत बड़े उपक्रम की आवश्यकता थी, किन्तु मैं ऐसा न कर सका। फिर भी विषय निर्देशन में बहुत सावधानी बरती है। जहाँ तक हो सका है किसी भी विषय को छोड़ा नहीं है।
4. समवायांग के सूत्रांक 'जैन धर्म प्रसारक सभा भावनगर' से प्रकाशित प्रति के दिये हैं। इस प्रति में प्रत्येक समवाय के सूत्रांक क्रमशः दिये हैं। किन्तु टीकाकार प्रत्येक समवाय में कई सूत्र मानते हैं। जैनागम-निर्देशिका में प्रत्येक सूत्र का विषय निर्देशन किया है।

5. भगवती सूत्र की एकमात्र प्रति पं. बेचरदास जी सम्पादित मेरे सामने है। अब तक प्रकाशित भगवती सूत्र की प्रतियों में सर्वशुद्ध यही संस्करण है। इसके प्रथम भाग में दो शतक हैं, प्रथम शतक की प्रश्नोत्तर संख्या 326 है और द्वितीय शतक की प्रश्नोत्तर संख्या 76 है। तृतीय शतक से प्रत्येक उद्देशक की प्रश्नोत्तर संख्या दी गई है। इसलिए एकरूपता नहीं है। वर्णनात्मक सूत्रों के सूत्रांक और प्रश्नोत्तरांक भिन्न-भिन्न नहीं दिए हैं अतः यह पता नहीं चलता है कि वास्तव में इस उद्देशक में प्रश्नोत्तर कितने हैं और सूत्र कितने हैं। इस प्रति में जहाँ-जाव-एवं-जहा आदि से संक्षिप्त पाठ दिए हैं उनमें प्रश्नांक या सूत्रांक कितने होते हैं? यह अंकित नहीं है इसलिए प्रश्नोत्तरों की निश्चित संख्या जानना सरल नहीं है।

विषय निर्देशन में मैंने इसी प्रति का उपयोग किया है किन्तु प्रश्नोत्तरांकों की एकरूपता नहीं रह सकी।

6. विषय-निर्देशन के लिए जिन प्रतियों का उपयोग किया है उनकी सूची अन्यत्र दी है। अनुवाद एवं टीका के शुद्ध संस्करण आगमों के अब तक अप्राप्य हैं? यही एक बहुत बड़ी कठिनाई विषय-निर्देशन में रही है।

चोरासी आगम-

आगमों की संख्या के सम्बन्ध में तीन प्रमुख मान्यता भेद हैं :-

1. 84 आगम	73 अंतकृद्दशा “अन्य वाचना का” ¹
2. 45 आगम	75 अनुत्तरोपपातिक दशा “अन्य वाचना का” ²
3. 32 आगम	77 द्विगृद्धि दशा
26 उक्तालिक, 30 कालिक, 12 अंग-71	79 स्वप्न भावना
72 आवश्यक ¹	81 तेजोनिर्गम
74 प्रश्नव्याकरण “अन्य वाचना का” ²	83 दृष्टिविष भावना ³
76 बन्ध दशा	पाप फल विपाक के 55 अध्ययन ⁴
78 दीर्घ दशा ²	
80 चारण भावना	
82 आशिविष भावना	
84 कल्याण फल विपाक के 55 अध्ययन	

पैंतालीस आगम-

- 11 अंग
12 उपांग

1. ये 72 नाम नन्दी सूत्र में उपलब्ध है	2. ये 6 नाम स्थानांग सूत्र में उपलब्ध है
3. ये 5 नाम व्यवहार सूत्र में उपलब्ध है	4. यह पचपनवै समवाय में है

- 6 छेद सूत्र-1. व्यवहार। 2. बृहत्कल्प। 3. जीतकल्प। 4. निशीथ। 5. महानिशीथ। 6. दशा श्रुतस्कन्ध।
 6 मूल सूत्र-1. दशवैकालिक। 2. उत्तराध्ययन। 3. नन्दीसूत्र। 4. अनुयोग द्वारा। 5. आवश्यक निर्युक्ति
 6. पिण्डनिर्युक्ति।

10 प्रकीर्णक

45

बत्तीस आगम-

- 11 अंग
 12 उपांग
 4 मूल सूत्र-1. दशवैकालिक। 2. उत्तराध्ययन। 3. नन्दीसूत्र। 4. अनुयोग द्वारा।
 4 छेद सूत्र-1. व्यवहार। 2. बृहत्कल्प। 3. निशीथ। 4. दशा श्रुतस्कन्ध।

31 32 वाँ आवश्यक

जैनागम निर्देशिका के प्रकाशन की पृष्ठभूमि

विश्व के भाषा-साहित्य में प्राकृत भाषा का महत्वपूर्ण स्थान है, प्राकृत भाषा साहित्य के प्रकाशन की स्थिति सही नहीं है और जैनागमों के प्रकाशन की स्थिति देखकर तो मन में ऐसा लगता है कि 'समाज का साक्षर एवं सम्पन्न वर्ग' प्रवचन प्रभावना के प्रमुख अंग आगम साहित्य को प्रमुख न मानने की भयंकर भूल कर रहा है, क्योंकि भगवान महावीर की विश्वकल्याणकारिणी वाणी का प्रचार व प्रसार जैनागमों के विश्वव्यापी प्रचार व प्रसार से ही संभव है।

- क. जर्मन आदि विदेशों के प्रमुख विश्वविद्यालयों में प्राकृत भाषाओं का अध्ययन हो रहा है।
 ख. भारत के कतिपय विश्वविद्यालयों में प्राकृत भाषाओं का अध्ययन हो रहा है।
 ग. अनेक भारतीय विद्वान् जैनागमों के अध्ययन के लिए उत्सुक हैं।
 घ. अनेक भारतीय छात्र जैनागमों के अभिलषित विषयों पर शोध निबन्ध लिखना चाहते हैं, किन्तु जैनागमों का प्राथमिक परिचय प्राप्त करने के लिए कोई पुस्तक सुलभ नहीं है।

बहुत वर्षों पहले गुजराती भाषा में 'प्रवचन किरणवली' नाम की एक पुस्तक प्रकाशित हुई थी, उसका संकलन प्राचीन पद्धति से हुआ था, प्रत्येक गाथा या सूत्र का विषय क्या है? यह उसमें नहीं दिखाया गया है अतः हिन्दी भाषा-भाषी जनता के हित के लिए 'जैनागम-निर्देशिका' के संकलन का आयोजन किया गया है।

अल्प धारणा-शक्ति या अल्प आगम-भक्ति

ह्रास-काल (अवसर्पिणी-काल) के प्रभाव से मानव की धारणा-शक्ति का उत्तरोत्तर ह्रास होने लगा अतः जैनागमों का लेखन प्रारम्भ हुआ और इस मुद्रण-काल के युग में जैनागमों का मुद्रण भी हो रहा है। इस ऐतिहासिक घटनाचक्र में जैनागमों के लेखन का हेतु धारणा-शक्ति का अल्प होना बताया गया है, यह कहाँ तक संगत है? यह शोध का विषय है। अतीत में दुर्भिक्ष के कारण बहुत लम्बे समय तक श्रमण-श्रमणियों जैनागमों का पारायण न कर सके, इसलिए उनका आगम-ज्ञान लुप्त होने लगा था यह ऐतिहासिक सत्य है। किन्तु उस समय श्रुति की विस्मृति का कारण दुर्भिक्ष था-अल्प धारणा-शक्ति नहीं। यद्यपि काल का प्रभाव अनिवार्य है और स्मृति दौर्बल्य की घटना के पीछे भी कुछ तथ्य अवश्य हैं, फिर भी धारणा-शक्ति का ह्रास इतना नहीं हुआ है कि-बिना पुस्तक के हम आगम-ज्ञान को सुस्थिर न रख सकें।

राजस्थानी भाषा के बृहत् काव्य बगड़ावत, तेजाजी आदि वर्तमान में भी राजस्थान के अनेक कृषकों को कण्ठस्थ हैं, वे उन काव्यों का यदा-कदा पारायण भी करते हैं, यद्यपि उन्हें अक्षर-ज्ञान नहीं है, फिर भी उनकी धारणा-शक्ति प्रबल है। इसी प्रकार राजस्थान की महिलाएँ अपने सामाजिक गीतों को सदा कण्ठस्थ रखती हैं। वे सामाजिक प्रसंगों पर उनका पारायण करती रहती हैं। राजस्थानी भाषा के ये बृहत् काव्य और ये गीत अब तक लिपिबद्ध नहीं हुए हैं। कृषकों और स्त्रियों में अब तक भी श्रुत-परम्परा चल रही है। कृषकों और स्त्रियों से तो हमारे पूज्य संयमी श्रमण-श्रमणियों की धारणा-शक्ति निर्बल नहीं होनी चाहिए।

हमारे पूज्य श्रमण-श्रमणियों में आज स्मरण-शक्ति का चमत्कार दिखाने वाले कई शतावधानी और कई सहस्रावधानी हैं। इसलिए अतीत के समान आज भी जैनागमों का ज्ञान कण्ठस्थ करने की शक्ति हमारे पूज्य श्रमण-श्रमणियों में विद्यमान है। यदि आगम-भक्ति अधिक हो तो अतीत के स्वर्ण युग की पुनरावृत्ति असम्भव नहीं है।

पुस्तक रखना अपवाद मार्ग है

पुस्तक परिग्रह है एवं असंयम का हेतु है।' यह असंदिग्ध है। पर अनेक शताब्दियों से हमारे ऐसे संस्कार बन गए हैं कि-पुस्तक हमारे ज्ञान का साधन है। बिना पुस्तक के हम ज्ञानोपार्जन करने में असमर्थ हैं। इसलिए पुस्तक हमारी साधना का एक प्रमुख अंग बन गया है। अतीत में आचार्यों ने पुस्तक या लेखन अपवाद रूप में स्वीकार किया था वह अपवाद रूप आज प्रायः समाप्त हो गया है, यह उचित नहीं है। पुस्तक ज्ञान का साधन है और इस युग में बहुश्रुत होने के लिए पुस्तकों का पठन-पाठन अनिवार्य है। यह मानने में भी किसी को कोई आपत्ति भी नहीं है। फिर भी पुस्तक का विवेकपूर्ण सीमित उपयोग अपवाद रूप में उपयोग आज भी सम्भव है।

1. पोथ्याणु घेण्तेसु असंजमो- दशवैकालिक-अगस्त्यचूर्णी

पुस्तक लेखन और मुद्रण का विरोध

जैनागम जब सर्वप्रथम लिखे गये उस समय लिखने का घोर विरोध हुआ था। विरोध करने वाला संयमनिष्ठ सर्वश्रेष्ठ श्रमण वर्ग ही था। अतः आगम लेखन भी अपवाद रूप में ही स्वीकार किया गया और पुस्तक लेखन एवं पुस्तक के रखने के प्रायश्चित्त का नव विधान¹ हुआ। विरोध करने वाले श्रमण वर्ग की लेखन के विरोध में दी हुई युक्तियाँ² अहिंसा की दृष्टि से सर्वोत्तम हैं। उनका जवाब न किसी के पास पहले था और न आज ही है। युग ने स्वर बदला और पुस्तक लिखने की महिमा³ गई गई। एक दिन जो असंयम का हेतु माना गया था वही संयम⁴ का हेतु मान लिया गया। फिर भी पुस्तक अपवाद रूप में ही ग्रहण किया गया-क्योंकि सभी श्रमण-श्रमणियों की समान धारणा-शक्ति नहीं होती। कुछ अल्पधारणा शक्ति वाले भी होते हैं। उनके लिए पुस्तक रखना उपयोगी था और आज भी उपयोगी है।

लेखन का स्थान मुद्रण ने लिया तो जैनागमों का भी मुद्रण होने लगा और मुद्रण का भी घोर विरोध हुआ।

विरोध करने वालों ने कहा-

‘निर्ग्रन्थ प्रवचन’ के विरोधी मुद्रित प्रतियाँ प्राप्त करके छिद्रान्वेषण करेंगे और यत्र-तत्र पारिभाषिक शब्दों का मनमाना अर्थ करके भ्रान्तियाँ पैदा करेंगे। अपवाद विधानों का रहस्य समझे बिना श्रमण संस्कृति का उपहास करेंगे। किन्तु इन तर्कों में कोई तथ्य नहीं है। आगम लेखन काल से कई शताब्दी पूर्व सात निन्दव हो गये थे। ये सब प्रवचन-निन्दव थे। प्रवचन उड्डाह की परिकल्पना भी बहुत पहले हो चुकी थी। ऐसी स्थिति में प्रकाशन का विरोध करके प्रकाशन से होने वाले असाधारण लाभ से जन साधारण को वर्चित रखना सर्वथा अनुचित है।

1. एक अक्षर लिखने का, एक बार पुस्तक बाँधने का तथा एक पुस्तक रखने का चार लघु प्रायश्चित्त का विधान है
2. पुस्तक पंचक में दी गई युक्तियाँ विचारणीय हैं-

क. जाल में फँसा हुआ पशु या पक्षी	ख. जाल में फँसी हुई मछली	घ. वधियों से घिरा हुआ प्राणी
ग. घानी (तिल आदि पीलने का यंत्र) में पड़ा हुआ तिल कीट		
ङ. दूध आदि तरल पदार्थों में पड़े हुए प्राणी		
च. तेल आदि स्निग्ध पदार्थों में पड़े हुए प्राणी देवयोग से बच जाते हैं किन्तु पुस्तक के बीच में दबा हुआ प्राणी किसी प्रकार बच नहीं सकता।		
3. न ते नरा दुर्गतिमानुबन्ति, न मूकतां नैव जडस्वभावम्।
न चान्धतां बुद्धिविहीनतां च, ये लेखन्तीह जिनस्य वाक्यम्।
4. उवगरण संजमो पोत्थाएसु असंजमो, वज्जणं तु संजमो।
कालपडुच्च चरण-करणट्ठं अब्बोच्छित्तिनिमित्तं गेण्हतस्स संजमो भवति।

‘आगम-अनुयोग’ ग्रन्थराज के प्रकाशन में-

सांडेराव के स्थानकवासी संघ का महत्वपूर्ण योगदान

सांडेराव ऐतिहासिक नगर¹ है। बांकलीवास नगर के एक मोहल्ले का नाम है, स्थानकवासी जैनों की अधिक संख्या इसी मोहल्ले में है और वे सभी पोरवाल हैं। बड़ेवास में भी स्थानकवासी जैनों के कुछ घर हैं। उनमें कुछ घर ओसवाल हैं और कुछ घर पोरवाल हैं।

स्वर्गीय स्वामीजी श्री बख्तावरमलजी महाराज की श्रामण्य-साधना का केन्द्र-सांडेराव नगर।

आप मेरे स्वर्गीय गुरुदेव श्री प्रताप चन्द्रजी म.सा. के गुरुदेव के गुरुभ्राता थे। आपका आगम ज्ञान एवं आत्मबल प्रसिद्ध था। आपने संविग्र शाखा के अनेक मुनियों व साध्वियों को ज्ञान-दान दिया था। आपके श्रामण्य जीवन की अनेक दिव्य चमत्कारी घटनाएँ वृद्ध पुरुष सुनाया करते हैं। आपका जैन-जैनेतर जनता पर समान प्रभाव था। बम्बई क्षेत्र को पावन करने वाले प्रथम स्थानकवासी श्रमण आप ही थे। पंजाब के नाभा, पटियाला क्षेत्र भी आपके चरण-रज से पावन हुए थे, सारा गोड़वाड़ प्रान्त आपकी प्रमुख विहार-भूमि रही, आपका स्वर्गवास इसी ऐतिहासिक नगर में हुआ।

सांडेराव में स्वामीजी महाराज के प्रमुख उपासक-

1. **शा. धनरूपमल जी हीराजी पुनमिया, बड़ावास,**

आपने अपने एक स्व. प्रिय पुत्र की स्मृति में बांकलीवास में विशाल धर्म-स्थानक का निर्माण करवाया, आपके सुपुत्र श्री ज्ञानमलजी और श्री राजमलजी विद्यमान हैं, दोनों भाईयों का धर्म प्रेम व गुरुभक्ति प्रशंसनीय है, एक निजी नोहरे का सार्वजनिक कार्य के हित में उपयोग करके दोनों भाई पुण्योपासक कर रहे हैं।

2. **शा. पोमाजी दलचन्दजी, बांकलीवास**

आप स्वामीजी महाराज के परम भक्त, सरल स्वभावी एवं परोपकारी श्रावक थे, आपका बहुत बड़ा परिवार इस समय विद्यमान है, जो चोवटिया परिवार के नाम से प्रसिद्ध है, आपके सारे परिवार की धर्म पर दृढ़ श्रद्धा है।

3. **शा. प्रतापजी कपूरजी, बांकलीवास,**

आप दृढ़धर्मी एवं विवेकी श्रावक थे, आपके चार पुत्रों में से तीन पुत्र इस समय विद्यमान हैं, बड़े पुत्र श्री हिममतमलजी आपके पहले ही स्वर्गस्थ हो गये, आपके चारों पुत्रों का परिवार धर्मप्रेमी एवं सेवाभावी है।

1. सैंडर गच्छ की उत्पत्ति से इस नगर का संबंध रहा है, ऐसे ऐतिहासिक उल्लेख हैं। यहां श्वे. जैनों के 400 घर हैं, दो जैन मंदिर हैं, दो जैन स्थानक हैं, राजकीय चिकित्सालय और प्राथमिक शाला है।

मेरे श्रमण-जीवन की जन्मभूमि,

आज से तीन युग पूर्व मेरे श्रमण-जीवन का जन्म इसी नगर में चतुर्विध संघ के समक्ष हुआ था, अतः यहाँ के सभी धार्मिक जन मेरे प्रति अगाध स्नेह एवं पूज्य भाव रखते हैं। मेरी शिक्षा-दीक्षा में यहाँ का संघ प्रमुख रहा है।

सार्वजनिक हित के लिए शिक्षण-शाला की स्थापना

स्वर्गीय गुरुदेव श्री के प्रवचनों से प्रभावित होकर संघ ने उदारता दिखाई और राजस्थान शिक्षा विभाग को बहुत बड़ी अर्थराशि अर्पित कर प्राथमिक शाला प्रारम्भ करवाई। कुछ समय से शिक्षक वर्ग को माध्यमिक शाला की आवश्यकता प्रतीत हो रही थी, किन्तु स्थान की कमी थी, इसके लिए स्थानीय जैन दानवीरों ने उदारता दिखाकर चार विशाल कमरे बनवा दिए हैं, इनकी उदारता प्रशंसनीय है।

‘आगम अनुयोग’ प्रकाशन की स्थापना,

पैतालीस आगमों को चार अनुयोगों में विभक्त करना और प्रत्येक विषय का अनुयोगानुसार वर्गीकरण करना समय-साध्य एवं श्रम-साध्य रहा, संकलन कार्य में ही कई वर्ष बीत गये। श्रद्धेय कवि श्री तथा पं. दलसुख भाई मालवणिया से दिशा निर्देशन मिला और धैर्यपूर्वक कार्यरत रहने की प्रेरणा मिली। गणितानुयोग का अनुवाद डॉ. मोहनलालजी मेहता ने किया, चरणानुयोग का अनुवाद पं. शोभाचन्द्रजी भारिल्ल ने किया, इस प्रकार कुछ कार्यभार हल्का तो हुआ, किन्तु प्रकाशन पर्यन्त सारा उत्तरदायित्व मुझे निभाना था, इसलिए मन हल्का नहीं हो पा रहा था।

चारों अनुयोगों के प्रकाशन का कार्य सामान्य न था-बहुत बड़ी अर्थ राशि इसके लिए अपेक्षित थी, दो वर्ष पर्यन्त संकलित संग्रह पड़ा रहा। देहली आने पर धर्मस्नेही सज्जन ताराचन्द प्रतापजी दर्शनार्थ आये, आगम अनुयोग के प्रकाशन के संबंध में विचार-विनिमय हुआ, फलस्वरूप “आगम अनुयोग प्रकाशन” की स्थापना हुई। आपका सहयोग प्रारम्भ से ही था, अनुवाद कार्य भी आपकी ही प्रेरणा से सम्पन्न हुआ था, इसलिए प्रकाशन कार्य सम्पन्न करवाने की आपके मन में बड़ी लगन है, आपके उत्साह को देखकर शा. हिम्मतमल प्रेमचन्दजी, मेघराज जसराज जी, फूलचन्द चुन्नीलाल जी, निहालचन्द कपूरजी आदि ने प्रकाशन व्यय के लिए विपुल वित्तराशि का संग्रह करवाने में तथा प्रकाशन कार्य में पूर्ण सहयोग देने की दृढ़ प्रतिज्ञा की है, आप सब भ. महावीर के प्रवचनों की प्रभावना करने वाले सज्जन हैं।

तपस्वी जी श्री गौरीलालजी महाराज का अनुपम सेवाभाव

तपस्वीजी स्व. दिवाकर जी महाराज के प्रशिष्य हैं और तपस्वी श्री नेमीचन्दजी म. के शिष्य हैं। आपने अतीत में बहुत तपश्चर्या की है। वर्तमान में आप ज्योतिष एवं मंत्र-शास्त्र विशारद वयोवृद्ध स्वामी जी श्री कस्तूरचन्दजी म. के आज्ञानुवर्ती हैं। मेरे साथ आपका तृतीय वर्षावास है, आपके उदार

सहयोग से ही मैं इस पुस्तक के तथा आगम अनुयोग ग्रंथराज के संकलनादि कार्यों में संलग्न रह सका हूँ। मेरे जीवन में आपका यह सहयोग चिरस्मरणीय रहेगा, वयोवृद्ध होने पर भी आपका अप्रमत्तभाव एवं सहस आदरणीय व अनुकरणीय है।

आगमज्ञ विद्वानों से विनम्र अनुरोध,

अन्त में आगमज्ञ विद्वानों से मेरा विनम्र अनुरोध है कि वे जैनागम निर्देशिका का आद्योपात्त निरीक्षण करके संशोधनार्थ सूचनाएं भेजें, प्राप्त सूचनाओं का उपयोग द्वितीय संस्करण में अवश्य किया जायगा। प्रस्तुत पुस्तक में कई कमियाँ रह गई हैं जिनका अब मैं स्वयं अनुभव कर रहा हूँ फिर भी ऐसी कई भूलें हो सकती हैं, जिनकी ओर मेरा ध्यान न गया हो।

ये नाम के चिदिह नः प्रथयन्त्यवज्ञां ।

जानन्तु ते किमपि तान् प्रति नैष यत्नः ॥

विनम्र श्रुत सेवक

मुनि कन्हैयालाल 'कमल'

याद रखने योग्य बातें

पौथी जतना राखिये, तेल अगि सूँ दूर।

मूरख हाथ मत दीजिये, जोखम खाय जरूर॥

पुस्तक पढ़ मत फेंकिये, उससे लीजे ज्ञान।

ज्ञान हृदय धारण किये, रहे आपकी शान॥

सावधानियाँ

किताब में मुँहपत्ति न रखें।

किताब को जमीन पर रखकर न पढ़ें।

किताब के पन्ने न मोड़ें।

किताब को तेल-अगि से दूर रखें।

किताब को बालक और मूर्ख के हाथ में न दें।

पन्ने पलटते समय थूँक न लगावें।

जैनगम-निर्देशिका

आगम सूची

क्र.सं.	आगम नाम	पृष्ठ सं.	क्र.सं.	आगम नाम	पृष्ठ सं.
1.	आचारांग	1	24.	दशवैकालिक	557
2.	सूत्रकृतांग	40	25.	उत्तराध्ययन	574
3.	स्थानांग	64	26.	नन्दीसूत्र	605
4.	समवायांग	136	27.	अनुयोगद्वार	609
5.	भगवती	173	28.	दशाश्रुत स्कंध	626
6.	ज्ञाताधर्मकथा	314	29.	बृहत्कल्प	628
7.	उपासकदशा	347	30.	व्यवहार	632
8.	अन्तकृद्दशा	356	31.	निशीथ	636
9.	अनुत्तरौपपातिकदशा	366	32.	आवश्यक	657
10.	प्रश्नव्याकरण	370	33.	कल्पसूत्र	661
11.	विपाक	375	34.	जीतकल्प	675
12.	औपपातिक	388	35-44.	दस प्रकीर्णक	676
13.	राजप्रश्रीय	398	45.	पिण्ड नियुक्ति	695
14.	जीवाभिगम	412	46.	परिशिष्ट नं. 1 32 आगमों की अध्ययन, उद्देशक, सूत्रांक सूची	708
15.	प्रज्ञापना	458	47.	परिशिष्ट नं. 2 आगमों का अध्ययन काल सूचक तालिका	755
16.	जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति	498	48.	परिशिष्ट नं. 3 32 आगमों के 10 द्वार	746
17-18.	चन्द्र-सूर्यप्रज्ञप्ति	539	49.	परिशिष्ट नं. 4 विषय-निर्देशन में प्रयुक्त आगमों व ग्रन्थों की सूची	747
19-23.	निरयावलिकादि	549	50.	उपाध्याय प्रवर द्वारा सम्पादित चार अनुयोग की सूची	748

णमो चरित्तस्स

चरणानुयोग प्रधान आचारांग सूत्र

श्रुत स्कंध	2	1. प्रथम श्रुतस्कंध	2. द्वितीय श्रुतस्कंध
अध्ययन	25	अध्ययन 9	अध्ययन 16
उद्देशक	85	महापरिज्ञा 7 वां अध्ययन लुप्त	उद्देशक 34
चूलिका	5	उद्देशक 51(44)	चूलिका 4
पद	18000	सूत्र संख्या 228	सूत्र संख्या 179
उपलब्ध पाठ	2500 श्लोक परिमाण	गाथा संख्या 110	गाथा संख्या 39
मूल पाठ गद्य सूत्र संख्या	401		
पद्य गाथा संख्या	154		

1 आचारांग सूत्र विषय सूची

प्रथम श्रुतस्कन्ध

प्रथम शास्त्र परिज्ञा अध्ययन

सूत्रांक	प्रथम जीव अस्तित्व उद्देशक		प्रथम जीव अस्तित्व उद्देशक
1.	जीव का अस्तित्व बोधः आत्म संज्ञान	14.	क. हिंसा ग्रंथी मोह-मरण व नरक का कारण
2.	पूर्व भव के विषय में अज्ञान	15.	ख. पृथ्वीकाय हिंसक अन्य अनेक जीवों का हिंसक
3.	आत्मवादी ही लोकवादी-कर्मवादी और क्रियावादी		क. पृथ्वीकाय को वेदना बोध-जन्मान्ध व्यक्ति के
4.	क. करण से तीनों काल की क्रिया		छेदन-भेदन का उदाहरण
5.	ख. आश्रव-संवर बोध		ख. पृथ्वीकाय को वेदना बोध-स्वस्थ मनुष्य के पैर
6.	क्रिया जानने व त्यागने योग्य		आदि बत्तीस अवयवों के छेदन-भेदन का उदाहरण
7.	क्रिया को न त्यागने वाले को अनेक दुःखों का अनुभव		ग. पृथ्वीकाय को वेदना बोध-मूर्छित मनुष्य के छेदन-भेदन का उदाहरण
8.	कर्म बंध परिज्ञा- कर्म समारंभ के आठ हेतु	16.	हिंसक को पृथ्वीकाय वेदना का अज्ञान व अहिंसक को वेदना का ज्ञान
9.	लोक में कर्म समारंभ जानने व त्यागने योग्य	17.	पृथ्वीकाय की हिंसा से त्रिकरण विरत होने का उपदेश
10.	कर्म समारंभ को जानने वाला मुनि परिज्ञातकर्मा	18.	पृथ्वीकाय की हिंसा का त्यागी ही परिज्ञातकर्मा मुनि
11-12.	द्वितीय पृथ्वीकाय उद्देशक		तृतीय अपृकाय उद्देशक
13.	पृथ्वीकायिक की सजीवता की सिद्धि	19.	सरल एकनिष्ठ और कपट रहित ही मोक्षार्थी अणुगार
	हिंसा के त्याग का उपदेश	20.	श्रद्धा से संयम पालन, शंका त्याग
	पृथ्वीकाय की हिंसा के हेतु	21.	वीर पुरुष संयम के प्रति समर्पित

22. अप्काय को सजीव जानकर उसे अभय करने का निर्देश 33. क. संयतियों, यतियों व सदा अप्रमत्त वीरों द्वारा यह अहिंसक मार्ग दृष्ट है
23. अप्काय के आश्रित अनेक जीवों की हिंसा
24. अप्कायिक हिंसा अपने अहित और अबोध के लिए
25. क. अप्कायिक हिंसा कर्म ग्रंथ है, मोह है, मरण है और नरक है
- ख. अप्कायिक जीवों का हिंसक अन्य अनेक जीवों का हिंसक
26. क. अप्काय के विघातक अनेकों शस्त्र
- ख. अप्काय की हिंसा से अदत्तादान
27. अप्काय के संबंध में अन्य दार्शनिकों की मान्यताएं
28. अप्काय हिंसा विरत मुनि
29. क. अप्काय के हिंसक को वेदना का अज्ञान
- ख. अप्काय के अहिंसक को वेदना का ज्ञान
30. अप्काय की हिंसा से विरत होने का उपदेश
31. अप्काय परिज्ञा वाला ही मुनि है
- चतुर्थ अग्निकाय उद्देशक**
32. क. अग्निकायिक जीवों की सजीवता
- ख. अग्निकायिक जीवों की वेदना का ज्ञाता
- ग. अग्निकायिक जीवों की सजीवता के अपलाप का निषेध
33. क. संयतियों, यतियों व सदा अप्रमत्त वीरों द्वारा यह अहिंसक मार्ग दृष्ट है
- ख. रांधना, पकाना आदि अग्निगुणों का अर्थ हिंसक अग्निकाय की हिंसा से विरत मुनि
34. क. अग्निकाय की हिंसा की परिज्ञा
35. ख. अग्निकाय की हिंसा के हेतु एवं फल
36. अग्निकाय की हिंसा के फल का ज्ञाता
37. अग्निकाय का हिंसक अन्य अनेक जीवों का हिंसक
38. क. अग्निकाय के अहिंसक को वेदना का ज्ञान
- ख. अग्निकाय की हिंसा से विरत होने का उपदेश
39. अग्निकाय की परिज्ञा वाला ही मुनि है
- पंचम वनस्पतिकाय उद्देशक**
40. व्रती ही अणगार है
41. क. संसार परिभ्रमण का कारण विषयासक्ति
- ख. असंयममय जीवन जीने वाला प्रमत्त धर्म शासन से बाहर
42. वनस्पतिकाय हिंसा वर्जन
43. वनस्पतिकाय हिंसा के कारण
44. वनस्पतिकाय का हिंसक अन्य अनेक जीवों का हिंसक
45. मनुष्य शरीर एवं वनस्पति शरीर की समानता

46.	वनस्पतिकाय के अहिंसक को वेदना का ज्ञान	54.	त्रसकाय की हिंसा से विरत होने का उपदेश
47.	वनस्पतिकाय की हिंसा से विरत होने का उपदेश	55.	त्रसकाय की परिज्ञा वाला ही मुनि है
48.	वनस्पतिकाय की परिज्ञा वाला ही मुनि है		सप्तम वायुकाय उद्देशक
	षष्ठ त्रसकाय उद्देशक	56-57.	क. वायुकायिक हिंसा से निवृत्त होने में समर्थ साधक
49.	क. अंडज-पोतज आदि त्रस जीवों का संसार		ख. आत्म तुला विवेक
	ख. सभी प्राणियों -यावत्- सत्त्वों को असाता दुःखदायी, साता और सुख की चाह		ग. वायुकाय का हिंसक अन्य अनेक जीवों का हिंसक
50.	त्रसकाय हिंसा निषेध	58.	वायुकायिक जीव हिंसा के कारण
51.	क. त्रसकायिक जीव हिंसा के कारण	59.	वायुकायिक हिंसा से विरत मुनि
	ख. त्रस जीवों का लक्षण	60.	क. वायुकाय से संपातिम जीवों का संहार
52.	क. त्रसकायिक हिंसा कर्म ग्रंथि है, मोह है, मरण है और नरक है	61.	ख. वायुकाय की हिंसा से विरत होने का उपदेश
	ख. त्रसकायिक जीवों का हिंसक अन्य अनेक जीवों का हिंसक	62.	वायुकाय के हिंसक को प्रचूर कर्म बंध
	ग. चर्म-मांस आदि के लिए त्रस जीवों की हिंसा		क. विरति बोध
	घ. त्रसकाय की हिंसा के विभिन्न प्रयोजन		ख. छह काय की हिंसा का सर्वथा त्यागी ही मुनि है
	ङ. निष्प्रयोजन, सप्रयोजन, प्रतिशोध व प्रतिकार की भावना से हिंसा		द्वितीय लोक विजय अध्ययन
53.	त्रसकाय के हिंसक को वेदना का अज्ञान व अहिंसक को वेदना का ज्ञान		प्रथम स्वजन उद्देशक
		63.	संसार का मूल कारण-विषयासक्ति
		64.	जीवन की अशरणता का परिबोध
		65.	प्रमाद परिवर्जन
		66.	अप्रमाद का उपदेश (अनित्य भावना)
		67.	परिग्रह शरणदाता नहीं (अशरण भावना)

68.	आत्म हित की साधना	81.	चतुर्थ भोगासक्ति उद्देशक
69-70.	द्वितीय अदृढता उद्देशक	81.	विषयासक्त प्राणी की दुर्दशा
71.	असति एवं लोभ का त्याग	82.	दुःख व सुख प्रत्येक आत्मा का अपना-अपना
72.	लोभ पर अलोभ से विजय	83-84.	आसक्ति ही शल्य है
73.	अर्थ लोभी की वृत्ति	85.	विषयवासना -महामोह
74.	हिंसा के विविध प्रयोजन	86.	क. संयम से उद्विग्न नहीं होता वही प्रसंशनीय
75.	क. हिंसा निषेध का उपदेश		ख. भिक्षाचरी में समभाव
	ख. हिंसा त्याग व रत्नत्रयी आराधना-यह आर्य मार्ग		पंचम लोकनिश्रा उद्देशक
	तृतीय मद निषेध उद्देशक	87.	सन्निधि- सन्निचय कर्म समारंभ का कारण
76.	क. गोत्र मद निषेध	88.	क. अणगार के तीन विशेषण
	ख. उच्च गोत्र प्राप्त होने पर हर्षित व नीच गोत्र प्राप्त होने पर दुःखी होने का निषेध	89.	ख. शुद्ध आहार की एषणा
	क. प्रमादजन्य दोष		क. वस्त्र -पात्र- कंबल -पादप्रोक्षण, स्थान, कटासन
	ख. अंधापन -यावत्- कोढ़ीपन आदि की प्राप्ति-प्रमाद (कर्म) से		व आहार आदि की अनासक्ति
	ग. प्रमाद से ही भिन्न योनियों में जन्म व दुःखों का भोग		ख. आहार आदि मिलने पर हर्षित व न मिलने पर
77-78.	परिग्रह जन्य दोष	90-91.	दुःखी होने का निषेध
79.	क. परिग्रह से दुःख वृद्धि	92.	ग. आहार संग्रह का निषेध
	ख. धन अस्थिर और नाशवान	93.	काम भोग विरति
80.	उपदेश का सच्चा पात्र	94.	देह की असारता का बोध
			काम भोग व परिग्रह में आसक्त-वह दुःखी
			सावद्य चिकित्सा का निषेध

षष्ठ अममत्व उद्देशक		षष्ठ अममत्व उद्देशक	
95.	संबुद्ध साधक पाप करता नहीं, करवाता नहीं (अनुमोदन भी नहीं करता)	ख. बालजीव दुःखों का शमन नहीं कर पाता	तृतीय शीतोष्णीय अध्ययन
96.	क. एक काय के आरंभ से छ काय का आरंभ ख. अति प्रमादी का अनेक योनियों में भ्रमण	106.	प्रथम भावसुप्त उद्देशक क. अज्ञानी सदा सुप्त व ज्ञानी सदा जागृत ख. अज्ञान (दुःख) अहित के लिए ग. षड्जीवनिकाय के शस्त्रों से उपरत
97.	ममत्व का त्यागी ही मुनि		
98-99.	रति - अरति विवेक	107.	दुःख मुक्ति का उपाय-अरति-रति-त्याग
100.	आज्ञा का अनाराधक	108.	क. बुढ़ापे और मृत्यु के वश पड़ा हुआ मूर्ख धर्म नहीं जानता
101.	क. आज्ञा का आराधक ख. कर्म दुःख का कारण ग. अनन्य दर्शी और अनन्याराम क. उपदेष्टा कैसा हो?		
102.	ख. धर्मोपदेश की विधि जाने बिना धर्मकथा करना श्रेयस्कर नहीं ग. श्रोता किस सिद्धांत का है यह जानना धर्मोपदेशक के लिए आवश्यक सभी दिशाओं में विवेक के साथ चलने वाला हिंसा-स्थान से लिप्त नहीं होता हिंसा व लोक संज्ञा का परित्याग क. उपदेश-द्रष्टा के लिए आवश्यक नहीं करता	109.	काम भोगों के प्रति अप्रमत्त व पापकर्मी से उपरत ही आत्म गुप्त
103.		110.	क. कर्म (हिंसा) से मुक्त के लिए कोई व्यवहार नहीं ख. कर्म - राग द्वेष का परित्याग लोक संज्ञा का त्याग
104.		111.	द्वितीय दुःखानुभव उद्देशक
105.		112.	क. जन्म-जरा के दुःख को जानकर अपने सुख का पर्यालोचन कर ख. समत्वदर्शी पाप हिंसा का आचरण नहीं करता

113.	क. स्नेहपाश के बंधन को तोड़ ख. कामभोगों में आसक्त व्यक्ति द्वारा कर्मों का संचय और पुनः पुनः जन्म धारण	125. 126. 127.	मित्र-अमित्र विवेक आत्म निग्रह क. सत्य ग्रहण की प्रेरणा ख. दुःखों से मुक्ति
114.	हास्य विनोद से प्राणियों के वध व वैर वृद्धि		
115.	परम मोक्ष पद को जानकर जो पापों में आतंक देखता है वह पाप कर्म नहीं करता		चतुर्थ कषाय वमन उद्देशक क. कषाय विजय
116.	संयमी आत्मा की विशेषताएं	128.	ख. एक का ज्ञाता वह सबका ज्ञाता
117.	सत्य में स्थिर रहने वाले मेधावी के पापकर्मों का क्षय	129.	क. प्रमत्त को भय, अप्रमत्त को अभय
118.	क. असंयत की व्याकुल चित्तवृत्ति ख. चलनी को पानी से भरने का उदाहरण		ख. कषाय त्याग का फल ग. एक को झुकाना, बहुतों को झुकाना घ. संयम से उत्कृष्ट कुछ नहीं
119.	क. विषय भोगों की निःसारता		कषाय त्यागी की पहचान
120.	ख. हिंसा का त्याग त्रिकरण से क. कषायों की भयंकरता	130. 131.	तीर्थंकरों के उपदेश में श्रद्धा रखने वाला मेधावी
121.	ख. विषय वासनाओं को छिन्न-भिन्न करने की प्रेरणा पापों से विरत रहने की प्रेरणा		चतुर्थ सम्यक्त्व अध्ययन प्रथम सम्यक्वाद उद्देशक
122.	क. अप्रमाद का उपदेश ख. अहिंसा पालन की प्रेरणा	132. 133.	सम्यग्वाद -अहिंसा त्रैकालिक तीर्थंकरों द्वारा प्रतिपादित क. अहिंसा धर्म ही सत्य, नित्य और शाश्वत धर्म है ख. धर्म के आचरण के लिए शक्ति को नहीं छिपाने की प्रेरणा
123.	समता दर्शन		
124.	आत्मा का अतीत और भविष्य		ग. लौकिकपणा निषेध

घ. भोगी का जन्म-मरण	145.	क. सम्यक्त्व प्राप्ति
ङ. अप्रमाद का उपदेश		ख. आश्रव से निवृत्ति की प्रेरणा
द्वितीय धर्मप्रवादी परीक्षा उद्देशक	146.	सर्वज्ञ को कोई उपाधि नहीं
क. सम्यक्ज्ञान-आश्रव-परिश्रव चर्चा		पंचम लोकसार आवंती अध्ययन
ख. आश्रवों का सेवन न करने की प्रेरणा		प्रथम एकचर उद्देशक
ग. धर्म में अप्रमादी बनें	147.	क. काम भोग तथा जीवन की निःसारता
घ. मृत्यु अवश्यंभावी है		ख. षड्जीवनिकाय की हिंसा करने वाले की
जन्म-मरण नरक व तिर्यच में		षड्जीवनिकाय में उत्पत्ति
आर्य-अनार्य का सिद्धान्त	148.	क. अज्ञानी जीव की मोहमूढ़ता
अहिंसा की परिभाषा		ख. कामनाओं से निवृत्त पुरुष मृत्यु से दूर व मोक्ष के
तृतीय अनवद्य तप उद्देशक		समीप पहुंचता है
सम्यक् तप-दुःख एवं कर्मक्षय-विधि		ग. कुशाग्र बिन्दु का उदाहरण
धुनिये के समान अपने कर्म शरीर को प्रकम्पित कर डालने		घ. मोह से जन्म -मरण
अर्थात् धुन देने की प्रेरणा	149.	क. संशय से संसार का ज्ञान
दुःख क्रोध मूलक है		ख. मैथुन सेवन कर झूठ बोलना-देहरी मूर्खता
चतुर्थ संक्षेप वचन उद्देशक		ग. काम भोगों का त्याग
क. संयम में पुरुषार्थ	150.	आरंभ विषय कषाय पद
ख. संयमी अनिवृत्तामी मुनियों का मार्ग अति कठिन	151.	क. अप्रशस्त एकाकी चर्या के दोष
ग. ब्रह्मचर्य की महिमा		ख. अविद्या से मोक्ष मानने वाले का संसार भ्रमण
मोह की भयंकरता	144.	

द्वितीय विस्त मुनि उद्देशक

152. क. अप्रमाद का मार्ग
 ख. सम्यक् प्रव्रज्या
 ग. अप्रमादी के लिए प्रत्येक क्षण महत्वपूर्ण
 क. शरीर की अनित्यता
 ख. अनारम्भजीवी साधक का लक्षण
 154-156. परिग्रह त्याग की प्रेरणा

तृतीय अपरिग्रह उद्देशक

157. अपनी शक्ति को बिना छिपाये मोक्ष
 मार्ग पर चलने की मुनि धर्म की प्रेरणा
 158. तीन प्रकार के साधक
 159-160. अंतर लोक का युद्ध
 161. सम्यक्त्व मुनित्व की एकता

चतुर्थ अव्यक्त उद्देशक

162. क. दोष युक्त एकल विहार
 ख. चर्या विवेक
 163. क. कर्म परिणाम से बंध और मुक्ति
 ख. अप्रमादपूर्वक किये गये यथोचित प्रार्थश्चित्त से
 साम्प्रायिक कर्म बंध का क्षय
 164. क. ब्रह्मचर्य विवेक

ख. स्त्री के संसर्ग का निषेध

- ग. निःसार आहार, अल्पाहार, कायेत्सर्ग, अनशन व
 ग्रामानुग्राम विहार-स्त्री से विरक्त होने के उपाय
 घ. स्त्री सुख से पूर्व या पश्चात् कष्ट अवश्यभावी है
 165. ब्रह्मचारी के लिए-स्त्री कथा, अंगोपांग दर्शन, ममत्व,
 बातचीत, स्त्री अभिलाषा आदि का निषेध

पंचम हृदोपम उद्देशक

166. आचार्य-जलाशय की उपमा
 167-168 सत्य में दृढ़ श्रद्धा
 169. सम्यक्-असम्यक् विवेक
 170. अहिंसा की व्यापक दृष्टि
 171. आत्मा ही विज्ञाता है

षष्ठ उन्मार्ग वर्जन उद्देशक

- 172-173. क. आज्ञा धर्म का पालन
 ख. आचार्य (गुरु) के तत्वावधान में रहना
 ग. परिषहों-उपसर्गों-विघ्न बाधाओं व घातिकर्मों को
 पराजित करने वाला ही स्वावलम्बी
 174-175. आसक्ति त्याग के उपाय
 176. मुक्तात्मा का स्वरूप

षष्ठ धूत अध्ययन**प्रथम स्वजन विधूनन उद्देशक**

177.	सम्यग्ज्ञान का आख्यान	185.	भावनन
178.	क. मोहाच्छन्न जीव की करुणदशा ख. शैवाल व कमलाच्छादित जलाशय और कूर्म का उदाहरण ग. वृक्ष का उदाहरण क. कृत कर्मों का फल ख. सोलह महारोग क. भाव अंधकार ख. लोक में महान् भय ग. सावद्य चिकित्सा त्याग की प्रेरणा	186.	एकलविहार प्रतिमाधारी
		187.	तृतीय उपकरण शरीर विधूनन उद्देशक क. उपकरण लघुता ख. द्रव्य और भाव लाघवता प्रज्ञा का प्रभाव-कृश शरीर क. धर्म को असंदीन द्वीप की उपमा ख. पक्षिशिशु की तरह शिष्य का पालन -संवर्धन
179.		188.	
		189.	चतुर्थ गौरवत्रिक विधूनन उद्देशक ज्ञान ऋद्धि का गर्व, रस गर्व, साता गर्व क. दोहरी मूर्खता ख. पाप श्रमण का जन्म-मरण
180.		190.	
		191.	
		192-194.	अहंकारी की कुचेष्टाएं संयम का उपदेश
181-182.	क. धूतवाद का व्याख्यान ख. माता-पिता के सम्पर्क से लेकर अभिनिष्क्रमण तक के विकास की विभिन्न दशाएं ग. धूत बनने का दुर्गम व दुष्कर क्रम	195.	पंचम उपसर्ग सहन विधूनन उद्देशक क. तितिक्षु धूत का धर्म कथन ख. धर्म व्याख्यान कर्ता की योग्यताएं ग. धर्मोपदेश क्यों, कैसे और किसको? घ. धर्मोपदेशक श्रोता की अवज्ञा न करे ङ. मुनि को असंदीन द्वीप की उपमा
183.	सर्व संग परित्यागी धूत का स्वरूप	196-198.	
184.	क. विषय विस्तिरूप उत्तरवाद ख. संयमी के लक्षण		

च. भिक्षु की संयम साधना	208.	समनोज्ञ को आहारादि देने का विधान
छ. मरण (आत्म शत्रुओं के साथ आत्मा का संग्राम)		तृतीय अंगचेष्टा भाषित उद्देशक
ज. पारगामी मुनि (पादपोषगमन) मरण	209.	क. दीक्षा मध्यम अवस्था में
सप्तम महापरिज्ञा अध्ययन ¹		ख. गृहवास विमोक्ष
अष्टम विमोक्ष अध्ययन		ग. समभाव में धर्म
प्रथम समनोज्ञ विमोक्ष उद्देशक	210.	अकारण आहार विमोक्ष
समनोज्ञ का असमनोज्ञ के साथ व्यवहार	211.	शीत से कामित भिक्षुओं को देखकर गृहस्थ की आशंका
क. असमनोज्ञ का आचार -विचार विमोक्ष	212.	अग्निकाय का सेवन अनाचरणीय
ख. अन्यतीर्थिकों का कथन अहेतुक		चतुर्थ वेदानसादि मरण उद्देशक
मतिमान-माहन प्रवेदित धर्म	213	क. तीन वस्त्र और एक पात्रधारी श्रमण का आचार
क. धर्म का आधार	214	ख. चौथा वस्त्र लेने का संकल्प न करें
ख. तीन याम (महाव्रत)		क. तीन वस्त्र न हो तो निर्दोष वस्त्र ले
दण्ड समारंभ विमोक्ष		ख. जैसे वस्त्र मिले वैसे ले
द्वितीय अकल्पनीय विमोक्ष उद्देशक		ग. वस्त्रों को धोने व रंगने का निषेध
औद्देशिक आदि छ दोष सहित आहार, वस्त्र, पात्र व वसति		घ. धोए हुए व रंगे हुए वस्त्र पहनने का निषेध
ग्रहण करने के निषेध के हेतु		ङ. अन्य ग्राम जाते समय वस्त्र छिपाने का निषेध
औद्देशिक आदि दोष जानने के हेतु		च. ग्रीष्म ऋतु आने पर जीर्ण वस्त्र डाल दे (परठ दे)
उपसर्ग सहन (मौन विधान)		छ. आवश्यकता हो तो अल्प वस्त्र रखे
असमनोज्ञ को आहारादि देने का निषेध		ज. अचेलक बने
		झ. उपकरण लाघव तपश्चर्या है

1. यह अध्ययन अनुपलब्ध है।

१ आचारंग सूत्र विषय सूची		श्रुत.१, अ.८, उ.४-८, अ.९, उ.१, सूत्र २१५-२५९	
२१५	ज. सचेल-अचेल अवस्था में समत्व भाव रखे असह्य शीतादि व स्त्री आदि का उपसर्ग होने पर वैहानस-मरण मेरे	२२६ २२७	अचेल-तप क. अभिग्रह एवं वैयावृत्य प्रकल्प ख. वैयावृत्य के चार भागे
२१६-२१७	पंचम रत्नान-भक्त-परिज्ञा उद्देशक	२२८	पादपोषगमन मरण की विधि
२१८	दो वस्त्र और एक पात्रधारी श्रमण का आचार		अष्टम भक्त-इंगित पादपोषगमन मरण उद्देशक
२१९	अस्वस्थ एवं अशक्त होने पर भी दोष युक्त अभिहृत आहारदि न ले	२२९	आनुपूर्वी अनशन
	क. रत्नान वैयावृत्य का अभिग्रह	२३०-२३९	भक्तप्रत्याख्यान अनशन तथा संलेखना विधि
	ख. वैयावृत्य (सेवा) के चार भागे	२४०-२४६	इंगित मरण रूप विमोक्ष
	ग. मरण पर्यन्त अभिग्रह का दृढ़ता से पालन करे	२४७-२५३	पादपोषगमन अनशन रूप विमोक्ष
२२०-२२१	षष्ठ एकत्व भावना इंगित मरण उद्देशक		नवम उपधान श्रुत अध्ययन
२२२	एक वस्त्र और एक पात्रधारी श्रमण का आचार	२५४	प्रथम चर्या उद्देशक
२२३	परसहाय विमोक्ष-एकत्व अनुप्रेक्षा के रूप में	२५५	दीक्षा के अनन्तर भ. महावीर का हेमन्त ऋतु में विहार
२२४	आहार में अस्वादवृत्ति		भ. महावीर का देवदूष्यवस्त्र-धारण पूर्व तीर्थकरों का अनुसरण मात्र था
	क. अस्वस्थ एवं अति अशक्त होने पर “इंगित मरण” से मरण	२५६	भ. महावीर को चार मास पर्यन्त भ्रमर आदि जन्तुओं का उपसर्ग रहा
	ख. “इंगित मरण” का महत्व	२५७	भ. के स्कंध पर तेरह मास देवदूष्य वस्त्र रहा, पश्चात् वे अचेलक हो गये
२२५	सप्तम पडिमा पादपोषगमन उद्देशक		भ. महावीर को आक्रोश परीषह एवं वध परीषह हुआ
	अचेल परीषह और लज्जा परीषह न सह सके तो एक कटी वस्त्र लेने का विधान	२५९	भ. महावीर को स्त्रियों के द्वारा अनेक उपसर्ग हुए

260-263	भ. महावीर का मौन विहार	280	भ. महावीर की तेरह वर्ष पर्यन्त साधना
264	भ. महावीर ने दो वर्ष पूर्व ही सचित्त का त्याग कर दिया था	281-282	भ. महावीर के निद्रा त्याग
		283	भ. महावीर के सर्पादि का उपसर्ग
265	भ. महावीर ने छ काय के आरम्भ का परित्याग कर दिया था	284	भ. महावीर को चोर-जार आदि पुरुषों द्वारा उपसर्ग
		285-288	भ. महावीर द्वारा स्थान परीषह सहन करना
266	भ. महावीर द्वारा पुनर्जन्म का प्ररूपण	289-291	भ. महावीर का शीत परीषह सहन करना
267-269	भ. महावीर द्वारा कर्म सिद्धान्त का प्रतिपादन	292	उपसंहार
270	भ. महावीर द्वारा अहिंसा का आचरण और अब्रह्म का परित्याग		तृतीय परीषह उद्देशक
		293	भ. महावीर के तृणस्पर्श आदि परीषह
271	भ. महावीर द्वारा आधाकर्म आहार का त्याग	294	भ. महावीर का लाट देश के वज्रभूमि और शुभ्रभूमि में विहार
272	भ. महावीर द्वारा पर (गृहस्थ) के वस्त्र और पर (गृहस्थ) के पात्र का त्याग	295-304	भ. महावीर के (लाट देश में) विभिन्न उपसर्ग, भगवान को युद्ध के मोर्चे पर स्थित हाथी की उपमा, (दुष्टजनों को कंटक की उपमा, ग्राम-कंटक)
273	भ. महावीर द्वारा परिमित आहार ग्रहण एवं खाज खुजलाने का त्याग		मोक्ष मार्ग में पराक्रम
274	भ. महावीर की इर्या (विहार-विधि)	305	उपसंहार
275	भ. महावीर द्वारा तेरह मास पश्चात् देव-दूष्य वस्त्र का परित्याग	306	
			चतुर्थ आतङ्कित उद्देशक
276	अहिंसा युक्त क्रिया विधि, उपसंहार	307	भ. महावीर की मिताहार करने की प्रतिज्ञा
	द्वितीय शय्या उद्देशक	308	भ. महावीर की रोगों की चिकित्सा न करवाने की प्रतिज्ञा
277-279	भ. महावीर का विविध वसतियों में शय्या-आसन चर्या	309	भ. महावीर का अल्प भाषण

310	भ. महावीर की शीत और ग्रीष्म ऋतु में ध्यान साधना व बेर चूर्ण व उड़द आदि से शरीर निर्वाह	326	क. अपक्व या अर्धपक्व शालि आदि लेने का निषेध ख. अनेक वार पक्व या तीन वार पक्व शालि आदि लेने का विधान
311	भ. महावीर ने आठ मास तक निरस अन्न ग्रहण किया था		
312-313	भ. महावीर के विविध प्रकार के तप	327	भिक्षा निमित्त प्रवेश करने के इच्छुक साधु-साध्वी अन्यतीर्थिक या परपिंडोपजीवी गृहस्थ व अपरिहारिक साधु के साथ प्रवेश न करें
314	भ. महावीर का त्रिकरण से पापकर्म-परित्याग		
315-319	भ. महावीर की पिण्डैषणा		
320	भ. महावीर की ध्यान साधना	328	क. शौचभूमि में अन्यतीर्थिक या परपिंडोपजीवी गृहस्थ के साथ प्रवेश न करें
321-322	भ. महावीर का अप्रमत्त जीवन		
323	उपसंहार		ख. स्वाध्याय भूमि में अन्यतीर्थिक या परपिंडोपजीवी गृहस्थ के साथ प्रवेश न करें
	द्वितीय श्रुतस्कंध प्रथम चूलिका		
	प्रथम पिण्डैषणा अध्ययन	329	अन्यतीर्थिक या परपिंडोपजीवी गृहस्थ व पार्श्वस्थ साधु के साथ ग्रामानुग्राम विहार न करें
324	क. सचित्त मिश्रित काई, बीज, अंकुर आदि से युक्त आहार लेने का निषेध	330	क. भिक्षु अथवा भिक्षुणी अन्यतीर्थिक को और पर-पिंडोपजीवी गृहस्थ को आहार न दे और न दिलाए
	ख. जीव रहित जगह पर ले जाकर शोधन कर खाने-पीने का विधान		ख. पारिहारिक-अपारिहारिक को आहार न दे और न दिलाए
	ग. असावधानी से लेने पर निरवद्य भूमि में डालने (परठने) का विधान	331	क. एक स्वधर्मी साधु के निमित्त बने हुए (औद्देशिक) आहार लेने का निषेध
325	क. सजीव (अप्रासुक) अनाज लेने का निषेध ख. निजीव (प्रासुक) अनाज लेने का विधान		ख. अनेक स्वधर्मी साधुओं के निमित्त बने हुए (औद्देशिक) आहार लेने का निषेध

332	ग. एक स्वधर्मिणी श्रमणी के निमित्त बने हुए (औदैशिक) आहार लेने का निषेध घ. अनेक स्वधर्मिणी श्रमणियों के निमित्त बने हुए (औदैशिक) आहार लेने का निषेध क. श्रमणादि को गिनकर बनाये हुए (औदैशिक) आहार लेने का निषेध ख. पुरुषान्तर कृत (अन्य पुरुष सेवित) आदि होने पर लेने का विधान ग. श्रमणादि को गिने बिना बनाये हुए (औदैशिक) आहार लेने का निषेध घ. पुरुषान्तर कृत (अन्य पुरुष सेवित) आदि होने पर लेने का विधान	336 337 338 339	अनिन्दित और अगर्हित उग्रकुल आदि कुलों से शुद्ध आहार लेने का विधान क. सामूहिक भोज, मृतक-भोज, उत्सव-भोजादि में जहाँ नियत परिमाण में श्रमणादि को आहार दिया जाता हो वहाँ से भिक्षु अथवा भिक्षुणी को आहार लेने का निषेध ख. पुरुषान्तरकृत आदि होने पर आहार लेने का विधान क. संखडि (जीमनवार) में जाने का निषेध ख. आधाकर्म, औदैशिक, मिश्रित, क्रीत, उधार लाया हुआ आहार लेने का निषेध उपसंहार
333	भिक्षु अथवा भिक्षुणी का नित्यपिण्ड, अग्रपिण्ड, अर्ध भाग और चतुर्थ भाग दिये जाने वाले कुलों में प्रवेश एवं निर्गमन निषेध	340	क. रोगोत्पत्ति की संभावना से संखडि भोजन लेने का निषेध ख. अनेक दोषों की संभावना होने से संखडि में जाने का निषेध
334	उपसंहार	341	क. पूर्व संखडि या पश्चात् संखडि के समय अन्य कुलों में भी कपट सहित जाने का निषेध ख. संखडि वाले घर के सिवाय अन्य कुलों से शुद्ध आहार लेने का विधान
335	क. अष्टमी आदि पर्वदिन या विशेष प्रसंग में जहाँ नियत परिमाण में श्रमणादि को आहार दिया जाता हो, वहाँ से भिक्षुअथवा भिक्षुणी को आहार लेने का निषेध ख. पुरुषान्तरकृत आदि होने पर आहार लेने का विधान		

तृतीय उद्देशक

द्वितीय उद्देशक

342	क. संखडि के निमित्त किसी ग्राम आदि में जाने का निषेध	346	क्षत्रियों आदि के कुलों में व उनके संबंधियों के कुलों में आहार के लिए जाने का निषेध उपसंहार
343	ख. संखडि में जाने से अनेक दोषों की संभावना	347	
344	क. शंकास्पद आहार लेने का निषेध		चतुर्थ उद्देशक
	क. घर में प्रवेश करते समय सभी धर्मोपकरण में ले जावे	348	क. जिस संखडि में-मौसादि बना हो, जाने के मार्ग में जीव-जन्तु हो, श्रमणादि की भीड़ के कारण प्रवेश व निर्गमन (निष्क्रमण) न हो सकता हो, स्वाध्याय न हो सकता हो तो उसमें जाने का निषेध
	ख. शौचभूमि में प्रवेश करते समय सभी धर्मोपकरण साथ में ले जावे		ख. जहाँ उक्त बातें न हो, वहाँ जाने का विधान
	ग. स्वाध्याय भूमि में प्रवेश करते समय सभी धर्मोपकरण साथ में ले जावे	349	क. जहाँ गायेँ दुही जाती हो, आहार बन रहा हो तो वहाँ जाने का निषेध
	घ. ग्रामानुग्राम विहार करते समय सभी धर्मोपकरण साथ में ले जावे		ख. यदि वहाँ चला गया है तो वहाँ एकांत में ठहर जाए
345	क. वर्षा, धुंअर व रज-वर्षा (आंधी) के समय धर्मोपकरण लेकर भिक्षार्थ गृह प्रवेश निषेध		ग. गायेँ दुही जावेँ, आहार तैयार हो जावे व उसमें से दे दिया जाये तब जाने का विधान
	ख. वर्षा, धुंअर व रज-वर्षा के समय धर्मोपकरण लेकर शौचभूमि में प्रवेश निषेध	350	क. आगन्तुक अतिथि मुनियों के साथ आहार के लिए जाने की विधि
	ग. वर्षा, धुंअर व रज-वर्षा के समय धर्मोपकरण लेकर स्वाध्यायभूमि में प्रवेश निषेध		ख. रसलोलुपता और कपट का त्याग
	घ. वर्षा, धुंअर व रज-वर्षा के समय धर्मोपकरण लेकर ग्रामानुग्राम विहार करने का निषेध	351	उपसंहार

पंचम उद्देशक		षष्ठ उद्देशक	
352	अग्रपिंड लेने का निषेध	359	कुक्कुट आदि द्विपद पक्षी व सुअर आदि चतुष्पद पशु जिस मार्ग में दाना चुगते हो उस मार्ग से भिक्षार्थ जाने का निषेध
353	क. भिक्षा के लिए सम्मार्ग से जाने का विधान ख. विषम मार्ग यद्यपि सीधा हो तो भी उस मार्ग से भिक्षा के लिए जाने का निषेध ग. विषम मार्ग में गिर जाने पर अशुभ पुद्गलों से लिप्त शरीर को पौछने की विधि सीधे मार्ग में यदि उन्मत्त या हिंसक पशु आदि हो तो उस मार्ग से भिक्षा के लिए जाने का निषेध सीधे मार्ग में यदि गड्ढे आदि हो तो उस मार्ग से भिक्षा के लिए जाने का निषेध	360	क. गृहस्थ के घर में निर्दिष्ट स्थानों में खड़े रहने का विधान तथा इधर-उधर देखने का निषेध ख. अविधि से याचना करने का निषेध ग. गृहस्थ को अंगुलियों से इशारा करके या प्रसंशा करके आहार की याचना करने का निषेध घ. गृहस्थ को कठोर वचन कहने का निषेध ङ. सचित्त हाथ, पात्र आदि से आहार लेने का निषेध सचित्त या मिश्रधान युक्त आहार ग्रहण का निषेध सचित्त या सामुद्रिक लवण लेने का निषेध अग्नि पर रखा हुआ आहार लेने का निषेध उपसंहार
354	सीधे मार्ग में यदि उन्मत्त या हिंसक पशु आदि हो तो उस मार्ग से भिक्षा के लिए जाने का निषेध	361	सचित्त या मिश्रधान युक्त आहार ग्रहण का निषेध
355	सीधे मार्ग में यदि गड्ढे आदि हो तो उस मार्ग से भिक्षा के लिए जाने का निषेध	362	सचित्त या सामुद्रिक लवण लेने का निषेध
356	क. भिक्षाकाल में आज्ञा लिए बिना गृहद्वार खोलने का निषेध ख. आज्ञा लेकर गृहद्वार खोलने का विधान क. पूर्व प्रविष्ट तथा पश्चात् प्रविष्ट श्रमण को किसी घर में सम्मिलित आहार प्राप्त हो तो उसके परिभोग की विधि ख. जिस गृह में पूर्व प्रविष्ट श्रमण हों उस गृह में भिक्षार्थ जाने की विधि उपसंहार	363	अग्नि पर रखा हुआ आहार लेने का निषेध
357	क. पूर्व प्रविष्ट तथा पश्चात् प्रविष्ट श्रमण को किसी घर में सम्मिलित आहार प्राप्त हो तो उसके परिभोग की विधि ख. जिस गृह में पूर्व प्रविष्ट श्रमण हों उस गृह में भिक्षार्थ जाने की विधि उपसंहार	364	उपसंहार
358	उपसंहार	365	क. ऊँचे स्थान पर रखा हुआ आहार दे तो लेने का निषेध ख. ऊँचे स्थान से आहार उतारने वाले को होने वाली हानियाँ

सप्तम उद्देशक

366	नीचे स्थान से आहार निकालकर दे तो लेने का निषेध	374	अन्नादि की गंध आसक्ति पूर्वक सूँघने का निषेध
367	मिट्टी का आच्छादन (लेप) तोड़कर दे तो लेने का निषेध	375	कमलकंद आदि अपक्व लेने का निषेध
368	क. पृथ्वीकाय पर रखा हुआ आहार लेने का निषेध	376	पिप्पली, मिर्च, अदरक आदि अपक्व लेने का निषेध
	ख. अप्काय पर रखा हुआ आहार लेने का निषेध	377	अंब आदि प्रलम्ब-फल लेने का निषेध
	ग. अग्निकाय पर रखा हुआ आहार लेने का निषेध	378	अस्वत्थ (पीपल) आदि का प्रलम्ब प्रवाल लेने का निषेध
	घ. अतिउष्ण आहार को सूप-पंखा आदि की हवा से	379	सलाद, कपित्थ, अनार आदि अपक्व फल (सरडु) लेने का निषेध
	टंडा करके या फंकू मारकर दे तो लेने का निषेध		
	ङ. वनस्पतिकाय पर रखा हुआ आहार लेने का निषेध	380	गुलार, उदुंबर आदि का अपक्व चूर्ण लेने का निषेध
	च. त्रसकाय पर रखा हुआ आहार लेने का निषेध	381	सचित्त पत्तों की अधपकी भाजी, सड़ी हुई खली, मधु,
369	क. आटा, तिल, चावल आदि का धोवन पानी वर्णादि परिणत न हो तो लेने का निषेध		घी, मक्खन आदि विकृत गो रस-जनित आहार लेने का निषेध
	ख. आटा आदि का धोवन वर्णादि परिणत हो तो लेने का विधान	382	इक्षु खंड, सिंघाड़ा आदि अप्रासुक लेने का निषेध
		383	उत्पल कंद आदि अप्रासुक लेने का निषेध
370	तिल, तुष, यव व चावल धोया हुआ व उष्ण जल गृहस्थ की आज्ञा से स्वयं के लेने की विधि	384	अग्रबीज, मूल बीज, पर्व बीज आदि अप्रासुक लेने का निषेध
371	सजीव पृथ्वी आदि से मिश्रित पानी लेने का निषेध	385	इक्षु खंड आदि अप्रासुक लेने का निषेध
372	उपसंहार	386	लसुन कंद आदि अप्रासुक लेने का निषेध
	अष्टम उद्देशक	387	आस्थिक आदि वृक्षों के फल लेने का निषेध
373	आम्रादि का अप्रासुक (सचित्त) एवं औद्देशिक पानी लेने का निषेध	388	कण खंड आदि अप्रासुक लेने का निषेध
		389	उपसंहार

नवम उद्देशक		
390	आधाकर्मिक आहार लेने का निषेध	405
391	जहाँ श्रमण के स्वकुल के तथा श्वसुर कुल के लोग रहते हों वहाँ भिक्षा काल से पूर्व आहार के लिए जाने का निषेध	406
392	आधाकर्मिक आहार बनाते समय ही श्रद्धालु को निषेध करने का सूचन	एकादश उद्देशक 407-408
393	जहाँ माँसादि बना हो वहाँ आहार के लिए जाने का निषेध	सात पिण्डैषणा 409
394	आहार खाने की विधि	1. अलिप्त हाथ एवं अलिप्त पात्र से आहार लेना
395	पानी पीने की विधि	2. लिप्त हाथ एवं लिप्त पात्र से आहार लेना
396	अधिक आहार के परिभोग की विधि	3. अलिप्त हाथ और लिप्त पात्र या लिप्त हाथ और अलिप्त पात्र से आहार लेना
397	किसी को देने के लिए निकाले हुए आहार के लेने की विधि	4. पश्चात् कर्म दोष रहित आहार लेना
398	उपसंहार	5. भोजन से पूर्व धोये हुए हाथ सूखने के पश्चात् आहार लेना
399	श्रमण समूह के लिए प्राप्त आहार के परिभोग की विधि	6. स्वयं या दूसरे के लिए पात्र में लिया हुआ आहार लेना
400-401	सरस आहार को छिपाने का निषेध	7. डालने योग्य आहार लेना
402-403	इक्षु आदि अल्प खाद्य अधिक त्याज्य पदार्थ लेने का निषेध	8. सात पाणैषणा पिण्डैषणा के समान (आहार के स्थान में पानी समझना)
404	क. बहु अस्थिक आदि के परिभोग की विधि ख. जबरदस्ती से ऐसा आहार प्राप्त होने पर उसे परठने की विधि	

410	पडिमाधारी साधुओं ने मिथ्यारूप से प्रतिमाएं स्वीकार की है ऐसा न कहें		ख. श्रमणों को गिने बिना बनाये हुए औद्देशिक उपाश्रय में ठहरने आदि का निषेध
411	उपसंहार		ग. श्रमणों को गिन-गिन करके या औद्देशिक बनाया हो किन्तु पुरुषान्तरकृत आदि है तो ठहरने का विधान
412	द्वितीय शय्यैषणा अध्ययन प्रथम उद्देशक क. पक्षियों के अंडे आदि जिस उपाश्रय में हो, उसमें ठहरने आदि का निषेध	415	क. भिक्षु के निमित्त मरम्मत कराये हुए औद्देशिक आदि उपाश्रय में ठहरने का निषेध
413	ख. पक्षियों के अंडे आदि जिस उपाश्रय में न हो, उसमें ठहरने आदि का विधान क. एक स्वधर्मी साधु के निमित्त बने हुए औद्देशिक उपाश्रय में ठहरने आदि का निषेध ख. अनेक स्वधर्मी साधुओं के निमित्त बने हुए औद्देशिक उपाश्रय में ठहरने आदि का निषेध	416	ख. मरम्मत कराया हुआ उपाश्रय पुरुषान्तरकृत आदि हो गया है तो ठहरने का विधान क. भिक्षु के निमित्त कुछ परिवर्तन कराये हुए औद्देशिक आदि उपाश्रय में ठहरने का निषेध व पुरुषान्तरकृत होने पर ठहरने का विधान
414	ग. एक स्वधर्मिनी साध्वी के निमित्त बने हुए औद्देशिक उपाश्रय में ठहरने आदि का निषेध च. अनेक स्वधर्मी साध्वियों के निमित्त बने हुए औद्देशिक उपाश्रय में ठहरने आदि का निषेध क. श्रमणों की गिनती करके बनाये हुए औद्देशिक उपाश्रय में ठहरने आदि का निषेध	417	ख. भिक्षु के निमित्त हरियाली उखाड़ी जावे ऐसे उपाश्रय में ठहरने का निषेध क. कंदमूलादि स्थानांतरित किये जावे ऐसे उपाश्रय में ठहरने का निषेध
		418	ख. पुरुषान्तरकृत आदि होने पर ठहरने का विधान क. भिक्षु के निमित्त पीठ-फलक आदि स्थानांतरित किए जावें ऐसे उपाश्रय में ठहरने का निषेध
		419	ख. पुरुषान्तरकृत आदि होने पर ठहरने का विधान क. बहुत ऊँचे मकानों में या तलघरों में ठहरने आदि का निषेध

ख. अनिवार्य कारण से ठहरना पड़े तो हाथ-पैर धोने व मल-मूत्र आदि त्यागने का निषेध	429	गृहस्थ संसक्त उपाश्रय में ठहरने पर भिक्षु के निमित्त काष्ठ भेदन और अग्नि का आरंभ होता है
ग. ऊंचे मकान व तलघर में ठहरने से होने वाली हानियाँ स्त्री आदि वाले व खाने-पीने के सामान से भरे हुए उपाश्रय में ठहरने का निषेध	430	क. गृहस्थ संसक्त उपाश्रय में ठहरने पर मलमूत्रादि से निवृत्त होने के लिए रात्रि में द्वार खोलने पर चोरों के घुसने की संभावना रहती है
क. जिस उपाश्रय में गृहस्थ रहता हो, ऐसे उपाश्रय में ठहरने आदि का निषेध	431	ख. अथवा भ्रम से साधु को चोर मान लेता है ग. चोर के संबंध में भाषा का विवेक
ख. ऐसे स्थानों में ठहरने से होने वाली हानियाँ गृहस्थ युक्त उपाश्रय में कलह आदि का उपद्रव होता है गृहस्थ युक्त उपाश्रय में अग्निकाय का आरम्भ होता है गृहस्थ युक्त उपाश्रय में अलंकृत तरुणियों को देखने से मन विकृत होता है	432	क. जीव-जन्तु वाला वृण पलाल आदि जिस उपाश्रय में हो, उसमें ठहरने का निषेध ख. जीव-जन्तु रहित वृण, पलाल आदि जिस उपाश्रय में हो, उसमें ठहरने का विधान जिन स्थानों में अन्य सम्प्रदायों के साधु बार-बार आते जाते व ठहरते हों, वहां निर्ग्रंथ साधुओं को मासकल्प आदि तक ठहरने का निषेध
गृहस्थ युक्त उपाश्रय में ठहरने पर ओजस्वी पुत्र-प्राप्ति निमित्त मैथुन के लिए स्त्रियाँ निमंत्रण देती हैं		

नवविध शय्या विवेक

उपसंहार	433	(1) जिन स्थानों में मासकल्प या वर्षावास रह चुके हों, उनमें पुनः रहने का निषेध
द्वितीय उद्देशक	434	(2) मासकल्प व वर्षावास रह चुके स्थान में दो तीन मास का व्यवधान किये बिना ठहरने का निषेध
गृहस्थ संसक्त उपाश्रय में ठहरने पर भिक्षु के पसीने की दुर्गंध से शौच-वादी गृहस्थ को घृणा होती है गृहस्थ संसक्त उपाश्रय में ठहरने पर गृहस्थ या भिक्षु के निमित्त बने हुए सरस भोजन पर भिक्षु का मन चलायमान होता है	435	(3) श्रमण या गृहस्थ के निमित्त बनवाये हुए स्थान में अन्य मतानुयायी श्रमणों के ठहरने पर भिक्षु के ठहरने का विधान

436	(4) गृहस्थ के बनाये हुए स्थान में अन्य मतानुयायी श्रमण न ठहरे हों व पुरुषान्तरकृत न हो तो भिक्षु के ठहरने का निषेध	445 446	उपाश्रय के लिए आज्ञा प्राप्त करने की विधि क. शय्यातर का नाम गोत्र पूछना ख. शय्यातर के घर से आहार लेने का निषेध
437	(5) गृहस्थ अपने लिए बनवाया हुआ मकान साधुओं को समर्पित करे और अपने लिए दूसरा मकान बनवावे तो उसमें ठहरने का निषेध	निषिद्ध उपाश्रय	
438	(6) श्रमणादि की गिनती करके बनवाये हुए एवं समर्पित किये हुए स्थान में ठहरने का निषेध	447	(1) जिस उपाश्रय में गृहस्थ का निवास हो, अग्नि-पानी का आरंभ हो, स्वाध्याय स्थान का अभाव हो उसमें ठहरने का निषेध
439	(7) सावद्य क्रिया दोष युक्त उपाश्रय में ठहरने का निषेध	448	(2) गृहस्थ के घर में होकर उपाश्रय में जाने का मार्ग हो तो उस उपाश्रय में ठहरने का निषेध
440	(8) एक ही प्रकार के भिक्षुओं के निमित्त निर्माण कराये हुए एवं समर्पित किए हुए स्थान में ठहरने का निषेध	449	(3) गृहस्थ के घर में गृहकलह होता है अतः ठहरने आदि का निषेध
441	(9) गृहस्थ ने अपने लिए मकान बनवाया हो और अपने लिए ही अग्नि आदि का आरंभ-सभारंभ किया हो, ऐसे स्थान में ठहरने का विधान उपसंहार	450 451	(4) गृहस्थ के घर में तेल मर्दन होता है अतः ठहरने आदि का निषेध (5) गृहस्थ के घर में स्नानादि होता है अतः ठहरने आदि का निषेध
442	तृतीय उद्देशक		(6) गृहस्थ के घर में जलक्रीड़ा होती है अतः ठहरने आदि का निषेध
443	उपाश्रय के दोषों का कथन और उनकी यथार्थता	453	(7) गृहस्थ के घर में नग्न या अर्ध नग्न स्त्रियाँ रहती हैं अतः ठहरने आदि का निषेध
444	बहुत छोटे द्वार वाले उपाश्रय में अथवा अनेक श्रमण जहाँ ठहरे हुए हों, ऐसे उपाश्रय में ठहरने की विधि	454	(8) गृहस्थ के घर में विकार वर्धक भित्ति चित्र होते हैं अतः ठहरने आदि का निषेध

455	क. जीव-जन्तु वाला संस्कारक लेने का निषेध	459	मल-मूत्र डालने की भूमि को देखना, न देखने से होने वाली हानियाँ
	ख. भारी वजनदार संस्कारक लेने का निषेध		
	ग. प्रत्यर्पण के अयोग्य संस्कारक लेने का निषेध	460	क. आचार्य आदि के शय्या स्थल को छोड़कर अन्यत्र शय्या स्थल देखना
	घ. शिथिल बंध वाला संस्कारक लेने का निषेध		ख. जीव-जन्तु रहित शय्या पर बैठना
	ङ. जीव-जन्तु रहित, लघु प्रत्यर्पण योग्य एवं दृढ़ संस्कारक लेने का विधान		ग. बैठने से पूर्व शरीर का प्रमार्जन करना
			घ. एक-दूसरे को परस्पर स्पर्श न हो ऐसी शय्या पर सोना

चार संस्कारक प्रतिमाएं

456	1 पहली प्रतिज्ञा-संस्कारकों का नाम लेकर किसी एक संस्कारक को ग्रहण करना	461	क. मुँह ढककर उच्छ्वास, निःश्वास, खांसना, छींकना, उबासी लेना या डकार आदि लेना
	2 दूसरी प्रतिज्ञा-इन संस्कारकों में से अमुक एक संस्कारक ग्रहण करना		ख. मलद्वार के ऊपर हाथ रखकर अपानवायु छोड़ना
	3 तीसरी प्रतिज्ञा-उपाश्रय में विद्यमान संस्कारक ग्रहण करना अन्यथा उत्कटुक आसन आदि से रात्रि व्यतीत करना	462	सम-विषम शय्या में समभाव रखना
		463	उपसंहार

तृतीय इर्या अध्ययन

	4 चौथी प्रतिज्ञा-शिला या काष्ठ का संस्कारक लेना अन्यथा उत्कटुक आसनादि से रात्रि व्यतीत करना	464	प्रथम उद्देशक
457	पंडिमाधारी की निन्दा करने का निषेध	465	वर्षाकाल में विहार का निषेध
458	क. जीव-जन्तु सहित संस्कारक प्रत्यर्पित नहीं करना	466	अयोग्य स्थान में वर्षावास न करना
	ख. जीव-जन्तु रहित संस्कारक धूप आदि देकर झाड़कर प्रत्यर्पित करना	467	योग्य स्थान में वर्षावास करना
			वर्षाकाल के पश्चात् भी मार्ग में जीव-जन्तु अधिक हो तो विहार न करना

468	जीव-जन्तु वाले मार्ग में न चलना	476-482	नाव में बैठने की विधि-कर्तव्याकर्तव्य
469	अन्य मार्ग के अभाव में त्रस जीवों की रक्षा करते हुए चलना	483	उपसंहार
470	क. बीज आदि वनस्पति वाले मार्ग में न चलना ख. अन्य मार्ग के अभाव में स्थावर जीवों की रक्षा करते हुए चलना	484 485-486	द्वितीय उद्देशक नाव में बैठने के पश्चात् किसी के उपकरण ग्रहण न करे अधिक भार के कारण यदि कोई मुनि को नौका से नीचे गिराने की बात करे तो तुरन्त अपने शरीर को सिर से पैर तक अच्छी तरह मजबूत वस्त्रों से लपेट कर बांध ले जल में डुबकी लगाना व बाहर निकलना आदि क्रिया न करे
471	क. म्लेच्छ आदि के उपद्रव वाले मार्ग से विहार न करना ख. अन्य मार्ग से विहार करने का विधान	487	
472	क. अराजक आदि प्रदेशों में होकर विहार करने का निषेध ख. अन्य मार्ग से विहार करने का विधान	488 489 490	भिक्षु कान, आँख, नाक और मुँह में पानी न जाने दे निकलने में कठिनाई मालूम दे तो उपधि का परित्याग करे यदि वह उपधि सहित पार हो जाए तो शरीर गीला रहे तब तक नदी के किनारे पर ही खड़ा रहे
473	क. अनेक दिनों में लांघने योग्य अटवी में होकर जाने का निषेध ख. ऐसी अटवी में होकर जाने से होने वाली हानियाँ	491	क. जल से भीगे हुए शरीर का बार-बार स्पर्श, मालिश, उबटन, मैल उतारना, धूप में खड़े रहना आदि प्रवृत्ति न करे

नौकारोहण विधि

474	क्रीतादि दोष युक्त अथवा सुदूर गामिनी नौका में बैठने का निषेध	492	ख. गीला शरीर व उपधि सूखने पर ही आगे विहार करे
475	तिर्यगामिनी नौका में बैठने का विधान व बैठने की विधि	493	गृहस्थ के साथ बात करते हुए चलने का निषेध पानी के अल्प प्रवाह को पार करने की विधि

494	क. पानी को पार करते समय हाथ-पैर अवयवों का परस्पर स्पर्श निषेध	501	जिस मार्ग में सैनिक छावनी हो उस मार्ग से जाने का निषेध
	ख. उपकरणादि सहित पार न जा सके तो उनका त्याग कर दे	502	क. अन्य मार्ग के अभाव में उस मार्ग से जावे
495	ठण्डक के लिए गर्मी शांत करने के लिए गहरे पानी में जाने का निषेध		ख. जाते समय यदि उपसर्ग हो तो समभाव रखने का उपदेश
496	शरीर से पानी की बूंदें टपकती रहे व जरा सा भी भिगा रहे तब तक खड़ा रहे	503	ग. पथिकों के पूछे जाने पर भी उत्तर न दे उपसंहार
497	गीले शरीर को बार-बार हाथ से स्पर्श, बार-बार घिसना, मालिश करना, मैल उतारना आदि प्रवृत्ति न करे	504	तृतीय उद्देशक नहरें, गुफा, गढ़, किला आदि देखते व दिखाते हुए चलने का निषेध
498	क. कीचड़ से भरे हुए पावों को हरे घास से घिसते हुए चलने का निषेध	505	
	ख. हरी घास रहित मार्ग में चलने का विधान		
499	क. किले की टूटी दिवार, गड़्ढा, गुफा आदि मार्ग में हो तो उस मार्ग से जाने का निषेध		ख. वन, पर्वत आदि को शारीरिक संकेतों से देखने व दिखाने से मृगादि प्राणियों को होने वाला भय
	ख. अन्य मार्ग के अभाव में उस मार्ग से जाना पड़े तो उसकी विधि	506	ग. आचार्य, उपाध्याय व गुरुदेव के साथ विवेकपूर्वक चलने का विधान
	ग. विषम मार्ग से जाने में हानियां		आचार्य-उपाध्याय के हस्त आदि अवयवों से स्पर्श करते हुए चलने का निषेध
500	धान्य का ढेर या धान्य की गाड़ियाँ आदि जिस मार्ग से जा रही हों उस मार्ग से जाने का निषेध	507	आचार्य उपाध्याय-पथिकों के प्रश्नों का उत्तर दे रहे हों, उस समय बीच में बोलने का निषेध

508	ज्ञानवृद्धों के हस्तादि अवयवों से स्पर्श करते हुए चलने का निषेध	518	ऐसी परिस्थिति के लिए कुछ विशेष सूचनाएँ उपसंहार
509	ज्ञानवृद्ध-पथिकों के प्रश्नों का उत्तर दे रहे हों उस समय बीच में बोलने का निषेध	519	चतुर्थ भाषा जात अध्ययन प्रथम वचन विभक्ति उद्देशक
510	भिक्षु अथवा भिक्षुणी से कुछ पथिक-मनुष्य, पशु आदि के सम्बन्ध में पूछें तो उत्तर देने का निषेध	520	कठोर वचन और निश्चित वचन का निषेध
511	भिक्षु अथवा भिक्षुणी से कुछ पथिक-जलज कंद आदि के सम्बन्ध में पूछें तो उत्तर देने का निषेध	521	सोलह प्रकार के वचनों का विवेकपूर्वक प्रयोग
512	भिक्षु अथवा भिक्षुणी से कुछ पथिक-धान्य की गाड़ियों के सम्बन्ध में पूछें तो उत्तर देने का निषेध	522	क. चार प्रकार की भाषा के सम्बन्ध में तीन काल के तीर्थकरों की समान प्ररूपणा
513	गांव, नगर, राजधानी, छावनी आदि के सम्बन्ध में पूछें तो उत्तर देने का निषेध	523	ख. भाषा का पौद्गलिक रूप
514	भिक्षु अथवा भिक्षुणी से कुछ पथिक “ग्राम कितनी दूर है” ऐसा पूछें तो उत्तर देने का निषेध	524	भाषा का त्रैकालिक रूप
515	उन्मत्त सांड, विषैला सांप आदि जिस मार्ग में हों उससे जाने की विधि	525	सावद्य-यावत्-प्राणियों का घात करने वाली चारों भाषाओं का निषेध
516	जिस अटवी में चोरों का उपद्रव हो तो उस समय अटवी से पार होने की विधि	526	असावद्य-यावत्-प्राणियों का घात नहीं करने वाली सत्य और व्यवहार भाषा के प्रयोग का विधान
517	भिक्षु अथवा भिक्षुणी के उपकरण मार्ग में चोर आदि छिनें तो उस समय समाधिभाव रखने का उपदेश	527	पुरुष को अप्रिय सम्बोधन करने का निषेध
		528	पुरुष को प्रिय सम्बोधन करने का विधान
		529	स्त्रियों को अप्रिय सम्बोधन करने का निषेध
		530	स्त्रियों को प्रिय सम्बोधन करने का विधान
			क. आकाश आदि को मेघ, देव आदि कहने का निषेध
			ख. वर्षा धान्य आदि के सम्बन्ध में “हो या न हो”

ऐसी भाषा के प्रयोग का निषेध		544	उद्यान या वन में खड़े बड़े वृक्षों के सम्बन्ध में निरवद्य भाषा के प्रयोग का विधान
ग. राजा की जय-पराजय कहने का निषेध			
531 आकाशादि के सम्बन्ध में विवेकपूर्ण भाषा बोलने का विधान	545		फलों के सम्बन्ध में सावद्य भाषा के प्रयोग का निषेध
532 उपसंहार	546		फलों के सम्बन्ध में निरवद्य भाषा के प्रयोग का विधान
द्वितीय क्रोधादि उत्पत्ति वर्जन उद्देशक			धान्य के सम्बन्ध में सावद्य भाषा के प्रयोग का निषेध
533 रोगी या अंगविकल को कुपित करने वाले वाक्य न कहना	548		धान्य के सम्बन्ध में निरवद्य भाषा के प्रयोग का विधान
534 रोगी या अंगविकल को कुपित न करने वाले वाक्य कहना	549		शब्द सुनकर सावद्य भाषा का प्रयोग न करना
535 किले आदि को देखकर सावद्य भाषा के प्रयोग का निषेध	550		क. शब्द सुनकर निरवद्य भाषा का प्रयोग करना
536 किले आदि को देखकर निरवद्य भाषा के प्रयोग का विधान			ख. रूप देखकर सावद्य भाषा का प्रयोग न करना
537 आहार के सम्बन्ध में सावद्य भाषा के प्रयोग का निषेध			ग. रूप देखकर निरवद्य भाषा का प्रयोग करना
538 आहार के सम्बन्ध में निरवद्य भाषा के प्रयोग का विधान			घ. गंध सूँघकर सावद्य भाषा का प्रयोग न करना
539 मनुष्य पशु आदि के सम्बन्ध में सावद्य भाषा के प्रयोग का निषेध			ङ. गंध सूँघकर निरवद्य भाषा का प्रयोग करना
540 मनुष्य पशु आदि के सम्बन्ध में निरवद्य भाषा के प्रयोग का विधान			च. रस का आस्वादन कर सावद्य भाषा का प्रयोग न करना
541 गाय-बैल के सम्बन्ध में सावद्य भाषा के प्रयोग का निषेध			छ. रस का आस्वादन कर निरवद्य भाषा का प्रयोग करना
542 गाय-बैल के सम्बन्ध में निरवद्य भाषा के प्रयोग का विधान	551		ज. स्पर्श के पश्चात् सावद्य भाषा का प्रयोग न करना
543 उद्यान में खड़े बड़े वृक्षों के सम्बन्ध में सावद्य भाषा के प्रयोग का निषेध	552		झ. स्पर्श के पश्चात् निरवद्य भाषा का प्रयोग करना
			विवेक पूर्वक बोलने का उपदेश
			उपसंहार

पंचम वस्त्रैषणा अध्ययन**प्रथम वस्त्र ग्रहण विधि उद्देशक**

553	क. छह प्रकार के वस्त्र	ज. पुरुषान्तरकृत आदि होने पर लेने का विधान
	ख. निर्ग्रथ के लिए एक वस्त्र का विधान	क. भिक्षु के निमित्त क्रीत, धौत आदि दोष सहित वस्त्र लेने का निषेध
	ग. निर्ग्रथी के लिए चार चदर का विधान	ख. पुरुषान्तरकृत आदि होने पर लेने का विधान
	घ. चार चदर का परिमाण	बहुमूल्य-बहुआरभ-निषन्न वस्त्र लेने का निषेध
554	वस्त्र ग्रहण के लिए अर्ध योजन से अधिक जाने का निषेध	चर्म वस्त्र व सोने आदि आभरणों से मण्डित वस्त्र लेने का निषेध
555	क. एक स्वधर्मी के उद्देश्य से बनाया या बनवाया हुआ कपड़ा लेने का निषेध	चार वस्त्र पडिमा
	ख. अनेक स्वधर्मियों के उद्देश्य से बनाया या बनवाया हुआ कपड़ा लेने का निषेध	559 प्रथमा पडिमा- छह प्रकार के वस्त्रों में से किसी एक प्रकार के वस्त्र का संकल्प करके लेना
	ग. एक स्वधर्मिणी के उद्देश्य से बनाया या बनवाया हुआ कपड़ा लेने का निषेध	स्वयं याचना करना या बिना याचना किये दे तो लेना
	घ. अनेक स्वधर्मिणियों के उद्देश्य से बनाया या बनवाया हुआ कपड़ा लेने का निषेध	द्वितीया पडिमा- दृष्ट वस्त्र का मन में संकल्प करके लेना
	ङ. श्रमणादि को गिनकर उनके निमित्त बनाया या बनवाया हुआ कपड़ा लेने का निषेध	तृतीया पडिमा- परिभुक्त वस्त्र लेना
	च. पुरुषान्तरकृत आदि होने पर लेने का विधान	चतुर्थी पडिमा- फेंकने योग्य वस्त्र लेना
	छ. श्रमण समूह के लिए बनाया या बनवाया हुआ कपड़ा लेने का निषेध	वस्त्र पडिमा पिंडेष्णा अध्ययन के समान समझना
		एक, दो दिन बाद या महिने बाद वस्त्र देने का वचन दे तो लेने का निषेध
		थोड़े समय बाद वस्त्र देने का संकेत करे तो लेने का निषेध

563	वस्त्र साधु को देकर 'दूसरा वस्त्र बना लेंगे' - ऐसा कहे तो इस प्रकार का वस्त्र भी लेने का निषेध	579	निर्दोष भूमि पर प्रतिलेखना कर वस्त्र को सुखाने की विधि
564	वस्त्र को सुगन्धित द्रव्यों से सुवासित करके दे तो ऐसा वस्त्र लेने का निषेध	580	उपसंहार
565	शीतल-यावत्-उष्ण जल से धोकर दे तो ऐसा वस्त्र लेने का निषेध	581	द्वितीय वस्त्र धारण विधि उद्देशक क. जैसा वस्त्र प्राप्त हुआ है वैसा ही वस्त्र-धारण करने का विधान
566-567	कन्द-यावत्-हरी निकाल कर दे ऐसा वस्त्र लेने का निषेध		ख. वस्त्र धोने व रंगने का निषेध
568	क. वस्त्र ग्रहण पूर्व प्रतिलेखना विधान	582	क. भिक्षा के समय सारे वस्त्र साथ में ले जाने का विधान
569	ख. बिना प्रतिलेखन के वस्त्र लेने से कर्म बन्ध		ख. स्वाध्याय स्थान में जाते समय वस्त्र साथ में ले जाने का विधान
570	अण्डों-यावत्-मकड़ी के जालों से युक्त वस्त्र लेने का निषेध		ग. शौच-स्थल में जाते समय वस्त्र साथ में ले जाने का विधान
571	जीर्ण वस्त्र लेने का निषेध		घ. वर्षा, धुंअर, रजघात हो तो भिक्षा, स्वाध्याय स्थल व शौच स्थल में सारे वस्त्र साथ ले जाने का विधि-निषेध
572	प्रासुक और एषणीय वस्त्र लेने का विधान		क. किसी श्रमण से अल्पकाल के लिए याचित वस्त्र के प्रत्यर्पण की विधि
573	वस्त्र को सुगन्धित करने के लिए प्रयत्न न करे		ख. मायापूर्वक अल्पकाल के लिए वस्त्र याचना का निषेध
574	मलिन वस्त्र को शीतल या उष्ण जल से धोने का निषेध		
575	विभूषा की दृष्टि से शीतल या उष्ण जल से धोने का निषेध	583	
576	सचित्त पृथ्वी आदि पर वस्त्र को सुखाने की विधि		
577	ठूठ आदि पर वस्त्र को सुखाने का निषेध		
578	घर की दिवार, रोड़े आदि पर वस्त्र सुखाने का निषेध		
	स्तंभ आदि पर वस्त्र को सुखाने का निषेध		

584	क. शोभनीय वस्त्र को अशोभनीय और अशोभनीय वस्त्र को शोभनीय बनाने का निषेध ख. अन्य वस्त्र के प्रलोभन से स्वकीय वस्त्र का विनिमय आदि न करे ग. अन्य वस्त्र के प्रलोभन से दूढ़ वस्त्र को फाड़कर न फेंके घ. वस्त्र छीनने वाले चोर के भय से उन्मार्ग गमन का निषेध		ख. अनेक स्वधर्मियों के उद्देश्य से बनाया या बनवाया पात्र लेने का निषेध ग. एक स्वधर्मिणी के उद्देश्य से बनाया या बनवाया पात्र लेने का निषेध घ. अनेक स्वधर्मिणियों के उद्देश्य से बनाया या बनवाया पात्र लेने का निषेध ङ. श्रमणों को गिनकर बनाये या बनवाये पात्र लेने का निषेध
585	अटवी में चोर के भय से उन्मार्ग गमन का निषेध	591	श्रमण समूह के लिए बनाया या बनवाया पात्र लेने का निषेध
586	अटवी में चोरों का उपद्रव होने पर समभाव रखने का उपदेश	592	बहुमूल्य पात्र लेने का निषेध
587	उपसंहार	593	बहुमूल्य बंधनों से बंधे हुए पात्र लेने का निषेध
	षष्ठ पात्रौषणा अध्ययन		चार पात्र प्रतिमाएं
588	क. तीन प्रकार के पात्र ख. स्वस्थ निर्ग्रन्थ के लिए एक ही पात्र रखने का विधान	594	पहली प्रतिज्ञा- तीन प्रकार के पात्रों में से किसी एक प्रकार के पात्र का संकल्प करके लेना, स्वयं याचना करे या बिना याचना के मिले तो ग्रहण करना दूसरी प्रतिज्ञा- देखने के पश्चात् उपयुक्त पात्र लेना तीसरी प्रतिज्ञा- फेंकने योग्य पात्र लेना चौथी प्रतिज्ञा- परिभुक्त पात्र लेना
589	पात्र के लिए आधे योजन से आगे जाने का निषेध		
590	क. एक स्वधर्मी के उद्देश्य से बनाया या बनवाया पात्र लेने का निषेध	595	पात्र पंडिमा पिंडेषणा अध्ययन के अनुसार जानना

596	पात्र याचना विधि	ख. असावधानी से शीघ्र ही दाता पात्र में डाल दे तो वापस लौटा दे
597	वस्त्रैषणा अध्ययन के समान पात्र धोना आदि सारा वर्णन	ग. यदि नहीं ले तो पानी आदि को परठ दे व सूखने तक पात्र वहीं रहने दे
598	आहार-पानी आदि दूसरे पात्र में लेकर वह खाली किया हुआ पात्र दे तो लेने का निषेध	क. जब तक पात्र गीला रहे तब तक न पौछे व न धूप में सुखाए
599	पात्र का प्रमार्जन करके भिक्षार्थ जाने का विधान	ख. जल रहित होने पर पात्र पौछे व सुखाए
600	क. भिक्षार्थ जाते समय सारे पात्र साथ ले जाने का विधान	क. भिक्षार्थ जाते समय, स्वाध्याय भूमि व शौच भूमि में पात्र साथ लेकर जाए
	ख. स्वाध्याय स्थान में जाते समय सारे पात्र साथ ले जाने का विधान	ख. वर्षा, धूंअर आदि के समय पात्र साथ में ले जाने का निषेध
	ग. शौच स्थान में जाते समय सारे पात्र साथ ले जाने का विधान	उपसंहार
	घ. वर्षा, धूंअर व रजघात के समय भिक्षार्थ, स्वाध्याय स्थान, शौच स्थान में सारे पात्र ले जाने का निषेध	सप्तम अवग्रह प्रतिमा अध्ययन
601	उपसंहार	प्रथम उद्देशक
602	क. आहार-पानी जाने से पूर्व पात्र का प्रतिलेखन करना	क. अदत्तादान लेने का सर्वथा निषेध
603	ख. प्राणी, बीज, रज आदि को एकांत में परठना	ख. साथी मुनियों के छत्र आदि भी आज्ञापूर्वक लेने का विधान
	क. गृहस्थ पात्र में सचित्त जल लेकर व उसमें से निकालकर दे तो नहीं ले	धर्मशाला आदि में ठहरने के लिए जितने काल की आज्ञा ले, उतने काल तक ठहरना
		स्वयं द्वारा लाये हुए आहार के लिए स्वधर्मी श्रमण को

	निमंत्रण दे, किन्तु दूसरे के लाये हुए आहार के लिए निमंत्रण न दे	622	पूर्व में स्थित श्रमणों के उपकरण आगे-पीछे न करे व अप्रिय व्यवहार न करे
610	स्वयं द्वारा लाये हुए चौकी, पट्टा आदि के लिए स्वधर्मी श्रमण को निमंत्रण देना, दूसरे के लाये हुए चौकी पट्टा पीढ़ा आदि के लिए निमंत्रण न देना	623	क. आम्रवन में आज्ञा लेकर ठहरने का विधान
	सुई, कैची, कान कुदेरनी, नहहरनी आदि के प्रत्यर्पण की विधि	624	ख. आम्रवन में जीव-जन्तु सहित आम्र लेने का निषेध
611	सजीव भूमि की आज्ञा न लेना	625	अप्रासुक व अनेषणीय आम्र आदि आहार लेने का निषेध
	अस्थिर स्तूप आदि की आज्ञा न लेना	626	आम्रवन में प्रासुक आम्र लेने का विधान
612	कच्ची भीत पर बने स्थानादि की आज्ञा न लेना	627	जीव-जन्तु सहित आम्र टुकड़े आदि लेने का निषेध
613	ऊँचे बने स्थानादि की आज्ञा न लेना	628	आम्रवन में जीव-जन्तु सहित आम्र-खण्ड लेने का निषेध
614	गृहस्थादि जहाँ रहते हों व खाद्य सामग्री युक्त हो ऐसे उपाश्रय की आज्ञा न लेना	629	आम्रवन में प्रासुक आम्र-खंड लेने का विधान
615	गृहस्थ के घर में होकर उपाश्रय में जाने का मार्ग हो ऐसे उपाश्रय की आज्ञा न लेना	630	क. इक्षु वन में अप्रासुक इक्षु लेने का निषेध
616	गृहस्थादि जहाँ रहते हों व खाद्य सामग्री युक्त हो ऐसे उपाश्रय की आज्ञा न लेना	631	ख. इक्षु वन में प्रासुक इक्षु लेने का विधान
617	गृहस्थ के घर में होकर उपाश्रय में जाने का मार्ग हो ऐसे उपाश्रय की आज्ञा न लेना	632	इक्षुवन में अप्रासुक इक्षु खण्ड आदि अण्डों-यावत्- जालों से युक्त है तो न ले
618	गृहस्थ युक्त उपाश्रय में ठहरने से होने वाली हानियाँ	633	इक्षु वन में प्रासुक इक्षु-खंड लेने का विधान
619	अरलील भित्ति चित्र वाले उपाश्रय की आज्ञा न लेना		लशुन वन के तीन विकल्प आम्रवन के समान ही हैं
620	उपसंहार		सात अवग्रह पड़िमा
			प्रथम पड़िमा -पथिकशाला आदि में आज्ञा काल पर्यन्त ठहरूँगा
621	धर्मशाला आदि स्थानों में पूर्व में निवास किये हुए श्रमण को अप्रिय न लगे, इस प्रकार आज्ञा लेकर रहना		द्वितीय पड़िमा -अन्य के लिए निर्दोष स्थान की आज्ञा लूँगा और उसी में ठहरूँगा

634	पिंडेष्णा अध्ययन के अनुसार शेष वर्णन जानना		ख. शय्येषणा अध्ययन के समान स्थानेषणा अध्ययन समझ लेना चाहिए
635	पाँच प्रकार के अवग्रह		
636	उपसंहार		
	द्वितीय चूला		
	अष्टम स्थान अध्ययन		
	प्रथम स्थान सप्तैकक		
637	क. जीव-जन्तु वाले स्थान में ठहरने का निषेध		
			ख. शय्येषणा अध्ययन के समान निषीधिका

643	(स्वाध्याय) अध्ययन समझ लेना चाहिए एक से अधिक व्यक्ति स्वाध्याय स्थान में जावे तो बैठने की विधि	649	इ. बहुत से श्रमणादि को गिनकर के लिए बनाई हुई शौचभूमि में मलोत्सर्ग का निषेध
644	उपसंहार		क. अपरुषान्तरकृत व अपरिभुक्त स्थंडिल भूमि में मलोत्सर्ग का निषेध
	दशम उच्चार-प्रश्रवण अध्ययन		ख. पुरुषान्तरकृत व परिभुक्त होने पर मलोत्सर्ग का विधान
	तृतीय उच्चार-प्रश्रवण सप्तैकक	650	क. श्रमण समूह के लिए बनाई हुई शौचभूमि में मलोत्सर्ग करने का निषेध
645	मल-मूत्रवेग से व्यथित श्रमण के पास मलोत्सर्ग के लिए स्वयं का वस्त्र खंड या पात्र न हो तो स्वधर्मी श्रमण से याचना का विधान		ख. क्रीतादि दोष युक्त उच्चार-प्रश्रवण भूमि में मलोत्सर्ग निषेध
646	जीव-जन्तु वाली भूमि में मलोत्सर्ग करने का निषेध	651	कंदादि जिस भूमि में स्थानांतरित किए गए हों ऐसी भूमि में मलोत्सर्ग निषेध
647	जीव-जन्तु रहित भूमि में मलोत्सर्ग करने का विधान	652	दिवार, चौकी, छत आदि ऊंचे स्थान पर मलोत्सर्ग निषेध
648	क. एक स्वधर्मी साधु के लिए बनाई हुई शौचभूमि में मलोत्सर्ग का निषेध	653	सजीव भूमि व काष्ठादि युक्त भूमि में मलोत्सर्ग करने का निषेध
	ख. अनेक स्वधर्मी साधुओं के लिए बनाई हुई शौचभूमि में मलोत्सर्ग का निषेध	654	जिस भूमि में कंदादी फेंके जाते हों ऐसी भूमि में मलोत्सर्ग निषेध
	ग. एक स्वधर्मिणी साध्वी के लिए बनाई हुई शौचभूमि में मलोत्सर्ग का निषेध	655	जिस भूमि में शाली आदि धान्य बिखरे हों ऐसी भूमि में मलोत्सर्ग निषेध
	घ. अनेक स्वधर्मिणी साध्वियों के लिए बनाई हुई शौचभूमि में मलोत्सर्ग का निषेध	656	जिस भूमि में कचरे का ढेर हो ऐसी भूमि में मलोत्सर्ग निषेध

657	भोजन बनाने के स्थान व पशु-पक्षी आश्रय स्थान में मलोत्सर्ग करने का निषेध	ग्यारहवाँ शब्द अध्ययन	
658	श्मशान आदि में मलोत्सर्ग करने का निषेध	चतुर्थ शब्द सप्तैकक	669
659	बगीचे आदि में मलोत्सर्ग करने का निषेध	मृदंग, झालर आदि वाद्य सुनने के लिए जाने का निषेध	
660	अट्टालिका मार्ग, द्वार आदि सार्वजनिक स्थान में मलोत्सर्ग करने का निषेध	वीणा ढोल आदि वाद्य सुनने के लिए जाने का निषेध	670
661	तिराहे-चौराहे आदि में मलोत्सर्ग करने का निषेध	ताल आदि वाद्य सुनने के लिए जाने का निषेध	671
662	कोयला आदि बनाने के स्थान, मुर्दे जलाने के स्थान, मृतक के स्तूप बने हों ऐसे में मलोत्सर्ग करने का निषेध	शंख आदि वाद्य सुनने के लिए जाने का निषेध	672
663	जलाशयों में मलोत्सर्ग करने का निषेध	खेतों व सरोवर आदि पर होने वाला संगीत सुनने का निषेध	673
664	खानों व गायों के चरागाह स्थान में मलोत्सर्ग करने का निषेध	नदी तट, वन आदि में होने वाला संगीत सुनने का निषेध	674
665	शाक पैदा होने वाले स्थानों में मलोत्सर्ग करने का निषेध	ग्राम आदि में होने वाला संगीत सुनने का निषेध	675
666	पत्र, पुष्प फलादि पैदा होने वाले स्थानों में मलोत्सर्ग करने का निषेध	बगीचे, देवकुल आदि में होने वाला संगीत सुनने का निषेध	676
667	क. स्वभाजन लेकर एकान्त स्थान में अचित्त भूमि पर बैठकर मलोत्सर्ग करने की विधि	अट्टालिका, राजमार्ग, द्वार आदि में होने वाला संगीत सुनने का निषेध	677
668	ख. मलोत्सर्ग पात्र जीव जन्तु रहित एकांत स्थान में परठने का विधान	तिराहे-चौराहे आदि में होने वाला संगीत सुनने का निषेध	678
669		भैसों आदि बाँधने के स्थानों में होने वाला संगीत सुनने का निषेध	679
670		भैसों आदि के युद्ध स्थलों में होने वाला संगीत सुनने का निषेध	680
681	उपसंहार	विवाह-स्थलों आदि मनोरंजन स्थलों में होने वाला संगीत	681

682	सुनने का निषेध कथा स्थलों व नाट्य स्थलों आदि में होने वाला संगीत सुनने का निषेध	ड. अट्टालिका आदि अवलोकनार्थ जाने का निषेध च. तिरहे-चौराहे आदि अवलोकनार्थ जाने का निषेध छ. भैंसों आदि बाँधने के स्थान आदि अवलोकनार्थ जाने का निषेध
683	कलह स्थलों में होने वाला संगीत सुनने का निषेध	
684	वध स्थलों में व अपराधी की शोभायात्रा के समय होने वाला संगीत सुनने का निषेध	ज. भैंसों आदि के युद्ध के स्थल अवलोकनार्थ जाने का निषेध
685	शकट आदि के समूह में होने वाला संगीत सुनने का निषेध	झ. आख्यायिका स्थानों, चौड़ दोड़, कुशती आदि द्वन्द्व स्थानों में दृश्य देखने का निषेध
686	महोत्सव, गीत-गान आदि में होने वाला संगीत सुनने का निषेध	ञ. विवाह स्थल अवलोकनार्थ जाने का निषेध
687	सभी प्रकार के शब्दों में आसक्ति रखने का निषेध	ट. कथा स्थल अवलोकनार्थ जाने का निषेध
688	उपसंहार	ठ. कलह स्थल अवलोकनार्थ जाने का निषेध ड. वध स्थल अवलोकनार्थ जाने का निषेध ढ. शकट आदि का समूह अवलोकनार्थ जाने का निषेध

बारहवाँ रूप अध्ययन

पंचम रूप सदैकक

689	शब्द अध्ययन के अनुसार ही रूप अध्ययन जानना चाहिए क. गुँथी हुई फूल मालाएँ व क्यारियाँ आदि अवलोकनार्थ जाने का निषेध	ण. महोत्सव अवलोकनार्थ जाने का निषेध त. सभी प्रकार के रूपों में आसक्ति रखने का निषेध
	ख. किले आदि अवलोकनार्थ जाने का निषेध ग. कच्छ आदि अवलोकनार्थ जाने का निषेध घ. बगीचे आदि अवलोकनार्थ जाने का निषेध	

तेरहवाँ परक्रिया अध्ययन

षष्ठ परक्रिया सत्तैकक

690	गृहस्थ द्वारा साधु की कीजाने वाली सेवा कर्म बंध की जननी है	

691	गृहस्थ से वस्त्रादि द्वारा पैरों का प्रमार्जन (साफ) न कराना	711	गृहस्थ से शरीर पर हुए व्रण पर लेपन नहीं कराना
692	गृहस्थ से पैरों का मर्दन न कराना	712	गृहस्थ से शरीर पर हुए व्रण को नहीं धुलाना
693	गृहस्थ से पैरों का स्पर्श न कराना	713	गृहस्थ से शरीर पर हुए व्रण को नहीं छिलवाना
694	गृहस्थ से पैरों का तेल आदि से मालिश न कराना	714	गृहस्थ से शरीर पर हुए व्रण से पीप नहीं निकलवाना
695	गृहस्थ से पैरों पर लेपन न कराना	715	गृहस्थ से शरीर में हुए गंड -यावत्- भगंदर को साफ न करावे
696	गृहस्थ से पैरों को न धुलाना		
697	गृहस्थ से पैरों पर विलेपन न कराना	716	गृहस्थ से शरीर में हुए गंड -यावत्- भगंदर का परिमर्दन न करावे
698	गृहस्थ से पैरों के धूप न दिलाना		
699	गृहस्थ से पैरों के खूँटे, काँटे न निकलवाना	717	गृहस्थ से शरीर में हुए गंड -यावत्- भगंदर की मालिश न करावे
700	गृहस्थ से पैरों का पीप रक्त न निकलवाना		
701	गृहस्थ से शरीर का प्रमार्जन न कराना	718	गृहस्थ से शरीर में हुए गंड -यावत्- भगंदर का विलेपन न करावे
702	गृहस्थ से शरीर का मर्दन न कराना		
703	गृहस्थ से शरीर की मालिश न कराना	719	गृहस्थ से शरीर में हुए गंड -यावत्- भगंदर को नहीं धुलावे
704	गृहस्थ से शरीर पर लेपन न कराना		
705	गृहस्थ से शरीर को नहीं धुलाना	720	गृहस्थ से शरीर में हुए गंड -यावत्- भगंदर का छेदन नहीं करावे
706	गृहस्थ से शरीर को विलेपन नहीं कराना		
707	गृहस्थ से शरीर को धूप न दिलाना	721	गृहस्थ से शरीर का मैल साफ न करवाना
708	गृहस्थ से शरीर पर हुए व्रण का परिमार्जन नहीं कराना	722	गृहस्थ से आँख आदि का मैल साफ न करवाना
709	गृहस्थ से शरीर पर हुए व्रण का मर्दन नहीं कराना	723	गृहस्थ से लंबे बाल आदि न कटवाना
710	गृहस्थ से शरीर पर हुए व्रण पर मालिश नहीं कराना	724	गृहस्थ से लीख, जूं न निकलवाना

725	गोदी में या पलंग पर लेटाकर गृहस्थ यदि पैरों का प्रमार्जन करे तो न करवाना इसी प्रकार पूर्ववत् सूत्र 693 से 700 तक समझने चाहिए गोद या पलंग पर लेटाकर गृहस्थ हार आदि पहनाये तो न पहनना आराम या उद्यान में ले जाकर गृहस्थ पैरों का प्रमार्जन करे तो न करवाना इसी प्रकार पूर्ववत् सूत्र 693 से 700 तक समझने चाहिए	732	पांच समितियों से युक्त होकर परस्पर अहर्निश उसका पालन करे
726		733	
727		734	
		735	
		736	
728	क. गृहस्थ से मंत्र चिकित्सा न करवाना ख. गृहस्थ से कंदादि चिकित्सा न करवाना ग. साधु के शरीर में कठोर वेदना हो तो भी समभाव से सहन करे उपसंहार	737-739 740 741 742	भ. महावीर का जन्मोत्सव भ. महावीर का नामकरण भ. महावीर का पांच धाय माताओं द्वारा संवर्धन क. भ. महावीर का तारुण्य ख. भ. महावीर का विवाह भ. महावीर के प्रचलित तीन नाम क. भ. महावीर के पिता के तीन नाम ख. भ. महावीर की माता के तीन नाम ग. भ. महावीर के काका का नाम घ. भ. महावीर के बड़े भ्राता का नाम ङ. भ. महावीर की बड़ी भगिनी का नाम
729		743	
		744	
चौदहवाँ अन्योऽन्य क्रिया अध्ययन			
सप्तम अन्योऽन्य क्रिया सप्तैकक			
730	गच्छ से निकाले हुए साधु से पैरों का प्रमार्जन आदि न करवाना साधु-साध्वी परस्पर एक दूसरे के पैर न पौछे		
731			

तृतीय चूला

पंद्रहवाँ भावना अध्ययन

भ. महावीर के पांच कल्याणक नक्षत्र (पूर्वभव का देह त्याग और गर्भावतरण, जन्म, दीक्षा, केवलज्ञान और मोक्ष)	
भ. महावीर का गर्भावतरण	
भ. महावीर का देवानंदा की कुक्षी से गर्भ साहरण	
भ. महावीर का जन्म	
भ. महावीर का जन्मोत्सव	
भ. महावीर का नामकरण	
भ. महावीर का पांच धाय माताओं द्वारा संवर्धन	
क. भ. महावीर का तारुण्य	
ख. भ. महावीर का विवाह	
भ. महावीर के प्रचलित तीन नाम	
क. भ. महावीर के पिता के तीन नाम	
ख. भ. महावीर की माता के तीन नाम	
ग. भ. महावीर के काका का नाम	
घ. भ. महावीर के बड़े भ्राता का नाम	
ङ. भ. महावीर की बड़ी भगिनी का नाम	

च. भ. महावीर की भार्या का नाम	774	भ. महावीर के केवल ज्ञान का महोत्सव
छ. भ. महावीर की पुत्री के दो नाम	775	भ. महावीर का धर्माख्यान
ज. भ. महावीर की दोहित्री के दो नाम	776	भ. महावीर का पंच महाव्रत प्ररूपण
क. भ. महावीर के माता-पिता का स्वर्गवास	777-779	प्रथम महाव्रत की पाँच भावना
ख. भ. महावीर के माता-पिता का संलेखना सहित निर्वाण	780-782	द्वितीय महाव्रत की पाँच भावना
भ. महावीर का दीक्षा ग्रहण संकल्प	783-785	तृतीय महाव्रत की पाँच भावना
भ. महावीर का वर्षादान	786-788	चतुर्थ महाव्रत की पाँच भावना
लोकातिक देवों द्वारा उद्बोधन	789-791	पंचम महाव्रत की पाँच भावना
भ. महावीर के अभिनिष्क्रमण महोत्सव के लिए देवों का आगमन	792	उपसंहार
चतुर्थी चूला		
अभिनिष्क्रमण के लिए शिविका निर्माण		सोलहवाँ विमुक्ति अध्ययन
शिविकारोहण	793	अनित्य भावना बोध
प्रव्रज्यार्थ प्रस्थान	794	मुनि को हाथी की उपमा
सामायिक चारित्र ग्रहण	795	क. मुनि को पर्वत की उपमा
क. भ. महावीर को मनःपर्यव ज्ञानोत्पत्ति		ख. भिक्षु को परिषहोपसर्ग सहन की प्रेरणा
ख. भ. महावीर का अभिग्रह	796-800	मुनि के कर्ममल को रौप्यमल की उपमा
क. भ. महावीर का कुमार ग्राम गमन	801	दुःख शय्या को सर्प कंचुक की उपमा
ख. भ. महावीर की उत्कृष्ट साधना	802-803	संसार को महासमुद्र की उपमा, कर्म अंत करने की प्रेरणा
भ. महावीर का उपसर्ग सहन	804	मोक्षगामी मुनि
भ. महावीर को केवल ज्ञानोत्पत्ति		

णमो दंसणस्स

द्रव्यानुयोग-प्रधान सूत्रकृतांग सूत्र

श्रुतस्कंध	2	(2)	परिग्रह के सर्वथा त्याग से मुक्ति
अध्ययन	23	(3)	हिंसा से वैर वृद्धि
उद्देशक	33	(4)	आसक्त व्यक्ति का जीवन
पद	36000	(5)	धन और परिवार रक्षा करने में समर्थ नहीं तथा जीवन को भी अल्प जानने/मानने वाले की मुक्ति
उपलब्ध पाठ परिमाण श्लोक	2100	(6)	मताग्रही एवं आसक्त श्रमण ब्राह्मण
गद्य सूत्र	85	(7)	पंचमहाभूतवाद का स्वरूप
पद्य सूत्र	719	(8)	आत्माद्वैतवाद का स्वरूप
प्रथम श्रुतस्कंध		(9-10)	एकात्मवाद का परिहार
अध्ययन	16	(11-12)	तज्जीव तच्छरीरवाद का निराकरण
उद्देशक	26	(13)	अकारकवाद का स्वरूप
गद्य सूत्र	6	(14)	तच्छरीरवाद और अकारकवाद का परिहार
पद्य सूत्र	631	(15-16)	आत्म षष्ठवाद का स्वरूप
		(17)	पंच स्कंधवाद का स्वरूप
		(18)	चार धातुवाद का स्वरूप
		(19-26)	सांख्यादिमत-निस्सारता एवं फल श्रुति
		(27)	ज्ञात पुत्र महावीर द्वारा भविष्यवाणी

2 सूत्रकृतांग सूत्र विषय सूची

प्रथम श्रुतस्कंध

प्रथम समय अध्ययन

प्रथम उद्देशक

द्वितीय उद्देशक

गार्थांक

1 (1) बंधन तोड़ने के लिए प्रेरणा

28-32 (1-5) नियतिवाद का स्वरूप
33-47 (6-20) अज्ञानवाद का स्वरूप

48-50	(21-23) ज्ञानवाद	89	(1)	बोध प्राप्ति के लिए प्रेरणा, मानवभव की दुर्लभता
51-56	(24-29) क्रियावादी दर्शन			
57-59	(30-32) परवादि निरसन	90	(2)	आयु की अनित्यता
	तृतीय उद्देशक	91	(3)	पारिवारिक मोह से निवृत्ति का उपदेश
60-63	(1-4) आधाकर्म आहार का निषेध	92	(4)	अपने कर्मों का फल स्वयं भोगे बिना छुटकारा नहीं
64-69	(5-10) जगत्कर्तृत्ववाद और उसका खण्डन			
70-71	(11-12) अवतारवाद का स्वरूप	93	(5)	देव आदि सबको स्वस्थान त्याग का दुःख होता है
72-75	(13-16) स्व-स्वप्नवाद प्रशंसा एवं सिद्धि का दावा			
	चतुर्थ उद्देशक	94	(6)	आसक्त व्यक्तियों की मृत्यु जैसे ताड़ फल का टूटकर गिर जाना
76-78	(1-3) परिग्रही श्रमणों की संगति का निषेध			
79	(4) शुद्ध आहार लेने का विधान	95	(7)	आसक्त की कर्म वेदना
80-81	(5-6) लोकवाद का स्वरूप	96	(8)	अन्यतीर्थिक की संगति का निषेध
82	(7) असर्वज्ञवाद का निरसन	97	(9)	मायाचार करने वालों को अनन्तकाल गर्भवास
83-85	(8-10) अहिंसा धर्म निरूपण			
86	(11) चर्या-आसन-शय्या-भक्तपान समिति का पालन	98-100	(10-12)	पापकर्म से निवृत्त होने का उपदेश
		101	(13)	शीत-उष्ण परीषह सहन
87	(12) कषाय पर विजय	102	(14)	लेप गिराकर पतली की हुई दिवार के समान, तपस्या द्वारा शरीर को कृश करना
88	(13) पांच समिति, पांच संवर में उद्यम			
	द्वितीय वैतालीय अध्ययन	103	(15)	पंख फड़फड़ाकर धूल झाड़ने वाली पक्षिणी के समान, तपस्या द्वारा कर्म रज को झाड़ना
	प्रथम उद्देशक			

१०४-१०८	(१६-२०)	अनुकूल परीषह विजयोपदेश	१२८	(१८)	उष्णोदकसेवी मुनि के राज-संसर्ग का निषेध
१०९-११०	(२१-२२)	कर्म विदारक वीरों को उपदेश	१२९	(१९)	कलह निषेध
१११-११२	(१-२)	द्वितीय उद्देशक	१३०-१३२	(२०-२२)	समभावी श्रमण की आचार-विधि
११३-११४	(३-४)	मदत्याग का उपदेश	१३३-१३४	(२३-२४)	अनुत्तर धर्म का आराधन
११५	(५)	समभाव साधना	१३५	(२५)	विषय वासना पर विजय प्राप्त करने वाला
११६	(६)	समभावपूर्वक संयम में स्थिर रहने का उपाय			ही धर्माश्रयक
११७	(७)	अहिंसाधर्मी मुनि किसी पर न कोप करे व न अहंकार करे	१३६	(२६)	धार्मिक ही दूसरे को धार्मिक बना सकता है
११८	(८)	अनासक्त होकर उपदेश देने का विधान	१३७	(२७)	भुक्त भोगों के स्मरण का निषेध
११९-१२०	(९-१०)	प्राणिघात से विरति का उपदेश	१३८	(२८)	क. विकथा, प्रश्रफल, वृष्टि की भविष्य
१२१	(११)	परिग्रह त्याग प्रेरणा			वाणी व धनोपार्जन के उपाय बताने का निषेध
१२२	(१२)	अति परिचय त्याग उपदेश			ख. अनुत्तर धर्म के आराधन का उपदेश
१२३	(१३)	एकाकी विहार का विधान			(भाषा समिति)
		क. शून्यगृह में प्रवेश-निषेध	१३९	(२९)	क. कषाय-विजय का उपदेश
		ख. कचरा निकालने व तृण (घास) बिछाने का निषेध	१४०	(३०)	ख. संयमी की महिमा
१२४	(१४)	सूर्यास्त के पश्चात् विहार करने का सर्वथा निषेध			क. ममत्व-निषेध
१२५-१२६	(१५-१६)	शून्यगृह सम्बन्धी विधि			ख. सत्कार्य-संस्कार-धर्म और इन्द्रिय
१२७	(१७)	स्त्री आदि संसर्ग से रहित निर्दोष वसति	१४१	(३१)	विजय का उपदेश
					ग. आत्म कल्याण की दुर्लभता
					भ. महावीर द्वारा कथित सामायिक का

		अश्रवण या अनाचार ही भवभ्रमण का कारण	153	(11)	सर्वज्ञ की वाणी पर श्रद्धा करने का उपदेश
142	(32)	गुरु का निर्दिष्ट मुक्ति मार्ग	154	(12)	स्तुति-पूजा का निषेध
		तृतीय उद्देशक			
143	(1)	संवर और निर्जरा से ही पंडित की मुक्ति	155	(13)	समभावी एवं सुव्रती पुरुष की देवगति
144	(2)	क. स्त्री त्याग से ही मुक्ति	156	(14)	संयम में पुरुषार्थ करने का व शुद्ध आहार लेने का उपदेश
		ख. रोग का कारण भोग	157	(15)	संवर धर्म और तप के आचरण का व त्रिगुप्त होकर परमार्थ के लिए प्रयत्न करने का उपदेश
145	(3)	रत्नों का धारक राजा होता है और महाव्रतों का धारक महात्मा होता है	158	(16)	वित्त, पशु और स्वजन-रक्षक नहीं है
146	(4)	सुखैषी एवं कामी पुरुष समाधि के रहस्य को नहीं समझ सकता	159	(17)	मृत्यु आने पर एकाकी ही जाना पड़ता है, धनादि रक्षक नहीं
147	(5)	आत्म बलहीन साधक को दुर्बल बैल की उपमा	160	(18)	कर्मनुसार दुःख, जन्म-जरा-मरण एवं भव भ्रमण
148	(6)	कामभोग से निवृत्त होने का उपदेश	161	(19)	मनुष्य जन्म और बोधि की दुर्लभता का सभी तीर्थंकरों द्वारा समान कथन
149	(7)	विषयों से निवृत्त होने का उपदेश व कामी की दुर्दशा	162-164	(20-22)	गुणों (मोक्ष) के सम्बन्ध में तीर्थंकरों और उनके अनुयायियों की समान प्ररूपणा
150	(8)	आसक्त पुरुष की अकाल मृत्यु			तृतीय उपसर्ग अध्ययन
151	(9)	हिंसक की नरक गति बाल तपस्वी की आसुरी गति	165	(1)	प्रथम प्रतिकूल-उपसर्ग उद्देशक
152	(10)	वर्तमान सुख की कामना, पुनर्जन्म के प्रति अनास्था			भीरू भिक्षु को शिशुपाल की और उपसर्गों को महारथी श्रीकृष्ण की उपमा

166-167	(2-3)	भीरू भिक्षु को कायर पुरुष की और उपसर्गों को योद्धा या युद्ध की विभीषिका की उपमा	181	(17)	उपसर्ग पीडित भिक्षु का बाण विद्ध गजराज के समान पलायन
168	(4)	शीतपीडित श्रमण को राज्यविहीन क्षत्रिय की उपमा	182	(1)	द्वितीय अनुकूल उपसर्ग उद्देशक
169	(5)	ग्रीष्म और पिपासा से पीडित भिक्षु को पानी के अभाव में तड़फती हुई मछली की उपमा	183-190	(2-9)	अनुकूल उपसर्गों से संयम की अधिक हानि विविध प्रकार के अनुकूल उपसर्गों से संयम त्यागकर पुनः गृहस्थ बनना
170	(6)	आक्रोश, याचना परीषह	191	(10)	वृक्ष को लता के बंधन के समान भिक्षु को पारिवारिक मोह का बंधन
171	(7)	भीरू भिक्षु को संग्राम भीरू की उपमा	192	(11)	भिक्षु के गृहस्थ बनने पर परिवार वालों द्वारा घरे रहना जैसे- नई ब्याई हुई गाय-बछड़ा
172	(8)	पीडित भिक्षु को कुत्ते के काटने पर अग्निदाह के समान वेदना	193	(12)	क. स्वजन स्नेह समुद्र की तरह दुस्तर है
173-174	(9-10)	द्रोही पुरुषों के क्रूर वचन	194	(13)	ख. स्नेह बंधन से दुःख ही दुःख
175	(11)	क्रूर वचन बोलने वालों की दुर्गति			क. स्वजन संसर्ग महाश्रव
176	(12)	दंश-मशक व तृष्णस्पर्श परीषहजन्य			ख. धर्म श्रवण के पश्चात् असंयमी जीवन की इच्छा का निषेध
177	(13)	प्रत्यक्ष दुःख से परलोक के प्रति अनास्था केशलोच और ब्रह्मचर्य के कष्ट से पीडित भिक्षु को जाल में फँसी हुई मछली की उपमा	195	(14)	बुद्धों का आवर्तों से हटना और अबुद्धों का आवर्तों में फँसना
178-179	(14-15)	अनार्य पुरुषों द्वारा किये गये उपसर्ग	196-199	(15-18)	राजा आदि द्वारा भिक्षु से भोग भोगने का आग्रह
180	(16)	घर से निकली क्रुद्धा स्त्री के स्वजन स्मरण के समान दण्ड, मुष्टि आदि से प्रताडित भिक्षु द्वारा स्वजन स्मरण	200	(19)	जैसे- चाँवलों का सूअर को प्रलोभन, वैसे

201	(20)	ही भिक्षु को प्रलोभन देकर गृहस्थ में फंसाना ऊँचे मार्ग में दुर्बल वृषभ के गिरने जैसे ही	222	(19)	परतीर्थियों के साथ विवेकपूर्वक वाद- विवाद करने का विधान
202	(21)	संयम मार्ग में आत्मबलहीन श्रमण का गिरना संयमी जीवन और तपश्चर्या के कष्टों से पीड़ित	223	(20)	रूग्ण साधु की सेवा ग्लानि रहित होकर करने का निर्देश
203	(22)	भिक्षु का संयमी जीवन से पतन, जैसे-ऊँचे मार्ग में वृद्ध बैल का गिरना भोगों में आसक्त भिक्षु का पुनः गृहस्थ जीवन स्वीकार करना	224	(21)	उपसर्ग सहन करने का उपदेश चतुर्थ यथावस्थित अर्थ प्ररूपण उद्देशक
			225	(1)	क. सिद्धि के सम्बन्ध में अन्यतीर्थियों की विविध मान्यताएँ- ख. अज्ञानियों ने शीत (कच्चे) जल के सेवन से सिद्धि कही नमी राजर्षि की आहार न खाने से, रामगुप्त की आहार खाने से व बाहुक और नारायण ऋषि ने ठण्डा पानी पीकर सिद्धि प्राप्त की आसिल ऋषि, देविल ऋषि, द्वीपायन ऋषि और पाराशर ऋषि आदि ने ठण्डा पानी पीने से और बीज व वनस्पति के खाने से सिद्धि कही है क. भारवाही गर्दभ के समान मन्दबुद्धि साधक का संयम को भार रूप मानकर दुःखी होना ख. अग्नि का उपद्रव होने पर भागने वाले
			226	(2)	
			227-228	(3-4)	
204-208	(1-5)	संयम भीरू और युद्ध भीरू की तुलना			
209-210	(6-7)	युद्धवीर और संयमवीर की तुलना			
211-213	(8-10)	आक्षेप वचन कहने वाले अन्यतीर्थी समाधि भाव को प्राप्त नहीं होते			
214-218	(11-15)	बाँस के अग्र भाग के समान अन्यतीर्थियों को दुर्बल आक्षेप का विवेकपूर्ण प्रत्युत्तर			
219	(16)	दान के सम्बन्ध में अन्यतीर्थिक का आक्षेप वचन			
220	(17)	अन्यतीर्थियों की स्वपक्ष-सिद्धि के लिए धृष्टता	229	(5)	
221	(18)	परास्त अन्यतीर्थियों द्वारा गालीदान, जैसे म्लेच्छ पर्वत का आश्रय लेते हैं			

४६	श्रुत.1, अ.3, उ.4, अ.4, उ.1-2	2 सूत्रकृतांग सूत्र विषय सूची	श्रुत.1, अ.5, उ.1, सूत्र 230-304
230	(6)	मिथ्यामार्ग और आर्यमार्ग में अंतर	(15) धीर पुरुष का जीवन-पश्चात्ताप रहित
231	(7)	आर्यमार्ग ग्रहण किये बिना लोह बनिये की तरह दुःखी होना	(16) स्त्री वैतरणी नदी के समान दुस्तर है
232	(8)	पंचाश्वसेवी असंयमी है	(17) स्त्री-त्यागी को समाधि की प्राप्ति
233	(9)	स्त्रियों के वश में रहे हुए अज्ञानी पार्श्वस्थों के विभिन्न अभिप्राय	(18) उपसर्ग सहना समुद्र के समान दुस्तर है
234	(10)	जैसे- फोड़े-फुंसी से मवाद निकलने पर शक्ति प्राप्त होती है वैसे ही स्त्री सहवास में क्या दोष ?	(19) मृषावाद और अदत्तादान के त्याग का उपदेश
235	(11)	जैसे- भेड़ बिना हिलाये पानी पी लेती है वैसे ही स्त्री सहवास में क्या दोष ?	(20) अहिंसा से शांति और निर्वाण
236	(12)	जैसे- पिंगा पक्षिणी बिना हिलाये पानी पी लेती है वैसे ही स्त्री सहवास में क्या दोष ?	(21) अलान भाव से सेवा करने का निर्देश
237	(13)	जैसे- पूतना डाकिनी बच्चों पर आसक्त रहती है वैसे ही पार्श्वस्थ अनार्य कामभोगों में आसक्त रहता है	(22) उपसर्ग सहन करने का उपदेश
238	(14)	सुखैषी का पश्चात्ताप	

चतुर्थ स्त्री परिज्ञा अध्ययन

प्रथम उद्देशक

247-277 (1-31) क. स्त्री संग रूप उपसर्ग एक-रूप अनेक

ख. स्त्री जन्य उपसर्गों से सावधान रहने की प्रेरणाएं

ग. स्त्री संग भ्रष्ट साधक की अवदशा

द्वितीय उद्देशक

278-295 (1-18) स्त्री संग से भ्रष्ट साधकों की विडम्बना

296-299 (19-22) स्त्री संग से विमुक्त रहने का उपदेश

पंचम नरक विभक्ति अध्ययन

प्रथम उद्देशक

300-304 (1-5) नरक जिज्ञासा और संक्षिप्त समाधान

305-324 (6-25)	नारकों को भयंकर वेदनाएं			उन्हीं जीवनिकायों में उत्पन्न होकर वेदना भोगता है
325-326 (26-27)	नरक में नारक क्या खोते क्या पाते ?			
द्वितीय उद्देशक				
327-347 (1-21)	क. तीव्र वेदनाएं और नारकों के मन की प्रतिक्रियाएं	384 (4)	385-387 (5-7)	पाप युक्त कर्मों का फल अश्लिकाय के आरम्भ से निवृत्त होने का उपदेश
	ख. परमाधार्मिक द्वारा दी जाने वाली यातनाएं	388-390 (8-10)	391 (11)	वनस्पतिकाय की हिंसा और उसका फल क. मनुष्यभव और बोधि की दुर्लभता
348-351 (22-25)	नरक में सतत दुःख और उससे बचने के उपाय			ख. दुःखमय संसार में सुख के लिए किये गये प्रयत्नों से भी दुःख होता है, ज्वर से पीड़ित व्यक्ति की तरह
षष्ठ वीर स्तुति अध्ययन				
352-353 (1-2)	भगवान महावीर के संबंध में जिज्ञासा	392 (12)		अन्य मान्यता- नमक त्याग से मोक्ष, शीतल जल के सेवन से मोक्ष व यज्ञ से मोक्ष
354-360 (3-9)	अनेक गुणों से विभूषित भगवान महावीर की महिमा	393 (13)		क. स्व मान्यता-प्रातःकाल स्नान से मोक्ष नहीं और न नमक खाने से मोक्ष
361-365 (10-14)	पर्वत श्रेष्ठ सुमेरू के समान गुणों में सर्वश्रेष्ठ भगवान महावीर			ख. अन्य तीर्थों का मद्य, माँस व लहसुन के आहार से भवभ्रमण
366-375 (15-24)	विविध उपमाओं से भगवान की श्रेष्ठता			
376-379 (25-28)	भगवान महावीर की विशिष्ट उपलब्धियां	394-397 (14-19)		जलस्पर्श से मुक्ति की मिथ्या मान्यता एवं उसका खंडन
380 (29)	जिनेन्द्र भाषित धर्म के आराधकों की गति	398-399 (18-19)		यज्ञ-हवन से मुक्ति की मिथ्या मान्यता एवं उसका खंडन
सप्तम कुशील परिभाषा अध्ययन				
381-383 (1-3)	हिंसक-जिन जीवों की हिंसा करता है,	400 (20)		पाप कर्म से निवृत्त होने का उपदेश

401	(21)	सरस्स आहार, स्नान, वस्त्र प्रक्षालन और वस्त्र परिकर्म का निषेध	410	(30)	उपसर्ग सहन और राग-द्वेष की निवृत्ति से सर्वथा कर्मक्षय एवं मोक्ष-जैसे धुरी टूट जाने पर गाड़ी नहीं चलती
402	(22)	स्नान, बीज-कन्द आहार और मैथुन का निषेध			
403	(23)	रस लोलुप साधक की असाधुता	411	(1)	वीर्य का स्वरूप और प्रकार
404	(24)	सरस्स आहार के लिए घर में धर्मकथा करने का और स्वगुणोत्कीर्तन करने का निषेध	412	(2)	कर्म वीर्य और अकर्म वीर्य
405	(25)	सरस्स आहार के लिए दाता की प्रशंसा न करना, भाट व सुअर का उदाहरण	413	(3)	क. प्रमाद कर्म और अप्रमाद अकर्म ख. प्रमाद बालवीर्य और अप्रमाद पंडितवीर्य
406	(26)	दाता का प्रशंसक पार्श्वस्थ एवं कुशील है, उसका संयम निस्सार है	414	(4)	बाल अज्ञ जीव द्वारा शस्त्राभ्यास और मंत्र साधना
407	(27)	क. अज्ञात कुल की भिक्षा लेने का विधान ख. पूजा-प्रतिष्ठा के लिए तपश्चर्या न करे ग. शब्द रूप आदि में आसक्ति न रखे	415	(5)	सुख के लिए मायावी जीवों द्वारा प्राणियों का हनन
408	(28)	सर्व संग-परित्याग, सहिष्णु होकर रत्नत्रय की साधना, अनासक्ति एवं अभयदान के सम्बन्ध में उपदेश	416	(6)	तीनों योगों से अशक्त होने पर भी असंयमी द्वारा इहलोक-परलोक हेतु कृत, कारित हिंसा हिंसा से वैर परम्परा की वृद्धि
409	(29)	संयम निर्वाह के लिए आहार, पाप-निवृत्ति, उपसर्ग-सहन संयम व मोक्ष में रुचि, कर्म शत्रु का दमन, जैसे- योद्धा संग्राम में डटा रहता है	417	(7)	प्राणिघातक द्वारा साम्प्रदायिक कर्मों का तथा राग-द्वेष के कारण बहुत से पापों का बंधन बालजीव का सकर्म वीर्य समाप्त, पंडितजनों का अकर्म वीर्य प्रारंभ
			418	(8)	
			419	(9)	

420	(10)	कषायात्मक बंधन मुक्त साधक द्वारा कर्म बंधन का छेदन	431	(21)	पापकर्मों का त्रिकरण से निषेध
421	(11)	रत्नत्रय की साधना से मोक्ष, बालवीर्य से दुःख और अशुभ विचारों की वृद्धि	432	(22)	असम्यग्दर्शी वीर पुरुषों का दान, तप अध्ययन व यम-नियम कर्मबंध का हेतु है
422	(12)	उच्च पद और स्वजन सम्बन्ध की अनित्यता	433	(23)	सम्यग्दर्शी वीर पुरुषों का दान और तप कर्मक्षय का हेतु है
423	(13)	अममत्व और आर्य धर्माचरण के लिए उपदेश	434	(24)	क. पूजा-प्रतिष्ठा के लिए किया गया तप शुद्ध तप नहीं है
424	(14)	गुरु निर्दिष्ट धर्म का आचरण व पाप कर्मों का प्रत्याख्यान करे			ख. तप को गुप्त रखने का उपदेश
425	(15)	आयु के अंतिम क्षणों में संलेखना करने का निर्देश	435	(25)	ग. आत्म प्रशंसा निषेध
426	(16)	कूर्म (कछुए) के अंग संकोच की भाँति पापकर्मों का संकोच करना	436	(26)	अल्पभोजन, अल्पभाषण, क्षमा, अलोभ, इन्द्रियदमन और अनासक्ति का उपदेश
427	(17)	शरीर, मन और इन्द्रियों का निग्रह करे व भाषादोष का आसेवन करे			क. ध्यान योग द्वारा काया का व्युत्सर्ग
428	(18)	कषाय विजय का उपदेश			ख. मोक्ष पर्यन्त परीषह सहने का उपदेश
429	(19)	अहिंसा, अस्तेय और माया-मृषावाद के त्याग में ही धर्म	437	(1)	नवम धर्म अध्ययन
			438-439	(2-3)	धर्म स्वरूप की पृच्छा और उपदेश
430	(20)	अहिंसा, संवर तथा इन्द्रिय वशीकरण का उपदेश	440	(4)	सभी जातियों के जो भी मनुष्य परिग्रही, हिंसक एवं विषय लोलुप हैं वे दुःखों से मुक्त नहीं हो सकते
					धन का भोग सभी स्वजन भोगते हैं और कर्मफल का भोग संग्रहकर्ता अकेला ही भोगता है

441	(5)	अपने पाप कर्म से पीड़ित होने पर माता-पिता-पत्नी, पुत्र-पुत्रवधु, भाई आदि कोई भी रक्षा करने में समर्थ नहीं	453	(17)	की प्रशंसा, ज्योतिष आदि निमित्त कथन और शय्यातर के आहार का निषेध
442	(6)	क. पाप का फल भोगते समय कोई रक्षक नहीं बनता, अतः रत्नत्रय की आराधना करने का उपदेश ख. ममत्व और अहंकार का त्याग कर जिनभाषित धर्म का अनुष्ठान करने का उपदेश	454	(18)	क. जुआ शतरंज खेलना न सीखे ख. धर्म विरुद्ध न बोले ग. कलह करके हाथापाई न करे घ. निरर्थक विवाद न करे जूता पहनना, छाता लगाना, मोरपिच्छ-ताड़ आदि से हवा करना, पैर आदि दबवाना आदि अनाचारों का त्याग
443	(7)	बाह्य और आभ्यंतर परिग्रह का त्याग कर संयम पालन का उपदेश	455	(19)	क. हरे घास आदि पर मलोत्सर्ग का निषेध ख. बीजादि सचित्त वनस्पति को निकाल कर प्रासुक (निर्जीव) जल से भी मुख, गुदा या शरीर के प्रक्षालन का निषेध
444-445	(8-9)	षट्कार्थिक जीवों की हिंसा और उनके परिग्रह त्याग का उपदेश	456	(20)	क. गृहस्थ के पात्रों में आहार-पानी न करे ख. अचेल होने पर भी गृहस्थ के वस्त्र धारण न करे
446-447	(10-11)	मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन, परिग्रह ये सब शस्त्र कर्मबंध के हेतु हैं, अतः इनका त्याग करने का उपदेश	457	(21)	क. साधु पलंग आदि पर न बैठे, न सोये ख. दो घरों के बीच न बैठे ग. गृहस्थ से कुशल समाचार न पूछे
448-449	(12-13)	धोना, रंगना आदि अनाचारों का त्याग			
450	(14)	औद्देशिक आदि दोषयुक्त आहार का त्याग			
451	(15)	रसायन, अंजन आदि अनाचारों का त्याग			
452	(16)	असंयमितियों के साथ सांसारिक वार्ता, पापकार्य			

घ.	अपने अंगों को शोभा की दृष्टि से न पूछे	468	(32)	गुरुजनों से इच्छा निरोध सीखना
	ङ. पूर्व काम क्रीड़ा का स्मरण न करे	469	(33)	योग्य गुरु की उपासना करना
458	(22) यश-कीर्ति के लिए प्रयत्न करने का निषेध	470	(34)	गृहवास में सम्यग् ज्ञान साधना संभव नहीं, अतः प्रव्रज्या लेने का उपदेश
459	(23) अपना निर्वाह हो सके उतना ही अन्न-जल ग्रहण करे, निर्दोष अन्न-जल स्वयं ही ग्रहण करे व दूसरों को न देवे	471	(35)	अनासक्ति, असावद्य अनुष्ठान और सर्व अनाचारों का निषेध
460	(24) निर्ग्रन्थ महावीर द्वारा चारित्र्य व श्रुत धर्म का उपदेश	472	(36)	मोक्ष पर्यंत मान, माया व गौरव का त्याग
461-463	(25-27) भाषा संबंधी विवेक सूत्र	473	(1)	दशम समाधि अध्ययन क. धर्म श्रवण के लिए प्रेरणा
464	(28) कुशील की संगति न करे			ख. निदान और हिंसा का निषेध
465	(29) अकारण गृहस्थ के घर में बैठने का, बच्चों के साथ खेल खेलने का और अधिक हँसने का निषेध	474	(2)	ग. संयम पालन का उपदेश प्राणातिपात-विरमण तथा अदत्तादान-विरमण का उपदेश
466	(30) क. विषयों में अनासक्त रहने का उपदेश ख. भिक्षाचरी में अप्रमाद और उपसर्ग सहने का उपदेश	475	(3)	आश्रव निषेध और धन-धान्य संचय का निषेध
467	(31) क. पीटे जाने पर भी कुपित न हो ख. अपशब्द कहने पर भी क्रोध न करे व प्रसन्न मन से सहन करे	476	(4)	स्त्री-परित्याग का उपदेश
		477	(5)	बाल (अज्ञानी) जीव का भव-भ्रमण
		478	(6)	भाव समाधि और प्राणातिपात-विरति का उपदेश
		479	(7)	क. समत्व का उपदेश

४८०	(८)	ख. प्रिय-अप्रिय व्यवहार निषेध ग. उपसर्ग पीडित का संयम से पतन क. आधाकर्म आहार का त्याग ख. स्त्री का त्याग	४८८ ४८९	(१६) (१७)	अक्रियावाद से मोक्ष कहने वाले धर्मज्ञ नहीं विश्व में कई क्रियावादी, कई अक्रियावादी और कई बालक की बलि देने वाले होते हैं उनकी वैर वृद्धि होती है
४८१	(९)	ग. परिग्रह पापकर्म का संचय	४९०	(१८)	चिंता से संतप्त आरंभ व परिग्रह में आसक्त व्यक्ति
४८२	(१०)	हिंसक की दुर्गति धन संचय, आसक्ति तथा पापकथा का निषेध, विवेकपूर्ण भाषण का उपदेश	४९१ ४९२	(१९) (२०)	अशरण भावना जिस प्रकार मृग सिंह से दूर रहता है, इसी प्रकार धार्मिक व्यक्ति को पाप से दूर रहना चाहिये
४८३	(११)	क. आधाकर्म आहार ग्रहण का निषेध व उस आहार को ग्रहण करने वाले के साथ परिचय का निषेध	४९३	(२१)	हिंसा अत्यंत दुःखोत्पादक व वैर परंपरा बांधने वाली है अतः अहिंसा का पालन कर असत्य व अन्य पापों से दूर रहने से ही पूर्ण समाधि
४८४	(१२)	ख. कृश शरीर की चिंता न करे, संयम में पराक्रम करे	४९४	(२२)	सदोष आहार, परिग्रह और यशः कीर्ति की कामना का निषेध
४८५	(१३)	एकत्व भावना ही मोक्ष प्रदायक मैथुन और परिग्रह से निवृत्त को ही समाधि भाव की प्राप्ति	४९५	(२३)	क. निरपेक्ष होने का उपदेश ख. शरीर का ममत्व त्याग
४८६	(१४)	परीषह सहने का उपदेश	४९६	(२४)	ग. निदान रहित व जन्म-मरण की आशा के त्यागी की ही मुक्ति
४८७	(१५)	क. वचन-गुप्त रहने का तथा शुद्ध लेश्या रखने का उपदेश ख. गृह निर्माण निषेध ग. गृह कार्य एवं स्त्री-सम्पर्क निषेध			

एकादश मार्ग अध्ययन

				रूप होता है
497-502	(1-6)	मार्ग संबंधी जिज्ञासा, महत्व और समाधान	525	(29)
503-508	(7-12)	छ काय की रक्षा के लिए विरति का उपदेश		
509-511	(13-15)	एषणा समिति मार्ग-विवेक	526	(30)
512	(16)	हिंसामय कार्य की अनुमोदना का निषेध		
513-517	(17-21)	क. दान-पुण्य के कार्यों में विधि-निषेध का प्रयोग न करना	527	(31)
		ख. विधि-निषेध के प्रयोग से होने वाली हानियाँ	528	(32)
			529	(33)
518	(22)	मोक्षार्थी चन्द्रमा के समान प्रधान पुरुष है		
519	(23)	सम्यक्त्व धर्म द्वीप है		
520	(24)	शुद्ध धर्मोपदेशक	530-531	(34-35)
521	(25)	अपने आपको पण्डित मानने वाला समाधि को प्राप्त नहीं होता		
522	(26)	बीज व सचित्त जल का उपयोग करने वाला व औद्देशिक आहार करने वाला भाव समाधि को प्राप्त नहीं होता	532	(36)
			533	(37)
			534	(38)
523-524	(27-28)	विषय लोलुप पापी होता है, जैसे- टंक आदि जलचर पक्षी मछली को पकड़कर निगल जाने का कुध्यान करते हैं वह ध्यान पाप		
			535	(1)

द्वादश समवसरण अध्ययन

(1) परतीर्थिकमान्य चार धर्म वाद-चार समवसरण

536	(2)	एकांत अज्ञानवाद की समीक्षा	552	(18)	क. आत्मसमदर्शी को दीक्षा ग्रहण करने के लिए उपदेश
537-538	(3-4)	एकांत विनयवाद की समीक्षा			
539-540	(5-6)	विविध एकांत अक्रियावादियों की समीक्षा			ख. छोटे-बड़े सभी प्राणी एक समान
541	(7)	सर्व शून्यतावाद अक्रियावाद है	553	(19)	क. धर्मोपदेशक ही रक्षक है
542	(8)	अक्रियावादी का अज्ञान, जैसे- अंधा मनुष्य			ख. धर्मोपदेशक के समीप ही निवास करने का विधान
543	(9)	ज्योतिष आदि निमित्तशास्त्र और अध्ययन-शून्यवाद के सिद्धांत से विरुद्ध है	554	(20)	क. आत्मदर्शी ही लोकदर्शी है
544	(10)	अक्रियावादी द्वारा निमित्त शास्त्र के अध्ययन का निषेध			ख. जो संसार और मोक्ष का ज्ञाता है, वह जन्म मरण का ज्ञाता है
545	(11)	एकान्त क्रियावाद से मुक्ति नहीं, अपितु सर्वज्ञ सम्मत ज्ञानक्रिया से ही मुक्ति है	555	(21)	जो नरक की वेदना जानता है वह आश्रव संवर और निर्जरा को जानता है
546	(12)	मिथ्यात्व से संसार की वृद्धि	556	(22)	अनासक्त रहने का उपदेश
547	(13)	देव दानवों का भवभ्रमण			त्रयोदश यथातथ्य अध्ययन
548	(14)	विषयों और अंगनाओं के अनुराग से भवभ्रमण	557	(1)	शील और कुशील का एवं शांति (मोक्ष) और अशांति (संसार) का रहस्य सुनने के लिए प्रेरणा
549	(15)	क. कर्मक्षय बालजीव नहीं कर सकता			समाधि मार्ग पर न चलने वाले निहवों का अविनय
550	(16)	ख. संतोषी मेधावी पापकर्म नहीं करता	558-560	(2-4)	क्रोधांध का दुःखमय जीवन जैसे संकड़ी पगडंडी पकड़ने वाला अंधा
551	(17)	बुद्ध पुरुषों का ही मोक्ष होता है			
		कुछ लोग एकान्त ज्ञानवादी हैं-किन्तु धीरे धीरे पुरुष पापकर्मों से सर्वथा विरत हैं	561	(5)	

562	(6)	क्रोधी समभाव को प्राप्त नहीं होता, सुशिष्य के लक्षण, आज्ञा पालन, पापकर्म भीरु, लज्जावान, श्रद्धालु और अमायावी होना	569	(13)	क. जो भाषा विज्ञ है, हित-मित प्रिय भाषण करता है तथा शास्त्रों की सुन्दर व्याख्या करने वाला व धर्म भावना वाला है
563	(7)	विनयी शिष्य			वही सच्चा साधु
564	(8)	जैसे जल में चन्द्रमा का प्रतिबिम्ब निरर्थक है वैसे ही अभिमानी तपस्वी का तप निरर्थक है			ख. मद करने वाला गुणी श्रमण भी सच्चा श्रमण नहीं
565	(9)	ज्ञान का मद करने वाला अज्ञानी वह मोहरूपी कूटपाश में फंसकर संसार परिभ्रमण करता है	570	(14)	ज्ञान-मद या लाभ-मद करने वाला निन्दक श्रमण बाल है, उसको समाधि प्राप्त नहीं होती
566	(10)	सच्चा श्रमण शुद्ध आहार लेने वाला एवं निरभिमानी होता है	571-572	(15-16)	मद न करने वाला ही पंडित है एवं मोक्ष गामी है
567	(11)	क. दुर्गति से रक्षा ज्ञान और चारित्र की साधना से ही होती है ख. दीक्षा लेकर सावद्य कर्म करे तो विमुक्त नहीं	573	(17)	अन्न-पान में आसक्त न होकर शुद्ध आहार ले
			574	(18)	संयम में अरति और असंयम में रति का निषेध
568	(12)	क. पूजा प्रतिष्ठा के इच्छुक अभिमानी श्रमण की भिक्षाचर्या केवल आजीविका का हेतु है ख. परमार्थ को न जानने वाला अज्ञानी रोग शोक आदि उपद्रवों को प्राप्त	575	(19)	भाषा विवेक और एकत्व भावना का उपदेश
			576-578	(20-22)	धर्मोपदेश देने से पूर्व व पश्चात् श्रोताओं का अभिप्राय जानने का निर्देश
			579	(23)	साधु धर्म का यथातथ्य रूप में प्राणपण से पालन करने की प्रेरणा

चतुर्दश ग्रंथ अध्ययन

580	(1)	ग्रन्थ (परिग्रह) त्यागी शिष्य गुरु के सान्निध्य में शिक्षा ग्रहण करे	598	(19)	क. प्रश्नों का यथार्थ उत्तर देवे ख. आत्म प्रशंसा और अन्य का उपहास न करे
581-582	(2-3)	अविनयी शिष्य की दुर्गति-पक्षी शावक की उपमा	599	(20)	ग. आशीर्वाद सूचक वाक्य न बोले क. विनाश की आशंका से किसी को आशीर्वाद न दे
583-584	(4-5)	गुरुकुल निवास का महत्व और लाभ			ख. मंत्र प्रयोग और अधर्मोपदेश का निषेध
585	(6)	शब्दों में राग-द्वेष, प्रमाद, विकथा व विचिकित्सा होने पर समाधान प्राप्त करे			ग. निस्पृह रहने का उपदेश
586	(7)	भूल स्वीकार न करके क्रोध करने वाला श्रमण मुक्त नहीं होता	600	(21)	हास्य, अप्रिय सत्य, प्रतिष्ठा की कामना और कषाय करने का निषेध
587-590	(8-11)	हित शिक्षा देने वाले पर क्रोध न करे, अपितु प्रसन्न होवे जैसे मार्ग भ्रष्ट पुरुष सही मार्ग चढ़ने पर आदर पाता है	601	(22)	भाषा विवेक और समभाव का उपदेश
			602	(23)	प्रश्नों का संक्षिप्त एवं सरस भाषा में ही उत्तर दे
591-592	(12-13)	जिन वचनों से धर्म के स्वरूप का ज्ञान हो जाता है जैसे सूर्योदय होने पर आँख के द्वारा सब पदार्थ स्पष्ट हो जाते हैं	603	(24)	प्रश्न का उत्तर विस्तृत देना हो तो भी निर्दोष भाषा में देना
593	(14)	निर्ग्रन्थ समस्त प्राणियों की हिंसा आदि से मुक्त रहे	604	(25)	आगमोक्त सिद्धांतों का उपदेश-भाव समाधि को प्राप्त होता है
594-596	(15-17)	निर्ग्रन्थ द्वारा ली जाने वाली शिक्षा की विधि	605	(26)	सूत्र का यथार्थ अर्थ करना
597	(18)	विवेकपूर्वक प्रश्नों का उत्तर देने वाला धर्मोपदेशक मुक्त है	606	(27)	सूत्र का शुद्ध उच्चारण और यथार्थ अर्थ करने वाला साधक ही समाधि को प्राप्त होता है

पंचदश यमकीय अध्ययन

607	(1)	दर्शनावरणीय कर्म के क्षय से त्रिकालज्ञ होना	619	(13)	देकर फंसाने के समान स्त्री संग या विषय भोगों के प्रलोभन में फंसने का निषेध
608	(2)	संशय मिटाने वाला ज्ञानवान्			प्राणी मात्र के साथ विरोध नहीं रखने वाला
609	(3)	क. अर्हत्साधित तत्व कथन ही सत्य है ख. मैत्रीभाव का उपदेश	620	(14)	परमार्थदर्शी होता है क. भोगांकाक्षा का अंत करने वाला चक्षु
610	(4)	क. अविरोध ही श्रमण धर्म है ख. धर्म भावना का उपदेश			सदृश ख. मोह का अंत ही संसार का अंत है जैसे
611	(5)	भावना से आत्म-शुद्धि एवं निर्वाण जैसे किनारे पर पहुंची नौका			उस्तरा का अंतिम भाग, रथ के चक्र का अंतिम भाग
612-613	(6-7)	पाप स्वरूप का ज्ञाता और नये पाप कर्म न करने वाला कर्मों से मुक्त होता है	621	(15)	रूखा-सूखा खाने वाला निष्काम श्रमण मुक्त होता है
614-615	(8-9)	स्त्रियों के मोह से मुक्त पुरुष ही मुक्त होता है	622-623	(16-17)	शिवपद और स्वर्ग का अधिकारी मनुष्य
616	(10)	क. मोक्षमार्ग पर संयमानुष्ठान द्वारा आधिपत्य ख. मुमुक्षुओं को मोक्षमार्ग में अनुशासित करने वाले मोक्ष के सम्मुख होते हैं	624	(18)	अमनुष्य अर्थात् देव-तिर्यच आदि नहीं बोधि और शुभ लेश्या अति दुर्लभ
			625	(19)	धर्मोपदेशक का भवभ्रमण नहीं होता
			626	(20)	क. मुक्त का पुनरागमन नहीं होता ख. तीर्थंकर और गणधर लोक के सर्वोत्कृष्ट नेत्र
617	(11)	क. भिन्न-भिन्न प्रणियों को अनुशासित करने का तरीका भिन्न-भिन्न ख. मुक्त पुरुष के अनेक लक्षण	627	(21)	काश्यप कथित संयम के पालने से निर्वाण की प्राप्ति
618	(12)	सुअर आदि प्राणियों को चांवलों का प्रलोभन			

628	(22)	पापकर्मों का अकर्ता ही मुक्त होता है	और उनके सामने दृष्टांत के भाव कथन
629-630	(23-24)	संयम एवं मोक्ष मार्ग की साधना का सुपरिणाम	दृष्टांतों के दार्ष्टान्तिक की योजना
631	(25)	रत्नत्रय की आराधना द्वारा तीनों काल में	धर्म श्रद्धालु राजा आदि के मष्तिष्क में अन्यतीर्थियों
		भव भ्रमण से मुक्ति	द्वारा स्वधर्म प्रवेश की प्रक्रिया
षोडश गाथा अध्ययन			
अनगार के चार पर्याय			
सूत्रांक			
632-633	माहण, श्रमण, भिक्षु और निर्ग्रन्थ कौन?		प्रथम तज्जीव तत्परीरवादी पुरुष का स्वरूप
634	माहण की व्याख्या		द्वितीय पंच महाभूतिक पुरुष का स्वरूप
635	श्रमण की व्याख्या		तृतीय ईश्वर कारणवादी पुरुष का स्वरूप
636	भिक्षु की व्याख्या		चतुर्थ नियतिवादी पुरुष का स्वरूप
637	निर्ग्रन्थ की व्याख्या		भिक्षुवृत्ति के लिए समुदात भिक्षु के लिए
			वैराग्योत्पादक परिज्ञान सूत्र
677-678			गृहस्थवत् आरंभ परिग्रह युक्त श्रमण-माहन और इन दोनों
			से मुक्त निर्ग्रन्थ भिक्षु में अंतर
679			छः जीविकाय की हिंसा का युक्तिपूर्वक निषेध
680			समस्त तीर्थंकरों द्वारा अहिंसा का प्रतिपादन
681			प्राणातिपात से विरत और अनाचार सेवन न करने वाला
			भिक्षु
682			संयम साधना से भिक्षु का स्वर्ग या सिद्धलोक में
			गमन
683			अनासक्त और पाप-विरत भिक्षु
684			प्राणातिपात से सर्वथा विरत भिक्षु
द्वितीय श्रुतस्कंध			
प्रथम पुंडरीक अध्ययन			
638	पुष्करिणी के मध्यम में खिले हुए उत्तम श्वेत कमल का वर्णन		
639-642	उत्तम श्वेत कमल को पाने में असफल चार पुरुष		
643	उत्तम श्वेत कमल को पाने में सफल पंचम पुरुष		
	निःस्पृह भिक्षु		
644	भ. महावीर द्वारा निर्ग्रन्थ-निर्ग्रन्थियों को निमंत्रण		

685	कामभोग से सर्वथा विरत भिक्षु	700	षष्ठ मृषावाद प्रत्ययिक का स्वरूप और विश्लेषण
686	क्रोधादिपूर्वक की गई सांपरायिक क्रिया से सर्वथा विरत भिक्षु	701	सप्तम अदत्तादान प्रत्ययिक का स्वरूप और विश्लेषण
687	क्रीत आदि दोष रहित आहार लेने वाला भिक्षु	702	अष्टम अध्यात्म प्रत्ययिक का स्वरूप और विश्लेषण
688	क. गृहस्थ के निमित्त बने हुए आहार को अनासक्त होकर खाने वाला भिक्षु	703	नवम मान प्रत्ययिक का स्वरूप और विश्लेषण
	ख. समस्त कार्य यथासमय करने वाला भिक्षु	704	दशम मित्र दोष प्रत्ययिक का स्वरूप और विश्लेषण
689-690	निःस्पृह होकर धर्मोपदेश करने वाला भिक्षु	705	एकादश माया प्रत्ययिक का स्वरूप और विश्लेषण
691-692	सर्वगुण सम्पन्न भिक्षु के उपदेश से भव्य आत्माओं का उद्धार	706	द्वादश लोभ प्रत्ययिक का स्वरूप और विश्लेषण
693	क. श्रमण-माहन के गुण	707	त्रयोदश इर्या पथिक प्रत्ययिक का स्वरूप और विश्लेषण
	ख. श्रमण के चौदह पर्यायवाची नाम	708	क. पापशास्त्रों के नाम
	द्वितीय क्रिया-स्थान अध्ययन		ख. पापशास्त्रों के अध्ययनकर्त्ताओं की गति
694	संसार के समस्त जीव तेरह क्रिया स्थानों में	709	पापात्माओं के चतुर्दश पाप कार्य
695	प्रथम अर्थ-दण्ड प्रत्ययिक का स्वरूप और विश्लेषण	710	क. महापापियों के कार्य, भोगमय जीवन बिताने वाले अनार्य हैं, धूर्त हैं
696	द्वितीय अनर्थ-दण्ड प्रत्ययिक का स्वरूप और विश्लेषण		ख. अधर्म पक्ष नामक प्रथम स्थान का स्वरूप
697	तृतीय हिंसा-दण्ड प्रत्ययिक का स्वरूप और विश्लेषण	711	धर्म पक्ष नामक द्वितीय स्थान का स्वरूप
698	चतुर्थ अकस्मात् दण्ड प्रत्ययिक का स्वरूप और विश्लेषण	712	मिश्र पक्ष नामक तृतीय स्थान का स्वरूप
699	पंचम दृष्टि विपर्यास दण्ड प्रत्ययिक का स्वरूप और विश्लेषण	713	प्रथम स्थान- अधर्म पक्ष (महाआरंभी गृहस्थों) की वृत्ति-प्रवृत्ति एवं परिणाम
		714	द्वितीय स्थान- धर्म पक्ष (मुनि जीवन) की वृत्ति-प्रवृत्ति एवं परिणाम

६०		२ सूत्रकृतांग सूत्र विषय सूची		श्रुत.२, अ.२-३, सूत्र ७१५-७३७	
७१५-७१६	तृतीय स्थान- मिश्र पक्ष (धार्मिक गृहस्थों) की वृत्ति-प्रवृत्ति एवं परिणाम	७२६	(१-४)	औषध रूप वनस्पति में आहार आदि का निरूपण	
७१७-७१८	अधर्म पक्ष के आराधक ३६३ वादी	७२७	(१-४)	हरित रूप वनस्पति में आहार आदि का निरूपण	
७१९	हिंसा के समर्थकों का भवभ्रमण,				
७२०	अहिंसा के समर्थकों की सद्गति	७२८		पृथ्वीयोनिक वृक्षों में आहार आदि का निरूपण	
७२१	क. बारह क्रिया स्थान सेवियों का भवभ्रमण	७२९-७३०		उदययोनिक वृक्षों में आहार आदि का निरूपण	
	ख. तेरहवें क्रियास्थान सेवियों की सिद्ध गति	७३१	(१-२)	विभिन्नयोनिक वनस्पतियों की उत्पत्ति एवं आहार आदि का निरूपण	
	तृतीय आहार परिज्ञा अध्ययन				
७२२	लोक में सर्वदिशाओं में चार प्रकार के बीज	७३२		नानाविध मनुष्यों की उत्पत्ति, स्थिति, संवृद्धि एवं आहार आदि का निरूपण	
७२३	क. बीजकायिक जीवों की उत्पत्ति एवं आहार आदि की प्रक्रिया	७३३		जलचर पंचेन्द्रिय जीवों की उत्पत्ति एवं आहार आदि का प्ररूपण	
	ख. वृक्षयोनिक जीवों की उत्पत्ति, स्थिति, वृद्धि एवं आहार प्रक्रिया	७३४		स्थलचर पंचेन्द्रिय जीवों की उत्पत्ति एवं आहार आदि का प्ररूपण	
	ग. वृक्षयोनिक जीवों में उत्पन्न होने वाले वृक्षयोनिक वृक्ष	७३५		उरपरिसर्प पंचेन्द्रिय जीवों की उत्पत्ति एवं आहार आदि का प्ररूपण	
	घ. वृक्ष के मूल आदि अवयवों की उत्पत्ति एवं आहार आदि का निरूपण	७३६		भुजपरिसर्प पंचेन्द्रिय जीवों की उत्पत्ति एवं आहार आदि का प्ररूपण	
७२४	(१-४) अध्यारूह वृक्ष की उत्पत्ति और आहार				
७२५	(१-४) तृण रूप वनस्पति में आहार आदि का निरूपण	७३७		खेचर पंचेन्द्रिय जीवों की उत्पत्ति एवं आहार आदि का प्ररूपण	

738	विकलेन्द्रिय त्रसप्राणियों की उत्पत्ति एवं आहार आदि का प्ररूपण	748-749	प्रत्याख्यानी क्रियारहित जीव सदैव पापकर्म बंध कर्ता, क्यों और कैसे?
739	वायुयोनिक अप्काय में जीवों की उत्पत्ति एवं आहार आदि का प्ररूपण	750-752	संज्ञी-अंसंज्ञी अप्रत्याख्यानी सदैव पापकर्मरत व वधक का दृष्टांत
740	अप्योनिक अप्काय में जीवों की उत्पत्ति एवं आहार आदि का प्ररूपण	753	संयत-विरत पापकर्म प्रत्याख्यानी कौन और कैसे?
741	उदकयोनिक उदकों में जीवों की उत्पत्ति एवं आहार आदि का प्ररूपण	गाथांक 754	पंचम आचार श्रुत अध्ययन
742	उदकयोनिक त्रसकाय में जीवों की उत्पत्ति एवं आहार आदि का प्ररूपण	755-758	(1) अनाचार सेवन न करने का उपदेश (2-5) जगत की नित्यानित्यता के सम्बन्ध में एकान्त दृष्टि रखने का निषेध
743	त्रस-स्थावरयोनिक अग्निकायिक जीवों की उत्पत्ति एवं आहार आदि का प्ररूपण	759-760	(6-7) एकेन्द्रिय तथा पंचेन्द्रिय की हिंसा के सम्बन्ध में एकान्त दृष्टि रखने का निषेध
744	त्रस-स्थावरयोनिक वायुकायिक जीवों की उत्पत्ति एवं आहार आदि का प्ररूपण	761-762	(8-9) आधा कर्म आहारसेवी के सम्बन्ध में एकान्त दृष्टि रखने का निषेध
745	त्रस-स्थावरयोनिक पृथ्वीकायिक जीवों के प्रकार एवं आहार आदि के प्ररूपण की संग्रहणी गाथाएं	763-764	(10-11) औदारिकादि शरीरों के सम्बन्ध में एकान्त दृष्टि रखने का निषेध
746	समुच्चय रूप से सब जीवों की उत्पत्ति एवं आहार का प्ररूपण तथा आहार संयम की प्रेरणा	765	(12) लोक और अलोक का अभाव नहीं किन्तु अस्तित्व है
747	चतुर्थ प्रत्याख्यान अध्ययन अप्रत्याख्यानी आत्मा का स्वरूप और प्रकार	766	(13) जीव और अजीव का अभाव नहीं किन्तु अस्तित्व है

७६७	(१४)	धर्म और अधर्म का अभाव नहीं किन्तु अस्तित्व है	७७७	(२४)	देव और देवी का अभाव नहीं किन्तु अस्तित्व है
७६८	(१५)	बन्ध और मोक्ष का अभाव नहीं किन्तु अस्तित्व है	७७८	(२५)	सिद्धि और असिद्धि का अभाव नहीं किन्तु अस्तित्व है
७६९	(१६)	पुण्य और पाप का अभाव नहीं किन्तु अस्तित्व है	७७९	(२६)	सिद्धि स्थान का अभाव नहीं किन्तु अस्तित्व है
७७०	(१७)	आश्रव और संवर का अभाव नहीं किन्तु अस्तित्व है	७८०	(२७)	साधु और असाधु का अभाव नहीं किन्तु अस्तित्व है
७७१	(१८)	वेदना और निर्जरा का अभाव नहीं किन्तु अस्तित्व है	७८१-७८२	(२८-२९)	कल्याण और पाप का अभाव नहीं किन्तु अस्तित्व है
७७२	(१९)	क्रिया और अक्रिया का अभाव नहीं किन्तु अस्तित्व है	७८३	(३०)	जगत् और प्राणियों का अभाव नहीं किन्तु अस्तित्व है
७७३	(२०)	क्रोध और मान का अभाव नहीं किन्तु अस्तित्व है	७८४	(३१)	साधुता के सम्बन्ध में सही दृष्टि रखने का उपदेश
७७४	(२१)	माया और लोभ का अभाव नहीं किन्तु अस्तित्व है	७८५	(३२)	दान की प्राप्ति के सम्बन्ध में सही दृष्टि रखने का उपदेश
७७५	(२२)	राग और द्वेष का अभाव नहीं किन्तु अस्तित्व है	७८६	(३३)	मोक्ष पर्यन्त जिनोपदिष्ट धर्म की आराधना
७७६	(२३)	चार गति वाले संसार का अभाव नहीं किन्तु अस्तित्व है	षष्ठ आर्द्रकीय अध्ययन		
			७८७-७९२	(१-६)	भ. महावीर पर लगाये गये आक्षेपों का आर्द्रकमुनि द्वारा परिहार

793-800	(7-14)	गोशालक द्वारा सुविधावादी धर्म की चर्चा- आर्द्रकमुनि द्वारा प्रतिवाद	844	शेषद्रव्या नामक उदकशाला. हस्तियाम-वनखंड तथा मनोरथ उद्यान
801-804	(15-18)	भ. महावीर के डरपोक होने का आक्षेप व आर्द्रक द्वारा समाधान	845	भ. गौतम और पार्श्वपत्य पेढाल-पुत्र का मिलन और संवाद
805-811	(19-25)	गोशालक द्वारा प्रदत्त वणिग की उपमा का आर्द्रक द्वारा प्रतिवाद	846	पेढाल पुत्र द्वारा कुमार पुत्र निर्ग्रथ की प्रत्याख्यान पद्धति की आलोचना
812-828	(26-42)	बोद्धों के अपसिद्धांत का आर्द्रक द्वारा खंडन एवं स्वसिद्धांत मंडन	847	भ. गौतम द्वारा पार्श्वपत्य उदक निर्ग्रथ पेढाल पुत्र की मान्यता का खण्डन
829-831	(43-45)	पशुवध-समर्थक मांसभोजी ब्राह्मणों को भोजन देने का फल	848	पार्श्वपत्य उदक निर्ग्रथ पेढाल पुत्र का त्रस शब्द के सम्बन्ध में प्रश्न
832-837	(46-51)	सांख्यमतवादी एकदंडिकों के साथ तात्त्विक चर्चा	849-850	भ. गौतमस्वामी द्वारा सटीक समाधान
838-840	(52-54)	हस्तितापसों का विचित्र अहिंसामत-आर्द्रक द्वारा प्रतिवाद	851	पेढालपुत्र का श्रावक की प्राणातिपात विरति के संबंध में प्रश्न
841	(55)	रत्नत्रय रूप धर्म-दुस्तर संसार को पार करने का उपाय	852-855	भ. गौतम का पार्श्वपत्य स्थविरों से प्रतिप्रश्न
			856-866	दृष्टान्तों और युक्तियों द्वारा श्रमणोपासक-प्रत्याख्यान की निर्विषयता का निराकरण
			867-873	उदक पेढाल पुत्र को गौतमस्वामी द्वारा कृतज्ञता-प्रकाश की प्रेरणा और उदक निर्ग्रथ द्वारा पंच महाव्रत रूप धर्म-स्वीकार

सप्तम नालंदीय अध्ययन

- 842 राजगृह का उपनगर नालंदा
843 लेप गाथापति का धार्मिक जीवन



णमो णाणस्स

द्रव्यानुयोग-प्रधान स्थानांग सूत्र

(ठाणांग-समवायांग का ज्ञाता श्रुत स्थविर होता है)

श्रुतस्कंध	1	18	विकुर्वणा एक	19	मन एक	20	वचन एक
स्थान	10	21	काया एक	22	उत्पाद एक	23	विनाश एक
उद्देशक	21	24	मृत शरीर एक	25	गति एक	26	आगति एक
पद	72000	27	च्यवन एक	28	उपपात एक	29	तर्क एक
उपलब्ध पाठ परिमाण श्लोक	3770	30	संज्ञा एक	31	मति एक	32	विज्ञता एक
गद्य सूत्र	2650	33	वेदना एक	34	छेदन एक	35	भेदन एक
पद्य सूत्र	169	36	चरिम शरीरी जीवों का मरण एक				
		37	संशुद्ध यथाभूत पात्र एक			38	दुःख एक
		39	अधर्म प्रतिमा एक			40	धर्म प्रतिमा एक
		41	मन एक	42	वचन एक	43	काय व्यापार एक
		44	उत्थान, कर्म, बलवीर्य, पुरुषाकार, पराक्रम एक				
		45	ज्ञान एक	46	दर्शन एक	47	चारित्र एक
		48	समय एक	49	प्रदेश एक	50	परमाणु एक
		51	सिद्धि एक	52	सिद्ध एक	53	परिनिर्वाण एक
		54	परिनिर्वृत एक	55	शब्द एक	56	रूप एक
		57	गंध एक	58	रस एक	59	स्पर्श एक
		60	सुशब्द एक	61	दुशब्द एक	62	सुरूप एक
		63	कुरूप एक	64	दीर्घ एक	65	ह्रस्व एक
		66	वृत्त एक	67	त्रिकोण एक	68	चतुष्कोण एक
		69	विस्तीर्ण एक	70	मंडलाकार एक		

3 स्थानांग विषयसूची

प्रथम स्थान

सूत्रांक

1	उत्थानिका	2	आत्मा एक	3	दण्ड एक
4	क्रिया एक	5	लोक एक	6	अलोक एक
7	धर्म एक	8	अधर्म एक	9	बंध एक
10	मोक्ष एक	11	पुण्य एक	12	पाप एक
13	आश्रव एक	14	संवर एक	15	वेदना एक
16	निर्जरा एक	17	प्रत्येक शरीर में जीव एक		

71	कृष्ण वर्ण एक	72	नील वर्ण एक	111	अदत्तादान विरमण एक	112	मैथुन विरमण एक
73	लोहित वर्ण एक	74	हारिद्र वर्ण एक	113	परिग्रह विरमण एक	114	क्रोध विवेक एक
75	शुक्ल वर्ण एक	76	सुगंध वर्ण एक	115	मान विवेक एक	116	माया विवेक एक
77	दुर्गंध वर्ण एक	78	तिक्त रस एक	117	लोभ विवेक एक	118	राग विवेक एक
79	कटु रस एक	80	कषाय रस एक	119	द्वेष विवेक एक	120	कलह विवेक एक
81	आम्ल रस एक	82	मधुर रस एक	121	अभ्याख्यान विवेक एक	122	पैशुन्य विवेक एक
83	कर्कश स्पर्श एक	84	मृदु स्पर्श एक	123	परपरिवाद विवेक एक	124	अरतिरति विवेक एक
85	गुरु स्पर्श एक	86	लघु स्पर्श एक	125	माया मृषा विवेक एक		
87	शीत स्पर्श एक	88	उष्ण स्पर्श एक	126	मिथ्या दर्शन शल्य विवेक एक		
89	स्निग्ध स्पर्श एक	90	रुक्ष स्पर्श एक	127	अवसर्पिणी एक	128	सुषम-सुषमा एक
91	प्राणातिपात एक	92	मृषावाद एक	129	सुषमा एक	130	सुषम-दुषमा एक
93	अदत्तादान एक	94	मैथुन एक	131	दुषम-सुषमा एक	132	दुषमा एक
95	परिग्रह एक	96	क्रोध एक	133	दुषम-दुषमा एक	134	उत्सर्पिणी एक
97	मान एक	98	माया एक	135	दुषम-दुषमा एक	136	दुषमा एक
99	लोभ एक	100	राग एक	137	दुषम-सुषमा एक	138	सुषम-दुषमा एक
101	द्वेष एक	102	कलह एक	139	सुषमा एक	140	सुषम-सुषमा एक
103	अभ्याख्यान एक	104	पैशुन्य एक	141	नैरेयिक वर्गणा एक	142	असुरकुमार वर्गणा एक
105	परपरिवाद एक	106	अरतिरति एक	143	नागकुमार वर्गणा एक	144	सुवर्णकुमार वर्गणा एक
107	माया मृषा एक	108	मिथ्या दर्शन शल्य एक	145	विद्युत्कुमार वर्गणा एक	146	अग्निकुमार वर्गणा एक
109	प्राणातिपात विरमण एक	110	मृषावाद विरमण एक	147	द्वीपकुमार वर्गणा एक	148	उदधिकुमार वर्गणा एक

149	दिशाकुमार वर्गणा एक	150	वायुकुमार वर्गणा एक	174	मिथ्यादृष्टि नैरयिक वर्गणा एक
151	स्तनितकुमार वर्गणा एक	152	पृथ्वीकाय वर्गणा एक	175	सम्यग्मिथ्यादृष्टि नैरयिक वर्गणा एक
153	अक्काय वर्गणा एक	154	तेजस्काय वर्गणा एक	176	सम्यग्दृष्टि-मिथ्यादृष्टि-सम्यग्मिथ्यादृष्टि असुरकुमार-यावत्
155	वायुकाय वर्गणा एक	156	वनस्पतिकाय वर्गणा एक		स्तनितकुमार वर्गणा एक
157	द्वीन्द्रिय वर्गणा एक	158	त्रीन्द्रिय वर्गणा एक	177	मिथ्यादृष्टि पृथ्वीकायिक वर्गणा एक
159	चतुरिन्द्रिय वर्गणा एक			178	मिथ्यादृष्टि अक्कायिक-यावत्-वनस्पतिकायिक वर्गणा एक
160	पंचेन्द्रिय तिर्यच्योनिक वर्गणा एक			179	सम्यग्दृष्टि द्वीन्द्रिय जीव वर्गणा एक
161	मनुष्यों की वर्गणा एक			180	मिथ्यादृष्टि द्वीन्द्रिय जीव वर्गणा एक
162	वाणव्यंतर देवों की वर्गणा एक			181	सम्यग्दृष्टि त्रीन्द्रिय जीव वर्गणा एक
163	ज्योतिष्क देवों की वर्गणा एक			182	मिथ्यादृष्टि त्रीन्द्रिय जीव वर्गणा एक
164	वैमानिक देवों की वर्गणा एक			183	सम्यग्दृष्टि चतुरिन्द्रिय जीव वर्गणा एक
165	भव्यसिद्धिक देवों की वर्गणा एक			184	मिथ्यादृष्टि चतुरिन्द्रिय जीव वर्गणा एक
166	अभव्यसिद्धिक देवों की वर्गणा एक			185	सम्यग्दृष्टि मिथ्यादृष्टि-सम्यग्मिथ्यादृष्टि पंचेन्द्रिय-यावत्-वैमानिक जीव वर्गणा एक
167	भव्यसिद्धिक नैरयिक वर्गणा एक				
168	अभव्यसिद्धिक नैरयिक वर्गणा एक			186	कृष्ण पाक्षिक जीव वर्गणा एक
169	भव्यसिद्धिक-अभव्यसिद्धिक असुरकुमार-यावत्-वैमानिक देव वर्गणा एक			187	शुक्ल पाक्षिक जीव वर्गणा एक
170	सम्यग्दृष्टि वर्गणा एक	171	मिथ्यादृष्टि वर्गणा एक	188	कृष्ण पाक्षिक नैरयिक जीव वर्गणा एक
172	सम्यग्मिथ्यादृष्टि वर्गणा एक			189	शुक्ल पाक्षिक नैरयिक जीव वर्गणा एक
173	सम्यग्दृष्टि नैरयिक वर्गणा एक			190	कृष्ण पाक्षिक-शुक्ल पाक्षिक असुरकुमार-यावत्-वैमानिक शेष 23 दण्डकों में जीव वर्गणा एक

191	कृष्ण लेश्या वाले जीवों की वर्गणा एक	208	कृष्ण लेश्या वाले मिथ्यादृष्टि जीवों की वर्गणा एक
192	नील लेश्या वाले जीवों की वर्गणा एक	209	कृष्ण लेश्या वाले सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवों की वर्गणा एक
193	कापोत लेश्या वाले जीवों की वर्गणा एक	210	छहों लेश्याओं में 24 दण्डकों में जिसके जितनी दृष्टियां उस अनुसार उसकी वर्गणा क्रमशः एक-एक
194	तेजो लेश्या वाले जीवों की वर्गणा एक	211	कृष्ण लेश्या वाले कृष्णपाक्षिक जीवों की वर्गणा एक
195	पद्म लेश्या वाले जीवों की वर्गणा एक	212	कृष्ण लेश्या वाले शुक्लपाक्षिक जीवों की वर्गणा एक
196	शुक्ल लेश्या वाले जीवों की वर्गणा एक	213	24 दण्डकों में लेश्याओं अनुसार कृष्णपाक्षिक-शुक्लपाक्षिक जीवों की वर्गणा एक
197	कृष्ण लेश्या वाले नारक जीवों की वर्गणा एक		
198	नील लेश्या वाले नारक जीवों की वर्गणा एक	214	तीर्थ सिद्धों की वर्गणा एक
199	कापोत लेश्या वाले नारक जीवों की वर्गणा एक	215	अतीर्थ सिद्धों की वर्गणा एक
200	जिन दण्डकों में जितनी लेश्याएं उतनी उनकी वर्गणा क्रमशः एक-एक	216	तीर्थकर सिद्धों की वर्गणा एक
201	कृष्ण लेश्या वाले भवसिद्धिक जीवों की वर्गणा एक	217	अतीर्थकर सिद्धों की वर्गणा एक
202	कृष्ण लेश्या वाले अभवसिद्धिक जीवों की वर्गणा एक	218	स्वयंबुद्ध सिद्धों की वर्गणा एक
203	छहों लेश्या वाले भवसिद्धिक-अभवसिद्धिक जीवों की वर्गणा क्रमशः एक-एक	219	प्रत्येक बुद्ध सिद्धों की वर्गणा एक
204	कृष्ण लेश्या वाले भवसिद्धिक नारक जीवों की वर्गणा एक	220	बुद्ध बोधित सिद्धों की वर्गणा एक
205	कृष्ण लेश्या वाले अभवसिद्धिक नारक जीवों की वर्गणा एक	221	स्त्रीलिंग सिद्धों की वर्गणा एक
206	जिस दण्डक में जितनी लेश्याएं उस अनुसार 24 दण्डकों में भवसिद्धिक-अभवसिद्धिक जीवों की वर्गणा क्रमशः एक-एक	222	पुरुषलिंग सिद्धों की वर्गणा एक
207	कृष्ण लेश्या वाले सम्यग्दृष्टि जीवों की वर्गणा एक	223	नपुंसकलिंग सिद्धों की वर्गणा एक
		224	स्वलिंग सिद्धों की वर्गणा एक
		225	अन्यलिंग सिद्धों की वर्गणा एक

- 226 गृहिलिंग सिद्धों की वर्गणा एक
 227 एक सिद्धों की वर्गणा एक
 228 अनेक सिद्धों की वर्गणा एक
 229 अप्रथम समय सिद्धों की वर्गणा-यावत्-अनंत समय सिद्धों की वर्गणा एक-एक
 230 परमाणु पुद्गलों की वर्गणा-यावत्-अनन्त प्रदेशी स्कंधों की वर्गणा क्रमशः एक-एक
 231 एक प्रदेशावाह पुद्गलों की वर्गणा-यावत्-असंख्यात प्रदेशावाह पुद्गलों की वर्गणा क्रमशः एक-एक
 232 एक समय की स्थिति वाले पुद्गलों की वर्गणा-यावत्-असंख्यात समय की स्थिति वाले पुद्गलों की वर्गणा क्रमशः एक-एक
 233 एक गुण काले पुद्गलों की वर्गणा-यावत्-अनंत गुण काले पुद्गलों की वर्गणा क्रमशः एक-एक
 234 शेष 4 वर्ण, 2 गंध, 5 रस और 8 स्पर्श वाले पुद्गलों की वर्गणा क्रमशः एक-एक
 235 जघन्य प्रदेशी स्कंधों की वर्गणा एक
 236 उत्कृष्ट प्रदेशी स्कंधों की वर्गणा एक
 237 अजघन्योत्कृष्ट प्रदेशी स्कंधों की वर्गणा एक
 238 जघन्य अवागाहना वाले स्कंधों की वर्गणा एक
 239 उत्कृष्ट अवागाहना वाले स्कंधों की वर्गणा एक
- 240 अजघन्योत्कृष्ट अवागाहना वाले स्कंधों की वर्गणा एक
 241 जघन्य स्थिति वाले स्कंधों की वर्गणा एक
 242 उत्कृष्ट स्थिति वाले स्कंधों की वर्गणा एक
 243 अजघन्योत्कृष्ट स्थिति वाले स्कंधों की वर्गणा एक
 244 जघन्य गुण काले पुद्गल स्कंधों की वर्गणा एक
 245 उत्कृष्ट गुण काले पुद्गल स्कंधों की वर्गणा एक
 246 अजघन्योत्कृष्ट गुण काले पुद्गल स्कंधों की वर्गणा एक
 247 शेष 4 वर्ण, 2 गंध, 5 रस और 8 स्पर्श वाले पुद्गलों की वर्गणा एक-एक
 248 जम्बूद्वीप की परिधि
 249 अंतिम तीर्थंकर महावीर अकेले मुक्त हुए
 250 अनुत्तरोपपातिक देवों की अवागाहना
 251 आर्द्रा नक्षत्र का तारा
 252 चित्रा नक्षत्र का तारा
 253 स्वाति नक्षत्र का तारा
 254 एक प्रदेशावाह पुद्गल अनंत
 255 एक समय की स्थिति वाले पुद्गल अनंत
 256 क. एक वर्ण वाले पुद्गल अनंत
 ख. एक गंध वाले पुद्गल अनंत
 ग. एक रस वाले पुद्गल अनंत

घ. एक स्पर्श वाले पुद्गल अनंत

द्वितीय स्थान

प्रथम उद्देशक

1	क. द्विविध जगत्	35-37	राग प्रत्ययिका क्रिया व द्वेष प्रत्ययिका क्रिया के दो-दो प्रकार
	ख. जीव की द्विविधता	38	गर्हा के दो-दो प्रकार
	ग. अजीव की द्विविधता	39	प्रत्याख्यान के दो-दो प्रकार
	जीव क्रिया व अजीव क्रिया के दो-दो प्रकार	40	मुक्त होने के दो कारण
2-4	कायिकी क्रिया व आधिकरणिकी क्रिया के दो-दो प्रकार	41-51	साधना में बाधक-आरंभ और परिग्रह
5-7	प्राद्वेषिकी क्रिया व पारितापनिकी क्रिया के दो-दो प्रकार	52-62	आरंभ परिग्रह त्याग से महालाभ
8-10	प्राणातिपात क्रिया व अप्रत्याख्यान क्रिया के दो-दो प्रकार	63-73	श्रवण मनन से धर्मलाभ
11-13	आरंभिकी क्रिया व पारिग्रहिकी क्रिया के दो-दो प्रकार	74	समय के दो भेद
14-16	माया प्रत्ययिकी क्रिया व मिथ्यादर्शन प्रत्ययिकी क्रिया के दो-दो प्रकार	75	द्विविध उन्माद
17-19	दृष्टिजा क्रिया व स्पृष्टिजा क्रिया के दो-दो प्रकार	76	दो प्रकार के दण्ड
	स्वहस्तिकी क्रिया व नैसृष्टिकी क्रिया के दो-दो प्रकार	77-78	चौबीस दण्डकों में दो प्रकार के दण्ड
20-22	प्रातीत्यिकी क्रिया व सामन्तोपनिपातिकी क्रिया के दो-दो प्रकार	79	दर्शन के दो प्रकार
23-25	स्वहस्तिकी क्रिया व नैसृष्टिकी क्रिया के दो-दो प्रकार	80	सम्यग्दर्शन के दो प्रकार
26-28	प्रातीत्यिकी क्रिया व सामन्तोपनिपातिकी क्रिया के दो-दो प्रकार	81	निसर्ग सम्यग्दर्शन के दो प्रकार
29-31	स्वहस्तिकी क्रिया व नैसृष्टिकी क्रिया के दो-दो प्रकार	82	अधिगम के दो प्रकार
32-34	प्रातीत्यिकी क्रिया व सामन्तोपनिपातिकी क्रिया के दो-दो प्रकार	83	मिथ्या दर्शन के दो प्रकार
	स्वहस्तिकी क्रिया व नैसृष्टिकी क्रिया के दो-दो प्रकार	84	आभिग्रहिक मिथ्या दर्शन के दो प्रकार
	प्रातीत्यिकी क्रिया व सामन्तोपनिपातिकी क्रिया के दो-दो प्रकार	85	अनाभिग्रहिक मिथ्या दर्शन के दो प्रकार
	स्वहस्तिकी क्रिया व नैसृष्टिकी क्रिया के दो-दो प्रकार	86	ज्ञान के विविध प्रकार

87	प्रत्यक्ष ज्ञान के दो भेद	107	धर्म के दो भेद
88	केवल ज्ञान के दो भेद	108	श्रुत धर्म के दो भेद
89	भवस्थ केवल ज्ञान के दो भेद	109	चारित्र्य धर्म के दो भेद
90	सजोगी भवस्थ केवल ज्ञान के दो भेद	110	संयम के दो प्रकार
91	अजोगी भवस्थ केवल ज्ञान के दो भेद	111	सराग संयम के दो प्रकार
92	सिद्ध केवल ज्ञान के दो भेद	112	सूक्ष्म संपराय सराग संयम के दो प्रकार
93	अनन्तर सिद्ध केवल ज्ञान के दो भेद	113	बादर संपराय सराग संयम के दो प्रकार
94	परंपर सिद्ध केवल ज्ञान के दो भेद	114	वीतराग संयम सराग संयम के दो प्रकार
95	नो केवलज्ञान के दो भेद	115	उपशांत कषाय वीतराग संयम के दो प्रकार
96	अवधि ज्ञान के दो भेद	116	क्षीण कषाय वीतराग संयम के दो प्रकार
97	भव प्रत्ययिक अवधि ज्ञान के दो भेद	117	छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग संयम के दो प्रकार
98	क्षयोपशामिक अवधि ज्ञान के दो भेद	118	स्वयं बुद्ध छद्मस्थ क्षीण कषाय के दो प्रकार
99	मनःपर्यव ज्ञान अवधि ज्ञान के दो भेद	119	बुद्ध बोधित छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग संयम के दो प्रकार
100	परोक्ष ज्ञान अवधि ज्ञान के दो भेद		
101	आभिनिबोधिक अवधि ज्ञान के दो भेद	120	केवली बोधित छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग संयम के दो प्रकार
102	श्रुत निश्चित के दो भेद		
103	अश्रुत निश्चित के दो भेद	121	सजोगी केवली छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग संयम के दो प्रकार
104	श्रुत ज्ञान के दो भेद		
105	अंग बाह्य के दो भेद	122	अजोगी केवली छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग संयम के दो प्रकार
106	आवश्यक व्यतिरिक्त के दो भेद		

123	दो प्रकार के पृथ्वीकाय	143	गतिसमापन्नक-अगतिसमापन्नक वनस्पतिकाय
124	दो प्रकार के अप्काय	144	गतिसमापन्नक-अगतिसमापन्नक द्रव्य के दो प्रकार
125	दो प्रकार के तेजस्काय	145	अनन्तरावाह-परंपरावाह पृथ्वीकाय
126	दो प्रकार के वायुकाय	146	अनन्तरावाह-परंपरावाह अप्काय
127	दो प्रकार के वनस्पतिकाय	147	अनन्तरावाह-परंपरावाह तेजस्काय
128	दो प्रकार के पर्याप्तक-अपर्याप्तक पृथ्वीकाय	148	अनन्तरावाह-परंपरावाह वायुकाय
129	दो प्रकार के पर्याप्तक-अपर्याप्तक अप्काय	149	अनन्तरावाह-परंपरावाह वनस्पतिकाय
130	दो प्रकार के पर्याप्तक-अपर्याप्तक तेजस्काय	150	अनन्तरावाह-परंपरावाह द्रव्य के दो प्रकार
131	दो प्रकार के पर्याप्तक-अपर्याप्तक वायुकाय	151	काल के दो भेद
132	दो प्रकार के पर्याप्तक-अपर्याप्तक वनस्पतिकाय	152	आकाश के दो भेद
133	दो प्रकार के अचित्त-सचित्त पृथ्वीकाय	153-160	चौबीस दण्डकों में प्रत्येक के दो शरीर
134	दो प्रकार के अचित्त-सचित्त अप्काय	161	विग्रहगति प्राप्त जीवों के दो शरीर
135	दो प्रकार के अचित्त-सचित्त तेजस्काय	162	चौबीस दण्डकों में दो कारणों से शरीर की रचना
136	दो प्रकार के अचित्त-सचित्त वायुकाय	163	चौबीस दण्डकों में दो शरीर प्राप्ति के दो कारण
137	दो प्रकार के अचित्त-सचित्त वनस्पतिकाय	164	दो प्रकार के काय
138	परिणत-अपरिणत द्रव्य के दो प्रकार	165	त्रस काय के दो भेद
139	गतिसमापन्नक-अगतिसमापन्नक पृथ्वीकाय	166	स्थावकाय के दो भेद
140	गतिसमापन्नक-अगतिसमापन्नक अप्काय	167	द्विदश में करणीय कार्य वर्णन
141	गतिसमापन्नक-अगतिसमापन्नक तेजस्काय	168	पूर्व और उत्तर दो दिशाओं में मुख रखकर दीक्षा देना, पठाना,
142	गतिसमापन्नक-अगतिसमापन्नक वायुकाय		बड़ी दीक्षा देना, सहभोज, सहनिवास, स्वाध्याय के लिए

169	अनुज्ञा, विशेष अनुज्ञा, आलोचना, प्रतिक्रमण, निंदा, गर्हा, अनुज्ञा, विशेष अनुज्ञा, आलोचना, प्रतिक्रमण, निंदा, गर्हा, 187	चौबीस दण्डकों में सम्यक्दृष्टि, मिथ्यादृष्टि
	अतिचार त्याग के लिए संकल्प, अतिचार शुद्धि, पुनः 188	चौबीस दण्डकों में अल्पसंसार भ्रमण वाले, अनंत संसार भ्रमण वाले
	अतिचार सेवन न करने की प्रतिज्ञा, प्रायश्चित्त रूप तप 189	चौबीस दण्डकों में संख्येय व असंख्येय समय की स्थिति कर्म करने का निर्देश
	पूर्व और उत्तर दिशा में मुख रखकर संलेखना व पादपोगमन 190	चौबीस दण्डकों में सुलभ बोधि, दुर्लभ बोधि
	संधारा करने का निर्देश 191	चौबीस दण्डकों में कृष्णपाक्षिक, शुक्लपाक्षिक
	द्वितीय उद्देशक 192	चौबीस दण्डकों में चरिम, अचरिम
170-172	चौबीस दण्डकों में वेदना 193	अर्धोलोक को आत्मा दो प्रकार से जानता है
173-176	चौबीस दण्डकों में गति-आगति 194	तिर्यक् लोक को आत्मा दो प्रकार से जानता है
177	चौबीस दण्डकों में भवसिद्धिक, अभवसिद्धिक 195	ऊर्ध्व लोक को आत्मा दो प्रकार से जानता है
178	चौबीस दण्डकों में अनंतरोपपन्नक, परंपरोपपन्नक 196	सम्पूर्ण लोक को आत्मा दो प्रकार से जानता है
179	चौबीस दण्डकों में गति प्राप्त, अगति प्राप्त 197	विकल्प से अर्धोलोक को आत्मा दो प्रकार से जानता है
180	चौबीस दण्डकों में प्रथमसमयोत्पन्न-अप्रथमसमयोत्पन्न 198	विकल्प से तिर्यक्लोक को आत्मा दो प्रकार से जानता है
181	चौबीस दण्डकों में आहारक, अनाहारक 199	विकल्प से ऊर्ध्वलोक को आत्मा दो प्रकार से जानता है
182	चौबीस दण्डकों में श्वासोच्छ्वास सहित, श्वासोच्छ्वास रहित 200	सम्पूर्ण लोक को आत्मा दो प्रकार से जानता है
183	चौबीस दण्डकों में सेन्द्रिय, अनिन्द्रिय 201	दो प्रकार से आत्मा शब्द सुनता है
184	चौबीस दण्डकों में पर्याप्त, अपर्याप्त 202	दो प्रकार से आत्मा रूप देखता है
185	चौबीस दण्डकों में संज्ञी, असंज्ञी 203	दो प्रकार से आत्मा गंध सूँघता है
186	चौबीस दण्डकों में भाषक-अभाषक 204	दो प्रकार से आत्मा रसास्वादन करता है

205	दो प्रकार से आत्मा स्पर्शानुभव करता है		च. अग्नि कुमार देव के दो प्रकार
206	दो प्रकार से आत्मा प्रकाश करता है		छ. वायु कुमार देव के दो प्रकार
207	क. दो प्रकार से आत्मा विशेष प्रकाश करता है	211	देव के दो प्रकार
	ख. दो प्रकार से आत्मा वैक्रिया करता है		तृतीय उद्देशक
	ग. दो प्रकार से आत्मा प्रवीचार (मैथुन सेवन) करता है	212	दो प्रकार के शब्द
	घ. दो प्रकार से आत्मा बोलता है	213	दो प्रकार के भाषा शब्द
	ङ. दो प्रकार से आत्मा आहार खाता है	214	दो प्रकार के नो भाषा शब्द
	च. दो प्रकार से आत्मा आहार का परिणमन करता है	215	दो प्रकार के आतोद्य शब्द
	छ. दो प्रकार से आत्मा गृहित आहार का अनुभव करता है	216	दो प्रकार के तत शब्द
		217	दो प्रकार के वितत शब्द
	ज. दो प्रकार से आत्मा गृहित आहार का मल-मूत्र-वमन	218	दो प्रकार के नो आतोद्य शब्द
	आदि रूप में उत्सर्ग करता है	219	दो प्रकार के नो भूषण शब्द
208	देव दो स्थानों से शब्द सुनता है-यावत्-दो स्थानों से उत्सर्ग करता है	220	दो प्रकार से शब्द की उत्पत्ति होती है
		221	दो प्रकार से पुद्गल चिपकते हैं
209	मरुत देव के दो प्रकार	222	दो प्रकार से पुद्गलों का भेदन होता है
210	क. किन्नर देव के दो प्रकार	223	दो प्रकार से पुद्गल गिरते हैं
	ख. किंपुरुष देव के दो प्रकार	224	दो प्रकार से पुद्गल सड़ते हैं
	ग. गंधर्व देव के दो प्रकार	225	दो प्रकार से पुद्गल नष्ट होते हैं
	घ. नाग कुमार देव के दो प्रकार	226	भिन्न-अभिन्न भेद से पुद्गल के दो प्रकार
	ङ. सुपर्ण कुमार देव के दो प्रकार	227	भिधुर धर्म-नो भिधुर धर्म भेद से पुद्गल के दो प्रकार

228	परमाणु पुद्गल-नो परमाणु पुद्गल भेद से पुद्गल के दो प्रकार	252	दो का च्यवन
229	सुक्ष्म-बादर भेद से पुद्गल के दो प्रकार	253	दो की गर्भ से उत्पत्ति
230	बद्धपार्श्व पृष्ट-नो बद्ध पार्श्वपृष्ठ भेद से पुद्गल के दो प्रकार	254	दो का गर्भ में आहार
231	परियादित-अपरियादित भेद से पुद्गल के दो प्रकार	255	दो प्रकार के गर्भस्थ जीवों की वृद्धि
232	आत्त-अनात्त पुद्गल के दो प्रकार	256	क. दो प्रकार के गर्भस्थ जीवों की हानि
233	आत्त-यावत्-अमनाम पुद्गल के दो-दो प्रकार		ख. दो प्रकार के गर्भस्थ जीवों की विक्रिया
234	आत्त-यावत्-अमनाम शब्द के दो-दो प्रकार		ग. दो का गत्यन्तर में गमन
235	आत्त-यावत्-अमनाम रूप के दो-दो प्रकार		घ. दो का समुदायात
236	आत्त-यावत्-अमनाम गंध के दो-दो प्रकार		ङ. दो की गर्भ में कालकृत पर्याय
237	आत्त-यावत्-अमनाम रस के दो-दो प्रकार		च. दो का गर्भ से निर्गमन
238	आत्त-यावत्-अमनाम स्पर्श के दो-दो प्रकार	257	छ. दो का गर्भ में मरण
239	आचार के दो प्रकार	258	दो का अस्थि-माँस-मज्जामय शरीर
240	नो ज्ञानाचार के दो प्रकार	259	दो की रज-वीर्य से उत्पत्ति
241	नो दर्शनाचार के दो प्रकार	260	दो प्रकार की स्थिति
242	नो चारित्राचार के दो प्रकार	261	दो प्रकार की काय स्थिति
243-248	प्रतिमा वर्णन में प्रतिज्ञा के दो-दो प्रकार	262	दो प्रकार की भव स्थिति
249	सामायिक के दो प्रकार	263	दो प्रकार का आयु
250	दो का उपपात (जन्म)	264	दो का अद्भ्यायु
251	दो का उद्वर्तन (मरण)	265	दो का भवायु
			दो प्रकार के कर्म

266	दो का पूर्णायु	की स्थिति वाले दो-दो देव
267	दो का परिवर्तन वाला आयु	जम्बूद्वीप में चुल्ल (छोटा) हिमवत वर्षधर पर्वत पर दो
268	जम्बूद्वीप में दो-दो समान क्षेत्र आदि	समान कूट
269	मेरु पर्वत से उत्तर-दक्षिण में दो-दो क्षेत्र	महा हिमवत वर्षधर पर्वत पर दो समान कूट
270	मेरु पर्वत से पूर्व-पश्चिम में दो-दो क्षेत्र	निषध वर्षधर पर्वत पर दो समान कूट
271	क. मेरु पर्वत से उत्तर-दक्षिण में दो कुरू	नीलवत वर्षधर पर्वत पर दो समान कूट
	ख. अतिविशाल एक समान दो महावृक्ष	रूक्मी वर्षधर पर्वत पर दो समान कूट
	ग. महान् ऋद्धि संपन्न, महाद्युति वाले, महाशक्ति वाले,	शिखरी वर्षधर पर्वत पर दो समान कूट
	महायश वाले, महाबल वाले, महा सौख्य और एक	क. जम्बूद्वीप में चुल्ल हिमवत वर्षधर पर्वत पर दो समान
	पल्योपम की स्थिति वाले दो देव	महाद्रह
272-273	जम्बूद्वीप में मेरुपर्वत से उत्तर-दक्षिण में दो समान	ख. शिखरी तथा चुल्ल हिमवत वर्षधर पर्वत पर दो समान
	वर्षधर पर्वत	महाद्रह और दो देवियां एक पल्योपम की स्थिति
274-275	जम्बूद्वीप में मेरुपर्वत से उत्तर-दक्षिण में दो समान	वाली
	वृत्तवैताढ्य पर्वत व दो देव	क. महा हिमवत वर्षधर पर्वत पर दो समान महाद्रह
276	जम्बूद्वीप में मेरुपर्वत से दक्षिण में दो समान वक्षस्कार पर्वत	ख. रूक्मी तथा महाहिमवत वर्षधर पर्वत पर दो समान
277	मेरुपर्वत से उत्तर में दो समान वक्षस्कार पर्वत	महाद्रह और दो देवियां
278	मेरुपर्वत से उत्तर-दक्षिण में दो समान दीर्घ वैताढ्य पर्वत	निषध और नीलवत वर्षधर पर्वत पर दो समान महाद्रह व
279	भरत वर्ष के दीर्घ वैताढ्य पर्वतों पर दो समान गुफा व	दो देवियां
	पल्योपम की स्थिति वाले दो देव	जम्बूद्वीप में महा हिमवत वर्षधर पर्वत के महाद्रह से निकलने
280	ऐरवत वर्ष के दीर्घ वैताढ्य पर्वत पर दो गुफाएं व पल्योपम	वाली दो नदियां

291	निषध वर्षधर पर्वत के तिगिच्छ द्रह से निकलने वाली दो नदियाँ	303	जम्बूद्वीप के भरत-ऐरवत क्षेत्र में अतीत उत्सर्पिणी के सुषमा आरे का काल
292	नीलवंत वर्षधर पर्वत के केसरी द्रह से निकलने वाली दो नदियाँ	304	भरत-ऐरवत क्षेत्र में वर्तमान अवसर्पिणी काल के सुषमा आरे का काल
293	रूक्मी वर्षधर पर्वत के महा पौंडरिक द्रह से निकलने वाली दो नदियाँ	305	भरत-ऐरवत क्षेत्र में आगामी उत्सर्पिणी काल के सुषमा आरे का काल
294	जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में दो समान प्रपात द्रह	306	जम्बूद्वीप के भरत-ऐरवत क्षेत्र में अतीत उत्सर्पिणी काल के सुषमा आरे के मनुष्यों की ऊंचाई व आयु
295	हिमवंत वर्ष में दो समान प्रपात द्रह	307	भरत-ऐरवत क्षेत्र में वर्तमान अवसर्पिणी काल के सुषमा आरे के मनुष्यों की ऊंचाई व आयु
296	हरिवर्ष में दो समान प्रपात द्रह	308	भरत-ऐरवत क्षेत्र में आगामी उत्सर्पिणी काल के सुषमा आरे के मनुष्यों की ऊंचाई व आयु
297	महाविदेह में दो समान प्रपात द्रह	309	जम्बूद्वीप के भरत-ऐरवत क्षेत्र में तीनों काल में एक साथ दो अरिहंत वंश उत्पन्न हुए थे, होते हैं और होंगे
298	रम्यक् वर्ष में दो समान प्रपात द्रह	310	जम्बूद्वीप के भरत-ऐरवत क्षेत्र में तीनों काल में एक साथ दो चक्रवर्ती वंश उत्पन्न हुए थे, होते हैं और होंगे
299	हिरण्यवत वर्ष में दो समान प्रपात द्रह	311	जम्बूद्वीप के भरत-ऐरवत क्षेत्र में तीनों काल में एक साथ दो दशार (बलदेव, वासुदेव) वंश उत्पन्न हुए थे, होते हैं और होंगे
300	ऐरवत वर्ष में दो समान प्रपात द्रह	312	जम्बूद्वीप के भरत-ऐरवत क्षेत्र में तीनों काल में एक साथ
301	जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में दो समान महानदियाँ		
302	क. हिमवंत वर्ष में दो समान महानदियाँ ख. हरिवर्ष में दो समान महानदियाँ ग. महाविदेह में दो समान महानदियाँ घ. रम्यक् वर्ष में दो समान महानदियाँ ङ. हिरण्य वर्ष में दो समान महानदियाँ च. ऐरवत क्षेत्र में दो समान महानदियाँ		

313	दो अरिहंत वंश उत्पन्न हुए थे, होते हैं और होंगे जम्बूद्वीप के भरत-ऐरवत क्षेत्र में तीनों काल में एक साथ दो चक्रवर्ती वंश उत्पन्न हुए थे, होते हैं और होंगे	324	क. अग्नि से यम पर्यन्त 28 नक्षत्रों के अधिपति देवता दो-दो हैं ख. अठाईस नक्षत्र देवताओं के नाम
314	जम्बूद्वीप के भरत-ऐरवत क्षेत्र में तीनों काल में एक साथ दो बलदेव वंश उत्पन्न हुए थे, होते हैं और होंगे	325	क. जम्बूद्वीप में अंगारक से भावकेतु पर्यन्त 88 ग्रह दो-दो संचरण करते थे, करते हैं और करेंगे
315	जम्बूद्वीप के भरत-ऐरवत क्षेत्र में तीनों काल में एक साथ दो वासुदेव वंश उत्पन्न हुए थे, होते हैं और होंगे	326	ख. अठ्यासी ग्रहों के नाम जम्बूद्वीप वेदिका की ऊँचाई
316	जम्बूद्वीप में देवकुरु-उत्तर कुरु में सुषम-सुषम काल का अनुभव	327	लवण समुद्र का वृत्ताकार विष्कम्भ
317	जम्बूद्वीप में हरिवर्ष-रम्यक् वर्ष में सुषम काल का अनुभव	328	लवण समुद्र की वेदिका की ऊँचाई
318	जम्बूद्वीप में हिमवत वर्ष-हिरण्यवत वर्ष में सुषम-दुषम काल का अनुभव	329	धातकी खण्ड द्वीप के पूर्वार्ध में व मंदर पर्वत के उत्तर दक्षिण में दो क्षेत्र समान
319	पूर्व विदेह-पश्चिम विदेह में दुषम-सुषमा काल का अनुभव	330	जम्बूद्वीप के दो क्षेत्र के समान धातकीखण्ड के पूर्वार्ध में छ-छ कालचक्र किन्तु वृक्ष व देवों में अंतर है
320	भरत ऐरवत में छहों कालों का अनुभव	331	धातकीखण्ड के पश्चिमार्ध में व मंदर पर्वत के उत्तर-दक्षिण में दो क्षेत्र समान
321	जम्बूद्वीप में दो चन्द्र प्रकाश करते थे, करते हैं व प्रकाश करेंगे	332	जम्बूद्वीप के दो क्षेत्र के समान धातकीखण्ड के पश्चिमार्ध में छ-छ कालचक्र किन्तु वृक्ष व देवों में अंतर है
322	जम्बूद्वीप में दो सूर्य तपते थे, तपते हैं व तपेंगे	333	धातकीखण्ड द्वीप में प्रत्येक क्षेत्र, महावृक्ष व वृक्षवासी देव दो-दो
323	क. कृतिका से भरणी पर्यन्त इन 28 नक्षत्रों में से दो-दो नक्षत्र चन्द्र के साथ योग करते थे, करते हैं, करेंगे ख. अठाईस नक्षत्रों के नाम	334	धातकीखण्ड द्वीप में प्रत्येक वर्षधर पर्वत दो-दो

335	धातकीखण्ड द्वीप में प्रत्येक वृत्तवैताल्य पर्वत व देव दो-दो	351	पुष्करवर द्वीप की वेदिका की ऊँचाई
336	क. धातकीखण्ड द्वीप में प्रत्येक वक्षस्कार पर्वत दो-दो	352	समस्त द्वीप समुद्रों की वेदिका की ऊँचाई
	ख. धातकीखण्ड द्वीप में प्रत्येक कूट दो-दो	353-362	दस भवनवासी देवों के दो-दो इन्द्र और उनके नाम
337	धातकीखण्ड द्वीप में प्रत्येक द्रह और द्रहवासिनी देवियां दो-दो	363-378	सोलह वाणव्यन्तर देवों के दो-दो इन्द्र और उनके नाम
		379	ज्योतिषी देवों के दो इन्द्र
		380	वैमानिक देवों के 10 इन्द्र
338	धातकीखण्ड द्वीप में प्रत्येक प्रपातद्रह दो-दो	381-385	महाशुक्र और सहस्रार कल्प के विमानों के दो वर्ण
339	धातकीखण्ड द्वीप में प्रत्येक नदी दो-दो	386	ग्रैवेयक देवों की ऊँचाई
340	धातकीखण्ड द्वीप में पूर्वार्ध-पश्चिमार्ध में बत्तीस विजय क्षेत्र दो-दो	चतुर्थ उद्देशक	
341	धातकीखण्ड द्वीप में बत्तीस विजय क्षेत्रों की राजधानियां दो-दो		
		387-389	काल के समय-यावत्-उत्सर्पिणी इन पचास प्रकारों के दो-दो भेद व उनके नाम
342	धातकीखण्ड द्वीप में मंदर पर्वत पर चारों वनखण्ड दो-दो	390	क. ग्रामादि 14 प्रकार के वसतिसूचक स्थानों के दो-दो भेद व उनके नाम
343	धातकीखण्ड द्वीप में मंदर पर्वत स्थित दानों पण्डक वनों में चारों दिशाओं में दो-दो शिलाएं		ख. आराम आदि उद्यान सूचक चार नाम के दो-दो भेद
344	धातकीखण्ड द्वीप में दो मंदर पर्वत व दो मंदर चूलिका		ग. वापी आदि जलाशय सूचक आठ नाम के दो-दो भेद
345	धातकीखण्ड द्वीप में वेदिका की ऊँचाई	391	घ. प्रकीर्णक सूचक छियालीस नाम के दो-दो भेद
346	कालोदधि समुद्र की वेदिका की ऊँचाई	392	छाया आदि दस नाम के दो-दो भेद
347-348	पुष्करवर द्वीपार्ध के पूर्व भाग के क्षेत्रादि का वर्णन	393	राशि के दो प्रकार
349-350	पुष्करवर द्वीपार्ध के पश्चिम भाग के क्षेत्रादि का वर्णन	394	दो प्रकार के बंध
			पापकर्म बंध के दो कारण

395	पापकर्मों की उदीरणा के दो कारण	415	पादपोषगमन के दो प्रकार
396	पापकर्मों के वेदन के दो कारण	416	भक्त प्रत्याख्यान मरण के दो प्रकार
397	पापकर्मों की निर्जरा के दो कारण	417	दो प्रकार का लोक
398	दो प्रकार से आत्मा का शरीर से स्पर्श करके निकलना	418	लोक में अनंत दो प्रकार के
399	दो प्रकार से आत्मा का शरीर को कंपित करके निकलना	419	लोक में शास्वत दो प्रकार के
400	दो प्रकार से आत्मा का शरीर का भेदन करके निकलना	420	बोधी दो प्रकार की
401	दो प्रकार से आत्मा का शरीर का संकोच करके निकलना	421	बुद्ध दो प्रकार के
402	दो प्रकार से आत्मा का शरीर को आत्मप्रदेशों से पृथक् करके निकलना	422	मोह दो प्रकार का
403-404	दो प्रकार से आत्मा केवली कथित धर्म का श्रवण करती है-यावत्-मनः पर्यव ज्ञान की प्राप्ति होती है	423	मूढ दो प्रकार के
405	दो प्रकार का औपमिक काल एवं उसका स्वरूप	424	ज्ञानावरणीय कर्म दो प्रकार का
406-407	चौबीस दण्डकों में दो प्रकार का क्रोध-यावत्-मिथ्यादर्शन शल्य	425	दर्शनावरणीय कर्म दो प्रकार का
408	दो प्रकार के संसारी जीव	426	वेदनीय कर्म दो प्रकार का
409-410	दो-दो प्रकार के सर्व जीव	427	मोहनीय कर्म दो प्रकार का
411-412	भगवान महावीर द्वारा निषिद्ध दो-दो प्रकार के मरण	428	आयु कर्म दो प्रकार का
413	विशेष कारण से दो प्रकार के मरण का विधान	429	नाम कर्म दो प्रकार का
414	पादपोषगमन व भक्त प्रत्याख्यान मरण भ. महावीर द्वारा प्रशंसित	430	गोत्र कर्म दो प्रकार का
		431	अंतराय कर्म दो प्रकार का
		432	मूर्च्छा दो प्रकार की
		433	राग मूर्च्छा दो प्रकार की
		434	द्वेष मूर्च्छा दो प्रकार की

435	आराधना दो प्रकार की	455	दो कल्पों के देवों की तेजोलेश्या
436	धर्माराधना दो प्रकार की	456	दो कल्पों के देव काय परिचारक
437	केवली आराधना दो प्रकार की	457	दो कल्पों के देव स्पर्श परिचारक
438	दो तीर्थंकर नील कमल के समान नीले वर्ण वाले	458	दो कल्पों के देव रूप परिचारक
439	दो तीर्थंकर प्रियंगु (कांगनी) के समान काले वर्ण वाले	459	दो कल्पों के देव शब्द परिचारक
440	दो तीर्थंकर पद्मगौर के समान लाल वर्ण वाले	460	दो कल्पों के देव मनः परिचारक
441	दो तीर्थंकर चन्द्र के समान श्वेत वर्ण वाले	461-462	दो स्थानों में जीवों द्वारा पापकर्म के पुद्गलों का त्रैकालिक चयन-यावत्-निर्जरा
442	सत्य प्रवाद पूर्व की दो वस्तु हैं	463	दो प्रदेशी स्कंध अनंत
443	पूर्वाभाद्रपदा नक्षत्र के दो तारे	464	दो प्रदेशावगाढ़ पुद्गल अनंत
444	उत्तराभाद्रपदा नक्षत्र के दो तारे	465	क. दो समय की स्थिति वाले पुद्गल अनंत
445	पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र के दो तारे		ख. दो गुण वाले-यावत्-दो गुण रूखे पुद्गल अनंत
446	उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र के दो तारे		
447	मनुष्य क्षेत्र में दो समुद्र		
448	सातवीं नर्क में जाने वाले दो चक्रवर्ती		
449	नागकुमार आदि भवनवासी देवों की स्थिति	1-3	तीन-तीन प्रकार के इन्द्र
450	सौधर्म कल्प के देवों की उत्कृष्ट स्थिति	4-6	तीन-तीन प्रकार की विकुर्वणा-वैक्रिय शक्ति
451	ईशान कल्प के देवों की उत्कृष्ट स्थिति	7-8	उन्नीस दण्डकों के संख्या भेद से तीन प्रकार
452	सनत्कुमार कल्प के देवों की जघन्य स्थिति	9	तीन प्रकार की परिचाराणा
453	मोहेन्द्र कल्प के देवों की जघन्य स्थिति	10	तीन प्रकार का मैथुन
454	दो कल्पों में सिर्फ देवियाँ हैं	11	मैथुन सेवन करने वाले तीन प्राणी

तृतीय स्थान

प्रथम उद्देशक

12	तीन प्रकार के जीवों द्वारा मैथुन सेवन	35	तीन प्रकार के जघन्य पुरुष
13	सोलह दण्डकों में तीन प्रकार के योग	36	तीन प्रकार के मच्छ
14	सोलह दण्डकों में तीन प्रकार के प्रयोग	37	तीन प्रकार के अंडज मच्छ
15	सोलह दण्डकों में तीन प्रकार के मनः करण आदि	38	तीन प्रकार के पोटज मच्छ
16	चौबीस दण्डकों में तीन प्रकार के आरंभ करण आदि	39	तीन प्रकार के पक्षी
17	अल्पायु बंध के तीन कारण	40	तीन प्रकार के अंडज पक्षी
18	दीर्घायु बंध के तीन कारण	41	तीन प्रकार के पोटज पक्षी
19	अशुभ दीर्घायु बंध के तीन कारण	42	तीन प्रकार के उरपरिसर्प
20	शुभ दीर्घायु बंध के तीन कारण	43	तीन प्रकार के अण्डज उरपरिसर्प
21	तीन प्रकार की गुप्ति	44	तीन प्रकार के पोटज उरपरिसर्प
22	संयत मनुष्यों की तीन गुप्ति	45	तीन प्रकार के भुजपरिसर्प
23	सोलह दण्डकों में तीन अगुप्ति	46	तीन प्रकार के अण्डज भुजपरिसर्प
24	तीन-तीन प्रकार के दंड	47	तीन प्रकार के पोटज भुजपरिसर्प
25	सोलह दण्डकों में तीन प्रकार के दंड	48	तीन प्रकार की स्त्रियां
26	तीन प्रकार की गर्हा	49	तीन प्रकार की तिर्यच स्त्रियां
27	तीन प्रकार के प्रत्याख्यान	50	तीन प्रकार की मनुष्य स्त्रियां
28	तीन प्रकार के वृक्ष व प्रकार, तीन प्रकार के वृक्षोपम पुरुष	51	तीन प्रकार के पुरुष
29-32	तीन-तीन प्रकार के पुरुष	52	तीन प्रकार के तिर्यच पुरुष
33	तीन प्रकार के उत्तम पुरुष	53	तीन प्रकार के मनुष्य पुरुष
34	तीन प्रकार के मध्यम पुरुष	54	तीन प्रकार के नपुंसक

55	तीन प्रकार के तिर्यच नपुंसक	78	तीन कारणों से देव कल-कल शब्द करते हैं
56	तीन प्रकार के मनुष्य नपुंसक	79	तीन कारणों से देव शीघ्र ही मनुष्य लोक में आते हैं
57	तीन प्रकार के तिर्यच	80	क. तीन कारणों से सामानिक देव मृत्युलोक में आते हैं
58	नैरधिक में तीन अशुभ लेश्याएं		ख. तीन कारणों से त्रायस्त्रिंशक मृत्युलोक में आते हैं
59-60	असुरकुमार-यावत्-स्तनितकुमारों में तीन अशुभ लेश्याएं		ग. तीन कारणों से लोकपाल देव मृत्युलोक में आते हैं
61-62	पृथ्वीकाय-यावत्-चतुरिन्द्रिय में तीन अशुभ लेश्याएं		घ. तीन कारणों से अग्रमहिषी देवियां मृत्युलोक में आती हैं
63-64	पंचेन्द्रिय तिर्यचयोनिक में तीन अशुभ व तीन शुभ लेश्याएं		ङ. तीन कारणों से परिषद के देव मृत्युलोक में आते हैं
65-66	मनुष्यों में तीन अशुभ व तीन शुभ लेश्याएं		च. तीन कारणों से देव सेनाधिपति मृत्युलोक में आते हैं
67	वाणव्यंतरो में तीन अशुभ लेश्याएं		छ. तीन कारणों से आत्म रक्षक देव मृत्युलोक में आते हैं
68	वैमानिक देवों में तीन शुभ लेश्याएं	81	तीन कारणों से देव अपने आसन से उठते हैं
69	तारों के चलित होने के तीन कारण	82	तीन कारणों से देवताओं का आसन क्रम्पित होता है
70	देवता विद्युत सम चमकने के तीन कारण	83	तीन कारणों से देवता सिंहनाद करते हैं
71	देव-गर्जना के तीन कारण	84	तीन कारणों से देवता वस्त्र वृष्टि करते हैं
72	लोकांधकार के तीन कारण	85	तीन कारणों से देवताओं के चैत्यवृक्ष क्रम्पित होते हैं
73	लोकोद्योत के तीन कारण	86	तीन कारणों से लोकांतिक देव मनुष्य लोक में आते हैं
74	देव लोक में अंधकार के तीन कारण	87	तीन के उपकार से उन्नयन होना दुःशक्य
75	देव लोक में उद्योत के तीन कारण	88	अणुगार द्वारा संसार-कांतार से पार होने के तीन कारण
76	तीन कारणों से देवों का मनुष्य लोक में आगमन	89	तीन प्रकार की अवसर्पिणी
77	क. तीन कारणों से देवता कोलाहल करते हैं	90	अवसर्पिणी के छहों आंगों के तीन-तीन भेद
	ख. तीन कारणों से देव समूह मनुष्य लोक में आता है		

91	तीन प्रकार की उत्सर्पिणी	102	संवृत आदि तीन प्रकार की योनि
92	उत्सर्पिणी के छहों आरों के तीन-तीन भेद	103	क. कूर्मोन्नत आदि तीन प्रकार की योनि
93	तीन कारणों से अछिन्न पुद्गल चलित होते हैं		ख. कूर्मोन्नत योनि में उत्पन्न होने वाले तीन प्रकार के उत्तम पुरुष
94	क. तीन प्रकार की कर्म उपधि आदि		ग. शंखावर्त योनि चक्रवर्ती के स्त्री रत्न की
	ख. पन्द्रह दण्डकों में तीन प्रकार की उपधि		घ. वंसीपत्रक योनि सामान्य माताओं की
	ग. तीन प्रकार का सचित्त आदि उपधि	104	तीन प्रकार के तृण वनस्पतिकाय
95	घ. पन्द्रह दण्डकों में तीन प्रकार की उपधि	105	भरत क्षेत्र में तीन तीर्थ
	क. तीन प्रकार का कर्म परिग्रह आदि	106	ऐरवत क्षेत्र में तीन तीर्थ
	ख. पन्द्रह दण्डकों में तीन प्रकार का परिग्रह	107	महाविदेह क्षेत्र के प्रत्येक चक्रवर्ती विजय में तीन-तीन तीर्थ
	ग. तीन प्रकार का सचित्त आदि परिग्रह		
	घ. चौबीस दण्डकों में तीन प्रकार का परिग्रह		
96	तीन प्रकार का प्रणिधान	108	क. धातकी खण्ड द्वीप के पूर्वार्ध में-तीन तीर्थ
97	तीन प्रकार का सुप्रणिधान		ख. धातकी खण्ड द्वीप के पश्चिमार्ध में-तीन तीर्थ
98	संयत मनुष्यों के तीन प्रकार का सुप्रणिधान		ग. पुष्करवर द्वीपार्ध के पूर्वार्ध में तीन तीर्थ
99	क. तीन प्रकार का दुष्प्रणिधान		घ. पुष्करवर द्वीपार्ध के पश्चिमार्ध में तीन तीर्थ
100	ख. सोलह दण्डकों में तीन प्रकार के दुष्प्रणिधान	109	जम्बूद्वीप में अतीत उत्सर्पिणी के सुषमा काल का परिमाण
	क. शीत आदि तीन प्रकार की योनि	110	जम्बूद्वीप में वर्तमान अवसर्पिणी के सुषमा काल का परिमाण
	ख. नव दण्डकों में तीन प्रकार की योनि	111	जम्बूद्वीप में आगामी उत्सर्पिणी के सुषमा काल का परिमाण
101	क. सचित्त आदि तीन प्रकार की योनि	112	क. धातकी खण्ड द्वीप के पूर्वार्ध में सुषमा काल का परिमाण
	घ. दस दण्डकों में तीन प्रकार की योनि		

ख.	धातकी खण्ड द्वीप के पश्चिमार्ध में सुषमा काल का परिमाण	119	में तीन वंशों की त्रैकालिक उत्पत्ति
ग.	पुष्करवर द्वीपार्ध के पूर्वार्ध में सुषमा काल का परिमाण		जम्बूद्वीप में प्रत्येक अवसर्पिणी व उत्सर्पिणी में तीन प्रकार के उत्तम पुरुष
घ.	पुष्करवर द्वीपार्ध के पश्चिमार्ध में सुषमा काल का परिमाण	120	धातकीखण्ड, पुष्करार्ध द्वीप के पूर्वार्ध-पश्चिमार्ध में तीन प्रकार के उत्तम पुरुष
113	जम्बूद्वीप के भरत-ऐरवत में अतीत उत्सर्पिणी में सुषमा-सुषमा काल के मनुष्यों की ऊंचाई व आयु	121	पूर्णायु भोगने वाले तीन व्यक्ति
114	क. जम्बूद्वीप के भरत-ऐरवत में वर्तमान अवसर्पिणी में सुषमा-सुषमा काल के मनुष्यों की ऊंचाई व आयु	122	मध्यमायु भोगने वाले तीन व्यक्ति
	ख. जम्बूद्वीप के भरत-ऐरवत में आगामी उत्सर्पिणी में सुषमा-सुषमा काल के मनुष्यों की ऊंचाई व आयु	123	स्थूल तेउकाय की उत्कृष्ट स्थिति
	जम्बूद्वीप के भरत-ऐरवत में मनुष्यों की ऊंचाई व आयु	124	स्थूल वायुकाय की उत्कृष्ट स्थिति
115	जम्बूद्वीप के देवकुरु और उत्तर कुरु में मनुष्यों की ऊंचाई व आयु	125	सुरक्षित शाली ब्रीहि आदि धान्यों की स्थिति
	जम्बूद्वीप के देवकुरु और उत्तर कुरु में मनुष्यों की ऊंचाई व आयु	126	शर्करा प्रभा के नैरयिकों की उत्कृष्ट स्थिति
116	क. धातकी खण्ड द्वीप के पूर्वार्ध व पश्चिमार्ध में सुषमा-सुषमा काल के मनुष्यों की ऊंचाई व आयु	127	बालुका प्रभा के नैरयिकों की जघन्य स्थिति
	ख. पुष्करवर द्वीपार्ध के पूर्वार्ध व पश्चिमार्ध में सुषमा-सुषमा काल के मनुष्यों की ऊंचाई व आयु	128	धूम्रप्रभा के नरकावास
117	जम्बूद्वीप के भरत-ऐरवत क्षेत्र में तीन वंशों की त्रैकालिक उत्पत्ति	129	प्रारंभ की तीन नरकों में उष्ण वेदना
	धातकीखण्ड द्वीप व पुष्करवर द्वीपार्ध के पूर्वार्ध और पश्चिमार्ध	130	प्रारंभ की तीन नरकों में उष्ण वेदना का अनुभव निरंतर
		131-132	लोक में तीन-तीन का समान परिमाण
		133	पानी जैसे स्वाद वाले तीन समुद्र
		134	तीन समुद्र मच्छ-कच्छों से परिपूर्ण हैं
		135	सातवीं नरक में उत्पन्न होने वाले तीन प्रकार के जीव
118	धातकीखण्ड द्वीप व पुष्करवर द्वीपार्ध के पूर्वार्ध और पश्चिमार्ध	136	सप्तार्थ सिद्ध में उत्पन्न होने वाले तीन प्रकार के जीव

137	ब्रह्म लोक और लांतक कल्प के विमानों के तीन वर्ण	176	तीन प्रकार की बोधी
138	आनत आदि चार देवलोक के देवों की ऊँचाई	177	तीन प्रकार के बुद्ध
139	तीन उपांग आगमों का प्रथम व अंतिम पौरुषी में पठन	178	तीन प्रकार का मोह
	द्वितीय उद्देशक	179	तीन प्रकार के मूर्ख
140	नामलोक आदि तीन प्रकार के लोक	180-183	भिन्न-भिन्न प्रकार से तीन प्रकार की प्रव्रज्या
141	ज्ञानलोक आदि तीन प्रकार के लोक	184	तीन प्रकार के निर्ग्रथ संज्ञोपयोग से रहित
142	ऊर्ध्वलोक आदि तीन प्रकार के लोक	185	तीन प्रकार के निर्ग्रथ संज्ञोपयोग सहित और रहित
143	चमरेन्द्र की तीन परिषद्	186	नवदीक्षित को छेदोपस्थापनीय चारित्र अर्थात् बड़ी दीक्षा देने का समय तीन प्रकार का
144	चमरेन्द्र के सामानिक देवों की तीन परिषद्	187	तीन प्रकार के स्थविर
145	चमरेन्द्र के त्रयस्त्रिंशक देवों की तीन परिषद्	188	मन के तीन विकल्प. तीन प्रकार के पुरुष
146	चमरेन्द्र के लोकपाल देवों की तीन परिषद्	189	गमन क्रिया विकल्प. तीन प्रकार के पुरुष
147	अग्रमहिषियों की तीन परिषद्	190-191	अतीत, वर्तमान व भविष्य काल विकल्प: तीन प्रकार के पुरुष
148-151	शेष भवनेन्द्रों की तीन-तीन परिषद्		
152-154	सर्व वाणव्यंतरेन्द्रों की तीन-तीन परिषद्	192	गमन क्रिया का निषेध: तीन प्रकार के पुरुष
155-157	सर्व ज्योतिष्केन्द्रों की तीन-तीन परिषद्	193	अतीत व वर्तमान काल: तीन प्रकार के पुरुष
158-160	सर्व वैमानिकेन्द्रों की तीन-तीन परिषद्	194	भविष्य काल: तीन प्रकार के पुरुष
161	तीन प्रकार के याम-प्रहर	195	आगमन क्रिया: तीन प्रकार के पुरुष
162-172	केवली कथित धर्म का श्रवण अर्थात् मतिज्ञान-यावत्-केवल ज्ञान की प्राप्ति के लिए तीनों याम उपयुक्त	196	अतीत व वर्तमान काल: तीन प्रकार के पुरुष
173-175	तीन वय-अवस्था	197	भविष्य काल: तीन प्रकार के पुरुष

१९८	आगमन क्रिया का निषेधः तीन प्रकार के पुरुष	३०३-३०८ रसास्वादन करना, रसास्वादन न करनाः तीन प्रकार के पुरुष
१९९	अतीत व वर्तमान काल का निषेधः तीन प्रकार के पुरुष	
२००	भविष्य काल का निषेधः तीन प्रकार के पुरुष	
२०१-२०६	खड़ा होना, खड़ा न होनाः तीन प्रकार के पुरुष	३१५ कुशील आदि को प्राप्त होने वाले तीन स्थान
२०७-२१२	बैठना, न बैठनाः तीन प्रकार के पुरुष	३१६ सुशील आदि को प्राप्त होने वाले तीन स्थान
२१३-२१८	हिंसा करना, हिंसा न करनाः तीन प्रकार के पुरुष	३१७ तीन प्रकार के संसारी जीव
२१९-२२४	छेदन करना, छेदन न करनाः तीन प्रकार के पुरुष	३१८ तीन-तीन प्रकार के सर्व जीव
२२५-२३०	बोलना, न बोलनाः तीन प्रकार के पुरुष	३१९ तीन प्रकार की लोक स्थिति
२३१-२३६	भाषण करना, न करनाः तीन प्रकार के पुरुष	३२० तीन दिशाएं
२३७-२४२	देना, न देनाः तीन प्रकार के पुरुष	३२१ तीन दिशाओं में जीवों की गति
२४३-२४८	खाना, न खानाः तीन प्रकार के पुरुष	३२२ क. तीन दिशाओं से जीवों की आगति
२४९-२५४	प्राप्त करना, न करनाः तीन प्रकार के पुरुष	ख. तीन दिशाओं में जीवों की व्युत्क्रांति
२५५-२६०	पीना, न पीनाः तीन प्रकार के पुरुष	ग. तीन दिशाओं में जीवों का आहार
२६१-२६६	सोना, न सोनाः तीन प्रकार के पुरुष	घ. तीन दिशाओं में जीवों की वृद्धि
२६७-२७२	लड़ना, न लड़नाः तीन प्रकार के पुरुष	ङ. तीन दिशाओं में जीवों की हानि
२७३-२७८	जीतना, न जीतनाः तीन प्रकार के पुरुष	च. तीन दिशाओं में जीवों की गति-पर्याय
२७९-२८४	पराजित करना, पराजित नहीं करनाः तीन प्रकार के पुरुष	छ. तीन दिशाओं में जीवों का समुद्घात
२८५-२९०	सुनना, न सुननाः तीन प्रकार के पुरुष	ज. तीन दिशाओं में जीवों की कालकृत अवस्था
२९१-२९६	रूप देखना, रूप न देखनाः तीन प्रकार के पुरुष	झ. तीन दिशाओं में जीवों का दर्शन द्वारा होने वाला बोध
२९७-३०२	सूंघना, न सूंघनाः तीन प्रकार के पुरुष	ञ. तीन दिशाओं में जीवों का ज्ञान बोध

323	ट. तीन दिशाओं में जीवों का जीवाभिगम	ख. तीन कारणों से मायावी प्रतिक्रमण नहीं करता
324	तीन दिशाओं में जीवों का अजीवाभिगम	ग. तीन कारणों से मायावी आत्म साक्षी से निन्दा नहीं करता
	तीन दिशाओं में पंचेन्द्रिय तिर्यचयोनिकों की गति-आगति आदि	घ. तीन कारणों से मायावी गुरु साक्षी से गहां नहीं करता
325	तीन दिशाओं में मनुष्यों की गति-आगति आदि	ङ. तीन कारणों से मायावी बुरे विचारों का नाश नहीं करता
326	तीन प्रकार के त्रस	च. तीन कारणों से मायावी विशुद्धि नहीं करता
327	तीन प्रकार के स्थावर	छ. तीन कारणों से पुनः माया नहीं करने के लिए अभ्युद्यत नहीं होता
328	तीन प्रकार के अछेद्य	ज. तीन कारणों से मायावी योग्य प्रायश्चित्त स्वीकार नहीं करता
329	तीन प्रकार के अभेद्य	
330	तीन प्रकार के अदाह्य	
331	तीन प्रकार के अग्राह्य	
332	तीन प्रकार के अनर्थ	341-343 क. तीन कारणों से मायावी आलोचना करता है
333	तीन प्रकार के अमध्य	ख. तीन कारणों से मायावी प्रतिक्रमण करता है
334	तीन प्रकार के अप्रदेश	ग. तीन कारणों से मायावी निन्दा करता है
335	तीन प्रकार के अविभाज्य	घ. तीन कारणों से मायावी गहां करता है
336	दुःख के सम्बन्ध में तीन प्रश्नोत्तर	ङ. तीन कारणों से मायावी बुरे विचारों का नाश करता है
337	दुःख की वेदना के सम्बन्ध में अन्य तीर्थियों का मन्तव्य और उसका निराकरण	च. तीन कारणों से मायावी शुद्धि करता है
		छ. तीन कारणों से पुनः वैसा पाप नहीं करने के लिए उद्यत होता है

तृतीय उद्देशक

338-340 क. तीन कारणों से मायावी आलोचना नहीं करता

ज. तीन कारणों से मायावी योग्य प्रायश्चित्त स्वीकार करता है	360	महा वृष्टि के तीन कारण
तीन प्रकार के श्रुतधर पुरुष	361	तीन कारणों से नवीन उत्पन्न देव इच्छा होते हुए भी मनुष्य लोक में नहीं आ सकता
निर्ग्रन्थ-निर्ग्रन्थिनियों के कल्प्य वस्त्र तीन प्रकार के	362	तीन कारणों से नवीन उत्पन्न देव शीघ्र ही मनुष्य लोक में आता है
निर्ग्रन्थ-निर्ग्रन्थिनियों के कल्प्य पात्र तीन प्रकार के	363	देवताओं की तीन कामनाएँ
वस्त्र धारण करने के तीन कारण	364	तीन कारणों से देवता दुःखी होता है
आत्म रक्षा करने वाले तीन उपाय	365	तीन कारणों से देवता च्यवन (मरण) को जान लेता है
ग्लान निर्ग्रन्थ को पानी की तीन दत्ति-(मात्रा) कल्पती है	366	तीन कारणों से देवता उद्विग्न होता है
तीन कारणों से सार्धमिक निर्ग्रन्थ को विसंभोगी करने पर आज्ञा का उल्लंघन नहीं होता	367	विमानों के तीन प्रकार के आकार
तीन प्रकार की अनुज्ञा (शास्त्र पढ़ने की आज्ञा)	368	विमानों के तीन प्रकार के आधार
तीन प्रकार की समनुज्ञा (शास्त्र पढ़ने की आज्ञा)	369	तीन प्रकार के विमान
तीन प्रकार की उपसंपदा (अन्य गण के आचार्य को आचार्य मानना)	370	नैरयिकों में तीन दृष्टियाँ
तीन प्रकार का विजहन (परित्याग)	371	सोलह दण्डकों में तीन दृष्टियाँ
तीन प्रकार के वचन	372	तीन प्रकार की दुर्गति
तीन प्रकार के अवचन	373	तीन प्रकार की सुगति
तीन प्रकार के मन	374	दुर्गति प्राप्त तीन जीव
तीन प्रकार के अमन	375	सुगति प्राप्त तीन जीव
अल्प वृष्टि के तीन कारण	376	एक उपवास करने वाले को तीन प्रकार का पानी कल्पता है

377	दो उपवास करने वाले को तीन प्रकार का पानी कल्पता है	इ. पुष्करवर द्वीपार्थ के पूर्वार्ध में तीन कर्मभूमि क्षेत्र
378	तीन उपवास करने वाले को तीन प्रकार का पानी कल्पता है	च. पुष्करवर द्वीपार्थ के पश्चिमार्ध में तीन कर्मभूमि क्षेत्र तीन प्रकार के दर्शन 392
379	भिक्षु को दिया हुआ भोजन तीन प्रकार का	तीन प्रकार की रूचि 393
380	तीन प्रकार का अवगृहीत (थाली में लिया हुआ) भोजन	तीन प्रकार का प्रयोग 394
381	तीन प्रकार का ऊनोदरी तप	क. धार्मिक आदि तीन प्रकार का व्यवसाय 395
382	तीन प्रकार का उपकरण ऊनोदरी तप	ख. प्रत्यक्ष आदि तीन प्रकार का व्यवसाय
383	निर्ग्रन्थ के लिए तीन अहितकारी कार्य	ग. इह लौकिक आदि तीन प्रकार का व्यवसाय
384	निर्ग्रन्थ के लिए तीन हितकारी कार्य	इह लौकिक व्यवसाय के तीन प्रकार 396
385	तीन प्रकार के शल्य	लौकिक व्यवसाय के तीन प्रकार 397
386	तेजोलेण्या की तीन प्रकार से साधना	वैदिक व्यवसाय के तीन प्रकार 398
387	त्रैमासिकी भिक्षु प्रतिमा की विधि	सामयिक व्यवसाय के तीन प्रकार 399
388	एक रात्रि की भिक्षु प्रतिमा की सम्यक् आराधना न करने से होने वाली तीन विपदायें	साम, दण्ड आदि अर्थोत्पत्ति के तीन कारण तीन प्रकार के पुद्गल 400 नरकों के तीन आधार 401
389	एक रात्रि की भिक्षु प्रतिमा की सम्यक् आराधना करने से होने वाली तीन संपदायें	तीन प्रकार का मिथ्यात्व 402 तीन प्रकार की अक्रिया 403
390-391	क. अढ़ाई द्वीप में तीन-तीन कर्मभूमि क्षेत्र	तीन प्रकार की अक्रिया 404
	ख. जम्बूद्वीप में तीन कर्मभूमि क्षेत्र	तीन प्रकार की प्रयोग क्रिया 405
	ग. धातकी खण्ड द्वीप के पूर्वार्ध में तीन कर्मभूमि क्षेत्र	तीन प्रकार की सामुदायिक क्रिया 406
	घ. धातकी खण्ड द्वीप के पश्चिमार्ध में तीन कर्मभूमि क्षेत्र	तीन प्रकार की अज्ञान क्रिया 407

408	तीन प्रकार का अविनय	ज. अक्रिया का फल	
409	तीन प्रकार का अज्ञान	ट. निर्वाण का फल	
410	तीन प्रकार का धर्म	चतुर्थ उद्देशक	
411	क. धार्मिक आदि तीन प्रकार का उपक्रम	प्रतिमाधारी तीन प्रकार के उपाश्रयों की प्रतिलेखना करे	419
412	ख. आत्मोपक्रम आदि तीन प्रकार का उपक्रम	प्रतिमाधारी तीन प्रकार के उपाश्रयों की आज्ञा ले	420
413	तीन प्रकार का वैयावृत्य	प्रतिमाधारी तीन प्रकार के उपाश्रय में रहे	421
414	तीन प्रकार का अनुग्रह	प्रतिमाधारी तीन प्रकार के संस्तरकों की प्रतिलेखना करे	422
415	तीन प्रकार का अनुशासन	प्रतिमाधारी तीन प्रकार के संस्तरकों की आज्ञा ले	423
416	तीन प्रकार का उपालम्भ	प्रतिमाधारी तीन प्रकार के संस्तरकों का उपयोग करे	424
417	तीन प्रकार की कथा	तीन प्रकार का काल	425
418	तीन प्रकार का विनिश्चय	तीन प्रकार का समय	426
	क. श्रमण-माहन की पर्युपासना का फल	तीन प्रकार का आवलिका-यावत्-तीन प्रकार का अवसर्पिणी काल	427
	ख. धर्म श्रवण का फल	तीन प्रकार के पुद्गल-परावर्त	428
	ग. ज्ञान प्राप्ति का फल	तीन-तीन प्रकार के वचन	429
	घ. विज्ञान प्राप्ति का फल	तीन प्रकार की प्रज्ञापना	430
	ङ. प्रत्याख्यान का फल	तीन प्रकार के सम्यक्	431
	च. संयम का फल	तीन प्रकार के उपघात	432
	छ. अनाश्रव का फल	तीन प्रकार की विशुद्धि	433
	ज. तप का फल	तीन प्रकार की आराधना	434
	झ. व्यवदान का फल		

435	तीन प्रकार की ज्ञानाराधना		निकलने वाली तीन महानदियां
436	तीन प्रकार की दर्शनाराधना	458	जम्बूद्वीप के मेरु से उत्तर में शिखरी वर्षधर पर्वत के पुंडरिक महाद्रह से निकलने वाली तीन महानदियां
437	तीन प्रकार की चारित्राराधना		
438	तीन प्रकार के संक्लेश	459	जम्बूद्वीप में मेरुपर्वत के पूर्व भाग में सीता महानदी के उत्तर भाग में तीन अन्तर्नदियां
439	तीन प्रकार के असंक्लेश		
440-443	तीन-तीन प्रकार के अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार	460	जम्बूद्वीप में मेरुपर्वत के पूर्व भाग में सीता महानदी के दक्षिण भाग में तीन अन्तर्नदियां
444	ज्ञान आदि के अतिक्रमों की आलोचना-यावत्-प्रायश्चित्त		
445	ज्ञान आदि के व्यतिक्रमों की आलोचना-यावत्-प्रायश्चित्त	461	जम्बूद्वीप में मेरुपर्वत के पश्चिम भाग में सीतोदा महानदी के उत्तर भाग में तीन अन्तर्नदियां
446	ज्ञान आदि के अतिचारों की आलोचना-यावत्-प्रायश्चित्त		
447	ज्ञान आदि के अनाचारों की आलोचना-यावत्-प्रायश्चित्त	462	जम्बूद्वीप में मेरुपर्वत के पश्चिम भाग में सीतोदा महानदी के दक्षिण भाग में तीन अन्तर्नदियां
448	तीन प्रकार के प्रायश्चित्त		
449	जम्बूद्वीप के मेरु से दक्षिण में तीन अकर्मभूमियाँ	463	धातकीखण्ड-पुष्करार्ध द्वीप के पूर्व-पश्चिम में तीन-तीन अकर्मभूमियाँ, क्षेत्र, वर्षधर पर्वत, महाद्रह, नदियां व अन्तर्नदियां
450	जम्बूद्वीप के मेरु से उत्तर में तीन अकर्मभूमियाँ		
451	जम्बूद्वीप के मेरु से दक्षिण में तीन क्षेत्र		
452	जम्बूद्वीप के मेरु से उत्तर में तीन क्षेत्र	464	प्रादेशिक भूकम्प के तीन कारण
453	जम्बूद्वीप के मेरु से दक्षिण में तीन वर्षधर पर्वत	465	सावदेशिक भूकम्प के तीन कारण
454	जम्बूद्वीप के मेरु से उत्तर में तीन वर्षधर पर्वत	466	क. तीन प्रकार के किल्बिषिक देव
455	जम्बूद्वीप के मेरु से दक्षिण में तीन महाद्रह एवं तीन देवियां		ख. किल्बिषिक देवों के स्थान
456	जम्बूद्वीप के मेरु से उत्तर में तीन महाद्रह एवं तीन देवियां	467	शक्रेन्द्र की बाह्य परिषद् के देवों की स्थिति
457	जम्बूद्वीप के मेरु से चुल्लहिमवत वर्षधर पर्वत के पद्मद्रह से	468	शक्रेन्द्र की आभ्यन्तर परिषद् के देवियों की स्थिति

469	ईशानेन्द्र की बाह्य परिषद् के देवियों की स्थिति	485	सभी देवों के तीन शरीर
470	तीन प्रकार का प्रायश्चित्त	486	पृथ्वीकायिक जीवों के तीन शरीर
471	तीन अनुद्यातिक (गुरु) प्रायश्चित्त के योग्य	487	वायुकायिक को छोड़कर अप्काय से चतुरिन्द्रिय पर्यंत जीवों के तीन शरीर
472	तीन पारश्चित प्रायश्चित्त के योग्य		
473	तीन अनवस्थाप्य प्रायश्चित्त के योग्य	488	तीन गुरु प्रत्यनीक
474	तीन प्रव्रजित (दीक्षा) करने के अयोग्य	489	तीन गति प्रत्यनीक
475	क. तीन मुंडित करने के अयोग्य	490	तीन समूह प्रत्यनीक
	ख. तीन शिक्षा के अयोग्य	491	तीन अनुकंपा प्रत्यनीक
	ग. तीन उपस्थापना (बड़ी दीक्षा) के अयोग्य	492	तीन भाव प्रत्यनीक
	घ. तीन सहभोज के अयोग्य	493	तीन श्रुत प्रत्यनीक
	ङ. तीन सहवास के अयोग्य	494	तीन पितृ अंग
476	तीन वाचना देने के अयोग्य	495	तीन मातृ अंग
477	तीन वाचना देने के योग्य	496	निर्ग्रन्थ की महानिर्जरा और महापर्यवसान के तीन कारण
478	तीन व्यक्ति दुर्बोध्य	497	श्रमणोपासक की महानिर्जरा और महापर्यवसान के तीन कारण
479	तीन व्यक्ति सुबोध्य		
480	तीन मांडलिक पर्वत	498	तीन प्रकार का पुद्गल प्रतिघात
481	तीन परिमाण में सबसे महान्	499	तीन प्रकार के चक्षु
482	तीन-तीन प्रकार की कल्प स्थिति	500	तीन प्रकार का अभिसमागम-विशिष्ट ज्ञान
483	नैरयिक जीवों के तीन शरीर	501	तीन प्रकार की ऋद्धि
484	असुरकुमारों के तीन शरीर	502	तीन प्रकार की देविर्द्धि

503	तीन-तीन प्रकार की राज्यर्द्धि	520	तीन प्रकार के बाल मरण
504	तीन-तीन प्रकार की गणि-ऋद्धि	521	तीन प्रकार के पंडित मरण
505	तीन प्रकार के गौरव	522	तीन प्रकार के बाल-पंडित मरण
506	तीन प्रकार के करण	523	अव्यवसित (अश्रद्धालु) के लिए तीन अहितकारी
507	क. तीन प्रकार के धर्म	524	व्यवसित (श्रद्धालु) के लिए तीन हितकारी
	ख. सुअधीत आदि विशेषण-विशिष्ट धर्म की व्याख्या	525	प्रत्येक पृथ्वी के तीन वलय
508	तीन प्रकार की व्यावृत्ति-निवृत्ति	526	क. नैययिक जीवों की तीन समय की विग्रह गति
509	तीन प्रकार का अध्युपपादन		ख. एकान्द्रियों को छोड़कर वैमानिक देवों तक की तीन समय की विग्रह गति
510	तीन प्रकार का पर्यापादन (विषय-सेवन)		क्षीणमोह अरहंत के तीन कर्म प्रकृतियों का एक साथ क्षय
511	तीन प्रकार का अंत	527	अभिजित् नक्षत्र के तीन तारे
512	तीन प्रकार के जिन	528	क. श्रवण नक्षत्र के तीन तारे
513	तीन प्रकार के केवली	529	ख. अश्विनी नक्षत्र के तीन तारे
514	तीन प्रकार के अरिहंत		ग. भरणी नक्षत्र के तीन तारे
515	दुर्गंध वाली तीन लेश्या		घ. मृगशिर नक्षत्र के तीन तारे
516	सुगंध वाली तीन लेश्या		ङ. पुष्य नक्षत्र के तीन तारे
517	तीन दुर्गति गामिनी, संक्लिष्ट, अमनोज्ञ, अविशुद्ध, अप्रशस्त और शीत-रूक्ष लेश्या		च. ज्येष्ठा नक्षत्र के तीन तारे
518	तीन सुगति गामिनी, संक्लिष्ट, मनोज्ञ, विशुद्ध, प्रशस्त और स्निग्ध-उष्ण लेश्या	530	भगवान् धर्मानाथ और भगवान् शांतिनाथ का अंतर
	तीन प्रकार के मरण	531	भ. महावीर के पश्चात् होने वाले तीन युग पुरुष
519		532	भ. मल्लीनाथ ने तीन सौ पुरुषों के साथ दीक्षा ली

533	भ. पार्श्वनाथ ने तीन सौ पुरुषों के साथ दीक्षा ली	24-33	शुद्ध-अशुद्ध वस्त्र और मनुष्य की चौभंगी
534	भ. महावीर के तीन सौ शिष्य चौदह पूर्वधर मुनि	34	चार प्रकार के पुत्र
535	तीन तीर्थंकर चक्रवर्ती थे	35-44	सत्य-असत्यवादी पुरुष चौभंगी
536-539	त्रैवेयक देवों के तीन विमान प्रस्तुत व उनके प्रकार	45-54	शुचि-अशुचि वस्त्र, शरीर और मनुष्य की चौभंगी
540	जीवों द्वारा तीन प्रकार की पाप कर्म प्रकृतियों के पुद्गलों	55	चार प्रकार के कोरक (मंजरी) व पुरुष की चौभंगी
	का त्रैकालिक चयन-यावत्-निर्जरा	56	चार प्रकार के घुन (काष्ठ भक्षक कीड़े) व भिक्षु की चौभंगी
541	तीन प्रदेशी पुद्गल स्कंध		
542	क. तीन प्रदेशावगाढ़ पुद्गल	57	चार प्रकार का तृण वनस्पतिकाय
	ख. तीन समय की स्थिति वाले पुद्गल	58	चार कारणों से नैरयिकों की मनुष्य लोक में आगमन इच्छा
	ग. तीन गुण वाले पुद्गल-यावत्-तीन गुण रुक्ष स्पर्श पुद्गल	59	निर्ग्रन्थिनियों को कल्पनीय चार चद्दरें और उनका परिमाण
		60	ध्यान के चार प्रकार
	चतुर्थ-स्थान	61-62	आर्तध्यान के प्रकार व लक्षण
	प्रथम उद्देशक	63-64	रौद्र ध्यान के प्रकार व लक्षण
1	क. चार अंतःक्रिया सिद्ध गति प्राप्त होने के उपाय	65-68	धर्म ध्यान के प्रकार व लक्षण
	ख. अंतःक्रियाओं का स्वरूप उदाहरण सहित	69-72	शुक्ल ध्यान के प्रकार व लक्षण, आंलबन तथा अनुप्रेक्षा
2-11	उन्नत प्रणत वृक्ष व मनुष्य की चौभंगी	73	चार प्रकार की देव-स्थिति (पद मर्यादा)
12-21	ऋजु-वक्र वृक्ष व मनुष्य की चौभंगी	74	चार प्रकार का संवास (संभोग) मैथुन
22	प्रतिमाधारी अणुगार को चार भाषाएं कल्प्य	75	चौबीस दण्डकों में चार कषाय
23	सत्य आदि चार भाषाएं	76-79	चौबीस दण्डकों में कषायों के चार आधार-स्थान
		80-83	चौबीस दण्डकों में कषायों की उत्पत्ति के चार कारण

84	चार प्रकार का क्रोध	102	चार प्रकार का सत्य
85	चार प्रकार का मान	103	चार प्रकार का असत्य
86	चार प्रकार की माया	104	चार प्रकार का प्रणिधान
87	चार प्रकार का लोभ	105	चार प्रकार का सुप्रणिधान
88	विकल्प से चार प्रकार का क्रोध	106	चार प्रकार का दुष्प्रणिधान
89	विकल्प से चार प्रकार का मान	107	सद् व्यवहार की पुरुष चौभंगी
90	विकल्प से चार प्रकार की माया	108	दोष दर्शन की पुरुष चौभंगी
91	विकल्प से चार प्रकार का लोभ	109	दोष कथन की पुरुष चौभंगी
92	(चौबीस दण्डकों में) अतीत काल में आठ कर्म प्रकृतियों के चयन के चार कारण	110	दोष उपशमन की पुरुष चौभंगी
93	(चौबीस दण्डकों में) वर्तमान काल में आठ कर्म प्रकृतियों के चयन के चार कारण	111	अभ्युत्थान विनय की पुरुष चौभंगी
94	(चौबीस दण्डकों में) भविष्य काल में आठ कर्म प्रकृतियों के चयन के चार कारण	112	वन्दन व्यवहार की पुरुष चौभंगी
95	चौबीस दण्डकों में तीनों काल में आठ कर्म प्रकृतियों का उपचयन, बंध, उदीरणा, वेदना व निर्जरा के चार कारण	113	सत्कार की पुरुष चौभंगी
96-98	प्रतिमा (पडिमा) के चार-चार प्रकार	114	सम्मान की पुरुष चौभंगी
99	चार अजीव अस्तिकाय	115	गुरुजन पूजा की पुरुष चौभंगी
100	चार अरूपि अस्तिकाय	116	वाचना देना व्यवहार की पुरुष चौभंगी
101	वय एवं श्रुत में पक्व-अपक्व फल व मनुष्य की चौभंगी	117	पृच्छा की पुरुष चौभंगी
		118	प्रश्न करना की पुरुष चौभंगी
		119	व्याख्यान करना की पुरुष चौभंगी
		120	सूत्र-अर्थ की पुरुष चौभंगी
		121	असुरेन्द्रों के चार लोकपाल

122	वैमानिकेन्द्रों के चार लोकपाल	144	सिद्धों के सर्वप्रथम चार अघाति कर्मों का क्षय
123	चार प्रकार के वायुकुमार	145	हास्योत्पत्ति के चार कारण
124	चार प्रकार के देव	146	क. चार प्रकार का काष्ठांतर आदि अंतर
125	चार प्रकार के प्रमाण		ख. स्त्री से स्त्री का व पुरुष से पुरुष का अंतर
126	चार प्रधान दिशा कुमारियाँ	147	चार प्रकार के भृत्य (सेवक)
127	चार प्रधान विद्युत कुमारियाँ	148	चार प्रकार के दोष प्रतिसेवी पुरुष
128	शक्रेन्द्र की मध्यम परिषद् के देवों की स्थिति	149-158	असुरेन्द्र आदि के समस्त लोकपालों की अग्रमहिषियाँ
129	शक्रेन्द्र की मध्यम परिषद् के देवियों की स्थिति	159-174	समस्त इन्द्रों की अग्रमहिषियाँ
130	चार प्रकार का संसार	175-176	ज्योतिष्केन्द्र चन्द्र-सूर्य की अग्रमहिषियाँ
131	चार प्रकार का दृष्टिवाद	177-178	महाप्रहों की अग्रमहिषियाँ
132-133	प्रायश्चित्त के चार-चार प्रकार	179-182	शक्र-ईशान आदि लोकपालों की अग्रमहिषियाँ
134	चार प्रकार का काल	183	चार गोरस विकृतियाँ
135	चार प्रकार का पुद्गल परिणमन	184	चार स्नेह विकृतियाँ
136	भरत ऐश्वर्य के बाईस तीर्थंकर द्वारा चार महाव्रतों का कथन	185	चार महा विकृतियाँ
137	महाविदेह के सर्व अरहंतों द्वारा चार महाव्रतों का कथन	186	चार प्रकार के कूटागार व पुरुष की चौभंगी
138	चार प्रकार की दुर्गतियाँ	187	चार प्रकार की कूटागारशाला व स्त्रियों की चौभंगी
139	चार प्रकार की सुगतियाँ	188	चार प्रकार की अवगाहना
140	चार प्रकार के दुर्गति प्राप्त जीव	189	चार अंगबाह्य प्रज्ञप्तियाँ
141	चार प्रकार के सुगति प्राप्त जीव		
142-143	अर्हन्तों के सर्वप्रथम चार घाति कर्मों का क्षय		

द्वितीय उद्देशक

190-193 प्रति संलीन-अप्रतिसंलीन (कषाय निग्रह-अनिग्रह) की चौभंगी

194-210	दीन-अदीन पुरुषों के चार-चार प्रकार- 1 परिणत, 2 रूप, 3 मन, 4 संकल्प, 5 प्रज्ञा, 6 दृष्टि, 7 शीलाचार, 8 व्यवहार, 9 पराक्रम, 10 वृत्ति, 11 जाति, 12 भाषी, 13 अवभासी, 14 सेवी, 15 पर्याय, 16 परिवार इन की विभिन्न प्रकारों से चौभंगी	242-245	चारों विकथाओं के चार-चार भेद
		246	धर्मकथा के चार भेद
		247	आक्षेपणी कथा के चार भेद
		248	विक्षेपणी कथा के चार भेद
		249	संवेगनी कथा के चार भेद
211-228	आर्य-अनार्य चार-चार प्रकार के पुरुष	250	निर्वेदनी कथा के आठ भेद, चार-चार भेद अनुसार
229	चार प्रकार के श्रेष्ठ वृषभ व पुरुष चौभंगी	251	दुर्बल शरीर और दृढ़ भावः चार प्रकार के पुरुष
230	जाति-कुल से श्रेष्ठ वृषभ व चार प्रकार के पुरुष	252	दुर्बल शरीर और दृढ़ शरीरः चार प्रकार के पुरुष
231	जाति और बल से श्रेष्ठ वृषभ व चार प्रकार के पुरुष	253	ज्ञान दर्शन की उत्पत्तिः चार प्रकार के पुरुष
232	जाति और रूप से श्रेष्ठ वृषभ व चार प्रकार के पुरुष	254	निर्ग्रन्थ-निर्ग्रन्थिनियों के ज्ञान-दर्शन की उत्पत्ति में बाधक चार कारण
233	कुल और बल से श्रेष्ठ वृषभ व चार प्रकार के पुरुष	255	निर्ग्रन्थ-निर्ग्रन्थिनियों के ज्ञान-दर्शन की उत्पत्ति में सहायक चार कारण
234	कुल और रूप से श्रेष्ठ वृषभ व चार प्रकार के पुरुष	256	चार महाप्रतिपदाओं में अस्वाध्याय
235	बल और रूप से श्रेष्ठ वृषभ व चार प्रकार के पुरुष	257	चार संध्याओं में अस्वाध्याय
236	अल्प, भीरू और विचित्र स्वभाव के हाथी व पुरुष चौभंगी	258	स्वाध्याय के चार काल
237-240	क. भद्र, मन्द और संकीर्ण स्वभाव के हाथी व पुरुष चौभंगी	259	चार प्रकार की लोकस्थिति
	ख. भद्र, मन्द, भीरू और संकीर्ण के लक्षण की पांच संग्रहणी गाथाएं	260	विविध प्रकार का जीवन जीने वाले चार प्रकार के पुरुष
241	विकथा के चार प्रकार	261	भव भ्रमण का अंत व चार प्रकार के पुरुष
		262	स्वयं व अन्य खिन्न मन पुरुष चौभंगी

263	आत्म दमन-परदमन व चार प्रकार के पुरुष	279	विविध प्रकार के स्वभाव व चार प्रकार के पुरुष
264	चार प्रकार की गहीं	280-281	जय-पराजय वाली चार प्रकार की सेना व इसी प्रकार
265	संतुष्ट या समर्थ पुरुष चौभंगी		चार-चार प्रकार के पुरुष
266	सरलता और वक्रता वाले चार प्रकार के मार्ग व पुरुष चौभंगी	282	चार प्रकार की वक्रता व इसी प्रकार चार प्रकार की माया तथा माया करने वालों की गति
267	क्षेम और अक्षेम वाले चार प्रकार के मार्ग व पुरुष चौभंगी	283	चार प्रकार के स्तंभ व इसी प्रकार चार प्रकार के मान तथा मान करने वालों की गति
268	क्षेम और अक्षेम रूप-चार प्रकार के मार्ग व पुरुष चौभंगी		
269	अनुकूल और प्रतिकूल स्वभाव-चार प्रकार के शंख व पुरुष चौभंगी	284	चार प्रकार के वस्त्र इसी प्रकार चार प्रकार के लोभ तथा लोभ करने वालों की गति
270	चार प्रकार की धूमशिखा, इसी प्रकार चार प्रकार की स्त्रियाँ	285	चार प्रकार का संसार
		286	चार प्रकार की आयु
271	चार प्रकार की अग्निशिखा, इसी प्रकार चार प्रकार की स्त्रियाँ	287	चार प्रकार के भव
		288-289	चार-चार प्रकार का आहार
272	चार प्रकार की वातमंडलिका, इसी प्रकार चार प्रकार की स्त्रियाँ	290	चार प्रकार का बंध
		291	चार प्रकार का उपक्रम-आरम्भ
273	चार प्रकार के वनखण्ड, इसी प्रकार चार प्रकार के पुरुष	292	चार प्रकार का बंधनोपक्रम
274	अकेला निर्ग्रथ अकेली निर्ग्रथिनी के साथ चार कारण से बात करे तो भगवान की आज्ञा का उल्लंघन नहीं होता	293	चार प्रकार का उदीरणोपक्रम
		294	चार प्रकार का उपशमनोपक्रम
275-277	तमस्काय के चार-चार नाम	295	चार प्रकार का विपरिणामनोपक्रम
278	चार कल्पों पर तमस्काय का आवरण	296	चार प्रकार का अल्प-बहुत्व

297	चार प्रकार का संक्रम	311	जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से पूर्व में और सीतोदा महानदी के दक्षिण में चार वक्षस्कार पर्वत
298	चार प्रकार का निधत्त		
299	चार प्रकार का निकाचित	312	जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से पश्चिम में और सीतोदा महानदी के दक्षिण में चार वक्षस्कार पर्वत
300	चार एक संख्या वाले		
301	चार अनेक संख्या वाले	313	जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से पश्चिम में और सीतोदा महानदी के उत्तर में चार वक्षस्कार पर्वत
302	चार सर्व संख्या वाले		
303	मानुषोत्तर पर्वत के चार दिशाओं में चार कूट	314	जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से चार विदिशाओं में चार वक्षस्कार पर्वत
304	जम्बूद्वीप के भरत-ऐरवत क्षेत्रों में अतीत उत्सर्पिणी के छोटे आरे का परिमाण	315	जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से महाविदेह क्षेत्र में (तीनों काल में) चार-चार उत्तम पुरुषों की उत्पत्ति
305	जम्बूद्वीप के भरत-ऐरवत क्षेत्र में वर्तमान अवसर्पिणी के पहले आरे का परिमाण	316	जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत पर चार वन
306	जम्बूद्वीप के भरत-ऐरवत क्षेत्र में आगामी उत्सर्पिणी के छोटे आरे का परिमाण	317	जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत पर पण्डक वन में चार अभिषेक शिलायें
307	क. जम्बूद्वीप में चार अकर्म भूमियां	318	मेरु पर्वत की ऊपर की चौड़ाई
	ख. जम्बूद्वीप में चार वृत्तवैताढ्य पर्वत	319	क. धातकी खण्ड द्वीप के पूर्वार्ध व पश्चिमार्ध में भी पूर्ववत् चार-चार वक्षस्कार पर्वत
	ग. पर्वतवासी चार देव और उनकी स्थिति		ख. पुष्करवर द्वीप के पूर्वार्ध व पश्चिमार्ध में भी पूर्ववत् चार-चार वक्षस्कार पर्वत
308	जम्बूद्वीप में चार महाविदेह क्षेत्र		क. जम्बूद्वीप के चार द्वार
309	सर्व निषध-नीलवंत वर्षधर पर्वतों की ऊँचाई व गहराई		ख. द्वारों की चौड़ाई
310	जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से पूर्व में और सीतोदा महानदी के उत्तर में चार वक्षस्कार पर्वत	320	

	ग. द्वारों पर रहने वाले पल्योपम की स्थिति वाले चार देव		कलश व चार महर्धिक देव
321	जम्बूद्वीप में मंदर पर्वत के दक्षिण में चुल्ल हिमवान पर्वत की चारों विदिशाओं में लवण समुद्र के भीतर तीन-तीन सौ योजन जाने पर चार अन्तर्द्वीप व चार प्रकार के मनुष्य अन्तर्द्वीप के चारों विदिशाओं से लवण समुद्र में चार-चार सौ योजन पर चार अन्तर्द्वीप व चार प्रकार के मनुष्य अन्तर्द्वीप के चारों विदिशाओं से लवण समुद्र में पांच-पांच सौ योजन पर चार अन्तर्द्वीप व चार प्रकार के मनुष्य अन्तर्द्वीप के चारों विदिशाओं से लवण समुद्र में छह-छह सौ योजन पर चार अन्तर्द्वीप व चार प्रकार के मनुष्य अन्तर्द्वीप के चारों विदिशाओं से लवण समुद्र में सात-सात सौ योजन पर चार अन्तर्द्वीप व चार प्रकार के मनुष्य अन्तर्द्वीप के चारों विदिशाओं से लवण समुद्र में आठ-आठ सौ योजन पर चार अन्तर्द्वीप व चार प्रकार के मनुष्य अन्तर्द्वीप के चारों विदिशाओं से लवण समुद्र में नौ-नौ सौ योजन पर चार अन्तर्द्वीप व चार प्रकार के मनुष्य मेरु पर्वत के उत्तर में शिखरी वर्षधर पर्वत की चारों विदिशाओं में लवण समुद्र में तीन-तीन सौ योजन पर चार अन्तर्द्वीप व चार प्रकार के मनुष्य लवण समुद्र के भीतर 95 हजार योजन पर चार महापाताल	330	जम्बूद्वीप के लवण समुद्र में 42 हजार योजन पर चार वेलांधर नागराज आवास पर्वत व चार महर्धिक देव जम्बूद्वीप के लवण समुद्र में 42 हजार योजन पर चार अनुवेलांधर नागराज आवास पर्वत व चार महर्धिक देव क. लवण समुद्र में चार चन्द्र का प्रकाश ख. लवण समुद्र में चार सूर्य का आतप ग. लवण समुद्र में चार कृतिका-यावत्-भरणी नक्षत्रों का चन्द्र के साथ योग लवण समुद्र में चार अग्नि-यावत्-यम देव लवण समुद्र में चार अंगार-यावत्-भावकेतु ग्रहों का भ्रमण लवण समुद्र के चार योजन प्रवेश वाले चार द्वार व उनमें चार महर्धिक देव धातकी खण्ड द्वीप की चौड़ाई चार लाख योजन की जम्बूद्वीप के बाहर धातकीखण्ड व पुष्करार्ध द्वीप में चार भरत, चार ऐरवत-यावत्-चार मंदर चूलिका क. नंदीश्वर द्वीप के मध्य भाग में चार अंजनक पर्वत ख. अंजनक पर्वतों की ऊँचाई व चौड़ाई तथा गहराई क. अंजनक पर्वतों का ऊपरी भाग समतल व रमणीय ख. अंजनक पर्वतों पर चार सिद्धालय
322		331	
323		332	
324		333	
325		334	
326		335	
327		336	
328		337	
329		338	
		339	

ग.	सिद्धालय का आयाम-विष्काम्भ	351	चार प्रकार का संयम
घ.	सिद्धालय के चार द्वार	352	चार प्रकार का त्याग
ङ.	सिद्धालय के चार द्वारों पर चार देव	353	चार प्रकार की अकिंचनता
च.	सिद्धालय के द्वारों के आगे चार मुख्य मण्डप, चार प्रेक्षा मण्डप, चार अखाड़े, चार मणिपीठिका, चार सिंहासन, चार विजयदूष्य, चार वज्रमय अंकुश, चार चैत्य स्तूप, चार जिन प्रतिमा, चार चैत्य वृक्ष, चार महेन्द्र ध्वज, चार नंदा पुष्करिणियाँ, उनका परिमाण, चार सोपान, चार तोरण, चार वनखण्ड, चार दधिमुखपर्वत, पर्वतों की ऊँचाई आदि	354	क. चार प्रकार की राजि (रेखा)
		355	ख. रेखा समान चार प्रकार का क्रोध व क्रोधी की गति
		355	क. चार प्रकार का उदक (जल)
		355	ख. उदक समान जीव का परिणाम व जीवों की गति
		355	चार प्रकार के पक्षी व इसी प्रकार चार प्रकार के पुरुष
		356-360	प्रीति और अप्रीति वाले चार प्रकार के पुरुष
340	पूर्वी अंजनक पर्वत व उसकी पुष्करणीयां	361	परोपकार भाव वाले चार प्रकार के वृक्ष व इसी प्रकार चार प्रकार के पुरुष
341	दक्षिणी अंजनक पर्वत व उसकी पुष्करणीयां		
342	पश्चिमी अंजनक पर्वत व उसकी पुष्करणीयां	362	क. भारवाहक के चार प्रकार के लौकिक विश्राम
343	उत्तरी अंजनक पर्वत व उसकी पुष्करणीयां		ख. श्रमणोपासक के चार प्रकार के लोकोत्तर विश्राम
344	नंदिश्वर द्वीप में चार रतिकर पर्वत व उनकी ऊँचाई, गहराई आदि	363	उदित-अस्त वाले चार प्रकार के पुरुष उदाहरण सहित
		364-366	चौबीस दण्डकों में चार प्रकार के युग्म
345-348	ईशानेन्द्र व शकेन्द्र की चार अग्रमहिषियों की चार-चार राजधानियाँ	367	चार प्रकार के शूर (पराक्रमी) पुरुष
349	चार प्रकार का सत्य	368	प्रशस्त और अप्रशस्त अभिप्राय युक्त चार प्रकार के पुरुष
350	आजीविका सम्प्रदाय में चार प्रकार का तप	369-370	दस भवनपति व पृथ्वी, अप, वायु, वनस्पति तथा वाणव्यांतर में चार लेख्या

371-374	युक्त-अयुक्त चार प्रकार के यान व इसी प्रकार चार प्रकार के पुरुष	411	चार प्रकार के मधुर फल के समान चार प्रकार के आचार्य
375-378	चार प्रकार की पालकी वाहन व इसी प्रकार चार प्रकार के पुरुष	412	आत्म सेवा व पर सेवा करने वाले चार प्रकार के पुरुष
379	चार प्रकार के सारथी व इसी प्रकार चार प्रकार के पुरुष	413	सेवा करने वाले और सेवा नहीं करने वाले चार प्रकार के पुरुष
380-383	चार प्रकार के अश्व व इसी प्रकार चार प्रकार के पुरुष	414	अर्थ के लिए कार्य करने वाले व अभिमान नहीं करने वाले चार प्रकार के पुरुष
384-387	चार प्रकार के गज व इसी प्रकार चार प्रकार के पुरुष	415	गण के लिए कार्य करने वाले व अभिमान नहीं करने वाले चार प्रकार के पुरुष
388	चार प्रकार के मार्गगामी या उन्मार्गगामी व इसी प्रकार चार प्रकार के पुरुष	416	गण के योग्य सामग्री का संचय करने वाले किन्तु अभिमान नहीं करने वाले चार प्रकार के पुरुष
389	चार प्रकार के पुष्प व इसी प्रकार चार प्रकार के पुरुष	417	गण की शोभा बढ़ाने वाले किन्तु अभिमान नहीं करने वाले चार प्रकार के पुरुष
390-395	श्रेष्ठ और अश्रेष्ठ जाति संपन्न चार प्रकार के पुरुष	418	गण की शुद्धि करने वाले किन्तु अभिमान नहीं करने वाले चार प्रकार के पुरुष
396-400	श्रेष्ठ और अश्रेष्ठ कुल संपन्न चार प्रकार के पुरुष	419	लिंग और धर्म का त्याग करने वाले चार प्रकार के पुरुष
401-404	श्रेष्ठ और अश्रेष्ठ बल संपन्न चार प्रकार के पुरुष	420	धर्म और गण का त्याग करने वाले चार प्रकार के पुरुष
405-407	श्रेष्ठ और अश्रेष्ठ रूप संपन्न चार प्रकार के पुरुष	421	धर्म प्रेम और धर्म में दृढ़ता युक्त चार प्रकार के पुरुष
408	श्रेष्ठ और अश्रेष्ठ श्रुत संपन्न व शील संपन्न चार प्रकार के पुरुष	422-423	आचार्य के चार-चार प्रकार
409	श्रेष्ठ और अश्रेष्ठ श्रुत संपन्न व चारित्र संपन्न चार प्रकार के पुरुष	424-425	अंतेवासी के चार-चार प्रकार
410	श्रेष्ठ और अश्रेष्ठ शील संपन्न व चारित्र संपन्न चार प्रकार के पुरुष	426	चार प्रकार के निर्ग्रन्थ

427	चार प्रकार की निर्ग्रथियाँ	445	देवों के चार कारणों से आसन चलायमान
428	चार प्रकार के अल्पकर्म-महाकर्म वाले श्रमणोपासक	446	देवों का चार कारणों से सिंहनाद
429	चार प्रकार की अल्प कर्म-महाकर्म वाली श्रमणोपासिकाएँ	447	देवों का चार कारणों से चेलोत्क्षेप
430-431	चार-चार प्रकार के श्रमणोपासक	448	देवों के चार कारणों से चैत्य वृक्ष चलायमान
432	सौधर्म कल्प में उत्पन्न होने वाले भ. महावीर के श्रावकों की स्थिति	449	लोकान्तिक देवों का चार कारणों से मनुष्य लोक में आगमन
433	सद्यजातदेव के मनुष्य लोक में न आने के चार कारण	450	चार प्रकार की दुःख शय्या
434	सद्यजातदेव के मनुष्य लोक में आने के चार कारण	451	चार प्रकार की सुख शय्या
435	लोक में अंधकार होने के चार कारण	452	वाचना देने के अयोग्य पुरुष
436	लोक में उद्योत होने के चार कारण	453	वाचना देने के योग्य पुरुष
437	देवलोक में अंधकार होने के चार कारण	454	भरण-पोषण वाले चार प्रकार के पुरुष
438	देवलोक में उद्योत होने के चार कारण	455-459	दुर्गत-सुगतगामी चार प्रकार के पुरुष
439	देव समूह के मनुष्य लोक में आने के चार कारण	460-462	अंधकार और प्रकाश वाले चार प्रकार के पुरुष
440	मनुष्य लोक में देव मेला होने के चार कारण	463-465	परिज्ञात-अपरिज्ञात कर्मा चार प्रकार के पुरुष
441	मनुष्य लोक में देव-कोलाहल होने के चार कारण	466	इहलोक सुखैषी और परलोक सुखैषी पुरुष चौभंगी
442	मनुष्य लोक में देवेन्द्रों के आगमन के चार कारण	467	ज्ञान-दर्शन की वृद्धि-हानि और राग-द्वेष की वृद्धि-हानि वाले चार प्रकार के पुरुष
443	सामानिक, त्रायस्त्रिंशक, लोकपाल व उनकी अप्रमहिषियाँ, परिषद् देव, सेनापति व आत्मरक्षक देव के मनुष्य लोक में आने के चार कारण	468-469	विनीत-अविनीत चार प्रकार के अश्व व इसी प्रकार चार प्रकार के पुरुष
444	देवों के सिंहासन से उठने के चार कारण	470-473	जाति संपन्न अश्व व चार प्रकार के पुरुष
		474-476	कुल संपन्न अश्व व चार प्रकार के पुरुष

477-478	बल संपन्न अश्व व चार प्रकार के पुरुष	498	जीव और पुद्गल के लोक से बाहर न जा सकने के चार कारण
479	रुप संपन्न अश्व व चार प्रकार के पुरुष		
480	सिंह-शृगाल जैसे प्रव्रज्या पालक चार प्रकार के पुरुष	499	चार प्रकार के उदाहरण (दृष्टांत)
481	लोक में चार स्थान समान	500-503	प्रत्येक उदाहरण के चार-चार भेद
482	लोक में चार समान परिमाण वाले	504	हेतु के चार-चार प्रकार
483	ऊर्ध्वलोक में चार दो शरीर वाले	505	चार प्रकार का गणित
484	अधोलोक में चार दो शरीर वाले	506	अधोलोक में अंधकार करने वाले चार पदार्थ
485	तिरछेलोक में चार दो शरीर वाले	507	तिर्यक्लोक में उद्योत करने वाले चार पदार्थ
486	लज्जा, रोमांच चंचलता, स्थिरता वाले चार प्रकार के पुरुष	508	ऊर्ध्वलोक में उद्योत करने वाले चार पदार्थ
487	चार शय्या प्रतिमा		चतुर्थ उद्देशक
488	चार वस्त्र प्रतिमा	509	चार प्रकार के प्रवासी पुरुष
489	चार पात्र प्रतिमा	510	नैरयिकों का चार प्रकार का आहार
490	चार स्थान प्रतिमा	511	तिर्यचों का चार प्रकार का आहार
491	आत्मा का स्पर्श करने वाले चार शरीर	512	मनुष्यों का चार प्रकार का आहार
492	कर्मण शरीर वाले चार शरीर	513	देवों का चार प्रकार का आहार
493	सर्व लोक स्पर्श करने वाले चार अस्तिकाय	514	चार प्रकार के आशिविष और उनकी विष शक्ति
494	अपर्याप्त बादरकायिक जीवों द्वारा सर्व लोक स्पृष्ट	515	चार प्रकार की व्याधियाँ
495	चार अस्तिकाय द्रव्य प्रदेशाग्र की अपेक्षा तुल्य	516	चिकित्सा के चार अंग
496	चार काय के जीवों का शरीर सुपश्य नहीं	517	चिकित्सक के चार प्रकार
497	पदार्थ के स्पर्श से ज्ञान कराने वाली चार इन्द्रियाँ	518-520	व्रण (घाव) करने वाले एवं उसकी सफाई आदि करने

वाले पुरुष की चौभागियां	544	चार प्रकार के मच्छ व इसी प्रकार चार प्रकार के भिक्षाचर
521-522 बाह्य और भीतरी घाव करने वाले व घाव भरने वाले पुरुष	545-547	चार प्रकार के गोले व इसी प्रकार चार प्रकार के पुरुष
की चौभागियां	548	चार प्रकार के पत्र (धार वाले फलक) व इसी प्रकार चार प्रकार के पुरुष
523-526 सद्ज्ञान व सदाचार की अपेक्षा श्रेयस् व पापीयस् पुरुषों की चौभागियां	549	चार प्रकार के कूट (चटाई) व इसी प्रकार चार प्रकार के पुरुष
527 प्रवचन-प्रज्ञापक व प्रवचन प्रभावक पुरुषों की चौभंगी		
528 प्रवचन आख्यायक व उल्लजीविका संपन्न पुरुषों की चौभंगी	550	चार प्रकार के चतुष्पद जीव
529 चार प्रकार की वृक्ष-विक्रिया	551	चार प्रकार के पक्षी
530 चार प्रकार के वादी समवसरण (समुदाय)	552	चार प्रकार के क्षुद्रपाणी
531-532 सोलह दण्डकों में चार प्रकार के वादी समवसरण	553	चार प्रकार के पक्षी व इसी प्रकार चार प्रकार के भिक्षुक
533-537 चार प्रकार के मेघ व इसी प्रकार चार-चार प्रकार के पुरुष	554-555	शरीरकृश व कषायकृश की अपेक्षा चार-चार प्रकार के पुरुष
538 मेघ समान माता-पिता	556	विवेकी और अविवेकी पुरुषों के चार प्रकार
539 मेघ समान राजा	557	शास्त्रज्ञ और समयज्ञ पुरुषों के चार प्रकार
540 पुष्कलावर्त आदि चार प्रकार के मेघ	558	स्वदया और परदया पुरुषों के चार प्रकार उदाहरण सहित
541 चार प्रकार के करंडक (पिटारा) इसी प्रकार चार प्रकार के आचार्य	559-565	चार प्रकार के मैथुन व तद्विषयक विभिन्न भेद
	566	चारित्र नष्ट होने के चार कारण
542-543 क. चार प्रकार के वृक्ष, इसी प्रकार चार प्रकार के आचार्य	567	असुर योग्य कर्म बंधन के चार कारण
ख. योग्य-अयोग्य आचार्य और योग्य-अयोग्य शिष्य	568	आभियोगिक-देव योग्य बंधन के चार कारण
ग. वृक्ष व आचार्य संबंधी चौभागियों की संग्रहणी गाथाएं	569	संमोह (मूढ देव) योग्य बंधन के चार कारण

५७०	किल्बिषी देव योग्य बंधन के चार कारण	५९९	चार प्रकार के मानवकृत उपसर्ग
५७१-५७५	चार-चार प्रकार की प्रव्रज्या	६००	चार प्रकार के तिर्य्यचकृत उपसर्ग
५७६-५७७	चार प्रकार की कृषि, इसी प्रकार चार-चार प्रकार की प्रव्रज्या	६०१	चार-चार प्रकार के स्वयंकृत उपसर्ग
		६०२-६०४	चार-चार प्रकार के कर्म
५७८	चार प्रकार की संज्ञा	६०५	चार प्रकार का संघ
५७९	आहार संज्ञा के चार कारण	६०६	चार प्रकार की बुद्धि
५८०	भय संज्ञा के चार कारण	६०७	चार प्रकार की मति
५८१	मैथुन संज्ञा के चार कारण	६०८	चार प्रकार के संसारी जीव
५८२	परिग्रह संज्ञा के चार कारण	६०९	चार-चार प्रकार के सर्व जीव
५८३	चार प्रकार के कामभोग	६१०-६११	मित्र-शत्रु चार प्रकार के पुरुष
५८४-५८५	चार प्रकार का जल, इसी प्रकार चार प्रकार के पुरुष	६१२-६१३	मुक्त-अमुक्त चार प्रकार के पुरुष
५८६-५८७	चार प्रकार के समुद्र, इसी प्रकार चार प्रकार के पुरुष	६१४	तिर्य्यच पंचेन्द्रिय की गति-आगति
५८८-५८९	चार प्रकार के तिरने वाले पुरुष	६१५	मनुष्य की गति-आगति
५९०-५९४	पूर्ण तुच्छ चार प्रकार के कुम्भ व इसी प्रकार चार प्रकार के पुरुष	६१६	बेइन्द्रिय जीवों की रक्षा से चार प्रकार का संयम
५९५	कुंभ अनुसार चार प्रकार का चारित्र	६१७	बेइन्द्रिय जीवों की हिंसा से चार प्रकार का असंयम
५९६	क. मधु-विष कुंभ अनुसार पुरुष के चार प्रकार	६१८-६२०	सोलह दण्डकों में चार क्रिया
	ख. हृदय-जिह्वा अनुसार पुरुष चौभंगी की संग्रहणी गाथाएं	६२१	विद्यमान गुणों का नाश होने के चार कारण
५९७	चार प्रकार के उपसर्ग	६२२	गुणों की वृद्धि के चार कारण
५९८	चार प्रकार के देवकृत उपसर्ग	६२३-६२४	चौबीस दण्डकों में चार कारणों से शरीर की उत्पत्ति
		६२५-६२६	चौबीस दण्डकों में चार कारणों से शरीर की रचना

627	धर्म के चार द्वार	647	भ. अरिष्ट नेमिनाथ के चौदह पूर्वी मुनियों की संख्या
628	नरकायु बंध के चार कारण	648	भ. महावीर के वादलोब्धि सम्पन्न मुनियों की संख्या
629	तिर्यचायु बंध के चार कारण	649	नीचे के चार कल्पों की संस्थिति
630	मनुष्यायु बंध के चार कारण	650	मध्य के चार कल्पों की संस्थिति
631	देवायु बंध के चार कारण	651	ऊपर के चार कल्पों की संस्थिति
632	चार प्रकार के वाद्य	652	विभिन्न रस वाले चार समुद्र
633	चार प्रकार के नृत्य	653	क. चार प्रकार के आवर्त व इसी प्रकार चार प्रकार का कषाय
634	चार प्रकार का संगीत		ख. क्रोध करने वालों की गति
635	चार प्रकार का माल्य		ग. मान करने वालों की गति
636	चार प्रकार के अलंकार		घ. माया करने वालों की गति
637	चार प्रकार का अभिनय		ङ. लोभ करने वालों की गति
638	सनत्कुमार और मोहेन्द्र कल्प के विमानों के चार वर्ण	654	अनुराधा नक्षत्र के चार तारे
639	महाशुक्र और सहस्रार कल्प के देवों की ऊँचाई	655	पूर्वाषाढा नक्षत्र के चार तारे
640-641	क. चार-चार प्रकार के उदक गर्भ	656	उत्तराषाढा नक्षत्र के चार तारे
	ख. माघ, फाल्गुन, चैत्र और वैशाख मास के उदक गर्भ की संग्रहणी गाथाएं	657-658	चार स्थानों से पापकर्म के पुद्गलों का त्रैकालिक चयन, उपचयन, बंध, उदीरणा, वेदना और निर्जरा
642	मनुष्यनी स्त्री के गर्भ के चार प्रकार	659	चार प्रदेश वाले अनंत स्कंध
643	उत्पाद पूर्व की चार चूला वस्तु	660	चार प्रदेशावगाढ पुद्गल अनंत
644	चार प्रकार के काव्य	661	चार समय की स्थिति वाले पुद्गल अनंत
645-646	नैरयिकों और वायुकायिकों में चार समुद्धात	662	चार गुण वाले-यावत्-चार गुण रूखे पुद्गल अनंत

पंचम स्थान		पंच स्थावर कार्याधिपति
प्रथम उद्देशक		
1-2	पौंच महाव्रत, पौंच अणुव्रत	20
3-5	पांच वर्ण, पांच रस, पांच कामगुण	21
6	शब्दादि 5 में जीवों की आसक्ति	22
7	शब्दादि 5 में जीवों का राग	23-24
8	शब्दादि 5 में जीवों की मूर्च्छा	वाले
9	शब्दादि 5 में जीवों की गृद्धि	शरीर पांच प्रकार के
10	शब्दादि 5 में जीवों की लीनता	पांचों शरीर पाँच वर्ण व पाँच रस वाले
11	शब्दादि से जीवों का विनाश	31
12	जीवों के अहित-यावत्-संसार वृद्धि के लिए शब्दादि पांच का असम्यग्ज्ञान	सभी स्थूल शरीर पाँच वर्ण, दो गंध, पाँच रस व आठ स्पर्श युक्त
13	जीवों के हित-यावत्-सिद्धि के लिए शब्दादि 5 का सम्यग्ज्ञान	32
14	शब्दादि 5 के अज्ञान से दुर्गति	प्रथम और अंतिम तीर्थंकरों के युग में पाँच स्थान दुर्गम
15	शब्दादि 5 के ज्ञान से सुगति	33
16	प्राणातिपात आदि से दुर्गति	मध्यम बावीस तीर्थंकरों के युग में पाँच स्थान सुगम
17	प्राणातिपात विरमण आदि से सुगति	34-35
18	पाँच प्रतिमाएं	भ. महावीर द्वारा निर्ग्रंथों को पाँच स्थान की आज्ञा
19	पाँच स्थावर काय	36-38
		भ. महावीर द्वारा निर्ग्रंथों को पाँच-पाँच प्रकार की भिक्षा की आज्ञा
		39
		भ. महावीर द्वारा निर्ग्रंथों को पाँच-पाँच प्रकार की तपश्चर्या की आज्ञा
		40-41
		भ. महावीर द्वारा निर्ग्रंथों को पाँच-पाँच प्रकार के आहार की आज्ञा
		42-43
		भ. महावीर द्वारा निर्ग्रंथों को पाँच-पाँच प्रकार के आसनो के लिए आज्ञा

44-45	श्रमण निर्ग्रथ की महा निर्जरा और महापर्यवसान के पाँच-पाँच कारण	73	छद्मस्थावस्था में परीषह सहने के पाँच कारण
46	सांभोगिक साधर्मिक को विसंभोगी करने के पाँच कारण	74	सर्वज्ञावस्था में परीषह सहने के पाँच कारण
47	साधर्मिक निर्ग्रथ को पारार्चित प्रायश्चित्त देने के पाँच कारण	75-78	पाँच-पाँच प्रकार के हेतु
48	आचार्य-उपाध्याय के गण में पाँच विग्रह स्थान	79-82	पाँच-पाँच प्रकार के अहेतु
49	आचार्य-उपाध्याय के गण में पाँच अविग्रह स्थान	83	केवली के पाँच अनुत्तर (सर्वोत्तम) स्थान
50	पाँच प्रकार की निषद्या (बैठना)	84	भ. पद्मप्रभ के पाँच कल्याणक
51	पाँच आर्जव स्थान	85	भ. सुविधिनाथ (पुष्पदंत) के पाँच कल्याणक
52	पाँच प्रकार के ज्योतिषी देव	86	भ. शीतलनाथ के पाँच कल्याणक
53	पाँच प्रकार के देव	87	भ. विमलनाथ के पाँच कल्याणक
54	पाँच प्रकार की परिचाराणा	88	भ. अनंतनाथ के पाँच कल्याणक
55	चमरेन्द्र की पाँच अग्रमहिषियाँ	89	भ. धर्मनाथ के पाँच कल्याणक
56	बली वैरोचनेन्द्र की पाँच अग्रमहिषियाँ	90	भ. शांतिनाथ के पाँच कल्याणक
57-63	भवनेन्द्रों की पाँच-पाँच सेनाएँ, पाँच-पाँच सेनाधिपति	91	भ. कुंथुनाथ के पाँच कल्याणक
64-67	वैमानिकेन्द्रों की पाँच-पाँच सेनाएँ, पाँच-पाँच सेनाधिपति	92	भ. अरुनाथ के पाँच कल्याणक
68	शकेन्द्र की आभ्यन्तर परिषद् के देवों की स्थिति	93	भ. मुनिसुव्रत के पाँच कल्याणक
69	ईशानेन्द्र की आभ्यन्तर परिषद् की देवियों की स्थिति	94	भ. नमिनाथ के पाँच कल्याणक
70	पाँच प्रकार का प्रतिघात (अवरोध)	95	भ. नेमीनाथ के पाँच कल्याणक
71	पाँच प्रकार की आजीविका के आजीवक पुरुष	96	भ. पार्श्वनाथ के पाँच कल्याणक
72	पाँच प्रकार के राज्य-चिह्न	97	भ. महावीर के पाँच कल्याणक

द्वितीय उद्देशक

98	क. एक मास में गंगा आदि पाँच महानदियों को दो या तीन बार से अधिक बार पार करने का निषेध ख. पाँच कारणों से इन महानदियों को पार करने का विधान	111 112 113-114	पाँच प्रकार के दण्ड आरंभिकी आदि पाँच क्रियाएँ सोलह दण्डों में (केवल मिथ्यादृष्टियों में) आरंभिया आदि पाँच क्रियाएँ
99	प्रथम प्रावृत् अर्थात् आषाढ़ में वर्षा होने पर विहार करने का निषेध, अपवाद में विधान	115	कायिकी आदि पाँच क्रियाएँ
100	वर्षावास में विहार का निषेध, अपवाद में विहार का विधान	116	चौबीस दण्डों में कायिकी आदि पाँच क्रियाएँ
101	पाँच अनुद्घातिक (गुरु) प्रायश्चित्त के योग्य	117-118	जीव चौबीस दण्डों में आरंभिकी आदि पाँच क्रियाएँ
102	श्रमण निर्ग्रंथ के अंतःपुर में प्रवेश के पाँच कारण	119	दिट्ठिया आदि पाँच क्रियाएँ
103	पुरुष के साथ सहवास न करने पर भी गर्भ धारण करने के पाँच कारण	120	चौबीस दण्डों में दिट्ठिया आदि पाँच क्रियाएँ
		121	क. गेसस्थिया आदि पाँच क्रियाएँ
		122	ख. चौबीस दण्डों में गेसस्थिया आदि पाँच क्रियाएँ
104-106	पुरुष के साथ सहवास होने पर भी स्त्री के गर्भ धारण न करने के पाँच-पाँच कारण		क. प्रेयः प्रत्यता आदि पाँच क्रियाएँ
107	निर्ग्रंथ-निर्ग्रंथिनियों के एक स्थान में ठहरने, शयन करने और स्वाध्याय करने के पाँच कारण	123	ख. इक्कीसवें दण्डक मनुष्य में पेज्जवत्तिया आदि पाँच क्रियाएँ
108	अचेलक निर्ग्रंथ और सचेलक निर्ग्रंथिनियों के साथ ठहरने के पाँच कारण	124	पाँच प्रकार की परिज्ञा
109	आश्रव के पाँच द्वार	125	पाँच प्रकार का व्यवहार
110	संवर के पाँच द्वार	126	सुप्त संयत मनुष्य के पाँच जागृत स्थान
		127	जागृत संयत मनुष्य के पाँच सुप्त स्थान
		128	सुप्त या जागृत असंयत मनुष्य के पाँच जागृत स्थान
			कर्म बंध के पाँच कारण

129	कर्म क्षय के पाँच कारण	147	पाँच प्रकार का आचार
130	पंच मासिकी भिक्षु पडिमा की विधि	148	पाँच प्रकार का आचार प्रकल्प (प्रायश्चित्त)
131	पाँच प्रकार की सदोष एषणा	149	पाँच प्रकार की आरोपणा (एक प्रायश्चित्त के साथ दूसरा प्रायश्चित्त)
132	पाँच प्रकार की निर्दोष एषणा		
133	बोधि की दुर्लभता के पाँच कारण	150	जम्बूद्वीप के मेरुपर्वत से पूर्व में और सीता महानदी के उत्तर में पाँच वक्षस्कार पर्वत
134	बोधि की सुलभता के पाँच कारण		
135	पाँच इन्द्रिय जय	151	जम्बूद्वीप के मेरुपर्वत से पूर्व में सीता महानदी के दक्षिण में पाँच वक्षस्कार पर्वत
136	पाँच इन्द्रिय पराजय		
137	संवर के पाँच प्रकार	152	जम्बूद्वीप के मेरुपर्वत से पश्चिम में और सीतोदा महानदी के दक्षिण में पाँच वक्षस्कार पर्वत
138	असंवर के पाँच प्रकार		
139	पाँच प्रकार का संयम	153	जम्बूद्वीप के मेरुपर्वत से पश्चिम में सीतोदा महानदी के उत्तर में पाँच वक्षस्कार पर्वत
140	एकेन्द्रिय जीवों की रक्षा से पाँच प्रकार का संयम		
141	एकेन्द्रिय जीवों की हिंसा से पाँच प्रकार का असंयम	154	जम्बूद्वीप के मेरुपर्वत से दक्षिण में देवकुरु में पाँच महा द्रह
142	पंचेन्द्रिय जीवों की रक्षा से पाँच प्रकार का संयम	155	जम्बूद्वीप के मेरुपर्वत से उत्तर में उत्तरकुरु में पाँच महा द्रह
143	पंचेन्द्रिय जीवों की हिंसा से पाँच प्रकार का असंयम	156	सर्व वक्षस्कार पर्वतों की ऊँचाई और गहराई
144	सर्व प्राण-भूत-जीव और सत्त्वों की रक्षा करने से पाँच प्रकार का संयम	157	धातकीखण्ड व पुष्करवर द्वीपार्ध के पूर्वार्ध व पश्चिमार्ध में भी पूर्ववत् पाँच-पाँच वृक्षस्कार पर्वत व महा द्रह
145	सर्व प्राण-भूत-जीव और सत्त्वों की हिंसा करने से पाँच प्रकार का असंयम	158	समय क्षेत्र में पाँच भरत-यावत्- पाँच मेरु चूलिकाएँ
		159	भ. ऋषभदेव की ऊँचाई,
146	पाँच प्रकार के तृण वनस्पतिकायिक जीव	160	भरत चक्रवती की ऊँचाई,

161	बाहुबली की ऊँचाई,	185	पाँच प्रकार के पुलाक
162	ब्राह्मी की ऊँचाई,	186	पाँच प्रकार के बकुश
163	सुन्दरी की ऊँचाई,	187	पाँच प्रकार के कुशील
164	सोता हुआ मनुष्य पाँच कारणों से जाग जाता है	188	पाँच प्रकार के निर्ग्रथ
165	निर्ग्रथ द्वारा निर्ग्रथी को सहारा देने के पाँच कारण	189	पाँच प्रकार के स्नातक
166	आचार्य और उपाध्याय के गण में पाँच अतिशय	190	निर्ग्रथ-निर्ग्रथिनियों के ग्रहण करने योग्य पाँच प्रकार के वस्त्र
167	आचार्य और उपाध्याय के गण से पृथक् होने के पाँच कारण	191	निर्ग्रथ-निर्ग्रथिनियों के ग्रहण करने योग्य पाँच प्रकार के रजोहरण
168	पाँच प्रकार के ऋद्धिमान् मनुष्य	192	साधु के पाँच निश्रा (आश्रय) स्थान
169-174	तृतीय उद्देशक पाँच अस्तिकाय व उनके भेदों का विस्तृत वर्णन	193	पाँच प्रकार की निधि
175	पाँच गतियाँ	194	पाँच प्रकार के शौच
176	पाँच इन्द्रियों के विषय	195	क. असर्वज्ञ (छद्मस्थ) पाँच स्थानों अर्थात् पंचास्तिकाय को पूर्ण रूप से नहीं जानता व नहीं देखता
177	पाँच-पाँच प्रकार के मुंड		ख. सर्वज्ञ (छद्मस्थ) पाँच स्थानों को पूर्ण रूप से जानते हैं व देखते हैं
178-180	अधोलोक, ऊर्ध्वलोक और तिर्यक्लोक में पाँच-पाँच प्रकार के बादर (स्थूल) जीव		
181	पाँच प्रकार का बादर तेजस्काय	196	अधोलोक में पाँच महानरकावास
182	पाँच प्रकार का बादर वायुकाय	197	ऊर्ध्वलोक में पाँच महा-विमान
183	पाँच प्रकार का अचित्त वायुकाय	198	पाँच प्रकार के पुरुष
184	पाँच प्रकार के निर्ग्रथ	199	पाँच प्रकार के मत्स्य व इसी प्रकार पाँच प्रकार के भिक्षु

200	पाँच प्रकार के याचक	गति
201	अचेलक की प्रशंसा के पाँच कारण	215 पाँच प्रकार के छेदन (विभाग)
202	पाँच उत्कट (प्रबल शक्ति संपन्न) पुरुष	216 पाँच प्रकार के आनन्तर्य (विरह-अभाव)
203	पाँच समितियाँ	217 पाँच-पाँच प्रकार के अनन्त
204	पाँच प्रकार के संसारी जीव	218 पाँच प्रकार का ज्ञान
205	एकेन्द्रिय की पाँच गति, पाँच आगति	219 पाँच प्रकार का ज्ञानावरणीय कर्म
206	द्वीन्द्रिय की पाँच गति, पाँच आगति	220 पाँच प्रकार का स्वाध्याय
207	क. त्रीन्द्रिय की पाँच गति, पाँच आगति ख. चतुरिन्द्रिय की पाँच गति, पाँच आगति ग. पंचेन्द्रिय की पाँच गति, पाँच आगति	221 पाँच प्रकार का प्रत्याख्यान 222 पाँच प्रकार का प्रतिक्रमण
208	पाँच-पाँच प्रकार के सर्व जीव	223 सूत्र वाचना देने के पाँच कारण
209	मटर, मसूर, तिल, मूंग, उड़द, सेम, कुलथी, चवला, तूवर व काला चना आदि धान्यों की उत्पादक-शक्ति (उत्कृष्ट स्थिति)	224 सूत्र सीखने के पाँच कारण 225 सौधर्म और ईशान कल्प के विमानों के पाँच वर्ण 226 सौधर्म और ईशान कल्प के विमानों की ऊँचाई
210	पाँच प्रकार के संवत्सर	227 ब्रह्मलोक और लांतक कल्प के देवों के भवधारणीय शरीर की उत्कृष्ट ऊँचाई
211	पाँच प्रकार के युग संवत्सर	228-229 चौबीस दण्डकों में पाँच वर्ण और पाँच रस के पुद्गलों का (त्रैकालिक) बंधन
212	पाँच प्रकार के प्रमाण संवत्सर	230 जम्बूद्वीप के मेरुपर्वत से दक्षिण में गंगा में मिलने वाली पाँच नदियाँ
213	क. पाँच प्रकार के लक्षण संवत्सर ख. भेदों का विस्तृत विवेचन संग्रहणी गाथा अनुसार	
214	शरीर से जीव निकलने के पाँच मार्ग व तदनुसार उनकी	231 जम्बूद्वीप के मेरुपर्वत से दक्षिण में सिन्धु में मिलने वाली

पाँच नदियाँ	पाँच	ख. सर्वज्ञ धर्मास्तिकाय आदि छह स्थान को पूर्ण रूप से जानता है व देखता है
232 जम्बूद्वीप के मेरुपर्वत से उत्तर में रक्ता में मिलने वाली पाँच नदियाँ	5	अशक्य छह कार्य
233 जम्बूद्वीप के मेरुपर्वत से उत्तर में रक्तवती में मिलने वाली पाँच नदियाँ	6	छह जीव-निकाय
234 कुमारवस्था में दीक्षित होने वाले पाँच तीर्थंकर	7	छह प्रकार के ताराग्रह
235 चमरचंचा राजधानी में पाँच सभाएं	8	छह प्रकार के संसारी जीव
236 सभी इन्द्र स्थानों में पाँच-पाँच सभा	9-10	क. पृथ्वीकायिकों की छह गति, छह आगति
237 पाँच-पाँच तारा वाले पाँच नक्षत्र		ख. अप्कायिकों की-यावत्-त्रसकायिकों की छह गति, छह आगति
238 पाँच स्थानों से पापकर्मों के पुद्गलों का चयन, उपचयन, बंध, उदीरणा, वेदना व निर्जरा	11	छह-छह प्रकार के सर्व जीव
239 पंच प्रदेशिक स्कन्ध अनन्त	12	छह प्रकार के तृण वनस्पतिकाय
240 पंच प्रदेशावगाढ पुद्गल अनन्त-यावत्-पाँच गुण रक्ष पुद्गल अनन्त	13	छह स्थान दुर्लभ
	14	इन्द्रियों के छह विषय
	15	छह प्रकार का संवर
	16	छह प्रकार का असंवर
1 गण को धारण करने योग्य अणुगणों के छह गुण	17	छह प्रकार का सुख
2 निर्ग्रथ द्वारा निर्ग्रथी को सहारा देने के छह कारण	18	छह प्रकार का दुःख
3 मृत साधर्मिक के साथ निर्ग्रथ-निर्ग्रथियों के छह व्यवहार	19	छह प्रकार का प्रार्थश्चित्त
4 क. असर्वज्ञ (छद्मस्थ) पुरुष धर्मास्तिकाय आदि छह स्थानों को पूर्ण रूप से नहीं जानता व नहीं देखता	20	छह-छह प्रकार के मनुष्य
	21	छह प्रकार के ऋद्धि प्राप्त मनुष्य

षष्ठ स्थान

22	छह प्रकार के ऋद्धि अप्राप्त मनुष्य	37	छह दिशाएं
23	अवसर्पिणी के छह आरा	38	छह दिशाओं में जीवों की गति
24	उत्सर्पिणी के छह आरा	39	छह दिशाओं में जीवों की आगति, व्युत्क्रांति, आहार, वृद्धि, हानि, विकुर्वणा-यावत्-अजीवाभिगम
25	अतीत उत्सर्पिणी के सुषमसुषमा आरा में मनुष्यों की ऊँचाई और आयु	40	पंचेन्द्रिय तिर्यचों और मनुष्यों की गति-आगति आदि छहों दिशाओं में
26	वर्तमान अवसर्पिणी के सुषमसुषमा आरा में मनुष्यों की ऊँचाई और आयु	41	निर्ग्रथ के आहार करने के 6 कारण
27	आगामी उत्सर्पिणी के सुषमसुषमा आरा में मनुष्यों की ऊँचाई और आयु	42	निर्ग्रथ के आहार न करने के 6 कारण
28	जम्बूद्वीप के देवकुरु और उत्तरकुरु के मनुष्यों की ऊँचाई और आयु	43	उन्माद होने के 6 कारण
29	धातकी खण्ड द्वीप के पूर्वार्ध और पश्चिमार्ध के मनुष्यों की ऊँचाई और आयु	44	प्रमाद के 6 कारण
30	छह प्रकार के संहनन	45	क. छह प्रकार की प्रमाद प्रतिलेखना
31	छह प्रकार के संस्थान	46	ख. धर्मोपकरणों को देखने में आलस्य करना
32	अनात्मवान् आत्मा के 6 अहितकारी स्थान	47	क. छह प्रकार की अप्रमाद प्रतिलेखना
33	आत्मवान् आत्मा के 6 हितकारी स्थान	48	ख. धर्मोपकरणों को देखने में आलस्य न करना
34	छह प्रकार के जाति आर्य	49	छह लेश्याएं
35	छह प्रकार के कुल आर्य	50	पंचेन्द्रिय तिर्यचयोनिक में छह लेश्याएं
36	छह प्रकार की लोकस्थिति	51	मनुष्य और देवों में छह लेश्याएं
		52	शक्रेन्द्र के सोम लोकपाल की छह अग्रमहिषियाँ
			शक्रेन्द्र के यम लोकपाल की छह अग्रमहिषियाँ
			ईशानेन्द्र के मध्य परिषद् के देवों की स्थिति

53	छह दिक्कुमारियाँ	73	चन्द्र के साथ तीस मुहूर्त रहने वाले छह नक्षत्र
54	छह विद्युत्कुमारियाँ	74	चन्द्र के साथ पंद्रह मुहूर्त रहने वाले छह नक्षत्र
55	धरण नागेन्द्र की छह अग्रमहिषियाँ	75	चन्द्र के साथ पैतालीस मुहूर्त रहने वाले छह नक्षत्र
56	भूतानन्द नागेन्द्र की छह अग्रमहिषियाँ	76	अभिचन्द्र कुलकर की ऊँचाई
57-58	शेष (दक्षिण-उत्तर) भवनेन्द्रों की 6-6 अग्रमहिषियाँ	77	भरत चक्रवर्ती का राज्य-काल समय
59	नागकुमारेन्द्र धरण के छह हजार सामानिक देव	78	पुरुषादानीय भ. पार्श्वनाथ के बाद के लब्धि सम्पन्न मुनि संख्या
60	नागकुमारेन्द्र भूतानन्द-यावत्-महाघोष के भी छह-छह हजार सामानिक देव	79	भ. वासुपूज्य के साथ दीक्षित होने वाले मनुष्यों की संख्या
61	छह प्रकार की अवग्रह मति	80	भ. चन्द्रप्रभ का छद्मस्थ काल
62	छह प्रकार की ईहा मति	81	त्रीन्द्रिय जीवों की रक्षा करने से छह प्रकार का संयम
63	छह प्रकार की अवाय मति	82	त्रीन्द्रिय जीवों की हिंसा करने से छह प्रकार का असंयम
64	छह प्रकार की धारणा	83	जम्बूद्वीप में छह अकर्मभूमि
65	छह प्रकार का बाह्य तप	84	जम्बूद्वीप में छह वर्ष (क्षेत्र)
66	छह प्रकार का आभ्यन्तर तप	85	जम्बूद्वीप में छह वर्षधर पर्वत
67	छह प्रकार का विवाद	86	जम्बूद्वीप में मेरुपर्वत के दक्षिण में छह कूट
68	छह प्रकार के क्षुद्र प्राणी	87	जम्बूद्वीप में मेरुपर्वत के उत्तर में छह कूट
69	छह प्रकार की भिक्षाचर्या	88	क. जम्बूद्वीप में छह महा द्रह
70	रत्नप्रभा के छह नरकावासों के नाम		ख. जम्बूद्वीप में छह महा द्रह की अधिष्ठात्री देवियों की स्थिति
71	पंकप्रभा के छह नरकावासों के नाम		
72	ब्रह्मलोक में छह विमान प्रस्तुत	89	जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से दक्षिण में छह महा नदियाँ

90	जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से उत्तर में छह महा नदियाँ	105	भ. महावीर के केवल ज्ञान के समय का तप
91	जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से पूर्व में सीता नदी के दोनों किनारों पर 6 अंतर नदियाँ	106	भ. महावीर के निर्वाण के समय का तप
		107	सनत्कुमार और माहेन्द्र कल्प के विमानों की ऊँचाई
		108	सनत्कुमार और माहेन्द्र कल्प के देवों की ऊँचाई
92	जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से पश्चिम में सीतोदा नदी के दोनों किनारों पर 6 अंतर नदियाँ	109	छह प्रकार का भोजन का परिणाम
		110	छह प्रकार का विष का परिणाम
93	धातकी खण्ड द्वीप के पूर्वार्ध व पश्चिमार्ध में छह-छह अकर्मभूमियाँ	111	छह प्रकार के प्रश्न
		112	चमरचंचा राजधानी का उपपात
94	धातकी खण्ड द्वीप व पुष्करार्ध द्वीप में वर्ष, वर्षधर -यावत्-अन्तर्नदियों का वर्णन	113	सभी इन्द्र स्थानों का उत्कृष्ट विरह काल
		114	सातवीं नरक का उत्कृष्ट विरह काल
95	छह ऋतुएं	115	सिद्ध गति का उत्कृष्ट विरह काल
96	छह क्षय तिथियाँ	116	छह प्रकार का आयु-बंध
97	छह अधिक तिथियाँ	117-118	चौबीस दण्डकों में छह प्रकार का आयु-बंध
98	आभिनिबोधिक ज्ञान के छह अर्थावग्रह	119-123	सोलह दण्डकों में छह माह पूर्व आगामी भव का आयु-बंध
99	छह प्रकार का अवधिज्ञान		
100	निर्ग्रथ-निर्ग्रथियों के छह अकल्प्य वचन	124	छह प्रकार के भाव
101	कल्प-साधु मर्यादा (प्रायश्चित्त) के छह प्रकार	125	छह प्रकार का प्रतिक्रमण
102	कल्प (साधु आचार) के छह घातक	126	कृतिका नक्षत्र के छह तारे
103	छह प्रकार की कल्प स्थिति	127	आश्लेषा नक्षत्र के छह तारे
104	भ. महावीर की दीक्षा के समय का तप	128	छह स्थानों में पाप कर्मों के पुद्गलों का चयन-यावत्-निर्जरा

129	छह प्रादेशिक स्कंध	15	अधोलोक में सात घनोदधि
130	छह प्रदेशावगाढ पुद्गल	16	अधोलोक में सात घनवात
131	छह समय की स्थिति वाले पुद्गल	17	अधोलोक में सात तनुवात
132	छह गुण वाले पुद्गल-यावत्-छह गुण रूखे पुद्गल	18	अधोलोक में सात अवकाशान्तर
	सप्तम स्थान	19	इन आकाशान्तरों में सात तनुवात
1	गण से निकलने के सात कारण	20	सात तनुवातों में सात घनवात
2	सात प्रकार के विभंग ज्ञान व भंगों का विस्तृत विवेचन	21	सात घनवातों में सात घनोदधि
3	सात प्रकार की योनि (जीवोत्पत्ति के स्थान)	22	सात घनोदधि में सात पृथ्वियां
4	अंडज की सात गति व सात आगति	23	सात पृथ्वियों के नाम
5	पोतज-यावत्-उद्भिज्ज की सात गति व सात आगति	24	सात पृथ्वियों के गोत्र
6	आचार्य और उपाध्याय के गण में सात संग्रह स्थान	25	सात स्थूल (बादर) वायुकाय
7	आचार्य और उपाध्याय के गण में सात असंग्रह स्थान	26	सात संस्थान (आकार)
8	सात पिण्डैषणाएं	27	सात भयस्थान
9	सात पाणैषणाएं	28	सात प्रकार से असर्वज्ञ (छद्मस्थ) की पहचान
10	सात अवग्रह प्रतिमाएं	29	सात प्रकार से सर्वज्ञ की पहचान
11	सात सप्तैकक(आचाराङ्ग की दूसरी चूलिका के सात अध्ययन)	30	मूल गोत्र के सात भेद
		31	काश्यप गोत्र के सात भेद
12	सात महा अध्ययन (सूत्रकृताङ्ग श्रुतस्कंध दो में)	32	गौतम गोत्र के सात भेद
13	सप्त सप्तमिका भिक्षु प्रतिमा का परिमाण	33	वत्स गोत्र के सात भेद
14	अधोलोक में सात पृथ्वियाँ (नरक)	34	कौत्स गोत्र के सात भेद

35	कौशिक गोत्र के सात भेद	ज.	गायन करने वाली स्त्रियों के स्वर से उनके वर्णों का ज्ञान
36	माण्डव गोत्र के सात भेद	झ.	सात प्रकार के स्वर सीभर
37	वाशिष्ठ गोत्र के सात भेद	ञ.	सातों तानों के उनपचास भेद
38	सात मूल नय		सात प्रकार का कायक्लेश
39	सात स्वर	49	
40	सात स्वर स्थान	50	जम्बूद्वीप में सात क्षेत्र
41	सात स्वर जीव निश्चित	51	जम्बूद्वीप में सात वर्षधर पर्वत
42	सात स्वर अजीव निश्चित	52	जम्बूद्वीप के लवण समुद्र में मिलने वाली पूर्वाभिमुखी सात नदियाँ
43	सात स्वर लक्षण		
44	सात स्वरों के तीन ग्राम	53	लवण समुद्र में मिलने वाली पश्चिमाभिमुखी सात नदियाँ
45	षड्ज ग्राम की सात मूर्च्छना	54	धातकी खण्ड द्वीप के पूर्वार्ध के सात क्षेत्र
46	मध्यम ग्राम की सात मूर्च्छना	55	धातकी खण्ड द्वीप के पूर्वार्ध के सात वर्षधर पर्वत
47	गान्धार ग्राम की सात मूर्च्छना	56	कालोद समुद्र में मिलने वाली पूर्वाभिमुखी सात नदियाँ
46	क. सात स्वरों के उत्पत्ति स्थान	57	लवण समुद्र में मिलने वाली पश्चिमाभिमुखी सात नदियाँ
	ख. गेय की उत्पत्ति	58	क. धातकी खण्ड द्वीप के पश्चिमार्ध में सात क्षेत्र
	ग. गेय के तीन आकार		ख. धातकी खण्ड द्वीप के पश्चिमार्ध में सात वर्षधर पर्वत
	घ. गेय के छह दोष		ग. धातकी खण्ड द्वीप की लवण समुद्र में मिलने वाली पूर्वाभिमुखी सात नदियाँ
	ङ. गेय के आठ गुण		घ. धातकी खण्ड द्वीप की कालोद समुद्र में मिलने वाली पश्चिमाभिमुखी सात नदियाँ
	च. गेय के तीन वृत्त		
	छ. गेय की दो भणिति (भाषा)		

59	क. पुष्करवर द्वीपार्ध के पूर्वार्ध में सात क्षेत्र	71	सात प्रकार के संसारी जीव
	ख. पुष्करवर द्वीपार्ध के पूर्वार्ध में सात वर्षधर पर्वत	72	आयु क्षय के सात कारण
	ग. पुष्करोदधि में मिलने वाली पूर्वाभिमुखी सात नदियाँ	73	सात-सात प्रकार के सर्व जीव
	घ. कालोद समुद्र में मिलने वाली पश्चिमाभिमुखी सात नदियाँ	74	ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती की आयु और गति
		75	भ. मल्लिनाथ सहित दीक्षित होने वाले सात व्यक्ति
60	पुष्करवर द्वीपार्ध के पश्चिमार्ध में सात क्षेत्र, सात वर्षधर पर्वत व सात महानदियां धातकीखण्ड द्वीप के पश्चिमार्ध के समान	76	सात प्रकार के दर्शन
		77	छद्मस्थ वीतराग के सात कर्म प्रकृतियों का वेदन
61	जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र की अतीत उत्सर्पिणी में सात कुलकर	78	क. असर्वज्ञ के जानने के अयोग्य सात पदार्थ
62	जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र की वर्तमान अवसर्पिणी में सात कुलकर	79	ख. सर्वज्ञ के जानने के योग्य सात पदार्थ
		80	भ. महावीर की ऊँचाई
63	सात कुलकरों की सात भार्याएं		सात विकथाएं
64	जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र की आगामी उत्सर्पिणी में सात कुलकर	81	आचार्य और उपाध्याय के गण के सात अतिशय
		82	सात प्रकार का संयम
65	विमलवाहन कुलकर के सात कल्पवृक्ष	83	सात प्रकार का असंयम
66	सात प्रकार की दण्ड नीति	84	सात प्रकार का आरम्भ
67	चक्रवर्ती के सात एकेन्द्रिय रत्न	85	सात प्रकार का अनारम्भ
68	चक्रवर्ती के सात पंचेन्द्रिय रत्न	86	सात प्रकार का सारम्भ
69	दुःषमा (बुरे) काल के सात लक्षण	87	सात प्रकार का असारम्भ
70	सुषमा (अच्छे) काल के सात लक्षण	88	सात प्रकार का समारम्भ
		89	सात प्रकार का असमारम्भ

90	कोठे में रहे हुए धान्यों की स्थिति	107	वाणव्यंतर देवों की ऊँचाई
91	बादर अप्काय की स्थिति	108	ज्योतिषी देवों की ऊँचाई
92	बालुका प्रभा के नैरयिकों की उत्कृष्ट स्थिति	109	क. सोधर्म कल्प के देवों की ऊँचाई
93	पंक प्रभा के नैरयिकों की जघन्य स्थिति		ख. ईशान कल्प के देवों की ऊँचाई
94	शक्रेन्द्र के वरुण लोकपाल की सात अग्रमहिषियाँ	110	नन्दीश्वर द्वीप में सात द्वीप
95	ईशानेन्द्र के सोम लोकपाल की सात अग्रमहिषियाँ	111	नन्दीश्वर द्वीप में सात समुद्र
96	ईशानेन्द्र के यम लोकपाल की सात अग्रमहिषियाँ	112	सात प्रकार की श्रेणियाँ (पंक्तियाँ)
97	ईशानेन्द्र की आभ्यन्तर परिषद् के देवों की स्थिति	113	असुरेन्द्र चमर की सात सेना और सात सेनाधिपति
98	शकेन्द्र की अग्रमहिषियों की स्थिति	114	वैरोचनेन्द्र बली की सात सेना और सात सेनाधिपति
99	सौधर्म कल्प में परिगृहीता देवियों की उत्कृष्ट स्थिति	115	नागकुमारेन्द्र धरण की सात सेना और सात सेनाधिपति
100	क. सारस्वत देव और उनका सात सौ देवों का परिवार	116	नागकुमारेन्द्र भूतानन्द की सात सेना और सात सेनाधिपति
101	ख. आदित्य देव और उनका सात सौ देवों का परिवार	117	धरण की तरह वेणुदेव आदि की भी सात सेना और सात सेनाधिपति
	क. गर्दतोय देव और उनका सात सौ देवों का परिवार		भूतानन्द की तरह वेणुदालि की भी सात सेना और सात सेनाधिपति
102	ख. तुषित देव और उनका सात सौ देवों का परिवार	118	भूतानन्द की तरह वेणुदालि की भी सात सेना और सात सेनाधिपति
	सनत्कुमार कल्प में देवों की उत्कृष्ट स्थिति		शक्र देवेन्द्र की सात सेना और सात सेनाधिपति
103	माहेन्द्र कल्प में देवों की उत्कृष्ट स्थिति	119	ईशान देवेन्द्र की सात सेना और सात सेनाधिपति
104	ब्रह्मलोक कल्प में देवों की जघन्य स्थिति	120	शक्र की तरह सनत्कुमार आदि की भी सात सेना और सात सेनाधिपति
105	क. ब्रह्मलोक कल्प में विमानों की ऊँचाई	121	शक्र की तरह सनत्कुमार आदि की भी सात सेना और सात सेनाधिपति
	ख. लान्तक कल्प में विमानों की ऊँचाई		ईशान की तरह माहेन्द्र आदि की भी सात सेना और सात सेनाधिपति
106	भवनवासी देवों की ऊँचाई	122	

सेनाधिपति			
123	चमर की पदातिसेना के अधिपति द्रुम की सात कक्षाएं	136	सात प्रकार का अप्रशस्त काय विनय
124	द्रुम की सातों कक्षाओं में देवों की संख्या	137	सात प्रकार का लोकोपचार विनय
125	बली के पदातिसेना के अधिपति महाद्रुम की सातों कक्षाओं में देवों की संख्या	138	समुद्रघात के सात प्रकार
126	धरण के पदातिसेना के अधिपति महाद्रुम की सातों कक्षाओं में देवों की संख्या	139	मनुष्यों में सात समुद्रघात
127	धरण के समान भूतानंद से महाघोष पर्यंत के पदातिसेनापतियों की कक्षाओं की देव संख्या	140	भ. महावीर के सात प्रवचन निन्हव
128	क. शक्र के पदातिसेना के अधिपति हरिणगमेषी की सात कक्षाएं	141	सात प्रवचन निहवों के सात धर्माचार्य
	ख. चमर की तरह अच्युतकल्प तक पदातिसेना के अधिपतियों की सात-सात कक्षाएं	142	क. निहवों की उत्पत्ति के सात नगर
129	वचन के सात विकल्प	143	ख. निहवों का विस्तृत वर्णन
130	सात प्रकार का विनय	144	साता वेदनीय कर्म के सात अनुभाव
131	सात प्रकार का प्रशस्त मन विनय	145	असाता वेदनीय कर्म के सात अनुभाव
132	सात प्रकार का अप्रशस्त मन विनय	146	मघा नक्षत्र के सात तारे
133	सात प्रकार का प्रशस्त वचन विनय	147	पूर्व दिशा द्वार वाले सात नक्षत्र
134	सात प्रकार का अप्रशस्त वचन विनय	148	दक्षिण दिशा द्वार वाले सात नक्षत्र
135	सात प्रकार का प्रशस्त काय विनय	149	पश्चिम दिशा द्वार वाले सात नक्षत्र
		150	उत्तर दिशा द्वार वाले सात नक्षत्र
		151	जम्बूद्वीप में सोमनस वक्षस्कार पर्वत पर सात कूट
		152	जम्बूद्वीप में गंधमादन वक्षस्कार पर्वत पर सात कूट
		153	द्वीन्द्रिय जाति की कुल कोटी
			सात स्थानों में पाप कर्मों के पुद्गलों का त्रैकालिक चयन
			-यावत्-निर्जरा

154	सात प्रदेशिक स्कंध	13	आठ प्रकार का स्पर्श
155	क. सात प्रदेशावाह पुद्गल	14	आठ प्रकार की लोक स्थिति
	ख. सात समय की स्थिति वाले पुद्गल	15	आठ प्रकार की गणि-संपदा
	ग. सात गुण वाले पुद्गल-यावत्-सात गुण रूखे पुद्गल	16	चक्रवर्ती की महानिधियों की ऊँचाई
	अष्टम स्थान	17	आठ समितियाँ
1	एकाकी विहार प्रतिमा धारण करने योग्य अणुगार के आठ गुण	18	आलोचना (प्रायश्चित्त) सुनने योग्य अणुगार के आठ गुण
2	आठ प्रकार की योनियाँ	19	आत्म दोषों की आलोचना करने वाले अणुगार के आठ गुण
3	अंडजों की आठ गतियाँ व आठ आगतियाँ	20	आठ प्रकार का प्रायश्चित्त
4	क. पोटज की आठ गतियाँ व आठ आगतियाँ	21	आठ मद स्थान
	ख. जरायुज की आठ गतियाँ व आठ आगतियाँ	22	आठ अक्रियावादी
5-8	चौबीस दण्डकों में आठ कर्म प्रकृतियों का त्रैकालिक चयन-यावत्-निर्जरा	23	आठ प्रकार का शुभ-अशुभ सूचक महानिमित्त
9	मायावी के आलोचना न करने के आठ कारण	24	आठ प्रकार की वचन विभक्ति
10	क. मायावी के आलोचना करने के आठ कारण	25	क. असर्वज्ञ आठ स्थानों को पूर्ण रूप से जानता नहीं व देखता नहीं
	ख. आलोचना करने वाला आराधक		ख. सर्वज्ञ आठ स्थानों को पूर्ण रूप से जानता है व देखता है
	ग. आलोचना न करने वाला विराधक		आठ प्रकार का आयुर्वेद
	घ. आराधक और विराधक की गति में अंतर	26	शक्रेन्द्र की आठ अग्रमहिषियाँ
11	आठ प्रकार का संवर	27	ईशानेन्द्र की आठ अग्रमहिषियाँ
12	आठ प्रकार का असंवर	28	

29	शक्रेन्द्र के सोम लोकपाल की आठ अग्रमहिषियाँ	48	धर्मास्तिकाय के आठ (रूचक) मध्य-प्रदेश
30	ईशानेन्द्र के वैश्रमण लोकपाल की आठ अग्रमहिषियाँ	49	अधर्मास्तिकाय के आठ मध्य-प्रदेश
31	आठ महाग्रह का कथन	50	आकाशास्तिकाय के आठ मध्य-प्रदेश
32	तृण वनस्पतिकाय के आठ प्रकार	51	जीवास्तिकाय के आठ मध्य-प्रदेश
33	चतुर्शिन्द्रिय जीवों की रक्षा से आठ प्रकार का संयम	52	महापद्म तीर्थकर आठ राजाओं को दीक्षित करेंगे
34	चतुर्शिन्द्रिय जीवों की हिंसा से आठ प्रकार का असंयम	53	मुक्त होने वाली श्री कृष्ण की आठ अग्रमहिषियाँ
35	आठ प्रकार के सूक्ष्म जीव	54	वीर्य प्रवाद पूर्व की आठ वस्तु और आठ चूलिका वस्तु
36	भरत चक्रवर्ती के पश्चात् आठ युग पुरुष (राजा) मुक्त हुए	55	आठ प्रकार की गति
37	पुरुषादानीय भ. पार्श्वनाथ के आठ गण व आठ गणधर	56	गंगा आदि 4 देवियों के द्वीपों का आयाम-विष्कम्भ
38	आठ प्रकार का दर्शन	57	उल्कामुख आदि 4 देवों के द्वीपों का आयाम-विष्कम्भ
39	आठ प्रकार का औपमिक काल	58	कालोद समुद्र का आयाम-विष्कम्भ
40	भ. अरिष्ट नेमि के पश्चात् आठ युग-प्रधान पुरुषों की मुक्ति	59	आभ्यन्तर पुष्करार्ध द्वीप का आयाम-विष्कम्भ
41	भ. महावीर के उपदेश से दीक्षित होने वाले आठ राजा	60	बाह्य पुष्करार्ध द्वीप का आयाम-विष्कम्भ
42	आठ प्रकार का आहार	61	प्रत्येक चक्रवर्ती के काकिणी रत्न का प्रमाण
43	सम चतुष्कोण संस्थान वाली आठ कृष्णराजियाँ	62	मगधदेश के योजन का प्रमाण
44	आठ कृष्णराजियों के आठ नाम	63	जम्बूद्वीप के सुदर्शन वृक्ष के मध्य भाग का विष्कम्भ और ऊँचाई
45	आठ कृष्णराजियों के अवकाश में आठ लोकात्मिक देवों के विमान	64	कूट शाल्मली वृक्ष की ऊँचाई
46	आठ लोकात्मिक विमानों में आठ लोकात्मिक देव	65	तिमिस्र गुफा की ऊँचाई
47	आठ लोकात्मिक देवों की स्थिति (आयु)	66	खण्ड प्रपात गुफा की ऊँचाई

67	जम्बूद्वीप के मेरुपर्वत से पूर्व में सीता महानदी के किनारे आठ वक्षस्कार पर्वत	77	जम्बूद्वीप के पूर्व में सीता नदी के उत्तर में उत्कृष्ट आठ अरिहन्त, आठ चक्रवर्ती, आठ बलदेव, आठ वासुदेव थे, हैं और होंगे
68	जम्बूद्वीप के मेरुपर्वत से पश्चिम में सीता महानदी के किनारे आठ वक्षस्कार पर्वत	78	जम्बूद्वीप के पूर्व में सीता नदी के दक्षिण में उत्कृष्ट आठ अरिहन्त, आठ चक्रवर्ती, आठ बलदेव, आठ वासुदेव थे, हैं और होंगे
69	जम्बूद्वीप के मेरुपर्वत से पूर्व में सीता नदी के उत्तर में आठ चक्रवर्ती विजय		
70	जम्बूद्वीप के मेरुपर्वत से पूर्व में सीता नदी के दक्षिण में आठ चक्रवर्ती विजय	79	जम्बूद्वीप के पूर्व में सीतोदा नदी के दक्षिण में उत्कृष्ट आठ अरिहन्त, आठ चक्रवर्ती, आठ बलदेव, आठ वासुदेव थे, हैं और होंगे
71	जम्बूद्वीप के मेरुपर्वत से पश्चिम में सीता नदी के दक्षिण में आठ चक्रवर्ती विजय	80	जम्बूद्वीप के पूर्व में सीता नदी के उत्तर में उत्कृष्ट आठ अरिहन्त, आठ चक्रवर्ती, आठ बलदेव, आठ वासुदेव थे, हैं और होंगे
72	जम्बूद्वीप के मेरुपर्वत से पश्चिम में सीता महानदी के उत्तर में आठ चक्रवर्ती विजय		
73	जम्बूद्वीप के मेरुपर्वत से पूर्व में सीता महानदी के उत्तर में आठ राजधानियाँ	81	क. जम्बूद्वीप के पूर्व में सीता नदी के उत्तर में आठ दीर्घ वैताल्य पर्वत
74	जम्बूद्वीप के मेरुपर्वत से पूर्व में सीता महानदी के दक्षिण में आठ राजधानियाँ		ख. जम्बूद्वीप के पूर्व में सीता नदी के उत्तर में आठ तिमिस्त्र गुफाएं
75	जम्बूद्वीप के मेरुपर्वत से पश्चिम में सीतोदा महानदी के दक्षिण में आठ राजधानियाँ		ग. जम्बूद्वीप के पूर्व में सीता नदी के उत्तर में आठ खण्ड प्रपात गुफाएं
76	जम्बूद्वीप के मेरुपर्वत से पश्चिम में सीतोदा महानदी के उत्तर में आठ राजधानियाँ		घ. जम्बूद्वीप के पूर्व में सीता नदी के उत्तर में आठ कृतमाल देव

इ.	जम्बूद्वीप के पूर्व में सीता नदी के उत्तर में आठ नृत्यमाल देव	घ.	जम्बूद्वीप के पूर्व में सीता नदी के दक्षिण में दीर्घ रक्ता नदी
च.	जम्बूद्वीप के पूर्व में सीता नदी के उत्तर में आठ गंगा कुण्ड	इ.	जम्बूद्वीप के पूर्व में सीता नदी के दक्षिण में दीर्घ रक्तावती नदी
छ.	जम्बूद्वीप के पूर्व में सीता नदी के उत्तर में आठ सिंधु कुण्ड	च.	जम्बूद्वीप के दक्षिण में सीतोदा नदी के दक्षिण में आठ दीर्घ ऋषभकूट पर्वत
ज.	जम्बूद्वीप के पूर्व में सीता नदी के उत्तर में आठ गंगा नदी	छ.	जम्बूद्वीप के पूर्व में सीतोदा नदी के दक्षिण में आठ दीर्घ ऋषभकूट देव
झ.	जम्बूद्वीप के पूर्व में सीता नदी के उत्तर में आठ सिंधु नदी	जम्बूद्वीप के पश्चिम में सीतोदा नदी के दक्षिण में आठ दीर्घ वैताढ्य पर्वत-यावत्- आठ ऋषभकूट देव	
ञ.	जम्बूद्वीप के पूर्व में सीता नदी के उत्तर में आठ ऋषभकूट पर्वत	क.	जम्बूद्वीप के पश्चिम में सीतोदा नदी के उत्तर में आठ दीर्घ वैताढ्य पर्वत-यावत्- आठ नृत्यमाल देव
ट.	जम्बूद्वीप के पूर्व में सीता नदी के उत्तर में आठ ऋषभकूट देव	ख.	जम्बूद्वीप के पश्चिम में सीतोदा नदी के उत्तर में आठ रक्तावती कुण्ड-यावत्- आठ ऋषभ कूट मेरु चूलिका का विष्कम्भ
क.	जम्बूद्वीप के पूर्व में सीता नदी के दक्षिण में आठ दीर्घ वैताढ्य पर्वत-यावत्-आठ नृत्यमाल देव	क.	धातकी खण्ड द्वीप के पूर्वार्ध में धातकी वृक्ष की ऊँचाई
ख.	जम्बूद्वीप के पूर्व में सीता नदी के दक्षिण में दीर्घ रक्ता कुण्ड	ख.	धातकी खण्ड के मध्य भाग का विष्कम्भ
ग.	जम्बूद्वीप के पूर्व में सीता नदी के दक्षिण में दीर्घ रक्तावती कुण्ड	ग.	धातकीखण्ड द्वीप का सर्व परिमाण धातकीखण्ड द्वीप के पूर्वार्ध में धातकी वृक्ष से मंदर चूलिका पर्यंत
82		83	
		84	
		85	
		86	
		87	

88	धातकी खण्ड द्वीप के पश्चिमार्ध में महाधातकी वृक्ष की ऊँचाई से मंदर चूलिका पर्यंत	98	जम्बूद्वीप के मेरुपर्वत से उत्तर में रुचक पर्वत पर आठ कूट व इन कूटों पर रहने वाली दिशा कुमारियों की स्थिति
89	पुष्करार्ध द्वीप के पूर्वार्ध में पद्मवृक्ष की ऊँचाई से मंदर चूलिका पर्यंत	99	अधोलोक में आठ दिशा कुमारियों की महत्तरिकाएं
90	पुष्करार्ध द्वीप के पश्चिमार्ध में महापद्म वृक्ष की ऊँचाई से मंदर चूलिका पर्यंत	100	ऊर्ध्वलोक में आठ दिशा कुमारियों की महत्तरिकाएं
91	जम्बूद्वीप के मेरुपर्वत पर भद्रशाल वन में आठ दिशा हस्ति कूट	101	आठ कल्पों में तिर्यच और मनुष्यों का उपपात
92	जम्बूद्वीप की जगति की ऊँचाई व मध्य भाग का विष्कम्भ	102	आठ कल्पों में आठ इन्द्र
93	जम्बूद्वीप के मेरुपर्वत से दक्षिण में महाहिमवत वर्षधर पर्वत पर आठ कूट	103	आठ इन्द्रों के आठ पारियानिक (यात्रा में काम आने वाले) विमान
94	जम्बूद्वीप के मेरुपर्वत से उत्तर में रूक्मि वर्षधर पर्वत पर आठ कूट	104	अष्ट अष्टमिका भिक्षु प्रतिमा का परिमाण
95	जम्बूद्वीप के मेरुपर्वत से पूर्व में रुचक पर्वत पर आठ कूट व इन कूटों पर रहने वाली दिशा कुमारियों की स्थिति	105	आठ प्रकार के संसारी जीव
96	जम्बूद्वीप के मेरुपर्वत से दक्षिण में रुचक पर्वत पर आठ कूट व इन कूटों पर रहने वाली दिशा कुमारियों की स्थिति	106	आठ-आठ प्रकार के सर्व जीव
97	जम्बूद्वीप के मेरुपर्वत से पश्चिम में रुचक पर्वत पर आठ कूट व इन कूटों पर रहने वाली दिशा कुमारियों की स्थिति	107	आठ प्रकार का संयम
		108	आठ प्रकार की पृथ्वियाँ
		109	ईषत् प्राग्भारा पृथ्वी के मध्य भाग की मोटाई
		110	ईषत् प्राग्भारा पृथ्वी के आठ नाम
		111	प्रमाद त्याग करके करने योग्य आठ शुभ कार्य
		112	महाशुक्र और सहस्रार कल्प में विमानों की ऊँचाई
		113	भ. अरिष्टनेमि के वाद-लब्धि सम्पन्न मुनि
		114	केवली समुद्रघात की स्थिति
		115	भ. महावीर के अनुत्तर विमानों में उत्पन्न होने वाले मुनि

१२८		३ स्थानांग सूत्र विषय सूची	स्थान.८, सूत्र ११६-१२८, स्थान.९, सूत्र १-१६
११६	आठ प्रकार के वाणव्यंतर देव और उनके आठ चैत्य वृक्ष	४.	नव ब्रह्मचर्य अगुप्ति
११७	वाणव्यंतर देव के चैत्य वृक्ष	५.	भ. अभिनन्दन और भ. सुमतिनाथ का अंतर
११८	रत्नप्रभा से सूर्य विमान की ऊँचाई	६.	नव सद्भाव रूप शाश्वत पारमार्थिक पदार्थ
११९	चन्द्र का स्पर्श करके गति करने वाले आठ नक्षत्र	७.	नव प्रकार के संसारी जीव
१२०	जम्बूद्वीप के द्वारों की ऊँचाई	८-९.	क. पृथ्वीकाय में नव की गति व नव की आगति
१२१	सर्व द्वीप समुद्रों के द्वारों की ऊँचाई		ख. अप्काय में नव की गति व नव की आगति
१२२	पुरुष वेदनीय कर्म की जघन्य बंध-स्थिति		ग. तेजस्काय में नव की गति व नव की आगति
१२३	यशोकीर्ति नाम कर्म की जघन्य बंध-स्थिति		घ. वायुकाय में नव की गति व नव की आगति
१२४	उच्च गोत्र कर्म की जघन्य बंध-स्थिति		ङ. वनस्पतिकाय में नव की गति व नव की आगति
१२५	त्रीन्द्रियों की कुलकोटि		च. द्वीन्द्रिय में नव की गति व नव की आगति
१२६	आठ स्थानों में पापकर्म के पुद्गलों का त्रैकालिक चयन		छ. त्रीन्द्रिय में नव की गति व नव की आगति
	-यावत्-निर्जरा		ज. चतुरिन्द्रिय में नव की गति व नव की आगति
१२७	आठ प्रदेशी स्कंध		झ. पंचेन्द्रिय में नव की गति व नव की आगति
१२८	क. आठ प्रदेशावगाढ पुद्गल	१०	नव-नव प्रकार के सर्व जीव
	ख. आठ समय की स्थिति वाले पुद्गल	११	नव प्रकार की सर्व जीवों की अवगाहना (शरीर का प्रमाण)
	ग. आठ गुण वाले-यावत्-आठ गुण रूपे पुद्गल	१२	सांसारिक जीवों की त्रैकालिक अवस्थिति
	नवम स्थान	१३	रोगोत्पत्ति के नव कारण
१.	संभोगी निर्ग्रन्थ को विसंभोगी करने के नौ कारण	१४	नव प्रकार का दर्शनावरणीय कर्म
२.	ब्रह्मचर्य (आचारांग प्रथम श्रुत-स्कंध) के नव अध्ययन	१५	अभिजित् नक्षत्र का चन्द्र के साथ योग काल
३.	नव ब्रह्मचर्य गुप्ति (बाड़े)	१६	चन्द्र के साथ उत्तर की ओर से योग करने वाले नव नक्षत्र

17	रत्नप्रभा पृथ्वी से ताराओं की ऊँचाई	34	नव देव-निकाय
18	जम्बूद्वीप में नव योजन के मत्स्यों का त्रैकालिक प्रवेश	35	अव्याबाध देव और उनका परिवार
19	जम्बूद्वीप के भरत वर्ष के इस अवसर्पिणी में नव बलदेव- नव वासुदेवों के पिता	36 37	अनर्च्य देव और उनका परिवार रिट्ट देव और उनका परिवार
20	क. आगामी उत्सर्पिणी में नव बलदेव-नव वासुदेवों के माता-पिता	38 39	नव ग्रैवेयक विमान प्रस्तट ग्रैवेयक विमानों के नव प्रस्तटों के नौ नाम
	ख. महाभीमसेन से सुग्रीव पर्यंत वर्णन समवायांग अनुसार	40	नव प्रकार का आयु परिणाम
21	प्रत्येक महानिधि का विष्कम्भ	41	नव नवमिका भिक्षु प्रतिमा का परिमाण
22	चक्रवर्ती की नव-नव महानिधियों के नाम व स्वरूप	42	नव प्रकार का प्रायश्चित्त
23	नव विकृतियाँ	43	जम्बूद्वीप के दक्षिण भरत में दीर्घ वैताढ्य पर्वत पर नव कूट
24	शरीर के नव द्वार	44	जम्बूद्वीप के दक्षिण भरत में निषध पर्वत पर नव कूट
25	नव प्रकार का पुण्य	45	जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत पर नन्दन वन में नव कूट
26	नव पाप स्थान	46	जम्बूद्वीप के माल्यवंत वक्षस्कार पर्वत पर नव कूट
27	नव पाप श्रुत प्रसंग	47	जम्बूद्वीप के कच्छ में दीर्घ वैताढ्य पर्वत पर नव कूट
28	नव निपुण आचार्य	48	जम्बूद्वीप के सुकच्छ में दीर्घ वैताढ्य पर्वत पर नव कूट
29	भ. महावीर के नव गण	49	महाकच्छ-यावत्-पुष्कलावती के विजयों में दीर्घ वैताढ्य पर्वत पर नव-नव कूट
30	भ. महावीर के निर्ग्रथों की नव कोटि शुद्ध भिक्षा		वत्स विजय में दीर्घ वैताढ्य पर्वत पर नौ कूट
31	ईशानेन्द्र के वरुण लोकपाल की नव अग्रमहिषियाँ	50	सुवत्स-यावत्-मंगलावती विजय में दीर्घ वैताढ्य पर्वत पर
32	ईशानेन्द्र की अग्रमहिषियों की स्थिति	51	नव- नव कूट
33	ईशान कल्प में देवियों की उत्कृष्ट स्थिति		

52	जम्बूद्वीप के विद्युत्प्रभ वक्षस्कार पर्वत पर नव कूट	64	आनत आदि चार देवलोकों में विमानों की ऊँचाई
53	जम्बूद्वीप के पद्मप्रभ वक्षस्कार पर्वत पर नव कूट	65	विमल वाहन कुलकर की ऊँचाई
54	सुपक्ष्म-यावत्-सलिलावती विजयों में दीर्घ वैताढ्य पर्वत पर नव-नव कूट	66	भ. ऋषभदेव का तीर्थ प्रवर्तन काल
55	वप्र विजय में दीर्घ वैताढ्य पर्वत पर नव-नव कूट	67	घनदंतादि 4 अंतर्द्वीपों का आयाम-विक्रमभ
56	क. सुवप्र-यावत्-गंधिलावती विजयों में दीर्घ वैताढ्य पर्वत पर नव कूट	68	शुक्र महाग्रह की नव वीथियाँ
	ख. दूसरा, आठवां छोड़कर शेष दीर्घवैताढ्य पर्वतों पर एक नाम के दो-दो कूट	69	नौ कषाय वेदनीय कर्म की नव प्रकृतियाँ
	जम्बूद्वीप के मेरुपर्वत से ऊपर उत्तर में नीलवंत वर्षधर पर्वत पर नव कूट	70	चतुरिन्द्रियों की कुलकोटि
57	जम्बूद्वीप के मेरुपर्वत के उत्तर में एरवत क्षेत्र के दीर्घ वैताढ्य पर्वत पर नव कूट	71	पंचेन्द्रिय तिर्यचयोनिक भुजग परिसर्पो की कुलकोटि
58	जम्बूद्वीप के मेरुपर्वत के उत्तर में एरवत क्षेत्र के दीर्घ वैताढ्य पर्वत पर नव कूट	72	नव स्थानों में पापकर्म के पुद्गलों का त्रैकालिक चयन -यावत्-निर्जरा
59	वज्रऋषभनाराच संहनन व समचतुरस्र संस्थान वाले भ. पार्श्वनाथ की ऊँचाई	73	क. नव प्रदेशी स्कंध
60	भ. महावीर के तीर्थ में तीर्थंकर गोत्र नाम कर्म बाँधने वाले नव जीव		ख. नव प्रदेशावगाढ पुद्गल
61	आगामी उत्सर्पिणी में होने वाले नव तीर्थंकरों के नाम		ग. नव समय की स्थिति वाले पुद्गल
62	महापद्म तीर्थंकर का विस्तृत चरित्र		घ. नव गुण काले-यावत्-नव गुण रूखे पुद्गल
63	चन्द्र के साथ पीछे से योग करने वाले नव नक्षत्र		दशम स्थान
		1.	दस प्रकार की लोक-स्थिति
		2.	दस प्रकार का शब्द
		3-5.	अतीत-वर्तमान व आगामी काल की इन्द्रियों के दस विषय
		6	अच्छिन्न पुद्गलों का दस कारणों से चलन
		7	क्रोधोत्पत्ति के दस कारण

8	दस प्रकार का संयम		में मिलने वाली दस महानदियाँ
9	दस प्रकार का असंयम	27	जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में दस राजधानियाँ
10	दस प्रकार का संवर	28	इन राजधानियों में दीक्षित होने वाले दस राजा
11	दस प्रकार का असंवर	29	क. जम्बूद्वीप के मेरुपर्वत का उद्देश (गहराई)
12	अभिमान के दस कारण		ख. जम्बूद्वीप के मेरुपर्वत के मूल का विष्कम्भ-चौड़ाई
13	दस प्रकार की समाधि		ग. जम्बूद्वीप के मेरुपर्वत के ऊपर पंडकवन का विष्कम्भ
14	दस प्रकार की असमाधि		घ. जम्बूद्वीप के मेरुपर्वत की ऊँचाई
15	दस प्रकार की प्रवज्या	30	क. जम्बूद्वीप के मेरुपर्वत के मध्य भाग में आठ रुचक प्रदेश
16	दस प्रकार का श्रमण धर्म		ख. इन रुचक प्रदेशों से दस दिशाओं की उत्पत्ति
17	दस प्रकार की वैयावृत्य		दस दिशाओं के नाम
18	दस प्रकार का जीव-परिणाम	31	लवण समुद्र का गोतीर्थ विरहित क्षेत्र
19	दस प्रकार का अजीव-परिणाम	32	लवण समुद्र के उदकमाल की चौड़ाई
20	दस प्रकार का अंतरिक्ष संबंधी अस्वाध्याय	33	क. लवण समुद्र के महापाताल कलशों का उद्देश-गहराई
21	दस प्रकार का औदारिक (शरीर) संबंधी अस्वाध्याय	34	ख. लवण समुद्र के महापाताल कलशों के मूल भाग का विष्कम्भ
22	पंचेन्द्रिय जीवों की रक्षा से दस प्रकार का संयम		ग. लवण समुद्र के महापाताल कलशों का मध्य भाग का बाहल्य
23	पंचेन्द्रिय जीवों की हिंसा से दस प्रकार का असंयम		घ. लवण समुद्र के महापाताल कलशों के ऊपर के भाग का विस्तार
24	दस प्रकार के सूक्ष्म जीव		
25	जम्बूद्वीप के मेरुपर्वत से दक्षिण में गंगा-सिन्धु महानदियों में मिलने वाली दस महानदियाँ		
26	जम्बूद्वीप के मेरुपर्वत से उत्तर में रक्ता-रक्तावती महानदियों		

35.	इ. महापाताल कलशों की भित्तियों का विस्तार	46	दस प्रकार का द्रव्यानुरोग
	क. क्षुद्र पाताल कलशों का उद्बेध	47-61	सर्व इन्द्रों और लोकपालों के उत्पात पर्वतों का परिमाण
	ख. क्षुद्र पाताल कलशों के मूल भाग का विस्तार	62	बादर वनस्पतिकाय की उत्कृष्ट अवगाहना
	ग. क्षुद्र पाताल कलशों के मध्य भाग का विस्तार	63	जलचर पंचेन्द्रिय तिर्यचों की उत्कृष्ट अवगाहना
	घ. क्षुद्र पाताल कलशों के ऊपर भाग का विस्तार	64	उरपरिसर्प पंचेन्द्रिय तिर्यचों की उत्कृष्ट अवगाहना
	इ. क्षुद्र पाताल कलशों की भित्तियों का विस्तार	65	भ. संभवनाथ और भ. अभिनन्दन का अंतर
36	धातकी खण्ड द्वीप के मेरुपर्वत का उद्बेध और विष्कम्भ	66	दस प्रकार का अनंत
37	पुष्करवर द्वीपार्ध के मेरुपर्वत का उद्बेध और विष्कम्भ	67	उत्पाद पूर्व की दस वस्तु
38	सर्व वृत्त वैताढ्य पर्वतों की ऊँचाई, गहराई और विष्कम्भ	68	अस्तित्वास्तिप्रवाद पूर्व की दस चूलवस्तु
39	जम्बूद्वीप के दस क्षेत्र	69	दस प्रकार की प्रतिसेवना
40	मानुषोत्तर पर्वत के मूल का विष्कम्भ	70	आलोचना के दस दोष
41	क. सर्व अंजनक पर्वतों की गहराई	71	दस गुण युक्त श्रमण आत्मदोषों की आलोचना करने योग्य
	ख. सर्व अंजनक पर्वतों के मूल का विस्तार	72	दस स्थानों से युक्त श्रमण आलोचना देने योग्य
	ग. सर्व अंजनक पर्वतों के ऊपर का विस्तार	73	दस प्रकार का प्रायश्चित्त
42	सर्व दधिमुख पर्वतों की गहराई, आकार और विष्कम्भ	74	दस प्रकार का मिथ्यात्व
43	सर्व रतिकर पर्वतों की गहराई, आकार और विष्कम्भ	75	भ. चन्द्रप्रभ का पूर्णायु और गति
44	रुचकवर पर्वत की गहराई व मूल और ऊपर का विष्कम्भ	76	भ. धर्मनाथ का पूर्णायु और गति
45	कुंडलवर पर्वत की गहराई व मूल का और ऊपर का विष्कम्भ	77	भ. नमिनाथ का पूर्णायु और गति
		78	पुरुषसिंह वासुदेव का पूर्णायु और गति

79	भ. नेमिनाथ की ऊँचाई और आयु	98	दस प्रकार की गति
80	कृष्ण वासुदेव की ऊँचाई और आयु	99	दस प्रकार के मुंड
81	दस भवनवासी देव	100	दस प्रकार का संख्यान (गणित)
82	भवनवासी देवों के चैत्यवृक्ष	101	दस प्रकार के प्रत्याख्यान
83	दस प्रकार का सुख	102	दस प्रकार की समाचारी
84	दस प्रकार का उपघात (दोष)	103	भगवान महावीर के दस महास्वप्न
85	दस प्रकार की विशेषिधि	104	दस प्रकार का सराग सम्यग्दर्शन
86	दस प्रकार का संक्लेश	105	दस प्रकार की संज्ञाएं
87	दस प्रकार का असंक्लेश	106-107	चौबीस दण्डकों में दस-दस संज्ञाएं
88	दस प्रकार का बल	108	दस प्रकार की नरक वेदना
89	दस प्रकार का सत्य	109	क. छद्मस्थ दस पदार्थों को पूर्ण रूप से नहीं जानता ख. सर्वज्ञ दस पदार्थों को पूर्ण रूप से जानता है
90	दस प्रकार की मृषा (असत्य)		
91	दस प्रकार की सत्यमृषा (मिश्र)	110	दस-दशा (अध्ययन) वाले आगम
92	दृष्टिवाद के दस नाम	111	कर्म विपाक दशा के दस अध्ययन
93	दस प्रकार के शस्त्र	112	उपासक दशा के दस अध्ययन
94	दस प्रकार के दोष	113	अन्तकृत दशा के दस अध्ययन
95	दस प्रकार के विशेष दोष	114	अनुत्तरोपपातिक दशा के दस अध्ययन
96	दस प्रकार के शुद्ध वचनानुयोग	115	आचार दशा के दस अध्ययन
97	दस प्रकार का दान	116	प्रश्नव्याकरण दशा के दस अध्ययन

117	बंध दशा के दस अध्ययन	136	दस प्रकार के स्थविर
118	द्विगृद्धि दशा के दस अध्ययन	137	दस प्रकार के पुत्र
119	दीर्घ दशा के दस अध्ययन	138	केवली (सर्वज्ञ) के दस सर्वोत्कृष्ट धर्म
120	संक्षेपिक दशा के दस अध्ययन	139	क. समय क्षेत्र में दस कुरुक्षेत्र
121	अवसर्पिणी काल का परिमाण		ख. दस कुरुक्षेत्र महा द्रुम
122	उत्सर्पिणी काल का परिमाण		ग. इन महाद्रुमों पर रहने वाले दस महर्द्धिक देव और उनकी स्थिति
123	चौबीस दण्डकों में-अनंतरोपपन्नक आदि दस प्रकार		
124	पंकप्रभा के नरकावास	140	सुकाल के दस लक्षण
125	रत्नप्रभा में जघन्य स्थिति	141	दुष्काल के दस लक्षण
126	पंकप्रभा में उत्कृष्ट स्थिति	142	सुषम-सुषमा नाम के प्रथम आरा में भोगोपभोग की सामग्री देने वाले दस कल्प वृक्ष
127	धूमप्रभा में जघन्य स्थिति		
128	असुरकुमारों आदि भवनवासियों की जघन्य स्थिति	143	जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में-अतीत उत्सर्पिणी में दस कुलकर
129	बादर वनस्पतिकाय की उत्कृष्ट स्थिति	144	जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में-आगामी उत्सर्पिणी में दस कुलकर
130	वाणव्यन्तर देवों की जघन्य स्थिति	145	जम्बूद्वीप के मेरुपर्वत से पूर्व में सीता नदी के दोनों किनारे पर दस वक्षस्कार पर्वत
131	ब्रह्मलोक कल्प में देवों की उत्कृष्ट स्थिति		
132	लांतक कल्प में देवों की जघन्य स्थिति	146	जम्बूद्वीप के मेरुपर्वत से पश्चिम में सीता नदी के दोनों किनारे पर दस वक्षस्कार पर्वत
133	आत्महितकारी शुभकर्म बंध के दस कारण		
134	दस प्रकार का आशंसा (कामना) प्रयोग	147	क. धातकी खण्ड के पूर्वार्ध व पश्चिमार्ध में दस-दस वक्षस्कार पर्वत
135	दस प्रकार का धर्म		

ख. पुष्करवर द्वीपार्थ के पूर्वार्ध में व पश्चिमार्ध में दस-दस	164	सर्वद्वीप समुद्रों का उद्बेध
वक्षस्कार पर्वत	165	सर्व महा द्रहों का उद्बेध
148 इन्द्राधिष्ठित दस कल्प	166	सर्व सलिल कुण्डों का उद्बेध
149 दस कल्पों में दस इन्द्र	167	सीता-सीतोदा नदियों के मुख मूल का उद्बेध
150 दस इन्द्रों के दस पारियानिक विमान	168	चन्द्र के बाह्य मण्डल से दसवें चन्द्र मण्डल में भ्रमण
151 दस दशमिका भिक्षु प्रतिमा का परिमाण		करने वाला कृतिका नक्षत्र
152 दस प्रकार के संसारी जीव	169	चन्द्र के आभ्यन्तर मण्डल से दसवें चन्द्र मण्डल में भ्रमण
153 दस प्रकार के सर्व जीव		करने वाला अनुराधा नक्षत्र
154 शतायु पुरुष की दस दशाएं	170	ज्ञान वृद्धि करने वाले दस नक्षत्र
155 दस प्रकार की तृणवनस्पतिकाय	171	स्थलचर तिर्यच पंचेन्द्रिय की कुल कोटि
156 विद्याधर श्रेणियों का विष्कम्भ	172	उरपरिसर्प तिर्यच पंचेन्द्रिय की कुल कोटि
157 आभियोगिक श्रेणियों का विष्कम्भ	173	दस स्थानों में पापकर्मों के पुद्गलों का त्रैकालिक चयन
158 ग्रैवेयक विमानों की ऊँचाई		-यावत्-निर्जरा
159 तेजोलेश्या से भस्म होने के दस प्रसंग	174	दस प्रदेशी स्कंध
160 दस प्रकार के आश्चर्य	175	दस प्रदेशावगाढ पुद्गल
161 रत्नप्रभा के रत्न काण्ड का बाहल्य	176	दस समय की स्थिति वाले पुद्गल
162 रत्नप्रभा के वज्र काण्ड का बाहल्य	177	दस गुण काले पुद्गल-यावत्-दस गुण रूखे पुद्गल
163 वैडूर्यकाण्ड-यावत्-रिष्टकाण्ड काण्डों का बाहल्य		

णमो गणहराणं

द्रव्यानुयोग प्रधान समवायाङ्ग सूत्र

श्रुतस्कन्ध	1	अध्ययन	1
उद्देशक	1	पद 1 लाख 44 हजार	5
उपलब्ध पाठ		1667 श्लोक प्रमाण	
गद्य सूत्र 677		पद्य सूत्र 60	

4 समवायांग विषय-सूची

1	क. उत्थानिका	6	(1)	रत्नप्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति
	ख. बारह अंगों के नाम		(2)	रत्नप्रभा के कुछ नैरयिकों की उत्कृष्ट स्थिति
2	द्वादशांग गणिपिटक में चौथा अंग		(3)	शर्कराप्रभा के कुछ नैरयिकों की जघन्य स्थिति
			(4)	कुछ असुरकुमारों की स्थिति
			(5)	कुछ असुरकुमारों की उत्कृष्ट स्थिति
			(6)	शेष नागकुमारों आदि की स्थिति
			(7)	असंख्य वर्षों की आयु वाले संज्ञी तिर्यच पंचेन्द्रिय की स्थिति
3	आत्मा		(8)	असंख्य वर्षों की आयु वाले संज्ञी मनुष्यों की स्थिति
	दण्ड		(1)	वाणव्यंतर देवों की उत्कृष्ट स्थिति
	क्रिया		(2)	ज्योतिषी देवों की उत्कृष्ट स्थिति
	लोक		(3)	सौधर्म कल्प के देवों की जघन्य स्थिति
	धर्म		(4)	सौधर्म कल्प के कुछ देवों की स्थिति
11	पुण्य		(5)	ईशान कल्प के देवों की जघन्य स्थिति
13	बंध			
15	आश्रव			
17	वेदना			

1. प्रथम समवाय

8	(6)	ईशान कल्प के कुछ देवों की स्थिति	(3)	असंख्य वर्ष की आयु वाले कुछ तिर्यच पंचेन्द्रियों की स्थिति
	(1)	सागर आदि देवों की उत्पत्ति		
	(2)	सागर आदि देवों की उत्कृष्ट स्थिति	(4)	असंख्य वर्ष की आयु वाले कुछ संज्ञी मनुष्यों की स्थिति
	(3)	सागर आदि देवों का श्वासोच्छ्वास काल		
	(4)	सागर आदि देवों का आहारेच्छा काल	13	सौधर्म कल्प के कुछ देवों की स्थिति
	(5)	कुछ भवसिद्धिक जीवों की एक भव में मुक्ति	(2)	ईशान कल्प के कुछ देवों की स्थिति
		2. द्वितीय समवाय	(3)	सौधर्म कल्प के कुछ देवों की उत्कृष्ट स्थिति
9	(1)	दण्ड के प्रकार	(4)	ईशान कल्प के देवों की उत्कृष्ट स्थिति
	(2)	राशि के प्रकार	(5)	सनत्कुमार कल्प के देवों की जघन्य स्थिति
	(3)	बंधन के प्रकार	(6)	महेन्द्र कल्प के देवों की जघन्य स्थिति
10	(1)	पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र के तारे	14	शुभ आदि विमानवासी देवों की उत्पत्ति
	(2)	उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र के तारे	(2)	शुभ आदि विमानवासी देवों की उत्कृष्ट स्थिति
	(3)	पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र के तारे	(3)	शुभ आदि विमानवासी देवों का श्वासोच्छ्वास काल
	(4)	उत्तराभाद्रपद नक्षत्र के तारे	(4)	शुभादि विमानवासी देवों का आहारेच्छा काल
11	(1)	रत्नप्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति	(5)	कुछ भवसिद्धिक जीवों की दो भव में मुक्ति
	(2)	शर्कराप्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति		
	(3)	दूसरी पृथ्वी में कितनेक नैरयिकों की स्थिति		
12	(1)	कुछ असुरकुमारों की स्थिति	15	दण्ड के प्रकार
	(2)	असुरेन्द्रों को छोड़कर शेष भवनपति देवों नागकुमार आदि की उत्कृष्ट स्थिति	(2)	गुप्ति के प्रकार
			(3)	शल्य के प्रकार
			(4)	गौरव के प्रकार
			(5)	विराधना के प्रकार

तृतीय समवाय

16	(1)	मृगशिरा नक्षत्र के तारे	(6)	कुछ भवसिद्धिक जीवों की तीन भव में मुक्ति
	(2)	पुष्य नक्षत्र के तारे		4. चतुर्थ समवाय
	(3)	ज्येष्ठा नक्षत्र के तारे	20	कषाय के प्रकार
	(4)	अभिजित् नक्षत्र के तारे		ध्यान के प्रकार
	(5)	श्रवण नक्षत्र के तारे	(3)	विकथा के प्रकार
	(6)	अश्विनी नक्षत्र के तारे	(4)	संज्ञा के प्रकार
	(7)	भरणी नक्षत्र के तारे	(5)	बंध के प्रकार
17	(1)	रत्नप्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति	(6)	योजन का परिमाण
	(2)	शर्कराप्रभा के कुछ नैरयिकों की उत्कृष्ट स्थिति	21	अनुराधा नक्षत्र के तारे
	(3)	बालुकाप्रभा के कुछ नैरयिकों की जघन्य स्थिति	(2)	पूर्वाषाढा नक्षत्र के तारे
18	(1)	कुछ असुरकुमारों की स्थिति	(3)	उत्तराषाढा नक्षत्र के तारे
	(2)	असंख्य वर्ष की आयु वाले संज्ञी तिर्यच पंचेन्द्रियों की उत्कृष्ट स्थिति	22	रत्नप्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति
	(3)	असंख्य वर्ष की आयु वाले संज्ञी मनुष्यों की उत्कृष्ट स्थिति	(2)	बालुकाप्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति
19	(1)	सनत्कुमार-माहेन्द्र कल्प के कुछ देवों की स्थिति	(3)	कुछ असुरकुमारों की स्थिति
	(2)	आभंकर आदि विमानवासी देवों की उत्पत्ति	(4)	सौधर्म-ईशान कल्प के कुछ देवों की स्थिति
	(3)	आभंकर आदि विमानवासी देवों की उत्कृष्ट स्थिति	23	सनत्कुमार-माहेन्द्र कल्प के कुछ देवों की स्थिति
	(4)	आभंकर आदि विमानवासी देवों का श्वासोच्छ्वास काल	(2)	कृष्टि आदि देवों की उत्पत्ति
	(5)	आभंकर आदि विमानवासी देवों का आहारेच्छा काल	(3)	कृष्टि आदि विमानवासी देवों की उत्कृष्ट स्थिति
			(4)	कृष्टि आदि विमानवासी देवों का श्वासोच्छ्वास काल
			(5)	कृष्टि आदि विमानवासी देवों का आहारेच्छा काल

24	(1)	कुछ भव सिद्धिक जीवों की चार भव में मुक्ति	(2)	वात आदि विमानवासी देवों की उत्पत्ति
5. पंचम समवाय				
25	(1)	क्रिया के प्रकार	(3)	वात आदि विमानवासी देवों की स्थिति
	(2)	महाव्रत के प्रकार	(4)	वात आदि विमानवासी देवों का श्वासोच्छ्वास काल
26	(1)	कामगुण के प्रकार	(5)	वात आदि विमानवासी देवों का आहारेच्छा काल
	(2)	आश्रव द्वार के प्रकार	(6)	कुछ भवसिद्धिक जीवों की पाँच भव में मुक्ति
6. षष्ठ समवाय				
	(3)	संवर द्वार के प्रकार	31	लेश्या के प्रकार
	(4)	निर्जरा स्थान के प्रकार	(2)	जीव-निकाय के प्रकार
	(5)	समिति के प्रकार	(3)	बाह्य तप के प्रकार
27		अस्तिकाय के प्रकार	(4)	आभ्यन्तर तप के प्रकार
28	(1)	रोहिणी नक्षत्र के तारे	32	छाद्वास्थिक समुद्घात के प्रकार
	(2)	पुनर्वसु नक्षत्र के तारे	33	अर्थाविग्रह के प्रकार
	(3)	हस्त नक्षत्र के तारे	34	कृतिका नक्षत्र के तारे
	(4)	विशाखा नक्षत्र के तारे	35	आश्लेषा नक्षत्र के तारे
	(5)	धनिष्ठा नक्षत्र के तारे	35	रत्नप्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति
29	(1)	रत्नप्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति	(2)	बालुकाप्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति
	(2)	बालुकाप्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति	(3)	कुछ असुरकुमारों की स्थिति
	(3)	कुछ असुरकुमारों की स्थिति	(4)	सौधर्म-ईशान कल्प के कुछ देवों की स्थिति
	(4)	सौधर्म-ईशान कल्प के कुछ देवों की स्थिति	36	सनत्कुमार-माहेन्द्र कल्प के कुछ देवों की स्थिति
30	(1)	सनत्कुमार-माहेन्द्र कल्प के कुछ देवों की स्थिति	(2)	स्वयंभू आदि विमानवासी देवों की उत्पत्ति

37	(3)	स्वयंभू आदि विमानवासी देवों की स्थिति	(5)	सौधर्म-ईशान कल्प के कुछ देवों की स्थिति
	(4)	स्वयंभू आदि विमानवासी देवों का श्वासोच्छ्वास काल	(6)	सनत्कुमार कल्प के देवों की उत्कृष्ट स्थिति
	(5)	स्वयंभू आदि विमानवासी देवों का आहारेच्छा काल	(7)	मोहेन्द्र कल्प के देवों की उत्कृष्ट स्थिति
	(6)	कुछ भवसिद्धिक जीवों की छह भव में मुक्ति	43	ब्रह्मलोक कल्प के देवों की स्थिति
	7. सप्तम समवाय			सम आदि विमानवासी देवों की उत्पत्ति
	(1)	भय स्थान के प्रकार	(2)	सम आदि विमानवासी देवों की उत्कृष्ट स्थिति
	(2)	समुद्रघात के प्रकार	(3)	सम आदि विमानवासी देवों का श्वासोच्छ्वास काल
38		भ. महावीर की ऊँचाई	(4)	सम आदि विमानवासी देवों का आहारेच्छा काल
39	(1)	जम्बूद्वीप के वर्षधर पर्वत	(5)	कुछ भवसिद्धिक जीवों की सात भव में मुक्ति
	(2)	जम्बूद्वीप के वर्ष-क्षेत्र	(6)	
40		क्षीणमोह गुणस्थान में वेदने योग्य कर्म प्रकृतियाँ	44	8. अष्टम समवाय
41	(1)	मघा नक्षत्र के तारे	(1)	मदस्थान के प्रकार
	(2)	पूर्व दिशा के द्वार वाले नक्षत्र	(2)	प्रवचन माता के प्रकार
	(3)	दक्षिण दिशा के द्वार वाले नक्षत्र	45	वाणव्यंतर देवों के चैत्य वृक्षों की ऊँचाई
	(4)	पश्चिम दिशा के द्वार वाले नक्षत्र	(2)	जम्बूद्वीप के सुदर्शन वृक्ष की ऊँचाई
	(5)	उत्तर दिशा के द्वार वाले नक्षत्र	(3)	कूट शाल्मली-वृक्ष की ऊँचाई
42	(1)	रत्नप्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति	(4)	जम्बूद्वीप-जगती की ऊँचाई
	(2)	बालुकाप्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति		केवली समुद्रघात का समय
	(3)	पंकप्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति	46	भ. पार्श्वनाथ के गण व गणधर
	(4)	कुछ असुरकुमारों की स्थिति	47	चन्द्र के साथ योग करने वाले नक्षत्र
			48	

49	(1)	रत्नप्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति	(3)	विजय द्वार के एक-एक पार्श्व में होने वाले भौम
	(2)	पंकप्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति	57	वाणव्यंतर देवों की सुधर्मा सभा की ऊँचाई
	(3)	कुछ असुरकुमारों की स्थिति	58	दर्शनावरणीय की उत्तर प्रकृतियाँ
	(4)	सौधर्म-ईशान कल्प के कुछ देवों की स्थिति	59	(1) रत्नप्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति
50	(1)	ब्रह्मलोक कल्प के कुछ देवों की स्थिति	(2)	पंकप्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति
	(2)	अर्चि आदि विमानवासी देवों की उत्पत्ति	(3)	कुछ असुरकुमारों की स्थिति
	(3)	अर्चि आदि विमानवासी देवों की स्थिति	60	(1) सौधर्म-ईशान कल्प के देवों की स्थिति
	(4)	अर्चि आदि विमानवासी देवों का श्वासोच्छ्वास काल	(2)	ब्रह्मलोक कल्प के देवों की स्थिति
	(5)	अर्चि आदि विमानवासी देवों का आहारेच्छा काल	(3)	पद्म आदि विमानवासी देवों की उत्पत्ति
	(6)	कुछ भवसिद्धिक जीवों की आठ भव में मुक्ति	(4)	पद्म आदि विमानवासी देवों की स्थिति
			(5)	पद्म आदि विमानवासी देवों का श्वासोच्छ्वास काल
			(6)	पद्म आदि विमानवासी देवों का आहारेच्छा काल
			(7)	कुछ भव सिद्धिक जीवों की नव भव में मुक्ति
9. नवम समवाय				
51		ब्रह्मचर्य गुप्ति के स्थान		
52		ब्रह्मचर्य अगुप्ति के स्थान		
53		आचाराङ्ग-ब्रह्मचर्य श्रुतस्कंध के अध्ययन		
54		भ. पार्श्वनाथ की ऊँचाई	61	श्रमण-धर्म के प्रकार
55	(1)	चन्द्र के साथ अभिजित् नक्षत्र का योगकाल	62	चित्त समाधि स्थान
	(2)	उत्तर दिशा से चन्द्र के साथ योग करने वाले अभिजित् से भरणी पर्यंत नौ नक्षत्र	63	मेरुपर्वत के मूल का विष्कम्भ
56	(1)	रत्नप्रभा के ऊपरी समभूभाग के ताराओं की ऊँचाई	64	(1) भ. अरिष्टनेमी की ऊँचाई
	(2)	जम्बूद्वीप में प्रवेश करने वाले मत्स्यों की अवगाहना	(2)	कृष्ण वासुदेव की ऊँचाई
10. दशम समवाय				

(3)	राम बलदेव की ऊँचाई	(5)	घोस आदि विमानवासी देवों का आहारेच्छा काल
65	ज्ञान वृद्धि करने वाले नक्षत्र	(6)	कुछ भवसिद्धिक जीवों की दस भव में मुक्ति
66	अकर्मभूमि मनुष्यों के कल्प-वृक्ष		11. इग्यारवाँ समवाय
67	(1) रत्नप्रभा के नैरयिकों की जघन्य स्थिति	71	उपासक पड़िमा के प्रकार
	(2) रत्नप्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति	72	(1) लोकान्त से ज्योतिष चक्र का अंतर
	(3) पंकप्रभा के नरकावास	(2)	जम्बूद्वीप के मेरुपर्वत से ज्योतिष चक्र का अंतर
	(4) पंकप्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति	73	भ. महावीर के गणधर
	(5) धूमप्रभा के नैरयिकों की जघन्य स्थिति	74	(1) मूल नक्षत्र के तारे
68	(1) कुछ असुरकुमारों की जघन्य स्थिति	(2)	नीचे के ग्रैवेयक देवों के विमान
	(2) नागकुमार आदि कुछ भवनवासी देवों की जघन्य स्थिति	(3)	मेरुपर्वत के धरणी तल से शिखर तल का विस्तार
	(1) कुछ असुरकुमारों की स्थिति	75	(1) रत्नप्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति
	(2) बादर वनस्पतिकाय की उत्कृष्ट स्थिति	(2)	धूमप्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति
	(3) वाणव्यन्तर देवों की जघन्य स्थिति	(3)	कुछ असुरकुमारों की स्थिति
69	(1) सौधर्म-ईशान कल्प के देवों की स्थिति	(4)	सौधर्म-ईशान कल्प के कुछ देवों की स्थिति
	(2) ब्रह्मलोक कल्प के देवों की स्थिति	76	(1) लांतक कल्प के कुछ देवों की स्थिति
70	(1) लांतक कल्प के देवों की स्थिति	(2)	ब्रह्म आदि विमानवासी देवों की स्थिति
	(2) घोस आदि विमानवासी देवों की उत्पत्ति	(3)	ब्रह्म आदि विमानवासी देवों का श्वासोच्छ्वास काल
	(3) घोस आदि विमानवासी देवों की स्थिति	(4)	ब्रह्म आदि विमानवासी देवों का आहारेच्छा काल
	(4) घोस आदि विमानवासी देवों का श्वासोच्छ्वास काल	(5)	कुछ भवसिद्धिक जीवों की ग्यारह भव में मुक्ति

12. बारहवाँ समवाय

77	भिक्षु प्रतिमा के प्रकार	(5)	महेन्द्र आदि विमानवासी देवों का आहारेच्छा काल
78	श्रमणों के व्यवहार-संभोग	(6)	कुछ भवसिद्धिक जीवों की बारह भव में मुक्ति
79	वन्दना के आवर्त	85	13. तेरहवाँ समवाय
80	विजया राजधानी का आयाम-विष्कम्भ	86	क्रिया स्थान
(1)	राम बलदेव का पूर्णायु	(1)	सौधर्म-ईशान कल्प के विमान प्रस्तट
(2)	मेरुपर्वत की चूलिका का विष्कम्भ	(2)	सौधर्मावतंसक विमान का आयाम-विष्कम्भ
(3)	जम्बूद्वीप की वेदिका का मूल में विस्तार	(3)	ईशानावतंसक विमान का आयाम-विष्कम्भ
(4)	जघन्य रात्रि के मुहूर्त	(4)	जलचर तिर्यच पंचेन्द्रियों की कुलकोटियां
81	जघन्य रात्रि के मुहूर्त	87	प्राणायु पूर्व के वस्तु
(1)	जघन्य दिन के मुहूर्त	88	गर्भज तिर्यच पंचेन्द्रियों के प्रयोग
(2)	सर्वार्थसिद्ध विमान से ईषत्प्राग्भारा पृथ्वी का अंतर	89	सूर्य मण्डल का परिमाण
82	ईषत्प्राग्भारा पृथ्वी के नाम	90	रत्नप्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति
(1)	रत्नप्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति	(1)	धूमप्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति
(2)	धूमप्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति	(2)	सौधर्म-ईशान कल्प के कुछ देवों की स्थिति
(3)	कुछ असुरकुमारों की स्थिति	(3)	लांतक कल्प के देवों की स्थिति
(4)	सौधर्म-ईशान कल्प के कुछ देवों की स्थिति	91	वज्र आदि विमानवासी देवों की उत्पत्ति
83	लांतक कल्प के कुछ देवों की स्थिति	(1)	वज्र आदि विमानवासी देवों की स्थिति
(1)	महेन्द्र आदि विमानवासी देवों की उत्पत्ति	(2)	वज्र आदि विमानवासी देवों का श्वासोच्छ्वास काल
(2)	महेन्द्र आदि विमानवासी देवों की स्थिति	(3)	वज्र आदि विमानवासी देवों का आहारेच्छा काल
(3)	महेन्द्र आदि विमानवासी देवों का श्वासोच्छ्वास काल	(4)	कुछ भवसिद्धिक जीवों की तेरह भव में मुक्ति
(4)		(5)	
		(6)	

14. चौदहवाँ समवाय

92	भूतग्राम के प्रकार	(6)	कुछ भवसिद्धिक जीवों की चौदह भव में मुक्ति
93	पूर्व के प्रकार	101	15. पन्द्रहवाँ समवाय
94 (1)	अग्राणीय पूर्व के वस्तु	102	पन्द्रह परमाधार्मिक देव
(2)	भ. महावीर की उत्कृष्ट श्रमण-संपदा	103 (1)	भ. नमिनाथ की ऊँचाई
95	जीव स्थानों के प्रकार	(2)	कृष्णपक्ष में ध्रुवराहु द्वारा प्रतिदिन चन्द्रकला का आवरण
96	भरत और ऐरवत क्षेत्र की जीवा का आयाम		शुक्लपक्ष में ध्रुवराहु द्वारा प्रतिदिन चन्द्रकला का अनावरण
97	चक्रवर्ती के चौदह रत्न	104 (1)	शतीभिषादि छह नक्षत्रों का चन्द्र के साथ योग काल
98	जम्बूद्वीप के लवण समुद्र में पूर्व और पश्चिम दिशा से मिलने वाली नदियाँ	(2)	चन्द्र से संयुक्त रहने वाले नक्षत्र
99 (1)	रत्नप्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति	105 (1)	चैत्र तथा आश्विन में दिन के मुहूर्त
(2)	धूमप्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति	(2)	चैत्र तथा आश्विन में रात्रि के मुहूर्त
(3)	कुछ असुरकुमारों की स्थिति	106	विद्यानुप्रवाद पूर्व के वस्तु
(4)	सौधर्म-ईशान कल्प के कुछ देवों की स्थिति	107	संज्ञी मनुष्य में प्रयोग
(5)	लांतक कल्प के कुछ देवों की स्थिति	108 (1)	रत्नप्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति
100 (1)	महाशुक्र कल्प के कुछ देवों की जघन्य स्थिति	(2)	धूमप्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति
(2)	श्रीकांत आदि विमानवासी देवों की उत्पत्ति	(3)	कुछ असुरकुमारों की स्थिति
(3)	श्रीकांत आदि विमानवासी देवों की स्थिति	(4)	सौधर्म-ईशान कल्प के कुछ देवों की स्थिति
(4)	श्रीकांत आदि विमानवासी देवों का श्वासोच्छ्वास काल	109 (1)	महाशुक्र कल्प के कुछ देवों की स्थिति
(5)	श्रीकांत आदि विमानवासी देवों का आहारेच्छा काल	(2)	नंद आदि विमानवासी देवों की उत्पत्ति
		(3)	नंद आदि विमानवासी देवों की उत्कृष्ट स्थिति

(4)	नंद आदि विमानवासी देवों का श्वासोच्छ्वास काल	(5)	आवर्त आदि विमानवासी देवों का आहारेच्छा काल
(5)	नंद आदि विमानवासी देवों का आहारेच्छा काल	(6)	कुछ भवसिद्धिक जीवों की सोलह भव में मुक्ति
(6)	कुछ भवसिद्धिक जीवों की पन्द्रह भव में मुक्ति		
	16. सोलहवाँ समवाय		17. सत्रहवाँ समवाय
110	सूत्रकृतांग सूत्र के सोलहवें अध्ययन की गाथायें	116	असंयम के प्रकार
111	कषाय के भेद	117	संयम के प्रकार
112	मेरुपर्वत के नाम	118 (1)	मानुषोत्तर पर्वत की ऊँचाई
113 (1)	भ. पार्श्वनाथ की उत्कृष्ट श्रमण-संपदा	(2)	सर्ववेलंधर व अनुवेलंधर नागराजों के आवास पर्वतों की ऊँचाई
(2)	आत्मप्रवाद पूर्व के वस्तु	(3)	लवण समुद्र के सर्वांग शिखर की ऊँचाई
(3)	चमरेन्द्र और बलेन्द्र के अवतारिकालयन का आयाम-विष्कम्भ	119	चारण मुनियों की तिरछी गति
(4)	लवण समुद्र के मध्य में जल की वृद्धि	120 (1)	चमरेन्द्र के तिगिच्छ कूट उत्पात पर्वत की ऊँचाई
114 (1)	रत्नप्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति	(2)	बलेन्द्र के रुचकेन्द्र उत्पात पर्वत की ऊँचाई
(2)	धूमप्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति	121	मरण के प्रकार
(3)	कुछ असुरकुमारों की स्थिति	122	सूक्ष्म सम्पराय गुणस्थान में कर्म प्रकृतियों का बंध
(4)	सौधर्म-ईशान कल्प के कुछ देवों की स्थिति	123 (1)	धूमप्रभा के कुछ नैरयिकों की उत्कृष्ट स्थिति
115 (1)	महाशुक्र कल्प के कुछ देवों की स्थिति	(2)	तमः प्रभा के कुछ नैरयिकों की जघन्य स्थिति
(2)	आवर्त आदि विमानवासी देवों की उत्पत्ति	(3)	कुछ असुरकुमारों की स्थिति
(3)	आवर्त आदि विमानवासी देवों की उत्कृष्ट स्थिति	(4)	सौधर्म-ईशान कल्प के कुछ देवों की स्थिति
(4)	आवर्त आदि विमानवासी देवों का श्वासोच्छ्वास काल	(5)	महाशुक्र कल्प के कुछ देवों की उत्कृष्ट स्थिति
		124 (1)	सहस्रार कल्प के कुछ देवों की जघन्य स्थिति

(2)	सामान आदि विमानवासी देवों की उत्पत्ति	(2)	काल आदि विमानवासी देवों की उत्पत्ति
(3)	सामान आदि विमानवासी देवों की स्थिति	(3)	काल आदि विमानवासी देवों की स्थिति
(4)	सामान आदि विमानवासी देवों का श्वासोच्छ्वास काल	(4)	काल आदि विमानवासी देवों का श्वासोच्छ्वास काल
(5)	सामान आदि विमानवासी देवों का आहारेच्छा काल	(5)	काल आदि विमानवासी देवों का आहारेच्छा काल
(6)	कुछ भवसिद्धिक जीवों की सत्रह भव में मुक्ति	(6)	कुछ भवसिद्धिक जीवों की अट्ठारह भव में मुक्ति
18. अट्ठारहवाँ समवाय			
125	ब्रह्मचर्य के प्रकार	133	ज्ञाताधर्मकथा-प्रथम श्रुतस्कंध के अध्ययन
126 (1)	भ. अरिष्टनेमी की उत्कृष्ट श्रमण संपदा	134	जम्बूद्वीप में सूर्य का ताप क्षेत्र
(2)	सर्व साधुओं के आचार स्थान	135	शुक्र महाग्रह के साथ भ्रमण करने वाले नक्षत्र
127	चूलिका सहित आचाराङ्ग के पद	136	जम्बूद्वीप में एक कला का परिमाण
128	ब्राह्मी लिपि के प्रकार	137	राज्य पद पाने के पश्चात् प्रव्रज्या लेने वाले तीर्थंकर
129	अस्ति-नास्ति प्रवाद के वस्तु	138 (1)	रत्नप्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति
130 (1)	धूमप्रभा का बाहल्य-मोटार्ई	(2)	कुछ असुरकुमारों की स्थिति
(2)	पोषमास में रात्रि के मुहूर्त	(3)	सौधर्म-ईशान कल्प के कुछ देवों की स्थिति
(3)	आषाढ मास में दिन के मुहूर्त	(4)	आनत कल्प के कुछ देवों की उत्कृष्ट स्थिति
131 (1)	रत्नप्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति	139 (1)	प्राणत कल्प के कुछ देवों की जघन्य स्थिति
(2)	कुछ असुरकुमारों की स्थिति	(2)	आनत आदि विमानवासी देवों की उत्पत्ति
(3)	सौधर्म-ईशान कल्प के कुछ देवों की स्थिति	(3)	आनत आदि विमानवासी देवों की स्थिति
(4)	सहस्रार कल्प के देवों की उत्कृष्ट स्थिति	(4)	आनत आदि विमानवासी देवों का श्वासोच्छ्वास काल
132 (1)	आनत कल्प के कुछ देवों की जघन्य स्थिति	(5)	आनत आदि विमानवासी देवों का आहारेच्छा काल

(6) कुछ भवसिद्धिक जीवों की उन्नीस भव में मुक्ति

20. बीसवाँ समवाय

140 असमाधि स्थान के प्रकार 144

141 (1) भ. मुनिसुव्रत की ऊँचाई 145

(2) सर्व घनोदधि का बाहल्य 146 (1)

(3) प्राणत देवेन्द्र के सामानिक देव 147 (1)

(4) नपुंसक वेदनीय की बंध स्थिति 147 (2)

(5) प्रत्याख्यान पूर्व के वस्तु 147 (3)

(6) उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी कालचक्र का परिमाण 147 (4)

142 (1) रत्नप्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति 148

(2) तमःप्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति 149 (1)

(3) कुछ असुरकुमारों की स्थिति 149 (2)

(4) सोधर्म-ईशान कल्प के कुछ देवों की स्थिति 149 (3)

(5) प्राणत कल्प के कुछ देवों की उत्कृष्ट स्थिति 149 (4)

143 (1) आरण कल्प के कुछ देवों की जघन्य स्थिति 150

(2) सात आदि विमानवासी देवों की उत्पत्ति 150 (5)

(3) सात आदि विमानवासी देवों की स्थिति 150 (6)

(4) सात आदि विमानवासी देवों का श्वासोच्छ्वास काल 150

(5) सात आदि विमानवासी देवों का आहारेच्छा काल 151

(6) कुछ भवसिद्धिक जीवों की बीस भव में मुक्ति 151 (1)

21. इक्कीसवाँ समवाय

सबल दोष के प्रकार

अष्टम गुणस्थान में कर्म प्रकृतियों की सत्ता

अवसर्पिणी के पाँचवें-छठे ओरे के वर्षों का परिमाण

उत्सर्पिणी के पहले और दूसरे ओरे के वर्षों का परिमाण

रत्नप्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति

तमःप्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति

कुछ असुरकुमारों की स्थिति

सौधर्म-ईशान कल्प के कुछ देवों की स्थिति

आरण कल्प के कुछ देवों की स्थिति

अच्युत कल्प के कुछ देवों की स्थिति

श्रीवत्स आदि विमानवासी देवों की उत्पत्ति

श्रीवत्स आदि विमानवासी देवों की स्थिति

श्री वत्स आदि विमानवासी देवों का श्वासोच्छ्वास

काल

श्री वत्स आदि विमानवासी देवों का आहारेच्छा काल

कुछ भवसिद्धिक जीवों की इक्कीस भव में मुक्ति

22. बावीसवाँ समवाय

परीषह के प्रकार

दृष्टिवाद में स्वसिद्धांत के सूत्र

	दृष्टिवाद में आजीविक सिद्धांत के सूत्र	अवसर्पिणी के तीर्थकर
(2)	दृष्टिवाद में त्रैशिक मत के सूत्र	पूर्वभव में मांडलिक राज्य करने वाले इस अवसर्पिणी के तीर्थकर
(3)	दृष्टिवाद में नय चतुष्क के सूत्र	
(4)	पुद्गल परिणाम के प्रकार	कौशलिक ऋषभ पूर्वभव में चतुर्दश पूर्वी
152		रत्नप्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति
153 (1)	रत्नप्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति	तमप्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति
(2)	तमःप्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति	तमतमा के कुछ नैरयिकों की स्थिति
(3)	तमस्तमप्रभा के कुछ नैरयिकों की जघन्य स्थिति	कुछ असुरकुमारों की स्थिति
(4)	कुछ असुरकुमारों की स्थिति	सौधर्म-ईशान कल्प के कुछ देवों की स्थिति
(5)	सौधर्म-ईशान कल्प के कुछ देवों की स्थिति	तीन मध्य ग्रैवेयक देवों की जघन्य स्थिति
154 (1)	अच्युत कल्प के देवों की उत्कृष्ट स्थिति	अधःस्तन ग्रैवेयक में उत्पत्ति
(2)	नीचे के तीन ग्रैवेयक विमानों की जघन्य स्थिति	अधःस्तन ग्रैवेयक देवों की उत्कृष्ट स्थिति
(3)	महित आदि विमानवासी देवों की उत्पत्ति	ग्रैवेयक देवों का श्वासोच्छ्वास काल
(4)	महित आदि विमानवासी देवों की स्थिति	ग्रैवेयक देवों का आहारेच्छा काल
(5)	महित आदि विमानवासी देवों का श्वासोच्छ्वास काल	कुछ भवसिद्धिक जीवों की तेईस भव में मुक्ति
(6)	महित आदि विमानवासी देवों का आहारेच्छा काल	
(7)	कुछ भवसिद्धिक जीवों की बावीस भव में मुक्ति	
23. तेईसवाँ समवाय		
155	सूत्रकृतांग-दो श्रुतस्कंधों के अध्ययन	देवाधिदेव के प्रकार
156 (1)	सूर्योदय के समय केवलज्ञान होने वाले तीर्थकर	लघु हिमवत वर्षधर पर्वत की जीवा का आयाम
(2)	पूर्वभव में एकादश अंगों का अध्ययन करने वाले इस	शिखरी वर्षधर पर्वत की जीवा का आयाम
		इन्द्र वाले देवस्थान
		सूर्य के उत्तरायण होने पर पौरुषी छाया का परिमाण
24. चौबीसवाँ समवाय		
		देवाधिदेव के प्रकार
		लघु हिमवत वर्षधर पर्वत की जीवा का आयाम
		शिखरी वर्षधर पर्वत की जीवा का आयाम
		इन्द्र वाले देवस्थान
		सूर्य के उत्तरायण होने पर पौरुषी छाया का परिमाण

(2)	गंगा, सिंधु, रक्ता व रक्तवती महानदियों के प्रवाह का विस्तार	(2)	रक्ता व रक्तवती नदी के प्रपात का परिमाण
164	(1) रत्नप्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति	171	लोकबिन्दुसार पूर्व के वस्तु
	(2) तमस्तमा के कुछ नैरयिकों की स्थिति	172	(1) रत्नप्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति
	(3) कुछ असुरकुमारों की स्थिति	(2)	तमस्तमा के कुछ नैरयिकों की स्थिति
	(4) सौधर्म-ईशान कल्प के कुछ देवों की स्थिति	(3)	कुछ असुरकुमारों की स्थिति
165	(1) अधःस्तन उपरिम ग्रैवेयकों की जघन्य स्थिति	(4)	सौधर्म-ईशान कल्प के कुछ देवों की स्थिति
	(2) अधःस्तन मध्यम ग्रैवेयकों की उत्कृष्ट स्थिति	(1)	मध्यम प्रथम ग्रैवेयकों की जघन्य स्थिति
	(3) अधःस्तन मध्यम ग्रैवेयकों का श्वासोच्छ्वास काल	(2)	अधःस्तन उपरिम ग्रैवेयक विमानों की उत्कृष्ट स्थिति
	(4) अधःस्तन मध्यम ग्रैवेयकों का आहारेच्छा काल	(3)	अधःस्तन उपरिम ग्रैवेयक देवों का श्वासोच्छ्वास काल
	(5) कुछ भवसिद्धिक जीवों की चौबीस भव में मुक्ति	(4)	अधःस्तन उपरिम ग्रैवेयक देवों का आहारेच्छा काल
		(5)	कुछ भवसिद्धिक जीवों की पच्चीस भव में मुक्ति
25. पच्चीसवाँ समवाय			
166	पाँच महाव्रत की भावना	174	दशाश्रुतस्कंध, बृहत्कल्प और व्यवहार के उद्देशक
167	(1) भ. मल्लीनाथ की ऊँचाई	175	अभवसिद्धिक जीवों के सत्ता में मोहनीय की कर्म प्रकृतियाँ
	(2) सर्व महान् वैताढ्य पर्वतों की ऊँचाई और उद्वेध		
	(3) शर्कराप्रभा के नरकावास	176	(1) रत्नप्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति
168	चूलिका सहित आचारांग के अध्ययन	(2)	तमस्तमा के कुछ नैरयिकों की स्थिति
169	अपर्याप्त मिथ्यादृष्टि विकलोन्द्रिय में बंधने वाली नाम कर्म की प्रकृतियाँ	(3)	कुछ असुरकुमारों की स्थिति
		(4)	सौधर्म-ईशान कल्प के कुछ देवों की स्थिति
170	(1) गंगा व सिंधु नदी के प्रपात का परिमाण	177	(1) मध्यम-मध्यम ग्रैवेयक देवों की जघन्य स्थिति

26. छब्बीसवाँ समवाय

(2)	मध्यम अधस्तन ग्रैवेयक देवों की उत्कृष्ट स्थिति		28. अट्टावीसवाँ समवाय
(3)	मध्यम अधस्तन ग्रैवेयक देवों का श्वासोच्छ्वास काल	183	आचार प्रकल्प के प्रकार
(4)	मध्यम अधस्तन ग्रैवेयक देवों का आहारेच्छा काल	184	भवसिद्धिक जीवों के सत्ता में मोहनीय की प्रकृतियाँ
(5)	कुछ भवसिद्धिक जीवों की छब्बीस भव में मुक्ति	185	आभिनिबोधिक ज्ञान के प्रकार
	27. सत्तावीसवाँ समवाय	186	ईशान कल्प के विमान
178	अणगार गुण के प्रकार	187	देवगति बाँधने वाले जीव के नामकर्म की उत्तर प्रकृतियों
179 (1)	जम्बूद्वीप में नक्षत्रों का व्यवहार		का बंध
(2)	नक्षत्रमास के दिन-रात	188	नरक गति बाँधने वाले जीव के अप्रशस्त प्रकृतियों
(3)	सौधर्म-ईशान कल्प के विमानों का बाहल्य		का बंध
180 (1)	वेदक समयक्त्व के बंध से विरत जीव के सत्ता में	189 (1)	रत्नप्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति
	मोहनीय की उत्तर प्रकृतियाँ	(2)	तमस्तमा के कुछ नैरयिकों की स्थिति
(2)	श्रावण शुक्ला सप्तमी को पौरुषी का प्रमाण	(3)	कुछ असुरकुमारों की स्थिति
181 (1)	रत्नप्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति	(4)	सौधर्म-ईशान कल्प के कुछ देवों की स्थिति
(2)	तमस्तमा के कुछ नैरयिकों की स्थिति	190 (1)	उपरिम अधस्तन ग्रैवेयकों की जघन्य स्थिति
(3)	कुछ असुरकुमारों की स्थिति	(2)	मध्यम उपरिम ग्रैवेयकों की उत्कृष्ट स्थिति
(4)	सौधर्म-ईशान कल्प के कुछ देवों की स्थिति	(3)	मध्यम उपरिम ग्रैवेयकों का श्वासोच्छ्वास काल
182 (1)	मध्यम उपरिम ग्रैवेयक देवों की जघन्य स्थिति	(4)	मध्यम उपरिम ग्रैवेयकों का आहारेच्छा काल
(2)	मध्यम ग्रैवेयक देवों की उत्कृष्ट स्थिति	(5)	कुछ भवसिद्धिक जीवों की अट्टावीस भव में मुक्ति
(3)	मध्यम ग्रैवेयक देवों का श्वासोच्छ्वास काल		29. उनत्तीसवाँ समवाय
(4)	मध्यम ग्रैवेयक देवों का आहारेच्छा काल	191	पापश्रुत प्रसंग-पापों के उपार्जन करने वाले शास्त्रों का
(5)	कुछ भवसिद्धिक जीवों की सत्तावीस भव में मुक्ति		श्रावण

192 (1)	आषाढ मास के दिन-रात	197	स्थविर मंडित पुत्र का श्रमण पर्याय
(2)	भाद्रपद मास के दिन-रात	198 (1)	एक अहोरात्र के मुहूर्त
(3)	कार्तिक मास के दिन-रात	(2)	तीस मुहूर्तों के नाम
(4)	पौष मास के दिन-रात	199	भ. अरहनाथ की ऊँचाई
(5)	फाल्गुन मास के दिन-रात	200	सहस्रार देवेन्द्र के सामानिक देव
(6)	वैशाख मास के दिन-रात	201 (1)	भ. पार्श्वनाथ का गृहवास काल
(7)	चन्द्र दिन के मुहूर्त	(2)	भ. महावीर का गृहवास काल
193	सम्यग्दृष्टि जीव के विमानवासी देवों में उत्पन्न होने से पूर्व तीर्थंकर नामकर्म सहित नामकर्म की प्रकृतियाँ	202 (1)	रत्नप्रभा के नरकावास
(1)	रत्नप्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति	(2)	रत्नप्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति
(2)	तमस्तमा के कुछ नैरयिकों की स्थिति	(3)	तमस्तमा के कुछ नैरयिकों की स्थिति
(3)	कुछ असुरकुमारों की स्थिति	(4)	कुछ असुरकुमार देवों की स्थिति
(4)	सौधर्म-ईशान कल्प के देवों की स्थिति	203 (1)	उपरिम-उपरिम ग्रैवेयक देवों की जघन्य स्थिति
195 (1)	उपरिम मध्यम ग्रैवेयक देवों की जघन्य स्थिति	(2)	उपरिम मध्यम ग्रैवेयक देवों की उत्कृष्ट स्थिति
(2)	उपरिम अधस्तन ग्रैवेयक देवों की उत्कृष्ट स्थिति	(3)	उपरिम मध्यम ग्रैवेयक देवों का श्वासोच्छ्वास काल
(3)	उपरिम अधस्तन ग्रैवेयक देवों का श्वासोच्छ्वास काल	(4)	उपरिम मध्यम ग्रैवेयक देवों का आहारेच्छा काल
(4)	उपरिम अधस्तन ग्रैवेयक देवों का आहारेच्छा काल	(5)	कुछ भवसिद्धिक जीवों की तीस भव में मुक्ति
(5)	कुछ भवसिद्धिक जीवों की उनतीस भव में मुक्ति		
196	मोहनीय कर्म बंधने के स्थान		

31. इकतीसवाँ समवाय

सिद्धों के गुण

मेरुपर्वत के मूल का परिक्षेप (परिधि)

बाह्य मण्डल से सूर्यदर्शन की दूरी का प्रमाण

30. तीसवाँ समवाय

(3)	अभिवर्धित मास के दिन-रात	(2)	तमस्तमा के कुछ नैरयिकों की स्थिति
(4)	आदित्य मास के दिन-रात	(3)	कुछ असुरकुमारों की स्थिति
207 (1)	रत्नप्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति	(4)	सौधर्म-ईशान कल्प के कुछ देवों की स्थिति
(2)	तमस्तमा के कुछ नैरयिकों की स्थिति	214 (1)	चार अनुत्तर विमानवासी कुछ देवों की स्थिति
(3)	कुछ असुरकुमारों की स्थिति	(2)	चार अनुत्तर विमानवासी देवों का श्वासोच्छ्वास काल
(4)	सौधर्म-ईशान कल्प के कुछ देवों की स्थिति	(3)	चार अनुत्तर विमानवासी देवों का आहारेच्छा काल
208 (1)	विजय, वैजयंत, जयंत व अपराजित विमानवासी देवों की जघन्य स्थिति	(4)	कुछ भवसिद्धिक जीवों की बत्तीस भव में मुक्ति
(2)	उपरिम-उपरिम ग्रैवेयक विमानों की उत्कृष्ट स्थिति	215	33. तेत्तीसवाँ समवाय
(3)	उपरिम-उपरिम ग्रैवेयक देवों का श्वासोच्छ्वास काल	216 (1)	आशातना के प्रकार
(4)	उपरिम-उपरिम ग्रैवेयक देवों का आहारेच्छा काल		चमरचंचा राजधानी के प्रत्येक द्वार के बाहर भौम स्थान
(5)	कुछ भवसिद्धिक जीवों की इकतीस भव में मुक्ति	(2)	महाविदेह क्षेत्र का विष्कम्भ
209	32. बत्तीसवाँ समवाय	(3)	बाह्य तृतीय मंडल से सूर्यदर्शन की दूरी का अंतर
210	योग संग्रह की गाथाएं	217 (1)	रत्नप्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति
211	देवेन्द्र के प्रकार	(2)	तमस्तमा के कुछ नैरयिकों की स्थिति
212 (1)	भ. कुंथुनाथ की केवली परिषद्	(3)	अप्रतिष्ठान नरकावास के नैरयिकों की स्थिति
(2)	सौधर्म कल्प के विमान	(4)	कुछ असुरकुमारों की स्थिति
(3)	रेवती नक्षत्र के तारे	(5)	सौधर्म-ईशान कल्प के कुछ देवों की स्थिति
213 (1)	नाट्य के विविध भेद	218 (1)	चार अनुत्तर विमानवासी देवों की उत्कृष्ट स्थिति
	रत्नप्रभा के कुछ नैरयिकों की स्थिति	(2)	सर्वार्थसिद्ध विमान के देवों की स्थिति

(3)	सर्वार्थसिद्ध विमान के देवों का श्वासोच्छ्वास काल	227	चमरेन्द्र की सुधर्मा सभा की ऊँचाई
(4)	सर्वार्थसिद्ध विमान के देवों का आहारेच्छा काल	228	भ. महावीर की श्रमणी-संपदा
(5)	कुछ भवसिद्धिक जीवों की तेत्तीस भव में मुक्ति	229	चैत्र और आश्विन में पौरुषी छाया का प्रमाण
34. चौतीसवाँ समवाय			
219	बुद्धातिशय-तीर्थकरों के अतिशय के प्रकार	230	37. सैंतीसवाँ समवाय
220 (1)	चक्रवर्ती के विजय	231 (1)	भ. कुंथुनाथ के गण व गणधर
(2)	जम्बूद्वीप के दीर्घ वैताढ्य पर्वत	(2)	हेमवत व हैरण्यवत क्षेत्रों की जीवों का आयाम
(3)	जम्बूद्वीप में अधिकतम तीर्थकर		चार अनुत्तर विमानों की राजधानियों के प्रकारों की ऊँचाई
221 (1)	चमरेन्द्र के भवनावास	232	क्षुद्रिका विमानप्रविभक्ति के प्रथम वर्ग के उद्देशक
(2)	प्रथम, पंचम, षष्ठ और सप्तम नरक के नरकावास	233	कार्तिक कृष्ण सप्तमी के दिन पौरुषी छाया का प्रमाण
35. पैंतीसवाँ समवाय			
222	सत्य वचनातिशय	234	38. अड़तीसवाँ समवाय
223 (1)	भ. कुंथुनाथ की ऊँचाई	235 (1)	भ. पार्श्वनाथ की उत्कृष्ट श्रमणी संपदा
(2)	दत्त वासुदेव की ऊँचाई	(2)	हेमवत व हैरण्यवत क्षेत्रों की जीवों का धनुषष्ठ
(3)	नंदन बलदेव की ऊँचाई	236	मेरुपर्वत के द्वितीय कांड की ऊँचाई
224	सौधर्म कल्प के सुधर्मा सभा में स्थित माणवक स्तम्भ के मध्य भाग में जिन अस्थियां		क्षुद्रिका विमान प्रविभक्ति के द्वितीय वर्ग के उद्देशक
225	द्वितीय और चतुर्थ नरक के नरकावास	237 (1)	39. उनचालीसवाँ समवाय
36. छत्तीसवाँ समवाय			
226	उत्तराध्ययन सूत्र के अध्ययन	(2)	भ. नेमिनाथ के अवाधिज्ञानी मुनि
		(3)	समय क्षेत्र के कुल पर्वत
			द्वितीय, चतुर्थ, पंचम, षष्ठ और सप्तम इन पांचों नरकों के नरकावास

१५४		४ समवायांग सूत्र विषय सूची		सम.३९-४३, सूत्र २३८-२५६
२३८	ज्ञानावरणीय, मोहनीय, गोत्र और आयुर्कर्म इन चारों कर्मों की उत्तर प्रकृतियाँ	(२)	जम्बूद्वीप के दक्षिणान्त से दक्षिणसे पर्वत के उत्तरान्त का अंतर	जम्बूद्वीप के दक्षिणान्त से दक्षिणसे पर्वत के उत्तरान्त का अंतर
२३९	४०. चालीसवाँ समवाय	(३)	जम्बूद्वीप के पश्चिमान्त से शंख पर्वत के पूर्वान्त का अंतर	जम्बूद्वीप के पश्चिमान्त से शंख पर्वत के पूर्वान्त का अंतर
२४० (१)	भ. अरिष्टनेमि की श्रमणी-संपदा	(४)	जम्बूद्वीप के उत्तरान्त से दक्षिणसे पर्वत के दक्षिणान्त का अंतर	जम्बूद्वीप के उत्तरान्त से दक्षिणसे पर्वत के दक्षिणान्त का अंतर
२४० (२)	मेरु चूलिका की ऊँचाई			कालोद समुद्र के चन्द्र-सूर्य
२४१ (१)	भ. शातिनाथ की ऊँचाई			सम्पूर्णिम भुजपरिसर्पों की उत्कृष्ट स्थिति
२४१ (२)	भूतानन्द नागकुमारेन्द्र के भवनावास			नामकर्म की उत्तर प्रकृतियाँ
२४२ (१)	क्षुद्रिका विमानप्रविभक्ति के तृतीय वर्ग के उद्देशक	२४९		लवण समुद्र की भीतरी वेलाप्रवाह को धारण करने वाले नागकुमार देव
२४२ (२)	फाल्गुण पूर्णिमा को पौरुषी प्रमाण	२५०		महालिका विमान-प्रविभक्ति के द्वितीय वर्ग के उद्देशक
२४३	कार्तिक पूर्णिमा को पौरुषी प्रमाण	२५१		अवसर्पिणी के पाँचवें और छठे ओरे का संयुक्त परिमाण
	महाशुक्र कल्प के विमानावास	२५२		उत्सर्पिणी के प्रथम तथा द्वितीय ओरे का परिमाण
२४४	४१. इकतालीसवाँ समवाय	२५३		४३. तियालीसवाँ समवाय
२४५	भ. नमिनाथ की श्रमणी-संपदा	२५४ (१)		कर्म विपाक के अध्ययन
	प्रथम, पंचम, षष्ठ और सप्तम इन चारों नरकों के नरकावास	(२)		प्रथम, चतुर्थ और पंचम नरकों के नरकावास
२४६	महालिका विमान-प्रविभक्ति के प्रथम वर्ग के उद्देशक			जम्बूद्वीप के पूर्वान्त से गोस्तूप आवास पर्वत के पूर्वान्त का अंतर
२४७	४२. बियालीसवाँ समवाय	२५५		
२४८	भ. महावीर का श्रमण-पर्याय	२५६ (१)		
२४९	जम्बूद्वीप के पूर्वान्त से गोस्तूप आवास पर्वत के पश्चिमान्त का अंतर	(२)		

(3)	जम्बूद्वीप के दक्षिणान्त से दक्कभास पर्वत के दक्षिणान्त का अंतर	263	भ. अरहनाथ की ऊँचाई
(4)	जम्बूद्वीप के पश्चिमान्त से शंखपर्वत के पश्चिमान्त का अंतर	264	मेरुपर्वत से चारों दिशाओं में लवण समुद्र की भीतरी परिधि का अंतर
(5)	जम्बूद्वीप के उत्तरान्त से दक्कसीम पर्वत के उत्तरान्त का अंतर	265 (1)	धातकीखण्ड और पुष्करार्ध के नक्षत्रों का चन्द्रमा के साथ योगकाल
257	महालिका विमान-प्रविभक्ति के तृतीय वर्ग के उद्देशनकाल	(2) 266	उत्तरा आदि छह नक्षत्रों का चन्द्र के साथ योगकाल महालिका विमान-प्रविभक्ति के पाँचवें वर्ग के उद्देशनकाल
44. चौवालीसवाँ समवाय			
258	ऋषिभाषित के अध्ययन	267 (1)	दृष्टिवाद के मातृकापद
259	भ. विमलनाथ के सिद्ध होने वाले शिष्य-प्रशिष्यों की परम्परा	(2) 268	ब्राह्मी लिपि के मातृकाक्षर प्रभञ्जन वायुकुमारेन्द्र के भवनावास
260	धरण नागोन्द्र के भवनावास		
261	महालिका विमान प्रविभक्ति के चतुर्थ वर्ग के उद्देशनकाल	269	भरत क्षेत्रगत मनुष्य के लिए सर्वाभ्यन्तर मंडल पर स्थित सूर्य दर्शन की कितनी दूरी स्थविर अग्निभूति का गृहवास
45. पैतालीसवाँ समवाय			
262 (1)	समय क्षेत्र का आयाम-विष्कम्भ	270	
(2)	सीमंतक नरकावास का आयाम-विष्कम्भ	271	48. अड़तालीसवाँ समवाय चक्रवर्ती के प्रमुख नगर
(3)	उडुविमान का आयाम-विष्कम्भ	272	भ. धर्मनाथ के गण व गणधर
(4)	ईषत् प्राग्भारा पृथ्वी का आयाम-विष्कम्भ		

273	सूर्यमंडल का विष्कम्भ	285 (1)	गोस्तूप आवास पर्वत के पूर्वान्त से वलयामुख पाताल कलश के पश्चिमान्त का अंतर
274	49. उनपचासवाँ समवाय		
275	सप्तसप्तमिका भिक्षु प्रतिमा के दिन	(2)	दगभास आवास पर्वत के दक्षिणान्त से केतुक पाताल कलश के उत्तरान्त का अंतर
276	देवकुरु-उत्तरकुरु में बाल्यकाल के दिन		
	त्रीन्द्रियों की उत्कृष्ट स्थिति	(3)	शंख आवास पर्वत के पश्चिमान्त से यूपक पाताल कलश के पूर्वान्त का अंतर
	50. पचासवाँ समवाय		
277 (1)	भ. मुनिसुव्रत की श्रमणी-संपदा	(4)	दगसीम आवास पर्वत के उत्तरान्त से ईश्वर पाताल कलश के दक्षिणान्त का अंतर
(2)	भ. अनंतनाथ की ऊँचाई		
(3)	पुरुषोत्तम वासुदेव की ऊँचाई	286	ज्ञानावरणीय, नामकर्म और अंतराय कर्म की उत्तर प्रकृतियाँ
278	सर्व दीर्घ वेताढ्य पर्वतों के मूल का विष्कम्भ		
279 (1)	लांतक कल्प के विमानावास	287	सौधर्म, सनकुमार और माहेन्द्र इन तीन देवलाकों के विमानावास
(2)	तिमिस्त्र व खण्डप्रपात गुफाओं का आयाम		
(3)	सर्व कांचनग पर्वतों के शिखरों का विष्कम्भ		
	51. इकावनवाँ समवाय		
280	आचारांग प्रथम श्रुतस्कंध के अध्ययनों के उद्देशक	288 (1)	देवकुरु व उत्तरकुरु क्षेत्रों की जीवाओं का आयाम
281	चमरेन्द्र व बलीन्द्र की सुधर्मा सभा के स्तंभ	(2)	महा हिमवत व रक्मी वर्षधर पर्वतों की जीवाओं का आयाम
282	सुप्रभ बलदेव का आयु	289	भ. महावीर के अनुत्तर देवलोको में उत्पन्न होने वाले शिष्य
283	दर्शनावरणीय कर्म की उत्तर प्रकृतियाँ		
	52. बावनवाँ समवाय		
284	मोहनीय कर्म के नाम	290	सम्मूर्छिम उरपरिसर्प की उत्कृष्ट स्थिति

54. चोपनवाँ समवाय		56. छपनवाँ समवाय	
291	भरत व ऐरवत क्षेत्र में उत्सर्पिणी व अवसर्पिणी काल के उत्तम पुरुष	298	जम्बूद्वीप में नक्षत्रों का चन्द्र के साथ योग
292 (1)	भ. अरिष्ट नेमीनाथ का छद्मस्थ पर्याय	299	भ. विमलनाथ के गण व गणधर
(2)	भ. महावीर के एक दिन व एक आसन के प्रवचन		
(3)	भ. अनन्तनाथ के गण व गणधर		
55. पचपनवाँ समवाय		57. सत्तावनवाँ समवाय	
293	भ. मल्लीनाथ का आयु	300	आचारांग (चूलिका को छोड़कर) सूत्रकृतांग और स्थानांग के अध्ययन
294 (1)	मेरुपर्वत के पश्चिमान्त से विजय द्वार के पश्चिमान्त का अंतर	301 (1)	गोस्तूभ आवास पर्वत के पूर्वान्त से वलयामुख पाताल कलश के मध्य भाग का अंतर
(2)	मेरुपर्वत के उत्तरान्त से विजयन्त द्वार के उत्तरान्त का अंतर	(2)	दकभास आवास पर्वत के दक्षिणान्त से केतुक पाताल कलश के मध्य भाग का अंतर
(3)	मेरुपर्वत के पूर्वान्त से जयन्त द्वार के पूर्वान्त का अंतर	(3)	शंख आवास पर्वत के पश्चिमान्त से यूपक पाताल कलश के मध्य भाग का अंतर
(4)	मेरुपर्वत के दक्षिणान्त से अपराजित द्वार के दक्षिणान्त का अंतर	(4)	दकसीम आवास पर्वत के उत्तरान्त से ईश्वर पाताल कलश के मध्य भाग का अंतर
295	भ. महावीर के अंतिम प्रवचन	302 (1)	भ. मल्लीनाथ के मनः पर्यव ज्ञानी मुनि
296	प्रथम-द्वितीय नरक के नरकावास	(2)	महाहिमवन्त पर्वत व रूक्मी पर्वत की जीवाओं के धनुष की परिधि
297	दर्शनावरणीय, नाम और आयुक्रम की उत्तर प्रकृतियाँ		
		303	58. अठावनवाँ समवाय
		304	प्रथम, द्वितीय और पंचम नरक के नरकावास
			ज्ञानावरणीय, वेदनीय, आयु, नाम और अन्तराय कर्म

की उत्तर प्रकृतियाँ

305 (2)	गोस्तूभ आवास पर्वत के पश्चिमान्त से वलयामुख	314	61. इक्सठवाँ समवाय पंचवर्षीय युग के ऋतुमास
(2)	पाताल कलश के मध्य भाग का अंतर	315	मेरुपर्वत के प्रथम काण्ड की ऊँचाई
(2)	दकभास आवास पर्वत के उत्तरान्त से केतुक पाताल	316 (1)	चन्द्र विमान के समांश
(2)	कलश के मध्य भाग का अंतर	(2)	सूर्य विमान के समांश
(2)	शंख आवास पर्वत के पूर्वान्त से शूपक पाताल कलश के मध्य भाग का अंतर	317	62. बासठवाँ समवाय पंचवर्षीय युग की पूर्णिमाएं और अमावस्यायें
(2)	दकसीम आवास पर्वत के दक्षिणान्त से ईसर पाताल	318	भ. वासुपूज्य के गण और गणधर
	कलश के मध्य भाग का अंतर	319 (1)	शुक्लपक्ष की-भाग-वृद्धि
		(2)	कृष्णपक्ष की-भाग-हानि
306	59. उनसठवाँ समवाय चन्द्र संवत्सर के दिन-रात	320 (1)	सौधर्म कल्प के प्रथम प्रस्तर में विमान
307	भ. सम्भवनाथ का गृहवास	(2)	सर्व वैमानिक देवों के विमान प्रस्तर
308	भ. मल्लीनाथ के अवधिज्ञानी मुनि		63. त्रेसठवाँ समवाय भ. ऋषभदेव का गृहवासकाल
309	60. साठवाँ समवाय एक मंडल में सूर्य के रहने का समय	321	हरिवर्ष के मनुष्यों का बाल्यकाल
310	लवण समुद्र के ज्वार-भाटे को रोकने वाले नागकुमार	322	निषध पर्वत पर सूर्य के मंडल
311	भ. विमलनाथ की ऊँचाई	323 (1)	नीलवंत पर्वत पर सूर्य के मंडल
312 (2)	बलीन्द्र के सामानिक देव	(2)	64. चोसठवाँ समवाय अष्ट अष्टमिका भिक्षु पड़िमा के दिन-रात
(2)	ब्रह्म देवेन्द्र के सामानिक देव	324	असुरकुमारों के भवन
313	सौधर्म-ईशान कल्प के विमान	325 (1)	

(2)	चमरेन्द्र के सामानिक देव	338	सर्व नक्षत्रों के सीमा विष्कम्भ का समांश
326	सर्व दधिमुख पर्वतों का आकार, विस्तार व ऊँचाई		68. अड़सठवाँ समवाय
327	सौधर्म-ईशान और ब्रह्मलोक कल्प के विमान	339 (1)	धातकी खण्डद्वीप के चक्रवर्तीविजय और राजधानियाँ
328	चक्रवर्ती के मुक्तामणि हार की लोडियाँ	(2)	धातकी खण्डद्वीप में तीन काल में उत्कृष्ट तीर्थकर की उत्पत्ति
	65. पैंसठवाँ समवाय		
329	जम्बूद्वीप में सूर्य मंडल	(3)	धातकी खण्डद्वीप में तीन काल में चक्रवर्ती, बलदेव और वासुदेव की उत्पत्ति
330	स्थविर मौर्यपुत्र का गृहवास काल		
331	सौधर्मावतंसक विमान की प्रत्येक दिशा के भवन	340 (1)	पुष्करवर द्वीपार्ध में तीन काल में चक्रवर्ती विजय और राजधानियाँ
	66. छसठवाँ समवाय		
332 (1)	दक्षिणार्ध मनुष्य क्षेत्र के चन्द्र	(2)	पुष्करवर द्वीपार्ध में तीन काल में उत्कृष्ट तीर्थकर
(2)	दक्षिणार्ध मनुष्य क्षेत्र के सूर्य	(3)	पुष्करवर द्वीपार्ध में तीन काल में चक्रवर्ती, बलदेव और वासुदेव
(3)	उत्तरार्ध मनुष्य क्षेत्र के चन्द्र		
(4)	उत्तरार्ध मनुष्य क्षेत्र के सूर्य	341	भ. विमलनाथ की श्रमण-संपदा
333	भ. श्रेयांसनाथ के गण व गणधर		69. उनहत्तरवाँ समवाय
334	मतिज्ञान की उत्कृष्ट स्थिति	342	समय क्षेत्र में मेरु पर्वत को छोड़कर शेष वर्ष (क्षेत्र) व वर्षधर पर्वत
	67. सड़सठवाँ समवाय		
335	पंचवर्षीय युग के नक्षत्र-मास	343	मेरुपर्वत के पश्चिमान्त से गौतम द्वीप के पश्चिमान्त का अंतर
336	हैमवत व एरवत क्षेत्रों की बाहाओं का आयाम		
337	मेरुपर्वत के पूर्वान्त से गौतम द्वीप के पूर्वान्त का अंतर	344	मोहनीय को छोड़कर शेष सात कर्मों की उत्तर कर्म प्रकृतियाँ

70. सित्तरवाँ समवाय		357	सम्मूर्छिम खेचर तिर्यच पंचेन्द्रिय जीवों की उत्कृष्ट स्थिति
345	भ. महावीर के वर्षावास के दिन-रात		
346	पुरुषादानीय भ. पार्श्वनाथ की श्रमण पर्याय		
347	भ. वासुपुज्य की ऊँचाई	358	73. तिहत्तरवाँ समवाय
348	मोहनीय कर्म की उत्कृष्ट स्थिति	359	हरिवर्ष व सम्यक् वर्ष की जीवा
349	देवराज माहेन्द्र के सामानिक देव		विजय बलदेव की सर्व आयु
	71. इकोत्तरवाँ समवाय		74. चौहत्तरवाँ समवाय
350	सूर्य की आवृत्ति का काल	360	स्थविर अग्निभूति की सर्व आयु
351	वीर्य प्रवाद पूर्व के प्राभूत		निषध वर्षधर पर्वत के तिगिच्छ द्रह से सीतोदा नदी का उद्गम प्रवाह
352 (1)	भ. अजितनाथ का गृहवास काल	361 (1)	नीलवंत वर्षधर पर्वत के केशरीद्रह से सीता नदी का उद्गम प्रवाह
(2)	सगर चक्रवर्ती का गृहवास काल	(2)	चतुर्थ नरक के अतिरिक्त छहों नरकों के नरकावास
	72. बहत्तरवाँ समवाय	362	75. पचहत्तरवाँ समवाय
353 (1)	सुपर्ण कुमार देवों के भवनवास		भ. सुविधिनाथ के सामान्य केवली
(2)	लवण समुद्र की बाह्यवेला को रोकने वाले नागकुमार	363 (1)	भ. शीतलनाथ का गृहवास काल
354 (1)	भ. महावीर की सर्व आयु	(2)	भ. शांतिनाथ का गृहवास काल
(2)	स्थविर अचलभ्राता का सर्व आयु	(3)	76. छिहत्तरवाँ समवाय
355 (1)	आभ्यंतर पुष्करार्ध में चन्द्र		विद्युत्कुमार के भवनों की संख्या
(2)	आभ्यंतर पुष्करार्ध में सूर्य	364 (1)	द्वीप कुमार, दिशा कुमार, उदधि कुमार, स्तनित-
(3)	चक्रवर्ती के पुर	(2)	कुमार, अश्विकुमार के भवनों की संख्या
356	पुरुष की कलायें		

77. सतहत्तरवाँ समवाय		अधस्तनभाग का अंतर	
365	भरत चक्री की कुमारावस्था	373	तमः प्रभा के मध्य भाग से तमः प्रभा के अधोवर्ती
366	अंगवंश की परंपरा के अणगार		घनोदधि का अंतर
367	गर्दतीय व तुषित लोकान्तिक देवों का परिवार	374	जम्बूद्वीप के प्रत्येक द्वार का अंतर
368	प्रत्येक मुहूर्त में लवों की गणना		80. अस्सीवाँ समवाय
	78. अठहत्तरवाँ समवाय		भ. श्रेयांसनाथ की ऊँचाई
369	वैश्रमण-शक्रेन्द्र के लोकपाल के आधिपत्य में सुवर्ण	375 (1)	त्रिपृष्ठ वासुदेव की ऊँचाई
	कुमार और द्वीप कुमार के भवन	(2)	अचल बलदेव की ऊँचाई
370	स्थविर अकंपित की सर्व आयु	(3)	त्रिपृष्ठ वासुदेव का राज्यकाल
371 (1)	सूर्य के उत्तरायण से लौटते समय दिन-रात की हानि	(4)	अपबहुल काण्ड का बाहल्य
(2)	सूर्य के दक्षिणायण से लौटते समय दिन-रात की हानि	376	ईशानेन्द्र के सामानिक देव
		377	जम्बूद्वीप में आभ्यन्तर मंडल में सूर्योदय
		378	
	79. उनहत्तरवाँ समवाय		81. इक्यासीवाँ समवाय
372 (1)	वलयायमुख पाताल कलश के अधस्तनभाग से रत्नप्रभा के अधस्तनभाग का अंतर	379	नवनवमिका भिक्षु प्रतिमा के दिन
(2)	केतु पाताल कलश के अधस्तनभाग से रत्नप्रभा के अधस्तनभाग का अंतर	380 (1)	भ. कुंशुनाथ के मनः पर्यव ज्ञानी
(3)	यूपक पाताल कलश के अधस्तनभाग से रत्नप्रभा के अधस्तनभाग का अंतर	(2)	व्याख्या प्रज्ञप्ति के अध्ययन
(4)	ईश्वर पाताल कलश के अधस्तनभाग से रत्नप्रभा के अधस्तनभाग का अंतर		82. बयासीवाँ समवाय
		381	जम्बूद्वीप में सूर्य के गमनागमन के मंडल
		382	भ. महावीर का गर्भ संहरण काल
		383 (1)	महाहिमवतं पर्वत के उपरितनभाग से सौगंधिक काण्ड

	के अधस्तन भाग का अंतर	395	व्याख्या प्रज्ञप्ति के पद
(2)	रुक्मि पर्वत के उपरितन भाग के सौगंधिक काण्ड के अधस्तन भाग का अंतर	396 (1) (2) (3)	नागकुमार के भवनावास प्रकीर्णकों की अधिकतम संख्या जीव-योनियों की संख्या
384	83. तयासीवाँ समवाय		
	भ. महावीर के गर्भसंहरण का दिन	397	पूर्व से शीर्ष प्रहेलिका पर्यन्त का गुणाकार
385 (1)	भ. शीतलनाथ के गण व गणधर	398	भ. ऋषभदेव की श्रमण संपदा
(2)	स्थविर मण्डितपुत्र की सर्व आयु	399	सर्व वैमानिक देवों के विमानावास
386 (1)	भ. ऋषभदेव का गृहवास काल		
(2)	भरत चक्रवर्ती का गृहवास काल	400	85. पच्चासीवाँ समवाय
	84. चोरासीवाँ समवाय		चूलिका सहित आचारांग के उद्देशक
387	समस्त नरकावास संख्या	401 (1)	धातकी खण्ड के मेरु पर्वतों की ऊँचाई
388 (1)	भ. ऋषभदेव का सर्वायु	(2)	रुचक मण्डलीक पर्वत की ऊँचाई
(2)	भरत चक्रवर्ती, बाहुबली, ब्राह्मी व सुन्दरी की सर्वायु	402	नन्दनवन के अधस्तन भाग से सौगंधिक काण्ड के अधस्तन भाग का अंतर
389	भ. श्रेयांसनाथ की सर्वायु		86. छियासीवाँ समवाय
390	त्रिपृष्ठ वासुदेव की सर्वायु	403 (1)	भ. सुविधिनाथ के गण व गणधर
391	शक्रेन्द्र के सामानिक देव	(2)	भ. सुपाश्वनाथ के वादी मुनि
392 (1)	सभी बाह्य मेरु पर्वतों की ऊँचाई	404	द्वितीय नरक के मध्य भाग से द्वितीय घनोदधिवात का अंतर
(2)	सभी अंजनक पर्वतों की ऊँचाई		
393	हरिवर्ष व रम्यकवर्ष की जीवाओं की परिधि		87. सत्तासीवाँ समवाय
394	पंक बहुल काण्ड के ऊपरी भाग से नीचे के भाग का अंतर	405 (1)	मेरुपर्वत के पूर्वान्त से गोस्तूभ आवास पर्वत के

	पश्चिमान्त का अंतर	4 समवायांग सूत्र विषय सूची	पश्चिमान्त का अंतर
(2)	मेरुपर्वत के दक्षिण चरमान्त से दगभास आवास पर्वत के उत्तर चरमान्त का अंतर	(4)	मेरुपर्वत के उत्तरान्त से दकसीम आवास पर्वत के उत्तरान्त का अंतर
(3)	मेरुपर्वत के पश्चिमान्त से शंख आवास पर्वत के पूर्व चरमान्त का अंतर	411 (1)	उत्तरायण में दिन-रात की हानि-वृद्धि
(4)	मेरुपर्वत के उत्तर चरमान्त से दगसीम आवास पर्वत के दक्षिण चरमान्त का अंतर	(2)	दक्षिणायण में दिन-रात की हानि-वृद्धि
406	ज्ञानावरणीय और अन्तराय को छोड़कर शेष छह कर्मों की उत्तर प्रकृतियाँ	412 (1)	89. नवासीवाँ समवाय
407 (1)	महाहिमवन्त कूट के ऊपरी भाग से सौर्गधिक काण्ड के अधोभाग का अंतर	(2)	भ. ऋषभदेव का निर्वाण-काल
(2)	रूक्मी कूट के ऊपरी भाग से सौर्गधिक काण्ड के अधोभाग का अंतर	413	भ. महावीर का निर्वाण-काल
		414	हरिषेण चक्रवर्ती का राज्य-काल
			भ. शातिनाथ की उत्कृष्ट श्रमणी संपदा
		415 (1)	90. नब्बेवाँ समवाय
		(2)	भ. शीतलनाथ की ऊँचाई
		(3)	भ. अजितनाथ के गण व गणधर
408	एक चन्द्र व सूर्य के ग्रहों की संख्या	416	भ. शातिनाथ के गण व गणधर
409	दृष्टिवाद के सूत्रों की संख्या	417	स्वयंभू वासुदेव का दिग्विजय काल
410 (1)	मेरुपर्वत के पूर्वान्त से गोस्तूभ आवास पर्वत के पूर्वान्त का अंतर		सर्ववृत्त वैताढ्य पर्वतों के शिखरों से सौर्गधिक काण्ड के अधस्तन भाग का अंतर
(2)	मेरुपर्वत के दक्षिणान्त से दगभास आवास पर्वत के दक्षिणान्त का अंतर	418	91. इक्यान्वेवाँ समवाय
(3)	मेरुपर्वत के पश्चिमान्त से शंख आवास पर्वत के	419	पर वैयावृत्य प्रतिमाएं
			कालोद समुद्र की परिधि

420	भ. कुंथुनाथ के अवधिज्ञानी मुनि	428	भ. अजितनाथ के अवधिज्ञानी मुनि
421	आयु और गोत्र कर्म को छोड़कर शेष छह कर्मों की उत्तर प्रकृतियाँ	429	95. पंचानवेवाँ समवाय
	92. बानवेवाँ समवाय	430 (1)	भ. सुपार्श्वनाथ के गण व गणधर
422	सर्व प्रतिमाओं की संख्या		जम्बूद्वीप के अंतिम भाग से (चारों दिशा में) चारों
423	स्थविर इन्द्रभूति की सर्व आयु	(2)	पाताल कलशों का अंतर
424 (1)	मेरुपर्वत के मध्य भाग से गोस्तूभ आवास पर्वत के पश्चिमान्त का अंतर		लवण समुद्र के दोनों पार्श्व में उद्देध और उत्सेध की
(1)	मेरुपर्वत के मध्य भाग से दगभास आवास पर्वत के उत्तरान्त का अंतर	431 (1)	हानि का प्रमाण
(1)	मेरुपर्वत के मध्य भाग से शंख आवास पर्वत के पूर्वान्त का अंतर	(2)	भ. कुंथुनाथ की परमायु
(1)	मेरुपर्वत के मध्य भाग से दकसीम आवास पर्वत के दक्षिणान्त का अंतर	432	स्थविर मौर्य पुत्र की सर्वायु
	93. तिरानवेवाँ समवाय	433	96. छानवेवाँ समवाय
425 (1)	भ. चन्द्रप्रभ के गण व गणधर	434 (1)	चातुरंत चक्रवर्ती के ग्राम
(1)	भ. शातिनाथ के चौदहपूर्वी शिष्य	(2)	वायुकुमार के भवन
426	दिन-रात की हानि-वृद्धि जिस मंडल में होती है	435	दण्ड का अंगुल प्रमाण
	94. चौरानवेवाँ समवाय		धनुष, नालिका, अक्ष व मूसल का अंगुल प्रमाण
427	निषध व नीलवंत पर्वतों की जीवाओं का आयाम	436 (1)	आभ्यन्तर मंडल में प्रथम मुहूर्त की छाया का प्रमाण
		(2)	97. सत्तानवेवाँ समवाय
			मेरुपर्वत के पश्चिमान्त से गोस्तूभ आवास पर्वत के पश्चिमान्त का अंतर
			मेरुपर्वत के उत्तरान्त से दगभास पर्वत के उत्तरान्त का अंतर

(3)	मेरुपर्वत के पूर्वान्त से शंख पर्वत के पूर्वान्त का अंतर	443	रेवती से ज्येष्ठा पर्यन्त नक्षत्रों के तारे
(4)	मेरुपर्वत के दक्षिणान्त से दगसीम पर्वत के दक्षिणान्त का अंतर	444	मेरुपर्वत की ऊँचाई
437	आठ कर्मों की उत्तर-प्रकृतियाँ	(2)	नन्दनवन के पूर्वान्त से पश्चिमान्त का अंतर
438	हरिषेण चक्रवर्ती का आगरवास समय	(3)	नन्दनवन के दक्षिणान्त के उत्तरान्त का अंतर
439	98. अट्टानवेवाँ समवाय नन्दनवन के ऊपरी भाग से पंडुकवन के अधोभाग का अंतर	445 (1)	उत्तरायन में प्रथम सूर्य मंडल का आयाम-विष्कम्भ
		(2)	द्वितीय सूर्य मंडल का आयाम-विष्कम्भ
		(3)	तृतीय सूर्य मंडल का आयाम-विष्कम्भ
440	मेरुपर्वत के पश्चिमान्त से गोस्तूभ आवास पर्वत के पूर्वान्त का अंतर	446	रत्नप्रभा में अंजन काण्ड के अधोभाग से वाणव्यन्तरो के भौमेय विहारों के ऊपरी भाग का अंतर
(2)	मेरुपर्वत के उत्तरान्त से दगभास पर्वत के दक्षिणान्त का अंतर	447	100. सौवाँ समवाय दश-दशमिका भिक्षु प्रतिमा के दिन
(3)	मेरुपर्वत के पूर्वान्त से शंख पर्वत के पश्चिमान्त का अंतर	448	शतीभिषा नक्षत्र के तारे
(4)	मेरुपर्वत के दक्षिणान्त से दगसीम पर्वत के उत्तरान्त का अंतर	449	भ. सुविधिनाथ की ऊँचाई
		(2)	भ. पार्श्वनाथ की सर्व आयु
		(3)	स्थविर आर्य सुधर्मा की सर्व आयु
441	दक्षिणार्ध भरत के धनुष्य का आयाम	450	सभी दीर्घ वैताढ्य पर्वतों की ऊँचाई
442	उत्तरी-उनपचासवें मंडल में दिन-रात की हानि-वृद्धि	(1)	सभी चुल्ल हिमवत पर्वतों की ऊँचाई
(2)	दक्षिणी-उनपचासवें मंडल में दिन-रात की हानि-वृद्धि	(2)	सभी वर्षाधर पर्वतों की गहराई
		(3)	सभी कंचनग पर्वतों की ऊँचाई, उद्वेध और मूल का विष्कम्भ
		(4)	

150. डेढसौवाँ समवाय

अनेकोत्तरिका-वृद्धि समवाय-सार्धशत से कोटाकोटि पर्यंत

(प्रकीर्णक)

451 (1) भ. चन्द्रप्रभ की ऊँचाई

(1) आरण कल्प के विमानावास

(1) अच्युत कल्प के विमानावास

200. दोसौवाँ समवाय

452 भ. सुपार्श्वनाथ की ऊँचाई

453 सभी महाहिमवतं व रुक्मी वर्षधर पर्वतों की ऊँचाई

और उद्वेध

454 जम्बूद्वीप के कौचनगिरी पर्वत

250. ढाईसौवाँ समवाय

455 भ. पद्मप्रभ की ऊँचाई

456 असुरकुमारों के प्रासादों की ऊँचाई

300. तीनसौवाँ समवाय

457 (1) भ. सुमतिनाथ की ऊँचाई

(2) भ. अरिष्टनेमि का गृहवास काल

458 वैमानिक देवों के विमानों के प्राकारों की ऊँचाई

459 (1) भ. महावीर के चौदह पूर्वी मुनि

(2) पाँच सौ धनुष की काया वाले सिद्धों के जीव प्रदेशों

की अवागाहना

350. साढ़े तीनसौवाँ समवाय

460 (1) भ. पार्श्वनाथ के चौदह पूर्वधारी मुनि

(2) भ. अभिनन्दन की ऊँचाई

400. चारसौवाँ समवाय

461 भ. सम्भवनाथ की ऊँचाई

462 (1) सभी निषध व नीलवतं वर्षधर पर्वतों की ऊँचाई व

गहराई

(2) सभी वक्षस्कार पर्वतों की ऊँचाई और गहराई

463 आनत-प्राणत कल्प के विमान

464 भ. महावीर के उत्कृष्टवादी मुनि

450. साढ़े चारसौवाँ समवाय

465 (1) भ. अजितनाथ की ऊँचाई

(2) सगर चक्रवर्ती की ऊँचाई

500. पाँचसौवाँ समवाय

466 (1) मेरुपर्वत के समीप सभी वक्षस्कार पर्वतों की ऊँचाई

व गहराई

(2) सभी वर्षधर पर्वतों के कूटों की ऊँचाई व चौड़ाई

467 (1) भ. ऋषभदेव की ऊँचाई

(2) भरत चक्रवर्ती की ऊँचाई

468 (1)	सोमनस, गंधमादन, विद्युत्प्रभ व माल्यवंत वक्षस्कार पर्वतों की ऊँचाई और गहराई	(2)	रूक्मि कूट के ऊपरी तल से अधस्तल का अंतर
(2)	हरि व हरिस्सह कूटों को छोड़कर शेष सभी कूटों की ऊँचाई और मूल का आयाम-विष्कम्भ	475	800. आठसौवाँ समवाय
(3)	बलकूट को छोड़कर सर्व नंदन कूटों की ऊँचाई और मूल का आयाम-विष्कम्भ	476	महाशुक्र व सहस्रार कल्प के विमानों की ऊँचाई
469	सौधर्म-ईशान कल्प के विमानों की ऊँचाई	477	रत्नप्रभा के प्रथम काण्ड में वाणव्यंतर देवों के भौमेय विहार-नगर
	600. छसौवाँ समवाय		भ. महावीर के अनुत्तरोपपातिक मुनियों की उत्कृष्ट संपदा
470 (1)	सनत्कुमार व माहेन्द्र कल्प के विमानों की ऊँचाई	478	रत्नप्रभा पृथ्वी के भूभाग से सूर्य की ऊँचाई
(2)	चुल्ल हिमवंत कूट के सर्वोपरि भाग से अधोभाग का अंतर	479	भ. अरिष्टनेमि के उत्कृष्ट वादी मुनि
(3)	शिखरी कूट के सर्वोपरि भाग से अधोभाग का अंतर	480 (1)	900. नौसौवाँ समवाय
471 (1)	भ. पार्श्वनाथ के वादी मुनि	(2)	आनत प्राणत-आरण व अच्युत कल्प के विमानों की ऊँचाई
(2)	अभिचंद कुलकर की ऊँचाई	(3)	निषध कूट के ऊपरी तल से अधस्तल का अंतर
(3)	भ. वासुपूज्य के साथ दीक्षित होने वाले पुरुष	481 (1)	नीलवंत कूट के ऊपरी तल से अधस्तल का अंतर
	700. सातसौवाँ समवाय	(2)	विमल वाहन कुलकर की ऊँचाई
472	ब्रह्म व लातंक कल्प के विमानों की ऊँचाई	482 (1)	रत्नप्रभा के ऊपरी तल से ताराओं की ऊँचाई
473 (1)	भ. महावीर के वैक्रिय लब्धिधारी शिष्य	(2)	निषध पर्वत के शिखर से (रत्नप्रभा के) प्रथम काण्ड के मध्य भाग का अंतर
(2)	भ. अरिष्ट नेमिनाथ का केवली पर्याय	(2)	नीलवंत के शिखर से (रत्नप्रभा के) प्रथम काण्ड के मध्य भाग का अंतर
474 (1)	महाहिमवंत कूट के ऊपरी तल से अधस्तल का अंतर		

1000. एक हजारवाँ समवाय		3000. तीन हजारवाँ समवाय	
483 (1)	सर्व ग्रैवेयक विमानों की ऊँचाई	491	रत्नप्रभा के वज्र काण्ड के चरमान्त से लोहिताक्ष काण्ड के चरमान्त का अंतर
(2)	सर्व यमक पर्वतों की ऊँचाई, उद्वेध और मूल का आयाम-विष्कम्भ		
(3)	चित्रकूट व विचित्र कूट की ऊँचाई, उद्वेध और मूल का आयाम-विष्कम्भ	492	तिगिच्छद्रह व केसरिद्रह का आयाम
484	सर्व वृत्त वैताढ्य पर्वतों की ऊँचाई, उद्वेध, मूल का विष्कम्भ व आकार	493	5000. पाँच हजारवाँ समवाय धरणीतल पर मेरु के मध्य भाग से चारों दिशाओं में मेरुपर्वत के अंतिम भाग का अंतर
485 (1)	वक्षस्कार कूट छोड़कर हरि, हरिस्सह कूटों की ऊँचाई, उद्वेध और मूल का विष्कम्भ	494	6000. छ हजारवाँ समवाय सहस्रार कल्प के विमानावास
(2)	नंदन कूट छोड़कर बलकूटों की ऊँचाई, उद्वेध और मूल का विष्कम्भ	495	7000. सात हजारवाँ समवाय रत्नकाण्ड (रत्नप्रभा) के ऊपरी तल से पुलक काण्ड के अधस्तल का अंतर
486 (1)	भ. अरिष्टनेमिनाथ की सर्व आयु		
(2)	भ. पार्श्वनाथ के अंतेवासी शिष्य	496	8000. आठ हजारवाँ समवाय हरिवर्ष व रम्यक् वर्ष का विस्तार
487	पद्मद्रह व पुण्डरिकद्रह का आयाम		
488	1100. ग्यारह सौवाँ समवाय अनुत्तरोपपातिक देवों के विमानों की ऊँचाई	497 (1)	9000. नौ हजारवाँ समवाय दक्षिणार्ध भरत की जीवा का आयाम
489	भ. पार्श्वनाथ के वैक्रिय लब्धि वाले शिष्य	(2)	(भ. अजितनाथ के अवधिज्ञानी मुनि)
490	2000. दो हजारवाँ समवाय महापद्मद्रह व महापुंडरिकद्रह का आयाम	498	10000. दस हजारवाँ समवाय मेरुपर्वत के धरणीतल का विष्कम्भ

499	एक लाखवाँ समवाय जम्बूद्वीप का आयाम-विष्कम्भ	508	दस लाखवाँ समवाय पुरुषसिंह वासुदेव का सर्व आयु
500	दो लाखवाँ समवाय लवण समुद्र का चक्रवाल विष्कम्भ	509	कोटि समवाय भ. महावीर का छठे पोट्टिल भव का श्रामण्य पर्याय
501	तीन लाखवाँ समवाय भ. पार्श्वनाथ की श्राविकाओं की उत्कृष्ट संपदा	510	कोटाकोटि समवाय भ. ऋषभदेव और भ. महावीर का अंतर
502	चार लाखवाँ समवाय धातकी खण्ड द्वीप का चक्रवाल विष्कम्भ	511	द्वादशांग परिचय बारह अंगों के नाम
503	पांच लाखवाँ समवाय लवण समुद्र के पूर्वान्त से पश्चिमान्त का अंतर	512-514	आचारांग सूत्र का स्वरूप
504	छह लाखवाँ समवाय भरत चक्रवर्ती का राज्य-काल	515-518	सूत्रकृतांग सूत्र का स्वरूप
505	सात लाखवाँ समवाय जम्बूद्वीप की पूर्व वेदिका से धातकी खण्ड के पश्चिमान्त का अंतर	519-521	स्थानांग सूत्र का स्वरूप
506	आठ लाखवाँ समवाय माहेन्द्र कल्प के विमानावास	522-525	व्याख्याप्रज्ञप्ति सूत्र का स्वरूप
507	नव लाखवाँ समवाय भ. अजितनाथ के अवधिज्ञानी मुनि	526-529	समवायांग सूत्र का स्वरूप
		530-534	ज्ञाताधर्मकथांग सूत्र का स्वरूप
		535-538	उपासकदशांग सूत्र का स्वरूप
		539-541	अंतकृद्दशांग सूत्र का स्वरूप
		542-545	अनुत्तरोपपातिकदशांग सूत्र का स्वरूप
		546-549	प्रश्रव्याकरण सूत्र का स्वरूप
		550-556	विपाक सूत्र का स्वरूप
		557-574	दृष्टिवाद सूत्र का स्वरूप

विविध-विषय-निरूपण

575	दो प्रकार की राशियां	589	ज्योतिष्कावासों का वर्णन
576	दो प्रकार की अजीव राशि	590-592	वैमानिकावासों का वर्णन
577	अरुपी अजीव राशि के भेद	593-594	चौबीस दण्डकों में स्थिति
578	रुपी अजीव राशि के अनेक भेद	595	शरीर के प्रकार
579	जीव राशि के भेद-प्रभेद	596	औदारिक शरीर के प्रकार
580	अनुत्तरोपपत्तिक देवों के प्रकार	597	औदारिक शरीर की उत्कृष्ट अवगाहना
581	चौबीस दण्डकों के जीवों के दो भेद	598	वैक्रिय शरीर के प्रकार
582	रत्नप्रभा पृथ्वी के नरकावासों की क्षेत्र-अवगाहना	599	आहारक शरीर के भेद-प्रभेद
583-584	(1) सातों नरक पृथ्वियों का बाहल्य	600	आहारक शरीर का आकार
	(2) सातों नरकों के नरकावास	601	आहारक शरीर की अवगाहना
	(3) दस भवनपति देवों के भवनों की संख्या	602	तेजस् शरीर के प्रकार
	(4) वैमानिक देवों के विमानों की संख्या	603	(1) मारणांतिक समुद्रघात प्राप्त ग्रैवेयक देव के शरीर की अवगाहना
585	(1) सातवीं नरक के नरकावासों की क्षेत्र अवगाहना, नाम व संस्थान		(2) कर्मण शरीर पूर्ववत् अवधिज्ञान के प्रकार
	(2) सर्व नरकावास, सर्व भवनावास, सर्व विमान	604	वेदना के प्रकार
	(3) नरकावास और नरकों में वेदना	605-606	लेश्या के प्रकार
586	भवनावासों का वर्णन	607	आहार के प्रकार
587	पृथ्वीकायिकावासों का वर्णन-यावत्-मनुष्यावासों का वर्णन	608-609	आयुर्कर्म बंध के प्रकार
	वाणव्यंतरावासों का वर्णन	610	चौबीस दंडकों में आयु बंध
588		611	नरक गति में विरह के बाद उपपात का अंतर
		612	

613	तिर्य्य, मनुष्य व देवगति के बाद उपपात का अंतर	637	चौबीस तीर्थंकरों की शिविकाएँ
614	सिद्ध गति में विरह का समय	638	शिविकाओं को वहन करने वाले मनुष्य
615	रत्नप्रभा पृथ्वी का विरह काल	639	चौबीस तीर्थंकरों की जन्मभूमियाँ
616	नारक जीव जातिनाम निश्चायुष्क कर्म कितने आकर्षों से बंध	640	चौबीस तीर्थंकरों के देवदूष्य
617	संहनन के प्रकार	641	चौबीस तीर्थंकरों के साथ दीक्षित होने वाले पुरुष
618-621	चौबीस दण्डक में संहनन का वर्णन	642	चौबीस तीर्थंकरों के दीक्षा समय के तप
622-624	चौबीस दण्डक में संस्थान का वर्णन	643	चौबीस तीर्थंकरों के प्रथम भिक्षा दाता
625	वेद के प्रकार	644	चौबीस तीर्थंकरों के प्रथम भिक्षा मिलने का समय
626-628	चौबीस दण्डक में वेदों का वर्णन	645	चौबीस तीर्थंकरों को प्रथम भिक्षा में मिलने वाले पदार्थ
अतीत-अनागतकालिक महापुरुष			
629	कल्पसूत्रान्तर्गत समवसरण वर्णन	646	चौबीस तीर्थंकरों के चैत्यवृक्ष
630	जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में अतीत उत्सर्पिणी के कुलकर	647	चौबीस तीर्थंकरों के चैत्यवृक्षों की ऊँचाई
631	जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में अतीत अवसर्पिणी के कुलकर	648	चौबीस तीर्थंकरों के प्रथम शिष्य
632 (1)	जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में इस अवसर्पिणी के कुलकर	649	चौबीस तीर्थंकरों की प्रथम शिष्याएँ
(2)	सात कुलकरों की भार्यायें	650	जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में इस अवसर्पिणी में चक्रवर्तियों के पिता
633	जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में इस अवसर्पिणी के चौबीस तीर्थंकरों के पिता	651	बारह चक्रवर्तियों की माताएँ
634	चौबीस तीर्थंकरों की माताएँ	652	बारह चक्रवर्ती के नाम
635	चौबीस तीर्थंकरों के नाम	653	बारह चक्रवर्तियों के स्त्री रत्न
636	चौबीस तीर्थंकरों के पूर्वभव के नाम	654	जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में इस अवसर्पिणी में नो बलदेव और नो वासुदेव के पिता

१७२	अतीत-अनागत कालिक महापुरुष	4 समवायांग सूत्र विषय सूची	सम. सूत्र 655-677
655	नौ वासुदेव की माताएँ	670	जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में आगामी उत्सर्पिणी में बारह चक्रवर्ती
656	नौ बलदेव की माताएँ		
657	नौ दशर मंडल-नौ बलदेव व नौ वासुदेव का वर्णन	671	चक्रवर्तियों के पिता, माता व स्त्री रत्न
658	नौ बलदेव-वासुदेव के नाम	672 (1)	नौ बलदेव नौ वासुदेव के पिता व माता तथा उनके दशर मंडल का वर्णन
659	नौ बलदेव-वासुदेव के पूर्वभव के नाम		
660	नौ बलदेव-वासुदेव के पूर्वभव के धर्माचार्य	(2)	आगामी उत्सर्पिणी काल के वासुदेव के नाम
661	नौ वासुदेव की निदान भूमियाँ	(3)	आगामी उत्सर्पिणी काल के बलदेव के नाम
662	नौ वासुदेव के निदान के नौ कारण	673	आगामी नौ बलदेव-वासुदेवों के पूर्वभव के नाम, धर्माचार्य, निदान भूमियाँ, निदान कारण व नौ प्रतिवासुदेव
663 (1)	नौ प्रतिवासुदेव के नाम		
(2)	नौ वासुदेवों की गति		
(3)	नौ बलदेवों की गति	674	जम्बूद्वीप के एरवत क्षेत्र में आगामी उत्सर्पिणी में चौबीस तीर्थकर
664	जम्बूद्वीप के एरवत क्षेत्र में इस अवसर्पिणी के चौबीस तीर्थकर	675 (1)	बारह चक्रवर्ती, उनके पिता, माता व स्त्री रत्न
665	जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में आगामी उत्सर्पिणी के सात कुलकर	(2)	नौ बलदेव-नौ वासुदेवों के पिता, माता व दशर मंडल
666	जम्बूद्वीप के एरवत क्षेत्र में आगामी उत्सर्पिणी में दस कुलकर	(3)	नौ प्रतिवासुदेव, उनके पूर्वभव के नाम, पूर्वभव के धर्माचार्य नाम, निदान भूमियाँ व निदान के कारण
667	जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में आगामी उत्सर्पिणी में चौबीस तीर्थकर	(4)	आगामी उत्सर्पिणी के एरवत क्षेत्र में उत्पन्न होने वाले बलदेव आदि का मुक्ति गमन कथन
668	आगामी चौबीस तीर्थकरों के पूर्वभव के नाम	676	आगामी उत्सर्पिणी काल में होने वाले वासुदेवों का कथन
669	आगामी चौबीस तीर्थकरों के पिता, माता, शिष्य, शिष्याएं, प्रथम भिक्षा देने वाले व चैत्य वृक्ष	677	उपसंहार- समवायांग में वर्णित संक्षिप्त विषय

णमो णाणस्स

सर्वानुयोगमय भगवती सूत्र (व्याख्याप्रज्ञप्ति सूत्र)

श्रुत स्कंध	1				संक्षिप्त परिचय
शतक, अवान्तर शतक	138	5	(1)		ख. प्रश्न के लिए उद्यत गौतम गणधर
उद्देशक	1627		(2)		प्रथम 'चलन' उद्देशक
प्रश्नोत्तर	36000				'चलमान चलित' आदि नव प्रश्नोत्तर
पद	288000	6	(1-1)		नौ पदों में से चार पद एकार्थक और पाँच पद
गद्य सूत्र	5293		(1-2)		नानार्थक
पद्य सूत्र	72		(1-3)		नैरयिकों की स्थिति
			(1-4)		नैरयिकों का श्वासोच्छ्वास
			(1-5)		नैरयिक आहारार्थी
					आहारित पुद्गलों के परिणमन के 4 प्रश्नोत्तर
					नैरयिकों द्वारा आहारित पुद्गलों के चित आदि
					छह प्रश्नोत्तर
			(1-6)		नैरयिकों के कर्मद्रव्य की वर्णना के पुद्गलों का

णमो संजयाणं

5 भगवती सूत्र विषय सूची

प्रथम शतक

उत्थानिका

सूत्रांक

1	क. नमस्कार महामंत्र				उपचय आदि
	ख. ब्राह्मी लिपि को नमस्कार		(6)		क. नैरयिकों के कर्मद्रव्य वर्णना के पुद्गलों का
2	श्रुत को नमस्कार				चयन, उपचयन
3	प्रथम शतक के दस उद्देशकों के नाम				ख. नैरयिकों द्वारा कर्मद्रव्य वर्णना के पुद्गलों
4	उपोद्घात				की उदीरणा, वेदना, निर्जरा के प्रश्न
(1)					ग. नैरयिकों की कर्म-द्रव्य-वर्णना के पुद्गलों
(2-4)	क. भ. महावीर और गौतम गणधर का				

के अपवर्तन, संक्रमण, निधत्त और निकाचित के प्रश्न		सुवर्ण कुमार से स्तनित कुमार पर्यन्त असुर कुमार के समान	
(1-7)	नैरयिकों द्वारा तैजस्, कर्मण रूप में पुद्गलों का ग्रहण	(4-11)	पृथ्वी कायिकों की स्थिति
(1-8)	नैरयिकों द्वारा तैजस्, कर्मण रूप में गृहीत पुद्गलों की उदीरणा, वेदना, निर्जरा	(12-1)	पृथ्वी कायिकों का श्वासोच्छ्वास काल
(1-9)	नैरयिकों द्वारा अचलित कर्मों का बंधन, उदीरणा, वेदन, अपवर्तन, संक्रमण, निधत्ति व निकाचन	(12-2)	पृथ्वी कायिक आहारार्थी
(1-10)	नैरयिकों द्वारा चलित कर्मों की निर्जरा	(12-3)	पृथ्वी कायिकों की आहारेच्छा का समय
(2-1)	असुर कुमारों की स्थिति	(12-4)	क. पृथ्वी कायिकों की आहार लेने की दिशा
(2-2)	असुर कुमारों का श्वासोच्छ्वास काल	(12-5)	ख. पृथ्वी कायिकों के आहार के द्रव्यों के वर्ण-गंध-रस-स्पर्श
(2-3)	असुर कुमारों की आहारेच्छा		ग. पृथ्वी कायिकों में आहार का परिणमन
(2-4)	असुर कुमारों की आहारेच्छा का समय	(13-16)	अकाय से वनस्पतिकाय पर्यन्त पृथ्वीकाय के समान
(2-5)	असुर कुमारों के आहार के पुद्गल	(17-1)	क. द्वीन्द्रियों की स्थिति
(2-6)	असुर कुमारों में आहार के पुद्गलों का परिणमन		ख. द्वीन्द्रियों का श्वासोच्छ्वास काल
(3-1)	नाग कुमारों की स्थिति	(17-2)	द्वीन्द्रियों की आहारेच्छा
(3-2)	नाग कुमारों का श्वासोच्छ्वास काल	(17-3)	द्वीन्द्रियों के आहार का परिमाण
(3-3)	नाग कुमारों की आहारेच्छा	(17-4)	द्वीन्द्रियों के पुद्गलों का अल्पबहुत्व
(3-4)	नागकुमारों की आहारेच्छा का समय	(17-5)	द्वीन्द्रियों का आहार-परिणमन
(3-5)	आहार-पुद्गलों का परिणमन	(17-6)	द्वीन्द्रियों के पूर्व आहत पुद्गलों की परिणति आदि पूर्ववत्

(18-19) क.	त्रीन्द्रिय-चतुरिन्द्रिय जीवों की स्थिति			ग.	वैमानिक देवों के आहार का समय जघन्य, मुहूर्त पृथक्त्व, उत्कृष्ट तेतीस हजार वर्ष के पश्चात्
(18-19) ख.	त्रीन्द्रियों-चतुरिन्द्रियों के द्वारा गृहीत पुद्गलों का अल्प-बहुत्व				
(18-19) ग.	त्रीन्द्रियों और चतुरिन्द्रियों के आहार का परिणमन	7	(1)		आत्मारंभी, परारंभी, उभयारंभी और अनारंभी जीव
(20) क.	पंचेन्द्रिय तिर्यचों की भिन्न-भिन्न स्थिति		(2)		जीवों का आत्मारंभी आदि होना युक्ति संगत
ख.	उच्छ्वास की विभिन्न मात्रा	8			चौबीस दण्डकों में आत्मारम्भ आदि
ग.	पंचेन्द्रिय तिर्यचों के आहार का समय एवं परिणमन आदि	9			सलेश्य जीवों में आत्मारम्भ आदि
(21) क.	मनुष्यों की भिन्न-भिन्न स्थिति	10			ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप और संयम का इह भव, परभव और उभयभव में अस्तित्व-नास्तित्व
ख.	उच्छ्वास की विभिन्न मात्रा	11			क. असंवृत अनगार के निर्वाण का निषेध
ग.	मनुष्यों के आहार का समय	12			ख. असंवृत अनगार का दृढ़कर्म बंधन
घ.	मनुष्यों के आहार का परिणमन				क. संवृत अनगार का निर्वाण
(22) क.	वाणव्यंतर देवों की भिन्न-भिन्न स्थिति	13	(1)		ख. संवृत अनगार का शिथिल कर्म बंधन
(23) क.	ज्योतिषी देवों की भिन्न-भिन्न स्थिति				असंयत अविरत जीवों की देवगति और उसके कारण
ख.	ज्योतिषी देवों का श्वासोच्छ्वास काल		(2)		वाणव्यंतर देवों के रमणीय देवलोक
ग.	ज्योतिषी देवों के आहार का समय		(3)		उपसंहार
(24) क.	वैमानिक देवों की भिन्न-भिन्न स्थिति				द्वितीय दुःख उद्देशक
ख.	वैमानिक देवों का श्वासोच्छ्वास काल जघन्य	1			उत्थानिका
	मुहूर्त पृथक्त्व, उत्कृष्ट तेतीस पक्ष के पश्चात्	2			जीव का स्वयंकृत दुःख-वेदन, (एक जीव की

अपेक्षा)					क. नैरयिकों में समान आहार, शरीर, श्वासोच्छ्वास का निषेध
क. जीव के स्वयंकृत दुःख-वेदन का कारण					ख नैरयिकों में आहार, शरीर और श्वासोच्छ्वास के समान न होने का कारण
ख. चौबीस दण्डकों में जीव का स्वयंकृत दुःख-वेदन		5	(1)		नैरयिकों में समान कर्म न होने का कारण
जीवों का स्वयंकृत दुःख-वेदन (बहुत जीवों की अपेक्षा)				(2)	नैरयिकों में समान वर्ण न होने का कारण
क. जीवों के स्वयंकृत दुःख-वेदन का कारण				(3)	नैरयिकों में समान लेश्या न होने का कारण
ख. चौबीस दण्डकों में जीवों का स्वयंकृत दुःख-वेदन				(4)	नैरयिकों में समान वेदना न होने का कारण
क. जीव का स्वयंकृत आयुवेदन, (एक जीव की अपेक्षा)				(5)	नैरयिकों में समान क्रिया न होने का कारण
ख. जीव का स्वयंकृत आयुवेदन का कारण				(6)	नैरयिकों में समान आयु और साथ उत्पन्न न होने का कारण
ग. चौबीस दण्डकों में स्वयंकृत आयुवेदन				(7)	कारण
घ. जीवों का स्वयंकृत आयुवेदन (बहुत जीवों की अपेक्षा)		6	(1)		क. असुर कुमारों में आहार, शरीर, श्वासोच्छ्वास, वेदना, क्रिया, आयु और उत्पन्न होने में समानता का निषेध
ङ. जीवों का स्वयंकृत आयुवेदन का कारण					ख. कर्म, वर्ण और लेश्या का वर्णन नैरयिकों से विपरीत समझना
च. चौबीस दण्डकों में स्वयंकृत आयुवेदन				(2)	इसी प्रकार नागकुमार से-यावत्-स्तनित कुमार तक असुरकुमारों के समान
छ. चौबीस दण्डकों में-आहार, शरीर, श्वासोच्छ्वास, कर्म, वर्ण, लेश्या, वेदना, क्रिया, आयु और उत्पन्न होने का विचार		7	(1)		पृथ्वीकायिकों में आहार, कर्म, वर्ण और लेश्या नैरयिकों के समान

(2)	पृथ्वीकायिकों में समान वेदना होने का कारण	समानता और भिन्नता
(3)	पृथ्वीकायिकों में समान क्रिया होने का कारण	लेश्या वर्णन
(4)	पृथ्वीकायिकों में आयु और उत्पन्न होना नैरयिकों के समान	चार प्रकार का संसार संस्थान काल
8	अक्काय से-यावत्-चडरिन्द्रिय तक पृथ्वीकायिकों के समान	नैरयिकों का संसार संस्थान काल
9	पंचेन्द्रिय तिर्यज्चों में आहार आदि नैरयिकों के समान, किन्तु क्रिया में भिन्नता	तिर्यचों का संसार संस्थान काल
(2)	पंचेन्द्रिय तिर्यज्चों में समान क्रिया न होने का कारण	मनुष्यों और देवों का संसार संस्थान काल नैरयिकों के समान
10	क. मनुष्यों में शरीर से वेदना पर्यन्त नैरयिकों के समान, किन्तु आहार और क्रिया में भिन्नता	नैरयिकों के संसार संस्थान काल का अल्प-बहुत्व
(2)	ख. आहार में समानता न होने का कारण	तिर्यचों के संसार संस्थान काल का अल्प-बहुत्व
(2)	क. मनुष्यों में समान क्रिया न होने का कारण	मनुष्यों और देवों के संसार संस्थान काल का अल्प-बहुत्व
11	ख. आयु और उत्पन्न होना नैरयिकों के समान	चारों गतियों के संसार संस्थान काल का अल्प-बहुत्व
(1)	क. वाणव्यंतर, ज्योतिषी और वैमानिक देवों में आहारादि नैरयिकों के समान, किन्तु वेदना में भिन्नता	जीव की अंतक्रिया (मुक्ति)
12	ख. वाणव्यंतर, ज्योतिषी और वैमानिकों में वेदना समान न होने का कारण	देवगति पाने की योग्यता
	चौबीस दण्डकों में सलेश्य जीवों के आहारादि की	देवगति पाने योग्य असंयत जीवों का उपपात
		अखण्ड संयमियों का उपपात
		खण्डित संयमियों का उपपात
		अखण्ड संयमासंयमियों (श्रावकों) का उपपात
		खण्डित संयमासंयमियों (श्रावकों) का उपपात

(6)	असंज्ञी-अमैथुनिक सृष्टि जीवों का उपपात	ख. जीवों द्वारा त्रैकालिक कांक्षामोहनीय कर्म
(7)	तापसों का उपपात	देशकृत या सर्वकृत
(8)	कांदर्पिकों का उपपात	ग. कृत, चित, उपचित, उदीर्ण, वेदित और
(9)	चरक परिव्राजकों का उपपात	निजीर्ण भी त्रैकालिक
(10)	किल्बिषिकों का उपपात	जीवों का कांक्षामोहनीय कर्म वेदन कारण विचार
(11)	तिर्य्यच योनिकों का उपपात	कांक्षामोहनीय कर्म के कारण
(12)	आजीविकों का उपपात	सर्वज्ञ वाणी पर श्रद्धा करने वाला आराधक
(13)	आभियोगिकों (मंत्रादि विद्या वालों) का उपपात	अस्तित्व-नास्तित्व का परिणमन
(14)	दर्शनश्रष्ट स्वर्लिंगियों का उपपात	परिणमन के दो भेद
20	चार प्रकार का असंज्ञी आयुष्य	(1)
21	असंज्ञी जीवों के चार गति का आयुबंध और चारों गतियों में उत्पन्न असंज्ञी जीवों की स्थिति	(2)
22	असंज्ञी जीवों के आयुबंध का अल्प-बहुत्व	(3)
	तृतीय काँक्षा प्रदोष उद्देशक	समाधान
1	(1) क्रिया निष्पाद्य कांक्षामोहनीय कर्म	अस्तित्व-नास्तित्व में गमनीय
(2)	कांक्षामोहनीय कर्म देश या सर्वकृत (चौभंगी)	कांक्षामोहनीय कर्मबंध के कारणों की परम्परा
2	चौबीस दण्डकों में कांक्षामोहनीय कर्म देशकृत या सर्वकृत	कांक्षामोहनीय कर्म, प्रमाद, योग, वीर्य, शरीर किस से उत्पन्न ?
3	क. जीवों द्वारा त्रैकालिक कांक्षामोहनीय कर्म का बंधन	कांक्षामोहनीय कर्म की उदीरणा, गहाँ और संवर आत्मकृत
		अनुदीर्ण तथा उदीरणा योग्य कर्म की उदीरणा
		उत्थान आदि से कर्मों की उदीरणा

12	क. उपशमन गह्रा और संवर आत्मकृत है	11	जीव की त्रैकालिक स्थिति
13	ख. अनुदीर्ण कर्म का उपशमन	12	छद्मस्थ मनुष्य की केवल संयम, संवर, ब्रह्मचर्य और समिति-गुप्ति के पालन से ही मुक्ति नहीं
14	ग. उत्थान आदि से कर्म का उपशमन	13-15	तीनों कालों में केवली की ही मुक्ति
15	वेदन और गह्रा आत्मकृत है	16-18	तीनों कालों में अंतकृत की मुक्ति
	निर्जरा आत्मकृत		पंचम पृथ्वी उद्देशक
14 (1-6)	चौबीस दण्डकों में कांक्षामोहनीय कर्म का वेदन	1	सात पृथिव्याँ (सात नरक)
15 (1-3)	श्रमण निर्ग्रंथों का कांक्षामोहनीय कर्म का वेदन	2	सात नरकों के आवास संख्या
1	चतुर्थ कर्म प्रकृति उद्देशक	3	भवनवासी देवों के आवास संख्या
2	आठ कर्म प्रकृतियाँ	4	पृथ्वीकायिकों के -यावत्-ज्योतिषी देवों के आवास संख्या
	क. मोहनीय कर्म के उदयकाल में परलोक प्रयाण	5	सौधर्म कल्प के विमानावासों की संख्या
	ख. मोहनीय कर्म के उदयकाल में बाल-वीर्य से परलोक प्रयाण	6	चौबीस दण्डकों में स्थिति आदि दस स्थान
3	मोहनीय के उदयकाल में बालवीर्य से अपक्रमण	7 (1)	रत्नप्रभा के नरकावासों में स्थिति स्थान
4	पंडित वीर्य से मोहनीय का उपशमन	8-9	जघन्य एवं उत्कृष्ट स्थिति वाले नैरयिकों में कषाय के 27 भांगे
5	क. आत्मा द्वारा ही अपक्रमण होता है	10-11(2)	जघन्य या उत्कृष्ट अवगाहना वाले नैरयिकों में कषाय के 27 भांगे
6	ख. मोहनीय कर्म का वेदन होने पर ही मुक्ति	12 (3)	नैरयिकों में तीन शरीर
7-9	क. कर्म वेदन और परिणमन के दृष्टा सर्वज्ञ	13	तीन शरीर वाले नैरयिकों में कषाय के 27 भांगे
	ख. कृत कर्म का भोग किये बिना मुक्ति नहीं		
	पुद्गल की त्रैकालिक स्थिति		
10	स्कंध की त्रैकालिक स्थिति		

14 (4)	नैरयिकों में संहनन का निषेध	27	क. साकारोपयोग-अनाकारोपयोग वाले नैरयिकों में कषाय के 27 भागें
15	संहनन रहित नैरयिकों में कषाय के 27 भागें		
16 (5)	नैरयिकों का संस्थान	28	क. शेष 6 नारकों में भी रत्नप्रभा के समान पूर्ववत्
17	हुंड संस्थान वाले नैरयिकों में कषाय के 27 भागें	(11)	ख. प्रत्येक नरक में भिन्न-भिन्न लेश्या की गाथा
18 (6)	रत्नप्रभा में एक लेश्या	29	क. असुर कुमारों की स्थिति
19	कापोत लेश्या वाले नैरयिकों में कषाय के 27 भागें		ख. असुर कुमारों में कषाय के प्रतिलोम 27 भागें
20 (7)	रत्नप्रभा के नैरयिकों में तीन दृष्टि		ग. शेष भवनवासी देव असुर कुमारों के समान
21	क. सम्यग्दृष्टि नैरयिकों में कषाय के 27 भागें	30	क. पृथ्वीकायिकों की स्थिति
	ख. मिथ्यादृष्टि नैरयिकों में कषाय के 17 भागें	31	क. पृथ्वीकायिकों में कषाय के भागें नहीं
	ग. सम्यग्मिथ्यादृष्टि नैरयिकों में कषाय के 80 भागें		ख. तेजोलेश्या वाले पृथ्वीकायिकों में कषाय के 80 भागें
22 (8)	नैरयिक ज्ञानी भी हैं, अज्ञानी भी हैं	32	क. अकायिकों में कषाय के भागें नहीं
23	क. आभिनिबोधिक ज्ञान नैरयिकों में कषाय के 27 भागें		ख. तेस्कायिकों में कषाय के भागें नहीं
	ख. ज्ञानी और अज्ञानी नैरयिकों में कषाय के 27 भागें		ग. वायुकायिकों में कषाय के भागें नहीं
	नैरयिकों में तीन योग	33	घ. वनस्पतिकायिकों में कषाय के भागें नहीं
24 (9)			क. द्वीन्द्रिय आदि में स्थिति आदि दस स्थान
25	मन-वचन-काय योग वाले नैरयिकों में कषाय के 27 भागें	34	ख. कषाय के भागों में वैविध्य
	नैरयिकों में साकारोपयोग और अनाकारोपयोग	35	क. मनुष्यों में स्थिति आदि दस स्थान

ख. कषाय के भागों में वैविध्य	8-10	उन्नीस दण्डकों में प्राणातिपात क्रिया
क. वाणव्यंतर, ज्योतिष्क व वैमानिकों में स्थिति	11	चौबीस दण्डकों में प्राणातिपात-यावत्-मिथ्यादर्शन शल्य
ख. कषाय के भागों में वैविध्य	12	भ. महावीर और आर्यरोह के आठ प्रश्नोत्तर
षष्ठ 'यावन्त' उद्देशक	13 (1)	पूर्व या पश्चात् लोक-अलोक
उदयास्त के समय समान दूरी से सूर्य दर्शन	14 (2)	पूर्व या पश्चात् जीव-अजीव
उदयास्त के समय समान दूरी से प्रकाश क्षेत्र	15 (3-5)	पूर्व या पश्चात् भवसिद्धिक-अभवसिद्धिक, सिद्धि-असिद्धि, सिद्ध-संसारी
उदयास्त के समय समान दूरी से ताप क्षेत्र	16 (6)	पूर्व या पश्चात् अंड-कुर्कुटी
उदयास्त के समय समान दूरी से स्पर्श क्षेत्र	17 (7)	पूर्व या पश्चात् लोकान्त-अलोकान्त
लोकान्त और अलोकान्त का स्पर्श	18 (8)	पूर्व या पश्चात् लोकान्त, सप्तम अवकाशान्तर आदि
लोकान्त और अलोकान्त का छह दिशाओं में स्पर्श	19	पूर्व या पश्चात् लोकान्त, सप्तम तनुवात एवं घनवात, घनोर्द्धि व सप्तम पृथ्वी
द्वीपान्त और सागरान्त का स्पर्श	20-21	पूर्व या पश्चात् लोकान्त-अलोकान्त के साथ सर्वकाल
द्वीपान्त और सागरान्त का छह दिशाओं में स्पर्श	22	पूर्व या पश्चात् सप्तम अवकाशान्तर या सप्तम तनुवात
जलान्त और पोतान्त, छेदांत और वस्त्रांत, छायांत और आतपांत का भी छहों दिशाओं से स्पर्श	23	पूर्व या पश्चात् सप्तम तनुवात या सप्तम घनवात
जीव द्वारा प्राणातिपात क्रिया	24	पूर्व या पश्चात् त्रैकालिक पूर्ववत् सभी पद
प्राणातिपात क्रिया का छह दिशाओं में स्पर्श	25 (1)	आठ प्रकार की लोक स्थिति
कृत है वह क्रिया है	(2-3)	मशक का उदाहरण
क्रिया आत्मकृत है	26 (1)	जीव और पुद्गल का सम्बन्ध
क्रिया सदा (तीन काल में) अनुक्रमपूर्वक कृत है		

(2)	सछिद्र नाव का उदाहरण	10	गर्भ में उत्पन्न जीव अपेक्षाकृत सेन्द्रिय और अनिन्द्रिय
27 (1)	सूक्ष्म स्नेह काय का पतन और अवस्थिति	11	गर्भ में उत्पन्न जीव अपेक्षाकृत सशरीरी और अशरीरी
(2)	सूक्ष्म स्नेह काय का ऊर्ध्व-अधो व तिर्यक्पतन	12	गर्भ में उत्पन्न जीव का सर्वप्रथम आहार
(3)	सूक्ष्म स्नेह काय का शीघ्र विध्वंस	13	गर्भ में उत्पन्न जीव का आहार
	सप्तम नैरयिक उद्देशक		
1	चौबीस दण्डक में उत्पाद चतुर्भंगी	14 (1)	गर्भ स्थित जीव के मलमूत्रादि का अभाव
2	चौबीस दण्डक में आहार चतुर्भंगी	(2)	गर्भ स्थित जीव के आहार का परिणमन
3	चौबीस दण्डक में उद्वर्तनमान चतुर्भंगी	15	गर्भ स्थित जीव के कवलाहार का अभाव
4	चौबीस दण्डक में उद्वर्तनमान आहार चतुर्भंगी	16	गर्भस्थ जीव के मातृ अंग
5 (1)	चौबीस दण्डकों में उत्पन्न चतुर्भंगी	17	गर्भस्थ जीव के पितृ अंग
(2)	चौबीस दण्डकों में उद्वृत चतुर्भंगी	18	मातृ-पितृ अंगों की जीवन पर्यंत स्थिति,
6	चौबीस दण्डक में उत्पद्यमान चतुर्भंगी	19	गर्भगत जीव की नरकोत्पत्ति के हेतु-अहेतु
7	एक जीव और बहुत से जीवों की अपेक्षा तथा	20	गर्भगत जीव की देवलोकोत्पत्ति के हेतु-अहेतु
	चौबीस दण्डकों में विग्रह गति और अविग्रह गति	21	गर्भगत जीव का शयन-उत्थान आदि माता के समान
8 (1)	जीव विग्रह गति प्राप्त भी हैं और अविग्रह गति प्राप्त भी हैं	22 (1)	कर्मानुसार प्रसव
(2)	उन्नीस दण्डकों में विग्रह गति और अविग्रह गति प्राप्त की त्रिभंगी	(2)	कर्मानुसार प्रशस्त-अप्रशस्त वर्ण, रूप, गंध, रस, स्पर्श आदि
			अष्टम बाल उद्देशक
9	महर्द्धिक देव च्यवन होने के पश्चात् तिर्यचायु या मनुष्यायु का अनुभव करता है	1	एकांत बाल जीव (मिथ्यादृष्टि) की चारों गति में उत्पत्ति
		2	एकांत पंडित की दो गति

3	बाल-पंडित की सिर्फ एक देव गति	4	सप्तम अवकाशान्तर अगुरु-लघु
4	मृग-घातक पुरुष को लगने वाली क्रियाएँ	5 (1)	सप्तम तनुवात गुरु-लघु
5	आग लगाने वाले को लगने वाली क्रियाएँ	(2)	सप्तम घनवात घनोदधि व सप्तम पृथ्वी गुरु-लघु
6	मृगों से आजीविका चलाने वाले पुरुष को लगने वाली क्रियाएँ	(3)	सर्व अवकाशान्तर अगुरु-लघु
7	पुरुष-घातक पुरुष को लगने वाली क्रियाएँ	(4)	द्वीप, समुद्र और क्षेत्र गुरु-लघु
8	बरछी-तलवार से मारने वाला पांचों क्रियाओं से समान दो योद्धाओं में जय-पराजय का कारण	(1-3)	चौबीस दण्डकों में जीवों का लघुत्व और गुरुत्व
9	जीव सर्वीर्य भी है, अवीर्य भी है	7	चार अस्तिकाय अगुरु-लघुत्व
10	चौबीस दण्डक के जीव सर्वीर्य भी और अवीर्य भी	8	पुद्गलास्तिकाय गुरुलघु-अगुरुलघु
11		9	समय व कार्मण शरीर अगुरुलघु
1	नवम गुरुत्व उद्देशक	10 (1-3)	क. छह द्रव्य लेश्या गुरुलघु व अगुरुलघु
2	जीव का गुरुत्व और उसके कारण	11	ख. छ भाव लेश्या का अगुरुलघुत्व
3	जीव का लघुत्व और उसके कारण		त्रय दृष्टि, चार दर्शन, पांच ज्ञान, तीन अज्ञान व चार संज्ञा का अगुरु लघुत्व
	क. जीव की संसार-वृद्धि और उसके कारण	12	क. औदारिक आदि चार शरीर गुरुत्व-लघुत्व
	ख. जीव की संसार-हानि और उसके कारण	13	ख. कार्मण शरीर अगुरुत्व-लघुत्व
	ग. जीव का संसार लंबा होना और उसके कारण		क. मन योग व वचन योग अगुरुत्व-लघुत्व
	घ. जीव का संसार छोटा होना और उसके कारण	14	ख. काय योग गुरुत्व-लघुत्व
	ङ. जीव का संसार भ्रमण होना और उसके कारण	15	सकारोपयोग व अनाकारोपयोग अगुरुत्व-लघुत्व
	च. जीव का अंत और उसके कारण		सर्व द्रव्यों, सर्व प्रदेशों व सर्व पर्याय अगुरुत्व-लघुत्व

16	अतीत, अनागत काल व सर्व काल अगुरुत्व-लघुत्व का बंध होता है			
17	निर्ग्रथों के लिए लघुता-यावत्-अप्रतिबद्धता प्रशस्त	27		प्रासुक एषणीय आहार करने वाले निर्ग्रथ के शिथिल कर्मों का बंध होता है
18	निर्ग्रथों के लिए अक्रोध-यावत्-अलोभ प्रशस्त			क. अस्थिर में परिवर्तन होता है
19	निर्ग्रथों की अन्तःक्रिया के दो विकल्प	28		ख. स्थिर में परिवर्तन नहीं होता है
20	क. अन्यतीर्थी की मान्यता-एक समय में एक जीव के दो आयु का बंध			ग. बाल और पंडित शाश्वत है
	ख. भ. महावीर अनुसार-एक समय में एक जीव के एक ही आयु का बंध			घ. बालकपन और पंडितपन अशाश्वत है
21	(1) पार्श्वपत्नीय कालास्यवेषी अणगार के प्रश्न और स्थविर द्वारा समाधान	1	(1)	दशम चलन उद्देशक
	(2-4) सामायिक-सामायिक का अर्थ-यावत्-व्युत्सर्ग-व्युत्सर्ग का अर्थ		(2)	अन्यतीर्थियों की मान्यताएँ- चलमान अचलित -यावत्-निर्जीयमान अनिर्जीर्ण
(5)	क्रोधादि की निंदा का प्रयोजन		(3)	दो परमाणु पुद्गलों का न चिपकना
(6)	गृही संयम और उसका प्रतिफल		(4)	तीन परमाणु पुद्गलों का चिपकना
22	प्रश्न समाधान पाकर कालास्यवेषी की श्रद्धा सुदृढ़		(5)	पाँच परमाणु पुद्गलों के चिपकने से कर्मबंध
23	कालास्यवेषी द्वारा पंचमहाव्रत धर्म की स्वीकृति		(6)	बोलने से पूर्व या पश्चात् भाषा
24	कालास्यवेषी द्वारा संयम पालन व मुक्ति		(7)	पूर्व क्रिया या पश्चात् क्रिया दुःख का हेतु है
25	शेठ, दरिद्र, कृपण और क्षत्रिय को समान अप्रत्याख्यान क्रिया लगती है,	2		अकृत्य दुःख है, असृश्य दुःख है, अक्रियमाणकृत दुःख है
26	आधाकर्म आहार करने वाले निर्ग्रथ के दृढ़ कर्मों		(8)	भ. महावीर द्वारा इन सात मान्यताओं का समाधान
				क. अन्यतीर्थियों की मान्यता- एक समय में दो क्रिया

ख. भगवान द्वारा समाधान-एक समय में एक क्रिया		10-12	स्कंदक परिव्राजक का संक्षिप्त परिचय
3	चौबीस दण्डकों में उपपात विरह 'व्युत्क्रांति पद' के अनुसार	13-16	स्कंदक से पिंगल निर्ग्रंथ के प्रश्न-
		(1)	लोक सान्त या अनन्त
		(2)	जीव सान्त या अनन्त
		(3)	सिद्धि सान्त या अनन्त
		(4)	सिद्ध सान्त या अनन्त
		(5)	संसार वृद्धि करने वाले का मरण
1	द्वितीय शतक के दस उद्देशकों के नाम निरूपण की संग्रहणी गाथा	17	समाधान के लिए भ. महावीर के समीप आर्य स्कंदक का गमन
2-4	पृथ्वीकाय-यावत्-वनस्पतिकाय के श्वासोच्छ्वास का पौद्गलिक रूप	18	भ. महावीर के कथन से आर्य स्कंदक के स्वागत के लिए श्री गौतम-गणधर का जाना
5	चौबीस दण्डकवर्ती जीवों के श्वासोच्छ्वास का पौद्गलिक रूप	19-20	भ. महावीर के समीप गौतम के साथ-साथ स्कंदक का पहुँचना
6	वायुकाय वायुकाय का ही श्वासोच्छ्वास लेता है	21-31	भ. महावीर द्वारा स्कंदक के (पिंगल निर्ग्रंथ के प्रश्नों से उत्पन्न) संशयों का समाधान
7	वायुकाय वायुकाय में उत्पन्न होता है	32-38	भ. महावीर के समीप स्कंदक का धर्म श्रवण व प्रवज्जा ग्रहण तथा निर्ग्रंथ धर्म का आचरण
	वायुकाय के जीव आघात से मरते हैं	39	स्कंदक का एकादशांग अध्ययन
	वायुकाय के जीव सशरीरी एवं अशरीरी भी मरते हैं	40-42	स्कंधक द्वारा भिक्षु पंडितों की आराधना
8	अनिरुद्ध भव वाले प्रासुक भोजी (मृतादि) निर्ग्रंथ को पुनः मनुष्य भव की प्राप्ति	43-46	गुणरत्नसंवत्सर तप की आराधना
	प्रासुक भोजी निर्ग्रंथ के छह नाम		
9	निरुद्ध भव वाले प्रासुक भोजी निर्ग्रंथ की मुक्ति		
	निरुद्ध भव वाले निर्ग्रंथ के छह नाम		

47-52	संलेखणा पादपोषगमन	6	मानुषी और पंचेन्द्रिय तिर्यच स्त्री में वीर्य की जघन्य-उत्कृष्ट स्थिति
53	अच्युत देवलोक में गमन		
54	महाविदेह में निर्वाण	7	एक भव में एक जीव के उत्कृष्ट पिता
	द्वितीय समुद्घात उद्देशक	8	एक भव में एक जीव के उत्कृष्ट कितने पुत्र
1	क. सात समुद्घात	9	मैथुन-सेवन से होने वाला असंयम
	ख. चौबीस दण्डकों में समुद्घात	10-11	तुंगिका नगरी के श्रावकों का परिचय
	ग. अणगार द्वारा केवली समुद्घात	12	तुंगिका नगरी में गुण सम्पन्न पार्श्वपत्नीय स्थविरों का पदार्पण व परिचय
	तृतीय 'पृथ्वी' उद्देशक		
1	क. सात पृथिवियों का वर्णन	13-15	श्रावकों द्वारा धर्मश्रवण
	ख. सर्व प्राणियों की सर्वत्र उत्पत्ति	16 (1)	स्थविरों से श्रावकों के प्रश्न
	चतुर्थ इन्द्रिय उद्देशक	(2)	संयम व तप का फल
1	इन्द्रियां और उनके संस्थानादि से संबंधित वर्णन	17 (1)	देवलोक में उत्पन्न होने का कारण
	पंचम 'निर्ग्रथ' उद्देशक	(2-5)	कालिक पुत्र स्थविर का उत्तर
1	निर्ग्रथ देव-परिचाराणा संबंधी परमत निराकरण-स्वमत-प्ररूपण	18-19	स्थविरों का तुंगिका नगरी से विहार
	उदक गर्भ का जघन्य-उत्कृष्ट काल-परिमाण	20-21	राजगृह में भ. महावीर और गौतम
2	तिर्यच योनि में गर्भ का जघन्य-उत्कृष्ट काल-परिमाण	22-23	गौतम की भिक्षाचर्या
3	मानुषी गर्भ का जघन्य-उत्कृष्ट काल-परिमाण	24	स्थविरों की योग्यता के सम्बन्ध में गौतम की जिज्ञासा
4	गर्भ में मरकर पुनः गर्भ में उत्पन्न हो तो उत्कृष्ट	25 (1-4)	भ. महावीर द्वारा स्थविरों की योग्यता का समर्थन
5	गर्भकाल का परिमाण	26 (1)	श्रमण-माहन की पर्युपासना का फल
		(2)	श्रवण का फल

(3)	ज्ञान का फल	और उद्देश्य
(4)	विज्ञान का फल	घ. गोस्तूभ आवास पर्वत
(5)	प्रत्याख्यान का फल	ङ. पद्मवार वेदिका
(6)	संयम का फल	च. प्रासादावतंसक की ऊँचाई और विष्कम्भ
(7)	क. अनाश्रवत्व का फल	छ. अरुणोदय समुद्र में चमरचंचा राजधानी
	ख. तप का फल	ज. राजधानी का आयाम-विष्कम्भ
	ग. व्यवदान का फल	झ. प्रकार आदि की ऊँचाई और विष्कम्भ
(8)	क. अक्रिया का फल	ञ. राजधानी के द्वारों की ऊँचाई, विष्कम्भ
	ख. प्रश्नोत्तरों की संग्रहणी गाथा	और परिक्षेप
27	राजगृह के बाहर गर्म पानी का स्रोत	ट. ईशान कोण में जिनगृह
	षष्ठ भाषा उद्देशक	ठ. उपपात सभा, अभिषेक सभा आदि
1	अवधारिणी भाषा	नवम 'समयक्षेत्र' उद्देशक
	सप्तम देव उद्देशक	समय क्षेत्र का परिमाण
1	चार प्रकार के देव	दशम अस्तिकाय उद्देशक
2	भवनवासी देवों के स्थान-यावत्-वैमानिक देवों के स्थान	पंचास्तिकाय स्वरूप, प्रकार एवं विश्लेषण
	अष्टम चमरचंचा उद्देशक	पंचास्तिकाय के वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श आदि
1	क. चमरेन्द्र की सुधर्मा सभा	धर्मास्तिकाय आदि के प्रदेश धर्मास्तिकाय आदि नहीं है
	ख. अरुणवर द्वीप, अरुणवर समुद्र	उत्थान आदि से जीव-भाव का वर्णन
	ग. तिगिच्छक कूट, उत्पात पर्वत की ऊँचाई	दो प्रकार का आकाश

11	लोकाकाश का स्वरूप	(2)	भ. महावीर द्वारा चमरेन्द्र की ऋद्धि का वर्णन
12	अलोकाकाश का स्वरूप	(3)	चमरेन्द्र की वैक्रिय करने की पद्धति का संक्षिप्त परिचय
13	पंचास्तिकाय का प्रमाण		
14	अधोलोक का धर्मास्तिकाय से स्पर्श	(4)	चमरेन्द्र की वैक्रिय शक्ति का वर्णन
15	तिर्यग्लोक का धर्मास्तिकाय से स्पर्श	4	चमरेन्द्र के सामानिक देवों की विकुर्वणा शक्ति
16	ऊर्ध्वलोक का धर्मास्तिकाय से स्पर्श	5	चमरेन्द्र के त्रायस्त्रिंशक देवों की विकुर्वणा शक्ति
17	रत्नप्रभा का धर्मास्तिकाय से स्पर्श	(2)	चमरेन्द्र के लोकपालों की विकुर्वणा शक्ति
18	रत्नप्रभा के घनोर्द्धादि से धर्मास्तिकाय का स्पर्श		त्रायस्त्रिंशक देवों की शक्ति से कुछ कम
19	रत्नप्रभा पृथ्वी का अवकाशांतर से स्पर्श	6	चमरेन्द्र की अप्रमहिषियों की विकुर्वणा शक्ति-लोकपालों के समान
20	शर्कराप्रभा-यावत्-सप्तम पृथ्वी का अवकाशांतर से स्पर्श		
21	जम्बूद्वीप, लवण समुद्र आदि व सौधर्म कल्प से ईषत्प्रागभारा पृथ्वी पर्यंत स्पर्श	7 (1)	अग्निभूति का वायुभूति के समीप गमन
22	अधर्मास्तिकाय और लोकाकाश का स्पर्श	(2)	वायुभूति के सामने अग्निभूति द्वारा चमरेन्द्र आदि की विकुर्वणा शक्ति का वर्णन
	तृतीय शतक		
	प्रथम चमर विकुर्वणा उद्देशक		
1	दस उद्देशकों के विषयों की संग्रहणी गाथा	8 (1)	अग्निभूति के कथन के प्रति वायुभूति की अश्रद्धा
2	मोका नगरी में भ. महावीर का पदार्पण	(2)	वायुभूति का भ. महावीर के समीप गमन
3 (1)	चमरेन्द्र की विकुर्वणा के सम्बन्ध में अग्निभूति की जिज्ञासा	(3)	भ. महावीर द्वारा अग्निभूति के कथन का समर्थन
		9	वायुभूति का अग्निभूति से क्षमायाचन
		10	अग्निभूति और वायुभूति का भ. महावीर के समीप सह आगमन
		11	वैरोचनेन्द्र बलि के सम्बन्ध में वायुभूति की जिज्ञासा

12	एवं भ. महावीर द्वारा समाधान भ. महावीर द्वारा चमरेन्द्र आदि के समान वौरोचेन्द्र बलि के सामानिक देव, त्रायस्त्रिंशक देव आदि की विकुर्वणा शक्ति का वर्णन	17	शक्रेन्द्र के अन्य सामानिक देवों की विकुर्वणा शक्ति शक्रेन्द्र के त्रायस्त्रिंशक देव, लोकपाल देव व अग्रमहिषियों की विकुर्वणा शक्ति
13	(1) धरण-नागकुमारेन्द्र आदि की विकुर्वणा के सम्बन्ध में अग्निभूति की जिज्ञासा	19	(1) ईशानेन्द्र की विकुर्वणा शक्ति के सम्बन्ध में वायुभूति की जिज्ञासा
(2)	भ. महावीर द्वारा धरणेन्द्र आदि की विकुर्वणा का वर्णन	(2)	भ. महावीर द्वारा ईशानेन्द्र की विकुर्वणा शक्ति का वर्णन
14	(1) दक्षिण दिशा के इन्द्रों के सम्बन्ध में अग्निभूति की जिज्ञासा और भ. महावीर द्वारा समाधान	20	(1) भ. महावीर का शिष्य कुरुदत्त पुत्र ईशानेन्द्र के सामानिक देव रूप में उत्पन्न
(2)	उत्तर दिशा के इन्द्रों के सम्बन्ध में वायुभूति की जिज्ञासा और भ. महावीर द्वारा समाधान	(2)	कुरुदत्त पुत्र सामानिक देव की विकुर्वणा शक्ति क. अन्य सामानिक देव, त्रायस्त्रिंशक, लोकपाल
15	(1) शक्रेन्द्र की विकुर्वणा शक्ति के सम्बन्ध में अग्निभूति की जिज्ञासा	21-30	और अग्रमहिषियों की विकुर्वणा शक्ति ख. तीसरे देवलोक के सनत्कुमार देवेन्द्र आदि से लेकर बारहवें देवलोक के अच्युतेन्द्र एवं उनके अधीनस्थ लोकपाल आदि देवों की ऋद्धि एवं विकुर्वणा शक्ति का निरूपण
(2)	भ. महावीर द्वारा शक्रेन्द्र की ऋद्धि का वर्णन		
(3)	शक्रेन्द्र की विकुर्वणा शक्ति का वर्णन		
16	क. भ. महावीर का शिष्य तिष्यक शक्रेन्द्र के सामानिक देवरूप में उत्पन्न	31	भ. महावीर का मोका नगरी से विहार
	ख. तिष्यक देव की विकुर्वणा शक्ति	32	भ. महावीर का राजगृह में पदार्पण
		33	भ. महावीर की वंदना के लिए ईशानेन्द्र का आगमन

34	(1)	ईशानेन्द्र की दिव्य ऋद्धि के सम्बन्ध में गौतम की जिज्ञासा	48	ईशानेन्द्र द्वारा बलिचंचा राजधानी भस्म बलिचंचा राजधानीवासी असुरों द्वारा ईशानेन्द्र से क्षमा याचना
	(2)	कूटगारशाला दृष्टान्तपूर्वक ईशानेन्द्र के ऋद्धि की तत्परीर-अनुप्रविष्ट होने की प्ररूपणा	53	ईशानेन्द्र की स्थिति
35		ईशानेन्द्र का पूर्व भव	54	ईशानेन्द्र का च्यवन, महाविदेह में जन्म और निर्वाण शक्रेन्द्र और ईशानेन्द्र के विमानों की ऊँचाई-नीचाई में अंतर
36	(1)	ताम्रलिप्ती नगरी में मौर्यपुत्र तामली गाथापति द्वारा प्रणामा प्रव्रज्या का ग्रहण करना	55	
	(2)	मौर्यपुत्र का अभिग्रह	56-57	शक्रेन्द्र का ईशानेन्द्र के पास और ईशानेन्द्र का शक्रेन्द्र के पास गमन
37		प्रणामा प्रव्रज्या की विधि		
38		प्रव्रज्या के अपर नाम 'प्रणामा' का कारण	58	शक्रेन्द्र-ईशानेन्द्र के और ईशानेन्द्र-शक्रेन्द्र के चारों ओर देखने में समर्थ
39-40		बाल तपस्वी तामली द्वारा पादपोषगमन अनशन		
41		इन्द्ररहित बलिचंचा राजधानी के अनेक असुरों द्वारा तामली से वैरोचनेन्द्र पद के लिए निदान करने का आग्रह	59	शक्रेन्द्र-ईशानेन्द्र से और ईशानेन्द्र-शक्रेन्द्र से वार्तालाप करने में समर्थ
42-44		तामली की अस्वीकृति	60	शक्रेन्द्र और ईशानेन्द्र का एक-दूसरे के कार्य में परस्पर सहयोग
45		तामली की ईशानेन्द्र के रूप में उत्पत्ति	61	शक्रेन्द्र और ईशानेन्द्र के विवादों का सनत्कुमारेन्द्र द्वारा निर्णय
46		बलिचंचा राजधानी के असुरों द्वारा तामली के शव का अपमान	62	सनत्कुमार भवसिद्धिक-यावत्-चरम है
47		ईशानेन्द्र के सामने ईशान कल्पवासी देवों द्वारा बलिचंचावासी असुरों के कुकृत्य की चर्चा	63	सनत्कुमार देवेन्द्र की स्थिति
			64	सनत्कुमार का महाविदेह में जन्म और निर्वाण प्रथम उद्देशक के विषयों की संग्रहणी गाथाएं
			65	

द्वितीय चमरोत्यात उद्देशक

		सौधर्म पर्यंत गमन
1	राजगृह में भ. महावीर और गौतम तथा परिषद्	15
2	भ. महावीर के सामने चमरेन्द्र का नाट्य प्रदर्शन और पुनः स्वस्थानगमन	16
3-4	असुरकुमारों का रत्नप्रभा के बीच में निवास स्थान	17
5	असुरकुमारों का अधोगमन जाने का सामर्थ्य	18
6	सातवीं पृथ्वी पर्यंत असुरों के जाने का सामर्थ्य	
7	तृतीय पृथ्वी पर्यंत ही असुरों का गमन	19 (1)
8	असुरों का तिर्यक् दिशा में जाने का सामर्थ्य	(2)
9	असुरों का नंदीश्वर द्वीप तक गमन	
10	असुरों का अरिहंतों के पंच कल्याणक प्रसंगों में तिर्यग् लोक में आगमन	20 (1)
11-12	असुरों का ऊर्ध्वलोक में अच्युत देवलोक पर्यंत गमन सामर्थ्य	(2)
13	(1) असुरों का सौधर्म पर्यंत सकारण गमन	(3)
(2)	असुरों द्वारा वैमानिक देवों के रत्नों का अपहरण	21
(3)	रत्नों के अपहरण से असुरों के शरीर में व्यथा	22 (1)
(4)	वैमानिक अप्सराओं के साथ असुरों का ऐच्छिक स्नेह सम्बन्ध	(2)
14	अनंत उत्सर्पिणी-अवसर्पिणी के पश्चात् असुरों का	23
		24
		25 (1)

26	(2)	चमरेन्द्र का रोष भ. महावीर की निश्रा में चमरेन्द्र का सौधर्म कल्प में गमन	36	ऊर्ध्व, अधो व मध्यलोक में चमरेन्द्र की गति का अल्प-बहुत्व
27	(1)	चमरेन्द्र का शक्रेन्द्र को ललकारना	37	वज्र की गति का अल्प-बहुत्व
	(2)	शक्रेन्द्र का चमरेन्द्र पर वज्र प्रहार	38-39	शक्रेन्द्र और चमरेन्द्र की अधो-ऊर्ध्व गति का कालमान और अल्प-बहुत्व
28	(1)	चमरेन्द्र का पलायन और शक्रेन्द्र द्वारा उसका पीछा करना	40	वज्र की अधो-ऊर्ध्व गति का कालमान और अल्प-बहुत्व
	(2)	भ. महावीर के चरणों की शरण में चमरेन्द्र का पहुँचना	41	शक्रेन्द्र, वज्र और चमरेन्द्र की अधो-ऊर्ध्व गति का कालमान और अल्प-बहुत्व
29		शक्रेन्द्र का अर्वाधि प्रयोग और वज्र को पकड़ना	42	चमरेन्द्र की चिन्ता
30		शक्रेन्द्र की भ. महावीर से क्षमायाचना	43	चमरेन्द्र का भ. महावीर की चरण वंदना के लिए आगमन
31-32		शक्रेन्द्र का चमरेन्द्र को अभयदान और शक्रेन्द्र का चमरेन्द्र को न पकड़ सकने का कारण	44	चमरेन्द्र की स्थिति, उत्पत्ति आदि का महावीर द्वारा कथन
33		फेंकी हुई वस्तु को पकड़ने की देवशक्ति और गमन सामर्थ्य में अंतर	45	सौधर्म कल्प में असुरों के जाने का कारण
34	(1)	शक्रेन्द्र की ऊर्ध्वगति और चमरेन्द्र की अधोगति तीव्र होती है	1 (1)	तृतीय क्रिया उद्देशक राजगृह में भ. महावीर के समीप परिषद्
	(2)	इन्द्र और वज्र की गति में अंतर	(2)	क्रिया के सम्बन्ध में मंडित पुत्र की जिज्ञासा
35		ऊर्ध्व, अधो व मध्यलोक में शक्रेन्द्र की गति का अल्प-बहुत्व	2	पाँच प्रकार की क्रिया
			3	दो प्रकार की कायिकी क्रिया

4	दो प्रकार की आधिकरणिकी क्रिया	17	चतुर्दशी आदि तिथियों को लवणसमुद्र में ज्वार-भाटा (वृद्धि-हानि) आने का कारण
5	दो प्रकार की प्राद्वेषिकी क्रिया		
6	दो प्रकार की पारितापनिकी क्रिया		चतुर्थ 'यान' उद्देशक
7	दो प्रकार की प्राणातिपात क्रिया	1	अणुगार देवरूप यान को देखता भी है और नहीं भी देखता है
8	क्रिया और वेदना की पूर्वापरता		
9-10	श्रमण निर्ग्रथों की क्रिया के दो कारण	(2)	देवरूप यान की चौभंगी
11	जीव का कंपन आदि	2	अणुगार देवीरूप यान को देख भी सकता है और नहीं भी देख सकता है
12	जीव का कंपन-यावत्-परिणमन क्रिया		
13	अंतःक्रिया के समय कंपन-यावत्-परिणमन क्रिया का अभाव	(2)	देवीरूपी यान की चौभंगी
14	जीव की निष्क्रिय दशा व उसका निर्वाण	3	अणुगार देव-देवीरूप यान को देख सकता है और नहीं भी देख सकता है
(1)	निर्वाण के कारण	(2)	देव-देवी रूप यान की चौभंगी
(2)	पूले के जलने का उदाहरण	4	अणुगार वृक्ष के अंदर-बाहर दोनों भागों को देख सकता है
(3)	तप्त तवे पर उदक बिन्दु के नष्ट होने का उदाहरण		
(4)	रिक्त नौका का उदाहरण	(2)	मूल और कंद की चौभंगी
(5)	संवृत अणुगार की इयावही क्रिया तथा अकर्म दशा	(3)	मूल और स्कंध की चौभंगी
15	एक या अनेक जीवों की अपेक्षा से प्रमत्त संयम की स्थिति	(4)	मूल और बीज की चौभंगी-यावत्
		5	फल और बीज की चौभंगी के 45 भांगे
16	एक या अनेक जीवों की अपेक्षा से अप्रमत्त संयम की स्थिति	6	वायुकाय की पताकारूप में विकुर्वणा
		7	विकुर्वितरूप वायुकाय की गति का परिमाण

(2)	वायुकाय की गति के सम्बन्ध में विविध विकल्प	4-5	अणगार का ढाल-तलवार लिए हुए पुरुष रूप में आकाश गमन एवं वैक्रिय सामर्थ्य
8	बलाहक (मेघ) का स्त्रीरूप में परिणमन		
9	बलाहक (मेघ) का स्त्रीरूप में गमन	6-7	अणगार का पताका ध्वजा लेकर आकाश में गमन एवं वैक्रिय सामर्थ्य
(2-6)	बलाहक (मेघ) का पर ऋद्धि से गमन		
10	बलाहक बलाहक ही है	ख.	दोनों ओर पताका लेकर चलने वाले पुरुष के रूप में भावितात्मा अणगार का वैक्रिय सामर्थ्य
11	बलाहक का यान आदि के रूप में गमन		
12-14	चौबीस दण्डकों में लेश्याद्रव्यों के अनुरूप जीवों की उत्पत्ति	क.	भावितात्मा अणगार का यज्ञोपवित धारण कर आकाश में गमन एवं वैक्रिय सामर्थ्य
15	बाह्य पुद्गलों को ग्रहण किये बिना अणगार वैभारगिरि उल्लंघन में असमर्थ	ख.	दोनों ओर यज्ञोपवित धारण किये हुए पुरुष के रूप में भावितात्मा अणगार का वैक्रिय सामर्थ्य
16	बाह्य पुद्गलों को ग्रहण करके की हुई विकुर्वणा से अणगार का वैभारगिरि प्रवेश	10	एक ओर पालथी लगाकर व दोनों ओर पालथी लगाकर बैठे हुए पुरुष के समान भावितात्मा अणगार आकाश गमन में सामर्थ्य
17-18	बाह्य पुद्गलों को ग्रहण करके की हुई विकुर्वणा से अणगार का वैभारगिरि पर्वत का सम-विषम रूप में परिवर्तन	11	एक ओर पर्यकासन से बैठे हुए व दोनों ओर पर्यकासन से बैठे हुए पुरुष के समान रूपों की विकुर्वणा करने का भावितात्मा अणगार का वैक्रिय सामर्थ्य
19	विकुर्वणा से मायी की विराधना और अमायी की आराधना		
	पंचम 'स्त्री' उद्देशक	12-14	भावितात्मा अणगार द्वारा अश्वादि रूपों के अभियोग संबंधी प्ररूपण
1-2	भावितात्मा अणगार की स्त्री रूपों में विकुर्वणा		
3	अणगार का वैक्रिय सामर्थ्य	15	मायी द्वारा विकुर्वणा और अमायी द्वारा अविकुर्वणा का फल

16	पंचम उद्देशक की संग्रहणी गाथा	(1)	क. सोम लोकपाल के संध्याप्रभ महाविमान का स्थान
1-3	षष्ठ 'नगर' उद्देशक राजगृह स्थित मायी मिथ्या दृष्टि अणगार की वैक्रिय लब्धि से वाराणसी की विकुर्वणा तथा विभंगज्ञान द्वारा विपरीत दर्शन		ख. संध्याप्रभ महाविमान की लंबाई, चौड़ाई और परिधि
4-5	मायी मिथ्यादृष्टि भावितात्मा अणगार की विकुर्वणा का उसी मिथ्यादृष्टि के विभंग ज्ञान द्वारा विपरीत दर्शन	(2)	सोमा राजधानी की लंबाई-चौड़ाई
6-10	वाराणसी स्थित अमायी सम्यग्दृष्टि भावितात्मा अणगार की राजगृह नगर की विकुर्वणा करके उसी अमायी सम्यग्दृष्टि के अवधिज्ञान से यथार्थ दर्शन भावितात्मा अणगार द्वारा ग्रामादि के रूपों का विकुर्वणा सामर्थ्य	(3)	सोमा राजधानी के किले, घर आदि की लंबाई-चौड़ाई, परिधि
11-13	चमरेन्द्र आदि इन्द्रों के आत्मरक्षक देवों का परिवार	(4)	सोम लोकपाल के आज्ञानुवर्ती देव-देवियाँ
14-15	सप्तम 'लोकपाल' उद्देशक भगवान का राजगृह में पदार्पण व गौतम स्वामी द्वारा पृच्छा	(5)	सोम लोकपाल के तत्वावधान में होने वाले कार्य
1	शक्रेन्द्र के चार लोकपाल	(6)	सोम लोकपाल के अपत्यरूप देवों के नाम
2	चार लोकपालों के चार विमान	(7)	क. सोम लोकपाल की स्थिति
3			ख. सोम लोकपाल के अपत्यरूप देवों की स्थिति
		5	यम लोकपाल के वरशिष्ट महाविमान का स्थान और लंबाई-चौड़ाई
		(1)	यम लोकपाल के आज्ञानुवर्ती देव-देवियाँ
		(2)	यम लोकपाल के तत्वावधान में होने वाले कार्य
		(3)	यम लोकपाल के अपत्यरूप देवों के नाम
		(4)	क. यम लोकपाल की स्थिति
		(5)	ख. यम लोकपाल के अपत्यरूप देवों की स्थिति
		6	वरुण लोकपाल के स्वयंज्वल महाविमान का स्थान लंबाई-चौड़ाई और राजधानी

(2)	वरुण लोकपाल के आज्ञानुवर्ती देव-देवियाँ	(3)	अग्निकुमारों के दस अधिपति
(3)	वरुण लोकपाल के तत्वावधान में होने वाले कार्य	(4)	द्वीप कुमारों के दस अधिपति
(4)	वरुण लोकपाल के अपत्यरूप देवों के नाम	(5)	उदधिकुमारों के दस अधिपति
(5)	क. वरुण लोकपाल की स्थिति	(6)	दिशा कुमारों के दस अधिपति
	ख. वरुण लोकपाल के अपत्यरूप देवों की स्थिति	(7)	वायु कुमारों के दस अधिपति
7	वैश्रमण लोकपाल के वल्लु महाविमान का स्थान	(8)	स्तनित कुमारों के दस अधिपति
	लंबाई-चौड़ाई और राजधानी	(9)	दक्षिण दिशा के भवनपतियों के लोकपाल
(2)	वैश्रमण लोकपाल के आज्ञानुवर्ती देव-देवियाँ	4	क. पिशाच वाणव्यंतर देव के दक्षिण व उत्तर प्रत्येक के एक-एक इन्द्र कुल के दो अधिपति
(3)	वैश्रमण लोकपाल के तत्वावधान में होने वाले कार्य		ख. शेष वाणव्यंतर देवों के इसी प्रकार दो अधिपति
(4)	वैश्रमण लोकपाल के अपत्यरूप देवों के नाम	5	ज्योतिषी देवों के दो अधिपति
(5)	क. वैश्रमण लोकपाल की स्थिति	6	क. सौधर्म-ईशान कल्प में एक इन्द्र और चार लोकपाल ऐसे पांच व दोनों के दस अधिपति
	ख. वैश्रमण लोकपाल के अपत्यरूप देवों की स्थिति		ख. इसी प्रकार सहस्रार पर्यंत दस अधिपति
1	अष्टम 'देवाधिपति' उद्देशक		ग. आनतादि चार कल्प में दो-दो कल्प का एक-एक कुल के दो अधिपति
	क. भगवान का राजगृह में पदार्पण व गौतमस्वामी द्वारा पृच्छा		नवम 'इन्द्रिय' उद्देशक
	ख. असुर कुमारों के दस अधिपति		क. भगवान का राजगृह में पदार्पण व गौतमस्वामी द्वारा पृच्छा
2	नागकुमारों के दस अधिपति	1	ख. पाँच इन्द्रियों के विषयों का निरूपण
(1)	सुवर्ण कुमारों के दस अधिपति		
(2)	विद्युत्कुमारों के दस अधिपति		

दशम 'परिषद्' उद्देशक

- 1 क. भगवान का राजगृह में पदार्पण व गौतमस्वामी 1
द्वारा पृच्छा
- ख. चमरेन्द्र की तीन सभायें-यावत्-अच्युतेन्द्र पर्यंत 1
तीन सभायें

चतुर्थ शतक**1-4 चार लोकपाल-विमान उद्देशक**

- 1 चतुर्थ शतक की संग्रहणी गाथा
- 2 क. भगवान का राजगृह में पदार्पण व गौतमस्वामी 1
द्वारा पृच्छा
- 3 ख. ईशानेन्द्र के चार लोकपाल 2
- 4 चार लोकपालों के चार विमान
- क. ईशान कल्प के पांच अवतंसक 3
- ख. सोम लोकपाल के सुमन महाविमान का स्थान 4
व लंबाई-चौड़ाई आदि
- 5 (1) शेष तीन लोकपालों के तीन महाविमानों के तीन 5-6
उद्देशक
- (2) चारों लोकपालों की स्थिति 7-13
- (3) चारों लोकपालों के अपत्यरूप देवों की स्थिति 14-16

5-8 चार लोकपाल-राजधानी उद्देशक

ईशानेन्द्र के चार लोकपालों की चार राजधानियाँ

नवम-नैरयिक उद्देशक

नैरयिक ही नैरयिकों में उत्पन्न होता है

दशम लेस्या उद्देशक

नील लेस्या का संयोग पाकर कृष्ण लेस्या का नील लेस्या रूप में परिणमन आदि पन्द्रह द्वार

पंचम शतक**प्रथम 'सूर्य' उद्देशक**

पंचम शतक की संग्रहणी गाथा

चंपा नगरी, पूर्णभद्र चैत्य, भगवान का पदार्पण, परिषद् आगमन व धर्मोपदेश

भ. महावीर के ज्येष्ठ शिष्य गौतम अणगार द्वारा प्रश्न पृच्छा

सूर्य का उदयास्त भिन्न-भिन्न दिशाओं में

जम्बूद्वीप में दिक्स और रात्रियाँ

जम्बूद्वीप में दिक्स और रात्रि का कालमान

जम्बूद्वीप में वर्षा ऋतु व वर्षा ऋतु की प्रथम

आवलिका-यावत्-मास आदि

			द्वितीय 'वायु' उद्देशक
17	क. जम्बूद्वीप में हेमन्त ऋतु व हेमन्त ऋतु की प्रथम आवलिका-यावत्-मास आदि	1	भगवान का राजगृह में पदार्पण व गौतमस्वामी द्वारा पृच्छा
	ख. जम्बूद्वीप में ग्रीष्म ऋतु व ग्रीष्म ऋतु की प्रथम आवलिका-यावत्-मास आदि	2	चार प्रकार का वायु
18	जम्बूद्वीप में अयन	3-6	भिन्न-भिन्न दिशाओं-विदिशाओं में वायु का चलना
19	जम्बूद्वीप में संवत्सर युग-यावत्-सागरोपम	7	द्वीप में चार प्रकार का वायु
20	जम्बूद्वीप में अवसर्पिणी काल	8	समुद्र में चार प्रकार का वायु
21	जम्बूद्वीप में उत्सर्पिणी काल	9	क. द्वीप और समुद्र के वायु का परस्पर विपर्यास
22 (1)	लवण समुद्र में सूर्योदय-सूर्यास्त तथा दिवस-रात्रि	10	ख. वायु द्वारा लवण समुद्र की वेला का उल्लंघन नहीं वायु की वैक्रिय गति
22 (2)	लवण समुद्र में (दक्षिण-उत्तर दिशा में) उत्सर्पिणी-अवसर्पिणी	11-12	वायुकुमार के देव-देवियों द्वारा वायु की उदीरणा
(3)	लवण समुद्र के पूर्व-पश्चिम में अवस्थित काल	13	क. वायुकाय द्वारा अचित्त (निर्जीव) वायु का श्वासोच्छ्वास रूप में ग्रहण-विसर्जन
23	धातकी खण्ड में सूर्योदय-सूर्यास्त		ख. वायुकाय का स्वकाय-शस्त्र अथवा परकाय-शस्त्र (पंखा आदि) से स्पृष्ट होने से मरण
24	धातकी खण्ड में दिवस-रात्रि		ग. वायुकाय का अनेक लाख बार मर-मरकर, पुनः पुनः उसी वायुकाय में जन्म
25	धातकी खण्ड में उत्सर्पिणी-अवसर्पिणी		घ. वायुकाय का तैजस्-कर्मण शरीर की अपेक्षा सशरीरी रूप में परलोक में जाना तथा औदारिक और वैक्रिय शरीर की अपेक्षा अशरीरी होकर परलोक में जाना
26	कालोद समुद्र में सूर्योदय-सूर्यास्त, दिवस-रात्रि, उत्सर्पिणी-अवसर्पिणी लवण समुद्र के समान		
27	आन्ध्यंतर पुष्करार्ध द्वीप में सूर्योदय-सूर्यास्त, दिवस-रात्रि, उत्सर्पिणी-अवसर्पिणी धातकीखण्ड के समान		

14	ओदन (चावल), कुल्माष (उड़द) और सुरा की	2	क. छद्मस्थ मनुष्य का स्पृष्ट शब्द सुनना
15	पूर्वावस्था और पश्चादवस्था के शरीर का प्ररूपण		ख. छह दिशाओं से आये हुए स्पृष्ट शब्दों को सुनना
16	लोहा, ताँबा, शीशा आदि के शरीर की पूर्वावस्था व पश्चादवस्था की दृष्टि से निरूपण	3	छद्मस्थ मनुष्य का समीपवर्ती शब्द सुनना
17	अस्थि (हड्डी), चर्म, रोम, सींग, नख आदि के शरीर की पूर्वावस्था और पश्चादवस्था का प्ररूपण	4	केवली समीप और दूर दोनों प्रकार के शब्द सुन लेते हैं
18	इंगाल (कोयला), राख, भूसा, गोबर आदि के शरीर की पूर्वावस्था और पश्चादवस्था का प्ररूपण	5	छद्मस्थ मनुष्य हँसता है व उत्सुक होता है
1	लवण समुद्र का विष्कम्भ और परिधि	6	केवली हँसते भी नहीं हैं और उत्सुक भी नहीं होते क्योंकि उनका चारित्र मोहनीय कर्म क्षय हो जाता है
(1)	तृतीय जालग्रथिका उद्देशक	7-9	क. चौबीस ही दण्डकों में हँसता हुआ या उत्सुक होता हुआ जीव सात या आठ कर्मों को बांधता है
(2)	एक समय में दो आयु के वेदन पर जाल ग्रंथिका के उदाहरण सहित अन्यतीर्थिक का मत		ख. उन्नीस दण्डकों में बहुत से जीव सात या आठ कर्मों को बांधते हैं
2-4	एक समय में एक आयु के वेदन पर श्रृंखला के उदाहरण सहित भ. महावीर द्वारा समाधान	10	छद्मस्थ मनुष्य नींद (सुखकर नींद) व प्रचला नींद (खड़े-खड़े नींद) लेता है
5	चौबीस दण्डक में आयुष्य बंध सहित जीवों का गमन	11	दर्शनावरणीय कर्म के उदय के कारण छद्मस्थ जीव नींद व प्रचला लेता है व केवलज्ञानियों का दर्शनावरणीय कर्म क्षय हो जाता है अतः उन्हें नींद और प्रचला नहीं आती
1	कर्मानुसार योनि का आयु बंधन		
	चतुर्थ शब्द उद्देशक		
1	छद्मस्थ मनुष्य द्वारा आतोद्य आदि विविध वाद्यों के शब्द सुनना		

12-14	उन्नीस दण्डक में नींद व ऊँघ लेने वाले जीव 7-8	24	देवताओं की भाषा अर्धमागधी भाषा है
	कर्म बांधते हैं	25	केवली को मुक्त आत्मा का ज्ञान
15	क. शक्रदूत हरिणगमेषी देव द्वारा गर्भ संहरण	26	क. छद्मस्थ को मुक्त आत्मा का अज्ञान
	ख. गर्भ संहरण की चौभंगी		ख. दो साधनों से छद्मस्थ को ज्ञान होता है
16	हरिणैगमेषी देव का नखाग्र से गर्भ संहरण सामर्थ्य		ग. केवली आदि से ज्ञान सुनकर छद्मस्थ ज्ञान प्राप्त करता है
17 (1)	भ. महावीर का अंतेवासी अतिमुक्त कुमार श्रमण		घ. चार प्रकार के प्रमाण
(2)	अतिमुक्त बगल में रजोहरण व हाथ में झोली लेकर	27	केवली को अंतिम कर्म वर्णना तथा अंतिम निर्जरा का ज्ञान
(3)	स्थंडिल भूमि में		छद्मस्थ को अंतिम कर्म वर्णना तथा अंतिम निर्जरा का अज्ञान
(4)	अतिमुक्त की नौका क्रीड़ा	28	केवली का उत्कृष्ट मनोबल व वचनबल
(5)	अतिमुक्त की इसी भव में मुक्ति		वैमानिक देवों का उत्कृष्ट मनोबल व वचनबल
	अतिमुक्त की निंदा न करने तथा सेवा करने के लिए भ. महावीर का आदेश	29	अनुत्तरोपपातिक देव और केवली का आलाप-संलाप
18-19	क. भ. महावीर के समीप दो देवों का महाशुक्र कल्प से आगमन	30	अनुत्तरोपपातिक देव उपशांत मोही हैं
	ख. भ. महावीर और देवों का मन से प्रश्नोत्तर करना	31-32	केवली का अतीन्द्रिय ज्ञान
	ग. देवों के सम्बन्ध में गौतम की जिज्ञासा	33	केवली का आकाश प्रदेशावगाहन सामर्थ्य
	घ. गौतम और देवों का वार्तालाप	34	चौदह पूर्वधारी का लब्धि सामर्थ्य
	ङ. देवों का स्वस्थान गमन	35	
20-23	देवों को संयत, असंयत एवं संयतासंयत न कहकर 'नो संयत' कहना	36	
		1	पंचम 'छद्मस्थ' उद्देशक
			छद्मस्थ की संयम द्वारा केवलज्ञानी होकर ही सिद्धि

2	क. अन्य तीर्थिक मान्यता- सभी प्राणी एवं भूत वेदना का वेदन करते हैं	6	विक्रेता और क्रेता को लगने वाली क्रियाएँ
	ख. भ. महावीर की मान्यता- कुछ प्राणी एवं भूत वेदना वेदते हैं और कुछ प्राणी अनेवभूत वेदना का वेदन करते हैं	7	विक्रेता के बीजक देने पर किन्तु क्रेता के माल न जाने तक लगने वाली क्रियाएँ
3-4	चौबीस दण्डक में दोनों प्रकार की वेदना का वेदन	8	क्रेता के घर पर माल पहुँचने पर क्रेता को और विक्रेता को लगने वाली क्रियाएँ
5	इस अवसरपिणी काल में सात कुलकर	9 (1)	क्रेता के मूल्य देने या न देने पर लगने वाली क्रियाएँ
6	क. तीर्थिकों के माता-पिता, प्रथम शिष्या	(2)	तत्काल प्रज्वलित अग्नि महाकर्मदि से युक्त बुझती हुई अग्नि अल्प कर्मदि से युक्त
	ख. चक्रवर्ती की माता और स्त्री रत्न	10-12	शिकारी, धनुष, प्रत्यंचा आदि को लगने वाली क्रियाएँ
	ग. बलदेव, वासुदेव, वासुदेवों के माता-पिता	13	क. अन्य तीर्थिक मान्यता- चार सौ, पाँच सौ योजन तक यह मनुष्य लोक मनुष्यों से ठसाठस भरा हुआ है
	घ. प्रतिवासुदेव के नाम सभी समवायांग सूत्र के समान		ख. भ. महावीर की मान्यता- चार सौ, पाँच सौ योजन तक यह नरक लोक नैरयिकों से ठसाठस भरा हुआ है
1	षष्ठ 'आयु' उद्देशक		नैरयिकों का वैक्रिय सामर्थ्य
2	अल्पायु बंध के तीन कारण	14	क. आधाकर्म आहार का सेवी आलोचना न करे तो अनाराधक
3	दीर्घायु बंध के तीन कारण	15-16	ख. आधाकर्म आहार का सेवी आलोचना करे तो आराधक
4	अशुभ दीर्घायु बंध के तीन कारण		
5	शुभ दीर्घायु बंध के तीन कारण		
	क. चोरी में गये हुए माल की शोध करने में लगने वाली क्रियाएँ		
	ख. चोरी में गया माल मिलने पर लगने वाली क्रियाएँ		

17	ग. क्रीतकृत-यावत्-राजपिंड सेवी आलोचना करे तो आराधक	5	(1)	अनंत-प्रदेशी स्कंध तलवार या उस्तरे की धार पर रह सकता है
	घ. क्रीतकृत-यावत्-राजपिंड आहार का सेवी आलोचना न करे तो अनाराधक		(2)	किसी अनंत प्रदेशी स्कंध का असिधारा से छेदन हो सकता है व किसी का नहीं
	आधाकर्म आदि दोषों से युक्त आहार को निष्पाप कहकर आदान-प्रदान करने वाला अनाराधक	6		क. अनंत-प्रदेशी स्कंध अग्निकाय के मध्य में प्रवेश करता है
18	क. आधाकर्म आहार को अनवद्य कहकर आदान-प्रदान करने वाला अनाराधक			ख. किसी अनंत प्रदेशी स्कंध का अग्नि से प्रज्वलन होता है व किसी का नहीं
	ख. उस दोष की आलोचना-प्रतिक्रमण करे तो आराधक	7		क. अनंत प्रदेशी स्कंध पुष्करावर्त नामक मेघ के मध्य में प्रवेश करता है
19	कर्तव्यनिष्ठ आचार्य एवं उपाध्याय की अधिक से अधिक तीन भव में मुक्ति			ख. अनंत प्रदेशी स्कंध पुष्करावर्त मेघ से गीला होता है व किसी का नहीं
20	मिथ्यादोषारोपणकर्ता के दुष्कर्म बंध की प्ररूपणा	8		गंगा महानदी के प्रतिस्त्रोत में परमाणु पुद्गल का आना और वहां विनष्ट होना
1	सप्तम 'पुद्गल कंपन' उद्देशक	9		परमाणु पुद्गल अनर्ध, अमध्य और अप्रदेशी हैं
2	परमाणु-पुद्गल का कंपन	10	(1)	दो प्रदेशी स्कंध सार्ध, समध्य और सप्रदेशी हैं
	द्वि-त्री और चतुः प्रदेशी स्कंध का कंपन		(2)	तीन प्रदेशी स्कंध अनर्ध, समध्य और सप्रदेशी हैं
	पंच प्रदेशी-यावत्-अनंत प्रदेशी स्कंध का कंपन		(3)	समसंख्या वाले स्कंध द्विप्रदेशी स्कंध की तरह व विषम संख्या वाले स्कंध त्रिप्रदेशी स्कंध की तरह संख्यात, असंख्यात और अनंत प्रदेशी स्कंध
3-4	परमाणु पुद्गल -यावत्-असंख्य प्रदेशी स्कंध का असिधारा से छेदन नहीं		(4-5)	

	कदाचित् सार्ध, समध्य और सप्रदेशी हैं व कदाचित् अनर्थ, समध्य व सप्रदेशी हैं	(2)	त्रिप्रदेशी स्कंध का द्विप्रदेशी स्कंध से स्पर्श के छह विकल्प
11	(1) परमाणु-पुद्गल का परमाणु-पुद्गल से स्पर्श के नव-विकल्प	(3)	त्रिप्रदेशी स्कंध का त्रिप्रदेशी स्कंध से स्पर्श के नौ विकल्प
	(2) परमाणु-पुद्गल का द्विप्रदेशी स्कंध से स्पर्श के दो-विकल्प	(4)	इसी प्रकार त्रिप्रदेशी स्कंध का चतुष्प्रदेशी-यावत्-अनंतप्रदेशी स्कंध से स्पर्श के नौ विकल्प
	(3) परमाणु-पुद्गल का त्रिप्रदेशी स्कंध से स्पर्श के तीन-विकल्प-यावत्-	(5)	इसी प्रकार चतुष्प्रदेशी स्कंध-यावत्-अनंतप्रदेशी स्कंध से परमाणु पुद्गल-यावत्-अनंतप्रदेशी स्कंध को स्पर्श करने के तीन, छह-यावत्-नौ विकल्प
	(4) परमाणु-पुद्गल का अनंतप्रदेशी स्कंध से स्पर्शन के तीन-विकल्प	14	परमाणु पुद्गल-यावत्-अनंत प्रदेशी स्कंध की संस्थिति
12	(1) दो प्रदेशी स्कंध के परमाणु-पुद्गल से स्पर्श के दो विकल्प	15	क. एक प्रदेशावागाढ पुद्गल-यावत्-असंख्य-प्रदेशावागाढ पुद्गल की सकंप स्थिति
	(2) द्विप्रदेशी स्कंध का द्विप्रदेशी स्कंध से स्पर्श के चार विकल्प		ख. एक प्रदेशावागाढ-पुद्गल-यावत्-असंख्य-प्रदेशावागाढ पुद्गल की निष्क्रम्य स्थिति
	(3) द्विप्रदेशी स्कंध का त्रिप्रदेशी स्कंध से स्पर्श के छह विकल्प	16	क. एक गुण काले पुद्गल की स्थिति
	(4) द्विप्रदेशी स्कंध द्वारा त्रिप्रदेशी स्कंध के स्पर्श के समान ही चतुष्प्रदेशी, पंचप्रदेशी-यावत्-अनंतप्रदेशी स्कंध के स्पर्श के विषय में समझना	17	ख. द्विगुण -यावत्- अनंतगुण काले पुद्गल की संस्थिति
13	(1) त्रिप्रदेशी स्कंध का परमाणु पुद्गल से स्पर्शन	18	शेष वर्ण-गंध, रस, स्पर्श की संस्थिति सूक्ष्म परिणत पुद्गल की संस्थिति

19	बादर परिणत पुद्गल की संस्थिति		अष्टम 'निर्गृही पुत्र' उद्देशक
20	शब्द परिणत पुद्गल की संस्थिति	1-5	भ. के शिष्य नारदपुत्र और निर्गृही पुत्र अणगार के प्रश्नोत्तर
21	अशब्द परिणत पुद्गल की संस्थिति		
22	स्कंध से परमाणु पुद्गल के विभक्त होने का अंतर काल	6	नारदपुत्र का मत-सर्व पुद्गल सार्ध, समध्य, सप्रदेश हैं
23	द्विप्रदेशी-यावत्-अनंत प्रदेशी स्कंध के विभक्त होने का अंतर काल	7	निर्गृहीपुत्र का सापेक्षवाद
24	एक प्रदेशावगाढ पुद्गल-यावत्-असंख्य प्रदेशावगाढ पुद्गल के कंपन का अंतर काल	8	द्रव्यादेश आदि से पुद्गलों का अल्प-बहुत्व
25	एक प्रदेशावगाढ पुद्गल-यावत्-असंख्य प्रदेशावगाढ पुद्गल का निष्कंपन अवस्था का काल	9	नारद पुत्र अणगार द्वारा निर्गृही पुत्र अणगार से क्षमायाचना
26	वर्णादि परिणत तथा सूक्ष्म-बादर परिणत पुद्गल का अंतर काल	10-11-12	जीव घटते नहीं, बढ़ते नहीं व सदा समान रहते हैं चौबीस दण्डक में जीव बढ़ते भी हैं, घटते भी हैं और समान भी रहते हैं
27	शब्द परिणत पुद्गल का अंतर काल	13	सिद्ध घटते नहीं हैं, बढ़ते हैं व अवस्थित रहते हैं
28	अशब्द परिणत पुद्गल का अंतर काल	14	जीव सर्वकाल अवस्थित रहते हैं
29	द्रव्यादि चार प्रकार के आयु का अल्प-बहुत्व	15-19	चौबीस दण्डक के जीवों का हानि-वृद्धि और अवस्थिति काल
30-36	चौबीस दण्डकों के जीवों के आरंभ-परिग्रह युक्त होने की सहेतुक प्ररूपणा	20	सिद्धों का वृद्धि और अवस्थिति काल
37-44	विविध अपेक्षाओं से पांच हेतु-अहेतुओं के निरूपण के आठ सूत्र	21-22-23	जीवों का सोपचय-निरूपचय चार विकल्प चौबीस दण्डक के जीवों का सोपचय-निरूपचय सिद्ध सोपचय हैं, निरूपचय हैं

24	जीव सर्वकाल तक निरूपचय-निरूपचय ही रहते हैं	1	दशम 'चंद्र' उद्देशक क. चम्पानगरी, चन्द्र वर्णन पंचम शतक प्रथम उद्देशक के समान ख. सूर्य के स्थान में चन्द्र का कथन
25-27	चौबीस दण्डक के जीवों का सोपचय-निरूपचय काल		षष्ठ शतक
28	सिद्धों का सोपचय-निरूपचय काल		प्रथम वेदना उद्देशक
1-2	राजगृह नगर की तात्विक दृष्टि से व्याख्या	1	छठे शतक की संग्रहणी गाथा
3	प्रकाश और अंधकार का शुभाशुभत्व	2	क. महावेदना और महानिर्जरा की समानता
4-9	चौबीस दण्डकों में-प्रकाश और अंधकार अर्थात् पुद्गलों का शुभाशुभपना	3	ख. महावेदना और अल्प वेदना वाले जीवों में निर्जरा वाले जीव
10-13	चौबीस दण्डकों में समयादि काल ज्ञान संबंधी प्ररूपण	(1) (2) (3)	छट्टी-सातवीं नरक में महावेदना नैरयिकों और श्रमण निर्ग्रंथों से निर्जरा की तुलना छट्टी-सातवीं नरक के नैरयिकों की अपेक्षा श्रमण-निर्ग्रंथ महा निर्जरा वाले
14	क. पार्श्वपत्य स्थविरों का भ. महावीर से प्रश्न ख. असंख्य लोक में अनंत रात्रि-दिन ग. लोक के सम्बन्ध में भ. पार्श्वनाथ और भ. महावीर का एकमत	4	क. वस्त्र का उदाहरण ख. एरण का उदाहरण ग. घास के पूले का उदाहरण घ. लोहे के तवे का उदाहरण चार प्रकार के करण चौबीस दंडकों में करण की अपेक्षा साता-असाता वेदन
15	पार्श्वपत्य स्थविरों का पंच महाव्रत ग्रहण		
16	कुछ पार्श्वपत्यों की मुक्ति और कुछ की देवगति	5	
17	चार प्रकार के देव गण और उनके भेद-प्रभेद	6-12	

13	(1)	जीवों में वेदना और निर्जरा से संबंधित चतुर्भंगी	प्रयोग से, स्वभाव से नहीं
	(2)	क. प्रतिमा-प्रतिपन्न अणुगार और महानिर्जरा वाला	वस्त्रों में दो प्रकार से पुद्गलोपचय
		ख. छट्टी-सातवीं नरक के नैरयिक महावेदना और	जीवों का प्रयोग से कर्मोपचय
		अल्प निर्जरा वाले	वस्त्र की सादि-सान्ता आदि चतुर्भंगी
		ग. शैलेशी अवस्था को प्राप्त अणुगार अल्प वेदना	क. जीवों की सादि-सान्ता आदि चतुर्भंगी
		और महानिर्जरा वाले	ख. जीव के कर्मोपचय सादि अनंत न होने का
		घ. अनुत्तरोपपातिक देव अल्प वेदना और अल्प	कारण
		निर्जरा वाले	ग. नरकादि गति की सादि-सान्ता
14		प्रथम उद्देशक की संग्रहणी गाथा	घ. सिद्ध जीवों की सादि-अनन्ता
		द्वितीय 'आहार' उद्देशक	ङ. भवसिद्धिक जीवों की अनादि सान्ता
1		क. राजगृह नगर में भ. महावीर का पदार्पण व	च. अभवसिद्धिक जीवों की अनादि अनन्ता
		उपदेश	आठ कर्म प्रकृतियाँ
		ख. आहार वर्णन	आठ कर्मों की बंधस्थिति आदि का निरूपण
		तृतीय 'महाआश्रव' उद्देशक	तीन वेद वाले जीवों के आठ कर्मों का बंधन
1		तृतीय उद्देशक की संग्रहणी गाथाएं	संयत आदि के आठ कर्मों का बंधन
2	(1)	महा आश्रव वाले के महाबंध व धोया हुआ वस्त्र	सम्यग्दृष्टि आदि जीवों के आठ कर्मों का बंधन
		मलिन होने का उदाहरण	संज्ञी आदि के आठ कर्मों का बंधन
3		अल्प आश्रव वाले के अल्पबंध व मलिन वस्त्र	भव सिद्धिक आदि के आठ कर्मों का बंधन
		धुलने पर साफ होने का उदाहरण	चक्षु दर्शनी आदि के आठ कर्मों का बंधन
4	(2)	वस्त्र में पुद्गलोपचय जीव के समान कर्मोपचय	पर्याप्त आदि के आठ कर्मों का बंधन

20	(12)	भाषक आदि के आठ कर्मों का बंधन		आयुष्य बंध
21	(13)	परित्त आदि के आठ कर्मों का बंधन	25	प्रत्याख्यान आदि से संबंधित संग्रहणी गाथा
22	(14)	आभिनिबोधक ज्ञानी आदि के आठ कर्मों का बंधन		पंचम तमस्काय उद्देशक
23	(15)	मति अज्ञानी आदि के आठ कर्मों का बंधन	1	तमस्काय पानी है
24	(16)	मनयोगी आदि के आठ कर्मों का बंधन	2	तमस्काय का आदि-अंत
25	(17)	साकारोपयोग युक्त आदि के आठ कर्मों का बंधन	3	तमस्काय का संस्थान
26	(18)	आहारक आदि के आठ कर्मों का बंधन	4	तमस्काय का विष्कम्भ व विस्तार
27	(19)	सूक्ष्म आदि के आठ कर्मों का बंधन	5	तमस्काय की मोटाई
28	(20)	चरम आदि के आठ कर्मों का बंधन	6	तमस्काय में घर आदि नहीं हैं
29		वेदकों आदि का अल्प-बहुत्व	7	तमस्काय में ग्राम आदि नहीं हैं
1		चतुर्थ सप्रदेशक उद्देशक	8	तमस्काय में मेघ वर्षा बरसाते हैं
		काल की अपेक्षा एक-अनेक जीवों के सप्रदेश-	(1)	इन मेंघों के श्रष्टा देवादि हैं
		अप्रदेश का चिन्तन	(2)	तमस्काय में मेघ-गर्जन व विद्युत हैं
2-6		चौबीस दण्डक में काल की अपेक्षा जीव के सप्रदेश-	(1)	मेघ-गर्जन देव आदि करते हैं
		अप्रदेश का चिन्तन	(2)	तमस्काय में स्थूल पृथ्वी व अग्नि का निषेध
7-19		औदारिक आदि चौदह द्वारों की अपेक्षा जीवों के	10	तमस्काय में चन्द्र-सूर्य और चन्द्र-सूर्य की प्रभा
		सप्रदेश-अप्रदेश का चिन्तन	11-12	आदि नहीं हैं
20		चौदह द्वारों की संग्रहणी गाथा	13	तमस्काय का वर्ण परम कृष्ण, भयजनक व
21-23		जीव प्रत्याख्यानी ज्ञाता-अज्ञाता एवं कर्ता आदि हैं		त्रासदायक है
24		चौबीस दण्डक के जीवों का प्रत्याख्यान आदि से	14	तमस्काय के तेरह नाम

15	तमस्काय का परिणमन-जल का परिणाम, जीव का परिणाम, पुद्गलों का परिणाम	31	कृष्ण राजियों में किन-किन जीवों की उत्पत्ति-अनुत्पत्ति
16	तमस्काय में किन जीवों की उत्पत्ति और अनुत्पत्ति	32	आठ कृष्ण राजियों के आठ अवकाशान्तरों में आठ लोकान्तिक विमान
कृष्णराजियों का वर्णन			
17	कृष्ण राजियों के आठ प्रकार		लोकान्तिक विमानों का वर्णन
18	आठ कृष्ण राजियों के स्थान	33	अर्चि विमान का स्थान
19	कृष्ण राजियों का आयाम-विष्कम्भ और परिधि	34-35	अर्चिमाली विमान -यावत्- रिष्ट विमान का स्थान
20	कृष्ण राजियों की मोटाई	36	सारस्वत आदि आठ लोकान्तिक देवों की संग्रहणी गाथा
21	कृष्ण राजियों में घर आदि नहीं हैं		
22	कृष्ण राजियों में ग्राम आदि नहीं हैं	37	सारस्वत देव का विमान
23 (1)	कृष्ण राजियों में मेघ हैं	38-39	आदित्य देव-यावत्-रिष्ट देवों का विमान
(2)	इन मेघों की रचना देव करते हैं	40 (1)	सारस्वत-आदित्य दो देवों का परिवार
24	कृष्ण राजियों में बादर स्तनित शब्द हैं	(2)	वह्नि-वरुण देवों का परिवार
25	कृष्ण राजियों में स्थूल अप्काय आदि नहीं हैं	(3)	गर्दतोय-तुषित देवों का परिवार
26-27	कृष्ण राजियों में चन्द्र, सूर्य आदि व उनकी प्रभा नहीं हैं	(4)	अव्याबाध-आग्नेय और रिष्ट देवों का परिवार
		41	लोकान्तिक विमानों का आधार-वायु
28	कृष्ण राजियों का वर्ण परम कृष्ण व भयंकर है	42	लोकान्तिक विमानों की स्थिति
29	कृष्ण राजियों के आठ नाम	43	लोकान्तिक विमानों से लोकान्त का अंतर
30	कृष्ण राजियों का परिणमन-पृथ्वी, जीव और पुद्गलों का परिणमन	1 (1)	षष्ठ 'भव्य' उद्देशक सात पृथ्वियाँ

(2)	सात पृथ्वियों के आवास	(8)	सौ वर्ष के युग-यावत्-शीर्ष प्रहेलिका
2	पांच अनुत्तर विमान	6	दो प्रकार का औपमिक काल
3-8	चौबीस दण्डक में मारणान्तिक समुद्रघात के पश्चात् उत्पन्न होने पर आहार, आहार परिणमन और शरीर रचना	7 8	पल्योपम और सागरोपम का वर्णन अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी प्रत्येक के छ-छ आरों का कालमान
	सप्तम 'शाली' उद्देशक	9	क. सुषमा-सुषमा आरे का भरत क्षेत्र ख. भरत क्षेत्र में छ प्रकार के मनुष्य
1	शाली व्रीहि आदि धान्यों की स्थिति		अष्टम 'पृथ्वी' उद्देशक
2	कलाय, मसूर, तिल, मूंग, उड़द, वालौर,		आठ पृथ्वियों के नाम
3	कुलथ, चंवला, तुअर, चना आदि धान्यों की स्थिति	1	रत्नप्रभादि पृथ्वियों तथा सर्व देवलोको में गृह-ग्राम
4	अलसी, कुसुंभ आदि धान्यों की स्थिति	2-26	मेघादि के अस्तित्व और कर्तृत्व की प्ररूपणा
	क. एक मुहूर्त से लेकर शीर्ष-प्रहेलिका पर्यंत		चौबीस दण्डक में छह प्रकार का आयुबंध
	गणित-योग्य काल-परिणाम	27-28	चौबीस दण्डक में छह प्रकार का निधत्त बंध
	ख. एक मुहूर्त के श्वासोच्छ्वास	29-32	चौबीस दण्डक में बारह आलापक (दण्डक)
5	एक अहोरात्र के मुहूर्त	33-34	लवण समुद्र आदि असंख्यात द्वीप समुद्रों का स्वरूप
(2)	एक पक्ष के अहोरात्र	35	और प्रमाण
(3)	एक मास के पक्ष		द्वीप-समुद्रों के शुभ नाम, परिमाण एवं जीवोत्पत्ति
(4)	एक ऋतु के मास	36	नवम 'कर्म' उद्देशक
(5)	एक अयन के ऋतु		ज्ञानावरणीय के बंध के समय बंधने वाली अन्य
(6)	एक संवत्सर के अयन	1	कर्म प्रकृतियाँ
(7)	एक युग के संवत्सर		

2-3	बाह्य पुद्गलों को ग्रहण करके महर्धिक देव द्वारा वैक्रिय करना	9-10	चौबीस दण्डकों के जीव भवसिद्धिक भी हैं, अभवसिद्धिक भी हैं
4	देवलोकवर्ती पुद्गलों को ग्रहण करके महर्धिक देव द्वारा वैक्रिय करना	11 (1)	सभी प्राणी एकान्त दुःख वेदन करते हैं- यह अन्यतीर्थिक मान्यता
5-7	वर्ण विपर्यय करने में महर्धिक देव का सामर्थ्य	(2)	सभी प्राणी कभी सुख, कभी दुःख का वेदन करते हैं- यह भ. महावीर की मान्यता
8-12	गंध, रस, स्पर्श विपर्यय करने में महर्धिक देव का सामर्थ्य	12-13	चौबीस दण्डकों के जीव समीपवर्ती पुद्गलों का आहार करते हैं
13	क. अशुद्ध लेश्या वाले देवों के जानने और देखने के आठ विकल्प ख. विशुद्ध लेश्या वाले देवों के जानने और देखने के चार विकल्प	14	क. केवली इन्द्रियों द्वारा नहीं जानते, नहीं देखते ख. केवली भगवान् का आत्मा द्वारा ज्ञान-दर्शन सामर्थ्य
1	दशम अन्य यूथिक उद्देशक राजगृह में जितने जीव हैं उतने जीवों के भी सुख-दुःख दिखाने में समर्थ नहीं- यह अन्यतीर्थिक मान्यता	15	दसवें उद्देशक की संग्रहणी गाथा
(1)			सप्तम शतक
(2)	लोक के सभी जीवों के सुख-दुःख अनुमात्र भी दिखाने में असमर्थ- यह भ. महावीर की मान्यता	1	प्रथम आहार उद्देशक सप्तम शतक की संग्रहणी गाथा
2	जीव का निश्चित स्वरूप	2	भ. महावीर से गौतमस्वामी की जिज्ञासा पृच्छा
3-8	चौबीस दण्डकों में जीव चैतन्य है	3 (1)	परभव प्राप्ति के प्रारंभिक समयों में जीव के आहारक और अनाहारक होने का निर्णय
		(2)	चौबीस दण्डक में जीव के आहारक-अनाहारक होने का वर्णन

4	(1)	जीव के अत्याहार का प्रथम और अंतिम समय	(3)	कर्मरहित जीव की गति के सम्बन्ध में धूम का उदाहरण
	(2)	चौबीस दंडकों में जीव के अत्याहार का प्रथम और अंतिम समय	(4)	कर्मरहित जीव की गति के सम्बन्ध में धनुष-बाण का उदाहरण
5		क. लोक के संस्थान का प्ररूपण		दुःखी ही दुःख से युक्त है
		ख. शाश्वत लोक में जीव-अजीव के ज्ञाता केवली हैं और वे सिद्ध-बुद्ध और मुक्त होते हैं	14	चौबीस दण्डक के दुःखी जीव ही दुःख से युक्त हैं
6	(1)	उपाश्रय में बैठकर सामायिक किये हुए श्रमणोपासक को लगने वाली क्रिया	15	दुःख के सम्बन्ध में पाँच विकल्प
	(2)	सांपरायिक क्रिया के हेतु	(3)	उपयोग रहित गमनादि प्रवृत्ति करने वाले अणगार को सांपरायिककी क्रिया
7		त्रस प्राणियों के समारंभ के अतिचारों की मर्यादा	16	अंगार, धूम और संयोजना दोष युक्त श्रमण-आहार की व्याख्या
8		वनस्पतिकाय के समारंभ के अतिचारों की मर्यादा	17	अंगार धूम और संयोजना दोषरहित आहार की व्याख्या
9-10		श्रमण या माहन को आहार देने का श्रमणोपासक को फल	18	क्षेत्रातिक्रान्त आदि सदोष आहार की व्याख्या
11		कर्मरहित (मुक्त) जीव की (ऊर्ध्व) गति का प्ररूपण	19	शस्त्रातीत शस्त्र-परिणत आदि आहार के विशेषणों की व्याख्या
12		कर्मरहित जीव की गति के छ प्रकार	20	
13	(1)	कर्मरहित जीव सहित की गति के सम्बन्ध में मृतिका से लिप्त तुम्बे का उदाहरण		द्वितीय विरति उद्देशक
	(2)	कर्मरहित जीव की गति के सम्बन्ध में पकी हुई फलियों का उदाहरण	1	सुप्रत्याख्यानी और दुष्प्रत्याख्यानी का स्वरूप
			2	दो प्रकार के प्रत्याख्यान
			3	मूल गुण प्रत्याख्यान के दो प्रकार

4	सर्व मूल गुण प्रत्याख्यान के पाँच प्रकार	28	क. जीव संयत-असंयत और संयतासंयत
5	देश मूल गुण प्रत्याख्यान के पाँच प्रकार		ख. चौबीस दण्डकों में संयत आदि
6	उत्तरगुण प्रत्याख्यान के दो प्रकार		ग. संयत आदि का अल्प-बहुत्व
7	सर्व उत्तरगुण प्रत्याख्यान के दस प्रकार	29-32	जीव-चौबीस दण्डकों में प्रत्याख्यानी आदि
8	देश उत्तरगुण प्रत्याख्यान के सात प्रकार	33-35	चौबीस दण्डकों में प्रत्याख्यानी आदि का अल्प-बहुत्व
9	जीव प्रत्याख्यानी और अप्रत्याख्यानी		
10-13	चौबीस दण्डकों में प्रत्याख्यानी और अप्रत्याख्यानी की विचारणा	36 37	जीव को शाश्वत या अशाश्वत मानना सापेक्ष है चौबीस दण्डकों में जीव का शाश्वत या अशाश्वत मानना सापेक्ष है
14	मूल गुण प्रत्याख्यानी आदि का अल्प-बहुत्व		
15	पंचेन्द्रिय तिर्यच्योनिक में मूल गुण प्रत्याख्यानी का अल्प-बहुत्व		तृतीय 'स्थावर' उद्देशक
16	मूल गुण प्रत्याख्यानी मनुष्य का अल्प बहुत्व	1	वनस्पतिकाय के अल्पाहारी और महाहारी काल का प्ररूपण
17	जीव सर्वमूलगुण प्रत्याख्यानी आदि	2	ग्रीष्म ऋतु में वनस्पति के पुष्पित-फलित होने का कारण
18-22	चौबीस दण्डकों में सर्वमूलगुण प्रत्याख्यानी आदि		
23	सर्वमूलगुण प्रत्याख्यानी आदि का अल्प बहुत्व	3	मूल कंद-यावत्-बीज भिन्न-भिन्न जीवों से व्याप्त
24	जीव सर्वउत्तरगुण प्रत्याख्यानी आदि	4	वनस्पतिकाय का आहार और परिणमन
25	पंचेन्द्रिय तिर्यच्योनिक व मनुष्य सर्वउत्तरगुण प्रत्याख्यानी आदि	5	आलू, मूला, अदरक आदि अनन्त जीव वाली वनस्पतियाँ
26	वैमानिक आदि अप्रत्याख्यानी	6-9	चौबीस दण्डकों में लेश्या की अपेक्षा अल्प-कर्म
27	सर्वउत्तरगुण प्रत्याख्यानी आदि का अल्प बहुत्व		महाकर्म का विचार

10	वेदना और निर्जरा की भिन्नता	2	क. छ प्रकार के संसार स्थित जीव
11-12	चौबीस दण्डक में वेदना और निर्जरा की भिन्नता		ख. जीव के छ भेद, पृथ्वीकाय के छ भेद, छ भेदों की स्थिति, भवस्थिति, कायस्थिति, निर्लेपकाल, अनगर सम्बन्धी विचार, सम्यक्त्व क्रिया और मिथ्यात्व क्रिया की संग्रहणी गाथा
13	वेदना और निर्जरा की भिन्नता का तीन काल की अपेक्षा से विचार		पंचम 'पक्षी' उद्देशक
14-15	चौबीस दण्डकों में तीन काल की अपेक्षा से वेदना और निर्जरा की भिन्नता		राजगृह में भगवान का पदार्पण व गौतमस्वामी द्वारा पृच्छा
16	जीव को कर्म की वेदना और निर्जरा	1	क. तीन प्रकार के खेचर पंचेन्द्रिय तिर्यच जीवों का योनि संग्रह
17	चौबीस दंडकों में जीव को कर्म की वेदना और निर्जरा		ख. संग्रहणी गाथा
18	क्या जीव कर्म की वेदना व निर्जरा करेंगे ?	2	षष्ठ 'आयु' उद्देशक
19	चौबीस दंडक में क्या जीव कर्म की वेदना या निर्जरा करेंगे ?		राजगृह नगर में भगवान का पदार्पण व गौतमस्वामी द्वारा पृच्छा
20	वेदना और निर्जरा का विभिन्न समय	1	चौबीस दण्डक के जीवों द्वारा इसी भव में आयु बंध
21-22	चौबीस दण्डकों में वेदना और निर्जरा का विभिन्न समय		चौबीस दण्डक के जीवों द्वारा उत्पन्न होने के पश्चात् आयु का वेदन
23-24	चौबीस दण्डक में जीव को शास्वत या अशास्वत मानना सापेक्ष है	2-4	चौबीस दण्डक के जीवों की अल्प वेदना या पृच्छा
1	चतुर्थ 'जीव' उद्देशक राजगृह में भगवान का पदार्पण व गौतमस्वामी द्वारा पृच्छा	5-6 7-11	

12	महावेदना के संबंध में प्ररूपण	32-33	उस समय भारतवर्ष का आकार भाव-स्वरूप कैसा होगा ?
13-14	जीव के अनाभोग में आयु-बंध		
	चौबीस दण्डक में अनाभोग (अनुपयोग) से आयु का बंध	34	छठे आरे के मनुष्यों का आहार
15	प्राणातिपात-यावत्-मिथ्यादर्शनशल्य से जीव के कर्कश वेदनीय कर्म का बंध	35	छठे आरे के मनुष्यों की गति
	कर्कश वेदनीय कर्म के बंध का हेतु	36	छठे आरे के श्वापदों की गति
17	कर्कश वेदनीय कर्म के बंध का हेतु	37	छठे आरे के पक्षियों की गति
17-18	चौबीस दण्डकों में कर्कश वेदनीय कर्म के बंध का हेतु	1	सप्तम 'अणगार' उद्देशक
	जीवों के अकर्कश वेदनीय कर्म का बंध	2	क. संवृत अणगार की इरियावही क्रिया
19	अकर्कश वेदनीय कर्म के बंध का हेतु	3	ख. इरियावही क्रिया के हेतु
20	चौबीस दण्डकों में अकर्कश वेदनीय कर्म के बंध का हेतु	4	काम रूपी है, अरूपी नहीं
21-22	साता वेदनीय कर्म का अस्तित्व	5	काम सचित भी है, अचित भी है
23	साता वेदनीय कर्म के बंध का हेतु	6	काम जीव भी है, अजीव भी है
24	चौबीस दण्डकों में साता वेदनीय के बंध का हेतु	7	काम जीवों को होता है
25-26	असाता वेदनीय कर्म का अस्तित्व	8	काम दो प्रकार के हैं
27	असाता वेदनीय के बंध का हेतु	9	भोग रूपी है, अरूपी नहीं
28	चौबीस दण्डक में असाता वेदनीय के बंध का हेतु	10	भोग सचित-अचित दोनों होते हैं
29-30	इस अवसरपिणी के दुषमदुषमा आरे का वर्णन	11	भोग जीव-अजीव दोनों होते हैं
31		12	भोग जीवों के होते हैं, अजीवों के नहीं
			भोग तीन प्रकार के हैं
			काम-भोग पाँच प्रकार के हैं

13	(1)	जीव कामी भी है, भोगी भी है	5	दस प्रकार की संज्ञाएं
	(2)	जीवों के कामी-भोगी होने का हेतु	6	चौबीस दण्डक में दस प्रकार की संज्ञाएं
14-18		चौबीस दण्डक में कामी-भोगी	7	नरक में सतत अनुभव होने वाली दस प्रकार की वेदनाएं
19		कामी-भोगी का अल्प-बहुत्व		
20		क. उत्थानादि से छद्मस्थ का भोग-सामर्थ्य	8	हाथी और कुँथुए को समान लगने वाली अप्रत्याख्यान क्रिया
21		ख. भोगों के त्याग से निर्जरा		
22		अधो अवधि ज्ञानी का भोग सामर्थ्य	9	आधाकर्म आहार करने वाले साधु को कर्म प्रकृतियों के बंधन का प्ररूपण
23		परमावधि ज्ञानी का उसी भव से मोक्ष		
24		केवल ज्ञानी का उसी भव से मोक्ष		
25		असंज्ञी जीवों की अकाम वेदना	1-2	नवम 'असंवृत' उद्देशक बाह्य पुद्गलों को ग्रहण करके असंवृत साधु का वैक्रिय करना
26		संज्ञी जीवों की अकाम वेदना		
27		अकाम निकरण वेदना कैसे ?	3-4	समीपवर्ती पुद्गलों को ग्रहण करके असंवृत साधु का वैक्रिय करना
28		प्रकाम निकरण वेदना का वेदन		
		प्रकाम निकरण वेदना कैसे ?	5	महाशिला-कंटक संग्राम में जय-पराजय का निर्णय
1		अष्टम 'छद्मस्थ' उद्देशक	6-10	महाशिला कंटक संग्राम के लिए कूणिक राजा की तैयारी और अठारह गणराजाओं पर विजय
		छद्मस्थ की केवल संयम, संवर, ब्रह्मचर्य और		
		समिति-गुप्ति के पालन से मुक्ति संभव नहीं	11	महाशिला-कंटक नाम का हेतु
2		हाथी और कुँथुए का जीव समान है	12	महाशिला-कंटक में मनुष्यों का संहार
3-4		चौबीस दण्डक में पापकर्म से दुःख और कर्म निर्जरा से सुख	13	महाशिला-कंटक में मरे हुए मनुष्यों की गति
			14-15	रथ-मूसल संग्राम में जय-पराजय

16	रथ-मूसल संग्राम नाम का हेतु	3-6	पंचास्तिकाय के सम्बन्ध में अन्य तीर्थकों का प्रश्न
17	रथ-मूसल संग्राम में मनुष्यों का संहार		और गौतम गणधर का समाधान
18	रथ-मूसल संग्राम में मरे हुए मनुष्यों की गति	7-10	पुद्गलास्तिकाय के कर्मबंध नहीं होता
19	कोणिक के साथ शक्रेन्द्र और चमरेन्द्र के सहयोग का हेतु	11	अरूपी जीवास्तिकाय में ही जीव पाप कर्म-फल से संयुक्त
20	(1) युद्ध में मरने वाले सभी स्वर्ग में नहीं जाते	12	कालोदायी का प्रव्रज्या-ग्रहण
	(2-5) वैशाली निवासी नाग पौत्र वरुण का संग्राम में गमन	13-15	पापकर्मों का अशुभ फल
	(6) वरुण का अभिग्रह	16	अशुभ कर्मफल के सम्बन्ध में विषमिश्रित भोजन का उदाहरण
	(7-9) वरुण पर प्रहार		
	(10) वरुण का युद्ध से प्रत्यावर्तन	17	शुभ कर्मों का शुभ फल
	(11-12) वरुण की आलोचना एवं मृत्यु	18	क. शुभ कर्मफल के सम्बन्ध में औषधिमिश्रित आहार का उदाहरण
	(13-14) वरुण के बालमित्र की आराधना		
21	(1) वरुण की देवगति		ख. प्राणातिपात आदि अठारह पापों से विरति का फल
	(2) वरुण की स्थिति		
22	वरुण के मित्र का महाविदेह में जन्म	19	क. अग्निकाय को जलाने वाला महा आरंभकर्ता
23-24	वरुण और उसके बाल मित्र की मुक्ति		ख. अग्निकाय को बुझाने वाला अल्प आरंभकर्ता
	दशम 'अन्यतीर्थिक' उद्देशक	20	प्रकाश और ताप देने वाले अचित्त पुद्गलों का प्रकाश
1	राजगृह नगर, गुणशील चैत्य, पृथ्वीशिलापट्टक वर्णन		
2	कालोदायी आदि अन्यतीर्थिक	21	तेजोलेण्या के पुद्गलों का प्रकाश
		22	कालोदायी की अंतिम आराधना एवं मुक्ति

अष्टम शतक		
1	अष्टम शतक की संग्रहणी गाथा प्रथम 'पुद्गल' उद्देशक	38-39
2	राजगृह नगर में गौतमस्वामी का पदार्पण व भ. महावीर से पृच्छा	40-41
3	तीन प्रकार के पुद्गल	42-43
4	प्रयोग परिणत पुद्गल के पांच प्रकार	44-45
नौ दंडकों द्वारा प्रयोग परिणत पुद्गलों का निरूपण		
5-16	एकेन्द्रिय आदि 13 दण्डकों में प्रयोग परिणत पुद्गल (प्रथम दंडक)	
17-25	चौबीस दण्डकों में सूक्ष्म-बादर तथा पर्याप्त-अपर्याप्त की अपेक्षा प्रयोग परिणत पुद्गल (द्वितीय दंडक)	46-47
26-31	चौबीस दण्डकों में सूक्ष्म-बादर तथा अपर्याप्त-पर्याप्त जीवों में औदारिक आदि पांच शरीरों में से यथायोग्य शरीरों की अपेक्षा से प्रयोग परिणत पुद्गलों का कथन (तृतीय दंडक)	48 49 50-54
32-35	चौबीस दण्डकों में इन्द्रियों की अपेक्षा प्रयोग परिणत पुद्गल (चतुर्थ दंडक)	55-71
36-37	चौबीस दण्डकों में शरीरों एवं इन्द्रियों की अपेक्षा प्रयोग परिणत पुद्गल (पंचम दंडक)	72-73 74 75-79

चौबीस दण्डकों में वर्ण, गंध, रस, स्पर्श और संस्थान की अपेक्षा प्रयोग परिणत पुद्गल (छठम दंडक)

चौबीस दण्डक में शरीर तथा वर्ण, गंध, रस, स्पर्श संस्थान की अपेक्षा से प्रयोग परिणत पुद्गल (सप्तम दंडक)

चौबीस दण्डकों में इन्द्रियाँ तथा वर्णादि की अपेक्षा से प्रयोग परिणत पुद्गल (अष्टम दंडक)

शरीर, इन्द्रिय और वर्णादि की अपेक्षा से चौबीस दंडकों के जीवों के प्रयोग परिणत पुद्गल (नवम दंडक)

मिश्रपरिणत पुद्गलों का नवदण्डकों द्वारा निरूपण

विस्रसापरिणत पुद्गलों का नवदण्डकों द्वारा निरूपण

एक द्रव्य के प्रयोग परिणत पुद्गल

तीन योग की अपेक्षा एक द्रव्य के प्रयोग परिणत पुद्गल

पाँच शरीर की अपेक्षा एक द्रव्य के प्रयोग परिणत पुद्गल

एक द्रव्य के मिश्र परिणत पुद्गल

एक द्रव्य के विस्रसा परिणत पुद्गल

एक द्रव्य के वर्ण, गंध, रस, स्पर्श तथा संस्थान

	परिणत पुद्गल	(2)	राजप्रश्रीय अनुसार केवलज्ञान पर्यंत ज्ञान के भेद
80-85	दो द्रव्यों के प्रयोग परिणत मिश्र परिणत तथा विस्प्रसा- परिणत पुद्गल	24 25	तीन प्रकार का अज्ञान मति अज्ञान के चार प्रकार
86-88	तीन योग की अपेक्षा तीन प्रकार से द्रव्यों के परिणत पुद्गल	26 (1) (2)	अवग्रह के दो प्रकार ईहा, अवाय, धारणा का स्वरूप नन्दी सूत्र के अनुसार
89-90	चार, पाँच, छह-यावत्-अनंत द्रव्यों के मन-वचन- काया की अपेक्षा तीनों प्रकार से परिणत पुद्गल	27 28	श्रुत अज्ञान का स्वरूप विभंग ज्ञान का स्वरूप
91	तीनों प्रकार से परिणत पुद्गलों का अल्प-बहुत्व द्वितीय 'आशीविष' उद्देशक	29 30-37	जीव ज्ञानी या अज्ञानी चौबीस दण्डकों में ज्ञानी-अज्ञानी
1	दो प्रकार के आशीविष	38	सिद्ध-केवलज्ञानी
2	जाति आशीविष के चार प्रकार	39-43	पाँच गति में ज्ञानी-अज्ञानी
3	वृश्चिक जाति आशीविष का सामर्थ्य	44-49	इन्द्रिय वर्गणा में ज्ञानी-अज्ञानी
4	मण्डूक जाति आशीविष का सामर्थ्य	50-52	काय वर्गणा में ज्ञानी-अज्ञानी
5	उरग जाति आशीविष का सामर्थ्य	53-55	सूक्ष्म बादर आदि में ज्ञानी-अज्ञानी
6	मनुष्य जाति आशीविष का सामर्थ्य	56-70	चौबीस दण्डक के पर्याप्त-अपर्याप्त में ज्ञानी-अज्ञानी
7-19	चौबीस दण्डकों में कर्म आशीविष का विचार	71-75	चार गति के भवस्थ जीवों में ज्ञानी-अज्ञानी
20	छद्मस्थ दस बातों को नहीं जानता व नहीं देखता है	76-78	भवसिद्धिक आदि में ज्ञानी-अज्ञानी
21	सर्वज्ञ दस बातों को जानता है व देखता है	79-81	संज्ञी आदि में ज्ञानी-अज्ञानी
22	पाँच प्रकार का ज्ञान	82	लब्धि के दस प्रकार
23 (1)	आभिनिबोधिक ज्ञान के चार प्रकार	83-90	दस प्रकार की लब्धियों के भेद

91-117	दस लब्धि-सहित तथा दस लब्धि-रहित में ज्ञानी-अज्ञानी	2	संख्येय जीव वाले वृक्ष अनेक प्रकार के
118-126	साकारोपयुक्त में ज्ञानी-अज्ञानी	3	असंख्येय जीव वाले वृक्ष दो प्रकार के
127-130	अनाकारोपयुक्त में ज्ञानी-अज्ञानी	4	क. एक बीज वाले वृक्ष अनेक प्रकार के
131-133	योग वर्णना में ज्ञानी-अज्ञानी	5	ख. अनेक बीज वाले वृक्ष अनेक प्रकार के
134-137	लेश्या वर्णना में ज्ञानी-अज्ञानी	6	अनंत जीव वाले वृक्ष अनेक प्रकार के
138-139	कषाय वर्णना में ज्ञानी-अज्ञानी	(1)	कछुए आदि के देह का सूक्ष्मतर खण्ड भी जीव प्रदेशों से व्याप्त है
140-141	वेद वर्णना में ज्ञानी-अज्ञानी	(2)	जीव प्रदेशों को हाथ आदि व शस्त्र आदि से पीड़ा नहीं होती
142-143	आहारक वर्णना में ज्ञानी-अज्ञानी		आठ पृथिव्यों
144-148	पाँच ज्ञान का विषय	7	आठ पृथिव्यों का चरम-अचरम विचार
149-151	तीन अज्ञान का विषय	8	चतुर्थ 'क्रिया' उद्देशक
152-153	ज्ञानी की स्थिति		राजगृह नगर में भ. महावीर का पदार्पण व
154	दसों ज्ञान का अंतर जीवाभिगम अनुसार	1	गौतमस्वामी द्वारा पृच्छा
155	दसों ज्ञान का अल्पबहुत्व प्रज्ञापना अनुसार	2	पाँच प्रकार की क्रियाएं
156-159	पाँच ज्ञान, तीन अज्ञान के पर्यव		पंचम 'आजीविक' उद्देशक
160	पाँच ज्ञान के पर्यवों का अल्प-बहुत्व		राजगृह नगर में भ. महावीर का पदार्पण व
161	तीन अज्ञान के पर्यवों का अल्प-बहुत्व	1	गौतमस्वामी द्वारा पृच्छा
162	पाँच ज्ञान-तीन अज्ञान के पर्यवों का अल्प-बहुत्व	2	श्रावक सामायिक के पश्चात् अपने ही उपकरणों की शोध करता है
1	तृतीय 'वृक्ष' उद्देशक		
	तीन प्रकार के वृक्ष		

3	श्रावक के ममत्व भाव का प्रत्याख्यान नहीं है	2	उत्तम-श्रमण को अशुद्ध आहार देने से अधिक निर्जरा
4	सामायिक व्रत स्वीकार करने पर भी स्त्री उसी की स्त्री है	3	और अल्प पाप असंयत को शुद्ध अथवा अशुद्ध आहार देने से एकांत पाप
5	श्रावक का प्रेम बंधन अविच्छिन्न है		
6	(1) प्राणातिपात के प्रत्याख्यान का स्वरूप	4-5 (1)	गृहस्थ ने जिस श्रमण के निमित्त आहार दिया है, (2) अतीत-कालीन प्रतिक्रमण के भागे वह श्रमण न मिले तो उस आहार को एकांत स्थान (3) वर्तमान-कालीन संवर के भागे में परठने का विधान (4) भविष्य-कालीन प्रत्याख्यान के भागे दस श्रमणों के निमित्त दिये हुए आहार की भी यही विधि है
7	स्थूल मृषावाद प्रत्याख्यान के भागे		
8	(1) स्थूल अदत्तादान प्रत्याख्यान के भागे	6	पात्र, गुच्छा, रजोहरण, चोलपट्ट, कंबल, दण्ड, (2) स्थूल मैथुन प्रत्याख्यान के भागे संस्तारक आदि के सम्बन्ध में भी पूर्वोक्त विधि (3) स्थूल परिग्रह प्रत्याख्यान के भागे आराधक निर्ग्रिथ की विभिन्न पहलुओं से संयुक्तिक प्ररूपणा
9-10	आजीविक का सिद्धांत		
11	आजीविक बारह श्रमणोपासक	10	आराधक निर्ग्रिथी की विभिन्न पहलुओं से संयुक्तिक प्ररूपणा
12	आजीविक बारह श्रमणोपासक का स्वरूप		
13	श्रावकों के त्याज्य पंद्रह कर्मादान	11	क. आराधक होने का हेतु ख. छिद्यमान रोम आदि छिन्न माने जाते हैं ग. दह्यमान तृण आदि दग्ध माने जाते हैं घ. प्रक्षिप्यमान वस्त्र प्रक्षिप्त माने जाते हैं ङ. रज्यमान वस्त्र रक्त माने जाते हैं
14	श्रमणोपासक पवित्र होकर मृत्यु प्राप्त करने वाली की देवलोक में उत्पत्ति		
15	चार प्रकार के देवलोक		
1	षष्ठ 'प्रासुक-आहारादि' उद्देशक उत्तम श्रमण को शुद्ध आहार देने से एकांत निर्जरा		

12	दीपक में ज्योति जलती है		महावीर का पदार्पण
13	प्रज्वलित घर में ज्योति जलती है	3-15	अन्यतीर्थिक और स्थविरों का संवाद
14	औदारिक शरीर सम्बन्धी क्रिया	16-23	स्थविरों पर अन्यतीर्थिकों द्वारा पुनः आक्षेप और
15-17	चौबीस दण्डक में औदारिक शरीर सम्बन्धी क्रिया	24-25	स्थविरों द्वारा प्रतिवाद
18	औदारिक शरीर सम्बन्धी एक जीव द्वारा क्रिया		स्थविरों द्वारा गति प्रपात अध्ययन की रचना व
19	चौबीस दण्डक में औदारिक शरीर सम्बन्धी एक जीव द्वारा क्रिया		उसके पांच भेद
20	औदारिक शरीर सम्बन्धी अनेक जीवों द्वारा क्रिया	1	अष्टम 'प्रत्यनीक' उद्देशक
21	चौबीस दण्डक में औदारिक शरीर सम्बन्धी अनेक जीवों द्वारा क्रिया	2	राजगृह नगर में भ. महावीर का पदार्पण व गौतम
22	अनेक जीवों के औदारिक शरीर से होने वाली क्रियायें	3	स्वामी द्वारा पृच्छा
23-24	चौबीस दण्डक में अनेक जीवों के औदारिक शरीर से होने वाली क्रियायें	4	तीन प्रकार के गुरु प्रत्यनीक
25	चौबीस दण्डक में वैक्रिय शरीर सम्बन्धी क्रियायें	5	तीन प्रकार के गति प्रत्यनीक
26-27	चौबीस दण्डक में वैक्रिय शरीर से होने वाली क्रियायें	6	तीन प्रकार के समूह प्रत्यनीक
28-29	प्रत्येक शरीर के चार-चार विकल्प	7	तीन प्रकार के अनुकंपा प्रत्यनीक
1-2	सप्तम 'अदत्त' उद्देशक	8-9	तीन प्रकार के श्रुत प्रत्यनीक
	राजगृह नगर के गुणशील चैत्य (उद्यान) में भ.		तीन प्रकार के भाव प्रत्यनीक
			निर्ग्रन्थ के लिए आचरणीय पाँच प्रकार का व्यवहार,
			उनकी मर्यादा और व्यवहार अनुसार प्रवृत्ति का
			फल
		10	इर्यापथिक और सांपरायिक कर्म-बंध
		11-16	इर्यापथिक कर्म बाँधने वाले भागे

	सांप्रथिक कर्म बाँधने वाले भागे		ख. सादिपर्यवसित बंध के चार प्रकार
17-22	सांप्रथिक कर्म बाँधने वाले भागे		आलापण बंध का स्वरूप
23	आठ कर्म प्रकृतियाँ	13	अल्लिकापन बंध का स्वरूप
24	बावीस परीषह	14	श्लेषणा बंध का स्वरूप
25-29	चार कर्म के उदय से बावीस परीषह	15	उच्चय बंध का स्वरूप
30-34	कर्मानुसार परीषहों का निर्णय	16	समुच्चय बंध का स्वरूप
35	प्रातः, मध्याह्न, सायं के समय में सूर्यो की दूरी और निकटता से प्रतिभास आदि की प्ररूपणा	17	संहनन बंध का स्वरूप
36	सूर्य की सर्वत्र समान ऊँचाई	18	देश संहनन बंध का स्वरूप
37-38	समीप और दूर से सूर्य के दिखाई देने का हेतु	19	सर्व संहनन बंध का स्वरूप
39	सूर्य का प्रकाश क्षेत्र	20	शरीर बंध का स्वरूप
40	सूर्य का छहों दिशाओं में अस्पृष्ट क्षेत्र	21	पूर्व प्रयोग प्रत्ययिक बंध का स्वरूप
41-45	सूर्य का ताप क्षेत्र	22	प्रत्युत्पन्न प्रयोग प्रत्ययिक बंध का स्वरूप
46	मानुषोत्तर पर्वत के अंदर चन्द्र-सूर्य आदि	23	शरीर प्रयोग बंध के प्रकार
47	मानुषोत्तर पर्वत के बाहर चन्द्र-सूर्य आदि	24	औदारिक शरीर प्रयोग बंध के संबंध में विभिन्न प्रकारों से निरूपण
1	नवम 'प्रयोग बंध' उद्देशक	25-50 (1)	वैक्रिय शरीर प्रयोग बंध के भेद-प्रभेद एवं विभिन्न प्रकारों से निरूपण
2	दो प्रकार के बंध	51-82 (2)	प्रकारों से निरूपण
3-7	दो प्रकार के विस्रसा बंध	83-89 (3)	आहारक शरीर प्रयोग बंध का विभिन्न प्रकारों से निरूपण
8-11	तीन प्रकार के अनादि विस्रसा बंध	90-96 (4)	तैजस् शरीर प्रयोग बंध के संबंध में विभिन्न
12	तीन प्रकार के सादि विस्रसा बंध		
	क. तीन प्रकार का प्रयोग बंध		

	प्रकारों से निरूपण	19	पाँच प्रकार का पुद्गल-परिणाम
97-119(5)	कर्मण शरीर प्रयोग बंध के भेद-प्रभेदों की अपेक्षा	20-22	वर्णादि पुद्गल परिणाम के भेद
120-128	विभिन्न दृष्टियों से निरूपण	23-28	पुद्गलास्तिकाय का एक प्रदेश-यावत्-अनंत प्रदेश
	पाँच शरीरों के एक दूसरे के साथ बंधक-अबंधक	29-30	लोकाकाश और जीव के प्रदेश
129	की चर्चा	31	आठ कर्म प्रकृतियाँ
	देश बंधक, सर्व बंधक और अबंधक का अल्प-	32-41	चौबीस दण्डक में आठ कर्म प्रकृतियाँ
	बहुत्व	42-58	आठ कर्मों का परस्पर सम्बन्ध
	दशम 'आराधना' उद्देशक	59	जीव पुद्गली है या पुद्गल
1	राजगृह नगर में भ. महावीर का पदार्पण व गौतम	60	चौबीस दण्डक के जीव पुद्गली है या पुद्गल
2	स्वामी द्वारा पृच्छा	61	सिद्ध पुद्गली है या पुद्गल
	क. अन्य तीर्थिक मान्यता- शील ही श्रेय है व श्रुत ही श्रेय है		नवम शतक
	ख. महावीर मान्यता-शील और श्रुत सम्मन्त्र के चार भागों		प्रथम 'जम्बू' उद्देशक
3	तीन प्रकार की आराधना	1	नौवें शतक की संग्रहणी गाथा
4	ज्ञान आराधना के तीन प्रकार	2	जम्बूद्वीप में मिथिला नगरी के माणिभद्र चैत्य में भ.
5	दर्शन आराधना के तीन प्रकार		महावीर का पदार्पण व गौतम पृच्छा
6	चारित्र्य आराधना के तीन प्रकार	3	क. जम्बूद्वीप का स्थान
7-18	तीन आराधनाओं का परस्पर सम्बन्ध व आराधकों के शेष भंग		ख. जम्बूद्वीप का संस्थान-यावत्-जम्बूद्वीप के पूर्व-पश्चिम में चौदह लाख छप्पन हजार नदियाँ
			द्वितीय 'ज्योतिषीदेव' उद्देशक
		1	राजगृह नगर में भ. महावीर का पदार्पण व

	गौतम पृच्छा	4	केवली आदि से शुद्ध अणुगारिता का ग्रहण-अग्रहण
2	जम्बूद्वीप नामक द्वीप में प्रकाश करने वाले त्रैकालिक चन्द्र-सूर्य	5	केवली आदि से ब्रह्मचर्यवास का धारण-अधारण
3	लवण समुद्र में प्रकाश करने वाले चन्द्र-सूर्य	6	केवली आदि से शुद्ध संयम का ग्रहण-अग्रहण
4	धातकीखण्ड-यावत्-मनुष्य क्षेत्र में प्रकाश करने वाले चन्द्र-सूर्य	7	केवली आदि से शुद्ध संवर का आचरण-अनाचरण
5	आभ्यन्तर पुष्करार्ध समुद्र में प्रकाश करने वाले चन्द्र-सूर्य	8-12	केवली आदि से आभिनिर्बोधिक आदि ज्ञान उपार्जन-अनुपार्जन
	तृतीय से तीसवां पर्यंत 'अंतरद्वीप' उद्देशक	13	केवली आदि से ग्यारह बोलों की प्राप्ति और अप्राप्ति
1	राजगृह नगर में भ. महावीर का पदार्पण व गौतम पृच्छा	14	क. विभंगज्ञान की उत्पत्ति, सम्यक्त्व की प्राप्ति
2	शुद्धदंत द्वीप पर्यंत जीवाभिगम अनुसार एकोरूक द्वीप वर्णन	15	ख. चारित्र स्वीकार, अवधिज्ञान की प्राप्ति
3	अट्टाईस उद्देशक में अट्टाईस अन्तर्द्वीप वर्णन	16	अवधिज्ञानियों में लेश्या
	इकतीसवाँ 'असोच्चा केवली' उद्देशक	17	अवधिज्ञानियों में ज्ञान
1	राजगृह नगर में भ. महावीर का पदार्पण व गौतम पृच्छा	18	अवधिज्ञानियों में योग
2	केवली आदि से धर्म श्रवण किये बिना किसी जीव को धर्म की प्राप्ति नहीं	19	अवधिज्ञानियों में साकारोपयोग
3	केवली आदि से शुद्ध बोधि का लाभ-अलाभ	20	अवधिज्ञानियों का संघयण
		21	अवधिज्ञानियों का संस्थान
		22	अवधिज्ञानियों की ऊँचाई
		23	अवधिज्ञानियों का आयु
		24	अवधिज्ञानियों में वेद
		25	अवधिज्ञानियों में कषाय
		(1)	अवधिज्ञानियों के अध्यवसाय

(2)	अविज्ञानियों के प्रशस्त अध्यवसाय	41	केवली आदि से धर्म श्रवण करके दीक्षा दें
26	अविज्ञानियों को केवलज्ञान प्राप्ति का क्रम	42	केवली आदि से धर्म श्रवण करने वाला सिद्ध होता है
27	अश्रुत्वा केवली धर्मोपदेश नहीं करते		
28	अश्रुत्वा केवली दीक्षा नहीं देते	43	श्रुत्वा केवलियों के संभवित स्थान
29	अश्रुत्वा केवली सिद्ध होते हैं	44	एक समय में श्रुत्वा केवलियों की संख्या
30	अश्रुत्वा केवलियों के संभवित स्थान		बत्तीसवाँ गौण्य उद्देशक
31	एक समय में अश्रुत्वा केवलियों की संख्या	1-2	वाणिज्य ग्राम के दूतिपलाश चैत्य में भ. महावीर
32	क. केवली आदि से धर्म श्रवण करके धर्म की प्राप्ति	3-6	और पार्श्वपत्य गौण्य अणगार
	ख. केवली आदि से धर्म श्रवण करके सम्यक्त्व की प्राप्ति	7-13	चौबीस दण्डक में-जीवों की सांतर (अंतर सहित) निरंतर (अंतर रहित) उत्पत्ति
33	केवली आदि से धर्म श्रवण करके अविधज्ञान की प्राप्ति		चौबीस दण्डक में जीवों का सांतर-निरंतर च्यवन (मरण)
34	अविज्ञानियों में लेण्या	14	चार प्रकार का प्रवेशनक
35	अविज्ञानियों में ज्ञान	15	नैरयिक प्रवेशनक के प्रकार
36	अविज्ञानियों में योग -यावत्- आयुष्य	16	एक नैरयिकों के प्रवेशनक भंग
37	अविज्ञानियों में वेद	17	दो नैरयिकों के प्रवेशनक भंग
38	अविज्ञानियों में कषाय	18	तीन नैरयिकों के प्रवेशनक भंग
39	अविज्ञानी के कितने अध्यवसाय	19	चार नैरयिकों के प्रवेशनक भंग
40	केवली आदि से धर्म श्रवण करके धर्मोपदेश करें	20	पांच नैरयिकों के प्रवेशनक भंग
		21	छ नैरयिकों के प्रवेशनक भंग

22	सात नैरयिकों के प्रवेशनक भंग	58-59	क. पार्श्वपत्य गौण्य का पंच महाव्रत ग्रहण
23	आठ नैरयिकों के प्रवेशनक भंग		ख. पार्श्वपत्य गौण्य का निर्वाण
24	नौ नैरयिकों के प्रवेशनक भंग		तेतीसवाँ 'कुण्ड ग्राम' उद्देशक
25	दस नैरयिकों के प्रवेशनक भंग	1	ब्राह्मण कुण्डग्राम नगर के बहुशाल चैत्य में ऋषभदत्त
26	संख्यात नैरयिकों के प्रवेशनक भंग		ब्राह्मण
27	असंख्यात नैरयिकों के प्रवेशनक भंग	2-4	देवानंदा ब्राह्मणी व भ. महावीर का पदार्पण
28	उत्कृष्ट नैरयिक प्रवेशनक	5-12	भ. महावीर की वंदना के लिए ऋषभदत्त और
29	नैरयिक प्रवेशनक का अल्प-बहुत्व		देवानंदा का आगमन
30-33	तिर्यचयोनिक प्रवेशनक के प्रकार व भंग	13	देवानंदा के स्तनों से दुग्धधारा का क्षरण
34	तिर्यचयोनिक प्रवेशनक का अल्प-बहुत्व	14	दुग्धधारा का हेतु पुत्र-स्नेह
35-40	मनुष्य प्रवेशनक के प्रकार और भंग	15-16	ऋषभदत्त द्वारा प्रव्रज्या ग्रहण एवं मुक्ति
41	मनुष्य प्रवेशनक का अल्प-बहुत्व	17-20	देवानंदा की प्रव्रज्या साधना एवं मुक्ति
42-45	देव प्रवेशनक के प्रकार और भंग	जमालि चरित्र	
46	देव प्रवेशनक का अल्प-बहुत्व	21-22	क्षत्रिय कुण्ड ग्राम में जमाली क्षत्रिय कुमार का
47	सर्व प्रवेशनक का अल्प-बहुत्व		भोग वैभवमय जीवन
48	चौबीस दण्डक के जीवों का सांतर-निरंतर उत्पाद-उद्घर्तन	23-28	जमाली का भ. महावीर की वंदना के लिए जाना
49-51	चौबीस दंडक में उत्पात और उद्घर्तन के हेतु	29-30	जमाली द्वारा प्रवचन श्रवण, श्रद्धा व प्रव्रज्या की भावना
52	केवलज्ञानी आत्म प्रत्यक्ष से सब जानते हैं	31-33	माता-पिता से दीक्षा की आज्ञा का अनुरोध
53-57	चौबीस दण्डक के जीव स्वयं उत्पन्न होते हैं	34	प्रव्रज्या संकल्प सुनते ही माता शोकमग्न

35-44	माता-पिता के साथ विरक्त जमाली का वार्तालाप	101	भ. महावीर द्वारा समाधान
45	जमाली को प्रव्रज्या ग्रहण की अनुमति	102	क. मिथ्यात्व ग्रस्त जमाली की विराधकता का फल
46-81	जमाली के प्रव्रज्या ग्रहण का विस्तृत वर्णन		ख. जमाली की किल्बिषिक देवरूप में उत्पत्ति और स्थिति
82	जमाली की पाँच सौ पुरुषों के साथ प्रव्रज्या		
83-86	जमाली का भ. महावीर से स्वतंत्र विचरण के लिए अनुमति प्राप्त करना	103	भ. महावीर का जमाली के सम्बन्ध में गौतम को कथन
87	भगवान की बिना आज्ञा पाँच सौ मुनियों के साथ	104	किल्बिषिक देवों की स्थिति
88-90	जमाली का विहार	105-107	किल्बिषिक देवों का निवास स्थान
	जमाली का श्रावस्ती नगरी के कोष्ठक चैत्य में गमन	108	किल्बिषिक देव होने के हेतु
91	भ. महावीर का चम्पानगरी में पदार्पण व पूर्णभद्र चैत्य में गमन	109	किल्बिषिक देवों की भव परम्परा
92	जमाली अणगर के शरीर में रोगांतक की उत्पत्ति	110	जमाली की साधना के सम्बन्ध में भ. महावीर से गौतम का प्रश्न
93-96	रूग्ण जमाली को शय्या संस्कार के निमित्त से सिद्धांत विरूद्ध स्फुरणा	111	जमाली की लातंक कल्प में उत्पत्ति
97	कुछ श्रमणों द्वारा जमाली का सिद्धांत स्वीकार व कुछ के द्वारा अस्वीकार	112	जमाली का कुछ भवों के पश्चात् निर्वाण
98	जमाली द्वारा सर्वज्ञता का मिथ्या दावा		चौतिसवाँ पुरुष घातक उद्देशक
99	लोक और जीव का शाश्वत या अशाश्वत होना	1	राजगृह में भ. महावीर का पदार्पण व गौतम पृच्छा
100	जमाली की आशंका	2	क. पुरुष को मारने वाला पुरुष से भिन्न की भी हत्या करता है
			ख. पुरुष से भिन्न की हत्या का हेतु
		3-4	अश्व को मारने वाला अश्व से भिन्न को भी मारता है

5	क. त्रस को मारने वाला त्रस से भिन्न को भी मारता है		ग. रूपी अजीव चार प्रकार का
	ख. त्रस से भिन्न को मारने का हेतु	9	घ. अरूपी अजीव सात प्रकार का
6	ऋषिघातक अनंत जीवों का घातक	10-17	आग्नेयी दिशा जीव रूप नहीं है
7-8	पुरुष को मारने वाला पुरुष और पुरुष से भिन्न के साथ भी वैर बाँधता है	18-19	दिशा-विदिशाओं के जीव-अजीव रूप पाँच प्रकार के शरीर व भेद-प्रभेद
9-15	पृथ्वीकाय आदि के श्वासोच्छ्वास का विचार		द्वितीय संवृत अणुगार उद्देशक
16-22	पृथ्वीकाय आदि के श्वासोच्छ्वास के समय लगने वाली क्रियाएँ	1	राजगृह में भ. महावीर का पदार्पण व गौतम पृच्छ
23-25	वायुकाय से होने वाली क्रियाएँ	2	कषाय भाव में संवृत अणुगार को लगने वाली क्रियाएँ
		3	क. अकषाय भाव में संवृत अणुगार को लगने वाली क्रियाएँ
	दशम शतक		ख. इर्यापथिकी अथवा सांपरायिकी क्रियाओं के हेतु
1	दशम शतक के चौतीस उद्देशकों की संग्रहणी गाथा	4	तीन प्रकार की योनियाँ
2	प्रथम 'दिशा' उद्देशक	5	तीन प्रकार की वेदनायें
3-5	राजगृह में भ. महावीर का पदार्पण व गौतम पृच्छ	6	मासिक भिक्षु प्रतिमा की वास्तविक आराधना
6	पूर्वादि दिशायेँ जीव-अजीव रूप है	15	क. अकृत्य स्थान की आलोचना से आराधना
	दस दिशाएँ		ख. अकृत्य स्थान की आलोचना न करने से विराधना
7	दश दिशाओं के नाम		
8	क. दिशाएँ जीव-अजीव के देश-प्रदेश रूप हैं		तृतीय 'आत्म-ऋद्धि' उद्देशक
	ख. एकेन्द्रिय-यावत्-अनिन्द्रिय के देश-प्रदेश रूप हैं	1	राजगृह में भ. महावीर का पदार्पण व गौतम पृच्छ

2-5	एक देव में चार-पाँच देवावासों के उल्लेखन का सामर्थ्य	7	असुरेन्द्र के त्रायस्त्रिंशक देवों का पद शाश्वत है
6-10	देवों का मध्य में से होकर गमन सामर्थ्य	8 (1)	बलीन्द्र के त्रायस्त्रिंशक देवों की नित्यता
11-17	देव-देवियों का एक-दूसरे के मध्य में से होकर जाने का सामर्थ्य	(2)	जम्बूद्वीप स्थित भरत क्षेत्र के बिभेल सन्निवेश में तेतीस श्रमणोपासक विराधक हुए और वे सभी त्रायस्त्रिंशक देव हुए
18	क. दौड़ते हुए अश्व के 'खु-खु' शब्द का कारण	9-10	धरणेन्द्र के त्रायस्त्रिंशक देव व शेष भवनवासी एवं वाणव्यंतर देवों के त्रायस्त्रिंशक देव
19	ख. प्रज्ञापना भाषा-मृषा नहीं क. बारह प्रकार की भाषा ख. प्रज्ञापनी भाषा-मृषा नहीं	11	क. शक्रेन्द्र के त्रायस्त्रिंशक देव ख. जम्बूद्वीप स्थित भरत क्षेत्र के पलाशक सन्निवेश में तेतीस श्रमणोपासक आराधक अवस्था में मरकर त्रायस्त्रिंशक देव हुए
1-2	चतुर्थ 'श्यामहस्ती अणगार' उद्देशक वाणिज्यग्राम के द्युतिपलाश चैत्य में भ. महावीर और इन्द्रभूति गौतम		ग. शक्रेन्द्र के त्रायस्त्रिंशक देवों का पद शाश्वत है
3-4	श्याम हस्ती अणगार और गौतम का संवाद		
5 (1)	असुर कुमार के त्रायस्त्रिंशक देव	12-14	क. ईशानेन्द्र के त्रायस्त्रिंशक देव
(2)	जम्बूद्वीप में भरत क्षेत्र के काकंदी नगरी में तेतीस श्रमणोपासक		ख. जम्बूद्वीप स्थित भरत क्षेत्र के चम्पानगरी में तेतीस श्रमणोपासक आराधक अवस्था में मरकर त्रायस्त्रिंशक देव हुए
(3)	सभी श्रमणोपासक विराधक हुए और वे त्रायस्त्रिंशक देव हुए		ग. ईशानेन्द्र के त्रायस्त्रिंशक देवों का पद शाश्वत है
6	संदिग्ध गौतम का भ. महावीर के समीप समाधान के लिए उपस्थित होना		घ. अच्युतेन्द्र पर्यंत पूर्ववर्त वर्णन

पंचम 'देवी' उद्देशक

	पंचम 'देवी' उद्देशक	अग्रमहिषियों के नाम
1-3	राजगृह नगर के गुणशील चैत्य में भ. महावीर और स्थविर भगवंत	भूतानेन्द्र की छह अग्रमहिषियों के नाम भूतानेन्द्र के नागवित्त लोकपाल की चार अग्रमहिषियों के नाम, शेष वर्णन-धरणेन्द्र के लोकपालों के समान कालेन्द्र-महाकालेन्द्र की अग्रमहिषियों के नाम सुरूपेन्द्र-प्रतिरूपेन्द्र की चार अग्रमहिषियों के नाम पूर्णभद्रेन्द्र-मणिभद्रेन्द्र की चार अग्रमहिषियों के नाम
4	चमरेन्द्र की पाँच अग्रमहिषियों के नाम एवं उनकी देवियों की संख्या	16 17-18 19
5	क. चमरेन्द्र की अपनी सुधर्मा सभा में मैथुन निमित्तक भोग की असमर्थता	20 21
6	ख. मर्यादा का हेतु माणवक चैत्य स्तम्भ ग. जिन अस्थियों का सम्मान क. चमरेन्द्र के सोम लोकपाल की चार अग्रमहिषियों के नाम अग्रमहिषियों के नाम	22 23 (1) (2)
7-10	ख. चार हजार देवियों का एक त्रुटिक वर्ग ग. सोमा राजधानी के सोम लोकपाल की मैथुन मर्यादा, मर्यादा का हेतु-पूर्ववत्	24
11	शेष लोकपालों का वर्णन-सोम लोकपाल के समान वैरोचनेन्द्र की पाँच अग्रमहिषियों के नाम-परिवार पूर्ववत्	25
12	बलीन्द्र के चार लोकपालों का वर्णन	26
13-14	धरणेन्द्र की छह अग्रमहिषियों के नाम	27
15	धरणेन्द्र के कालवाल लोकपाल की चार अग्रमहिषियों के नाम	28 29

					इग्यारहवाँ शतक
30	शेष व्यालक आदि अठ्यासी महाग्रहों का वर्णन				प्रथम उत्पल उद्देशक
31	क. शक्रेन्द्र की आठ अग्रमहिषियों के नाम				उद्देशक की संग्रहणी गाथा
	ख. प्रत्येक अग्रमहिषी का परिवार	1			द्वारों की संग्रहणी गाथा
	ग. एक लाख अट्ठाईस हजार देवियों का एक त्रुटिक वर्ग	2			राजगृहनगर में भ. महावीर का पर्दापण व गौतम पृच्छा
32	शकेन्द्र का शेष वर्णन चमरेन्द्र के समान	3			उत्पल के जीव
33	क. शकेन्द्र के लोकपाल सोम महाराजा की अग्रमहिषियों के नाम	4			उत्पल में उत्पन्न होने वाले जीवों की पूर्व-गति
	ख. वैश्रमण लोकपाल तक का वर्णन पूर्ववत्	5			उत्पल में एक समय में उत्पन्न होने वाले जीव
34	ईशानेन्द्र की आठ अग्रमहिषियों के नाम	6			उत्पल के जीवों को निकालने में लगने वाला काल
35	क. ईशानेन्द्र के लोकपाल सोम महाराजा की अग्रमहिषियों के नाम	7			उत्पल के जीवों की अवगाहना
	ख. वरुण लोकपाल तक का वर्णन पूर्ववत्	8			उत्पल के जीवों के सात कर्मों का बंध
		9		(1)	उत्पल के जीवों के आयुर्कर्म का बंध (आठ विकल्प)
		10		(2)	उत्पल के जीव आठ कर्मों के वेदक
1	शक्र की सुधर्मा सभा का स्थान व लम्बाई-चौड़ाई	10			उत्पल के जीवों का साता-असाता वेदन
2	शक्रेन्द्र का सुख	11			उत्पल के जीवों के आठ कर्मों का उदय
	सप्तम से चौतीसवें पर्यंत अंतर्द्वीप उद्देशक	12			उत्पल के जीवों के आठ कर्मों की उदीरणा
1	उत्तर दिशा के अट्ठाईस (एकोरक) अंतर्द्वीपों का वर्णन	13			उत्पल के जीवों में लेखा (अस्सी विकल्प)
		14			

15	उत्पल के जीवों में दृष्टियाँ		का काल
16	उत्पल के जीवों में ज्ञान-अज्ञान	40	उत्पल के जीवों का आहार
17	उत्पल के जीवों में योग	41	उत्पल के जीवों की स्थिति
18	उत्पल के जीवों में उपयोग	42-43	उत्पल के जीवों में समुद्रघात
19	उत्पल के जीवों का वर्ण, गंध, रस, स्पर्श	44	उत्पल के जीवों का उद्वर्तन (मरण)
20	उत्पल के जीवों का श्वासोच्छ्वास (26 विकल्प)	45	उत्पल में सर्व जीवों की उत्पत्ति
21	उत्पल के जीव आहारक-अनाहारक (आठ विकल्प)	1	द्वितीय 'शालूक' उद्देशक शालूक में एक जीव या अनेक जीव
22	उत्पल के जीवों में विरति-अविरति		तृतीय 'पलाश' उद्देशक
23	उत्पल के जीव सक्रिय	1	क. पलाश में जीव
24	उत्पल के जीवों के सात-आठ कर्मों का बंध		ख. पलाश में लेश्या
25	उत्पल के जीवों में चार संज्ञा (अस्सी विकल्प)		चतुर्थ 'कुंभिक' उद्देशक
26	उत्पल के जीवों में चार कषाय (अस्सी विकल्प)	1	क. कुंभिक में जीव
27	उत्पल के जीवों में वेद		ख. स्थिति में विशेषता
28	उत्पल के जीवों में वेदों का बंध		पंचम 'नालिक' उद्देशक
29	उत्पल के जीव असंज्ञी	1	नालिक में जीव
30	उत्पल के जीव सौन्द्रिय		षष्ठ 'पद्म' उद्देशक
31	उत्पल के जीवों का उत्पल के रूप में रहने का जघन्य-उत्कृष्ट काल	1	पद्म में जीव
32-39	उत्पल के जीवों में पृथ्वीकाय आदि से गमनागमन	1	सप्तम 'कर्णिक' उद्देशक कर्णिक में जीव

अष्टम 'नलिन' उद्देशक		में यथार्थ कथन	
1	नलिन में जीव	27	शिवराजर्षि का विपरीत कथन, भ. महावीर का यथार्थ कथन
1-2	नवम 'शिव राजर्षि' उद्देशक		
	हस्तानापुर, सहस्राप्त वन	28-29	सशक्त शिवराजर्षि, विभंगज्ञान
3-5	शिवराजा, धारिणी पट्टराणी, शिवभद्र पुत्र	30-31	समाधान के लिए शिवराजर्षि का भ. महावीर के समीप आगमन
6	शिवराज का दिशा प्रोक्षक प्रव्रज्या लेने का संकल्प		
7-10	शिवभद्र का राज्याभिषेक और राज्य ग्रहण	32	भ. महावीर के समीप शिवराजर्षि की दीक्षा तथा अंतिम साधना
11	क. शिवराज की प्रव्रज्या		
	ख. शिव राजर्षि का अभिग्रह	33	क. वज्रत्रयभ नाराच संघयण वाला सिद्ध होता है
12-15	शिव राजर्षि की तपश्चर्या		
16	शिव राजर्षि को विभंग ज्ञान		ख. सिद्ध होने वाले जीवों का संहनन आदि निरूपण
17-18	सात द्वीप-समुद्र का ज्ञान		
19-20	भ. महावीर का पदार्पण, इन्द्रभूति की आशंका	1	दशम 'लोक' उद्देशक राजगृह नगर में भ. महावीर का पदार्पण व गौतम पृच्छा
21	क. भ. महावीर द्वारा समाधान	2	चार प्रकार का लोक
	ख. अढाई द्वीप के द्रव्य	3-6	क्षेत्रलोक तीन प्रकार का व उसके विविध भेद
22	जम्बूद्वीप में वर्ण, गंध, रस, स्पर्श युक्त द्रव्य	7	अधोलोक का संस्थान
23	लवण समुद्र में वर्ण, गंध, रस, स्पर्श युक्त द्रव्य	8	तिर्यग्लोक का संस्थान
24-25	धातकी खण्ड-यावत्-स्वयंभूरमण समुद्र में वर्णादि युक्त द्रव्य	9	ऊर्ध्वलोक का संस्थान
	भ. महावीर का शिवराजर्षि के विभंग ज्ञान के सम्बन्ध	10	लोक का संस्थान
26		11	अलोक का संस्थान

		एकादश 'काल' उद्देशक
12-14	तीनों लोक के जीव, जीव के देश और प्रदेश रूप हैं	वाणिज्य ग्राम, द्युतिपलास चैत्य, भ. महावीर से
15	संपूर्ण लोक के जीव, जीव के देश और प्रदेश रूप हैं	सुदर्शन श्रेष्ठी का प्रश्न
16	अलोक में अलोकाकाश	चार प्रकार का काल
17-19	तीन लोक में से प्रत्येक लोक के एक आकाश प्रदेश में जीव, जीव के देश और प्रदेश	दो प्रकार का प्रमाण काल
20	संपूर्ण लोक का एक आकाश प्रदेश, जीव के देश, जीव के प्रदेश रूप है	क. उत्कृष्ट पौरुषी, जघन्य पौरुषी
21	अलोक का प्रत्येक आकाश प्रदेश जीव-अजीव नहीं है	ख. मुहूर्त के एक सौ बावीस भाग हानि-वृद्धि से
22-25	द्रव्य आदि से तीनों लोक, लोक और अलोक का विचार	उत्कृष्ट तथा जघन्य पौरुषी
26	लोक का विस्तार-चार दिक्भूमारियों का रूपक	क. अठारह मुहूर्त के दिन में उत्कृष्ट पौरुषी
27	अलोक का विस्तार-आठ दिक्भूमारियों का रूपक	ख. बारह मुहूर्त के दिन में जघन्य पौरुषी
28	लोक के एक आकाश प्रदेश में जीवों के प्रदेशों का परस्पर सम्बन्ध और एक-दूसरे को पीड़ा न पहुँचाना, नर्तकी का रूपक	ग. इसी प्रकार रात्रि की पौरुषियाँ समझनी चाहिए
29	एक आकाश प्रदेश में रहे हुए जघन्य-उत्कृष्ट जीव प्रदेशों एवं सर्व जीवों का अल्प-बहुत्व	क. आषाढ़ पूर्णिमा को सबसे बड़ा दिन, ख. पौष पूर्णिमा को सबसे छोटा दिन, समान दिन व समान रात्रि चैत्री और आसोजी पूर्णिमा यथायुर्निर्वृत्ति काल
		मरण काल की प्ररूपणा
		अब्दाकाल समय-यावत्-उत्सर्पिणी प्ररूपणा
		पत्योपम और सागरोपम का प्रयोजन
		नैरथियों की-यावत्-सवार्थसिद्ध के देवों की स्थिति
		पत्योपम एवं सागरोपम का क्षय या अपचय
		19 (1)

(2)	अपचय का हेतु	53-57	धर्मघोष अणगार के समीप वाणी श्रवण, वैराग्य, राज्याभिषेक, दीक्षा ग्रहण
क्षयोपचय हेतु महाबल दृष्टांत			
20-23	हस्तिनापुर नगर, सहस्राम्रवन उद्यान, बल राजा, प्रभावती रानी, सिंह स्वप्न दर्शन	58	महाबल अणगार का अध्ययन, तपश्चर्या, संलेखना और ब्रह्मलोक में उत्पत्ति, महाबल देव की स्थिति पूर्वभव का रहस्य खोलकर पत्योपमादि के क्षय-उपचय की सिद्धि
24	रानी द्वारा स्वप्न निवेदन	59	सुदर्शन को जाति स्मरण, सुदर्शन की प्रव्रज्या, श्रमण पर्याय व मुक्ति
25	राजा द्वारा स्वप्नफल कथन	60-61	द्वारदश 'आलभिका' उद्देशक
26	रानी द्वारा स्वप्न-फल स्वीकार एवं जागरिका		आलभिका नगरी, शंखवन चैत्य, ऋषिभद्र प्रमुख श्रमणोपासक
27-28	कौटुम्बिक पुरुषों द्वारा उपस्थानशाला की सफाई और सिंहासन स्थापन		श्रमणोपासकों में परस्पर चर्चा
29-31	बल राजा द्वारा स्वप्नपाठकों को निमंत्रण	1-2	क. देवताओं की जघन्य स्थिति
32-33	स्वप्न पाठकों द्वारा स्वप्न फल कथन	3	ख. देवताओं की उत्कृष्ट स्थिति
34	स्वप्नपाठकों को प्रीतिदान एवं उनका विसर्जन	4	ऋषिभद्र के कथन पर श्रमणोपासकों की अश्रद्धा
35-36	रानी प्रभावती द्वारा स्वप्न फल स्वीकार व गर्भ रक्षा	5	भ. महावीर का पदार्पण
37-39	पुत्र-जन्म, दासियों द्वारा बधाई व राजा द्वारा प्रीतिदान	6	देवताओं की स्थिति के सम्बन्ध में भ. महावीर का समाधान
40-44	पुत्र जन्मोत्सव व नामकरण	7-12	
45-46	महाबल का पंच धाय माता से पालन		
47	महाबल का अध्ययन काल		
48	बल राजा द्वारा राजकुमार के लिए प्रासाद निर्माण		
49-52	महाबल का आठ कन्याओं के साथ पाणिग्रहण व प्रीतिदान (दहेज)	13	क. गौतम की जिज्ञासा, ऋषिभद्र प्रव्रज्या स्वीकार करने में असमर्थ

ख.	शीलव्रत, गुणव्रत, विरमण व्रत, प्रत्याख्यान	12	शंख का चारों प्रकार के आहार त्याग का संकल्प व पौषध अनुपालन
ग.	पौषधोपवास द्वारा श्रमणोपासक धर्म पालन	13-14	पुष्कली का शंख को भोजन के लिए निमंत्रण
	फलतः ऋषिभद्र की सौधर्म के अरुणाभ विमान में उत्पत्ति	15	पुष्कली को उत्पला की वंदना
14-15	ऋषिभद्र देव का च्यवन, महाविदेह में जन्म और मुक्ति	16-17	शंख को पुष्कली द्वारा आहारादि करते हुए पौषध का आमंत्रण व शंख द्वारा अस्वीकार
16-17	मुद्गल परिव्राजक को विभंगज्ञान	18-19	पुष्कली काथित वृत्तांत सुन कर अन्य सभी श्रावकों द्वारा खाते-पीते पौषधानुपालन
18-19	विभंगज्ञानी मुद्गल द्वारा अतिशय ज्ञान की घोषणा	20	भ. महावीर की वंदना के लिए पौषध युक्त शंख का गमन
20-23	भगवान द्वारा सत्यासत्य निर्णय		
24	मुद्गल परिव्राजक द्वारा निर्ग्रथ प्रव्रज्या व सिद्धि	21	अन्य श्रमणोपासकों का भ. महावीर की वंदना के लिए गमन
	बारहवाँ शतक		
	प्रथम शंख उद्देशक		
1	दस उद्देशक की संग्रहणी गाथा	22-24	भ. महावीर का शंख की निंदा न करने का संकेत
2-5	श्रावस्ती नगरी, कोष्ठक चैत्य, शंख प्रमुख श्रमणोपासक, उत्पला श्रमणोपासिका, पुष्कली श्रमणोपासक	25	क. तीन प्रकार की जागरिका
		26	ख. जागरिका की व्याख्या
6-9	भ. महावीर का पदार्पण व धर्मदेशना	27-28	क्रोध से कर्म बंधन
10-11	क. श्रमणोपासकों द्वारा पाक्षिक पौषध करने का निर्णय	29-30	मान, माया और लोभ से कर्म बंधन
			शंख से श्रमणोपासकों की क्षमा याचना एवं स्वस्थान-गमन
	ख. चार प्रकार का आहार निषेध हुआ	31	गौतम की जिज्ञासा का समाधान-शंख प्रव्रज्या स्वीकार करने में समर्थ नहीं है

द्वितीय 'जयंती' उद्देशक		16	सर्व भव्य जीव मुक्त होंगे
1	कोशाम्बी नगरी, चन्द्रावतरण चैत्य	17	संसार भव्य जीवों से रिक्त नहीं होगा, रिक्त न होने का हेतु
2	सहस्रानीक राजा का पौत्र, शतानीक राजा का पुत्र, चेटकराजा की पुत्री का पुत्र, जयंती श्रमणोपासिका का भतीजा, उदायन राजा	18	जीव का सोना या जागना सहेतुक श्रेष्ठ है
3	सहस्रानीक राजा के पुत्र की पत्नी, शतानीक राजा की पत्नी, चेटक राजा की पुत्री, उदाई राजा की माता, जयंती श्रमणोपासिका की भौजाई मृगावती देवी	19	जीव का सबल होना या निर्बल होना सापेक्ष श्रेष्ठ है
4	सहस्रानीक राजा की पुत्री, शतानीक राजा की भगिनी, उदाई राजा की पितृष्वसा-भुवा, मृगावती देवी की नणंद, भ. महावीर को सर्वप्रथम वसती-स्थान देने वाली जयंती श्रमणोपासिका	20	उद्यमी होना या आलसी होना सापेक्ष श्रेष्ठ है
5-13	मृगावती और जयंती सहित भ. महावीर की वंदना के लिए राजा उदाई का गमन	21	पंचेन्द्रिय वशवर्ती का संसार भ्रमण
14	क. भ. महावीर और जयंती के प्रश्नोत्तर	22	जयंती का प्रव्रज्या ग्रहण व सिद्धि
15	ख. प्राणातिपात-यावत्-मिथ्यादर्शन शल्य		तृतीय 'पृथ्वी' उद्देशक
	ग. जीव के भारीपने के हेतु		राजगृह नगर में भ. महावीर का पदार्पण व गौतम पृच्छा
	जीव का भव्यत्व स्वाभाविक है		सात पृथ्वियाँ
			सात पृथ्वियों के गोत्र
			चतुर्थ 'पुद्गल' उद्देशक
			राजगृह नगर में भ. महावीर का पदार्पण व गौतम पृच्छा
			दो परमाणु पद्गलों का संयोग-विभाग निरूपण
			तीन परमाणु पद्गलों का संयोग-विभाग निरूपण
			चार परमाणु पद्गलों का संयोग-विभाग निरूपण
			पांच परमाणु पद्गलों का संयोग-विभाग निरूपण

6	छह परमाणु पद्यों का संयोग-विभाग निरूपण	सप्तविध पुद्गल परिवर्त निरूपण
7	सात परमाणु पद्यों का संयोग-विभाग निरूपण	औदारिक पुद्गल परिवर्त-यावत्-आन-प्राण पुद्गल
8	आठ परमाणु पद्यों का संयोग-विभाग निरूपण	परिवर्त के निष्पत्ति काल का अल्पबहुत्व
9	नौ परमाणु पद्यों का संयोग-विभाग निरूपण	औदारिक पुद्गल परिवर्त काल -यावत्- आनप्राण
10	दस परमाणु पद्यों का संयोग-विभाग निरूपण	पुद्गल परिवर्त का अल्प-बहुत्व
11	संख्यात परमाणु पद्यों के संयोग-विभाग से निष्पन्न भंग निरूपण	सप्तविध पुद्गल परिवर्तों का अल्प-बहुत्व
12	असंख्यात परमाणु पद्यों के संयोग-विभाग से निष्पन्न भंग निरूपण	पंचम 'अतिपात' उद्देशक
13	अनंत परमाणु पद्यों के संयोग-विभाग से निष्पन्न भंग निरूपण	राजगृह नगर में भ. महावीर का पदार्पण व गौतम पृच्छा
14	अनंतानंत पुद्गल परिवर्त	प्राणातिपात-यावत्-मिथ्यादर्शनशल्य में वर्ण-गंध-रस-स्पर्श प्ररूपण
15	सात प्रकार का पुद्गल परिवर्त	प्राणातिपात विरमण-यावत्-मिथ्यादर्शनशल्य त्याग में वर्णादि का अभाव
16-17	चौबीस दण्डक में पुद्गल परिवर्त	चार प्रकार की मति में वर्णादि का अभाव
18-27	चौबीस दण्डकों में औदारिकादि पुद्गल परिवर्त	अवग्रहादि चार में वर्णादि का अभाव
28-39	एकत्व दृष्टि से चौबीस दंडकों में चौबीस दण्डकवर्ती जीवत्व के रूप में अतीतादि सप्तविध पुद्गल परिवर्त प्ररूपण	उत्थानादि पाँच में वर्णादि का अभाव
40-49	बहुत्व की अपेक्षा से नैरयिकादि जीवों के नैरयिकादि जीवों के नैरयिकत्वादि रूप में अतीत-अनागत	सप्तम अवकाशान्तों में वर्णादि की प्ररूपण
		आठ पृथ्वियों में और घनवात-तनुवातों में वर्णादि हैं
		चौबीस दण्डकों में वर्णादि हैं
		क. धर्मास्तिकाय-यावत्-जीवास्तिकाय में वर्णादि का अभाव

27	ख. पुद्गलास्तिकाय में वर्णादि हैं	ख. पाँचों वर्णों के राहु देव के विमान
28-29	ज्ञानावरणीय-यावत्-अंतराय में वर्णादि हैं	च. पूर्व-पश्चिम आदि में गमन करता हुआ राहु चन्द्र के उद्योत को आवृत करता है
30	क. द्रव्य लेश्या में वर्णादि हैं	क. दो प्रकार का राहु
31	ख. भाव लेश्या में वर्णादि नहीं हैं	ख. राहु से चन्द्र और सूर्य के आवृत होने का जघन्य-उत्कृष्ट काल
32	तीन दृष्टियों, चार दर्शनों, पाँच ज्ञानों व चार संज्ञाओं में वर्णादि का अभाव	चन्द्र को शशी व सश्री कहने का हेतु
33-35	पाँच शरीरों व तीन योगों में वर्णादि हैं	सूर्य को आदित्य कहने का हेतु
36	साकारोपयोग और निराकारोपयोग में वर्णादि का अभाव	चन्द्र और सूर्य की अग्रमहिषियाँ
37	सर्व द्रव्यों, सर्व प्रदेशों, सर्व पर्यायों व तीनों कालों में वर्णादि का अभाव	चन्द्र और सूर्य के काम-भोग सुखानुभव का निरूपण
1	गर्भस्थ जीव में वर्णादि है	सप्तम 'लोक' उद्देशक
2	जीव और जगत् का कर्मों से विविध रूप में परिणमन	गौतम स्वामी द्वारा भ. महावीर से प्रश्न
3	षष्ठ 'राहु' उद्देशक	लोक का आयाम-विष्कम्भ
4	राजगृह नगर में भ. महावीर का पदार्पण व गौतम पृच्छा	क. लोक के सर्व आकाश प्रदेशों में सर्व जीवों का जन्म-मरण
5	क. राहु के सम्बन्ध में जनसाधारण की भ्रान्त धारणा	ख. बकरियों के बाड़ों का उदाहरण
6	ख. राहुदेव का वर्णन	चौबीस दण्डकों की आवास संख्या का अतिदेश पूर्वक वर्णन
7	ग. राहु के नाम	चौबीस दण्डकवर्ती आवासों के विविध रूपों में अनंत बार प्रत्येक जीव के उत्पन्न होने की प्ररूपणा
8	घ. राहु विमान के वर्ण	

20	सर्व जीव, सर्व जीवों के माता-पिता आदि परस्पर सम्बन्धी हो चुके हैं	6	भावदेव कहने का हेतु
21	सर्व जीव, सर्व जीवों के शत्रु आदि हो चुके हैं	7	भव्य द्रव्य देव की उत्पत्ति
22	सर्व जीव, सर्व जीवों के राजा आदि हो चुके हैं	8	नरदेव की उत्पत्ति
23	सर्व जीव, सर्व जीवों के दास आदि हो चुके हैं	9	धर्मदेव की उत्पत्ति
	अष्टम 'नाग' उद्देशक	10	देवाधिदेव की उत्पत्ति
1	गौतम स्वामी द्वारा भ. महावीर से प्रश्न	11	भावदेव की उत्पत्ति
2-4	क. महर्धिक देव की सर्प, हाथी, मणी और वृक्षरूप में उत्पत्ति	12	भव्य द्रव्यदेव की स्थिति
	ख. सर्प आदि रूप में अर्चा-पूजा	13	नरदेव की स्थिति
	ग. सर्प आदि का एक भव करके मोक्ष में जाना	14	धर्मदेव की स्थिति
5-7	शीलादि रहित वानर आदि, सिंह आदि और काक आदि की नरक में उत्पत्ति	15	देवाधिदेव की स्थिति
	नवम 'देव' उद्देशक	16	भावदेव की स्थिति
1	पाँच प्रकार के देव	17	भव्य द्रव्य देव की विकुर्वणा शक्ति
2	भव्य द्रव्य देव कहने का हेतु	18	नरदेव व धर्मदेव की विकुर्वणा शक्ति
3	नरदेव कहने का हेतु	19	देवाधिदेव की विकुर्वणा शक्ति
4	धर्मदेव कहने का हेतु	20	भावदेव की विकुर्वणा शक्ति
5	देवाधिदेव कहने का हेतु	21	भव्य द्रव्य देव की मरणोत्तर गति
		22	नरदेव की मरणोत्तर गति
		23	धर्मदेव की मरणोत्तर गति
		24	देवाधिदेव की मरणोत्तर गति

25	भावदेव की मरणोत्तर गति	ख. सदासद् रूप कहने का हेतु
26	पंचविध देवों की संस्थिति	तेरहवाँ शतक
27	भव्य द्रव्य देव का अंतर	तेरहवें शतक के उद्देशकों के नाम की संग्रहणी गाथा
28	नरदेव का अंतर	प्रथम पृथ्वी उद्देशक
29	धर्मदेव का अंतर	राजगृह नगर में भ. महावीर का पदार्पण व गौतम-
30	देवाधिदेव का अंतर	पृच्छा
31	भावदेव का अंतर	सात पृथ्वियाँ
32	पाँच देवों का अल्प-बहुत्व	रत्नप्रभा के नरकावासों की संख्या व विस्तार
33	भवनवासी आदि भाव देवों का अल्प-बहुत्व	रत्नप्रभा के संख्यात योजन विस्तार वाले नरकावासों
	दशम 'आत्मा' उद्देशक	में एक समय में उत्पन्न होने वाले जीव (उनतालीस
1	आठ प्रकार का आत्मा	विकल्प)
2-8	आठ आत्माओं का परस्पर सम्बन्ध	रत्नप्रभा के नरकावासों में एक समय में उद्वर्तन-
9	आठ आत्माओं का अल्प-बहुत्व	मरने वाले जीव (उनतालीस विकल्प)
10	आत्मा ज्ञान स्वरूप है	रत्नप्रभा में संख्यात योजन विस्तृत नारक जीवों की
11-15	चौबीस दण्डक में आत्मा का रूप	चरम-अचरम संख्या
16	आत्मा दर्शन स्वरूप है	रत्नप्रभा के असंख्यात योजन विस्तार वाले नरका-
17-18	चौबीस दण्डक में आत्मा दर्शन रूप है	वासों में एक समय में जीवों की उत्पत्ति, उद्वर्तन
19-26	रत्नप्रभा-यावत् ईषत्प्राग्भारा पृथ्वी सदासद् रूप है	और सत्ता की संख्या का प्ररूपण
27-33	क. एक परमाणु-यावत्-अनंत प्रदेशिक स्कंध सदासद् रूप है	शर्करा प्रभा-यावत्-तमः प्रभा के नरकावासों की संख्या तथा संख्यात-असंख्यात योजन विस्तृत नरकों

	5 भगवती सूत्र विषय सूची	भग. श. 13, उ. 1-4
	में उत्पत्ति, उद्‌वर्तन तथा सत्ता की संख्या का प्ररूपण	विस्तार एवं एक समय में जीवों का उपपात, च्यवन
19-27	संख्यात-असंख्यात विस्तृत नरकों में सम्यग् मिथ्यादृष्टि नैरयिकों के उत्पाद-उद्‌वर्तन एवं अविरहित-विरहित की प्ररूपणा	और सत्ता की प्ररूपणा चतुर्विध देवों के संख्यात-असंख्यात योजन विस्तृत आवासों में सम्यग्दृष्टि आदि के उत्पाद, उद्‌वर्तन एवं सत्ता की प्ररूपणा
28-30	लेश्याओं का परस्पर परिणमन एवं तदनुसार नरक में उत्पत्ति का प्ररूपण	कृष्णादि लेश्या वाले जीव देवों में कृष्णादि लेश्या रूप में परिणत होने पर उत्पन्न होते हैं
	द्वितीय 'देव' उद्देशक	
1	चार प्रकार के देव	तृतीय 'अनन्तर' उद्देशक
2	दस प्रकार के भवनवासी देव	नैरयिक आदि सभी जीव अनन्तर आहारक आदि हैं
3	असुर कुमारों के आवास	चतुर्थ 'पृथ्वी' उद्देशक
4-5	संख्यात या असंख्यात योजन वाले आवासों में एक समय में उत्पन्न होने वाले जीव	सात पृथ्वियाँ
6	नागकुमार-यावत् स्तनित कुमार असुर कुमारों के समान	क. सात नरकों के नरकावासों की संख्या व उत्तरोत्तर विशालता
7-9	वाणव्यंतर देवों की संख्या, विस्तार व आवासों में एक समय में उत्पाद, उद्‌वर्तन और सत्ता की प्ररूपणा	ख. सातवीं नरक के नरकी महाकर्म, महाक्रिया, महाआस्रव एवं महावेदना वाले हैं
10-11	क. ज्योतिषिक देवों की आवास संख्या ख. ज्योतिषी देवों के आवासों में एक समय में जीवों का उपपात, उद्‌वर्तन और सत्ता	पांचवी धूमप्रभा में तीन लाख नरकावास पश्चात् क्रम से सातवीं से छठी -यावत्- दूसरी से पहली नरक के नैरयिक अल्प कर्म-यावत्-अल्प वेदना युक्त हैं
12-24	सौधर्म-यावत्-सर्वार्थसिद्ध विमानों की संख्या,	सात नरकों के नैरयिकों का पृथ्वी-यावत्-वनस्पति

	का स्पर्शानुभव	64-65	पांच स्थावरों का परस्पर अवगाहन निरूपण
10	सात नरकों की बाहल्य-चौड़ाई	66	क. प्रत्येक अस्तिकाय के स्थान में एक पुरुष का बैठना-उठना असंभव
11	समस्त नरकावासों के समीपवर्ती पृथ्वीकायिक -यावत्-वनस्पतिकायिक जीवों के कर्म और वेदना		ख. कूटागार शाला का उदाहरण
12	लोक का मध्य भाग	67	लोक का बहुसमभाग व वक्रतायुक्त भाग
13	अधोलोक का मध्य भाग	68	लोक का संक्षिप्त भाग
14	ऊर्ध्वलोक का मध्य भाग	69	लोक का संस्थान
15	तिर्यक्लोक का मध्य भाग	70	तीनों लोक का अल्प-बहुत्व
16-22	दसों दिशाओं-विदिशाओं का स्वरूप निरूपण		पंचम 'आहार' उद्देशक
23-28	पंचास्तिकाय रूप लोक निरूपण	1	क. नैयिक अचिताहारी है
29-33	पंचास्तिकायों की प्रवृत्ति		ख. चौबीस दंडकों में आहारादि की प्ररूपणा
34-51	क. पंचास्तिकाय के प्रदेशों का परस्पर स्पर्श		षष्ठ 'उपपात' उद्देशक
52-59	ख. पंचास्तिकाय के प्रदेशों का कालाणुओं से स्पर्श	1	राजगृह नगर में भ. महावीर का पदार्पण व गौतम पृच्छा
	क. पंचास्तिकाय द्रव्यों का पंचास्तिकाय के प्रदेशों से स्पर्श	2	नैयिक सान्तर और निरंतर उत्पन्न होते हैं
61-63	ख. पंचास्तिकाय द्रव्यों का कालाणुओं से स्पर्श	3-4	असुरकुमार -यावत्- वैमानिक देव सान्तर भी च्यवते हैं व निरन्तर भी च्यवते हैं
	क. प्रत्येक अस्तिकाय के एक प्रदेश में अन्य अस्तिकायों के प्रदेशों का अस्तित्व	5 (1)	चमरचंच आवास का स्थान और आकार का आयाम-विष्कम्भ
	ख. प्रत्येक अस्तिकाय के एक प्रदेश में कालाणुओं का अस्तित्व	(2)	चमरचंच आवास के प्रकार की ऊँचाई

6	(1)	मनुष्यलोक में चार प्रकार के लयन	33	अभीचिकुमार की श्रावक वृत्ति
	(2)	चमरचंच आवास केवल क्रीड़ाघर है	34-35	अभीचिकुमार का असुर कुमार देव होना
		उदायन नरेश चरित्र	36	अभीचिकुमार की एक पल्योपम की स्थिति
7		भ. महावीर का राजगृह से विहार	37	अभीचि का महाविदेह में जन्म और मोक्ष
8		चम्पा नगरी, पूर्णभद्र चैत्य, भ. महावीर का पदार्पण		सप्तम 'भाषा' उद्देशक
9-16		सिन्धु सौवीरदेश (सोलह देश) वीतिभय नगर	1	राजगृह नगर में भ. महावीर का पदार्पण व गौतम पृच्छा
		(160 नगर) मृगवन उद्यान, उदायन राजा, प्रभावती रानी, अभीचिकुमार, भाणेज केशीकुमार, महासेन आदि दस राजा	2	भाषा का पौद्गलिक रूप
		पौषधशाला में धर्म जागरणा करते समय राजा उदायन का एक संकल्प	3	भाषा रूपी है
17-18		भ. महावीर का मृगवन में पदार्पण	4	भाषा अचित्त है
		राजा उदायन का दर्शनार्थ गमन एवं प्रव्रज्या के लिए निवेदन	5	भाषा अजीव है
19-20		अभीचिकुमार के लिए उदायन का शुभ संकल्प	6	भाषा जीव के होती है, अजीव के नहीं
21-22		और भानेज केशीकुमार का राज्याभिषेक	7	बोलते समय भाषा है
23-26		क. राजा उदायन द्वारा प्रव्रज्या ग्रहण	8	भाषा का भेदन
27-31		ख. पद्मावती की शुभकामना	9	चार प्रकार की भाषा
		क. अभीचिकुमार को मानसिक वेदना व वैरानुबंध	10	मन आत्मा से भिन्न है
32		ख. अभीचिकुमार का कोणिक के समीप गमन	11	भाषा के समान मन के लिए प्रश्नोत्तर
			12	मनन के समय मन है
			13	मन का भेदन
			14	चार प्रकार का मन

15	काया का आत्मा से कथंचित् भिन्न-अभिन्न सम्बन्ध	32	चार प्रकार का द्रव्य अवधि मरण
16	काया कथंचित् रूपी-अरूपी	33	नैरयिक द्रव्य अवधि मरण कहने का हेतु
17	काया कथंचित् सचित्त-अचित्त	34	तिर्यचयोनिक, मनुष्य और देव अवधि मरण कहने का हेतु
18	काया कथंचित् जीव रूप-अजीव रूप		क्षेत्र, काल, भव और भाव अवधि मरण
19	काया जीव और अजीव दोनों के होती है	35	पाँच प्रकार का आत्यन्तिक मरण
20	काया और जीव के सम्बन्ध से पूर्व या पश्चात् भी काया	36	चार प्रकार का द्रव्य आत्यन्तिक मरण
21	काया का भेदन	37	नैरयिक द्रव्य आत्यन्तिक मरण कहने का हेतु
22	सात प्रकार की काया	38	तिर्यचयोनिक, मनुष्य व देव द्रव्य आत्यन्तिक मरण कहने का हेतु
	मृत्यु के विविध प्रकार	39	क्षेत्र, काल, भव व भाव आत्यन्तिक मरण
23	पाँच प्रकार का मरण	40	बारह प्रकार का बाल मरण
24	पाँच प्रकार का आवीचिक मरण	41	दो प्रकार का पंडित मरण
25	चार प्रकार का द्रव्य आवीचिक मरण	42	दो प्रकार का पादपोषागमन मरण
26	नैरयिक द्रव्य आवीचिक मरण कहने का हेतु	43	दो प्रकार का भक्त प्रत्याख्यान मरण
27	तिर्यचयोनिक, मनुष्य व देव आवीचिक मरण कहने का हेतु	44	अष्टम 'कर्मप्रकृति' उद्देशक
28	चार प्रकार का क्षेत्र आवीचिक मरण	1	आठ कर्म प्रकृतियाँ
29-30	नैरयिक क्षेत्र, काल, भव और भाव आवीचिक मरण कहने का हेतु	1	नवम 'अणगर वैक्रिय' उद्देशक
31	पाँच प्रकार का अवधि मरण		राजगृह नगर में भ. महावीर का पदार्पण व गौतम पृच्छा

2	भाविता आत्मा अणगार का वैक्रिय लब्धि से रस्सी बंधी घटिका को लेकर आकाश गमन का सामर्थ्य	19-20	अणगार द्वारा रत्न, उत्पल, पुष्प-हस्त पुरुष के समान गति का सामर्थ्य
3	भाविता आत्मा अणगार की वैक्रिय लब्धि से रूप विकुर्वणा असामर्थ्य	21	अणगार द्वारा भिसभंजिका गति का सामर्थ्य
4-7	अणगार द्वारा चांदी आदि की मंजूषा लेकर विविध रूपों की विकुर्वणा का सामर्थ्य	22	अणगार द्वारा मृणालभंजिका गति का सामर्थ्य
8-9	अणगार द्वारा वडवागुल (चमगादड़) के रूप की विकुर्वणा का सामर्थ्य	23	अणगार द्वारा वनखण्ड के रूप में गमन करने का सामर्थ्य
10	अणगार द्वारा जलौका के समान गति का सामर्थ्य	24	अणगार द्वारा पुष्करणी रूप में गमन करने का सामर्थ्य
11	अणगार द्वारा बीजबीजक पक्षी के समान गति का सामर्थ्य	25	अणगार द्वारा पुष्करणी रूप विकुर्वणा सामर्थ्य
12	अणगार द्वारा विडालक पक्षी के समान गति का सामर्थ्य	26	माया सहित-अणगार की विकुर्वणा
13	अणगार द्वारा जीवजीवक पक्षी के समान गति का सामर्थ्य	27	आलोचना प्रतिक्रमण किये बिना मरने से अनाराधकता
14	अणगार द्वारा हंस पक्षी के समान गति का सामर्थ्य		दशम 'समुद्घात' उद्देशक
15	अणगार द्वारा समुद्रवायस पक्षी के समान गति का सामर्थ्य	1	छह छाद्वास्थिक समुद्घात
16-18	अणगार द्वारा चक्र, छत्र, चर्म-हस्त पुरुष के समान गति का सामर्थ्य		चौदहवाँ शतक
			प्रथम 'चरम' उद्देशक
		1	चौदहवें शतक के उद्देशकों के नाम
		2	राजगृह नगर में भ. महावीर का पदार्पण व गौतम पृच्छा
		3	भावित आत्मा अणगार जिस लेश्या में मृत्यु को प्राप्त होता है उसी लेश्या वाले देवावास में उत्पन्न

	होता है				ख. चौबीस दण्डक में परंपर खेदोपपन्नक जीवों में आयुबंध
4-5	भाविता आत्मा अणगार की असुक्कुमारावास-यावत्-वैमानिकवास पर्यंत विग्रह गति				ग. चौबीस दण्डक में अनंतर विग्रह गति प्राप्त खेदोपपन्नक जीवों में आयुबंध का निषेध
6-7	क. नैरयिक-यावत्-वैमानिक की उत्कृष्ट तीन समय की विग्रह गति				द्वितीय 'उन्माद' उद्देशक
	ख. ऐकन्द्रियों की चार समय की विग्रह गति	1			दो प्रकार का उन्माद
	ग. तरुण पुरुष की मुष्टि का उदाहरण	2-6			चौबीस दण्डकों में उन्माद
8-9	चौबीस दण्डकों में अनंतरोपपन्नक तथा परंपरोपपन्नक	7-8			स्वाभाविक वृष्टि व देवकृत वृष्टि का सहेतुक निरूपण
10	अनंतरोपपन्नक प्रथम नैरयिकों के आयुबंध का निषेध	9-13			असुरों-यावत्-वैमानिकों द्वारा वृष्टि व उसका हेतु
11	परंपरोपपन्नक नैरयिक के आयुबंध का प्ररूपण	14			ईशानेन्द्र द्वारा तमस्काय की रचना
12-13	चौबीस दण्डक में अनंतरोपपन्नक और परंपरोपपन्नक के आयु का बंध	15-17			असुरों-यावत्-वैमानिकों द्वारा तमस्काय की रचना व रचना का हेतु
14-15	चौबीस दण्डक में अनंतरनिर्गत और परंपरनिर्गत जीव				तृतीय 'शरीर' उद्देशक
16-17	चौबीस दण्डक में अनंतरनिर्गत और परंपरनिर्गत जीवों का आयुबंध	1			द्वारों की संग्रहणी गाथा
18-19	चौबीस दण्डक में अनंतर-परंपर-अनिर्गत जीवों का आयु बंध	2-3			क. मायी मिथ्यादृष्टि महाकाय देव का भाविता आत्मा अणगार के मध्य में होकर गमन
20	क. चौबीस दण्डक में अनंतर खेदोपपन्नक जीवों में आयुबंध का निषेध				ख. अणगार के मध्य में होकर गमन के हेतु मायी मिथ्यादृष्टि असुर-यावत्-वैमानिक देव का भाविता आत्मा अणगार के मध्य में होकर गमन करना

4-9	चौबीस दण्डकों में विनय सत्कार आदि	गमन करते हैं
10	अल्प ऋद्धि वाले देव का महर्धिक देव के मध्य में होकर गमन करना शक्य	चौबीस दण्डक के जीवों को दस प्रकार के अनुभव महर्धिक देव का पर्वतोल्लंघन-प्रलघन सामर्थ्य-असामर्थ्य
11	समान ऋद्धि वाले देव का समान ऋद्धि वाले असावधान देव में से होकर गमन करना शक्य	षष्ठ 'आहार' उद्देशक
12-13	शस्त्र प्रहार करने के पूर्व या पश्चात् देवगति	राजगृह नगर में भ. महावीर का पदार्पण व गौतम पृच्छा
14-15	नैरयिकों का पुद्गलानुभव	चौबीस दण्डक के जीवों का आहार, परिणाम, योनि, स्थिति
16-17	नैरयिकों का वेदना-परिणाम	चौबीस दण्डक के जीवों का वीचि और अवीचि द्रव्यों का आहार प्ररूपण
चतुर्थ 'पुद्गल' उद्देशक		शक्रेन्द्र से अच्युतेन्द्र पर्यंत के रतिगृह का वर्णन
पुद्गल परिणाम की संग्रहणी गाथा		सप्तम 'संश्लिष्ट' उद्देशक
1-3	अतीत, अनागत और वर्तमान में पुद्गल परिणामन	क. राजगृह नगर में भ. महावीर का पदार्पण
4	अतीत, अनागत और वर्तमान में पुद्गल स्कंध का परिणामन	ख. केवल ज्ञान की प्राप्ति न होने से खिन्न गौतम को भ. महावीर का आश्वासन
5-7	अतीत, अनागत और वर्तमान में जीव का परिणामन	भ. महावीर और गौतम के ज्ञान से अनुत्तर देवों के ज्ञान की तुलना
8	पुद्गल कथंचित् शाश्वत-अशाश्वत	छह प्रकार के तुल्य
9	परमाणु पुद्गल कथंचित् चरम-अचरम	द्रव्य तुल्य
10	दो प्रकार के परिणामन	
पंचम 'अग्नि' उद्देशक		
संग्रहणी गाथा		
1-9	चौबीस दण्डक के जीव अग्नि के मध्य में होकर	

6	क्षेत्र तुल्य	19	शालयष्टिका-शालवृक्ष के समान
7	काल तुल्य	20	उदुम्बरयष्टिका-शालवृक्ष के समान
8	भव तुल्य	21	अंबड़ परिव्राजक के सात सौ शिष्य आराधक
9	भाव तुल्य	22	अंबड़ परिव्राजक को दो भवों के बाद मोक्ष प्राप्ति
10	संस्थान तुल्य	23	अव्याबाध देव का वैक्रिय सामर्थ्य
11	भक्त प्रत्याख्यानी अणगार की आहार-अध्यवसाय प्ररूपणा	24	सिर काटकर कमण्डलु में डालने की शकेन्द्र की वैक्रिय शक्ति
12	क. लव सप्तम देव का स्वरूप	25	जुंभक देव-वर्णन
	ख. धान्य काटने का उदाहरण	26	जुंभक देवों के दस नाम
13	अनुत्तरौपपातिक देव का स्वरूप	27	जुंभक देवों का निवास स्थान
14	अनुत्तरौपपातिक देवों के शुभकर्म	28	जुंभक देवों की स्थिति
	अष्टम 'अंतर' उद्देशक		नवम 'अणगार' उद्देशक
1-3	सात नरकों का अंतर	1	भावित आत्मा अणगार का ज्ञान
4	सप्तम नरक से अलोक का अंतर	2	पुद्गल स्कंध का प्रकाश
5	रत्नप्रभा से ज्योतिषिक देवों का अंतर	3	चन्द्र-सूर्य के विमानों के पुद्गल
6-16	ज्योतिषिक देवों से अनुत्तर विमान पर्यंत प्रत्येक देवलोक का अंतर	4-9	चौबीस दण्डक के जीवों को सुख-दुःख देने वाले पुद्गल
17	ईषत्प्राग्भारा पृथ्वी से अलोक का अंतर	10-11	चौबीस दण्डक के जीवों के इष्ट-अनिष्ट, कांत-अकांत, प्रिय-अप्रिय, आन्त-अनान्त तथा मनोज्ञ-अमनोज्ञ पुद्गल
18	शालवृक्ष की पूजा-अर्चा, महाविदेह में जन्म और निर्वाण		

12	(1)	महर्षिक वैक्रिय-शक्ति-संपन्न देव का भाषा सामर्थ्य	8	छह प्रकार का फलादेश
	(2)	भाषा की एकता	9	गोशालक का स्वयं को 'जिन' कहना
13		सूर्य का भावार्थ	10	नगरी के लोगों में गोशालक की चर्चा
14-16		सूर्य की प्रभा, छाया, लेश्या	11	भ. महावीर का पदार्पण
17		श्रमणों के सुख से देवताओं के सुख की तुलना	12-13	गोशालक के विषय में गौतम स्वामी की जिज्ञासा
		दशम 'केवली' उद्देशक	14-20	भ. महावीर ने गौतम की जिज्ञासा पूर्ति के लिए
1-6		केवली एवं सिद्ध द्वारा छद्मस्थादि को जानने-देखने का सामर्थ्य	21	गोशालक का जीवन वृत्तान्त सुनाया
7-11		केवली और सिद्धों द्वारा भाषण-उन्मेषणादि व क्रिया-अक्रिया की प्ररूपणा	22	माता-पिता के स्वर्गवास के पश्चात् मेरी (भ. महावीर) की दीक्षा
12-21		केवली द्वारा नरक पृथ्वी से ईषत्प्रागभारा पृथ्वी पर्यंत जानने-देखने की प्ररूपणा		क. प्रथम वर्षावास अस्थिग्राम में
22-23		केवली द्वारा परमाणु पुद्गल से अनन्त प्रदेशी पर्यंत जानने-देखने की प्ररूपणा	23	ख. द्वितीय वर्षावास राजगृह नालंदा पाड़ा के बाहर तन्तुवाय शाला में
		पन्द्रहवाँ शतक	24-25	उसी तन्तुवाय शाला में गोशालक भी चातुर्मास के लिए आ गया
1		श्रुत देवता नमस्कार		भ. महावीर का विजय गाथापति के घर पर प्रथम मासोपवास का पारणा
2-5		श्रावस्ती नगरी, कोष्ठक चैत्य, आजीविक उपासिका	26-27	वहां पाँच प्रकार की दिव्य वर्षा व विजय गाथापति की प्रशंसा
6		हालाहला कुंभकारी के मंखली पुत्र गोशालक	28-29	गोशालक का विजय गाथापति के घर आगमन
7		गोशालक के समीप छह दिशाचरों का आगमन	30-32	आनंद गाथापति के घर भ. महावीर के द्वितीय आठ प्रकार के निमित्त, नवाँ गीत, दसवाँ नृत्य

मासोपवास का पारणा		का प्रक्षेपण
33-34	सुनन्द गाथापति के घर भ. महावीर के तृतीय मासोपवास का पारणा	भ. महावीर द्वारा शीतलेश्या से गोशालक का रक्षण भ. महावीर का गोशालक को तेजोलेख्या की साधना का कथन
35-39	बहुल ब्राह्मण के घर भ. महावीर के चतुर्थ मासोपवास का पारणा	भ. महावीर का गोशालक के साथ सिद्धार्थ ग्राम की ओर विहार
40-44	भ. महावीर का गोशालक को शिष्य रूप में स्वीकार करना	क. भ. महावीर से अलग होकर गोशालक द्वारा तिल के पौधे का निरीक्षण, परीक्षण और परिवर्तपरिहार-वाद के सिद्धांत का निरूपण
45	भ. महावीर और गोशालक का प्रणीत भूमि में छह वर्ष तक विचरण	ख. गोशालक का भगवान से पुनर्मिलन और भगवान से अपने पूर्ववृत्त का परिश्रवण
46	क. भ. महावीर और गोशालक का सिद्धार्थ ग्राम से कूर्म ग्राम की ओर विहार	गोशालक को तेजोलेख्या की प्राप्ति
47	ख. मार्ग में तिल के पौधे को लक्ष्य करके गोशालक का भ. महावीर से प्रश्न	छह दिशाचरों द्वारा गोशालक का शिष्यत्व स्वीकार एवं शिष्य परिवार के साथ गोशालक का स्वतंत्र विचरण
	क. भ. महावीर के कथन को अस्वीकार करके गोशालक द्वारा तिल के पौधे को उखाड़ फेंकना	गोशालक द्वारा धर्मोपदेश सुनकर परिषद् लौट गई लोगों के मुख से अपने सम्बन्ध में भ. महावीर का स्मृष्टीकरण
	ख. दिव्य उदक वृष्टि से तिल के पौधे का पुनः प्रत्यारोपण	
48-49	कुर्मग्राम के बाहर गोशालक का वैश्यायन बाल तपस्वी से विवाद	
50	वैश्यायन बाल तपस्वी द्वारा गोशालक पर तेजोलेख्या	

62-65	गोशालक द्वारा अर्थलोलुप वणिक्वर्ग-विनाश दृष्टांत कथन पूर्वक आनंद स्थविर को भगवद् विनाश का सूचन	77 78	भगवान् द्वारा गोशालक को समझाने का पुनः प्रयत्न गोशालक द्वारा भ. महावीर पर तेजोलेश्या का प्रक्षेपण व तेजो लेश्या द्वारा स्वयं आहत होना
66	गोशालक के सामर्थ्य के सम्बन्ध में आनंद की जिज्ञासा	79 80	कुद्ध गोशालक की भगवान् के प्रति मरण घोषणा भगवान् द्वारा गोशालक के अंधकारमय भविष्य का कथन
67	आनंद स्थविर द्वारा भ. महावीर का गौतम आदि को गोशालक से विवाद करने का निषेधादेश	81	श्रावस्ती के नागरिकों द्वारा गोशालक के मिथ्यावादी और भगवान् के सम्यग्वादी होने का निर्णय
68	क. भगवान् के समीप गोशालक का स्वमत दर्शन- निरूपण	82-84	क. भ. महावीर का श्रमणों को गोशालक के साथ चर्चा करने का आदेश
69	ख. चौरासी लक्ष महाकल्प का प्रमाण ग. सात दिव्य भवान्तरित सात मनुष्य भव घ. सात शरीरान्तर प्रवेश	85 86 87-89	ख. गोशालक और श्रमणों के प्रश्नोत्तर निरुत्तर गोशालक का क्रोध गोशालक का हालाहला के यहाँ जाना तेजोलेश्या का सामर्थ्य
70	भ. महावीर के प्रति गोशालक के आक्रोश वचन	90	चार प्रकार के पानक
71-73	क. सर्वानुभूति अणगार का गोशालक को सत्य कथन	91 92	चार प्रकार के अपानक स्थाल पानक का स्वरूप
74-76	ख. गोशालक द्वारा सर्वानुभूति अणगार पर तेजोलेश्या का प्रहार सुनक्षत्र अणगार पर भी तेजोलेश्या का प्रहार	93 94 95	त्वचा पानक का स्वरूप शिम्बली पानक का स्वरूप क. शुद्ध पानक का स्वरूप

	ख. पूर्णभद्र और माणिभद्र देव की साधना	नीचे पुंड्रदेश के पास शतद्वार नगर में सन्मूर्ति
96-107	गोशालक और अयंपुल आजीविकोपासक का मिलन	राजा व भद्रा भार्या की कुक्षि से गोशालक की
108	शानदार मृत्यु महोत्सव करने के लिए गोशालक का स्थविरों को आदेश	आत्मा का जन्म
109	गोशालक को सम्यक्त्व की प्राप्ति	ख. जिसका महापद्म, देवसेन और विमलवाहन
110	अंतिम संस्कार के सम्बन्ध में गोशालक का नया आदेश	नामकरण
111-114	भगवान का मेंढिक ग्राम के साणकोष्ठक चैत्य स्थित मालुकावन में पदार्पण	ग. महापद्म और देवसेन नाम देने का हेतु
115	भ. महावीर को पितृज्वर और रक्ततिसार की वेदना	घ. विमल वाहन नाम देने का हेतु
116-120	सिंह अणगार की आशंका	ङ. विमल वाहन का श्रमण निर्ग्रंथों के साथ अनार्य व्यवहार
121-128	सिंह अणगार को रेवती के घर से बिजोरा पाक लाने के लिए भ. महावीर की आज्ञा	च. विमल वाहन के रथ से सुमंगल अणगार का अधः पतन
129	सर्वानुभूति अणगार की सहस्रार कल्प में उत्पत्ति, महाविदेह में जन्म और मुक्ति	छ. सुमंगल अणगार के तपतेज से विमल वाहन का भष्म होना
130	सुनक्षत्र अणगार की अच्युत देवलोक में उत्पत्ति, महाविदेह में जन्म और मुक्ति	सुमंगल अणगार की सर्वार्थसिद्ध में उत्पत्ति तदनन्तर महाविदेह में जन्म और मुक्ति
131	क. गोशालक की अच्युत देवलोक में उत्पत्ति	क. विमल वाहन का भव भ्रमण
132	ख. गोशालक देव की स्थिति	ख. जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में विंध्यचल पर्वत के सन्निकट बिभेल ग्राम में ब्राह्मण कन्या के रूप में जन्म-मरण के पश्चात् अशिकुमार देव होना व पुनः भवभ्रमण

148-151	गोशालक का अंतिम भव-महाविदेह क्षेत्र में दृढ़ प्रतिज्ञ केवली के रूप में मोक्ष गमन		कारखाना) आदि जिन जीवों के शरीरों से बने हैं उन जीवों को लगने वाली क्रियायें
1	सोलहवाँ शतक	9	क. जीव अधिकरणी (हिंसा का हेतु) और अधिकरण
2	सोलहवें शतक के उद्देशकों के नाम की गाथा राजगृह में भ. महावीर का पदार्पण व गौतम पृच्छा		ख. अधिकरणी और अधिकरण कहने का हेतु चौबीस दण्डक के जीवों में अधिकरणी और अधिकरण
3-4	प्रथम 'अधिकरण' उद्देशक	10-11	क. अविरति की अपेक्षा जीव साधिकरणी
5	अधिकरणी में वायुकाय की उत्पत्ति और मरण	12-13	ख. चौबीस दण्डक के जीव साधिकरणी
6	वायुकाय के जीव का शरीर सहित भवान्तर क. इंगालकारिका (सिंगड़ी) में अग्निकाय की जघन्य-उत्कृष्ट स्थिति	14	अविरति की अपेक्षा जीव आत्माधिकरणी
7	ख. इंगाल कारिका में वायुकायिक जीवों की उत्पत्ति तप्त लोहे को ऊँचा-नीचा करने में लगने वाली क्रियायें	15	पराधिकरणी और तदुभयाधिकरणी चौबीस दण्डक के जीव आत्म, पर और तदुभयाधिकरणी
8	क. लोह भट्टी, संडासी, घण, हथोड़ा, एरण, अंगार आदि जिन जीवों के शरीरों से बने हैं उन जीवों को लगने वाली क्रियायें	16	अविरती की अपेक्षा जीवों का आत्म, पर और तदुभय प्रयोग से अधिकरण
	ख. तप्त लोहे के एरण पर रखने से लगने वाली क्रियायें	17	चौबीस दण्डक के जीवों का अविरती की अपेक्षा आत्म, पर और तदुभय प्रयोग से अधिकरण
	ग. लोह, संडासी, घण, हथोड़ा, एरण, एरणकाष्ठ, द्रोणी (कुण्डी) और अधिकरण शाला (लोहार	18	पाँच प्रकार का शरीर
		19	पाँच इन्द्रियाँ
		20	तीन प्रकार के योग

21	औदारिक शरीर का बंधक, अधिकरण और अधिकरणी	8-9	भ. महावीर के समीप शक्रेन्द्र का आगमन
22-23	औदारिक शरीर के बंधक, दण्डक, अधिकरणी और अधिकरण	10-11 12-13	पाँच प्रकार के अवग्रह शक्रेन्द्र सत्यवादी
24	वैक्रिय शरीर के बंधक, दण्डक, अधिकरणी और अधिकरण	14	शक्रेन्द्र सत्य आदि चार भाषा का भाषक है
25-26	आहारक शरीर के बंधक, दण्डक, अधिकरणी और अधिकरण प्रमाद	15 16	शक्रेन्द्र सावद्य एवं निरवद्य भाषी है शक्रेन्द्र भवसिद्धिक आदि
27	तैजस् शरीर के बंधक-अधिकरणी और अधिकरण	17-19	क. चैतन्य कृत कर्म-चैतन्यकृत होने के कारण
28	कार्मण शरीर के बंधक-अधिकरणी और अधिकरण	1	ख. चौबीस दण्डक में चैतन्यकृत कर्म
29-30	श्रोत्रेन्द्रिय आदि के बंधक-अधिकरणी और अधिकरण		तृतीय 'कर्म' उद्देशक राजगृह नगर में भ. महावीर का पदार्पण व गौतम पृच्छा
31-33	क. तीन योग के बंधक-अधिकरणी और अधिकरण ख. चौबीस दण्डक में तीन योग के बंधक ग. उन्नीस दण्डक में वचन योग	2 3 4 5	आठ कर्म प्रकृतियाँ चौबीस दण्डक में आठ कर्म प्रकृतियाँ ज्ञानावरण का वेदक, आठ कर्म प्रकृतियों का वेदक भ. महावीर का राजगृह के गुणशील चैत्य से विहार
1	द्वितीय 'जरा' उद्देशक राजगृह नगर में भ. महावीर का पदार्पण व गौतम पृच्छा	6-8 9-10	उल्लुक्तीर नगर के जम्बूक चैत्य में पदार्पण कायोत्सर्ग में स्थित मुनि के अर्श काटने वाले वैद्य को और मुनि को लगने वाली क्रियायें
2	जीवों को जरा और शोक		चतुर्थ 'जावन्तिय' उद्देशक
3-7	चौबीस दण्डक में जरा और शोक	1	राजगृह नगर में भ. महावीर का पदार्पण व गौतम

	पृच्छा	9	महाशुक्रकल्प में सम्यग्दृष्टि गंगदत्त देव की उत्पत्ति और उसका मिथ्यादृष्टि देव के साथ संवाद
2-6	नैरयिक से नित्यभोजी श्रमण की निर्जरा अधिक		
7	क. अधिक निर्जरा होने का हेतु	10	वाद का विषय-परिणाम प्राप्त पुद्गल परिणत या अपरिणत
	ख. वृद्ध कठियारे का उदाहरण		
	ग. तरुण कठियारे का उदाहरण	11-12	गंगदत्त देव का भ. महावीर के समीप आगमन
	घ. घास के पूले का उदाहरण	13	गंगदत्त देव का भ. महावीर से प्रश्न
	ङ. तप्त तवे पर पानी के बिन्दु का उदाहरण	14	क. गंगदत्त देव की जिज्ञासा- 'मैं भवसिद्धिक हूँ या अभवसिद्धिक'
	पंचम 'गंगदत्त' उद्देशक		
1-2	उल्लुक तीर नगर के जम्बूक चैत्य में भ. महावीर के पदार्पण पर शक्रेन्द्र का आगमन व जिज्ञासा		ख. भ. महावीर के सम्मुख गंगदत्त देव का नाट्य प्रदर्शन
3-5	बाह्य पुद्गल ग्रहण किये बिना देव का आगमन असंभव	15	ग. गंगदत्त देव का स्वस्थान गमन क. गंगदत्त देव की दिव्य ऋद्धि के सम्बन्ध में कूटागार शाला का दृष्टांत
6	बाह्य पुद्गलों को ग्रहण करके वह देव ये सब कार्य- 1 गमन, 2 भाषण, 3 उत्तरदान, 4 पलक झपकना, 5 शरीर के अवयवों का संकोचन-प्रसारण, 6 स्थान-शय्या-निषद्याभोग, 7 विक्रिया, 8 परिचाराणा (विषय भोग) करने में समर्थ	16	ख. दिव्य ऋद्धि प्राप्त होने का कारण व भगवान द्वारा पूर्वभव वर्णन क. जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में हस्तिनापुर नगर सहस्राम्रवन उद्यान
7	शक्र का उत्सुकतापूर्वक नमन व गमन		ख. गंगदत्त गृहपति
8	महाशुक्र सम्यग्दृष्टि देव के तेज आदि की असहनशीलता का भगवत् कथन		ग. भ. मुनि सुव्रत का पदार्पण घ. गंगदत्त का दर्शनार्थ गमन

	इ. गंगदत्त को प्रतिबोध	19	मांडलिक की माता के स्वप्न
	च. गंगदत्त की दीक्षा और अंतिम आराधना	20-21	भ. महावीर की छद्मस्थ अवस्था के दस महास्वप्न और उनका फल
17	गंगदत्त देव की स्थिति		
18	गंगदत्त देव का च्यवन, महाविदेह में जन्म और निर्वाण	22-35	एक दो भव में मुक्त होने वाले जीवों के स्वप्नों का फल
	षष्ठ 'स्वप्न' उद्देशक		
1	पाँच प्रकार का स्वप्न	36	कोष्ठपुट-यावत्-केतकीपुट के पुद्गलों का वायु के साथ वहन
2	स्वप्न देखने का समय		
3	जीव सुप्त, जागृत और सुप्त-जागृत	1	सप्तम 'उपयोग' उद्देशक
4-8	चौबीस दण्डक के जीव सुप्त, जागृत और सुप्त-जागृत		दो प्रकार के उपयोग
	अष्टम 'लोक' उद्देशक		
9	संवृतादि (साधु) का सत्यासत्य स्वप्न	1	लोक की महानता-यावत्-परिधि का प्ररूपण
10-11	जीव-संवृत, असंवृत और संवृतासंवृत	2-6	लोक के पूर्वान्त आदि दिशाओं में जीव नहीं किन्तु जीव देश, जीव प्रदेश, अजीव, अजीव देश और अजीव प्रदेश हैं
12	बयालीस प्रकार के स्वप्न		
13	तीस प्रकार के महास्वप्न		
14	स्वप्न और महास्वप्न की संयुक्त संख्या	7-12	रत्नप्रभा के पूर्वान्त आदि से-यावत्-ईषत्प्राग्भारा के पूर्वान्त आदि पर्यन्त जीवाजीव का प्ररूपण
15	तीर्थकर की माता के स्वप्न		
16	चक्रवर्ती की माता के स्वप्न	13	एक समय में परमाणु की गति का सामर्थ्य
17	वासुदेव की माता के स्वप्न	14	वर्षा की जानकारी के लिए हाथ पसारने वाले व संकुचन करने वाले को लगने वाली क्रियायें
18	बलदेव की माता के स्वप्न		

15	क. महर्धिक देव का अलोक में हाथ पसारना संभव नहीं	1	त्रयोदशम दिक्कुमार उद्देशक
	ख. हाथ न पसार सकने का हेतु		दिक्कुमारों का समान आहार, उच्छ्वास-निःश्वास पूर्ववत्
	नवम 'बलीन्द्र' उद्देशक		चौदशम 'स्तनितकुमार' उद्देशक
1	क. बलीन्द्र (वैरोचनेन्द्र) की सुधर्मा सभा कहां स्थित ?	1	स्तनितकुमारों का समान आहार, उच्छ्वास-निःश्वास पूर्ववत्
	ख. बलिचंचा राजधानी का विष्कम्भ		सत्रहवाँ शतक
	ग. बलीन्द्र की स्थिति	1	श्रुत देवता को नमस्कार
	दशम 'अवधिज्ञान' उद्देशक	2	उद्देशकों के नाम की गाथा
1	दो प्रकार का अवधिज्ञान		प्रथम 'कुंजर' उद्देशक
	एकादशम 'द्वीपकुमार' उद्देशक	3	राजगृह नगर में भ. महावीर का पदार्पण व गौतम पृच्छा
1	द्वीपकुमारों का समान आहार, समान उच्छ्वास-निश्वास प्ररूपण	4	उदायी हस्ती का पूर्वभव
2	द्वीपकुमारों के चार लेश्या	5	उदायी हस्ती का परभव
3	चार लेश्या वाले द्वीपकुमारों का अल्प-बहुत्व	6	उदायी हस्ती का तृतीय भव, महाविदेह में जन्म और निर्वाण
4	चार लेश्या वाले द्वीपकुमारों में अल्पत्र्यद्विक-महर्धिक का अल्प-बहुत्व	7	भूतानन्द हस्ती का पूर्वभव और परभव उदायी के समान क्रिया विचार
	द्वादशम 'उदधिकुमार' उद्देशक		ताड़ वृक्ष पर चढ़कर ताड़ फल गिराने वाले को लगाने वाली क्रियायें
1	उदधि कुमारों का समान आहार, उच्छ्वास-निःश्वास पूर्ववत्	8	

9	क. ताड़ वृक्ष और ताड़ फल जिन जीवों के शरीर से बना है, उन जीवों को लगने वाली क्रियायें	18-20	दस दण्डकों में औदारिक शरीर का बंधक, एक जीव को लगने वाली क्रियायें
	ख. गिरते हुए ताड़ फल से यदि जीव वध हो तो- 1 फल गिराने वाले पुरुष को, 2 ताड़ वृक्ष के जीवों को, 3 ताड़ फल के जीवों को व 4 ताड़ फल के उपकारी जीवों को लगने वाली क्रियायें	21-23 24-25 26 27	दस दण्डकों में औदारिक शरीर के बंधक, बहुत से जीवों को लगने वाली क्रियायें शेष शरीरों के बंधकों को लगने वाली क्रियायें पाँचों इन्द्रियों के बंधकों को लगने वाली क्रियायें एकवचन और बहुवचन की अपेक्षा से छब्बीस विकल्प
10-11	क. वृक्ष-मूल हिलाने वाले को तथा गिराने वाले को लगने वाली क्रियायें	28	छह प्रकार के भाव
	ख. वृक्ष-मूल तथा बीज आदि के शरीर जिन जीवों से बने हुए हैं उन जीवों को लगने वाली क्रियायें	29	दो प्रकार के औदारिक भाव
	ग. गिरते हुए वृक्ष से यदि जीव वध हो तो-1 वृक्ष गिराने वाले पुरुष को, 2 मूल तथा बीज आदि के जीवों को, 3 मूल आदि के उपकारीजीवों को लगने वाली क्रियायें	1 2 3	द्वितीय 'संयत' उद्देशक संयत-विरत धार्मिक, असंयत-अविरत अधार्मिक और संयता-संयत धर्माधार्मिक धर्म-अधर्म-धर्माधर्म में जीव के स्थित होने का निषेध धर्म में स्थित न होने का हेतु
12-14	क. वृक्ष का कंद हिलाने वाले पुरुष को लगने वाली क्रियाएं	4-9	जीव व चौबीस दण्डक के जीव धर्म, अधर्म और धर्माधर्म में स्थित हैं
	ख. गिरते हुए कंद से यदि जीव वध हो तो लगने वाली क्रियाएं	10	अन्य तीर्थियों की मान्यता-एक जीव के वध की भी अविरति जिसके है वह बाल पंडित है
15-17	शरीर, इन्द्रिय और योग के प्रकार	11	जीव बाल भी, पंडित भी और बाल पंडित भी है

12-16	चौबीस दण्डक के जीव बाल, पंडित और बाल पंडित हैं	2	जीव द्वारा प्राणातिपात क्रिया
17	क. अन्य तीर्थिकों की मान्यता-जीव और जीवात्मा भिन्न हैं ख. भ. महावीर की मान्यता-जीव और जीवात्मा कथंचित् अभिन्न हैं	3-4	क. जीव व चौबीस दण्डक में स्पष्ट क्रिया अनुक्रम से ख. व्याघात और अव्याघात की अपेक्षा से क्रिया का दिशा विचार
18	रूपी अरूपी नहीं हो सकता और न अरूपी रूपी हो सकता है	5-7	मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन और परिग्रह सम्बन्धी क्रिया
19	अरूपी रूप की विकुर्वणा न कर सकने का हेतु	8-12	समय, देश और प्रदेश की अपेक्षा से जीव और चौबीस दण्डकों में प्राणातिपात -यावत्- परिग्रह की क्रिया का प्ररूपण
1	तृतीय 'शैलेशी' उद्देशक	13-14	जीव व चौबीस दण्डक में आत्मकृत दुःख
2	शैलेशी अणगार का पर प्रयोग के बिना कंपन नहीं	15-16	जीव व चौबीस दण्डक में आत्मकृत दुःख का वेदन
3-10	पाँच प्रकार की एजना-कंपन	17-18	जीव व चौबीस दण्डकों में आत्मकृत वेदना
11-14	पाँचों एजना और एजना के हेतु-चारों गतियों में चलना व उसके भेद-प्रभेद	19-20	जीव व चौबीस दण्डकों में आत्मकृत वेदना का वेदन
15-21	शरीरादि चलना के स्वरूप का सयुक्तिक निरूपण		
22	संवेग-यावत्-मार्णातिक अध्यासनता		
	इन उपचास पदों का अंतिम फल मोक्ष		
1	चतुर्थ 'क्रिया' उद्देशक	1	पंचम 'सुधर्मा' सभा उद्देशक
	राजगृह नगर में भ. महावीर का पदार्पण व गौतम पृच्छा		क. ईशानेन्द्र की सुधर्मा सभा का स्थानादि की दृष्टि से निरूपण ख. ईशानेन्द्र की स्थिति

षष्ठ 'पृथ्वीकायिक' (1) उद्देशक		उत्पन्न होना या पहले पुद्गल ग्रहण करना	
1-6	नरक पृथ्वीकायिक जीवों का मरण समुद्धात	एकादश 'वायुकायिक' (2) उद्देशक	
1	सप्तम 'पृथ्वीकायिक' (2) उद्देशक	सौधर्म कल्प में मरण समुद्धात करके वायुकायिक जीवों का रत्नप्रभा के घनवात-तनुवात वलय - यावत्-तमस्तमप्रभा में वायुकायिक जीव रूप में उत्पन्न होना	
	सौधर्म कल्प की पृथ्वी में-यावत्-ईषत्प्राग्भारा की पृथ्वी में, रत्नप्रभा-यावत्-तमस्तमप्रभा पृथ्वी में उत्पन्न जीव मरण समुद्धात करके जन्म लेने के बाद कभी पूर्व या पश्चात् आहार ग्रहण	द्वादश 'एकेन्द्रिय' उद्देशक	
	अष्टम 'अक्कायिक' (1) उद्देशक	सर्व एकेन्द्रियों का आहार, शरीर उच्छ्वास-यावत्-आयु, उत्पत्ति सम्बन्धी वर्णन	
1	रत्नप्रभा पृथ्वी में मरण समुद्धात करके अक्कायिक जीवों का सौधर्म कल्प में उत्पन्न होने के पूर्व या पश्चात् आहार ग्रहण करना	एकेन्द्रियों की लेश्या एवं ऋद्धि की अपेक्षा से अल्प-बहुत्व	
2	रत्नप्रभा पृथ्वी में से अक्कायिक जीव का सौधर्म कल्प में अक्कायिक रूप में उत्पन्न होना	लेश्या वाले एकेन्द्रियों का अल्प-बहुत्व	
	नवम 'अक्कायिक' (2) उद्देशक	लेश्या वाले एकेन्द्रियों की ऋद्धि का अल्प-बहुत्व	
1-2	सौधर्म कल्प के अक्कायिक जीव मरण समुद्धात करके रत्नप्रभा पृथ्वी के घनोर्द्धि वलयों में अक्कायिक रूप में उत्पन्न होना-यावत्-तमस्तमप्रभा में उत्पन्न होना	त्रयोदश 'नागकुमार' उद्देशक	
		नागकुमारों का आहार-यावत्-ऋद्धि का अल्प-बहुत्व	
		चतुर्दश 'सुवर्णकुमार' उद्देशक	
		सुवर्णकुमारों का आहार-यावत्-ऋद्धि का अल्प-बहुत्व	
		पंचदश 'विद्युत्कुमार' उद्देशक	
1	दशम 'वायुकायिक' (1) उद्देशक	विद्युत्कुमारों का आहार-यावत्-ऋद्धि का अल्प-बहुत्व	
	रत्नप्रभा पृथ्वी में मरण समुद्धात करके वायुकायिक जीव का सौधर्म कल्प में वायुकायिक रूप में पहले		

	षोडस 'वायुकुमार' उद्देशक	18-21	भवसिद्धिकत्वादि की दृष्टि से प्रथम-अप्रथम
1	वायुकुमारों का आहार-यावत्-ऋद्धि का अल्प-बहुत्व	22-24	जीव-चौबीस दण्डक और सिद्धों में सज्ञी आदि की दृष्टि से प्रथम-अप्रथम
	सप्तदश 'अग्रिकुमार' उद्देशक		
1	अनिकुमारों का आहार-यावत्-ऋद्धि का अल्प-बहुत्व	25-32	सलेण्यादि भाव की अपेक्षा से प्रथम-अप्रथम
	अठारहवाँ शतक		
	अठारवें शतक के उद्देशकों के नाम की संग्रहणी गाथा	33-40	सम्यग्दृष्टि भावादि की अपेक्षा से प्रथम-अप्रथम
1		41-44	जीव-चौबीस दण्डक और सिद्धों में एकत्व-बहुत्व से संयत भाव की अपेक्षा प्रथम-अप्रथम
	प्रथम 'प्रथम' उद्देशक	45-50	जीव-चौबीस दण्डक और सिद्धों में सकषयादि भाव की अपेक्षा प्रथम-अप्रथम
2	राजगृह नगर में भ. महावीर का पदार्पण व गौतम पृच्छा	51-54	जीव-चौबीस दण्डक और सिद्धों में ज्ञानी-अज्ञानी भाव की अपेक्षा प्रथम-अप्रथम
3	जीव जीवभाव से अप्रथम है	55-56	जीव-चौबीस दण्डक और सिद्धों में योगी-अयोगी भाव की अपेक्षा प्रथम-अप्रथम
4	चौबीस दण्डक के जीव जीवभाव से अप्रथम है	57	जीव-चौबीस दण्डक और सिद्धों में साकारोपयोग-अनाकारोपयोग भाव की अपेक्षा प्रथम-अप्रथम
5	सिद्ध, सिद्धभाव से प्रथम है	58-59	जीव-चौबीस दण्डक और सिद्धों में सवेद-अवेद भाव की अपेक्षा प्रथम-अप्रथम
6	समस्त जीव जीवभाव से अप्रथम है		
7	चौबीस दण्डक के समस्त जीव, जीवभाव से अप्रथम है	60-61	जीव-चौबीस दण्डक और सिद्धों में सशरीर-अशरीर भाव की अपेक्षा प्रथम-अप्रथम
8	समस्त सिद्ध सिद्धभाव से अप्रथम है		
9-17	जीव चौबीस दण्डक और सिद्धों में आहारकत्व-अनाहारकत्व की अपेक्षा प्रथम-अप्रथम		

62	जीव-चौबीस दण्डक और सिद्धों में पर्याय भाव की अपेक्षा प्रथम-अप्रथम	(3)	एक हजार आठ वणिकों के साथ कार्तिक सेठ का प्रव्रज्या ग्रहण
63	प्रथम-अप्रथम लक्षण की संग्रहणी गाथा	(4)	चौदहपूर्व का अध्ययन
64-102	जीव-चौबीस दण्डक और सिद्धों में पूर्वोक्त चौदह द्वारों के माध्यम से जीव भावादि की अपेक्षा चरम-अचरम	(5)	तपश्चर्या, अंतिम आराधना, शकेन्द्र रूप में उत्पन्न होना, पश्चात् महाविदेह में जन्म और निर्वाण
103	चरम-अचरम लक्षण की संग्रहणी गाथा	1-3	तृतीय 'माकंदीपुत्र' उद्देशक क. राजगृह नगर के गुणशील चैत्य में भ. महावीर से माकंदीपुत्र अणगार के प्रश्न
1	द्वितीय 'विशाखा' उद्देशक विशाखा नगरी के बहुपुत्रिक चैत्य में भ. महावीर का पदार्पण		ख. कापोत लेश्या वाले पृथ्वीकायिक जीव का मनुष्यभव प्राप्त करके मुक्त होना
2	भगवान के सम्मुख शक्रेन्द्र का आगमन व नाट्य प्रदर्शन	3-4	कापोत लेश्या वाले अक्कायिक और वनस्पतिकायिक जीव का मनुष्यभव प्राप्त करके मुक्त होना
3	क. भ. गौतम को शक्रेन्द्र की ऋद्धि तथा पूर्वभव की जिज्ञासा	5	भ. महावीर से प्राप्त समाधान के सम्बन्ध में माकंदीपुत्र की श्रमण-निर्ग्रंथों से वार्ता
(2)	ख. भ. महावीर द्वारा समाधान	6	क. स्थविरों का भ. महावीर के समीप समाधान के लिए शंकाशील श्रमण-निर्ग्रंथों का आगमन
	ग. हस्तिनापुर नगर, सहस्राग्रवन उद्यान, कार्तिक सेठ एक हजार आठ व्यापारियों में प्रमुख		ख. श्रमण निर्ग्रंथों द्वारा समाधान पाने के लिए पृच्छा व भ. महावीर द्वारा समाधान
	क. भ. मुनि सुव्रत स्वामी का पदार्पण		ग. कापोत लेश्या वाले पृथ्वीकायिक, अक्कायिक और वनस्पतिकायिक जीवों के समान कृष्ण
	ख. कार्तिक सेठ का धर्मश्रवण और वैराग्य		

और नील लेश्या वाले पृथ्वी-अप् वनस्पति- कायिक जीवों का मनुष्य भव प्राप्त करके मुक्त होना		24-26	क. चौबीस दण्डक के जीवों द्वारा आहार रूप में गृहीत पुद्गलों की आहार रूप में परिणति तथा निर्जरा का प्रमाण
7	माकंदीपुत्र से श्रमण-निर्ग्रंथों द्वारा क्षमायाचना		ख. अति सूक्ष्म निर्जरीत पुद्गल
8	भावित आत्मा अणुगार के सर्वलोकव्यापी चरम निर्जरा पुद्गल	1	चतुर्थ 'प्राणातिपात' उद्देशक राजगृह नगर में भ. महावीर का पदार्पण व गौतम पृच्छा
9	उपयोगयुक्त छद्मस्थ का निर्जरा पुद्गलों को जानना- देखना, ग्रहण करना	2	जीव और अजीव द्रव्यों में से जीवों के लिए परिभोग्य व अपरिभोग्य द्रव्यों का निरूपण
(2-6)	चौबीस दण्डक के उपयोग-युक्त जीवों को निर्जरा पुद्गलों का ज्ञान तथा सभी जीवों द्वारा निर्जरा पुद्गलों का आहार करना	3	चार प्रकार का कषाय
10-14	दो प्रकार का बंध व उसके भेद-प्रभेद	4	कृतयुग्मादि चार राशि
15-16	चौबीस दण्डक के जीवों को भावबंध	5-12	चौबीस दण्डक और सिद्धों में कृतयुग्मादि चार राशि
17-20	चौबीस दण्डकों में ज्ञानावर्णीय-यावत्-अंतराय की मूल तथा उत्तर प्रकृतियों का बंध	13-17	स्त्री दण्डकों में कृतयुग्मादि चार राशि
21	अतीत, वर्तमान तथा भविष्य में किये जाने वाले पापकर्मों की भिन्नता का धनुषबाण के उदाहरण सहित निरूपण	18	अल्प और उक्तृष्ट आयु वाले अंधकवह्निजीव पंचम 'असुरकुमार' उद्देशक
22-23	चौबीस दण्डक के अतीत तथा भविष्य के कर्मों में भिन्नता	1	क. एक असुरकुमागवास में दर्शनीय और अदर्शनीय दो प्रकार के असुरकुमार ख. दर्शनीय और अदर्शनीय होने का हेतु ग. विभूषित और अविभूषित मनुष्य का उदाहरण

2-4	नागकुमार आदि भवनवासी देव व वाणव्यंतर देव	स्कंध के वर्णादि
5	क. एक नरकावास में दो प्रकार के महाकर्मा और अल्पकर्मा नैरयिक	सप्तम 'केवली' उद्देशक
	ख. नैरयिकों के अल्पकर्मा और महाकर्मा होने का हेतु	राजगृह नगर में भ. महावीर का पदार्पण व गौतम पृच्छा
6-7	सोलह दण्डकों में अल्पकर्मा और महाकर्मा जीव	क. अन्यतीर्थिक की मान्यता- यक्षाविष्ट केवली की मृषा एवं मिश्र भाषा
8-11	चौबीस दण्डक में मृत्यु से कुछ समय पूर्व दो प्रकार की आयु का बंध	ख. भ. महावीर की मान्यता- केवली यक्षाविष्ट नहीं होता
12-15	देवताओं की इष्ट और अनिष्ट विकुर्वणा	ग. केवली की सत्य और असत्यामृषा भाषा
1	षष्ठ 'गुड़ वर्णादि' उद्देशक	उपधि एवं परिग्रह के त्रय प्रकार एवं चौबीस दंडकों में उपधि परिग्रह का यथार्थ निरूपण
2	निश्चय और व्यवहार नय से गुड़ के वर्णादि	तीन प्रकार के प्रणिधान
3	निश्चय और व्यवहार से भ्रमर के वर्णादि	चौबीस दण्डक में तीन प्रकार के प्रणिधान
4	निश्चय और व्यवहार नय से सुकपिच्छ के वर्णादि	क. तीन प्रकार के दुष्प्रणिधान
	मंजिष्ठ, हल्दी, शंख, कुष्ठ, मृतकलेवर, निम्ब, सूँठ, कपित्थ, इमली, खाण्ड, वज्र, नवनीत, लोहा, उलूकपत्र, हिम, अग्नि, तेल आदि का निश्चय और व्यवहारनय से वर्ण, गंध, रस और स्पर्श	ख. चौबीस दण्डक में तीन प्रकार के दुष्प्रणिधान
5	निश्चय और व्यवहारनय से राख के वर्णादि	क. तीन प्रकार का सुप्रणिधान
6	परमाणु के वर्ण, गंध, रस, स्पर्श	ख. सोलह दण्डक में तीन प्रकार का सुप्रणिधान
7-13	सूक्ष्म-बादर द्विप्रदेशिक स्कंध-यावत्-अनंत प्रदेशिक	भ. महावीर का बाह्य जनपदों में विचरण
		राजगृह नगर के गुणशील चैत्य में पृथ्वी शिलापट्टक महुक श्रमणोपासक व भ. महावीर का पदार्पण

28	मद्रुक का भ. महावीर की वंदना के लिए जाना	51	असुरकुमार-यावत्-अनुत्तर देवों के कर्मक्षय का भिन्न-भिन्न काल
29-30	मार्ग में मद्रुक से अन्यतीर्थिकों का अस्तिकाय के सम्बन्ध में प्रश्न		अष्टम 'अनगर क्रिया' उद्देशक
31-32	अन्यतीर्थिकों से मद्रुक के प्रतिप्रश्न	1	राजगृह नगर में भ. महावीर का पदार्पण व गौतम पृच्छा
33-36	मद्रुक के यथार्थ उत्तर के प्रति भ. महावीर द्वारा साधुवाद	2	भावितात्मा अणगार के पैर के नीचे दबे कुर्कुटादि के कारण ईयापथिक क्रिया का सकारण निरूपण
37	मद्रुक की प्रव्रज्या व अंतिम साधना और निर्वाण		भगवान का जनपद-विहार, राजगृह में पदार्पण व गुणशील उद्धान में निवास
38	क. देवताओं का वैक्रिय सामर्थ्य	3-6	भ. गौतम का पदार्पण
39	ख. विकुर्वित रूपों द्वारा देवता का युद्ध सामर्थ्य	7	अन्य तीर्थिकों ने भ. गौतम को एकांत असंयत-यावत्-एकांत बाल कहा
40	वैक्रिय शरीरों का एक जीव के साथ सम्बन्ध	8-9	अन्य तीर्थिकों ने एकांत असंयत तथा बाल कहने का कारण बताया
41	शरीरों के मध्य अंतरों का शस्त्रादि से छेदन संभव नहीं	10	भ. गौतम ने अन्यतीर्थिकों को एकांत बाल -यावत्-असंयत कहा तथा एकांत असंयत-यावत्-एकांत बाल कहने का कारण बताया
42	देवासुर संग्राम की संभावना	11-14	असंयत कहा तथा एकांत असंयत-यावत्-एकांत बाल कहने का कारण बताया
43	देवासुर संग्राम में शस्त्र रूप परिणत पदार्थ		अन्यतीर्थिकों को यथार्थ उत्तर देने पर भ. महावीर ने भ. गौतम को साधुवाद दिया
44	असुरों के विकुर्वित शस्त्र		छद्मस्थ का परमाणुज्ञान-दो विकल्प
45-47	देवताओं का लवण समुद्र, धातकीखण्ड व रूचकवर द्वीप गमन सामर्थ्य	15	
48-50	देवताओं के पुण्यकर्म का क्षय	16	

17-18	द्विप्रदेशिक स्कंध-यावत्-असंख्यात प्रदेशिक स्कंध के सम्बन्ध में पूर्ववत् दो विकल्प	13-15	वाणिज्यग्राम के द्युतिपलाश चैत्य में चार वेद आदि ब्राह्मण शास्त्रों में निपुण सोमिल ब्राह्मण व उसके पाँच सौ शिष्य
19	अनंत प्रदेशिक स्कंध के सम्बन्ध में चार विकल्प		
20	अवधिज्ञानी के परमाणु ज्ञान के विकल्प	16	भ. महावीर का पदार्पण
21	परमावधिज्ञानी के ज्ञान दर्शन का भिन्न-भिन्न समय	17	शिष्य परिवार सहित सोमिल का भ. महावीर के समीप आगमन
22	इसी प्रकार -यावत्- अनंत प्रदेशी स्कंध के परमाणु पुद्गल जानने का भिन्न-भिन्न समय	18-23	यात्रा, यापनीय, अव्याबाध और प्रासुक विहार के सम्बन्ध में भगवान् से प्रश्न व भगवान द्वारा समाधान
23	केवलज्ञानी के ज्ञान तथा दर्शन का भिन्न-भिन्न समय		सरिसव भक्ष्याभक्ष्य विषयक सोमिल का प्रश्न व भगवान का समाधान
1	नवम 'भव्य द्रव्य' उद्देशक	24	मास भक्ष्याभक्ष्य विषयक सोमिल का प्रश्न व भगवान का समाधान
2-9	राजगृह में भ. महावीर का पदार्पण व गौतम पृच्छा	25	कुलथ भक्ष्याभक्ष्य विषयक सोमिल का प्रश्न व भगवान का समाधान
10-20	चौबीस दण्डक के भव्य द्रव्य जीव		
	चौबीस दण्डक के भव्य द्रव्य जीवों की स्थिति	26	भगवान का समाधान
1	दशम 'सोमिल' उद्देशक		
2-3	राजगृह में भ. महावीर का पदार्पण व गौतम पृच्छा	27	सोमिल द्वारा एक व अनेक अक्षय अव्यय के संबंध में पूछे गये प्रश्नों का भगवान द्वारा समाधान
4-7	भाविता आत्मा अणुगार की वैक्रिय लब्धि का सामर्थ्य		
	परमाणु-यावत् अनंत प्रदेशिक स्कंध से वायु का स्पर्श	28	सोमिल द्वारा श्रावक धर्म स्वीकार
8	बस्ति (मशक) और वायुकाय का स्पर्श	29	सोमिल की अंतिम साधना और निर्वाण
9-12	रत्नप्रभा-यावत्-ईषत्प्राग्भारा पृथ्वी के नीचे अन्योन्य संबद्ध द्रव्य	1	उन्नीसवाँ शतक
			उन्नीसवें शतक के उद्देशकों के नाम की संग्रहणी गाथा

2	राजगृह में भ. महावीर का पदार्पण व गौतम पृच्छा		ख. उपपात, स्थिति और उद्वर्तना में भिन्नता
3	प्रथम 'लेश्या' उद्देशक	20	वायुकायिकों में समुद्घात की विशेषता
	छ प्रकार की लेश्या	21	वनस्पतिकायिकों में शरीर, आहार, स्थिति में भिन्नता
1	द्वितीय गर्भ उद्देशक	22	पृथ्वीकायिक आदि की जघन्य-उत्कृष्ट अवगाहना का अल्प-बहुत्व
	कृष्णलेश्या वाला कृष्णलेश्या वाले गर्भ को उत्पन्न करता है	23-26	पृथ्वीकायिक आदि की परस्पर सूक्ष्मता का निरूपण
	तृतीय 'पृथ्वी' उद्देशक	27-30	पृथ्वीकायिक आदि की परस्पर स्थूलता का निरूपण
1	राजगृह में भ. महावीर का पदार्पण व गौतम पृच्छा	31	पृथ्वीकाय के शरीर का प्रमाण
2	पृथ्वीकाय के प्रत्येक जीवों के प्रत्येक शरीर का बंध	32	क. पृथ्वीकाय के शरीर की सूक्ष्म अवगाहना
3-17	पृथ्वीकायिक जीवों की लेश्या, दृष्टि, ज्ञान, योग, उपयोग, आहार, स्पर्श, प्राणातिपात-यावत्-मिथ्यादर्शनशल्य, उत्पाद, स्थिति, समुद्घात, उद्वर्तना आदि बारह विषयों से विचारणा		ख. चक्रवर्ती की दासी द्वारा पृथ्वीपिंड पीसने का उदाहरण
18	क. अष्कायिक जीवों की पृथ्वीकायिकों के समान विचारणा	34-37	पृथ्वीकाय की वेदना, वृद्ध पर तरुण पुरुष के प्रहार का दृष्टांत
	चतुर्थ 'महाश्रव' उद्देशक		अष्काय-यावत्-वनस्पतिकाय की वेदना-पृथ्वीकाय के समान
	ख. स्थिति में भिन्नता	1-16	
19	क. अग्निकायिकों की पृथ्वीकायिकों के समान विचारणा	17-22	
			नैरयिकों में-महाआश्रव, महाक्रिया, महावेदना और महानिर्जरा की प्ररूपणा
			असुरकुमारों से वैमानिकों पर्यंत महा आश्रव, महाक्रिया, महावेदना और महानिर्जरा की प्ररूपणा

	पंचम 'चरम' उद्देशक		चौबीस दण्डक में सर्वेन्द्रिय निर्वृत्ति
1-5	चौबीस दण्डक में अल्पायु तथा उक्तृष्टायु के साथ-साथ महाकर्म, महाक्रिया, महाआश्रव और वेदना का निरूपण	11-14	चौबीस दण्डक में भाषा निर्वृत्ति
6	दो प्रकार की वेदना	15-16	चौबीस दण्डक में मन निर्वृत्ति
7	चौबीस दण्डक में दो प्रकार की वेदना	17-18	चौबीस दण्डक में कषाय निर्वृत्ति
	षष्ठ 'द्वीप-समुद्र' उद्देशक	19-20	चौबीस दण्डक में वर्ण-गंध-रस-स्पर्श निर्वृत्ति
1	द्वीप-समुद्रों के स्थान-संस्थान आदि का विचार	21-25	चौबीस दण्डक में संस्थान निर्वृत्ति
	सप्तम 'भवन' उद्देशक	26-31	चौबीस दण्डक में संज्ञा निर्वृत्ति
1-3	असुरकुमारों के भवनावासों की संख्या तथा भवनावासों का संक्षिप्त परिचय	32-33	चौबीस दण्डक में लेश्या निर्वृत्ति
4-5	वाणव्यंतरावासों का संक्षिप्त परिचय	34-35	चौबीस दण्डक में दृष्टि निर्वृत्ति
6-7	ज्योतिष्कावासों का संक्षिप्त परिचय	36-37	चौबीस दण्डक में ज्ञान निर्वृत्ति
8-10	सौधर्म कल्प के विमानों की संख्या, सर्व विमानावासों का संक्षिप्त परिचय	38-39	चौबीस दण्डक में अज्ञान निर्वृत्ति
	अष्टम 'निवृत्ति' उद्देशक	40-41	चौबीस दण्डक में योग निर्वृत्ति
1-4	जीव व चौबीस दण्डक में एकेन्द्रिय-यावत् पंचेन्द्रिय निर्वृत्ति	42-43	चौबीस दण्डक में उपयोग निर्वृत्ति
5-7	चौबीस दण्डक में कर्म निर्वृत्ति	44-45	
8-10	चौबीस दण्डक में शरीर निर्वृत्ति		

नवम 'करण' उद्देशक

1	द्रव्यादि पाँच प्रकार का करण
2-3	चौबीस दण्डक में पाँच प्रकार का करण
4-5	चौबीस दण्डक में पाँच प्रकार का शरीर करण
6-7	चौबीस दण्डक में पाँच प्रकार का इन्द्रिय करण
8 (1)	चौबीस दण्डक में चार प्रकार का भाषा करण
(3)	चौबीस दण्डक में चार प्रकार का मनकरण

(3)	चौबीस दण्डक में चार प्रकार का कषाय करण	2	राजगृह में भ. महावीर का पदार्पण व गौतम पृच्छ
(4)	चौबीस दण्डक में सात प्रकार का समुद्धात करण		प्रथम बेइन्द्रिय उद्देशक
(5)	चौबीस दण्डक में चार प्रकार का संज्ञा करण	3	बेइन्द्रियादि जीवों के शरीर बंध का क्रम
(6)	चौबीस दण्डक में छह प्रकार का लेश्या करण	4	बेइन्द्रियादि जीवों के लेश्या, दृष्टि, ज्ञान, योग व आहार में भिन्नता
(7)	चौबीस दण्डक में तीन प्रकार का दृष्टि करण		बेइन्द्रियादि जीवों की स्थिति में भिन्नता
(8)	चौबीस दण्डक में तीन प्रकार का वेद करण	5-6	सर्वार्थसिद्ध पर्यंत पंचेन्द्रिय जीवों के शरीर बंध, लेश्या, दृष्टि, ज्ञान, अज्ञान, योग में भिन्नता
9-10	चौबीस दण्डक में पांच प्रकार का ऐकेन्द्रिय-यावत्-पंचेन्द्रिय प्राणतिपात करण	7	शेष बेइन्द्रिय के समान
11	पाँच प्रकार का पुद्गल करण		पंचेन्द्रियों में संज्ञा, प्रज्ञा, मन और वचन में भिन्नता
12	पाँच प्रकार का वर्ण करण	8	पंचेन्द्रियों में इष्ट-अनिष्ट रूप, गंध, रस, स्पर्श का अनुभव
13 (1)	दो प्रकार का गंध करण	9	पंचेन्द्रियों में प्राणतिपात-यावत्-मिथ्यादर्शन शल्य, स्थिति, समुद्धात और उद्वर्तना में भिन्नता
(2)	पाँच प्रकार का रस करण		शेष बेइन्द्रियों के समान
(3)	आठ प्रकार का स्पर्श करण	10	विकलेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय जीवों का अल्प बहुत्व
14	पाँच प्रकार का संस्थान करण		द्वितीय 'आकाश' उद्देशक
1	दशम 'वाणव्यंतर' उद्देशक		दो प्रकार का आकाश
	वाणव्यंतरों का आहार, उच्छ्वास-यावत्-महर्धिक-अल्पार्धिक के अल्प-बहुत्व का प्ररूपण	11	क. लोकाकाश जीव, जीवदेश रूप है
	बीसवाँ शतक	1	ख. धर्मास्तिकाय-यावत्-पुद्गलास्तिकाय कितना
1	बीसवें शतक के उद्देशकों के नाम की संग्रहणी	2	
	गाथा		

	बड़ा है ?	4	वर्णादि की अपेक्षा चतुष्ट्रदेशिक स्कंध के दो सौ बाईस विकल्प
3	क. अधोलोक की महानता (विस्तार)		
	ख. ईषत्प्रागभारा पृथ्वी की महानता (विस्तार)	5	वर्णादि की अपेक्षा पंच प्रदेशिक स्कंध के तीन सौ चौबीस विकल्प
4	धर्मास्तिकाय के पर्यायवाची शब्द		
5	अधर्मास्तिकाय के पर्यायवाची शब्द	6	वर्णादि की अपेक्षा षष्ठ प्रदेशिक स्कंध के चार सौ चौदह विकल्प
6	आकाशास्तिकाय के पर्यायवाची शब्द		
7	जीवास्तिकाय के पर्यायवाची शब्द	7	वर्णादि की अपेक्षा सप्त प्रदेशिक स्कंध के चार सौ चौदह विकल्प
8	पुद्गलास्तिकाय के पर्यायवाची शब्द		
	तृतीय 'प्राणवध' उद्देशक	8	वर्णादि की अपेक्षा अष्ट प्रदेशिक स्कंध के पाँच सौ चार विकल्प
1	आत्मा में प्राणातिपात से अनाकारोपयोग पर्यंत तत्व का परिणामन	9	वर्णादि की अपेक्षा नव प्रदेशिक स्कंध के पाँच सौ चौदह विकल्प
2	गर्भ में उत्पन्न जीव के वर्णादि का प्ररूपण		
	चतुर्थ 'उपचय' उद्देशक	10	वर्णादि की अपेक्षा दस प्रदेशिक स्कंध के पाँच सौ सोलह विकल्प
1	पाँच प्रकार का इन्द्रियोपचय		
	पंचम 'परमाणु' उद्देशक	11-13	दश प्रदेशी स्कंध के समान संख्यात प्रदेशी स्कंध, असंख्यात-प्रदेशी स्कंध और सूक्ष्म परिणाम वाले अनंत प्रदेशी स्कंध के पांच सौ सोलह विकल्प
1	परमाणु पुद्गल के सोलह विकल्प		
2	वर्णादि की अपेक्षा द्विप्रदेशिक स्कंध के बियालीस विकल्प	14	क. बादर परिणामी अनंत प्रदेशी स्कंध के स्पर्श संबंधी चार संयोगी सोलह विकल्प
3	वर्णादि की अपेक्षा त्रिप्रदेशिक स्कंध के एक सौ बीस विकल्प		ख. पांच संयोगी एक सौ अट्ठाईस विकल्प

ग.	छह संयोगी तीन सौ चौरासी विकल्प	5-7	चौबीस दण्डक में ज्ञानावरणीय आदि आठ कर्मों का बंध
घ.	सात संयोगी पांच सौ बारह विकल्प		
ङ.	आठ संयोगी दो सौ छप्पन विकल्प, कुल बारह सौ छियानवें विकल्प	8-11	चौबीस दण्डक में ज्ञानावरणीय आदि आठ कर्मों का तीन प्रकार से बंध
15-19	चार प्रकार के परमाणु व भेद-प्रभेद	12	तीन प्रकार के स्त्रीवेद का बंध
	षष्ठ 'अंतर' उद्देशक	13-15	असुरकुमार-यावत्-वैमानिक पर्यंत तीनों वेदों का
1-17	रत्नप्रभा-यावत्-ईषत्प्राग्भारा के अंतरालों में पृथ्वीकायिक जीवों की उत्पत्ति और आहार का पूर्व-पश्चात् प्ररूपण	16-18	तीन प्रकार से बंध चौबीस दण्डक में दर्शन और चारित्र मोहनीय का तीन प्रकार से बंध
18-23	रत्नप्रभा-यावत्-ईषत्प्राग्भारा के अंतरालों में अज्कायिक जीवों की उत्पत्ति और आहार का पूर्व- पश्चात् प्ररूपण	19	चौबीस दण्डक में पाँच शरीरों, चार संज्ञाओं, छह लेख्याओं, तीन दृष्टियों, पांच ज्ञान, तीन अज्ञान एवं विभंगज्ञान का तीन-तीन प्रकार से बंध
24	रत्नप्रभा-यावत्-ईषत्प्राग्भारा के अंतरालों में वायुकायिक जीवों की उत्पत्ति और आहार का पूर्व- पश्चात् प्ररूपण	20	आभिनिबोधिक ज्ञान और तीन अज्ञान के विषयों का तीन प्रकार से बंध
	सप्तम 'बंध' उद्देशक	1	अष्टम 'भूमि' उद्देशक पंद्रह कर्मभूमि
1	तीन प्रकार का बंध	2	तीस अकर्मभूमि
2-3	चौबीस दण्डक में तीन प्रकार का बंध	3	तीस अकर्मभूमियों में उत्सर्पिणी-अवसर्पिणी का निषेध
4	ज्ञानावरणीय आदि आठ कर्मों का तीन प्रकार का बंध		

		नवम 'चारण' उद्देशक
4	पांच भरत, पांच ऐरवत में उत्सर्पिणी-अवसर्पिणी काल का अस्तित्व	1 दो प्रकार के चारणमुनि
5	पांच महाविदेह में अवस्थित काल	2 विद्याचारण कहने का हेतु
6	भरत-ऐरवत क्षेत्रों में प्रथम और अंतिम तीर्थंकरों द्वारा पांच महाव्रत का व शेष बाईस तीर्थंकरों द्वारा चार महाव्रत का धर्मोपदेश	3 विद्याचारण की शीघ्र गति 4 विद्याचारण की तिरछी गति 5 क. विद्याचारण की ऊर्ध्व गति ख. गमनागमन के प्रतिक्रमण से आराधकता
7	जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में इस अवसर्पिणी के चौबीस तीर्थंकरों के नाम	6 जंघाचारण कहने का हेतु
8	चौबीस तीर्थंकरों के तेईस अंतर	7 जंघाचारण की शीघ्र गति
9	जिनांतरों में कालिक श्रुत का विच्छेद और अविच्छेद	8 जंघाचारण की तिरछी गति
10	अवसर्पिणी काल में पूर्वगत श्रुत 1000 वर्ष तक अविच्छिन्न	9 क. जंघाचारण की ऊर्ध्व गति ख. गमनागमन के प्रतिक्रमण से आराधकता
11	पूर्वगत श्रुत की स्थिति	दसवां 'सोपक्रम' जीव उद्देशक जीव का सोपक्रम और निरूपक्रम आयु चौबीस दण्डक के जीवों का सोपक्रम और निरूपक्रम आयु चौबीस दण्डकों में उत्पत्ति और उद्वर्तना (मरण) की आत्सोपक्रम, परोपक्रम, निरूपक्रम की विभिन्न पहलुओं से प्ररूपणा आत्म ऋद्धि से चौबीस दण्डक के जीवों का उद्वर्तन और च्यवन
12	भ. महावीर के तीर्थ की स्थिति	
13	भावी अंतिम तीर्थंकर के तीर्थ की स्थिति	
14	तीर्थ और तीर्थंकर	
15	प्रवचन और प्रवचनी	1 जीव का सोपक्रम और निरूपक्रम आयु
16	उग्र आदि कुलों के क्षत्रियों की धर्म आराधना और निर्वाण	2-6 चौबीस दण्डक के जीवों का सोपक्रम और निरूपक्रम आयु
17	चार प्रकार के देवलोक	7-14 चौबीस दण्डकों में उत्पत्ति और उद्वर्तना (मरण) की आत्सोपक्रम, परोपक्रम, निरूपक्रम की विभिन्न पहलुओं से प्ररूपणा 15-16 आत्म ऋद्धि से चौबीस दण्डक के जीवों का उद्वर्तन और च्यवन

17-18	चौबीस दण्डक के जीवों की आत्मशक्ति से उत्पत्ति	49-54	चौरासी समर्जित की अपेक्षा चौबीस दण्डक के जीवों और सिद्धों का निरूपण
19	चौबीस दण्डक के जीवों का आत्मशक्ति से उद्घर्तन		
20-21	चौबीस दण्डक के जीवों की स्व-स्व कर्मों से उत्पत्ति	55-56	चौरासी, नौ चौरासी समर्जित चौबीस दण्डक के जीवों और सिद्धों का अल्प-बहुत्व
22	चौबीस दण्डक के जीवों का आत्म प्रयोग से उत्पन्न होना		
23-27	क. चौबीस दण्डक के जीव संख्यात और असंख्यात	1	इक्कीसवाँ शतक प्रथम वर्ग वर्गों एवं उद्देशकों की संग्रहणी गाथा
28	ख. संख्यात होने के हेतु		प्रथम 'शाली' उद्देशक
29-30	सिद्ध-सिद्ध क्षेत्र में प्रवेश होने की अपेक्षा एक-एक चौबीस दण्डक में कति संचित आदि की अपेक्षा अल्प-बहुत्व	2	राजगृह नगर में भ. महावीर का पदार्पण व गौतम पृच्छा
31	कति संचित आदि की अपेक्षा सिद्धों का अल्प-बहुत्व	3	शाल्यादि में मूल रूप में उत्पन्न होने वाले शाल्यादि जीवों की गति का निर्णय
32-36	चौबीस दण्डक के जीव और सिद्ध षट्क समर्जितादि	4	शाल्यादि में उत्पन्न होने वाले जीवों का परिमाण
		5	शाल्यादि के जीवों की अवगाहना
		6-7	शाल्यादि के जीवों के ज्ञानावरणीय आदि कर्म वेदन, उदय, उदीरणा
37-42	षट्क समर्जित आदि की अपेक्षा चौबीस दण्डक के जीवों और सिद्धों का अल्प-बहुत्व	8-9	शाल्यादि के जीवों की लेश्या, दृष्टि-यावत्-इन्द्रिय की प्ररूपणा
43-47	द्वादश समर्जित की अपेक्षा चौबीस दण्डक के जीवों और सिद्धों का निरूपण	10	शाल्यादि के मूल जीव की स्थिति
48	द्वादश समर्जित चौबीस दण्डकों और सिद्धों का अल्प-बहुत्व	11-15	शाल्यादि के जीव पृथ्वीकाय में उत्पन्न होते रहने का जघन्य-उत्कृष्ट काल

16	प्राणी मात्र का शाल्यादि में उत्पन्न होना	प्रथम वर्ग के समान
	द्वितीय कंद उद्देशक प्रथम उद्देशक के अनुसार	पंचम वर्ग
	तृतीय स्कंध उद्देशक प्रथम उद्देशक के अनुसार	इक्षु वर्ग के दस उद्देशक
	चतुर्थ त्वचा उद्देशक प्रथम उद्देशक के अनुसार	प्रथम वर्ग के समान
	पंचम साल उद्देशक प्रथम उद्देशक के अनुसार	षष्ठ वर्ग
	षष्ठ प्रवाल उद्देशक प्रथम उद्देशक के अनुसार	सेडिय वर्ग के दस उद्देशक
	सप्तम पत्र उद्देशक प्रथम उद्देशक के अनुसार	प्रथम वर्ग के समान
	अष्टम पुष्प उद्देशक प्रथम उद्देशक के अनुसार	सप्तम वर्ग
	नवम फल उद्देशक प्रथम उद्देशक के अनुसार	अभ्ररुह वर्ग के दस उद्देशक
	दशम बीज उद्देशक प्रथम उद्देशक के अनुसार	प्रथम वर्ग के समान
	द्वितीय कल वर्ग	अष्टम वर्ग
1	मूल, कंद आदि दस उद्देशक	तुलसी वर्ग के दस उद्देशक
	प्रथम वर्ग के समान	प्रथम वर्ग के समान
	तृतीय अलसी वर्ग	बाईसवाँ शतक
1	अलसी वर्ग के दस उद्देशक	बाईसवें शतक के छ वर्गों के नाम व आठ उद्देशकों की संग्रहणी गाथा
	प्रथम वर्ग के समान	प्रथम ताड़ वर्ग
	चतुर्थ वर्ग	राजगृह नगर में भ. महावीर का पदार्पण व गौतम पृच्छा
1	वंश वर्ग के दस उद्देशक	क. ताड़ वर्ग के दस उद्देशक उन्नीसवें शतक के

२७६		५ भगवती सूत्र विषय सूची	भाग. श.२२, वर्ग १-६, श.२३, वर्ग १-५, श.२४, उ.१
प्रथम वर्ग के समान		३	राजगृह नगर में भ. महावीर का पदार्पण व गौतम पृच्छा
ख. प्रथम पाँच वर्गों में विशेषता			
द्वितीय निंब वर्ग			प्रथम आलू वर्ग
१	एकास्थितक निंब वर्ग के दस उद्देशक	४	आलू वर्ग के दस उद्देशक
प्रथम ताड़ वर्ग के समान			इक्कीसवें शतक के वंश वर्ग के समान
तृतीय अगस्तिक वर्ग			द्वितीय लोही वर्ग
१	अगस्तिक (बहुबीजक) वर्ग के दस उद्देशक	१	लोही वर्ग के दस उद्देशक
प्रथम ताड़ वर्ग के समान			ताड़ वर्ग के समान
चतुर्थ बेंगन वर्ग			तृतीय आय वर्ग
१	(गुच्छ) बेंगन वर्ग के दस उद्देशक	१	आय वर्ग के दस उद्देशक
इक्कीसवें शतक के चतुर्थ वंश वर्ग के समान			प्रथम आलू वर्ग के समान
पंचम सिरियक वर्ग			चतुर्थ पाठा वर्ग
१	सिरियक गुल्म वर्ग के दस उद्देशक	१	पाठा वर्ग के दस उद्देशक
प्रथम ताड़ वर्ग के समान			प्रथम आलू वर्ग के समान
षष्ठ वल्ली वर्ग			पंचम माषपर्णी वर्ग
१	(वल्ली) पूषफलिका वर्ग के दस उद्देशक	१	माषपर्णी वर्ग के दस उद्देशक
प्रथम ताड़ वर्ग के समान			प्रथम आलू वर्ग के समान
तेईसवाँ शतक			चौबीसवाँ शतक
१	तेईसवें शतक का मंगलाचरण	१	चौबीस उद्देशकों की द्वारा गाथाएं
२	पाँच वर्गों के पचास उद्देशकों की संग्रहणी गाथा		प्रथम नैरयिक उद्देशक

2	राजगृह नगर में भ. महावीर का पदार्पण व गौतम पृच्छा	106-110	वर्षायुष्क मनुष्य में उपपातादि बीस द्वारों की प्ररूपणा शर्कराप्रभा में उत्पन्न होने वाले पर्याप्त संख्येय वर्षायुष्क संज्ञी मनुष्य में उपपात आदि बीस द्वारों की प्ररूपणा
3	(1-2) तिर्यचों और मनुष्यों का नैरयिकों में उपपात		बालुकाप्रभा से तमःप्रभा नरक में उत्पन्न होने वाले
4	(3-3) पंचेन्द्रिय तिर्यचों का नरकों में उपपात		पर्याप्त संज्ञी संख्येय वर्षायुष्क मनुष्य में उपपात
5-50	रत्नप्रभा में उत्पन्न होने वाले पर्याप्त असंज्ञी तिर्यच पंचेन्द्रियों के विषय में उपपात आदि बीस द्वारों की प्ररूपणा	111	परिमाणादि बीस द्वारों की प्ररूपणा
51-76	रत्नप्रभा में उत्पन्न होने वाले पर्याप्त संज्ञी तिर्यच पंचेन्द्रियों के विषय में उपपात परिमाणादि बीस द्वारों का प्ररूपण	112-117	तमस्तमःप्रभा में उत्पन्न होने वाले पर्याप्त संख्येय वर्षायुष्क संज्ञी मनुष्य में उपपात परिमाणादि बीस द्वारों का प्ररूपण
77-80	शर्कराप्रभा से तमःप्रभा नरक तक में उत्पन्न होने वाले पर्याप्त संख्येय वर्षायुष्क संज्ञी पंचेन्द्रियों के विषय में उपपात परिमाणादि बीस द्वारों का प्ररूपण		द्वितीय 'असुरकुमार' उद्देशक
81-91	तमःप्रभा में उत्पन्न होने वाले पर्याप्त संज्ञी पंचेन्द्रिय संख्येय वर्षायुष्क तिर्यचों के उपपात परिमाणादि बीस द्वारों का प्ररूपण	1	राजगृह नगर में भ. महावीर का पदार्पण व गौतम पृच्छा
92-95	पर्याप्त संख्येय वर्षायुष्क संज्ञी मनुष्यों की समुच्चय रूप से सातों नरकों में उपपात आदि बीस द्वारों की प्ररूपणा	2	गति की अपेक्षा से असुरकुमारों के उपपात की प्ररूपणा
96-105	रत्नप्रभा नरक में उत्पन्न होने वाले पर्याप्त संख्येय	3-4	असुरकुमारों में उत्पन्न होने वाले पर्याप्त असंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यचयोनिक जीवों की उपपात परिमाणादि बीस द्वारों की प्ररूपणा
		5	संख्येय वर्षायुष्क-असंख्येय वर्षायुष्क संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यचयोनिक जीवों की असुरकुमारों में उपपात आदि

	की प्ररूपणा	पंचेन्द्रिय तिर्यचयोनिक में उपपात परिमाणादि बीस
6-16	असुरकुमारों में उत्पन्न होने वाले असंख्येय वर्षायुष्क संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यचयोनिक के उपपात परिमाणादि बीस द्वारों का प्ररूपण	द्वारों की प्ररूपणा
17-18	असुरकुमारों में उत्पन्न होने वाले संख्येय वर्षायुष्क संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यचयोनिक जीवों में उपपातादि बीस द्वारों की प्ररूपणा	संख्येय वर्षायुष्क-असंख्येय वर्षायुष्क संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यचयोनिकों की नागकुमारों में उत्पत्ति की प्ररूपणा
19-20	संख्येय वर्षायुष्क-असंख्येय वर्षायुष्क संज्ञी मनुष्यों की असुरकुमारों में उत्पत्ति का निरूपण	नागकुमारों में उत्पन्न होने वाले पर्याप्त संख्येय वर्षायुष्क संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यचयोनिक में उपपातादि बीस द्वारों का प्ररूपण
21-24	असुरकुमारों में उत्पन्न होने वाले असंख्येय वर्षायुष्क संज्ञी मनुष्यों में उपपात परिमाणादि बीस द्वारों का प्ररूपण	नागकुमारों में उत्पन्न होने वाले असंख्यात वर्षायुष्क संज्ञी मनुष्यों में उपपात परिमाणादि बीस द्वारों का प्ररूपण
25-27	असुरकुमारों में उत्पन्न होने वाले पर्याप्त असंख्येय वर्षायुष्क संज्ञी मनुष्यों में उपपात परिमाणादि बीस द्वारों का प्ररूपण	नागकुमारों में उत्पन्न होने वाले पर्याप्त संख्येय वर्षायुष्क संज्ञी मनुष्यों में उपपातादि की प्ररूपणा
1	तृतीय 'नागकुमार' उद्देशक राजगृह नगर में भ. महावीर का पदार्पण व गौतम पृच्छा	चतुर्थ से ग्यारहवें पर्यंत 'सुवर्णकुमारादि' उद्देशक सुवर्णकुमार यावत् स्तनितकुमार में तिर्यचों और मनुष्यों के उपपातादि का प्ररूपण
2	गति की अपेक्षा नागकुमारों की उत्पत्ति का प्ररूपण	बारहवाँ 'पृथ्वीकाय' उद्देशक
3	नागकुमारों में उत्पन्न होने वाले पर्याप्त असंज्ञी	गति की अपेक्षा पृथ्वीकायिकों की उत्पत्ति का प्ररूपण

2-12	पृथ्वीकायिकों में उत्पन्न होने वाले पृथ्वीकायिक संबंधी उत्पत्ति परिमाणादि बीस द्वारों की प्ररूपणा	31-33	प्ररूपण पृथ्वीकायिकों में उत्पन्न होने वाले संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यचों में उपपात परिमाणादि बीस द्वारों का प्ररूपण
13-14	पृथ्वीकायिकों में उत्पन्न होने वाले अप्कायिकों में उपपात परिमाणादि बीस द्वारों की प्ररूपणा	34-39	पृथ्वीकायिकों में उत्पन्न होने वाले असंज्ञी-संज्ञी संख्येय वर्षायुष्क पर्याप्तक-अपर्याप्तक मनुष्यों में उपपातादि बीस द्वारों की प्ररूपणा
15	पृथ्वीकायिकों में उत्पन्न होने वाले तेजस्कायिकों में उपपात परिमाणादि बीस द्वारों की प्ररूपणा	40	देवों से आकर पृथ्वीकायिकों में उत्पाद निरूपण
16	पृथ्वीकायिकों में उत्पन्न होने वाले वायुकायिकों में उपपात परिमाणादि बीस द्वारों की प्ररूपणा	41	भवनवासी देवों की अपेक्षा पृथ्वीकायिकों में उत्पत्ति निरूपण
17	पृथ्वीकायिकों में उत्पन्न होने वाले वनस्पतिकायिकों में उपपात परिमाणादि बीस द्वारों की प्ररूपणा	42-46	पृथ्वीकायिकों में उत्पन्न होने वाले असुरकुमारों में उत्पाद परिमाणादि बीस द्वारों का प्ररूपण
18-24	पृथ्वीकायिकों में उत्पन्न होने वाले द्वीन्द्रिय जीवों में उपपातादि बीस द्वारों का प्ररूपण	47	पृथ्वीकायिकों में उत्पन्न होने वाले नागकुमार से स्तनितकुमार पर्यंत के भवनवासी देवों में उत्पत्ति परिमाणादि बीस द्वारों का प्ररूपण
25	पृथ्वीकायिकों में उत्पन्न होने वाले त्रीन्द्रिय जीवों में उपपात परिमाणादि बीस द्वारों का प्ररूपण	48-49	पृथ्वीकायिकों में उत्पन्न होने वाले वाणव्यंतर देवों में उत्पाद परिमाणादि बीस द्वारों का प्ररूपण
26-27	पृथ्वीकायिकों में उत्पन्न होने वाले चतुरिन्द्रिय जीवों में उपपात परिमाणादि बीस द्वारों का प्ररूपण	50-51	पृथ्वीकायिकों में उत्पन्न होने वाले ज्योतिष्क देवों में पंचेन्द्रिय तिर्यचयोनिक की अपेक्षा पृथ्वी-कायिक उत्पत्ति निरूपण
28	पृथ्वीकायिकों में उत्पन्न होने वाले असंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यचयोनिक के उपपात परिमाणादि बीस द्वारों का	52-55	वैमानिक देवों की अपेक्षा पृथ्वीकायिक में उत्पत्ति निरूपण

	तेरहवाँ 'अष्काय' उद्देशक	बीसवाँ 'पंचेन्द्रियतिर्यचयोनिक' उद्देशक
1	तेरहवें उद्देशक का मध्य मंगलाचरण	नरक पृथ्वियों की अपेक्षा पंचेन्द्रियतिर्यचों में उत्पत्ति
2	अष्कायिकों में पृथ्वीकायिकों के समान उपपात आदि प्ररूपण	आदि प्ररूपण
		पंचेन्द्रिय तिर्यचों में उत्पन्न होने वाले सात नरकों के
	चौदहवाँ 'तेउकाय' उद्देशक	नैयिकों के उपपात-परिमाणादि बीस द्वारों की प्ररूपणा
1	तेजस्कायिक में पृथ्वीकाय के समान तिर्यचों और मनुष्यों का उपपात आदि निरूपण	पंचेन्द्रिय तिर्यचों में उत्पन्न होने वाले एकेन्द्रिय-विकेलेन्द्रियों के उपपात-परिमाणादि बीस द्वारों की प्ररूपणा
	पन्द्रहवाँ 'वायुकाय' उद्देशक	
1	वायुकायिकों में तिर्यचों और मनुष्यों का उपपात पृथ्वीकाय के समान	पंचेन्द्रिय तिर्यचों में उत्पन्न होने वाले असंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यचों के उपपात-परिमाणादि बीस द्वारों की प्ररूपणा
	सोलहवाँ 'वनस्पतिकाय' उद्देशक	
1	वनस्पतिकायकों में पृथ्वीकाय के समान उपपात आदि प्ररूपण	पंचेन्द्रिय तिर्यचों में उत्पन्न होने वाले संज्ञी पंचेन्द्रिय के उत्पाद-परिमाणादि बीस द्वारों की प्ररूपणा
	सत्रहवाँ 'बेइन्द्रिय' उद्देशक	मनुष्यों की अपेक्षा पंचेन्द्रियतिर्यच योनिक में उत्पत्ति निरूपण
1	बेइन्द्रियों में पृथ्वीकाय के समान उपपात परिमाणादि बीस द्वारों की प्ररूपणा	पंचेन्द्रिय तिर्यचों में उत्पन्न होने वाले असंज्ञी मनुष्यों में उत्पाद आदि बीस द्वारों की प्ररूपणा
	अठारवाँ 'तेइन्द्रिय' उद्देशक	
1	तेइन्द्रियों में पृथ्वीकाय के समान उपपातादि प्ररूपण	उत्पाद-परिमाणादि बीस द्वारों की प्ररूपणा
	उन्नीसवाँ 'चतुर्गिन्द्रिय' उद्देशक	
1	चतुर्गिन्द्रियों में पृथ्वीकाय के समान उपपातादि प्ररूपण	देवों से पंचेन्द्रिय तिर्यचों में उत्पत्ति का निरूपण
		पंचेन्द्रिय तिर्यचों में उत्पन्न होने वाले भवनवासी देवों के उत्पाद-परिमाणादि बीस द्वारों की प्ररूपणा

56-57	पंचेन्द्रिय तिर्यचों में उत्पन्न होने वाले वाणव्यंतर देवों के उत्पाद-परिणामादि बीस द्वारा की प्ररूपणा		प्रकार के देवों के उत्पाद-परिणामादि बीस द्वारा की प्ररूपणा
58-60	पंचेन्द्रिय तिर्यचों में उत्पन्न होने वाले ज्योतिष्क देवों के उपपात-परिणामादि बीस द्वारा की प्ररूपणा	1	बाईसवाँ 'वाणव्यंतर' उद्देशक
61-62	वैमानिक देवों की पंचेन्द्रिय तिर्यचों में उत्पत्ति का निरूपण	2-7	वाणव्यंतरों में उत्पन्न होने वाले असंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यचों में उपपात आदि का प्ररूपण
63-65	पंचेन्द्रिय तिर्यचों में उत्पन्न होने वाले सौधर्म से सहस्रार देव पर्यंत के उपपात-परिणामादि बीस द्वारा की प्ररूपणा	8-9	संख्येय वर्षायुष्क वाणव्यंतर देवों में उत्पन्न होने वाले मनुष्यों के उत्पाद परिणामादि बीस द्वारा की प्ररूपणा
1	इक्कीसवाँ 'मनुष्य' उद्देशक		असंख्येय वर्षायुष्क वाणव्यंतर देवों में उत्पन्न होने वाले मनुष्यों के उत्पाद परिणामादि बीस द्वारा की प्ररूपणा
2-4	गति की अपेक्षा मनुष्यों के उपपात का निरूपण मनुष्यों में उत्पन्न होने वाले रत्नप्रभा से तमःप्रभा पर्यंत के नैरयिकों में उत्पाद-परिणामादि बीस द्वारा की प्ररूपणा	1-2	तेईसवाँ 'ज्योतिष्क' उद्देशक
5-12	मनुष्यों में उत्पन्न होने वाले अग्निकाय-वायुकाय के अतिरिक्त एकेन्द्रिय-विकलेन्द्रिय पंचेन्द्रिय तिर्यच मनुष्यों के उत्पाद-परिणामादि बीस द्वारा की प्ररूपणा	3-8	गति की अपेक्षा मनुष्यों के उपपात का निरूपण ज्योतिष्क देवों में उत्पन्न होने वाले असंख्येय वर्षायुष्क संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यचों के उपपातादि बीस द्वारा की प्ररूपणा
13	देवों की अपेक्षा मनुष्यों में उत्पत्ति की प्ररूपणा	9	ज्योतिष्क देवों में उत्पन्न होने वाले संख्येय वर्षायुष्क संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यचों के उपपातादि बीस द्वारा की प्ररूपणा
14-27	मनुष्यों में उत्पन्न होने वाले भवनवासी आदि चारों		

10-12	ज्योतिष्क देवों में उत्पन्न होने वाले मनुष्यों के उपपातादि बीस द्वारों की प्ररूपणा चौबीसवाँ 'वैमानिक' उद्देशक	4 5 6-7	चौदह प्रकार के संसारी जीव जघन्य-उत्कृष्ट की अपेक्षा संसारी जीवों के योगों का अल्प-बहुत्व चौबीस दण्डक में एक समय में उत्पन्न दो जीवों के योगों का अल्प-बहुत्व पन्द्रह प्रकार के योग जघन्य-उत्कृष्ट की अपेक्षा योगों का अल्प-बहुत्व
1	गति की अपेक्षा सौधर्म देवों में उपपात का निरूपण	6-7	
2-8	सौधर्म देवों में उत्पन्न होने वाले असंख्येय-संख्येय वर्षायुष्क संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यचों के उपपातादि बीस द्वारों की प्ररूपणा	8 9	
9-11	सौधर्म देवों में उत्पन्न होने वाले असंख्येय- संख्येय वर्षायुष्क संज्ञी मनुष्यों के उपपातादि बीस द्वारों की प्ररूपणा	1 2 3	द्वितीय 'द्रव्य' उद्देशक दो प्रकार के द्रव्य दो प्रकार के अजीव द्रव्य क. जीव द्रव्य की संख्या ख. जीव द्रव्य के अनंत होने के कारण जीव द्वारा अजीव द्रव्यों का परिभोग चौबीस दण्डक में अजीव द्रव्यों का परिभोग असंख्य प्रदेशात्मक लोकाकाश में अनंत द्रव्यों की स्थिति
12-20	ईशान से सहस्रार पर्यंत में उत्पन्न होने वाले तिर्यचों और मनुष्यों के उपपातादि बीस द्वारों की प्ररूपणा	4 5-6 7	
21-29	आनत से सर्वार्थसिद्ध पर्यंत के देवों में उत्पन्न होने वाले मनुष्यों के उपपातादि बीस द्वारों की प्ररूपणा पच्चीसवाँ शतक	7 8-10	
1	पच्चीसवें शतक के बारह उद्देशकों की संग्रहणी गाथा	8-10	लोक के एक आकाश प्रदेश में पुद्गलों के चय- छेद-उपचय-अपचय का निरूपण
2	प्रथम 'लेश्या' उद्देशक	11	औदारिक शरीर रूप में स्थित-अस्थित द्रव्यों का ग्रहण
3	गौतम स्वामी द्वारा राजगृह में भ. महावीर से पृच्छा छह प्रकार की लेश्या		

12	द्रव्य-क्षेत्र-काल और भाव से द्रव्य का ग्रहण	22-26	यव मध्य क्षेत्र परिमंडल-यावत्-आयत संस्थान के अनंत द्रव्य
13-14	वैक्रिय शरीर व आहारक शरीर रूप में स्थित-अस्थित द्रव्यों का ग्रहण	27	पाँच संस्थानों का परस्पर सम्बन्ध
15-16	तैजस शरीर व कर्मण शरीर रूप में स्थित-अस्थित द्रव्यों का ग्रहण	28-36	रत्नप्रभा-यावत्-ईषत्प्राग्भारा में एक यवाकृति निष्पादन संस्थान में अन्य संस्थानों के अनंत द्रव्य
17	द्रव्य-क्षेत्र-काल और भाव द्रव्यों का ग्रहण	37	वृत्त संस्थान के कितने प्रदेशों का कितने आकाश प्रदेशों में अवगाहन
18	छ दिशाओं से पुद्गलों का ग्रहण		
19-21	चौबीस दण्डकों में पाँच इंद्रियों के रूप में यथायोग्य द्रव्यों का ग्रहण	38	त्र्यस्र संस्थान के कितने प्रदेशों का कितने आकाश प्रदेशों में अवगाहन
22-24	तीन योगों के रूप में यथायोग्य द्रव्यों का ग्रहण	39	चतुरस्र संस्थान के कितने प्रदेशों का कितने आकाश प्रदेशों में अवगाहन
25-26	जीव और चौबीस दण्डकों में श्वासोच्छ्वास के रूप में द्रव्यों का ग्रहण	40	आयत संस्थान के कितने प्रदेशों का कितने प्रदेशों में अवगाहन
1	तृतीय 'संस्थान' उद्देशक	41	परिमंडल संस्थान के कितने प्रदेशों में कितने प्रदेशों का अवगाहन
2-5	छ प्रकार के संस्थान		
6	परिमंडल आदि संस्थानों के अनंत द्रव्य	42-50	परिमंडल आदि संस्थानों की कृतयुग्म रूपता
7	द्रव्यार्थादि रूप से संस्थानों का अल्प-बहुत्व	51-60	परिमंडल-यावत्-आयत संस्थानों के प्रदेश-कृतयुग्म
8-10	पाँच प्रकार के संस्थान		प्रदेशावाढ-यावत्-कल्योज रूप की प्ररूपणा
11-21	परिमंडल-यावत्-आयत संस्थान के अनंत द्रव्य	61-64	परिमण्डलादि संस्थानों में कृतयुग्मादि समय स्थिति की प्ररूपणा
	रत्नप्रभा-यावत्-ईषत्प्राग्भारा में संस्थान के अनंत द्रव्य		

65-67	परिमण्डलादि संस्थानों में वर्ण-गंध-रस-स्पर्श की अपेक्षा कृतयुग्मादि की प्ररूपणा	115	द्वादश गणिपिटकों का निरूपण
68-71	आकाश-प्रदेश की अनंत श्रेणियाँ	116	आचारांगादि अंगों की प्ररूपणा
72-75	लोकाकाश की श्रेणियाँ	117	क. पाँच नरक -यावत्- सिद्ध गति का अल्प- बहुत्व
76-79	अलोकाकाश की श्रेणियाँ		ख. आठ गति की अपेक्षा अल्प-बहुत्व
80	आकाश की श्रेणियों के प्रदेश	118	सेन्द्रिय-यावत्-अनिन्द्रिय जीवों का अल्प-बहुत्व
81-83	लोकाकाश की श्रेणियों के प्रदेश	119	सकार्यिक जीवों का अल्प-बहुत्व
84-87	अलोकाकाश की श्रेणियों के प्रदेश	120	जीव और पुद्गलों के सर्वपर्यायों का अल्प-बहुत्व
88-89	श्रेणियों के सादि पर्यवसित आदि भागों	121	आयुक्रम के बंधक और अबंधक जीवों का अल्प- बहुत्व
90-91	लोकाकाश की श्रेणियाँ और सादिसपर्यवसित आदि भागों		
92-94	अलोकाकाश की श्रेणियाँ और सादिसपर्यवसित आदि भागों	1	चतुर्थ 'युग्म' उद्देशक
95-107	कृतयुग्मादि रूप आकाश की श्रेणियाँ	2-7	चार प्रकार के युग्म
108	सात प्रकार की श्रेणियाँ	8	चौबीस दण्डक और सिद्धों में कृतयुग्मादि
109	परमाणु पुद्गलों की गति	9-14	छह प्रकार के द्रव्य
110-111	द्विप्रदेशिक स्कंध-यावत्-अनंत प्रदेशिक स्कंध की गति	15-16	छह प्रकार के द्रव्यों का कृतयुग्मादि रूप
112-113	चौबीस दण्डक के जीवों की श्रेणी के अनुसार गति	17	(6 प्रकार के) द्रव्यों के प्रदेशों का कृतयुग्मादि रूप
114	नरकावास-यावत्-विमानावास की आवास संख्या	18-23	6 प्रकार के द्रव्यों का अल्प-बहुत्व
		24-27	6 प्रकार के द्रव्यों का अवगाढ-अनवगाढ प्ररूपण
			रत्नप्रभा-यावत्-ईषत्प्राग्भारा पृथ्वी का अवगाढ-

	अनवगाढ प्ररूपण		जीवों के कृष्ण आदि वर्ण-पर्याय कृतयुग्मादि रूप हैं
28	एक जीव द्रव्य से कल्योज रूप हैं		
29-30	चौबीस दण्डक के जीव और सिद्ध (एकवचन की अपेक्षा) द्रव्य से कल्योज रूप हैं	62-68	जीव-चौबीस दण्डक तथा सिद्धों में एक या अनेक जीवों के आभिनिर्बोधिक आदि चार ज्ञान के पर्याय कृतयुग्म रूप हैं
31	जीव (बहुवचन की अपेक्षा) ओघादेश से कृतयुग्मरूप हैं, द्रव्य से कल्योज रूप हैं, विधानादेश की अपेक्षा कल्योज रूप हैं	69-74	जीव चौबीस दण्डक तथा सिद्धों में एक या अनेक जीवों के केवलज्ञान के पर्याय कृतयुग्म रूप हैं
32-33	चौबीस दण्डक के जीव तथा सिद्ध (बहुवचन की अपेक्षा) द्रव्य से कृतयुग्म रूप हैं	75-79	एक या अनेक जीवों के मतिअज्ञान-यावत्-केवलदर्शन के पर्याय कृतयुग्म रूप हैं
34-35	क. जीव व चौबीस दण्डक के प्रदेश कृतयुग्मरूप हैं	80	पाँच प्रकार के शरीर
	ख. शरीर के प्रदेश कृतयुग्मादि रूप हैं	81	क. सकम्प निष्कम्प जीव
36	सिद्ध के प्रदेश कृतयुग्मरूप हैं	82-84	ख. सकम्प और निष्कम्प होने का हेतु देश या सर्व से सकम्प प्ररूपण
37-40	जीव-चौबीस दण्डक तथा सिद्ध के प्रदेश (बहुवचन की अपेक्षा) कृतयुग्म हैं	85-86	चौबीस दण्डक के जीव सकम्प निष्कम्प प्ररूपण
41-46	एक या अनेक जीवों की अपेक्षा आकाश प्रदेश में कृतयुग्मादि	87-88	परमाणु-यावत्-अनंत प्रदेशी स्कंधों का परिमाण
		89-90	एक आकाश प्रदेश में रहे पुद्गल अनंत
47-54	जीव-चौबीस दण्डक तथा सिद्ध एक या अनेक जीवों के स्थिति काल में कृतयुग्मादि	91-92	एक समय की स्थिति वाले -यावत्- असंख्यात समय की स्थिति वाले पुद्गल अनंत
55-61	जीव-चौबीस दण्डक तथा सिद्धों में एक या अनेक	93-95	एक गुण कृष्ण-यावत्-अनंत गुण रुक्ष पुद्गल अनंत
		96-105	परमाणु पुद्गल-यावत्-अनंत प्रदेशिक स्कंधों का

	द्रव्यार्थ-प्रदेशार्थ रूप में अल्प-बहुत्व	रूप से कृतयुग्मादि राशि प्ररूपण
106-109	एक प्रदेशावगाढ पुद्गल -यावत्- असंख्यात प्रदेशावगाढ पुद्गल का द्रव्यार्थ व प्रदेशार्थ रूप में अल्प-बहुत्व	परमाणु-यावत्-अनंत प्रदेशिक स्कंधों का कृतयुग्म प्रदेशावगाढ प्ररूपण
110	एक समय की स्थिति वाले पुद्गलों का द्रव्यार्थ रूप में अल्प-बहुत्व	परमाणु-यावत्-अनंत प्रदेशिक स्कंधों की कृतयुग्म समय आदि की स्थिति प्ररूपण
111-112	एक गुण काले आदि वर्ण व गंध-रस-स्पर्श वाले पुद्गलों की प्ररूपणा	परमाणु पुद्गल-यावत्-अनंत प्रदेशिक स्कंधों के पर्यायों का कृतयुग्म आदि प्ररूपण
113-117	एक गुण आदि कर्कश स्पर्श वाले पुद्गलों की द्रव्यार्थ-प्रदेशार्थ से विशेषाधिकता आदि का प्ररूपण	अनर्ध परमाणु पुद्गल प्ररूपण
118	परमाणु पुद्गल -यावत्- अनंत प्रदेशी में द्रव्यार्थ रूप से या प्रदेशार्थ रूप से विशेषाधिकता आदि का प्ररूपण	द्विप्रदेशिक स्कंध-यावत्-अनंत प्रदेशिक स्कंध सार्ध-अनर्ध प्ररूपण
119-120	संख्येय-असंख्येय प्रदेशी पुद्गलों की अवगाहना एवं स्थिति विषयक अल्प-बहुत्व	परमाणु-यावत्-अनंत प्रदेशिक स्कंध सकम्प निष्कम्प प्ररूपण
121-125	संख्येय-असंख्येय-अननतगुण वर्ण-गंधादि वाले पुद्गलों का द्रव्यार्थ रूप से अल्प-बहुत्व	बहुवचन की अपेक्षा-सकम्प-निष्कम्प प्ररूपण
126-141	परमाणु -यावत्- अनंत प्रदेशी स्कंधों की द्रव्यार्थ रूप से कृतयुग्मादि राशि प्ररूपण	परमाणु पुद्गलों का सकम्प-निष्कम्प काल प्ररूपण
142-153	परमाणु -यावत्- अनंत प्रदेशी स्कंधों की प्रदेशार्थ	परमाणु-यावत्-अनंत प्रदेशिक स्कंधों के कंपन का अंतर प्ररूपण
		सकम्प-निष्कम्प परमाणु-यावत्-अनंत प्रदेशिक स्कंधों का अल्प-बहुत्व
		परमाणु -यावत्- अनंत प्रदेशी सकम्प-निष्कम्प स्कंधों का द्रव्य-प्रदेश की अपेक्षा अल्प-बहुत्व

211-216	परमाणु-यावत्-अनंत प्रदेशिक स्कंधों का एक देशीय कंपन अथवा सर्वदेशीय कंपन	8	आवलिकाओं के समय
217-228	परमाणु-यावत्-अनंत प्रदेशिक स्कंधों के एक देशीय या सर्वदेशीय कंपन का अथवा निष्कंपन का काल	9	श्वासोच्छ्वासों के समय
229-240	परमाणु-यावत्-अनंत प्रदेशिक स्कंधों के एक देशीय सकम्प-निष्कम्प का अंतर	10-11	स्तोत्रों -यावत्- उत्सर्पिणियों के समय
241-244	एक देशीय या सर्वदेशीय सकम्प-निष्कम्प परमाणु-यावत्-अनंत प्रदेशिक स्कंधों का अल्प-बहुत्व	12	पुद्गल परिवर्तों के समय
245	परमाणु-यावत्-अनंत प्रदेशिक स्कंधों का द्रव्य- प्रदेश की अपेक्षा अल्प-बहुत्व	13	एक श्वासोच्छ्वास की आवलिकायें
246-249	धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय और जीवास्तिकाय के मध्यप्रदेशों की संख्या का निरूपण	14-15	एक स्तोक-यावत्-शीर्ष प्रहेलिका की आवलिकायें
250	जीवास्तिकाय के मध्यप्रदेशों की अवगाहना की प्ररूपणा	16	एक पल्योपम की आवलिकायें
	पंचम 'पर्यव' उद्देशक	17-19	एक सागरोपम-यावत्-एक उत्सर्पिणी की आवलिकायें
1	दो प्रकार के पर्यव	20	एक पुद्गल परिवर्त-यावत्-सर्वकाल की आवलिकायें
2	एक आवलिका का समय	21-22	अनेक श्वासोच्छ्वासों की-यावत्-अनेक शीर्ष प्रहेलिकाओं की आवलिकायें
3	एक श्वासोच्छ्वास का समय	23-24	अनेक पल्योपमों की-यावत्-अनेक उत्सर्पिणियों की आवलिकायें
4-5	एक स्तोक-यावत्-उत्सर्पिणी का समय	25	अनेक पुद्गल-परिवर्तों की आवलिकायें
6-7	एक पुद्गल परिवर्त का समय	26-27	एक स्तोक-यावत्-एक शीर्ष प्रहेलिका के श्वासोच्छ्वास
		28	एक सागरोपम के पल्योपम
		29	एक अवसर्पिणी या उत्सर्पिणी के पल्योपम

	एक पुद्गल परिवर्त के पल्योपम	षष्ठ 'निर्ग्रथ' उद्देशक
30	एक पुद्गल परिवर्त के पल्योपम	निर्ग्रथों के छत्तीस द्वारों की संग्रहणी गाथाएं
31	सर्वकाल के पल्योपम-यावत्-अनेक अवसर्पिणियों के पल्योपम	1- प्रथम प्रज्ञापना द्वार
32-33	अनेक सागरोपमों -यावत्- अनेक उत्सर्पिणी-अवसर्पिणियों के पल्योपम	राजगृह नगर में भ. महावीर का पदार्पण और गौतम पृच्छा
34	अनेक पुद्गल परिवर्तों के पल्योपम	पाँच प्रकार के निर्ग्रथ
35	एक अवसर्पिणी के सागरोपम	पाँच प्रकार के पुलाक
36-37	एक पुद्गल परिवर्त की -यावत्- सर्वकाल की उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी	पाँच प्रकार के बकुश
38	अनेक पुद्गल परिवर्तों की उत्सर्पिणियाँ और अवसर्पिणियाँ	दो प्रकार के कुशील
39-41	अतीत-अनागत और सर्वकाल के पुद्गल परिवर्त की अनंतता	पाँच प्रकार के प्रतिसेवना कुशील
42	अनागत और अतीत का अंतर	पाँच प्रकार के कषाय कुशील
43	अतीत और सर्वकाल का अंतर	पाँच प्रकार के निर्ग्रथ
44	सर्वकाल और भविष्य काल का अंतर	पाँच प्रकार के स्नातक
45	दो प्रकार के निगोद	2- द्वितीय वेद द्वार
46	प्रकारान्तर से दो प्रकार के निगोद	पाँच प्रकार के निर्ग्रथों के स्त्री वेदादि
47	छ प्रकार का नाम (छ प्रकार के भेद)	3- तृतीय राग द्वार
48	दो प्रकार का औदयिक नाम	पाँच निर्ग्रथ-सराग-वीतराग
		4- चतुर्थ कल्प द्वार
		पाँच निर्ग्रथों में स्थित कल्पादि व जिनकल्पादि
		5- पंचम चारित्र द्वार
		पाँच निर्ग्रथों के चारित्र

35-40	6- षष्ठ प्रतिसेवना द्वार पाँच निर्ग्रंथों में मूल गुण-उत्तर गुण प्रतिसेवना अप्रतिसेवना	89-92 93	14- चौदहवाँ संयम द्वार पाँच निर्ग्रंथों के संयम स्थान पाँच निर्ग्रंथों का अल्प-बहुत्व
41-46	7- सप्तम ज्ञान द्वार पाँच निर्ग्रंथों में ज्ञान	94-95	15- पन्द्रहवाँ सनिकर्ष द्वार पाँच निर्ग्रंथों में सनिकर्ष-अनंत चारित्र पर्याय
47-52	पाँच निर्ग्रंथों का श्रुत-अध्ययन	96-115	पाँच प्रकार के निर्ग्रंथों का चारित्र पर्यायों से हीनत्वादि
53-57	8- अष्टम तीर्थ द्वार पाँच निर्ग्रंथों में तीर्थ-अतीर्थ	116	पाँच निर्ग्रंथों के चारित्र-पर्यायों का अल्प-बहुत्व
58-59	9- नवम लिंग द्वार पंचम निर्ग्रंथों के लिंग	117-121	16- सोलहवाँ योग द्वार पाँच निर्ग्रंथों के योग
60-64	10- दशम शरीर द्वार पाँच निर्ग्रंथों के शरीर	122-123	17- सत्रहवाँ उपयोग द्वार पाँच निर्ग्रंथों में उपयोग
65-67	11- ग्यारहवाँ क्षेत्र द्वार पाँच निर्ग्रंथों में कर्म भूमि-अकर्म भूमि	124-132	18- अठारहवाँ कषाय द्वार पाँच निर्ग्रंथों में कषाय
68-72	12- बारहवाँ काल द्वार पाँच निर्ग्रंथों में अवसर्पिणीकाल-उत्सर्पिणीकाल	133-142	19- उन्नीसवाँ लेश्या द्वार पाँच निर्ग्रंथों में लेश्या
73-78	13- तेरहवाँ गति द्वार पाँच निर्ग्रंथों की गति	143-150	20- बीसवाँ परिणाम द्वार पाँच निर्ग्रंथों के परिणाम
79-83	पाँच निर्ग्रंथों की पदवी		21- इक्कीसवाँ बंध द्वार पाँच निर्ग्रंथों के कर्म प्रकृतियों का बंध
84-88	पाँच निर्ग्रंथों की स्थिति	151-156	

157-160	22- बाईसवाँ वेद द्वार पाँच निर्ग्रंथों द्वारा कर्म प्रकृतियों का वेदन	215-220	पाँच निर्ग्रंथों में समुद्धात
161-166	23- तेईसवाँ उदीरणा द्वार पाँच निर्ग्रंथों द्वारा कर्म प्रकृतियों की उदीरणा	221-223	32- बत्तीसवाँ क्षेत्र द्वार पाँच निर्ग्रंथों में अवगाहना क्षेत्र
167-172	24- चौबीसवाँ उपसंपद-हानि द्वार पाँच निर्ग्रंथों द्वारा निर्ग्रंथ जीवन को स्वीकार और त्याग	224	33- तेतीसवाँ स्पर्शना द्वार पाँच निर्ग्रंथों की क्षेत्र स्पर्शना
173-177	25- पच्चीसवाँ संज्ञा द्वार पाँच निर्ग्रंथों में संज्ञा	225-228	34- चौतीसवाँ भाव द्वार पाँच निर्ग्रंथों का औपशमिकादि भाव
178-180	26- छब्बीसवाँ आहार द्वार पाँच निर्ग्रंथों में आहारक-अनाहारक	229-234	35- पैतीसवाँ परिमाण द्वार पाँच निर्ग्रंथों का एक समय का परिमाण
181-186	27- सत्ताईसवाँ भव द्वार पाँच निर्ग्रंथों के भवग्रहण	235	36- छत्तीसवाँ अल्प-बहुत्व द्वार पाँच निर्ग्रंथों में अल्प-बहुत्व
187-196	28- अठाईवाँ आकर्ष द्वार पाँच निर्ग्रंथों के आकर्ष (चास्त्रि प्राप्ति)		सप्तम 'संयत' उद्देशक 1- प्रज्ञापना द्वार
197-206	29- उनत्तीसवाँ काल द्वार पाँच निर्ग्रंथों की स्थिति	1	पाँच प्रकार के संयत
207-214	30- तीसवाँ अंतर द्वार पाँच निर्ग्रंथों का अंतर काल	2	दो प्रकार के सामायिक संयत
	31- इकतीसवाँ समुद्धात द्वार	3	दो प्रकार के छेदोपस्थापनीय संयत
		4	दो प्रकार के परिहार विशुद्ध संयत
		5	दो प्रकार के सूक्ष्म संपराय संयत
		6	दो प्रकार के यथाख्यात संयत
		7-11	पाँच प्रकार के संयतों के स्वरूप की गाथाएं

12-15	2- वेद द्वार पाँच चारित्र वालों में वेद	53-56	पाँच चारित्र वालों में कर्म भूमि-अकर्म भूमि
16-18	3- राग द्वार पाँच चारित्र वालों में सराग-वीतरागता	57-61	12- काल द्वार पाँच चारित्र वालों में अवसर्पिणी कालादि
19-25	4- कल्प द्वार पाँच चारित्र वालों में स्थित कल्प आदि	62-70 71-74	13- गति एवं स्थिति द्वार पाँच चारित्र वालों की गति पाँच चारित्र वालों की स्थिति
26-30	5- चारित्र द्वार पाँच प्रकार के संयतों में पुलाक आदि	75-78	14- संयम द्वार पाँच चारित्र वालों के संयम स्थान
31-34	6- प्रतिसेवना पाँच चारित्र वालों में प्रतिसेवना-अप्रतिसेवना	79	संयम स्थानों का अल्प-बहुत्व
35-37	7- ज्ञान द्वार पाँच चारित्र वालों में ज्ञान	80-81	15- चारित्र-पर्यव द्वार पाँच चारित्रों के पर्यव
38-42	पाँच चारित्र वालों का श्रुतज्ञान	82-93	पाँच चारित्र पर्यवों की अपेक्षा हीनाधिक की प्ररूपणा
43-45	8- तीर्थ द्वार पाँच चारित्र वाले तीर्थ में या अतीर्थ में	94-96	16- योग द्वार पाँच चारित्र वालों में योग
46-49	9- लिंग द्वार पाँच चारित्र वालों के लिंग	97-98	17- उपयोग द्वार पाँच चारित्र वालों में उपयोग
50-52	10- शरीर द्वार पाँच चारित्र वालों के शरीर	99-104	18- कषाय द्वार पाँच चारित्र वालों में कषाय
	11- क्षेत्र द्वार	105-109	19- लेश्या द्वार पाँच चारित्र वालों में लेश्या

	20- परिणाम द्वार	29- स्थिति द्वार
110-117	पाँच चारित्र वालों में परिणाम	पाँच चारित्रों की काल स्थिति
		30- अंतर द्वार
118-123	21- बन्ध द्वार	पाँच चारित्रों के अंतर
	पाँच चारित्र वालों के कर्म प्रकृतियों का बंध	
124	22- वेदन द्वार	31- समुद्घात द्वार
	पाँच चारित्र वालों के कर्म प्रकृतियों का वेदन	पाँच चारित्र वालों में समुद्घात
125-128	23- उदीरणा द्वार	32- क्षेत्र द्वार
	पाँच चारित्र वालों की कर्म प्रकृतियों की उदीरणा	पाँच चारित्र वालों का क्षेत्र
129-133	24- उपसम्पद हानि द्वार	33- स्पर्शना द्वार
	पाँच चारित्र वालों को किस-किस चारित्र का हानि-लाभ	पाँच चारित्र वालों के द्वारा लोक की क्षेत्र स्पर्शना
134-136	25- संज्ञा द्वार	34- भाव द्वार
	पाँच चारित्र वालों में संज्ञा	पाँच चारित्र वालों के औपशमिकादि भाव
137-139	26- आहारक द्वार	35- परिमाण द्वार
	पाँच चारित्र वालों में आहारक-अनाहारक	पाँच चारित्र वालों का परिमाण
140-143	27- भव द्वार	36- अल्प-बहुत्व द्वार
	पाँच चारित्र वालों के भव ग्रहण	पाँच चारित्रों का अल्प-बहुत्व
144-153	28- आकर्ष द्वार	प्रतिसेवना दोष आलोचनादि के छः द्वार
	पाँच चारित्र वालों के आकर्ष (चारित्रों की पुनः-पुनः प्राप्ति)	(1) प्रतिसेवना के दस भेद
		(2) आलोचना के दस दोष
		(3) आलोचना करने तथा सुनने योग्य साधकों

के गुण	पृच्छा
194 (4) समाचारी के दस भेद	चौबीसदंडकवर्ती जीवों की उत्पत्ति का विविध
195 (5) प्रायश्चित्त के दस भेद	पहलुओं से निरूपण
196 (6) तप के दो भेद	नौवां 'भव्य' उद्देशक
197 बाह्य तप के छः भेद	चौबीस दण्डकगत भवसिद्धिक जीवों की उत्पत्ति का निरूपण
198-202 (1) अनशन तप के भेद-प्रभेद	दसवां 'अभव्य' उद्देशक
203-207 (2) अवमौदर्य तप के भेद-प्रभेद	चौबीस दण्डकगत अभवसिद्धिक जीवों की उत्पत्ति का निरूपण
208 (3) भिक्षाचर्या के भेद	ग्यारहवां 'सम्यग्दृष्टि' उद्देशक
209 (4) रसपरित्याग के भेद	चौबीस दण्डकगत सम्यग्दृष्टि जीवों की उत्पत्ति का निरूपण
210 (5) कायक्लेश तप के भेद	बारहवां 'मिथ्यादृष्टि' उद्देशक
211-216 (6) प्रतिसंलीनता तप के भेद-प्रभेद एवं स्वरूप	चौबीस दण्डकगत मिथ्यादृष्टि जीवों की उत्पत्ति का निरूपण
217 आभ्यन्तर तप के छः भेद	छब्बीसवां 'बंधी' शतक
218 (1) प्रायश्चित्त तप के दस भेद	प्रथम 'जीवादि बंध' उद्देशक
219-234 (2) विनय तप के भेद-प्रभेद	छब्बीसवें शतक का मंगलाचरण
235 (3) वैयावृत्य तप के दस प्रकार	छब्बीसवें शतक के ग्यारह उद्देशकों में ग्यारह द्वारा
236 (4) स्वाध्याय तप के पांच प्रकार	
237-249 (5) ध्यान के प्रकार व भेद-प्रभेद	
250-255 (6) व्युत्सर्ग के भेद-प्रभेद	
अष्टम 'ओघ' उद्देशक	
1 राजगृह में भगवान् का पदार्पण व गौतम स्वामी द्वारा	

का प्ररूपण			
3	भ. महावीर स्वामी द्वारा राजगृह आगमन व गौतमस्वामी द्वारा पृच्छा	63-87	कर्म बंध पर्यंत ग्यारह स्थानों की अपेक्षा चतुर्भगी जीव व चौबीस दंडकों में आयुष्य कर्म की अपेक्षा ग्यारह स्थानों में चतुर्भगी
4	(1) त्रिकालवर्ती जीवों द्वारा पाप कर्म बंध	88	जीव व चौबीस दंडकों में नाम-गोत्र व अंतराय कर्म की अपेक्षा ग्यारह स्थानों में चतुर्भगी
5-9	(2) सलेश्य-अलेश्य जीवों की अपेक्षा पाप कर्म बंध		
10-11	(3) कृष्ण-शुक्ल पाक्षिक की अपेक्षा जीवों द्वारा पाप कर्म बंध	1-9	द्वितीय 'अनन्तरोपपन्नक' उद्देशक अनन्तरोपपन्नक चौबीस दंडकों में पाप कर्म बंध की अपेक्षा ग्यारह स्थानों की प्ररूपणा
12-14	(4) सम्यक्-मिथ्या व मिश्रदृष्टि जीवों की अपेक्षा पाप कर्म बंध	10-16	ज्ञानावरणीयादि अष्टकर्म बंध की अपेक्षा अनन्तरोपपन्नक चौबीस दंडकों में ग्यारह स्थानों की प्ररूपणा
15-17	(5) ज्ञानी जीवों की अपेक्षा पाप कर्म बंध		
18-19	(6) अज्ञानी जीवों की अपेक्षा पाप कर्म बंध		
20-21	(7) आहारादि संज्ञी की अपेक्षा पाप कर्म बंध		तृतीय 'परंपरोपपन्नक' उद्देशक
22-23	(8) सवेदक-अवेदक जीवों की अपेक्षा पाप कर्म बंध	1	परंपरोपपन्नक चौबीस दण्डक के जीवों में पापकर्मों का बंध
24-28	(9) सकषायी-अकषायी जीवों की अपेक्षा पाप कर्म बंध		
29-31	(10) सयोगी-अयोगी की अपेक्षा पाप कर्म बंध		चतुर्थ 'अनंतरावगाढ' उद्देशक
32-33	(11) साकार-अनाकारोपयुक्त जीवों की अपेक्षा पाप कर्म बंध	1	अनंतरावगाढ चौबीस दण्डक के जीवों में पाप कर्मों का बंध
34-43	चौबीस दंडकों में ग्यारह स्थानों की अपेक्षा पाप कर्म बंध की चतुर्भगी	1	पंचम 'परंपरावगाढ' उद्देशक
44-62	जीव व चौबीस दंडकों में ज्ञानावरणीय से मोहनीय		परंपरावगाढ चौबीस दण्डक के जीवों में पाप कर्मों का बंध

1	षष्ठ 'अनंतराहारक' उद्देशक अनंतराहारक चौबीस दण्डक के जीवों में पाप कर्मों का बंध	1-2	सत्तावीसवाँ करिंशु शतक एक से- ग्यारह उद्देशक जीव द्वारा तथा सलेश्य जीव द्वारा पाप कर्म करना तथा आठ कर्मों का बंध करना छब्बीसवें शतक के ग्यारह उद्देशकों के समान
1	सप्तम 'परंपराहारक' उद्देशक परंपराहारक चौबीस दण्डक के जीवों में पाप कर्मों का बंध		अठावीसवाँ 'कर्मसमर्जन' शतक
1	अष्टम 'अनंतरपर्याप्तक' उद्देशक अनंतरपर्याप्तक चौबीस दण्डक के जीवों में पाप कर्मों का बंध	1	प्रथम उद्देशक जीव ने किस गति में पाप कर्मों का उपार्जन और किस गति में पाप कर्मों का आचरण किया (आठ विकल्प)
1	नवम 'परंपरपर्याप्तक' उद्देशक परंपरपर्याप्तक चौबीस दण्डक के जीवों में पाप कर्मों का बंध	2-4	लेण्या-यावत्-उपयोग वाले जीवों द्वारा पाप कर्मों का उपार्जन व आचरण
1	दशम 'चरम' उद्देशक चौबीस दण्डक के चरम जीवों में पाप कर्मों का बंध	5-10	चौबीस दण्डक के जीवों द्वारा पाप कर्मों का व आठ कर्मों का उपार्जन तथा आचरण
1-4	ग्यारहवाँ 'अचरम' उद्देशक चौबीस दण्डक के अचरम जीवों में पाप कर्मों का बंध	1-4	द्वितीय उद्देशक अनंतरोपपन्नक जीवों द्वारा कर्मसमर्जन
5-19	चौबीस दंडक के अचरम जीवों में ज्ञानावर्णीय आदि कर्म बंध	1	तृतीय से ग्यारह उद्देशक छब्बीसवें शतक के तृतीय से ग्यारहवें उद्देशक अनुसार पाप कर्म समर्जन

उनतीसवाँ 'कर्म प्रस्थापन' शतक

प्रथम उद्देशक

- 1 क. जीव में सम-विषम काल की अपेक्षा पाप कर्मों के वेदन का प्रारंभ और अंत (चार विकल्प)
ख. प्रारंभ और अंत कहने का हेतु
2-3 लेस्या-यावत्-उपयोग वाले जीवों के वेदना का प्रारंभ और अंत
4-6 चौबीस दण्डक के जीवों में वेदना का प्रारंभ और अंत

द्वितीय उद्देशक

- 1 क. अनंतरोपपन्नक नैरयिकादि के पाप कर्म वेदन
ख. पाप कर्म वेदन एक साथ भोगने का हेतु
2-5 चौबीस दंडक में सलेश्यी -यावत्- अनाकारोपयुक्त अनंतरोपपन्नक एक साथ भोगते हैं व अंत करते हैं
6-7 अनंतरोपपन्नक आठ कर्म वेदन

तृतीय से ग्यारह उद्देशक

- 1 छब्बीसवें शतक के तृतीय से ग्यारहवें उद्देशक अनुसार कर्म प्रारंभ व अंत

तीसवाँ 'समवसरण' शतक

प्रथम उद्देशक

- 1 चार प्रकार के समवसरण
2 समस्त जीव चार समवसरण वाले हैं
3-21 लेस्या-यावत्-उपयोग वाले जीव चार समवसरण वाले हैं
22-32 चौबीस दण्डक के जीव चार समवसरण वाले हैं
33-64 क्रियावादी चार समवसरण वालों के ग्यारह स्थानों में आयु का बंध
65-93 चौबीस दंडकवर्ती क्रियावादी आदि जीवों की ग्यारह स्थानों में आयु बंध
94-125 जीव-चौबीस दंडक चार समवसरण वाले भव्य या अभव्य

द्वितीय उद्देशक

- 1-10 अनंतरोपपन्नक चौबीस दंडकवर्ती जीवों में ग्यारह स्थानों द्वारा क्रियावादादि प्ररूपण
11-16 क्रियावादादि चारों में अनंतरोपपन्नक चौबीस दंडकों की ग्यारह स्थानों द्वारा भव्याभव्यत्व प्ररूपण

तृतीय उद्देशक

- 1 परंपरोपपन्नक चौबीस दंडकवर्ती जीवों में ग्यारह स्थानों के द्वारा क्रियावादादि प्ररूपण

चतुर्थ से ग्यारह उद्देशक		पंचम उद्देशक	
1	छब्बीसवें शतक के चतुर्थ से ग्यारहवें उद्देशक अनुसार क्रियावादादि प्ररूपण	1-4	चार प्रकार के क्षुद्र युग्म भव सिद्धिक जीवों का नैरयिकों में उपपात
इकत्तीसवाँ 'उपपात' शतक		षष्ठ उद्देशक	
1	प्रथम उद्देशक राजगृह नगर में भ. महावीर पदार्पण और गौतम पृच्छा	1-2	कृष्ण लेश्या वाले चार प्रकार के क्षुद्र युग्म भवसिद्धिक जीवों का नैरयिकों में उपपात
2	क. चार प्रकार के क्षुद्र युग्म ख. क्षुद्र युग्म कहने का हेतु	1	सप्तम से अट्ठाईसवें उद्देशक नील लेश्या वाले चार प्रकार के क्षुद्र युग्म भवसिद्धिक जीवों का नैरयिकों में उपपात (सप्तम उद्देशक)
3-14	नैरयिक में चार प्रकार के क्षुद्र युग्म जीवों का उपपात	1	कापोत लेश्या वाले चार प्रकार के क्षुद्र युग्म भवसिद्धिक जीवों का नैरयिकों में उपपात (अष्टम उद्देशक)
1-9	द्वितीय उद्देशक धूमप्रभा-यावत् तमस्तम प्रभा नरक में चार प्रकार के क्षुद्र युग्म कृष्ण लेश्या वाले जीवों का उपपात	1	अभवसिद्धिक के चार उद्देशक (9-12)
1-4	तृतीय उद्देशक बालुका प्रभा-यावत्-धूमप्रभा नरक में चार प्रकार के क्षुद्र युग्म नीललेश्या वाले जीवों का उपपात	1	सम्यग्दृष्टि के चार उद्देशक (13-16)
1-4	चतुर्थ उद्देशक रत्नप्रभा-यावत्-बालुका प्रभा नरक में चार प्रकार के क्षुद्र युग्म नैरयिकों में उपपात	1	मिथ्यादृष्टि के चार उद्देशक (17-20)
1-4		1	कृष्ण पक्ष के चार उद्देशक (21-24)
		1	शुक्ल पक्ष के चार उद्देशक (25-28)
		बत्तीसवाँ 'उद्वर्तना' शतक	
1-4		1	प्रथम उद्देशक चार प्रकार के क्षुद्र युग्म नैरयिकों का उद्वर्तन तथा उत्पत्ति

2	एक समय में नैरयिकों के उद्वर्तनों की संख्या	9-11	अपर्याप्त-पर्याप्त पृथ्वीकाय-यावत्-वनस्पतिकाय के
3	मण्डूकप्लुति के उद्वर्तन का वर्णन (पच्चीसवें शतक के समान)	12-14	आठ कर्म प्रकृतियों का बंध पृथ्वीकाय-यावत्-वनस्पतिकाय के कर्म प्रकृतियों का बंध
4-6	रत्नप्रभा आदि पृथ्वी के क्षुद्रयुग्म राशि प्रमाण नैरयिकों का उद्वर्तन व उत्पत्ति	15-16	पृथ्वीकाय-यावत्-वनस्पतिकाय के कर्म प्रकृतियों का वेदन
1	दूसरे अट्ठाईसवां उद्देशक चार प्रकार के क्षुद्रयुग्म कृष्ण लेश्यी यावत् शुक्ल लेश्यी नैरयिकों की उद्वर्तना	1-3 4-6 7-8 9-10	द्वितीय उद्देशक अनंतरोपपन्न एकेन्द्रियों के भेद अनंतरोपपन्न एकेन्द्रियों की कर्म प्रकृतियाँ अनंतरोपपन्न एकेन्द्रियों के कर्म प्रकृतियों का बंधन अनंतरोपपन्न एकेन्द्रियों के कर्म प्रकृतियों का वेदन
1	तैत्तिरीयौ बारह एकेन्द्रिय शतक प्रथम एकेन्द्रिय शतक प्रथम उद्देशक पाँच प्रकार के एकेन्द्रिय	1	तृतीय उद्देशक परंपरोपपन्नक एकेन्द्रियों के भेद
2	दो प्रकार के पृथ्वीकाय	2	परंपरोपपन्नक एकेन्द्रियों के कर्म-प्रकृतियों का बंधन तथा वेदन
3	दो प्रकार के सूक्ष्म पृथ्वीकाय		
4	दो प्रकार के बादर पृथ्वीकाय		
5-6	पृथ्वीकाय के समान अपकाय-यावत्-वनस्पतिकाय के भेद		चतुर्थ उद्देशक अनंतरावागाढ पृथ्वीकाय -यावत्- वनस्पतिकाय अनंतरोपपन्नक के समान
7	अपर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकाय की आठ कर्म प्रकृतियाँ		पंचम उद्देशक
8	पर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकाय की आठ कर्म प्रकृतियाँ		परम्परावागाढ पृथ्वीकाय -यावत्- वनस्पतिकाय परंपरोपपन्नक के समान

षष्ठ उद्देशक	2	कृष्णलेश्यी पृथ्वीकाय के दो प्रकार
अनंतराहारक पृथ्वीकाय-यावत्-वनस्पतिकाय	3	कृष्णलेश्यी सूक्ष्म पृथ्वीकाय
अनंतरोपपन्नक के समान	4-6	कृष्णलेश्यी अपर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकाय की कर्म प्रकृतियां, बंध, वेदन
सप्तम उद्देशक		
परम्पराहारक पृथ्वीकाय-यावत्-वनस्पतिकाय		
परंपरोपपन्नक के समान	1	द्वितीय उद्देशक अनंतरोपपन्नक कृष्णलेश्यी एकेन्द्रिय के प्रकार
अष्टम उद्देशक	2	अनंतरोपपन्नक कृष्णलेश्यी सूक्ष्म पृथ्वीकायिक की कर्म प्रकृतियां, बंध, वेदन
अनंतरपर्याप्तक पृथ्वीकाय-यावत्-वनस्पतिकाय		
अनंतरोपपन्नक के समान		
नवम उद्देशक		
परम्परपर्याप्तक पृथ्वीकाय-यावत्-वनस्पतिकाय	1	तृतीय उद्देशक परंपरोपपन्नक कृष्णलेश्यी एकेन्द्रिय के प्रकार
परंपरोपपन्नक के समान	2	परंपरोपपन्नक कृष्णलेश्यी सूक्ष्म पृथ्वीकाय की कर्म प्रकृतियां, बंध, वेदन
दशम उद्देशक		
चरम पृथ्वीकाय-यावत्-वनस्पतिकाय परंपरोपपन्नक के समान		
ग्यारहवाँ उद्देशक	1	चतुर्थ से ग्यारह उद्देशक कृष्ण लेश्या वाले एकेन्द्रियों के सम्बन्ध में शेष उद्देशक (4-11) प्रथम एकेन्द्रिय शतक के समान
अचरम पृथ्वीकाय-यावत्-वनस्पतिकाय परंपरोपपन्नक के समान		
द्वितीय एकेन्द्रिय शतक	1	तृतीय एकेन्द्रिय शतक नील लेश्या वाले एकेन्द्रियों के सम्बन्ध में ग्यारह उद्देशक प्रथम एकेन्द्रिय शतक के समान
प्रथम उद्देशक		
पांच प्रकार के कृष्णलेश्यी एकेन्द्रिय		

चतुर्थ एकेन्द्रिय शतक		दशम एकेन्द्रिय शतक	
1	कापोत लेश्या वाले एकेन्द्रियों के सम्बन्ध में ग्यारह उद्देशक प्रथम एकेन्द्रिय शतक के समान	1	कृष्ण लेश्या वाले अभवसिद्धिक एकेन्द्रियों के सम्बन्ध में नव उद्देशक
1-2	पंचम एकेन्द्रिय शतक भवसिद्धिक एकेन्द्रियों के सम्बन्ध में ग्यारह उद्देशक प्रथम एकेन्द्रिय शतक के समान	1	एकादशम एकेन्द्रिय शतक नील लेश्या वाले अभवसिद्धिक एकेन्द्रियों के सम्बन्ध में नव उद्देशक
1-6	षष्ठ एकेन्द्रिय शतक कृष्ण लेश्या वाले भवसिद्धिक एकेन्द्रियों के सम्बन्ध में ग्यारह उद्देशक प्रथम एकेन्द्रिय शतक के समान	1	द्वादशम एकेन्द्रिय शतक कापोत लेश्या वाले अभवसिद्धिक एकेन्द्रियों के सम्बन्ध में नव उद्देशक
1	सप्तम एकेन्द्रिय शतक नील लेश्या वाले भवसिद्धिक एकेन्द्रियों के सम्बन्ध में ग्यारह उद्देशक प्रथम एकेन्द्रिय शतक के समान	चौतीसवाँ शतक	
1	अष्टम एकेन्द्रिय शतक कापोत लेश्या वाले भवसिद्धिक एकेन्द्रियों के सम्बन्ध में ग्यारह उद्देशक प्रथम एकेन्द्रिय शतक के समान	बारह प्रथम एकेन्द्रिय-श्रेणी शतक	
1	नवम एकेन्द्रिय शतक अभवसिद्धिक एकेन्द्रियों के सम्बन्ध में नव उद्देशक	प्रथम उद्देशक एकेन्द्रिय जीवों के भेद-प्रभेद का निरूपण रत्नप्रभा पृथ्वी के पूर्व दिशा के चरमान्त में मरण-समुद्घात करके अपर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकायिक जीव के, रत्नप्रभा के पश्चिमी चरमान्त में अपर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकायिक रूप में उत्पन्न होने के समय की विग्रह गति का प्ररूपण व हेतु रत्नप्रभा पृथ्वी के पूर्व दिशा के चरमान्त में मरण-समुद्घात करके अपर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकायिक जीव	

	के पश्चिमी चरमान्त में पर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकायिक रूप में उत्पन्न होने में विग्रह गति का समय एवं हेतु		समान सूक्ष्म और बादर वायुकायिक तथा सूक्ष्म और बादर वनस्पतिकायिक जीवों के उपपात तथा विग्रह गति के समय का निरूपण
4	अपर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकायिक जीव का पूर्व दिशा के चरमान्त में मरण-समुद्घात से मृत्यु प्राप्त कर पश्चिम दिशा के चरमान्त में बादर अपर्याप्त पृथ्वीकायिक रूप से उपपात का प्ररूपण	12	पर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकायिक जीवों-यावत् वनस्पति-काय का उक्त बीस स्थानों में उपपात एवं विग्रह गति के समय का निरूपण
5	इसी प्रकार से पर्याप्त रूप से उपपात का निरूपण	13-14	इसी प्रकार अपर्याप्त और पर्याप्त बादर पृथ्वीकायिक जीवों का उपपात एवं विग्रह गति के समय का निरूपण
6	इसी प्रकार अपृकायिक पर्याप्त-अपर्याप्त, सूक्ष्म-बादर जीवों के भी उपपात के चार आलापक		
7	इसी प्रकार अपर्याप्त व पर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकायिक जीवों का अपर्याप्त व पर्याप्त सूक्ष्म तेजस्कायिक जीवों के रूप में उपपात	15-16	इसी प्रकार सूक्ष्म-बादर एवं पर्याप्त और अपर्याप्त अपृकायिक तथा अपर्याप्त और पर्याप्त सूक्ष्म तेजस्कायिक जीवों के पूर्वोक्त बीस स्थानों में उपपात और विग्रह गति के समय का निरूपण
8	अपर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकायिक जीव के इस रत्नप्रभा पृथ्वी के पूर्व दिशा के चरमान्त में मरण-समुद्घात से मरकर मनुष्य क्षेत्र में अपर्याप्त बादर तेजस्कायिक रूप में उत्पन्न होने में विग्रह गति में लगने वाले समय का निरूपण	17	अपर्याप्त बादर तेजस्कायिक जीव मनुष्य क्षेत्र में मरण-समुद्घात करके रत्नप्रभा पृथ्वी के पश्चिमी चरमान्त में अपर्याप्त पृथ्वीकायिक रूप से उत्पन्न होने पर विग्रह गति में लगने वाला समय एवं उसका हेतु
9	इसी प्रकार पर्याप्त बादर तेजस्कायिक रूप से उत्पन्न होने में विग्रह गति में लगने वाले समय का निरूपण	18-20	इसी प्रकार चारों प्रकार के पृथ्वीकायिक जीव, अपृकायिक जीव तथा सूक्ष्म तेजस्कायिक जीवों
10-11	सूक्ष्म और बादर अपृकायिक जीवों के उपपात के		

21-22	के पर्याप्त और अपर्याप्त जीवों के उपपात एवं विग्रह गति में लगने वाले समय का निरूपण	पृथ्वी के पूर्वी चरमान्त में अपर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वी-कायिक रूप में उत्पन्न होने पर विग्रह गति में लगने वाले समय का निरूपण
23	अपर्याप्त बादर तेजस्कायिक जीव मनुष्य क्षेत्र में मरण-समुद्घात करके मनुष्य क्षेत्र में अपर्याप्त अथवा पर्याप्त बादर तेजस्कायिक रूप से उपपात होने पर विग्रह गति में लगने वाले समय का निरूपण	पूर्वी चरमान्त में मरण-समुद्घात करके पश्चिमी चरमान्त और मनुष्य क्षेत्र में जीवों के उपपात के समान उसी क्रम और उसी प्रकार से पश्चिमी चरमान्त तथा मनुष्य क्षेत्र में मरण-समुद्घात करके पूर्वी चरमान्त और मनुष्य क्षेत्र में जीवों का उपपात एवं विग्रह गति में लगने वाले समय का निरूपण
24	इसी प्रकार पर्याप्त बादर तेजस्कायिक जीवों के, मनुष्य क्षेत्र में समुद्घात करके उक्त बीस स्थानों में उपपात एवं विग्रह गति में लगने वाले समय का निरूपण	इसी प्रकार दक्षिणी चरमान्त में मरण समुद्घात करके मनुष्य क्षेत्र में और उत्तरी चरमान्त में समुद्घात करके मनुष्य क्षेत्र में मरण-समुद्घात करके दक्षिणी चरमान्त में और मनुष्य क्षेत्र में उपपात निरूपण
25	इसी प्रकार अपर्याप्त और पर्याप्त बादर तेजस्कायिक जीवों के मनुष्य क्षेत्र में समुद्घात करके उपपात एवं विग्रह गति में लगने वाले समय का निरूपण	अपर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकायिक जीवों का शर्कराप्रभा पृथ्वी के पूर्वी चरमान्त में मरण-समुद्घात करके पश्चिमी चरमान्त में अपर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकाय रूप से उपपात एवं विग्रह गति में लगने वाले समय का निरूपण
26	पृथ्वीकायिक उपपात के समान चार-चार भेद से वायुकायिक और वनस्पतिकायिक जीवों के उपपात और विग्रह गति में लगने वाले समय का निरूपण	इसी क्रम से पर्याप्त सूक्ष्म तेजस्कायिक पर्याप्त का निरूपण
27	अपर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकायिक जीव रत्नप्रभा पृथ्वी के पश्चिमी चरमान्त में मरण-समुद्घात करके उसी	

33	अपर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकायिक जीव शर्कराप्रभा पृथ्वी के पूर्वी चरमान्त में मरण-समुद्घात करके मनुष्य क्षेत्र में अपर्याप्त बादर तेजस्कायिक रूप में उत्पन्न हो तो विग्रह गति में लगने वाले समय का निरूपण इसी प्रकार पर्याप्त बादर तेजस्कायिक रूप से होने वाले उपपात एवं विग्रह गति में लगने वाले समय का निरूपण	38-39	अपर्याप्त और पर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकायिक जीवों का अधोलोक की त्रसनाड़ी के बाहर के क्षेत्रों में मरण - समुद्घात करके ऊर्ध्व सूक्ष्म पृथ्वीकायिक रूप में उपपात होने पर विग्रह गति में लगने वाले समय का निरूपण
34	इसी प्रकार पर्याप्त बादर तेजस्कायिक रूप से होने वाले उपपात एवं विग्रह गति में लगने वाले समय का निरूपण	40	पर्याप्त सूक्ष्म तेजस्कायिक जीवों का उपपात भी इसी प्रकार जानना चाहिए
35	बादर तेजस्कायिक अपर्याप्त और पर्याप्त जीवों का मनुष्य क्षेत्र में मरण-समुद्घात करके शर्कराप्रभा पृथ्वी के पश्चिमी चरमान्त में, चारों प्रकार के पृथ्वीकायिक तथा अपृकायिक जीवों में व दो प्रकार के तेजस्कायिक जीवों में और चार प्रकार के वायुकायिक तथा वनस्पतिकायिक जीवों में उपपात एवं विग्रह गति में लगने वाले समय का निरूपण पर्याप्त और अपर्याप्त बादर तेजस्कायिक जीवों का पर्याप्त और अपर्याप्त बादर तेजस्कायिक रूप में रत्नप्रभा संबंधी कथन के अनुसार उपपात और विग्रह-गति के समय का निरूपण	41	अपर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकायिक जीव के अधोलोक क्षेत्रीय त्रसनाड़ी के बाहर के क्षेत्रों में मरण-समुद्घात करके मनुष्य क्षेत्र में अपर्याप्त बादर तेजस्कायिक रूप में उपपात एवं विग्रह गति में लगने वाले समय का निरूपण
36	पर्याप्त और अपर्याप्त बादर तेजस्कायिक जीवों का पर्याप्त और अपर्याप्त बादर तेजस्कायिक रूप में रत्नप्रभा संबंधी कथन के अनुसार उपपात और विग्रह-गति के समय का निरूपण	42	क. इसी प्रकार पर्याप्त बादर तेजस्कायिक जीवों का उपपात आदि का निरूपण
37	शर्कराप्रभा संबंधी वक्तव्यता के समान ही शेष पांचों पृथ्वियों के संबंध में वक्तव्यता जाननी चाहिए	43	ख. अपृकायिक जीवों के उपपात की वक्तव्यता के समान ही वायुकायिक और वनस्पतिकायिक जीवों के भी चार-चार भेद से उपपात की वक्तव्यता का निरूपण

44-45	वक्तव्यता के समान पर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकायिक जीवों के बीस स्थानों में उपपात की वक्तव्यता का निरूपण अधोलोक की त्रसनाड़ी के बाहर के क्षेत्र में मरण-समुद्घात करके-यावत्-विग्रहगति में उपपात की वक्तव्यता के समान अपर्याप्त और पर्याप्त बादर पृथ्वीकायिक तथा चारों प्रकार के अप्कायिक जीवों के उपपात का निरूपण	51-53	पर्याप्त बादर तेजस्कायिक जीव में उत्पन्न होने पर विग्रह गति में लगने वाला समय व उसका हेतु पृथ्वीकायिक जीवों के चारों प्रकार के उपपात कथन के समान वायुकायिक और वनस्पतिकायिक के भी चार-चार भेद सहित उपपात तथा पर्याप्त बादर तेजस्कायिक जीवों के उपपात एवं विग्रह गति में लगने वाले समय व उसके हेतु का निरूपण ऊर्ध्वलोक की त्रसनाड़ी के क्षेत्र से अधोलोक की त्रसनाड़ी के क्षेत्र से बाहर के क्षेत्र में अपर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकायिक जीव के अपर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकायिक के रूप में -यावत्- पर्याप्त बादर वनस्पतिकायिक जीव के पर्याप्त बादर वनस्पतिकायिक के रूप में उपपात और विग्रह गति में लगने वाले समय का निरूपण
46	इसी प्रकार सूक्ष्म तेजस्कायिक अपर्याप्त और पर्याप्त जीवों के उपपात का निरूपण	54	
47	मनुष्य क्षेत्र में मरण-समुद्घात करके अपर्याप्त बादर तेजस्कायिक जीव के ऊर्ध्वलोक की त्रसनाड़ी के बाहर अपर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकायिक रूप में उत्पन्न होने पर विग्रह गति में लगने वाला समय व उसका हेतु	55	लोक के पूर्वी चरमान्त से पूर्वी चरमान्त में मरण-समुद्घात करके अपर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकायिक जीव का अपर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकायिक के रूप में उपपात एवं विग्रह गति में लगने वाले समय का निरूपण लोक के पूर्वी चरमान्त में मरण-समुद्घात करके पूर्वी चरमान्त में ही अपर्याप्त और पर्याप्त सूक्ष्म व
48	मनुष्य क्षेत्र में मरण-समुद्घात करके अपर्याप्त बादर तेजस्कायिक जीव के ऊर्ध्वलोक की त्रसनाड़ी के बाहर पर्याप्त सूक्ष्म तेजस्कायिक रूप में उत्पन्न होने पर विग्रह गति में लगने वाला समय व उसका हेतु	56	
49-50	मनुष्य क्षेत्र में मरण-समुद्घात करके अपर्याप्त बादर तेजस्कायिक जीव मनुष्य क्षेत्र में ही अपर्याप्त व		

57	बादर पृथ्वीकायिक जीव के रूप में -यावत्- अपर्याप्त और पर्याप्त सूक्ष्म व बादर वनस्पतिकायिक जीव के रूप में उपपात निरूपण		लोक के पश्चिमी चरमान्त में अपर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकायिक जीवों का अपर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकायिक जीवों के रूप में उपपात एवं विग्रह गति के समय का व उसके हेतु का निरूपण
58	पर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकायिक जीवों का भी उक्त बारह स्थानों में उपपात निरूपण	62	लोक के पूर्वी चरमान्त में मरण-समुद्घात करके उत्तरी चरमान्त में अपर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकायिक जीव का अपर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकायिक रूप में उत्पन्न होने का वर्णन पूर्वी से दक्षिणी चरमान्त में उपपात कथन के समान जानना चाहिए
59	पूर्ववत् लोक के पूर्वी चरमान्त में मरण-समुद्घात करके लोक के दक्षिणी चरमान्त में अपर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकायिक जीवों का अपर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकायिक जीव रूप में उपपात एवं विग्रह गति समय का व उसके हेतु का निरूपण	63	दक्षिण चरमान्त में समुद्घात करके दक्षिण चामान्त में ही उत्पन्न होने वाला अपर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकायिक जीव का अपर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकायिक जीव के रूप में उपपात-यावत्-पर्याप्त सूक्ष्म वनस्पतिकायिक जीव का पर्याप्त सूक्ष्म वनस्पतिकायिक जीव रूप में उपपात का कथन
60	इसी प्रकार पूर्वी चरमान्त में मरण-समुद्घात करके दक्षिणी चरमान्त में -यावत्- पर्याप्त सूक्ष्म वनस्पतिकायिक जीवों के पर्याप्त सूक्ष्म वनस्पति- कायिक जीव के रूप में उपपात एवं विग्रह गति के समय का व उसके हेतु का निरूपण	64	इसी प्रकार दक्षिण चरमान्त में मरण-समुद्घात करके पश्चिम चरमान्त में उपपात एवं विग्रह गति समय का निरूपण
61	लोक के पूर्वी चरमान्त में मरण-समुद्घात करके	65	स्वस्थान में उपपात कथन के समान दक्षिण चरमान्त में मरण समुद्घात करके उत्तर चरमान्त में उपपात

66	का एवं विग्रह गति के समय का निरूपण पश्चिम चरमान्त में उपपात के समान पूर्वी चरमान्त 69-76 में उपपात एवं विग्रह गति समय व उसके हेतु का निरूपण	69-76	कायिक जीवों में उपपात निरूपण एकेन्द्रिय जीवों में स्थान-कर्म प्रकृति बंध-वेदन- उपपात-समुद्घात व अल्पबहुत्व आदि की अपेक्षा प्ररूपण
67	क. पश्चिम चरमान्त में मरण-समुद्घात करके पश्चिम चरमान्त में ही उत्पन्न होने वाले पृथ्वीकायिक जीव के लिए स्वस्थान में उपपातवत् निरूपण	1-7	द्वितीय उद्देशक अनंतरोपपन्नक एकेन्द्रियों का वर्णन प्रथम उद्देशक के समान
68	ख. उत्तर चरमान्त में उत्पन्न होने वाले जीव के उपपात का वर्णन पूर्ववत्, विग्रह गति एक समय की नहीं होती क. उत्तरी चरमान्त में मरण-समुद्घात करके उत्तरी चरमान्त में उत्पन्न होने वाले जीव का उपपात ख. उत्तरी चरमान्त में समुद्घात करके पूर्वी और पश्चिमी चरमान्त में उत्पन्न होने वाले पृथ्वीकायिक आदि जीवों का उपपात ग. उत्तरी चरमान्त में समुद्घात करके दक्षिणी चरमान्त में उत्पन्न होने वाले जीवों का कथन भी स्वस्थान के समान यावत् पर्याप्त सूक्ष्म वनस्पतिकाय जीवों का पर्याप्त सूक्ष्म वनस्पति-	1-3	तृतीय उद्देशक परंपरोपपन्नक एकेन्द्रियों का वर्णन चतुर्थ से एकादश उद्देशक अचरम पर्यंत एकेन्द्रियों का वर्णन द्वितीय एकेन्द्रिय श्रेणी शतक कृष्ण लेश्या वाले एकेन्द्रियों के वर्णन के ग्यारह उद्देशक तृतीय एकेन्द्रिय श्रेणी शतक नील लेश्या वाले एकेन्द्रियों के वर्णन के ग्यारह उद्देशक चतुर्थ एकेन्द्रिय श्रेणी शतक कापोत लेश्या वाले एकेन्द्रियों के वर्णन के ग्यारह उद्देशक

पंचम एकेन्द्रिय श्रेणी शतक	
1	भवासिद्धिक एकेन्द्रियों के वर्णन के ग्यारह उद्देशक 1
षष्ठ एकेन्द्रिय श्रेणी शतक	
1-6	कृष्ण लेश्या वाले भवासिद्धिक एकेन्द्रियों के वर्णन के ग्यारह उद्देशक
सप्तम एकेन्द्रिय श्रेणी शतक	
1	नील लेश्या वाले भवासिद्धिक एकेन्द्रियों के वर्णन के ग्यारह उद्देशक 1
1	अष्टम एकेन्द्रिय श्रेणी शतक
1	कापोत लेश्या वाले भवासिद्धिक एकेन्द्रियों के वर्णन के ग्यारह उद्देशक 2
नवम एकेन्द्रिय श्रेणी शतक	
1	अभवसिद्धिक एकेन्द्रियों के वर्णन के नव उद्देशक 3
1	दशम एकेन्द्रिय श्रेणी शतक
1	कृष्ण लेश्या वाले अभवासिद्धिक एकेन्द्रियों के वर्णन के नव उद्देशक 4
1	एकादशम एकेन्द्रिय श्रेणी शतक
1	नील लेश्या वाले अभवासिद्धिक एकेन्द्रियों के वर्णन के नव उद्देशक 5
1	द्वादशम एकेन्द्रिय श्रेणी शतक
1	कापोत लेश्या वाले अभवासिद्धिक एकेन्द्रियों के वर्णन के नव उद्देशक 6-7
1	त्रयोदशम एकेन्द्रिय श्रेणी शतक
1	कृष्ण लेश्या वाले अभवासिद्धिक एकेन्द्रियों के वर्णन के नव उद्देशक 8-9
1	चतुर्दशम एकेन्द्रिय श्रेणी शतक
1	नील लेश्या वाले अभवासिद्धिक एकेन्द्रियों के वर्णन के नव उद्देशक 10
1	पञ्चदशम एकेन्द्रिय श्रेणी शतक
1	नील लेश्या वाले अभवासिद्धिक एकेन्द्रियों के वर्णन के नव उद्देशक 11

द्वादशम एकेन्द्रिय श्रेणी शतक

कापोत लेश्या वाले अभवासिद्धिक एकेन्द्रियों के वर्णन के नव उद्देशक

पैतृसर्वा अवान्तर द्वादश शतक

प्रथम एकेन्द्रिय महायुगम शतक

प्रथम उद्देशक

क. सोलह प्रकार के महायुगम
ख. सोलह प्रकार कहने का हेतु
कृत्युगम-कृत्युगम राशिरूप एकेन्द्रिय महायुगमों के उपपात आदि बत्तीस द्वारों की प्ररूपणा
एक समय में उपपात

जीवों की संख्या

अनंत जीवों की ऊंचाई

कृत्युगम-कृत्युगम राशिरूप एकेन्द्रियों के आठ कर्मों का बंध

कृत्युगम-कृत्युगम राशिरूप एकेन्द्रियों के आठ कर्मों का वेदन

कृत्युगम-कृत्युगम राशि रूप एकेन्द्रियों का साता-असाता वेदन

कृत्युगम-कृत्युगम राशि एकेन्द्रियों में लेश्या-यावत्-

उपयोग	3-4	प्रथम समयोत्पन्न कृत्युग्म-कृत्युग्म ऐकेन्द्रियों का अनुबंध प्रथम उद्देशक के अनुसार
12	कृत्युग्म-कृत्युग्म राशि रूप ऐकेन्द्रियों के शरीर के वर्णादि	तृतीय उद्देशक
13	कृत्युग्म-कृत्युग्म राशि रूप ऐकेन्द्रियों का अनुबंध काल	अप्रथम समयोत्पन्न कृत्युग्म-कृत्युग्म प्रमाण ऐकेन्द्रियों का उपपात
14	सर्व जीवों का कृत्युग्म-कृत्युग्म राशि रूप ऐकेन्द्रियों में उपपात	चतुर्थ उद्देशक
15	कृत्युग्म त्र्योज राशि रूप ऐकेन्द्रियों का उपपात	चरम समय कृत्युग्म-कृत्युग्म प्रमाण ऐकेन्द्रियों का उपपात
16	एक समय में उन्नीस से अनंत संख्या में उत्पत्ति	पंचम उद्देशक
17	कृत्युग्म-द्वार राशि रूप प्रमाण ऐकेन्द्रियों का उपपात	अचरम समय कृत्युग्म-कृत्युग्म प्रमाण ऐकेन्द्रियों का उपपात
18	उपपात संख्या	षष्ठ उद्देशक
19	कृत्युग्म-कल्योज रूप ऐकेन्द्रियों का उपपात	प्रथम-प्रथम समय कृत्युग्म-कृत्युग्म प्रमाण ऐकेन्द्रियों का उपपात
20	त्र्योज-कृत्युग्म प्रमाण ऐकेन्द्रियों का उपपात	सप्तम उद्देशक
21	त्र्योज-त्र्योज राशि रूप प्रमाण ऐकेन्द्रियों का उपपात	प्रथम-अप्रथम समय कृत्युग्म प्रमाण ऐकेन्द्रियों का उपपात
22	सोलह महायुग्मों के एक ही प्रकार का कथन	अष्टम उद्देशक
23	कल्योज-कल्योज राशि रूप प्रमाण ऐकेन्द्रियों का उपपात	प्रथम चरम समय कृत्युग्म-कृत्युग्म प्रमाण ऐकेन्द्रियों का उपपात
1-2	द्वितीय उद्देशक प्रथम समयोत्पन्न कृत्युग्म-कृत्युग्म ऐकेन्द्रियों का उपपात प्रथम उद्देशक के अनुसार	

नवम उद्देशक		सप्तम एकेन्द्रिय महायुगम शतक ग्यारह उद्देशक
1	प्रथम अचरम समय कृतयुगम-कृतयुगम प्रमाण एकेन्द्रियों का उपपात	1 नीललेश्य भवसिद्धिक कृतयुगम-कृतयुगम प्रमाण एकेन्द्रियों का वर्णन
दशम उद्देशक		अष्टम एकेन्द्रिय महायुगम शतक ग्यारह उद्देशक
1	चरम-चरम समय कृतयुगम-कृतयुगम प्रमाण एकेन्द्रियों का उपपात	1 कापोतलेश्य भवसिद्धिक कृतयुगम-कृतयुगम प्रमाण एकेन्द्रियों का वर्णन
एकादशम उद्देशक		नवम एकेन्द्रिय से द्वादशम एकेन्द्रिय महायुगम शतक ग्यारह उद्देशक
1	चरम-अचरम समय कृतयुगम-कृतयुगम प्रमाण एकेन्द्रियों का उपपात	1 जिस प्रकार भवसिद्धिक के चार शतक कहे वैसे ही अभवसिद्धिक के भी कहने चाहिए
द्वितीय एकेन्द्रिय महायुगम शतक ग्यारह उद्देशक		छत्तीसवाँ बेइन्द्रिय महायुगम शतक
1-9	कृष्णलेश्यी कृतयुगम-कृतयुगम एकेन्द्रियों का वर्णन	
तृतीय एकेन्द्रिय महायुगम शतक ग्यारह उद्देशक		अवान्तर द्वादश शतक दो सौ इकतीस उद्देशक
1	नीललेश्य कृतयुगम-कृतयुगम एकेन्द्रियों का वर्णन	सोलह बेइन्द्रिय महायुगम शतकों में उपपात आदि बत्तीस द्वारों का प्ररूपण
चतुर्थ एकेन्द्रिय महायुगम शतक ग्यारह उद्देशक		प्रथम बेइन्द्रिय महायुगम शतक ग्यारह उद्देशक
1	कापोतलेश्य कृतयुगम-कृतयुगम एकेन्द्रियों का वर्णन	कृतयुगम कृतयुगम बेइन्द्रियों का उपपात बेइन्द्रियों का अनुबंध
पंचम एकेन्द्रिय महायुगम शतक ग्यारह उद्देशक		
1	भवसिद्धिक कृतयुगम-कृतयुगम एकेन्द्रियों का वर्णन	
षष्ठ एकेन्द्रिय महायुगम शतक ग्यारह उद्देशक		
1	कृष्णलेश्य भवसिद्धिक कृतयुगम कृतयुगम एकेन्द्रियों का वर्णन	प्रथम समय कृतयुगम-कृतयुगम बेइन्द्रियों का उपपात,

आहार, समुद्धात		का उपपातादि वर्णन	
4	शेष-एकेन्द्रिय महायुगम उद्देशक के समान सोलह महायुगम कहने चाहिए	1	अष्टम बेइन्द्रिय महायुगम शतक ग्यारह उद्देशक
1	द्वितीय बेइन्द्रिय महायुगम शतक ग्यारह उद्देशक		कापोतलेशयी भवसिद्धिक कृतयुगम-कृतयुगम बेइन्द्रियों का उपपातादि वर्णन
1	कृष्णलेशयी कृतयुगम-कृतयुगम बेइन्द्रियों का वर्णन		नवम से द्वादशम बेइन्द्रिय महायुगम शतक ग्यारह उद्देशक
1	कृष्ण लेशयी एकेन्द्रियवत्	1	भवसिद्धिक की तरह अभवसिद्धिक कृतयुगम-कृतयुगम बेइन्द्रियों का उपपातादि वर्णन
1	तृतीय बेइन्द्रिय महायुगम शतक ग्यारह उद्देशक		सैतीसवाँ त्रीन्द्रिय महायुगम शतक
	नीललेशयी कृतयुगम-कृतयुगम बेइन्द्रियों का उपपातादि वर्णन		अवान्तर द्वादश शतक
1	चतुर्थ बेइन्द्रिय महायुगम शतक ग्यारह उद्देशक		एक सौ चौबीस उद्देशक
1	कापोतलेशयी कृतयुगम-कृतयुगम बेइन्द्रियों का उपपातादि वर्णन	1	कृतयुगम-कृतयुगम प्रमाण त्रीन्द्रियों के उपपातादि का वर्णन
1	पंचम बेइन्द्रिय महायुगम शतक ग्यारह उद्देशक		अड़तीसवाँ चतुरिन्द्रिय महायुगम शतक
1	भवसिद्धिक कृतयुगम-कृतयुगम बेइन्द्रियों का उपपातादि वर्णन		अवान्तर द्वादश शतक
1	षष्ठ बेइन्द्रिय महायुगम शतक ग्यारह उद्देशक		एक सौ चौबीस उद्देशक
1	कृष्णलेशयी भवसिद्धिक कृतयुगम-कृतयुगम बेइन्द्रियों का उपपातादि वर्णन	1	कृतयुगम-कृतयुगम प्रमाण चतुरिन्द्रियों के उपपातादि का वर्णन
1	सप्तम बेइन्द्रिय महायुगम शतक ग्यारह उद्देशक		उनचालीसवाँ असंज्ञी पंचेन्द्रिय महायुगम शतक
	नीललेशयी भवसिद्धिक कृतयुगम-कृतयुगम बेइन्द्रियों का उपपातादि वर्णन		अवान्तर द्वादश शतक

एक सौ चौबीस उद्देशक	
1	कृतयुगम-कृतयुगम प्रमाण असंज्ञी पंचेन्द्रियों के उपपातादि का वर्णन
चालीसवाँ शतक	
अवान्तर इकवीस संज्ञी पंचेन्द्रिय महायुगम शतक	
1-8	प्रथम संज्ञी महायुगम शतक ग्यारह उद्देशक कृतयुगम-कृतयुगम राशि रूप संज्ञी पंचेन्द्रिय के उपपातादि का वर्णन
द्वितीय संज्ञी पंचेन्द्रिय महायुगम शतक ग्यारह उद्देशक	
1	कृष्णलेश्य संज्ञी पंचेन्द्रिय महायुगम का उपपातादि वर्णन
तृतीय संज्ञी महायुगम शतक ग्यारह उद्देशक	
1	नीललेश्य संज्ञी पंचेन्द्रिय महायुगमों का उपपातादि वर्णन
चतुर्थ संज्ञी महायुगम शतक ग्यारह उद्देशक	
1	कापोतलेश्य संज्ञी पंचेन्द्रिय महायुगमों का उपपातादि वर्णन
पंचम संज्ञी महायुगम शतक ग्यारह उद्देशक	
1	तेजोलेश्य संज्ञी पंचेन्द्रिय महायुगमों का उपपातादि वर्णन
षष्ठ संज्ञी महायुगम शतक ग्यारह उद्देशक	
1	पद्मलेश्य संज्ञी पंचेन्द्रिय महायुगमों का उपपातादि वर्णन
सप्तम संज्ञी महायुगम शतक ग्यारह उद्देशक	
1	शुक्ललेश्य संज्ञी पंचेन्द्रिय महायुगमों का उपपातादि वर्णन
अष्टम संज्ञी महायुगम शतक इग्यारह उद्देशक	
1	भवसिद्धिक कृतयुगम-कृतयुगम प्रमाण संज्ञी पंचेन्द्रिय महायुगमों का उपपातादि वर्णन
नवम संज्ञी से चौदहवें संज्ञी महायुगम शतक पर्यंत प्रत्येक के ग्यारह उद्देशक	
1-3	कृष्णलेश्य-यावत्-शुक्ललेश्य भवसिद्धिक कृतयुगम-कृतयुगम प्रमाण संज्ञी पंचेन्द्रिय महायुगम के उपपातादि वर्णन
पंद्रहवें संज्ञी महायुगम शतक के ग्यारह उद्देशक	
1-2	अभवसिद्धिक कृतयुगम-कृतयुगम संज्ञी पंचेन्द्रियों के सोलह युगमों का वर्णन
3	प्रथम समयोपन्न अभवसिद्धिक कृतयुगम-कृतयुगम संज्ञी पंचेन्द्रिय महायुगमों का उत्पाद
4	ग्यारह उद्देशक में प्रथम, तृतीय व पंचम एक समान व शेष आठ एक समान

सोलहवें संज्ञी पंचेन्द्रिय महायुगम शतक के ग्यारह उद्देशक			(5)	क्रिया रहित की सिद्धि
1	कृष्णलेश्यी अभवसिद्धिक कृत्युगम-कृत्युगम राशि युक्त संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवों की उत्पत्ति	8-11		राशियुगम-कृत्युगम असुरकुमार -यावत्- वैमानिक देव के उपपात आदि का निरूपण
सत्रहवें से इक्कीसवें शतक पर्यंत				
प्रत्येक के ग्यारह उद्देशक				
1-4	कृत्युगम कृत्युगम प्रमाण कृष्णलेश्य-यावत्-शुक्ललेश्य अभवसिद्धिक संज्ञी पंचेन्द्रिय का उत्पाद	1-3		द्वितीय उद्देशक त्र्योज राशि प्रमाण चौबीस दण्डक के जीवों का उपपात
इकतालीसवाँ राशि युगम शतक प्रथम उद्देशक				
1	क. चार प्रकार का राशियुगम	1-3		तृतीय उद्देशक द्वारपर युगमराशि प्रमाण चौबीस दण्डक के जीवों का उपपात
2-3	ख. चार प्रकार का राशियुगम कहने का हेतु राशि युगम कृत्युगम नैरयिक जीवों के उपपात आदि का निरूपण	1-3		चतुर्थ उद्देशक राशि युगम कल्योज राशि प्रमाण चौबीस दण्डक के जीवों का उपपात
4	सान्तर अथवा निरन्तर उपपात			पंचम उद्देशक से आठवें उद्देशक पर्यंत
5	(1) कृत्युगम और त्र्योज राशि के सम्बन्ध का निषेध	1		कृष्णलेश्या वाले राशि युगम में कृत्युगम प्रमाण चौबीस दण्डक के जीवों का उपपात
	(2) कृत्युगम और द्वारपर युगम राशि के सम्बन्ध का निषेध	4		कृष्णलेश्या वाले राशि युगम में त्र्योज राशि प्रमाण चौबीस दण्डक के जीवों का उपपात
6	(3) कृत्युगम और कल्योज राशि के सम्बन्ध का निषेध जीवों की उपपात की पद्धति व उदाहरण			कृष्णलेश्या वाले द्वारपर युगम राशि प्रमाण चौबीस दण्डक के जीवों का उपपात
7	(1) उपपात का हेतु, आत्मा का असंयम	5		कृष्णलेश्या वाले कल्योज राशि प्रमाण चौबीस दण्डक के जीवों का उपपात
	(2) सलेश्य आत्म असंयमी			
	(3) सक्रिय आत्म असंयमी	6		कृष्णलेश्या वाले कल्योज राशि प्रमाण चौबीस दण्डक के जीवों का उपपात
	(4) सलेश्यी सक्रिय			

नवम से अष्टाईसवें उद्देशक पर्यंत	
1	नीललेश्या वाले चार राशि युग्म प्रमाण चौबीस दण्डक के जीवों का उपपात
2	कापोतलेश्या वाले चार राशि युग्म प्रमाण चौबीस दण्डक के जीवों का उपपात (9-12)
3	तेजोलेश्या वाले चार राशि युग्म प्रमाण चौबीस दण्डक के जीवों का उपपात (13-16)
4	पद्मलेश्या वाले चार राशि युग्म प्रमाण चौबीस दण्डक के जीवों का उपपात (17-20)
5	शुक्ललेश्या वाले चार राशि युग्म प्रमाण चौबीस दण्डक के जीवों का उपपात (21-24)
1-8	शुक्ललेश्या वाले चार राशि युग्म प्रमाण चौबीस दण्डक के जीवों का उपपात (25-28)
उनत्तीसवें से छप्पनवें उद्देशक पर्यंत	
1-8	चार राशि युग्म प्रमाण भवसिद्धिक कृष्णलेश्या-यावत्-शुक्ललेश्या वाले चौबीस दण्डक के जीवों का उपपात
1-9	सत्तावन से चौरासीवें उद्देशक पर्यंत चार राशि युग्म प्रमाण अभवसिद्धिक कृष्णलेश्या-यावत्-शुक्ललेश्या वाले चौबीस दण्डक के जीवों का उपपात
1-4	पच्चासी से एक सौ बारहवें उद्देशक पर्यंत चार राशि युग्म प्रमाण सम्यग्दृष्टि भवसिद्धिक
एक सौ तेरहवें से एक सौ चालीसवें उद्देशक पर्यंत	
1	चार राशि युग्म प्रमाण मिथ्यादृष्टि भवसिद्धिक कृष्णलेश्या-यावत्-शुक्ललेश्या वाले चौबीस दण्डक के जीवों का उपपात
1-2	एक सौ इकतालीस से एक सौ अड़सठवें उद्देशक पर्यंत चार राशि युग्म प्रमाण कृष्ण पक्षी चौबीस दण्डक के जीवों का उपपात
1-2	एक सौ उनसित्तर से एक सौ छियानवें उद्देशक पर्यंत चार राशि युग्म प्रमाण शुक्ल पक्षी चौबीस दण्डक के जीवों का उपपात
1-2	उपसंहार सूत्र व्याख्या प्रज्ञप्ति के शतक उद्देशक और पदों की परिमाण संख्या
3	क. अंतिम मंगल की गाथा
4	ख. पुस्तक लिपिकार द्वारा किये गये नमस्कार की गाथा
5	भगवती सूत्र-अध्ययन विधि-दिवस श्रुतदेवी को नमस्कार की गाथा



णमो तवस्स

धर्मकथानुयोगमय ज्ञाता-धर्मकथाङ्ग

श्रुतस्कंध	2	4	भ. महावीर के अंतेवासी आर्य सुधर्मा स्थविर का वर्णन
अध्ययन	29	5	कोणिक का धर्म श्रवण
उद्देशक	16	6	जम्बूस्वामी का वर्णन
पद	5 लाख 96 हजार	7	आर्य सुधर्मा के समीप जम्बूस्वामी का पदार्पण व वंदन-पर्युपासना
उपलब्ध पाठ	55000 श्लोक	8	आर्य जम्बू की ज्ञाता धर्म कथा के सम्बन्ध में जिज्ञासा
गद्य सूत्र	159	9	सुधर्मास्वामी द्वारा ज्ञाता धर्मकथा का कथन
पद्य सूत्र	62	10	दो श्रुतस्कंधों के नाम- 1. ज्ञात, 2. धर्मकथा
प्रथम श्रुतस्कंध		11	प्रथम श्रुत स्कंध के उन्नीस अध्ययनों के नाम
अध्ययन	19	12	प्रथम अध्ययन की उत्थानिका
उद्देशक	19	13	राजगृह नगर वर्णन
गद्य सूत्र	147	14	श्रेणिक राजा और नंदा रानी का वर्णन
पद्य सूत्र	56	15	क. अभयकुमार के शरीर व बुद्धि का वर्णन तथा उसका राजनैतिक और सामाजिक जीवन

6 ज्ञाता धर्मकथांग विषय-सूची

प्रथम ज्ञात श्रुतस्कंध

प्रथम उत्क्षिप्तज्ञात अध्ययन

1	उत्थानिका-चम्पा नगरी वर्णन	16	ख. चार नीति के नाम
2	पूर्णभद्र चैत्य का वर्णन	17	ग. ईहां के चार भेद
3	कोणिक राजा का वर्णन		घ. चार प्रकार की बुद्धि
			श्रेणिक की धारिणी रानी
			क. धारिणी के भवन व शय्या का वर्णन
			ख. धारिणी का स्वप्न दर्शन

18-20	श्रेणिक से स्वप्न फल पृच्छा	45-55	धारिणी की चिन्ता
21-22	श्रेणिक का स्वप्न-फल कथन	56	श्रेणिक राजा को दोहद निवेदन
23-25	धारिणी की प्रशस्त स्वप्न जागरणा	57	श्रेणिक द्वारा दोहद पूर्ति के उपायों का चिंतन
26-27	श्रेणिक द्वारा उपस्थानशाला सजाने का आदेश	58-62	अभयकुमार का आगमन
28	प्रातःकालीन सूर्योदय वर्णन	63-65	अभय द्वारा दोहद पूर्ण करने का प्रयत्न
29	श्रेणिक का व्यायामशाला में व्यायाम करना	66-67	अभयकुमार का अष्टम तप द्वारा देवाराधना
30	क. श्रेणिक का स्नानघर में स्नान एवं शृंगार	68	सौधर्म कल्पवासी देव का आगमन
31-33	ख. श्रेणिक का उपस्थानशाला में आगमन	69	देव द्वारा असार पुद्गल त्याग तथा सोलह प्रकार के पुद्गलों का ग्रहण
	उपस्थान शालाओं में आठ भद्रासन, ईहामृग आदि अनेक चित्रों से चित्रित यवनिका आदि की व्यवस्था तथा श्रेणिक का स्वप्न पाठकों को बुलाना	70-72	अभय कुमार के मित्र देव द्वारा दोहद पूर्ण करने का आश्वासन
34	स्वप्न-फल पृच्छा	73-74	देव द्वारा अकाल मेघ विक्रिया
35	स्वप्न पाठकों द्वारा फलादेश	75-83	धारिणी देवी की दोहद पूर्ति
36	चौदह महा स्वप्नों के नाम	84-85	देव का विसर्जन
37-39	स्वप्न फल श्रवण	86	धारिणी का गर्भ प्रतिपालन
40	स्वप्न पाठकों का सत्कार	87-89	मेघ कुमार का जन्म
41-42	धारिणी देवी को स्वप्न फल बताना, स्वप्न फल सुनकर	90-91	जन्मोत्सव, बंदी विमोचन, कर मुक्ति, दसोटन
	धारिणी देवी का प्रसन्न होना व उत्तम वचनों को हृदय में धारण करना	92	याचकों को इच्छित दान
43-44	धारिणी देवी को अकाल-मेघ का दोहद	93-94	जात कर्म, जागरण, चन्द्र-सूर्य दर्शन आदि अनेक संस्कार
		95	प्रीति भोज व नामकरण संस्कार

96-97	पाँच धाय माता व नाना देशों की दासियों द्वारा लालन-पालन	121	मेघ कुमार को माता-पिता द्वारा समझाना
98-99	मेघ कुमार का पाठ पठन व बहत्तर कलाओं का शिक्षण	122	मेघकुमार द्वारा मनुष्य जीवन की नश्वरता का वर्णन
100	कलाचार्यों का सम्मान-प्रीतिदान	123-124	काम भोगों की नश्वरता पर संवाद
101	मेघ कुमार को अठारह देश भाषाओं का ज्ञान व युद्ध कला में निपुणता	125-126	धन-दौलत की नश्वरता पर संवाद
102-103	मेघ कुमार के लिए आठ अन्तःपुर प्रासादों का निर्माण	127	मेघ को विषयों की ओर आकृष्ट करने में असमर्थ
104	मेघ कुमार का आठ राज कन्याओं के साथ पाणिग्रहण	128	निर्ग्रन्थ प्रवचन की महत्ता व साधु जीवन की कठिनाई का वर्णन
105-106	मेघकुमार के माता-पिता द्वारा उन आठ कन्याओं को आठ हिरण्य कोटी और आठ सुवर्ण कोटी प्रीतिदान दिया	129	आहार एषणा की कठिनता व परीषहों का दिग्दर्शन
107	उत्तम स्त्रियों द्वारा बत्तीस प्रकार के नृत्यों का प्रदर्शन	130	मेघ कुमार का दृढ़ वैराग्य
108	भ. महावीर का गुणशील चैत्य में समवसरण	131-132	एक दिवस का राज्य
109	राजगृही की जनता को आपस में भ. महावीर के पदार्पण की जानकारी	133-136	मेघ कुमार का राज्याभिषेक
110-112	भ. महावीर के दर्शनार्थ मेघ कुमार का जाना	137-138	मेघ द्वारा दो लाख स्वर्ण मुद्रा के रजोहरण व पात्र लाने का
113	पाँच प्रकार के अभिगम के साथ मेघ की भगवद् उपासना		और काश्यप (नाई) को एक लाख सुवर्ण मुद्रा देने का आदेश
114	भ. महावीर की धर्म कथा	139-140	नापित द्वारा चार अंगुल छोड़कर केश कर्तन
115	मेघ कुमार को वैराग्य व प्रव्रज्या संकल्प	141	केशों को माता द्वारा श्वेत वस्त्र में बांधकर पेटी में सुरक्षित रखना
116-118	प्रव्रज्या के लिए माता-पिता के समक्ष संकल्प निवेदन		मेघकुमार के दीक्षा महोत्सव का वर्णन
119-120	माता द्वारा शोक	142-143	मेघकुमार को स्नान, विलेपन कराकर वस्त्राभूषण आदि से सुसज्जित करना

144-145	ईहा मृग आदि चित्रों से चित्रित शिविका पर मेघकुमार का आरूढ़ होना	163	अनुभव क. मेघ मुनि का भ. महावीर की वंदना के लिए जाना
146	शिविका पर दाईं ओर माता व बाईं ओर धायमाता रजोहरण-पात्र लेकर आरूढ़	164	ख. महावीर द्वारा मेघ मुनि का मानसिक विश्लेषण क. महावीर द्वारा मेघ कुमार मुनि के पूर्वभवों का प्रतिपादन
147-150	मनोहर तरुणियों द्वारा छत्र, चामर, पंखा, झारी लेकर आरूढ़ होना		ख. पूर्वभव में सुमेरुप्रभ नामक श्वेत हाथी ग. हाथी का शारीरिक वर्णन
151-152	समान पोशाक पहने हुए सुसज्जित एक हजार पुरुषों द्वारा शिविका-वहन	165	एक हजार हाथियों का नायक
153	अभिनिक्रमण यात्रा में सबसे आगे अष्ट मंगल	166	भ्रमण भूमि वैताढ्यगिरि की तलहटी का वर्णन
154	जय-जयकार करती हुई हजारों की जनमेदनी	167	भयंकर आग लगने से व्यथित दशा
155	गुणशील चैत्य में आगमन	168-169	शांति हेतु सरोवर में उतरना व कीचड़ में फंसना
156-157	भ. महावीर स्वामी को वंदन व माता-पिता द्वारा आज्ञा प्रदान	170	पूर्वभव वैरी युवा हाथी का पानी पीने हेतु आना व तुम्हें मारना
158	मेघकुमार द्वारा वस्त्र-आभूषण त्याग	171-174	मृत्यु प्राप्त कर पुनः हाथी के रूप में जन्म व सात सौ हाथियों का नायक
159	पंचमुष्टि लोच व भगवान को वंदन		
160	भ. महावीर द्वारा मेघ कुमार की प्रव्रज्या व शिक्षा	175-176	जाति स्मरण ज्ञान व मण्डल बनाने का विचार
161	लघु होने के कारण रत्निक क्रम से मेघकुमार की शैया अंत में	177-180	एक योजन का मंडल बनाना
162	क. रात्रि में सतों की ठोकर से मेघ मुनि को आर्तध्यान ख. मेघ मुनि को नींद न आने से नरक की वेदना का	181-182	भयंकर दावानल के कारण सारे पशुओं का मण्डल में एकत्रित होना क. तुम्हारे द्वारा खाज खुजाने के लिए पैर को ऊंचा
		183	

करने पर शशक का वहां बैठना		213-216	मेघ मुनि की विजय विमान में उत्पत्ति, तैत्तिरीय सागर की स्थिति, च्यवन
184-186	ख. उस पर अनुकंपा कर पैंर उस पर नहीं रखना तीन दिन के बाद दावानल के समाप्त होने पर जैसे ही धरती पर पैंर रखकर चलने को उद्यत हुए तो अकड़ें हुए पैंर के कारण गिर पड़े	217-218	महाविदेह में जन्म, निर्वाण
		द्वितीय 'संघाटक' अध्ययन	
		(रत्नत्रय की आराधना के लिए आहार करना)	
187	क. मारणांतिक वेदना सहते हुए तीन दिन में मृत्यु को प्राप्त	1-5	उत्थानिका-राजगृह नगर, गुणशील चैत्य, जीर्ण उद्यान, भग्नकूप-मालुका कच्छ
	ख. श्रेणिक राजा की धारिणी की कुक्षि से पुनः मेघ कुमार के रूप में जन्म	6	धन्ना सार्थवाह, भद्रा भार्या
188	हाथी के भव में अनुकंपा की व इस परीक्षा से विचलित	7-8	पंथक दास, धन्ना सार्थवाह का व्यक्तित्व
189	मेघ मुनि को पूर्व जन्मों की स्मृति	9-10	विजय चोर का क्रूर जीवन
190	श्रमण संघ की सेवा के लिए मेघ मुनि की दृढ़ प्रतिज्ञा	11	भद्रा की पुत्र प्राप्ति के लिए चिन्ता
191-192	मेघ मुनि का पुनः प्रव्रज्या-ग्रहण	12-16	भद्रा द्वारा अनेक देव-देवियों की पूजा-अर्चना, गर्भ स्थिति
193	ग्यारह अंगों का अध्ययन	17-18	भद्रा के दोहद की पूर्ति
194	भ. महावीर का राजगृह से विहार	19-20	देवदत्त का जन्म व जन्मोत्सव
195-197	मेघ मुनि की द्वादश श्रमण प्रतिमा आराधना	21-22	देवदत्त को क्रीड़ा करने के लिए पंथक का ले जाना
198-199	विविध प्रकार की उग्र तपश्चर्याएं	23	क. विजय चोर द्वारा देवदत्त का अपहरण
200	गुणरत्न संवत्सर तप की आराधना		ख. देवदत्त के आभूषण ले लेना और मार कर भग्नकूप में डाल देना
201-202	तप से शुष्क व दुर्बल शरीर	24-25	पंथक द्वारा देवदत्त गुम होने का वृत्तांत निवेदन
203-212	मेघ मुनि की विपुलगिरि पर अंतिम आराधना	26-28	देवदत्त की शोध

29-30	बाल हत्यारे विजय चोर को कारागृह का कठोर दण्ड	49	भ. महावीर द्वारा निर्ग्रथ-निर्ग्रथियों को शिक्षा
31	देवदत्त का अंतिम संस्कार	50-51	धर्मघोष स्थविर का पदार्पण व धन्य द्वारा वंदन, धर्मश्रवण
32	क. कर चोरी के अपराध में धन्ना सार्थवाह को कारागृह का दण्ड	52	क. धन्ना सार्थवाह की प्रव्रज्या
	ख. धन्ना सार्थवाह और विजय चोर का एक बेड़ी से बंधन		ख. अंतिम आराधना
33-34	धन्ना सार्थवाह के लिए पंथक का भोजन ले जाना		ग. सौधर्म कल्प में देव होना, चार पल्य की स्थिति, च्यवन
35-36	धन्य द्वारा भोजन ग्रहण, विजय चोर के मांगने पर न देना	53	महाविदेह में जन्म और निर्वाण
37-38	धन्ना को मल-मूत्र की अत्यंत बाधा, विजय चोर को साथ चलने का आग्रह	54	उपसंहार
39	क. विजय चोर चलने से इन्कार व भोजन में संविभाग देने की मांग		तृतीय 'अण्ड' अध्ययन (शंका न करना)
	ख. धन्य द्वारा संविभाग की स्वीकृति	1-2	उत्थानिका-चंपा नगरी, सुभूमि भाग उद्यान
	ग. विजय चोर साथ में गया, धन्य द्वारा मल-मूत्र विसर्जन	3-4	मालुका कच्छ में मयूरी के दो अण्डे, दो सार्थवाह पुत्र
40	भोजन आने पर दोनों द्वारा ग्रहण	5	जिनदत्त और सागरदत्त की मैत्री
41	विजय चोर को भोजन देने से भद्रा सार्थवाही का रुष्ट होना	6-13	देवदत्त गणिका के साथ दोनों मित्रों की वन क्रीड़ा
42-44	धन्ना सार्थवाह की कारागृह से मुक्ति	14-15	मयूरी का उद्वेग
45-47	विजय चोर को भोजन देने का कारण बताने से भद्रा की नाराजगी का मिटना	16	क. दोनों मित्रों द्वारा मयूरी के दोनों अण्डों को उठाना
	विजय चोर की मृत्यु, नरक गति		ख. मुर्गी के अण्डों के साथ वन मयूरी के अण्डों का पालन
48	विजय चोर की मृत्यु, नरक गति	17	देवदत्ता गणिका के यहां दोनों मित्र

18-19	सागरदत्त की अण्डे के सम्बन्ध में शंका, अण्डे का नष्ट होना	पंचम 'शैलक' अध्ययन (प्रमाद परिहार)
20	साधु-साध्वियों को शिक्षा-शंकाशीलता का कुफल	द्वारका नगरी वर्णन
21	जिनदत्त का अण्डे के सम्बन्ध में संदेह न करना यह श्रद्धा का सुफल	रैवतक पर्वत
22-25	क. मयूरपालक द्वारा मयूर बालक को नृत्य शिक्षा ख. जिनदत्त पुत्र द्वारा मयूर बालक से अर्थ लाभ	नंदनवन उद्यान वर्णन, सुरप्रिय यक्षायतन
26	उपसंहार	कृष्ण वासुदेव
चतुर्थ 'कूर्म' अध्ययन (इन्द्रिय जय)		
1-2	उत्थानिका-वाराणसी नगरी	क. दक्षिणार्ध भरत की राजधानी द्वारिका का वैभव-
3-4	मालुका कच्छ में दो शृगाल	ख. समुद्र विजय प्रमुख दश दशार
5-7	क. संध्या के समय द्रह से निकलकर दो कूर्मों का खाद्य-गवेषणा के लिए मालुका कच्छ की ओर जाना ख. शृगालों का कूर्मों की घात में बैठना	ग. बलदेव प्रमुख पाँच महावीर घ. उग्रसेन प्रमुख सोलह हजार राजा ङ. प्रद्युम्न प्रमुख साढ़े तीन क्रोड़ कुमार च. सान्ब प्रमुख साठ हजार पराक्रमी छ. वीरसेन प्रमुख इक्कीस हजार वीर ज. महासेन प्रमुख छप्पन हजार बलवान झ. रूक्मणी प्रमुख बत्तीस हजार रानियाँ ञ. अनङ्ग सेना प्रमुख हजारों गणिकायें अन्य अनेक प्रमुख सार्थवाह आदि
8	शृगालों की चालाकी	क. शावच्चा गाथापत्नी, शावच्चापुत्र कुमार का अध्ययन
9	चंचल चित्त कूर्म का शृगाल द्वारा मारा जाना	ख. बत्तीस श्रेष्ठी कन्याओं के साथ शावच्चा पुत्र का पाणिग्रहण
10	भ. महावीर का उपदेश	
11-12	स्थिर चित्त कूर्म का बचना	
13-14	निर्ग्रन्थ-निर्ग्रन्थियों को भ. महावीर की (पाँचों इन्द्रियों को वश करने के सम्बन्ध में) शिक्षा	

7	भ. अरिष्टनेमि का समवसरण, उनकी दस धनुष की ऊँचाई, अठारह हजार श्रमण, चालीस हजार श्रमणियों से परिवृत्त	भ. अरिष्टनेमि का समवसरण, उनकी दस धनुष की ऊँचाई, अठारह हजार श्रमण, चालीस हजार श्रमणियों से परिवृत्त	पाँच सौ मंत्रीगण	ख. थावच्चा पुत्र अणगार का शैलकपुर में पदार्पण, धर्मकथा
8-10	सुधर्मा सभा, कौमुदी भेरी का वादन	सुधर्मा सभा, कौमुदी भेरी का वादन	29	राजा और मंत्रियों का द्वादश व्रत स्वीकार करना
11	वादन सुनकर श्रीकृष्ण आदि का दर्शनार्थ-गमन	वादन सुनकर श्रीकृष्ण आदि का दर्शनार्थ-गमन	30	सौगंधिका नगरी वर्णन, नीलाशोक उद्यान, सुदर्शन नामक नगर सेठ
12	पाँच अभिगम के साथ देशना-श्रवण	पाँच अभिगम के साथ देशना-श्रवण		
13-15	थावच्चा पुत्र का वैराग्य, दीक्षा महोत्सव के लिए श्री कृष्ण से थावच्चा भार्या का निवेदन	थावच्चा पुत्र का वैराग्य, दीक्षा महोत्सव के लिए श्री कृष्ण से थावच्चा भार्या का निवेदन	31-32	शुकदेव, परिव्राजक-वस्ति, चार वेदों के नाम, षष्ठी तंत्र, सांख्य सिद्धांत, पाँच यम, पाँच नियम, दस प्रकार का परिव्राजक धर्म
16	श्रीकृष्ण द्वारा स्वयं दीक्षा महोत्सव कराने की तैयारी	श्रीकृष्ण द्वारा स्वयं दीक्षा महोत्सव कराने की तैयारी		
17-20	श्री कृष्ण द्वारा थावच्चा पुत्र के वैराग्य की परीक्षा	श्री कृष्ण द्वारा थावच्चा पुत्र के वैराग्य की परीक्षा	33	क. सुदर्शन को शौचमूलक धर्म का उपदेश
21	क. श्रीकृष्ण द्वारा दीक्षा लेने वालों को सम्बल देने का आश्वासन	क. श्रीकृष्ण द्वारा दीक्षा लेने वालों को सम्बल देने का आश्वासन		ख. दो प्रकार का शौच, द्रव्य शौच और भाव शौच की व्याख्या, शौच धर्म से स्वर्ग की प्राप्ति, सुदर्शन का शौचधर्म स्वीकार करना
22-25	ख. पीछे रहने वालों को संभालने का आश्वासन क. थावच्चा पुत्र की एक हजार व्यक्तियों के साथ प्रव्रज्या	ख. पीछे रहने वालों को संभालने का आश्वासन क. थावच्चा पुत्र की एक हजार व्यक्तियों के साथ प्रव्रज्या		ग. शुक परिव्राजक का जनपद में विहार
26-27	ख. वे एक हजार व्यक्ति शिष्य रूप में प्राप्त भ. अरिष्टनेमि से आज्ञा प्राप्त करके एक हजार अणगार के साथ थावच्चा पुत्र का जनपद में विहार	ख. वे एक हजार व्यक्ति शिष्य रूप में प्राप्त भ. अरिष्टनेमि से आज्ञा प्राप्त करके एक हजार अणगार के साथ थावच्चा पुत्र का जनपद में विहार	34 35	श्री थावच्चा पुत्र अणगार का आगमन परिषद् में सुदर्शन की उपस्थिति, दो प्रकार का विनयमूलक धर्म, अणार धर्म के बारह व्रत, ग्यारह उपासक प्रतिमाओं का आराधन, अणगार धर्म में अठारह पाप विरति, दस प्रत्याख्यान, बारह भिक्षु प्रतिमा, विनयमूलक धर्म से मोक्ष
28	क. शैलकपुर नगर, सुभूमिभाग उद्यान, शैलक राजा, पद्मावती रानी, युवराज मण्डूककुमार, पंथक प्रमुख	क. शैलकपुर नगर, सुभूमिभाग उद्यान, शैलक राजा, पद्मावती रानी, युवराज मण्डूककुमार, पंथक प्रमुख		

36	सुदर्शन द्वारा शौचधर्म का प्रतिपादन	59	शैलक राजर्षि का अस्वस्थ होना
37-38	थावच्चा द्वारा शौचधर्म का परिहार, रक्तरंजित वस्त्र का उदाहरण	60-63	चिकित्सा के लिए शैलकपुर पहुँचना, स्वस्थ होने पर भी शैलकपुर न छोड़ना
39	सुदर्शन की विनयमूलक धर्म में श्रद्धा	64	शैलक राजर्षि की सेवा में अकेले पंथक मुनि का रहना,
40	पुनः शुक परिव्राजक का सौगंधिका में आना, सुदर्शन को पुनः शौचमूलक धर्म में प्रतिष्ठापित करने का प्रयत्न करना	65	अन्य श्रमणों का विहार
41-43	सुदर्शन के साथ शुक परिव्राजक का थावच्चा पुत्र अणगार के समीप पहुँचना	66	शैलक की स्थिति
44-50	थावच्चा पुत्र व शुक के संवाद	67	क. पंथक द्वारा चौमासी प्रतिक्रमण व पैरों में वंदन
51	शुक की अर्हत् प्रव्रज्या, चौदह पूर्व अध्ययन	68	ख. शैलक जागृत व कोपायमान
52	थावच्चा पुत्र का विहार, पुंडरिक पर्वत पर अंतिम आराधना व सिद्धि	69	पंथक द्वारा क्षमा प्रार्थना
53-55	शुक श्रमण का शैलकपुर के सुभूमि भाग उद्यान में पदार्पण, शैलक राजा का धर्म-श्रवण	70	शैलक राजर्षि का प्रबुद्ध होना व विहार करना
56	मण्डूक का राज्याभिषेक	71	निर्ग्रथ-निर्ग्रथियों को भ. महावीर द्वारा प्रतिबोध
57	शैलक राजा का पंथक प्रमुख पाँच सौ मंत्रियों के साथ प्रव्रजित होना	72	शैलक राजर्षि के विचरण के समाचार सुनकर अन्य मुनियों का पुनः सेवा में आगमन
58	क. शुक श्रमण की पुंडरिक पर्वत पर अंतिम आराधना, निर्वाण		शैलक राजर्षि की 500 मुनियों के साथ पुंडरिक-शत्रुजंय पर्वत पर अंतिम आराधना, सिद्ध पद की प्राप्ति
	ख. शैलक राजर्षि का जनपद विहार		उपसंहार

षष्ठ 'तुंबक' अध्ययन

(जीव का गुरुत्व लघुत्व)

सुधर्मा स्वामी से जम्बू स्वामी की जिज्ञासा

1

ज्ञाता. शु. 1, अ. 6, सूत्र 2-8, अ. 7, सूत्र 1-32	6 ज्ञाता धर्मकथांग विषय सूची	ज्ञाता. शु. 1, अ. 8, सूत्र 1-3	३२३
2	राजगृह नगर, श्रेणिक राजा, गुणशील चैत्य	8	क. भोगवती ने दाने खा लिये
3	भ. महावीर का पदार्पण व धर्म देशना		ख. रक्षिका ने दानों को रत्नों की डिब्बी में रख लिये
4-6	जीव के गुरुत्व-लघुत्व का कारण, मृतिका लिप्त तुंबे का उदाहरण	9-15	रोहिणी ने पीहर में भेजकर खेत में बोने के लिए दे दिए
7-8	उपसंहार	16-20	क. पांच वर्ष पश्चात् परीक्षा परिणाम व उस अनुरूप कार्य देना
	सप्तम 'रोहिणी ज्ञात' अध्ययन (पाँच महाव्रतों की वृद्धि)		ख. उज्झिका ने दाने फेंक दिये, उसे घर की सफाई का काम दिया
1	सुधर्मा स्वामी से जम्बू स्वामी की जिज्ञासा	21	जिस प्रकार उज्झिका ने दाने फेंक दिये, उसी प्रकार गृह त्याग कर जो व्यक्ति प्रव्रज्या लेकर छोड़ देता है वह अनन्त संसार में भटकता है ऐसा भगवान ने फरमाया
2	क. राजगृह नगर, सुभूमि भाग उद्घान		भोगवती ने दाने खाये, उसे रसोई का काम दिया
3	ख. धन्य सार्थवाह की समृद्धि का वर्णन	22-23	रक्षिका ने दाने पेटी में संभाल कर रखे, उसे संपत्ति की देख-रेख हेतु नियुक्त किया
	धन्ना सार्थवाह के धनपाल, धनदेव, धनगोप व धनरक्षित नामक चार पुत्र व उज्झिका, भोगवती, रक्षिका व रोहिणी नामक चार पुत्र वधुएं	24-27	रोहिणी ने खेत में हजारों गुणा दानों की वृद्धि की, उसे घर का मुखिया बनाया
4	क. परिवार चिंता-परीक्षा विचार	28-30	भ. महावीर का निर्ग्रथ-निर्ग्रथियों को रोहिणी के समान पाँच महाव्रतों की वृद्धि का उपदेश
	ख. पांच-पांच शालिकणों से चारों पुत्रवधुओं की परीक्षा का विचार	31-32	अष्टम 'मल्ली' अध्ययन
5	स्वजन-संबंधियों व मित्रों आदि को बुलाना		(1. माया शल्य निवारण- 2. दुर्गधमय देह)
6	सबके साथ भोजन व आदर-सत्कार के पश्चात् सबके सामने चारों पुत्रवधुओं को शालि के पांच-पांच दाने दिए		क. उत्थानिका- जम्बूद्वीप नामक द्वीप के महाविदेह क्षेत्र
7	बड़ी उज्झिका ने दाने बाहर डाल दिये	1-3	

	6 ज्ञाता धर्मकथांग विषय सूची	ज्ञाता. श्रु.1, अ.8, सूत्र 4-24
	में निषध वर्षधर पर्वत, सीतोदा महानदी, सुखावह वक्षस्कार पर्वत, लवण-समुद्र, सलिलावती विजय, वीतशोका राजधानी, इन्द्र कुम्भ उद्यान	कर्म का बंधन
	ख. बलराजा, धारिणी प्रमुख एक हजार रनियां बल राजा आदि	क. महाबल द्वारा तीर्थकर नाम कर्म का उपार्जन
	महाबल राजकुमार, पाँच सौ राजकन्याओं से पाणिग्रहण, पाँच सौ प्रासाद, पाँच सौ दासियाँ	ख. तीर्थकर नाम कर्म की उपार्जना के बीस कारण
	स्थविरों का आगमन	महाबल आदि सातों मुनियों द्वारा भिक्षु प्रतिमाओं की आराधना
	क. धर्म-श्रवण	शुक्लकसिंह निष्क्रीडित तप की आराधना
	ख. महाबल को राज्य देकर बलराजा का प्रव्रजित होना	महासिंह निष्क्रीडित तप की आराधना
	ग. ग्यारह अंगों का अध्ययन	चार पर्वत पर महाबल आदि मुनियों की अंतिम आराधना
	घ. चार पर्वत पर अंतिम आराधना, संलेखना, शिवपद की प्राप्ति	दो मास संलेखना, चौरासी लाख वर्ष का श्रमण पर्याय, चौरासी लाख पूर्व का पूर्णायु, सब का जयंत विमान में देव होना
	कमलश्री को सिंह का स्वप्न, बलभद्र पुत्र की प्राप्ति	छह देवों की कुछ कम बत्तीस सागरोपम की स्थिति व महाबल की पूरी बत्तीस सागरोपम की स्थिति
	क. महाबल के बालमित्र छः राजा	निम्न छह राजाओं का अलग-अलग स्थानों पर कुमार रूप में जन्म-
	ख. सुख-दुःख प्रत्येक प्रसंग में साथ रहने का निर्णय	1. प्रतिबुद्धि साकेताधिपति
	स्थविरों का आगमन, महाबल के साथ छहों राजाओं की प्रव्रज्या, ग्यारह अंग अध्ययन	2. चन्द्रच्छाय अंगदेशाधिपति
	महाबल और छहों मुनियों द्वारा समान तप करने का निश्चय	3. शंख काशीराज
	महाबल मुनि का मायापूर्वक तपोवृद्धि से स्त्रीलिंग नाम	4. रुक्मी कुणाल अधिपति
		5. अदीन शत्रु कुरुराज
		6. जितशत्रु पंचाल अधिपति

25-29	जम्बूद्वीप में भरत क्षेत्र, मिथिला राजधानी, कुम्भराजा, 50-51	प्रतिबुद्धि महाराज का दूत प्रेषण, मल्ली विदेह राजकन्या की याचना के लिए दूत का प्रस्थान, प्रतिबुद्धि का मिथिला गमन
30-31	देवों द्वारा नंदीश्वर द्वीप में जन्मोत्सव व मल्ली नामकरण	(2) अंगदेश-चम्पानगरी, चन्द्रच्छाय राजा
32-33	शतायु मल्ली को अवधिज्ञान द्वारा छहों राजाओं की जानकारी	चंपानगरी निवासी अरहन्नक श्रमणोपासक की व्यापार के लिए साथियों के साथ लवण समुद्र की यात्रा
34	अशोक वाटिका में “मोहनघर” का निर्माण	जहाज में अरहन्नक की एक देव द्वारा भयंकर परीक्षा
35	क. मोहनघर के मध्य भाग में स्वर्णमय मल्ली प्रतिमा की मल्ली द्वारा स्थापना	पिशाच रूप में आकर अरहन्नक आदि को डराना
	ख. उसका ढक्कन खोलकर एक कवल भोजन रोज डालना	उपसर्ग आया जानकर अरहन्नक द्वारा सागरी संशारा ग्रहण
36	उस प्रतिमा में भयंकर दुर्गंध उत्पन्न होना	विचलित करने हेतु देव द्वारा अत्यंत त्रास
37	कोशल जनपद, साकेत नगर, दिव्य नागदेव मंदिर	क. साधना से विचलित न होने पर देव द्वारा क्षमायाचना
38-47	(1) प्रतिबुद्धि राजा- पद्मावती रानी द्वारा नागयज्ञ का आयोजन, श्री दामकांड बनवाना, नगर की सफाई का आदेश, रथारूढ़ होकर नागगृह पहुंचना, हाथी पर आरूढ़ होकर राजा का भी वहां पहुंचना, श्रीदामकाण्ड को आश्चर्य से देखते ही रह जाना, इस विषय में अमात्य से चर्चा करना	ख. दृढ़ अरहन्नक को दो दिव्य कुण्डल युगलों की भेंट अरहन्नक का मिथिला गमन
		महाराजा कुम्भ को बहुमूल्य पदार्थों की तथा दिव्य कुण्डल युगल की भेंट
		अरहन्नक का चम्पा में प्रत्यागमन, महाराज चन्द्रच्छाय को एक दिव्य कुण्डल की भेंट
48-49	प्रतिबुद्धि राजा को सुबुद्धि अमात्य द्वारा श्रीदामकाण्ड के बहाने मल्ली विदेह राजकन्या का परिचय	मल्ली विदेह राजकन्या के सम्बन्ध में अरहन्नक का निवेदन
		मल्ली विदेह राजकन्या की याचना के लिए महाराज चन्द्रच्छाय का दूत संप्रेषण

79	(3) कुणाल जनपद, सावत्थी नगरी, रुक्मी राजा, धारिणी रानी, सुबाहुनाम की राजकन्या	96-101	चित्र सभा निर्माण करने का आदेश एक चित्रकार द्वारा मल्ली विदेह राजकन्या के चित्र का निर्माण
80-83	सुबाहु राजकन्या का चातुर्मासिक स्नान महोत्सव		
84	अन्तःपुर रक्षक वर्षधर द्वारा मल्ली विदेह राजकन्या की महिमा	102-104	क. मल्लदित्र कुमार के आदेश से चित्रकार के अँगूठे का छेदन तथा देशनिकाले का दण्ड
85	मल्ली विदेह राजकन्या की याचना के लिए रुक्मी राजा का मिथिला को दूत भेजना	105-107	ख. निर्वासित चित्रकार का हस्तिनापुर में आगमन निष्कासित चित्रकार का अदीनशत्रु को मल्ली विदेह राजकन्या का चित्रपट का दिखाना
86	(4) काशी जनपद, वाराणसी नगरी, शंख राजा		
87	मल्ली विदेह राजकन्या के दिव्य कुण्डल का संधिभेद	108	मल्ली विदेह राजकन्या की याचना के लिए अदीनशत्रु का मिथिला को दूत भेजना
88-89	कुण्डल की संधि को ठीक करने के लिए महाराजा कुम्भ का स्वर्णकारों को आदेश	109	(6) पांचाल जनपद, कंपिलपुर नगर, जितशत्रु राजा, धारिणी आदि 1000 रानियां
90	कुण्डल की भग्न संधि को ठीक करने में असमर्थ सभी स्वर्णकारों को देश निर्वासित करना	110-112	चार वेदों की पारंगता चोखा नाम की परिव्राजिका द्वारा मल्ली विदेह राजकन्या के सन्मुख शौचधर्म का प्रतिपादन
91	निर्वासित स्वर्णकारों का वाराणसी पहुंचना		
92	मल्ली विदेह राजकन्या के सम्बन्ध में काशी राज को जानकारी देना	113-116	मल्ली विदेह राजकन्या द्वारा-रक्त रंजित वस्त्र के उदाहरण से शौचधर्म का परिहार
93	मल्ली विदेह राजकन्या की याचना के लिए काशी राज का मिथिला को दूत भेजना	117-119	अपमानित चोखा परिव्राजिका का कंपिलपुर में आगमन
94	(5) कुरुजनपद, हस्तिनापुर नगर, अदीन शत्रु राजा	120-121	जितशत्रु राजा को कूपमण्डूक का उदाहरण देकर चोखा ने मल्ली विदेह राजकन्या का परिचय दिया
95	मिथिला में महाराजा कुम्भ के सुपुत्र मल्लदित्र कुमार द्वारा	122	मल्ली की याचना के लिए-जितशत्रु राजा आदि ने मिथिला

	को दूत भेजा	153-154	शक्र का आसन कंपित
123-124	छहों दूतों द्वारा कुम्भ राजा को संदेश निवेदन	155	शक्रेन्द्र द्वारा वैश्रमण देव को आदेश
125	दूतों का अपमान	156-158	वैश्रमण देव द्वारा भंडारों में संग्रहण
126-132	प्रतिबुद्धि आदि छहों राजाओं द्वारा मिथिला के चारों ओर घेरा डालना, युद्ध की तैयारी, युद्ध का प्रारंभ, कुंभ राजा की पराजय	159-162	मल्ली अर्हत का एक वर्ष पर्यंत श्रमण-ब्राह्मणों को भोजनदान, स्वर्णदान और इच्छित दान
133	मिथिला के घेराव से कुम्भ राजा को चिंता	163-166	लोकान्तिक देवों द्वारा मल्लीकुमारी को निवेदन
134-135	मल्लीकुमारी द्वारा चिंता संबंधी पृच्छा	167-180	निष्क्रमण महोत्सव का भव्य वर्णन
136	चिंता निवारण का उपाय	181	मल्ली अर्हत का स्वयमेव पंचमुष्टि केश-लुंचन, शक्र का केश-ग्रहण
137	छहों राजाओं का मोहनघर में प्रवेश	182-183	क. मल्ली अर्हत की दीक्षा तिथि, मल्ली अर्हत का पूर्वाह्न काल में सामायिक चारित्र ग्रहण करना व मनः पर्यवज्ञान की प्राप्ति
138	मोहन घर में स्थित मल्लीकुमारी की स्वर्ण प्रतिमा के अवलोकन में गृद्ध		ख. अष्टम भक्त की तपश्चर्या
139-140	मल्लीकुमारी का स्वर्ण प्रतिमा के पास आगमन, मस्तक से ढक्कन खोलने पर भयंकर दुर्गंध व दुर्गंध से सभी राजाओं को घबराहट	184	ग. तीन सौ स्त्रियां व तीन सौ पुरुष साथ में दीक्षित होना
141-143	मल्लीकुमारी द्वारा राजाओं को प्रतिबोध एवं पूर्वजन्म का वृत्तान्त कथन	185	आठ राजकुमारों का साथ में दीक्षित होना
144-145	छहों राजाओं को जाति स्मरण ज्ञान (पूर्व जन्म की स्मृति)	186	नंदीश्वर द्वीप में अष्टाहिका दीक्षा महोत्सव
146	मल्ली विदेह राजकन्या का निष्क्रमण-संकल्प	187	मल्ली अर्हत को दीक्षा के दिन ही अपराह्न में केवलज्ञान होना
147-152	छहों राजा भी दीक्षा के लिए उद्यत	188-190	नंदीश्वर द्वीप में अष्टाहिका केवलज्ञान महोत्सव
			कुम्भ राजा एवं रानी प्रभावती का श्रमणोपासक होना,

मल्ली अर्हंत का धर्मोपदेश, जितशत्रु आदि छः राजाओं का दीक्षित होना, चौदह पूर्वों का अध्ययन, केवलज्ञान की प्राप्ति एवं सिद्धगति			ग. मल्ली अर्हंत का संस्थान घ. मल्ली अर्हंत का संहनन ड. मल्ली अर्हंत का विहार क्षेत्र च. सम्मेद शैल शिखर पर भ. मल्ली अर्हंत की अंतिम आराधना
मल्ली अर्हंत का विहार	191		क. मल्ली अर्हंत का गृहवास काल ख. मल्ली अर्हंत का केवल पर्याय काल ग. मल्ली अर्हंत का पूर्णायु घ. मल्ली अर्हंत का निर्वाण समय ड. मल्ली अर्हंत के साथ निर्वाण होने वालों की संख्या च. नंदीश्वर द्वीप में अष्टाहिका निर्वाण महोत्सव उपसंहार
क. मल्ली अर्हंत के गण ख. मल्ली अर्हंत के गणधर ग. मल्ली अर्हंत के श्रमण घ. मल्ली अर्हंत की श्रमणियाँ ड. मल्ली अर्हंत के श्रावक च. मल्ली अर्हंत की श्राविकायें छ. मल्ली अर्हंत के चौदह पूर्व धारी मुनि ज. मल्ली अर्हंत के अवधिज्ञानी मुनि झ. मल्ली अर्हंत के केवल ज्ञानी ञ. मल्ली अर्हंत के वैक्रियलब्धि संपन्न मुनि ट. मल्ली अर्हंत के मनःपर्यव ज्ञानी ठ. मल्ली अर्हंत के वादलब्धि सम्पन्न मुनि ड. मल्ली अर्हंत के अनुत्तरोपपातिक मुनि मल्ली अर्हंत के दो प्रकार की अंतकृत भूमियाँ	192	195	
क. मल्ली अर्हंत की ऊँचाई ख. मल्ली अर्हंत का वर्ण	193 194	196	
			नवम मार्कंदी अध्ययन क. उत्थानिका, चम्पा नगरी, पूर्णभद्र चैत्य, मार्कंदी सार्थवाह, भद्रा भार्या, सार्थवाह के दो पुत्र- जिन पालित और जिन रक्षित ख. व्यापारार्थ जिनपालित और जिनरक्षित की बारहवीं बार लवण समुद्र यात्रा यात्रा में अनेक विघ्न, भयंकर तूफान क. नौका की विभिन्न स्थितियाँ, अनेक उदाहरण

11-14	ख. नौका के टुकड़े-टुकड़े क. फलक के सहारे जिन पालित और जिन रक्षित का रत्नद्वीप के तट पर पहुँचना	39-40 41-42 43-57	छुटकारे की प्रार्थना पर यक्ष द्वारा शर्त यक्ष पर आरूढ़ दोनों भाईयों का चम्पानगरी के लिए प्रस्थान रत्नद्वीप की देवी द्वारा दोनों भाईयों को तरह-तरह के प्रलोभन वचन से जिनरक्षित का मन चलायमान, शैलक यक्ष द्वारा उसे अपनी पीठ से गिरा देना चंचलचित्त जिनरक्षित पर रत्नद्वीप की देवी द्वारा असि प्रहार
15	ख. जहाँ उत्तम भवन, पापिनी देवी, चार वनखण्ड किनारे पर दोनों द्वारा विश्राम, स्नान व बीती स्थिति पर चिंतन	58	
16	देवी ने अर्वाधिज्ञान से देखा व दोनों के पास आई		
17-18	धमकी भरे वचनों से उन्हें साथ चलने हेतु तैयार किया	59-60	निर्ग्रन्थ-निर्ग्रन्थियों को जिनरक्षित के समान चंचलचित्त न होने का भ. महावीर का उपदेश
19	रत्नद्वीप की देवी का दोनों भाईयों को अपने साथ ले जाना, अपने प्रासाद में रखना व काम-भोग सेवन करना	61-65	दृढ़मना जिनपालित का स्वगृह गमन, परिवार को सारी स्थिति बताना
20	लवण समुद्र की सफाई के लिए लवणाधिप सुस्थित देव का रयणादेवी को आदेश देना	66	भ. महावीर का समवसरण, जिनपालित का धर्मश्रवण करना, प्रव्रज्या लेना, देवभव, महाविदेह से मुक्ति
21-25	पूर्व, उत्तर व पश्चिम के वनखण्डों की विशेषताएं व उनमें घूमने जाने की देवी की आज्ञा	67	निर्ग्रन्थ-निर्ग्रन्थियों को जिनपालित के समान स्थिरचित्त रहने का भ. महावीर का उपदेश
26-27	दक्षिण दिशा के वनखण्ड में जाने का निषेध, वहाँ विषधर सर्प जिससे तुम्हारी मृत्यु संभव	68	उपसंहार
28-35	दोनों भाईयों का पूर्वादि क्रम से दक्षिण दिशा के वनखण्ड में जाना और शूलारोपित पुरुष से वास्तविक स्थिति का ज्ञान प्राप्त होना	1-3	दशम 'चन्द्र' अध्ययन (आत्मगुणों की वृद्धि) उत्थानिका- राजगृह नगर, श्रेणिक राजा, गुणशील उद्यान, भ. महावीर का पदार्पण, धर्मोपदेश
36-38	शैलक यक्ष की उपासना		

ज्ञाता. श्रु.1, अ.10, सू.4-7, अ.11, सू.1-14 6 ज्ञाता धर्मकथांग विषय सूची		ज्ञाता. श्रु.1, अ.12, सू.1-30, अ. 13, सू.1-7	
4-6	कृष्ण एवं शुक्ल पक्ष के चन्द्र की हानि-वृद्धि के समान	7-9	सुबुद्धि अमात्य का मौन
	जीव के निज गुणों की हानि-वृद्धि	10-14	क. खाई के गंदे पानी आदि से राजा आदि को घबराहट
7	उपसंहार		ख. सुबुद्धि अमात्य का कथन-पुद्गल स्वभाव
	एकादशम 'दावद्रव' अध्ययन	15	सुबुद्धि अमात्य द्वारा राजा को प्रतिबोध का निश्चय
	(जिन मार्ग की आराधना-विराधना)	16-18	परिखा के गंदे पानी को स्वच्छ करने की प्रक्रिया
1-3	उत्थानिका- राजगृह नगर, श्रेणिक राजा, गुणशील उद्धान,	19	राजा को पानी का उपहार
	भ. महावीर का पदार्पण, धर्मोपदेश	20-23	राजा की तत्व-जिज्ञासा
4-7	देश विराधक- उपमा- दावद्रव वृक्ष, उपमेय- साधक	24	राजा का श्रावक धर्म स्वीकार करना
	श्रमणादि	25-26	स्थविरों का आगमन, सुबुद्धि की प्रवज्या-भावना
8-9	देश आराधक- उपमा- समुद्र की वायु, उपमेय- अन्यतीर्थी	27-28	जितशत्रु राजा और सुबुद्धि अमात्य की प्रवज्या
10	उपमा- द्वीप का वायु, उपमेय- स्वतीर्थी	29	दोनों द्वारा ग्यारह अंग अध्ययन, अनेक वर्षों की श्रमण
11-13	सर्व आराधक, सर्व विराधक		पर्याय, एक मास की संलेखना, दोनों को शिवपद की प्राप्ति
14	उपसंहार	30	उपसंहार
	द्वादशम 'उदकज्ञात' अध्ययन		त्रयोदशम 'दुर्' अध्ययन
	(पुद्गल परिणति)		(सत्संग के अभाव में आत्मगुणों का अपकर्ष)
1-3	उत्थानिका, चम्पानगरी, पूर्णभद्र चैत्य, जितशत्रु राजा, धारिणी राणी, युवराज अदीन शत्रु, सुबुद्धि अमात्य, अति दुर्गीधत परिखोदक (खाई का पानी)	1-2	उत्थानिका- राजगृह नगर, गुणशील चैत्य
	राजा जितशत्रु द्वारा भोजन की प्रशंसा	3	भ. महावीर का समवसरण-धर्मकथा
		4	दुर्देव का आगमन व नाट्य प्रदर्शन
4-6		5-7	भ. गौतम की जिज्ञासा, भ. महावीर द्वारा दुर्देव का

पूर्वभव कथन			
8	महाराज श्रेणिक, नंद मणियार का धर्म-श्रवण, व्रतधारण	28	ख. पुनः स्वयमेव श्रावक धर्म स्वीकार
9	नंद मणियार को मिथ्यात्व की प्राप्ति		क. मेंढक भव में धर्म आराधना व बेले-बेले तपश्चर्या
10	क. अष्टम भक्त तप में प्यास, व्याकुलता	29	ख. मैले के पानी से जीवन-निर्वाह
	ख. नन्द मणियार का पुष्करिणी-निर्माण-मनोरथ	30-31	भ. महावीर का समवसरण
11	राजा द्वारा पुष्करणी खुदवाने की आज्ञा		भगवान को वंदना के लिए जाते समय ददुर का श्रेणिक
12	वैभारगिरि की तलहटी में नंदा पुष्करिणी-निर्माण	32	राजा के अश्व के पैर से घायल होना
13	चारों दिशाओं में चार वनखण्डों का निर्माण	33-34	ददुर की अंतिम आराधना
14-15	पूर्व दिशा के वनखण्ड में चित्रसभा का निर्माण		सौधर्म कल्प में उपपात, चार पल्योपम की स्थिति,
16	दक्षिण दिशा के वनखण्ड में भोजनशाला का निर्माण	35	महाविदेह में जन्म और निर्वाण प्राप्ति
17	पश्चिम दिशा के वनखण्ड में चिकित्साशाला का निर्माण		उपसंहार
18	उत्तर दिशा के वनखण्ड में अलंकार सभा का निर्माण	1-2	चतुर्दशम 'तेतलीपुत्र' अध्ययन
19	पुष्करिणी में जनता द्वारा स्नानादि	3-4	उत्थानिका- तेतलीपुर नगर, प्रमदवन उद्यान
20	नंद मणियार व पुष्करिणी की प्रशंसा		कनकरथ राजा, पद्मावती देवी, तेतली पुत्र अमात्य,
21-22	क. नंद मणियार के शरीर में सोलह रोगों की उत्पत्ति		मुसिकादारक नामक स्वर्णकार, उसकी भद्रा भार्या व
	ख. सोलह रोगों के नाम	5-14	पोहिला नामक पुत्री
23-24	क. नंद की मृत्यु	15	तेतली पुत्र का पोहिला से विवाह
	ख. नंदा पुष्करिणी में ददुर (मेंढक) रूप में जन्म	16-25	कनकरथ राजा द्वारा पुत्रों को अंग विकल करना
25-27	क. नंद की प्रशंसा सुनने पर ददुर को पूर्वजन्म की स्मृति	26	तेतली पुत्र द्वारा पोहिला और पद्मावती की संततियों में परिवर्तन
			तेतली पुत्र का पोहिला से रुष्ट होना

27	पोट्टिला की दान देने में अभिरुचि	51	प्रव्रज्या के लिए पोट्टिल देव की प्रेरणा
28-29	सुव्रता आर्या का आगमन	52-53	क. तेतली पुत्र को जाति स्मरण
30	वशीकरण के लिए पोट्टिला की पृच्छा	ख.	पूर्वभव का वर्णन-जम्बूद्वीप, महाविदेह क्षेत्र, पुष्कलावती विजय, पुण्डरीकिणी राजधानी, महापद्म राजा, स्थविरों के पास प्रव्रज्या, चौदह पूर्व का ज्ञान, अंतिम आराधना, महाशुक्रकल्प में उत्पन्न होना, च्यवन, तेतली पुत्र रूप में पुनः उत्पन्न
31-32	सुव्रता का उपदेश		तेतली पुत्र की प्रव्रज्या, चौदह पूर्व का ज्ञान, केवलज्ञान केवलज्ञान का महोत्सव
33	पोट्टिला का श्रमणोपासिका होना	54	तेतली पुत्र की प्रव्रज्या, चौदह पूर्व का ज्ञान, केवलज्ञान केवलज्ञान का महोत्सव
34	पोट्टिला द्वारा तेतली पुत्र से दीक्षा की आज्ञा	55	तेतली पुत्र मुनि की वंदना के लिए कनक ध्वज राजा का जाना, धर्म श्रवण करना, व्रत धारण
35	“यदि देवलोक में जाओ तो मुझे आकर प्रतिबोध दो” तो आज्ञा	56-57	तेतली पुत्र का केवल ज्ञान सम्पन्न जीवन, सिद्धपद उपसंहार
36-37	पोट्टिला की प्रव्रज्या, ग्यारह अंगों का अध्ययन, अनेक वर्षों का श्रमण-जीवन, एक मास की संलेखना, देवलोक में उपपात	58	
38-39	कनकरथ राजा की मृत्यु	59	
40-42	कनकध्वज का राज्याभिषेक, तेतली पुत्र के सन्मान की वृद्धि		
43-45	पोट्टिलदेव का तेतलीपुत्र को प्रतिबोध देना		पंचदशम ‘नंदीफल’ अध्ययन (अज्ञात फल के खाने का निषेध)
46	कनकध्वज राजा का तेतली पुत्र से विमुख होना	1-2	उत्थानिका- चंपा नगरी, पूर्णभद्र चैत्य, जितशत्रु राजा, धन्ना सार्थवाह
47	तेतली पुत्र के गृह में तेतली का अनादर		
48-50	क. विष, असि, फाँसी, पानी, अग्नि से आत्महत्या के लिए तेतली पुत्र के प्रयत्न ख. देवमाया से सब प्रयत्न विफल	3 4-7	अहिछत्रा नगरी, कनक केतु राजा क. धन्ना सार्थवाह का व्यापार के लिए अहिछत्रा जाने का संकल्प व घोषणा

8	ख. बहुत से लोग साथ में जाने को तैयार धन्य का अहिछत्रा की ओर प्रस्थान	6-8	क. नागश्री ने कड़वे तुंबे का शाक बनाया ख. चखने के पश्चात् एकांत में रख दिया ग. मधुर तुंबे का पुनः शाक बनाया व सबने भोजन किया
9-13	अहिछत्रा के मार्ग में नंदीफल खाने वाले साथियों की मृत्यु, न खाने वालों का बचाव		
14	निर्ग्रन्थ-निर्ग्रन्थियों को भ. महावीर की शिक्षा	9	धर्मघोष स्थविर का आगमन
15	अहिछत्रा के महाराज कनक केतु को बहुमूल्य पदार्थों की भेंट	10	धर्मरुचि अणगार का भिक्षार्थ गमन
16	क. राजा द्वारा कर से मुक्ति ख. चंपानगरी में धन्ना सार्थवाह का आगमन	11-12	नागश्री ने कड़वे तुंबे का शाक धर्मरुचि को दिया
17	स्थविरों का आगमन, धन्ना का धर्मश्रवण, ज्येष्ठ पुत्र को गृह भार सौंपना, प्रव्रज्या, ग्यारह अंगों का अध्ययन, अनेक वर्षों का श्रमण जीवन, एक मास की सलेखना, देवलोक में उपपात, च्यवन, महाविदेह में जन्म और निर्वाण	13	अल्लाम्बु व्यंजन आचार्यश्री को दिखाना, व्यंजन परीक्षा, खाने का निषेध
18	उपसंहार	14	अल्लाम्बु व्यंजन डालने के लिए धर्म रुचि का श्मशान भूमि में जाना
1-2	उत्थानिका- चंपा नगरी, सुभूमिभाग उद्यान	15	कीड़ियों की हिंसा देखकर अल्लाम्बु व्यंजन स्वयं खा लेना
3	तीन ब्राह्मण और उनकी तीन भार्याएँ	16	शाक खाने से धर्मरुचि को असह्य वेदना
4-5	तीनों ब्राह्मणों द्वारा सहभोज का निर्णय	17-18	धर्मरुचि की संथारा सहित मृत्यु
		19	धर्मरुचि की शोध
	षोडशम 'अपरकंका' अध्ययन (फलेच्छा का निषेध)	20-21	धर्मरुचि की मरणासन्न स्थिति देखकर आचार भाण्ड लिये व मुनि ने स्थविर से वृत्तांत निवेदन किया
	उत्थानिका- चंपा नगरी, सुभूमिभाग उद्यान	22	ज्ञानी स्थविर द्वारा नागश्री द्वारा बहराये कड़वे तुंबे की शिष्यों के साथ चर्चा
	तीन ब्राह्मण और उनकी तीन भार्याएँ		
	तीनों ब्राह्मणों द्वारा सहभोज का निर्णय	23-24	धर्मरुचि का सर्वार्थसिद्ध में उपपात, च्यवन, महाविदेह

में जन्म और निर्वाण	70	गोपालिका आर्या की आतापना लेने के लिए निषेधाज्ञा
25-33 नागश्री की निन्दा, गृह से निष्कासन, सोलह रोगों की उत्पत्ति, मृत्यु, नरक गति व अनेक भव में भ्रमण	71	सुकुमालिका द्वारा न मानना व बेले-बेले की तपश्चर्या के साथ आतापना लेना
34-36 चंपा नगरी, सागरदत्त सार्थवाह, भद्राभार्या, नागश्री की आत्मा का सुकुमालिका के रूप में जन्म, धायमाताओं द्वारा पालन-पोषण	72-74	चंपानगरी में ललिता गोष्ठी, देवदत्ता गणिका के साथ गोष्ठी पुरुषों की भोग-लीला, सुकुमालिका आर्या का निदान करना
37-44 चंपानगरी, जिनदत्त सार्थवाह, भद्रा भार्या, सागर पुत्र	75	सुकुमालिका का शरीर-बकुषा होना, बार-बार हाथ-पैर आदि धोना
45-47 सागर पुत्र का सुकुमालिका से विवाह	76-77	गोपालिका आर्या द्वारा उपालंभ देना
48-58 सुकुमालिका के अनिष्ट स्पर्श से सागर का स्वगृह-गमन	78	सुकुमालिका द्वारा पृथक् विहार व पार्श्ववर्ती उपाश्रय में
59 सागरदत्त ने फटे वस्त्र पहने, हाथ में सिकोरे लिए हुए एक भिखारी को देखा, उसे बुलाया		निवास
60-63 भिखारी को अच्छी तरह स्नान-मर्दन व अच्छे वस्त्र पहनाकर सुसज्जित करना	79	क. अनेक वर्षों तक साध्वी-पर्याय का पालन, पन्द्रह दिन की संलेखना, अकृत्य स्थान की आलोचना
64 सुकुमालिका का उस भिखारी के साथ विवाह		ख. मृत्यु होने पर ईशान कल्प में देवगणिका होना, नव पल्योपम की स्थिति प्राप्त करना
65 अनिष्ट स्पर्श से भिखारी भी पलायन		
66-67 क. सुकुमालिका की दान में अभिरुचि		
ख. गोपालिका आर्या का आगमन		
ग. सुकुमालिका द्वारा तंत्र-मंत्र की पृच्छा		
68-69 सुकुमालिका का धर्म-श्रवण, प्रव्रज्या, अध्ययन, ग्राम के बाहर सूर्य-आतापना लेना		
	80-85	जम्बूद्वीप, भरत क्षेत्र, पांचाल जनपद, कापिल्यपुर नगर, द्रुपद राजा, चुलनी रानी, युवराज धृष्टद्युम्न कुमार, सुकुमालिका की आत्मा का द्रौपदी के रूप में जन्म व नामकरण, धायमाताओं द्वारा पालन, युवावस्था प्राप्त

द्रौपदी कथा

86-90	द्रौपदी का स्वयंवर, प्रमुख राजपुरुषों को निमंत्रण, प्रथम दूत को द्वारावती भेजना	104	दशम दूत को शेष नगरों में भेजना, उन नगरों के राजाओं को निमंत्रण
91-94	श्रीकृष्ण आदि को निमंत्रण, श्रीकृष्ण का कापिलपुर नगरी की ओर प्रयाण	105-106 107	सभी जगह दूतों का सम्मान राजाओं का पांचाल जनपद की ओर प्रस्थान
95-96	द्वितीय दूत को हस्तिनापुर भेजना, युधिष्ठिर सहित पांडू राजा को निमंत्रण	108 109-113	गंगा महानदी के समीप स्वयंवर मण्डप की रचना द्रुपद राजा द्वारा आवास, भोजन आदि की व्यवस्था
97	तृतीय दूत को चंपानगरी भेजना, शैल्लक नंदिराज आदि को निमंत्रण	114-117 118-123	स्वयंवर मण्डप में सभी राजाओं का आगमन द्रौपदी का स्वयंवर मण्डप में प्रवेश
98	चतुर्थ दूत को शक्तिमति नगरी भेजना, शिशुपाल राजा आदि को निमंत्रण	124-128	पाँच पाण्डवों का वरण, आठ हिरण्य कोटि आदि तथा आठ दासियाँ प्रीतिदान में मिलना
99	पंचम दूत को हस्तिशीर्ष नगर भेजना, दमदंत राजा आदि को निमंत्रण	129-135	पांडु राजा, पाँच पाण्डव और द्रौपदी आदि का हस्तिनापुर आना
100	षष्ठ दूत को मथुरा नगरी भेजना, धर नामक राजा आदि को निमंत्रण	136 137	हस्तिनापुर में कल्याण-करण महोत्सव द्रौपदी द्वारा एक-एक के साथ बारी-बारी से काम-भोग
101	सप्तम दूत को राजगृह नगर भेजना, सहदेव राजा आदि को निमंत्रण	138 139	पांचों पांडव कुंती आदि सिंहासन पर कच्छुल्ल नारद का हस्तिनापुर आगमन
102	अष्टम दूत को कौडिन्य नगर भेजना, रूक्मी राजा आदि को निमंत्रण	140-141 142	पाण्डु राजा आदि के द्वारा नारद जी का आदर सम्मान द्रौपदी द्वारा नारद का अनादर
103	नवम दूत को विराट नगर भेजना, कीचक राजा आदि को निमंत्रण	143 144	नारद का द्रौपदी से बदला लेने के संकल्प से प्रस्थान धातकी खण्ड द्वीप, अमरकंका राजधानी, पद्मनाभ राजा,

145-146	सात सौ रानियों का अंतःपुर, युवराज सुनाभ		पौषधशाला में जाकर सुस्थित देव को आह्वान करना
147	नारद का पद्मनाभ के अंतःपुर में प्रवेश	175	श्री कृष्ण का अष्टम भक्त तप, सुस्थित देव का आगमन
148	अपने अंतःपुर के सम्बन्ध में पद्मनाभ की जिज्ञासा	176-178	देव द्वारा पांचों पांडव व श्रीकृष्णजी के रथों को लवण समुद्र में मार्ग देना
149	क. नारद ने पद्मनाभ को कूपमण्डूक की उपमा दी		
	ख. द्रौपदी के रूप-लावण्य की चर्चा	179	श्री कृष्ण और पाण्डवों के रथों का अमरकंका पहुँचना
	पद्मनाभ की दुर्लालिसा व द्रौपदी को पाने के लिए तेले तप	180-181	पद्मनाभ को सूचना देने के लिए दारुक दूत को भेजना
	की साधना	182-183	पद्मनाभ द्वारा लौटाने से इन्कार व दूत का तिरस्कार
150-153	मित्रदेव द्वारा सुप्त युधिष्ठिर के समीप से द्रौपदी का साहरण	184-185	पद्मनाभ के साथ पाण्डवों का युद्ध
154	पद्मनाभ द्वारा द्रौपदी को भोग आमंत्रण	186	पांडवों की पराजय
155	मेरे स्वामी के भ्राता श्रीकृष्णजी छह मास में मेरे को न छुड़ायेँगे तो आज्ञा स्वीकार	187-189	श्री कृष्ण का शंखनाद, धनुषटंकार, पद्मनाभ की पराजय
156	बेला व पारणे में आयबिल तप के साथ साधना	190	पद्मनाभ द्रौपदी की शरण में
157-159	जागृत युधिष्ठिर द्वारा द्रौपदी की शोध	191-192	श्रीकृष्णजी से क्षमायाचना व द्रौपदी-समर्पण
160-164	द्रौपदी की शोध के लिए कुंती भुवा की श्री कृष्ण से प्रार्थना	193	पाण्डवों और द्रौपदी को साथ लेकर श्रीकृष्ण का भारत की ओर प्रयाण
165-167	श्री कृष्ण का कुंती भुवा को खोजने का आश्वासन	194	धातकी खण्ड द्वीप का पूर्वार्ध, भरत क्षेत्र, चंपानगरी, पूर्ण भद्र चैत्य, कपिल वासुदेव
168	कच्छुल्ल नारद का आगमन	195-196	भ. मुनिसुव्रत का समवसरण, धर्म श्रवण करते समय शंखनाद श्रवण से कपिल वासुदेव के मन में उत्पन्न जिज्ञासा का भ. मुनिसुव्रत द्वारा समाधान
169	श्री कृष्ण को द्रौपदी का पता देना		
170-173	पाण्डवों को ससैन्य पूर्व वैताली समुद्र तट आने का आदेश		
174	श्री कृष्ण का ससैन्य पूर्व वैताली पहुँचना, पड़ाव डालना,	197-198	एक क्षेत्र में एक साथ दो अहिंन्त, चक्रवर्ती, बलदेव और

199-200	वासुदेव के होने का निषेध तथा मिलने का निषेध श्री कृष्ण और कपिल वासुदेव का पांचजन्य शंखनाद से मिलन	217-218	स्थविरों का आगमन, पाण्डवों का धर्मश्रवण, प्रव्रज्या लेने का संकल्प
201-203	कपिल वासुदेव द्वारा पद्मनाभ का देश निष्कासन और पद्मनाभ के पुत्र का राज्याभिषेक	219	पाण्डुसेन का राज्याभिषेक, पाण्डवों की प्रव्रज्या, चौदह पूर्वों का अध्ययन, तपश्चर्या
204-207	पाण्डवों का नौका द्वारा गंगा नदी उत्तीर्ण होना, श्री कृष्ण की बल परीक्षा के लिए नौका को छिपाना-पाण्डवों की शरारत	220	द्रौपदी की सुव्रता आर्या के समीप प्रव्रज्या, ग्यारह अंगों का अध्ययन, तपाराधना
208	क्रुद्ध श्री कृष्ण द्वारा पाण्डवों के रथों का चूर्ण कर देना, देश निकाला देना और रथमर्दन नामक कोट की स्थापना करना	221	स्थविरों का पाण्डु-मथुरा के सहस्राप्रव्रन से विहार
209	श्री कृष्ण का ससैन्य द्वारिका पहुँचना	222	क. 'भ. नेमीनाथ इस समय सौराष्ट्र में हैं' यह संवाद पाण्डव मुनियों को प्राप्त हुआ
210	पाण्डवों का हस्तिनापुर में आगमन, अमरकंका पर विजय, पाण्डु राजा से यात्रा के वृत्तांत का निवेदन	223	ख. भ. नेमीनाथ की वंदना हेतु जाने के लिए स्थविरों से आज्ञा प्राप्त करके विहार करना
211-213	पाण्डु राजा और कुंतीदेवी का द्वारिका आगमन	224	पाण्डव मुनियों का हस्तिकल्प नगर के सहस्राप्रव्रन में पहुँचना
214	श्री कृष्ण का पाण्डु-मथुरा बसाने का आदेश		भिक्षा के समय पाण्डव मुनियों को भ. अरिष्ट नेमनाथ के (शैलशिखर पर) पांच सौ छत्तीस साधुओं के साथ निर्वाण होने के समाचार मिलना
215	पाण्डवों द्वारा दक्षिण समुद्र तट पर पाण्डु-मथुरा बसाना और उसमें निवास करना	225-226	गुंथिष्ठिर अणगरा को निर्वाण के समाचार अर्ज किये व पूर्व में लिया हुआ आहार-पानी को परठ दिया, पाण्डव मुनियों की शत्रुञ्जय पर्वत पर अंतिम आराधना
216	द्रौपदी के पुत्र का जन्म, पाण्डूसेन नामकरण, अध्ययन, विवाह, युवराज पद	227	दो मास की संलेखना, सिद्ध पद की प्राप्ति

ज्ञाता. शु.1, अ.16, सूत्र 228-231	6 ज्ञाता धर्मकथांग विषय सूची	ज्ञाता. शु.1, अ.17, सूत्र 1-31, अ.18, सूत्र 1-9
228-229	द्रौपदी आर्या की अंतिम आराधना, दो मास की संलेखना, ब्रह्मलोक कल्प में हुपद देव होना, दस सागरोपम की स्थिति	आदेश शब्द-गंध-रस एवं स्पर्शजन्य आसक्ति की अभिवृद्धि करने वाले पदार्थ जहाज में भरकर सांयात्रिक व्यापारियों का कालिक द्वीप पहुँचना
230	वहां से महाविदेह में जन्म और निर्वाण	उत्कृष्ट शब्द-गंध-रस के पुद्गलों से अश्वों को आधीन करना
231	उपसंहार	18-22
	सप्तदशम 'आक्कीर्ण' अध्ययन	
1-2	उत्थानिका, हस्तिशीर्ष नगर, कनककेतु राजा	निर्ग्रन्थ-निर्ग्रन्थियों को भगवान महावीर की शिक्षा
3	सांयात्रिक (नौका) व्यापारियों की लवणसमुद्र यात्रा	23 24 विषय लोलुपता का दुष्परिणाम
4-5	अकालवायु, निर्यामक का दिग्मूढ होना	अश्वरत्न लेकर हस्तिशीर्ष नगर पहुँचना, सांयात्रिकों आदि का सत्कार
6	इन्द्रादि की पूजा करना	25-26
7-8	दिशाबोध होने पर कालिक द्वीप पहुँचना	अश्वशिक्षकों से अश्वों को शिक्षा दिलाना
9	कालिक द्वीप में हिरण्य स्वर्ण आदि की खान तथा अश्व रत्न देखना	निर्ग्रन्थ-निर्ग्रन्थियों को भ. महावीर की शिक्षा
10-11	क. हिरण्य स्वर्ण आदि बहुमूल्य पदार्थ जहाजों में भरकर हस्तिशीर्ष नगर पहुँचना	इन्द्रियलोलुप और इन्द्रियविजयी के गुण-अवगुण की गाथाएं उपसंहार
	ख. कनककेतु महाराजा को बहुमूल्य पदार्थों की भेंट, राजा द्वारा भेंट स्वीकार	अष्टदशम 'सुसुमा' अध्ययन
12	कालिक द्वीप के अश्वरत्नों के सम्बन्ध में महाराजा से निवेदन	उत्थानिका- राजगृहनगर, धन्ना सार्थवाह, भद्रा भार्या, सार्थवाह धन्ना के पाँच पुत्र और एक पुत्री सुसुमा, दास पुत्र चिलात
13	राजपुरुषों के साथ जाकर अश्वरत्न लाने का राजा का	चोरी की आदत के कारण चिलात का घर से निकलना दास चेटक का दुर्व्यसनी होना

10-13	सिंहगुफा नाम की चोर पल्ली, पाँच सौ चोरों का अधिपति विजय चोर	41	धन्ना और उसके पाँचों पुत्रों का राजगृह में आगमन
14-15	चिलात विजय का प्रिय शिष्य बना	42	भ. महावीर का समवसरण, धन्ना सार्थवाह का धर्मश्रवण, प्रव्रज्या-ग्रहण, ग्यारह अंगों का अध्ययन, एक मास की संलेखना, सौधर्म देवलोक में देव होना, च्यवन, महाविदेह में जन्म और निर्वाण
16	विजय से उसने अनेक चौर्यकर्म-विद्याएँ सीखी		निर्ग्रन्थ-निर्ग्रन्थियों को भ. महावीर की धर्मशिक्षा
17-20	विजय की मृत्यु के पश्चात् उसका उत्तराधिकारी बना	43	उपसंहार
21-25	साथियों सहित चिलात ने धन्ना सार्थवाह के घर चोरी की और सुसुमा का अपहरण किया	44	
26	नगर-रक्षकों के समक्ष फरियाद		एकोनविंशतितम 'पुण्डरिक' अध्ययन
27-29	ग्राम-रक्षकों को साथ लेकर धन्ना सार्थवाह और उसके पाँच पुत्रों ने चिलात का पीछा किया	1-2	उत्थानिका- जम्बूद्वीप, पूर्व विदेह क्षेत्र , पुष्कलावती विजय, पुण्डरिकिणी राजधानी, नलिनी वन उद्यान
30	चिलात सुसुमा का मस्तक काट कर ले भागा	3	क. महापद्म राजा, पद्मावती रानी, पुण्डरिक और कण्डरिक दो राजकुमार
31	भूखा प्यासा चिलात अटवी में मर गया		ख. पुण्डरिक को युवराज पद
32	निर्ग्रन्थ-निर्ग्रन्थियों को भ. महावीर की शिक्षा	4-5	स्थविरों का आगमन, धर्म-श्रवण, पुण्डरिक को राज्यपद, कण्डरिक को युवराज पद, महापद्म की प्रव्रज्या, चौदह पूर्व का अध्ययन-यावत्-सिद्ध पद
33-34	सुसुमा दारिका को मृत देखकर धन्य आदि को शोक		स्थविरों का आगमन, धर्म-श्रवण, पुण्डरिक का श्रमणोपासक बनना, कण्डरिक की प्रव्रज्या, स्थविरों का विहार
35	चोर के पीछे दौड़ने से धन्य आदि को भूख-प्यास की भयंकर वेदना		पित्तदाह से पीड़ित कण्डरिक मुनि का स्वास्थ्य लाभ के लिए पुण्डरिकिणी नगरी में आगमन
36	धन्य सार्थवाह का प्राण त्याग का प्रस्ताव	6-11	
37-38	ज्येष्ठ पुत्र आदि की प्राणोत्सर्ग की तैयारी		
39-40	क्षुधा-पिपासा से पीड़ित धन्ना सार्थवाह और उसके पुत्रों ने बहन सुसुमा के कलेवर को पकाकर खाया	12-13	

15-24	श्रमण-संपदा, श्रमणी-संपदा)	37	चमर अग्रमहिषी राजी देवी का आगमन, वंदन, नाटक दिखाना, गमन
25	काली का आगमन, धर्मश्रवण, पुष्पचूला आर्या के समीप प्रव्रज्या-ग्रहण, ग्यारह अंगों का अध्ययन, तपश्चर्या की आराधना	38	क. भ. गौतम द्वारा पूर्वभव पृच्छा, आमलकप्पा नगरी, अंबशाल वन, जितशत्रु राजा
26-29	काली आर्या का पुनः-पुनः अंगोपांग-प्रक्षालन पुष्पचूला आर्या की आज्ञा का उल्लंघन, भिन्न उपाश्रय में निवास		ख. राजी गाथापति, राजीश्री भार्या, राजी नामक पुत्री
30	क. पन्द्रह दिन की संलेखना, अनाचार का प्रार्थश्चित्त किये बिना ही देह-त्याग	39	ग. भ. पार्श्वनाथ का समवसरण, राजीश्री की प्रव्रज्या -यावत्- शिवपद की प्राप्ति
31	ख. चमरचंचा राजधानी के कालावतसक विमान में उपपात	40	उपसंहार
32	उत्पन्न होते ही पांच पर्याप्तियों से पर्याप्त	41	उत्थानिका
33	दिव्य देव ऋद्धि, दिव्य देव द्युति व दिव्य देवानुभाव प्राप्त ढाई पल्योपम की स्थिति, च्यवन, महाविदेह से शिवपद की प्राप्ति		राजगृहनगर, गुणशील चैत्य, आमलकल्पा नगरी, रजनी गाथापति, रजनीश्री भार्या, रजनी नामक पुत्री व प्रव्रज्या -यावत्- मोक्ष
34	उपसंहार	42	4. चतुर्थ विद्युत अध्ययन
35	2. द्वितीय राजी अध्ययन		उत्थानिका- आमलकल्पा नगरी, विद्युत नामक गाथापति, पत्नी विद्युतश्री, विद्युत नामक पुत्री, शेष वर्णन पूर्ववत्
36	उत्थानिका	43	5. पंचम मेघा अध्ययन
	राजगृह नगर, गुणशील चैत्य, भ. महावीर का समव-सरण, प्रवचन		उत्थानिका- आमलकल्पा नगरी, मेघ गाथापति, मेघ श्रीभार्या, मेघा नामक पुत्री, शेष वर्णन पूर्व अध्ययन के समान

44-45	द्वितीय बलेन्द्र अग्रमहिषी वर्ग उत्थानिका- पांच अध्ययनों के नाम	53	राजगृह नगर, गुणशील चैत्य, भ. महावीर का समवसरण, प्रवचन, धरणेन्द्र की अग्रमहिषी इलादेवी का आगमन, वंदन, नाटक दिखाना, गमन
46-48	1. प्रथम शुंभा अध्ययन उत्थानिका- राजगृह नगर, गुणशील चैत्य, भ. महावीर का समवसरण, प्रवचन, बलेन्द्र अग्रमहिषी, शुंभादेवी का वंदन, नाटक दिखाना, गमन	54	पूर्वभव पृच्छा- वाराणसी नगरी, काम महावन चैत्य, इल गाथापति, इलश्री भार्या, इला नामक पुत्री, भ. पार्श्वनाथ का समवसरण-यावत्-शिव पद की प्राप्ति उपसंहार
49	भ. गौतम द्वारा पूर्वभव पृच्छा- श्रावस्ती नगरी, कोष्टक चैत्य, जितशत्रु राजा, शुंभ गाथापति, शुंभश्री भार्या, शुंभा नामक पुत्री, शुंभा देवी की साढ़े तीन पल्योपम की आयु, शेष वर्णन पूर्ववत्	55	2. द्वितीय सतेरा अध्ययन 3. तृतीय सौदामिनी अध्ययन 4. चतुर्थ इन्द्रा अध्ययन 5. पंचम घना अध्ययन 6. षष्ठ विद्युता अध्ययन
50	निशुंभा अध्ययन 3. तृतीय रंभा अध्ययन 4. चतुर्थ निरंभा अध्ययन 5. पंचम मदना अध्ययन ये चारों अध्ययन प्रथम अध्ययन अनुसार विशेष- माता-पिता के नाम अध्ययन नाम अनुसार	56	इन देवियों के पांचों अध्ययन प्रथम अध्ययन के अनुसार ये धरणेन्द्र की अग्रमहिषियां हैं
51-52	तृतीय धरणेन्द्रादि अग्रमहिषी वर्ग उत्थानिका- प्रथम अध्ययन -यावत्- चौपनवां अध्ययन	57	7-12 वेणुदेव अग्रमहिषियों के छह अध्ययन
	1. प्रथम इला अध्ययन	58	13-54. हरि -यावत्- घोष अग्रमहिषियों के छह अध्ययन हरि, अग्निशिख, पूर्ण, जलकान्त, अमितगति, वेलम्ब और घोष इन्द्र की पट्टरानियों के भी ये छह-छह अध्ययन पूर्ववत् कहने चाहिए

59	1-54. दक्षिण दिशा के इन्द्रों की अग्रमहिषियों के चौपन अध्ययन	63	ये पांचों अध्ययन पूर्ववत्
	इन इन्द्रों की अग्रमहिषियां वाराणसी नगरी के महाकाम वन नामक चैत्य की निवासी थी। शेष वर्णन पूर्ववत्	64 (7-54)	वेणुदाली अग्रमहिषियों के 6-6 अध्ययन-यावत्-महाघोष की अग्रमहिषियों के 6-6 अध्ययन
60	चतुर्थ भूतानंदादि अग्रमहिषी वर्ग क. उत्थानिका- 54 अध्ययन		वेणुदाली हरिस्सह, अग्निमाणवक, विशिष्ट जलप्रभ, अमितवाहन, प्रभंजन व महाघोष उत्तर दिशा के इन इन्द्रों की पट्टरानियां के 6-6 अध्ययन पूर्ववत् कुल 54 अध्ययन
61-62	1. प्रथम रूपा अध्ययन उत्थानिका- राजगृहनगर, गुणशील चैत्य, भ. महावीर का समवसरण, प्रवचन, भूतानंद अग्रमहिषी, रुपादेवी का आगमन, वंदन, नृत्य दर्शन, पूर्वभव पृच्छा- चंपानगरी, पूर्णभद्र चैत्य, रूपक गाथापति, रूपक श्री भार्या, रूपा नामक पुत्री, भ. पार्श्वनाथ का समवसरण-यावत्-शिवपद की प्राप्ति, देवी भव की स्थिति- कुछ कम एक पल्लोपम की	65	उत्थानिका- बत्तीस अध्ययन नाम
	2. द्वितीय सुरूपा अध्ययन		1. प्रथम कमला अध्ययन
	3. तृतीय रूपांसा अध्ययन	66-68	उत्थानिका, राजगृह नगर, भ. महावीर का समवसरण, पिशाचेन्द्र की अग्रमहिषी कमलादेवी का आगमन, वंदन, नाटक दिखाना, पूर्वभव पृच्छा- नागपुर नगर, सहस्राप्रवन उद्यान, कमल गाथापति, कमलश्री भार्या, कमला नामक पुत्री, भ. पार्श्वनाथ के श्रीमुख से दीक्षित, आयु-अर्ध पल्लोपम, आगामी भव में काल पिशाचेन्द्र की अग्रमहिषी के रूप में जन्म
	4. चतुर्थ रूपवती अध्ययन		2. द्वितीय कमल प्रभा अध्ययन
	5. पंचम रूपकांता अध्ययन		3. तृतीय उत्पला अध्ययन
	6. षष्ठ रूपप्रभा अध्ययन		4. चतुर्थ सुदर्शना अध्ययन

5. पंचम	रूपवती	अध्ययन	23. त्रयोविंशतितम	ह्री	अध्ययन
6. षष्ठ	बहुरूपा	अध्ययन	24. चतुर्विंशतितम	पुष्पवती	अध्ययन
7. सप्तम	सुरूपा	अध्ययन	25. पंचविंशतितम	भुजगा	अध्ययन
8. अष्टम	सुभगा	अध्ययन	26. षड्विंशतितम	भुजगवती	अध्ययन
9. नवम	पूर्णा	अध्ययन	27. सप्त विंशतितम	महाकच्छ	अध्ययन
10. दशम	बहुपुत्रिका	अध्ययन	28. अष्ट विंशतितम	अपराजिता	अध्ययन
11. एकादशम	उत्तमा	अध्ययन	29. नवविंशतितम	सुघोषा	अध्ययन
12. द्वादशम	भारिका	अध्ययन	30. त्रिंशतम	विमला	अध्ययन
13. त्रयोदशम	पद्मा	अध्ययन	31. एकात्रिंशतम	सुस्वरा	अध्ययन
14. चतुर्दशम	वसुमती	अध्ययन	32. द्वात्रिंशतम	सरस्वती	अध्ययन
15. पंचदशम	कनका	अध्ययन	प्रथम अध्ययन के समान शेष उपर्युक्त 31 अध्ययन दीक्षिण दिशा के वाणव्यंतर इन्द्रों की अग्रमहिषियों के हैं सभी का पूर्वभव में नागपुर में जन्म, सबके माता-पिता का नाम कन्याओं के नाम के समान, सभी ने भ. पार्श्वनाथ के श्रीमुख से दीक्षा ली, देवी भव में सबकी आयु अर्ध पल्योपम, भविष्य में मुक्ति		
16. षोडशम	कनकप्रभा	अध्ययन			
17. सप्तदशम	अवतंसा	अध्ययन	षष्ठ महाकालेन्द्रादि अग्रमहिषी वर्ग		
18. अष्टादशम	केतुमती	अध्ययन			
19. एकोनदशम	वज्रसेना	अध्ययन	पंचम वर्ग के समान 32 अध्ययन		
20. विंशतितम	रत्तिप्रिया	अध्ययन			
21. एकविंशतितम	रोहिणी	अध्ययन	पूर्वभव- साकेत नगर में उत्पन्न, उत्तरकुरु उद्यान, ये		
22. द्वाविंशतितम	नवमिका	अध्ययन			

68

69

कुमारिकाएं महाकाल इन्द्र आदि उत्तर दिशा के आठ इन्द्रों की बत्तीस अग्रमहिषीयां हैं, नाम समान ही माता-पिता के नाम, शेष वर्णन पूर्ववत्

सप्तम सूर्य अग्रमहिषी वर्ग

उत्थानिका- चार अध्ययन

1. प्रथम सूत्रभा अध्ययन
2. द्वितीय आतपा अध्ययन
3. तृतीय अर्चिमाली अध्ययन
4. चतुर्थ प्रभंकरा अध्ययन

70

71 राजगृह नगर, भगवान का पदार्पण व देशना

72 सूत्रभा देवी, काली देवी के समान दीक्षा आदि वर्णन

पूर्वभव- अरक्खुरी नगरी, सूर्याभ गाथापति की सूर्य श्री भार्या, सूर्यप्रभा पुत्री, आगामी भव में सूर्य ज्योतिष्केन्द्र की अग्रमहिषी के रूप में, स्थिति पांच सौ वर्ष से अधिक आधा पल्योपम, शेष वर्णन कालीदेवी के समान

अष्टम चन्द्र अग्रमहिषी वर्ग

उत्थानिका- चार अध्ययन

1. प्रथम चन्द्रप्रभा अध्ययन
2. द्वितीय ज्योत्स्नाभा अध्ययन

73

3. तृतीय अर्चिमाली अध्ययन
 4. चतुर्थ प्रभंकरा अध्ययन
- उत्थानिका- राजगृह नगर, चन्द्रप्रभा देवी, चन्द्रप्रभा विमान, चन्द्रप्रभा सिंहासन, भ. महावीर का पदार्पण, परिषद् आगमन, धर्मदेशना

74-75

पूर्वभव- मथुरा नगरी, चन्द्रावतंसक उद्यान, चन्द्रप्रभा गाथापति, चन्द्रश्री पत्नी, चन्द्रप्रभा पुत्री, आगामी भव में चन्द्र ज्योतिष्केन्द्र की अग्रमहिषी, पचास हजार वर्ष अधिक अर्धपल्योपम आयु । शेष वर्णन कालीदेवी के समान

नवम शक्र अग्रमहिषी वर्ग

उत्थानिका- नववें वर्ग में आठ अध्ययन

1. प्रथम पद्मा अध्ययन
2. द्वितीय शिवा अध्ययन
3. तृतीय सती अध्ययन
4. चतुर्थ अंजू अध्ययन
5. पंचम रोहिणी अध्ययन
6. षष्ठ नवमिका अध्ययन
7. सप्तम अचला अध्ययन

76

77	8. अष्टम अप्सरा अध्ययन प्रथम अध्ययन- राजगृह नगर, भ. महावीर का पदार्पण, धर्म देशना, पद्मावती देवी, सौधर्म कल्प, पद्मावतंसक विमान में सुधर्मा सभा में पद्म नामक सिंहासन, भगवान के पदार्पण की जानकारी पर भगवान की सेवा में, धर्म-श्रवण, शेष वर्णन कालीदेवी के समान क. पूर्वभव- प्रथम द्वितीय का श्रावस्ती नगरी, तृतीय-चतुर्थ का हस्तिनापुर, पंचम-षष्ठ का कापिल्यपुर, सप्तम-अष्टम का साकेत नगर में जन्म ख. सभी के पिता का नाम पद्म, माता का नाम विजया, पार्श्वनाथ के निकट दीक्षित, देवी भव में सात पल्योपम की स्थिति, महाविदेह क्षेत्र में जन्म व मुक्ति	79	6. षष्ठ वसुगुप्ता अध्ययन 7. सप्तम वसुमित्रा अध्ययन 8. अष्टम वसुन्धरा अध्ययन क. राजगृह नगर, भगवान महावीर का पदार्पण, धर्म देशना, कृष्णादेवी, ईशान कल्प, कृष्णावतंसक विमान की सुधर्मा सभा में कृष्ण नामक सिंहासन, भगवान के पदार्पण की जानकारी पर भगवान की सेवा में धर्म-श्रवण, नाटक प्रदर्शन, शेष वर्णन काली देवी के समान
78	दशम ईशानेन्द्र अग्रमहिषी वर्ग उत्थानिका- ईशानेन्द्र की आठ अग्रमहिषियों के आठ अध्ययन 1. प्रथम कृष्णा अध्ययन 2. द्वितीय कृष्णराजि अध्ययन 3. तृतीय रामा अध्ययन 4. चतुर्थ रामरक्षिता अध्ययन 5. पंचम वसु अध्ययन	80	ख. पूर्वभव में इन आठ में से दो का जन्म बनारस नगरी में, दो का जन्म राजगृह नगर में, दो का जन्म श्रावस्ती नगरी में, दो का जन्म कोशाम्बी नगरी में ग. सबके पिता का नाम राम, माता का नाम धर्मा, सभी भ. पार्श्वनाथ के श्रीमुख से दीक्षित, पुष्पचूला आर्या की शिष्या, वर्तमान भव में ईशानेन्द्र की अग्र-महिषियां, सबकी आयु नौ पल्योपम, महाविदेह क्षेत्र में जन्म -यावत्- मुक्ति, शेष वर्णन पूर्ववत् घ. उपसंहार श्रमण भ. महावीर द्वारा प्रज्ञप्त धर्मकथा नामक द्वितीय श्रुतस्कन्ध दस वर्गों में पूर्ण

धर्मकथानुयोग प्रधान उपासकदशांग सूत्र

श्रुतस्कंध	1	8	आनंद के स्वजन- संबंधी-परिजन
अध्ययन	10	9	क. भ. महावीर का शारीरिक सौष्ठव का दिग्दर्शन व समवसरण
उद्देशक	10		ख. राजा जितशत्रु का कौणिक राजा की तरह धर्म श्रवणार्थ गमन
पद	11 लाख 52 हजार	10	भगवत् वंदनार्थ व धर्म-श्रवणार्थ आनंद का जाना
उपलब्ध पाठ	512 श्लोक परिमाण	11	क. भ. महावीर द्वारा विस्तार से धर्म देशना
गद्य सूत्र	277	12	ख. अगार धर्म व अणगार धर्म का स्वरूप

7 उपासकदशांग सूत्र विषय-सूची

प्रथम आनंद अध्ययन

1	उत्थानिका- चंपानगरी, पूर्णभद्र चैत्य	13	प्रथम अणुव्रत- अहिंसा व्रत
2	क. आर्य सुधर्मा और जम्बू अणगार का विशेष परिचय व जम्बू की जिज्ञासा	14	द्वितीय अणुव्रत- सत्य व्रत
3	ख. दस अध्ययनों के नाम	15	तृतीय अणुव्रत- अस्तेय व्रत
4	वाणिज्य ग्राम, दूतिपलाश चैत्य, जितशत्रु राजा, आनंद गाथापति	16	चतुर्थ अणुव्रत- स्वदार-संतोष व्रत
5	क. आनंद की संपत्ति के तीन विभाग- वैभव व्यवस्था	17	पंचम अणुव्रत- इच्छा-परिमाण व्रत
6	ख. चार व्रज (गोकुल), प्रत्येक में दस हजार गायें	18	चतुष्पद (पशु आदि का) परिमाण
7	आनंद का सामाजिक जीवन	19	क्षेत्र-वास्तु (खेत आदि का) परिमाण
	आनंद की पत्नी शिवानंदा	20	शकट (गाड़ी आदि का) परिमाण
	कोल्लाक सन्निवेश- उपनगर का वर्णन	21	वाहन (सवारी आदि का) परिमाण
		22	क. सप्तम उपभोग-परिमाण व्रत
			ख. उपवस्त्र (अंगोच्छा) परिमाण

23	दन्तधावन के लिए दातुन का परिमाण	43	अनर्थदण्ड विरमण-व्रत
24	फलों का परिमाण	44	सम्यक्त्व के पाँच अतिचार
25	अभ्यंग (तैल आदि का मर्दन)-परिमाण	45	1. प्रथम (अहिंसा) अणुव्रत के पाँच अतिचार
26	उबटन का परिमाण	46	2. द्वितीय (सत्य) अणुव्रत के पाँच अतिचार
27	स्नान (मार्जन) का परिमाण	47	3. तृतीय (अस्तेय) अणुव्रत के पाँच अतिचार
28	वस्त्र-परिमाण	48	4. चतुर्थ (स्वदार-संतोष) अणुव्रत के पाँच अतिचार
29	विलेपन-परिमाण	49	5. पंचम (इच्छा-परिमाण) अणुव्रत के पाँच अतिचार
30	पुष्प-परिमाण	50	6. षष्ठ (दिशाओं का परिमाण) दिग्ब्रत के पाँच अतिचार
31	आभरण-परिमाण	51	7. क. सप्तम उपभोग-परिभोग-परिमाण ब्रत के पाँच अतिचार
32	धूप (लोबान)-परिमाण		अतिचार
33	भोजन (पेय)-परिमाण		ख. पन्द्रह कर्मादान के नाम
34	भक्ष्य (मिठाई)-परिमाण	52	8. अष्टम अनर्थदण्ड-विरमण ब्रत के पाँच अतिचार
35	ओदन (चावल)-परिमाण	53	9. नवम सामायिक ब्रत के पाँच अतिचार
36	सूप (दाल)-परिमाण	54	10. दशम देशावकासिक ब्रत के पाँच अतिचार
37	घृत-परिमाण	55	11. एकादशम पोषधोपवास ब्रत के पाँच अतिचार
38	शाक-परिमाण	56	12. द्वादशम यथासंविभाग ब्रत के पाँच अतिचार
39	मधुर (पेय) पदार्थ-परिमाण	57	मारणांतिक- संलेखना के पाँच अतिचार
40	व्यंजन (जेमन बड़ों का)-परिमाण	58	क. आनंद द्वारा द्वादश-विध श्रावक धर्म की स्वीकृति
41	पानी-परिमाण		ख. आनन्द का स्वगृह-गमन
42	मुखवास-परिमाण		ग. स्वभार्या शिवानन्द को द्वादशविध गृहस्थ धर्म स्वीकार करने के लिए प्रेरणा

59	भ. महावीर के दर्शनार्थ शिवानन्दा का जाना	72	आनंद का शरीर अशक्त होना
60	भ. महावीर द्वारा शिवानन्दा आदि को धर्म कथा	73	आनंद द्वारा मारणांतिक संलेखना व्रत ग्रहण
61	शिवानन्दा का व्रत ग्रहण करना	74	आनंद को अवधिज्ञान, अवधिज्ञान की सीमा
62	क. आनंद के सम्बन्ध में गौतम स्वामी की जिज्ञासा और भ. महावीर द्वारा समाधान	75	भगवान महावीर का पुनरागमन
		76	गौतम स्वामी का संक्षिप्त परिचय
	ख. आनंद सौधर्मकल्प के अरूणाभ विमान में देव रूप में उत्पन्न होगा	77-78	गौतम स्वामी का वाणिज्य ग्राम नगर में भिक्षार्थ जाना
	ग. वहाँ आनंद की चार पल्योपम की स्थिति होगी	79-82	गणधर गौतम का आनंद के समीप पहुँचना
63	भ. महावीर का वाणिज्य नगर के दूती पलास चैत्य से विहार	83	आनंद ने अपने अवधिज्ञान की सूचना गौतम स्वामी को दी
		84-85	गौतम गणधर का संदेह, आनंद-गौतम संवाद
64	आनंद का ज्ञानार्जन एवं गृहधर्म की आराधना	86	आनंद के अवधिज्ञान के सम्बन्ध में भ. महावीर द्वारा
65	शिवानन्दा का भी धार्मिक जीवन		गौतम के संदेह का समाधान
66	क. आनंद के गृहस्थ धर्म-आराधना के चौदह वर्ष ख. पंद्रहवें वर्ष में ज्येष्ठ पुत्र को गृहभार सौंप कर कोल्लक सन्निवेश में ज्ञातकुल की पौषधशाला में निवृत्तिमय जीवन बिताने का संकल्प करना	87	आनंद से क्षमा याचना के लिए गौतम को भ. महावीर का आदेश
67-68	ज्येष्ठ पुत्र द्वारा आनंद के आदेश की स्वीकृति	88	भ. महावीर का वहाँ से विहार
69	आनंद का कोल्लक सन्निवेश की पौषधशाला में जाकर आराधना करना	89	क. आनंद का बीस वर्ष का श्रमणोपासक जीवन ख. ग्यारह उपासक प्रतिमा की आराधना
70-71	आनंद द्वारा उपासक-पड़िमा-आराधन		ग. आनंद की अंतिम आराधना, एक मास की संलेखना घ. सौधर्म कल्प के अरूण विमान में आनंद का उत्पन्न होना

90	इ. आनंद की चार पल्लोपम की स्थिति क. आनंद की आत्मा के सम्बन्ध में गौतम स्वामी की जिज्ञासा ख. महावीर द्वारा समाधान-आनंद की आत्मा का देवलोक से च्यवन, महाविदेह में जन्म और निर्वाण	97 98-100 101-105	पिशाच रूप देव द्वारा कामदेव की दूसरी बार परीक्षा कामदेव की वैसी ही दृढ़ता देव द्वारा हस्तिरूप की सृष्टि, हस्तिरूप का वर्णन, हस्तिरूप देव द्वारा तीसरी बार कामदेव की परीक्षा कामदेव द्वारा अत्यंत वेदना सहन
91	द्वितीय कामदेव अध्ययन उत्थानिका	106	कामदेव द्वारा अत्यंत वेदना सहन
92	क. चंपानगरी, पूर्णभद्र चैत्य, जितशत्रु राजा ख. कामदेव गाथापति और भद्राभार्या ग. कामदेव की संपत्ति के तीन विभाग, वैभव व्यवस्था, 6 व्रज (गोकुल), प्रत्येक में 10 हजार गाये घ. भ. महावीर का समवसरण, आनंद के समान कामदेव द्वारा व्रत ग्रहण ड. ज्येष्ठ पुत्र को कुटुम्ब का भार सौंपकर कामदेव द्वारा धर्म-आराधन	107 108-110 111	देव द्वारा सर्प रूप की सृष्टि, सर्प रूप का वर्णन सर्प रूप देव द्वारा कामदेव की चौथी बार परीक्षा क. कामदेव की दृढ़ता से प्रसन्न देव का स्वरूप दर्शन-देव का पराभव, हिंसा पर अहिंसा की विजय ख. देव द्वारा कामदेव की प्रशंसा और क्षमा-प्रार्थना कामदेव द्वारा निरूपसर्ग प्रतिमा की पूर्ति भ. महावीर का समवसरण कामदेव का शंख श्रावक की तरह दर्शनार्थ जाना भ. महावीर द्वारा धर्मकथा, कामदेव की प्रशंसा, निर्ग्रन्थ-निर्ग्रन्थियों को उपसर्ग के समय कामदेव के समान दृढ़ रहने के लिए प्रेरणा भ. महावीर से कुछ प्रश्नों का समाधान प्राप्त कर स्वगृह प्रस्थान भ. महावीर का चंपा नगरी से विहार कामदेव द्वारा ग्यारह उपासक-प्रतिमाओं की आराधना
93	मिथ्यादृष्टि देव का उपसर्ग	112	
94	देवता द्वारा पिशाच रूप की सृष्टि, पिशाच रूप के प्रत्येक अंग का विस्तृत वर्णन	113 114 116-118	
95	पिशाचरूपीदेव द्वारा कामदेव की प्रथम बार परीक्षा	119	
96	कामदेव की दृढ़ता- धर्मध्यान में स्थिर	120 121	

122	कामदेव का बीस वर्ष का श्रमणोपासक जीवन, एक मास की संलेखना, अरूणाभ विमान में उपपात, चार पल्योपम की स्थिति	146-147	चुलनी पिता द्वारा प्रार्थश्चित्त
123	क. कामदेव के सम्बन्ध में गौतम स्वामी की जिज्ञासा ख. भ. महावीर का समाधान- कामदेव आयु क्षय होने पर देव शरीर का त्याग कर महाविदेह में जन्म और मोक्ष	148 149	चुलनी पिता द्वारा उपासक प्रतिमाओं की आराधना चुलनी पिता की अंतिम आराधना, एक मास की संलेखना, अरूणप्रभ विमान में देव होना, चार पल्योपम की स्थिति, च्यवन, महाविदेह में जन्म और निर्वाण
	तृतीय चुलनी पिता अध्ययन		चतुर्थ सुरदेव अध्ययन
124	उत्थानिका- वाराणसी नगरी, कोष्ठक चैत्य, जितशत्रु राजा	150	क. उत्थानिका- वाराणसी नगर, कोष्ठक चैत्य, जितशत्रु राजा
125	क. चुलनी पिता, श्यामा भार्या, संपत्ति के तीन विभाग, आठ व्रज (गोकुल)		ख. सुरदेव गाथापति, संपत्ति के तीन भाग, छ व्रज (गोकुल), धन्या भार्या
126-129	ख. भ. महावीर का समवसरण, द्वादश व्रत ग्रहण, कुटुम्ब से विरक्ति, आराधना	151	ग. भ. महावीर का समवसरण, द्वादश व्रत-ग्रहण, कुटुम्ब से निवृत्ति, धर्मारोप
130-131	देव का उपसर्ग, चुलनी पिता की दृढ़ता, ज्येष्ठ पुत्र को मारने की धमकी	152-153	देव द्वारा सुरदेव की परीक्षा, तीनों पुत्रों के वध का दृश्य, सुरदेव की दृढ़ता
132	ज्येष्ठ पुत्र के वध का दृश्य, चुलनी पिता की दृढ़ता	154-156	देव द्वारा सोलह रोग उत्पन्न करने की धमकी से सुरदेव का विचलित होना
133-136	मंझले व छोटे पुत्र की हत्या		सुरदेव को क्षोभ, धन्या भार्या द्वारा सुरदेव को सांत्वना
137-145	देव द्वारा माता के प्राण हरण की धमकी से चुलनी पिता का विचलित होना		सुरदेव का प्रार्थश्चित्त, परिवार से निवृत्ति, प्रतिमाओं की आराधना, संलेखना, अरूणकांत विमान में देव होना, चार पल्योपम की स्थिति, च्यवन, महाविदेह में जन्म और निर्वाण

पंचम चुल्लशतक अध्ययन

157	क. उत्थानिका- आलाभिका नगरी, शंखवन उद्यान, जितशत्रु राजा	166	ग. भ. महावीर का समवसरण, व्रत-ग्रहण अशोक वाटिका में धर्माराधना
	ख. चुल्लशतक गाथापति, संपत्ति के तीन विभाग, छह व्रज (गोकुल), बहुला भार्या	167-168	देव द्वारा कुण्डकौलिक की परीक्षा, गौशालक के नियतिवाद की प्रशंसा, भ. महावीर के पुरुषार्थवाद की अवज्ञा
	ग. भ. महावीर का समवसरण, व्रत ग्रहण	169-171	कुण्डकौलिक द्वारा नियतिवाद का परिहार, पुरुषार्थवाद का प्रतिपादन
158-159	देव द्वारा चुल्लशतक की परीक्षा, ज्येष्ठ पुत्र के वध का दृश्य, चुल्लशतक की दृढ़ता	172	परास्त देव का गमन
160-163	समस्त संपत्ति को बाहर फेंक देने की धमकी से चुल्लशतक का विचलित होना	173-174	भ. महावीर का समवसरण, कुण्डकौलिक का धर्मश्रवण
164	क. भार्या द्वारा सात्वना, प्रार्थना, परिवार से पृथक्त्व, उपासक प्रतिमाओं की आराधना	175-176	भ. महावीर द्वारा निर्ग्रन्थ-निर्ग्रन्थियों के सामने कुण्डकौलिक की प्रशंसा
	ख. संलेखना, अरूणसिद्ध विमान में उत्पन्न होना, चार पल्योपम की स्थिति, च्यवन, महाविदेह में जन्म और निर्वाण	177-178	कुण्डकौलिक द्वारा जिज्ञासा, भगवान द्वारा समाधान, स्वस्थान-गमन, भगवान महावीर का विहार
	षष्ठ कुण्डकौलिक अध्ययन	179	चौदह वर्ष का कुण्डकौलिक का श्रमणोपासक जीवन, पंद्रहवें वर्ष में पारिवारिक मोह का त्याग, उपासक प्रतिमाओं की आराधना, संलेखना, अरूणध्वज विमान में देव रूप में उत्पन्न होना, चार पल्योपम की स्थिति, च्यवन, महाविदेह में जन्म और निर्वाण
165	क. उत्थानिका- काम्पिल्यपुर नगर, सहस्राम्रवन उद्यान, जितशत्रु राजा		सप्तम सकडाल पुत्र अध्ययन
	ख. कुण्डकौलिक गाथापति, पूषा भार्या, संपत्ति के तीन विभाग, छ व्रज (गोकुल)	180	उत्थानिका-पोलासपुर नगर, सहस्राम्रवन उद्यान, जितशत्रु राजा

181	आजीविक सिंद्धांत उपासक सकडाल पुत्र कुम्भकार	204-211	सकडालपुत्र और अग्निमित्रा भार्या द्वारा द्वादश व्रत-ग्रहण
182	संपत्ति के तीन विभाग, एक व्रज (गोकुल)	212-213	भ. महावीर का सहस्राम्रवन से विहार, सकडालपुत्र दूढ़
183	अग्निमित्रा भार्या		श्रमणोपासक
184	मिट्टी के बर्तनों की 500 दुकानें	214	सकडालपुत्र को पुनः आजीविकोपासक बनाने के लिये
185	सकडालपुत्र द्वारा अशोक वाटिका में आजीविक धर्म की आराधना	215	गोशालक का प्रयत्न
186-187	महामाहण की पर्युपासना के लिये एक देव की ओर से सकडालपुत्र को प्रेरणा	216	गोशालक के प्रति सकडालपुत्र का असद्व्यवहार
188-189	सकडालपुत्र के मन में गोशालक के आने का संकल्प पैदा हुआ किन्तु दूसरे दिन भ. महावीर पधारे, धर्मकथा	217-219	गोशालक द्वारा भगवान का गुण-कीर्तन
190	भ. महावीर की वंदना के लिए सकडालपुत्र का अपनी अशोक वाटिका से गमन		क. भ. महावीर से चर्चा विवाद करने के लिए
191	सकडालपुत्र को धर्मकथा सुनाना		सकडालपुत्र की गोशालक को प्रेरणा
192	सकडालपुत्र को पूर्व दिन के देवागमन का भ. महावीर द्वारा वृत्तांत सुनाना	220-222	ख. भ. महावीर के सामर्थ्य और अपने असामर्थ्य का गोशालक द्वारा सोदाहरण प्रतिपादन
193-194	भ. महावीर से कुंभकाराण में कुछ दिन के लिये ठहरने की सकडालपुत्र की विनंती	गमन	गोशालक का कुंभकाराण में आगमन व पुनः निराशापूर्ण
195-200	प्रत्यक्ष उदाहरणों से भगवान महावीर द्वारा नियतिवाद का खण्डन	223	क. सकडालपुत्र का चौदह वर्ष का श्रमणोपासक जीवन
201-203	सकडालपुत्र को बोध	224	ख. पंद्रहवें वर्ष में परिवार से विरक्ति
		225-226	सकडालपुत्र की एक देव द्वारा परीक्षा
		227-229	सर्व पुत्रों के वध का दृश्य, सकडालपुत्र की दृढ़ता
			अग्निमित्रा के वध की धमकी से सकडालपुत्र का विचलित होना
		230	क. अग्निमित्रा द्वारा सकडालपुत्र को सांत्वना

ख.	सकडालपुत्र की परिवार से विरक्ति, उपासक प्रतिमाओं की आराधना, संलेखना, अरूपणभूत विमान में देव में उत्पन्न होना, चार पल्योपम की स्थिति, च्यवन, महाविदेह में जन्म और निर्वाण	241	राजगृह में अमारि (हिंसा निषेध) का डिण्डिम नाद-घोषणा
		242-244	रेवती का पीहर से गायों के बछड़े मँगवाना तथा उनका मौस पकाकर खाना
	अष्टम महाशतक अध्ययन	245	महाशतक का चौदह वर्ष का श्रमणोपासक-जीवन, ज्येष्ठ पुत्र को गृहभार सौंपना, पोषधशाला में धर्म-आराधना
231	उत्थानिका-राजगृह नगर, गुणशील चैत्य, श्रेणिक राजा	246-249	कामुक रेवती का महाशतक के प्रति कुत्सित व्यवहार, महाशतक की दृढ़ता
232	महाशतक गाथापति, संपत्ति के तीन विभाग, आठ व्रज (गोकुल)	250	उपासक प्रतिमाओं की आराधना
233	महाशतक के रेवती प्रमुख तेरह भार्यायें	251	तप के कारण महाशतक के शरीर में कृशता
234	क. रेवती को पितृकुल से प्राप्त आठ कोटि सुवर्ण मुद्रा धन और आठ व्रज	252-253	महाशतक को अवधि ज्ञान, मारणांतिक संलेखना
	ख. शेष बारह भार्याओं (प्रत्येक) के पास पितृकुल से प्राप्त एक कोटी सुवर्ण मुद्रा और एक व्रज	254	मदमस्त रेवती का पुनः महाशतक के समीप पोषधशाला में पहुँचना तथा धर्म-आराधना में बाधा पहुँचाना
235	भ. महावीर का समवसरण, महाशतक का व्रत ग्रहण करना, दो द्रोण (स्वर्ण-मुद्रा) की सीमा	255	कुण्ड महाशतक ने कहा- “रेवती! तेरी सात दिन में अलसरोग से मृत्यु होगी तथा तू प्रथम नरक में जावेगी”
236	महाशतक को तत्त्वज्ञान	256	भयभीत रेवती का प्रत्यागमन
237	भगवान महावीर का अन्य जनपदों की ओर विहार	257	रेवती का नरक-गमन
238-239	रेवती द्वारा छ सपत्नियों की शस्त्र-प्रयोग से और छ सपत्नियों की विष-प्रयोग से हत्या	258	भ. महावीर का समवसरण
	रेवती की मद्य-मांस आहार में आसक्ति	259-264	भ. महावीर ने महाशतक के लिये गौतम के साथ संदेश भेजा कि- “रेवती को कहे गये अप्रिय सत्य का
240			

प्रायश्चित्त करो''		और निर्वाण	
265	महाशतक का प्रायश्चित्त करना	दशम सालिही पिता अध्ययन	
266	गौतम स्वामी का भ. महावीर के समीप पहुँचना	क. उत्थानिका-श्रावस्ती नगरी, कोष्ठक चैत्य, जितशत्रु राजा	273
267	भ. महावीर का राजगृह नगर से विहार	ख. सालिही पिता गृहस्थ, संपत्ति के तीन विभाग, चार ब्रज, फाल्गुनी भार्या	
268	क. महाशतक का बीस वर्ष का श्रमणोपासक जीवन	क. भ. महावीर का समवसरण	274
	ख. महाशतक का अरूणावतंसक विमान में देव होना, चार पल्योपम की स्थिति, महाविदेह में जन्म और निर्वाण	ख. सालिही पिता का द्वादश व्रत ग्रहण करना	
269	नवम नंदिनी पिता अध्ययन	ग. पंद्रहवें वर्ष में ज्येष्ठ पुत्र को गृहभार सौंपना	
	क. उत्थानिका-श्रावस्ती नगरी, कोष्ठक चैत्य, जितशत्रु राजा	घ. उपासक प्रतिमाओं की आराधना, संलेखना	
	ख. नंदिनी पिता गृहस्थ, संपत्ति के तीन विभाग, चार ब्रज, अश्विनी भार्या	ड. अरूणकील विमान में देव होना, चार पल्योपम की स्थिति, च्यवन, महाविदेह में जन्म और निर्वाण	
270-271	क. भ. महावीर का समवसरण	क. दसों श्रावकों को पंद्रहवें वर्ष में विशिष्ट धर्म-आराधना का संकल्प	275
	ख. नंदिनी पिता का व्रत-ग्रहण	ख. दसों श्रावकों का बीस वर्ष का श्रमणोपासक जीवन उपसंहार	276
272	ग. भ. महावीर का अन्य जनपदों की ओर विहार	क. उपासकदशांग में एक श्रुतस्कंध, दस अध्ययन, दस दिन में उपदेश	277
	क. पंद्रहवें वर्ष में ज्येष्ठ पुत्र को गृहभार सौंपना	ख. दो दिन में इस अंग का पूर्ण स्वाध्याय	
	ख. उपासक प्रतिमाओं की आराधना		
	ग. बीस वर्ष का श्रमणोपासक-जीवन		
	घ. अरूणा विमान में उपपात, महाविदेह में जन्म		

धर्मकथानुयोगमय अन्तकृद्दशाङ्ग

श्रुतस्कंध	1
वर्ग	8
अध्ययन	90
पद	23 लाख 28 हजार
उपलब्ध मूल पाठ	900 अनुष्टुप श्लोक प्रमाण
गद्य सूत्र	90
गाथा	11

8-9

8 अन्तकृद्दशाङ्ग विषय-सूची

प्रथम श्रुतस्कंध

प्रथम वर्ग

1-2	उत्थानिका- चंपानगरी, पूर्णभद्र चैत्य, सुधर्मा स्वामी का पदार्पण, धर्म-देशना, शिष्य काश्यप गौत्री जम्बू अणगार द्वारा सुधर्मा स्वामी से अंतकृद्दशांग के संबंध में जिज्ञासा
3	प्रथम वर्ग के दस अध्ययनों के नाम

1. प्रथम गौतम अध्ययन

4-5	उत्थानिका-द्वारिका वर्णन, रैवतक पर्वत, नंदनवन उद्यान, सुरप्रिय यक्षायतन, अशोक वृक्ष
6	कृष्ण वासुदेव वर्णन, द्वारिका-वैभव
7	अंधकवृष्णि राजा, धारिणी रानी, स्वप्न-दर्शन, पुत्र-जन्म, 10

गौतमकुमार नामकरण, कलाज्ञान, युवावस्था, गौतमकुमार का आठ कन्याओं के साथ पाणिग्रहण, प्रीतिदान

क. भ. अरिष्टनेमि का समवसरण, प्रवचन, गौतमकुमार को वैराग्य, दीक्षा, ग्यारह अंगों का अध्ययन, तपाराधन

ख. भ. अरिष्टनेमि का विहार

ग. गौतमकुमार का पड़िमा आराधन

घ. गुणरत्न तप का आराधन, अंतिम-साधना

ङ. शत्रुघ्नय पर्वत पर एक महीने की संलेखना

च. बारह वर्ष का श्रमण जीवन, निर्वाण

2. द्वितीय समुद्र अध्ययन

3. तृतीय सागर अध्ययन

4. चतुर्थ गंधीर अध्ययन

5. पंचम स्तिमित अध्ययन

6. षष्ठ अचल अध्ययन

7. सप्तम कंपिल अध्ययन

8. अष्टम अक्षोभ अध्ययन

9. नवम प्रसेनजित् अध्ययन

10. दशम विष्णु अध्ययन

प्रथम अध्ययन के समान सभी के पिता अंधकवृष्णि, माता- धारिणीदेवी

द्वितीय वर्ग

- 1 क. उत्थानिका- द्वारिका नगरी, राजा वृष्णि पिता,
धारिणी माता, आठ पुत्र के आठ अध्ययन
1. प्रथम अक्षोभ अध्ययन
 2. द्वितीय सागर अध्ययन
 3. तृतीय समुद्र अध्ययन
 4. चतुर्थ हिमवंत अध्ययन
 5. पंचम अचल अध्ययन
 6. षष्ठ धरण अध्ययन
 7. सप्तम पूरण अध्ययन
 8. अष्टम अभिचन्द्र अध्ययन
- ख. सभी के द्वारा गुणरत्न संवत्सर तप, सोलह वर्ष का श्रमण जीवन, अंतिम आराधना शत्रुञ्जय पर्वत पर, एक मास की संलेखना, सिद्धपद की प्राप्ति

तृतीय वर्ग

- 1 क. उत्थानिका- तेरह अध्ययनों के नाम
1. प्रथम अनीयस अध्ययन
- ख. उत्थानिका- भद्रिलपुर नगर, श्रीवन उद्यान, जितशत्रु राजा, वैभव-संपन्न नाग गाथापति, सर्वाङ्ग सुन्दरंगी सुलसा भार्या

- 2 पुत्र अनियस कुमार, अनेक धायमाताओं द्वारा पालन-पोषण, कलाचार्यों के पास 72 कलाओं का अध्ययन, 72 कलाओं के नाम
- 3 क. बत्तीस कन्याओं से पाणिग्रहण, प्रीतिदान सामग्री का विस्तृत वर्णन
- ख. भ. अरिष्टनेमि का समवसरण, प्रवचन, अनियस कुमार को वैराग्य, प्रव्रज्या, चौदह पूर्व का अध्ययन, बीस वर्ष का श्रमण जीवन, शत्रुञ्जय पर्वत पर अंतिम साधना, एक मास की संलेखना, सिद्धपद की प्राप्ति, उपसंहार
2. द्वितीय अनंतसेन अध्ययन
 3. तृतीय अनिहत अध्ययन
 4. चतुर्थ विदु अध्ययन
 5. पंचम देवयश अध्ययन
 6. षष्ठ शत्रुसेन अध्ययन

इन पांचों ही श्रेष्ठी राजकुमारों का 32-32 राजकन्याओं के साथ विवाह, प्रीतिदान, भ. अरिष्टनेमि का उपदेश-श्रवण, वैराग्य, दीक्षा, बीस वर्ष का संयम-पालन, 14 पूर्वों का अध्ययन, एक मास की संलेखना, शत्रुञ्जय पर्वत पर सिद्ध गति

7. सप्तम	सारण	अध्ययन		
4	द्वारिका नगरी, वसुदेव राजा, धारिणी रानी, पुत्र जन्म नाम- सारण कुमार, पचास कन्याओं से एक साथ पाणिग्रहण, प्रीतिदान, भ. अरिष्टनेमि का पदार्पण, धर्म देशना, प्रवज्या, चौदह पूर्व का अध्ययन, बीस वर्ष का श्रमण पर्याय, शत्रुञ्जय पर्वत पर अंतिम आराधना, सिद्ध पद की प्राप्ति		11	वाणी के प्रति महारानी का सदेह ख. भ. अरिष्टनेमि की वंदना के लिये देवकी महारानी का जाना व भगवान द्वारा समाधान क. भद्विलपुर नगर, नाग गाथापति, सुलसा भार्या ख. मृतवत्सा सुलसा भार्या का हरिणैगमेषी देवाराधना का भगवान द्वारा कथन देवकी महारानी द्वारा आर्तध्यान क. देवकी की पुत्र अभिलाषा ख. श्री कृष्ण द्वारा अष्टम भक्त तप, हरिणैगमेषी देव की आराधना हरिणैगमेषी देव द्वारा आश्वासन, देवकी देवी को सूचन देवकी को स्वप्न दर्शन, स्वप्न फल कथन, गजसुकुमार का जन्म, नामकरण, युवावस्था क. चार वेदों का पारंगत सोमिल ब्राह्मण, सोमश्री ब्राह्मणी व सोमा पुत्री ख. सोमा की स्वर्ण कन्दुक क्रीड़ा श्रीकृष्ण द्वारा गजसुकुमार के लिए मंगनी व सोमा का अंतःपुर में प्रवेश क. भ. अरिष्टनेमि का समवसरण, प्रवचन ख. श्रीकृष्ण के साथ गजसुकुमार का गमन
5	उत्थानिका- द्वारिका नगरी, भ. अरिष्टनेमी का समवसरण	अध्ययन	13	
6	अंतेवासी छह अणार एक समान, यावज्जीवन छट्ट-छट्ट करने की प्रतिज्ञा		14	
7	सहस्राप्रवन से तीन संघाटकों का भिक्षा के लिए गमन (दो श्रमणों का एक संघाटक)		15	
8	क. तीनों संघाटकों का क्रमशः देवकी महारानी के यहाँ जाना ख. देवकी द्वारा प्रत्येक संघाटक को मोदक बहराना क. मुनियों के संघाटक बार-बार आने से देवकी के मन में शंका ख. मुनियों द्वारा समाधान क. पोलासपुर में कही हुई अतिमुक्त मुनि की भविष्य		16	
9			17	
10			18	

19	क. गजसुकुमार का वैराग्य	28	वियोग व्यथित श्री कृष्ण का रथ्याओं (गलियों) में होकर स्वस्थान गमन करते हुए सोमिल को देखना
20	ख. माता-पिता से आज्ञा हेतु निवेदन, परस्पर संवाद ग. गजसुकुमार के बड़े भ्राता श्रीकृष्ण द्वारा भी समझाना क. श्रीकृष्ण द्वारा गजसुकुमार का राज्याभिषेक ख. गजसुकुमार की प्रव्रज्या का विस्तृत वर्णन	29 30	श्रीकृष्ण को देखते ही डर से सोमिल की मृत्यु, भूमि का परिमार्जन उपसंहार
21	एक रात्रि की महापड़िमा का आराधन		
22	क. सोमिल द्वारा भयंकर उपसर्ग ख. सोमिल द्वारा गजसुकुमार के सिर पर मिट्टी की पाल बांधकर अंगारे रखना	31	9. नवम सुमुख अध्ययन क. उत्थानिका- द्वारिका नगरी, बलदेव राजा, धारिणी रानी, सुमुख कुमार, पचास कन्याओं के साथ पाणिग्रहण, प्रीतिदान
23	क. भयंकर वेदना सहन की, सोमिल पर लेश मात्र भी द्वेष नहीं किया ख. गजसुकुमार मुनि की सिद्धि ग. केवलज्ञान तथा निर्वाण का महोत्सव		ख. भ. अरिष्टनेमि का समवसरण, प्रवचन, सुमुख कुमार को वैराग्य, प्रव्रज्या, बीस वर्ष का साधु जीवन, शत्रुञ्जय पर्वत पर अंतिम साधना, सिद्धपद की प्राप्ति
24	क. भगवत्वंदना के लिये श्रीकृष्ण का निर्गमन ख. मार्ग में एक वृद्ध पुरुष पर अनुकंपा करना एवं सहयोग देना		10. दशम दुर्मुख अध्ययन 11. एकादशम कूपदारक अध्ययन
25	गजसुकुमार के लिए भगवान से प्रश्न व भगवान का यथार्थ कथन	32	दुर्मुख व कूपदारक के पिता बलदेव व माता धारिणी
26	ऐसा भ्रातृघातक कौन ?- श्रीकृष्ण की जिज्ञासा	33	12. द्वादशम दारुक अध्ययन 13. त्रयोदशम अनाधृष्टि अध्ययन
27	भगवान द्वारा वृद्ध पुरुष के सहयोग के उदाहरण द्वारा सोमिल का संकेत	34	दारुक व अनाधृष्टि के पिता वसुदेव राजा व माता धारिणी उपसंहार

चतुर्थ वर्ग

1 उत्थानिका- दस अध्ययनों के नाम

1. प्रथम जालि अध्ययन

क. उत्थानिका- द्वारिका नगरी, वसुदेव राजा, धारिणी रानी, जाली कुमार, पचास कन्याओं के साथ विवाह, प्रीतिदान

ख. भगवान् अरिष्टनेमि का समवसरण, प्रवचन, जाली कुमार को वैराग्य, प्रव्रज्या, द्वादशाङ्गों का अध्ययन, सोलह वर्ष का साधु जीवन, शत्रुञ्जय पर्वत पर समाधिमरण, निर्वाण की प्राप्ति

2. द्वितीय मयाली अध्ययन**3. तृतीय उपयाली अध्ययन****4. चतुर्थ पुरुषसेन अध्ययन****5. पंचम वारिसेन अध्ययन****6. षष्ठ प्रद्युम्न अध्ययन**

श्री कृष्ण पिता, रुक्मिणी माता

7. सप्तम शाम्ब अध्ययन

श्री कृष्ण पिता, जांबवती माता

8. अष्टम अनिरुद्ध अध्ययन

प्रद्युम्न पिता, वैदर्भी माता

9. नवम सत्यनेमि अध्ययन**10. दशम दृढनेमि अध्ययन**

क. समुद्र विजय पिता, शिवा माता

ख. उपसंहार

पंचम वर्ग

क. उत्थानिका- दस अध्ययन नाम

1. प्रथम पद्मावती अध्ययन

ख. द्वारिका नगरी, श्री कृष्ण वासुदेव, पद्मावती रानी

ग. भ. अरिष्टनेमि का समवसरण,

श्री कृष्ण का सपरिवार दर्शनार्थ गमन, प्रवचन

भ. अरिष्टनेमि से द्वारिका के विनाश के सम्बन्ध में

श्री कृष्ण का प्रश्न, भगवान् का उत्तर

क. श्री कृष्ण की चिन्ता व प्रव्रज्याभिलाषा

ख. भ. अरिष्टनेमि द्वारा प्रव्रज्या निषेध का कारण कथन

क. भ. अरिष्टनेमि से श्री कृष्ण का स्वयं के सम्बन्ध में

प्रश्न व भगवान् द्वारा उत्तर-

ख. कृष्ण! अनेक भव पश्चात् जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में

आगामी उत्सर्पिणी काल में पुण्ड्र जनपद के शत

द्वार नगरी में अमम नामक तीर्थकर बनोगे

ग. भ. अरिष्टनेमि की भविष्य वाणी से श्री कृष्ण की

प्रसन्नता

5	श्री कृष्ण का द्वारिका के विनाश के सम्बन्ध में, प्रजाजनों को प्रव्रजित होने के लिये प्रेरणा देने, प्रव्रजित होने वालों के परिवारों को संरक्षण देने और दीक्षाभिलाषियों का दीक्षा महोत्सव करने के सम्बन्ध में घोषणा करने का सेवक को आदेश	श्री कृष्ण वासुदेव, जांबवती देवी, शाम्ब कुमार, मूलश्री भार्या, भ. अरिष्टनेमि का समवसरण-यावत्-सिद्धगति
6	पद्मावती महारानी की दीक्षा लेने की भावना	10. दशम मूलदत्ता अध्ययन मूलश्री अध्ययन के समान
7-8	पद्मावती देवी की यक्षिणी आर्या के समीप प्रव्रज्या, ग्यारह अंगों का अध्ययन, तपश्चर्या की आराधना, बीस वर्ष का श्रमणी जीवन, एक महीने की संलेखना, शिवपद की प्राप्ति	षष्ठ वर्ग क. उत्थानिका- सोलह अध्ययनों के नाम 1. प्रथम मकाई अध्ययन ख. उत्थानिका, राजगृह नगर, गुणशील चैत्य, श्रेणिक राजा, मकाई गाथापति, भ. महावीर का समवसरण, प्रवचन, मकाई गाथापति को वैराग्य, ज्येष्ठ पुत्र को गृहभार सौंपकर दीक्षित होना, ग्यारह अंगों का अध्ययन, गुणरत्न तप की आराधना, सोलह वर्ष का साधु जीवन, विपुलगिरि पर समाधि मरण, शिवपद प्राप्ति 2. द्वितीय किंकिम अध्ययन मकाई अध्ययन के समान 3. तृतीय मोगरपाणी अध्ययन क. उत्थानिका- राजगृह नगर, गुणशील चैत्य, श्रेणिक राजा, चेलना देवी
9	ये प्रथम अध्ययन पद्मावती की तरह	
10	8. अष्टम रुक्मिणी अध्ययन 9. नवम मूलश्री अध्ययन उत्थानिका- द्वारिका नगरी, रैवतक पर्वत, नंदनवन,	

ख.	अर्जुन नामक माली, बंधुमती भार्या, पुष्पराम उद्यान, मोगरपाणि यक्ष का यक्षाद्यतन, सहस्र पल (57 किलो) का मुद्गर	10-11	का दृढ संकल्प
3	क. ललिता नामक गोष्ठिक पुरुषों का अनाचार	12	मार्ग में अर्जुन का उपसर्ग, उपसर्ग निवृत्ति पर्यंत सुदर्शन का कायोत्सर्ग, उपसर्ग निवृत्ति
	ख. अर्जुन का बंधुमती के साथ पुष्प चयन के लिये जाना	13	सुदर्शन और अर्जुन का साथ-साथ भगवद् वंदना के लिये जाना व धर्म श्रवण
4	क. ललिता गोष्ठी का अशुभ संकल्प		अर्जुन का वैराग्य, प्रव्रज्या ग्रहण, यावज्जीवन छटु-छटु करने का अभिग्रह
	ख. बंधुमती भार्या सहित अर्जुन माली द्वारा यक्ष पूजा	14	क. अर्जुन मुनि की भिक्षाचर्या, आक्रोश परीषह झेलना, राजगृह से भ. महावीर का विहार
5	ग. ललिता गोष्ठी का अर्जुन और बंधुमती के साथ दुर्व्यवहार		ख. अर्जुन मुनि की 6 मास की श्रमण पर्याय, पन्द्रह दिन की संलेखना, सिद्धपद की प्राप्ति
6	क. यक्ष से अर्जुन की प्रार्थना, अर्जुन के शरीर में यक्ष का प्रवेश व बंधन से मुक्ति		4. चतुर्थ काश्यप अध्ययन
	ख. यक्षाविष्ट अर्जुन द्वारा ललिता गोष्ठी और बंधुमती के प्राणों का संहार	15	राजगृह नगर, गुणशील चैत्य, श्रेणिक राजा, काश्यप गाथापति, प्रव्रज्या, सोलह वर्ष की श्रमण पर्याय, विपुलगिरि पर समाधिमरण- शेष प्रथम अध्ययन के समान सिद्ध गति
	क. अर्जुन के उपसर्ग से बचने के लिये राजगृह की सुरक्षा व्यवस्था		5. पंचम क्षेमक अध्ययन
7	ख. अर्जुन द्वारा 6 मास पर्यंत 6 पुरुषों और एक स्त्री का प्रतिदिन संहार, 1141 व्यक्तियों की हत्या		काकंदी नगरी, सोलह वर्ष का श्रमण पर्याय, विपुलगिरि पर समाधिमरण
8	श्रमणोपासक सुदर्शन राजगृह नगर में		6. षष्ठ धृतिधर अध्ययन
9	भ. महावीर का राजगृहनगर में पदार्पण		उपरोक्त अध्ययन समान
	भगवान् की वंदना के लिये श्रमणोपासक सुदर्शन के जाने		

7. सप्तम	कैलाश	अध्ययन	14. चतुर्दशम	मेघ	अध्ययन
साकेत नगर, बारह वर्ष का श्रमण पर्याय, विपुलगिरि पर समाधिमरण, शिवपद प्राप्ति			राजगृह नगर, प्रवज्या-यावत्-विपुलगिरि पर निर्वाण		
8. अष्टम	हरिचंदन	अध्ययन	15. पंचदशम	अतिमुक्त	अध्ययन
सप्तम अध्ययन अनुसार			क. पोलासपुर नगर, श्रीवन उद्यान, विजय राजा, श्रीदेवी महारानी, पुत्र अतिमुक्त कुमार		
9. नवम	वारत्त	अध्ययन	ख. भ. महावीर का समवसरण		
राजगृहनगर, बारह वर्ष का श्रमण पर्याय, विपुलगिरि पर समाधिमरण, सिद्धपद			ग. गौतम गणधर का भिक्षा के लिए जाना		
10. दशम	सुदर्शन	अध्ययन	घ. इन्द्र स्थान में अतिमुक्त कुमार का बच्चों के साथ खेलना		
वाणिज्य ग्राम, द्युतिपलाश चैत्य, पाँच वर्ष का निर्ग्रथ जीवन, विपुलगिरि पर समाधि मरण			क. क्रीड़ा स्थल में गौतम और अतिमुक्त कुमार का समागम		
11. एकादशम	पूर्णभद्र	अध्ययन	ख. गौतम स्वामी की अंगुली पकड़कर अतिमुक्त द्वारा भिक्षा के लिये अन्तःपुर में ले जाना		
वाणिज्य ग्राम, पांच वर्ष का चारित्र पर्याय पालकर विपुलगिरि पर समाधि मरण			ग. श्रीदेवी द्वारा भिक्षा देना		
12. द्वादशम	सुमनभद्र	अध्ययन	गौतम गणधर के साथ अतिमुक्त का भ. महावीर के समीप जाना व धर्म श्रवण करना		
श्रावस्ती नगरी, अनेक वर्ष का चारित्र पर्याय पालकर विपुलगिरि पर समाधि मरण			क. प्रव्रजित होने के लिये आज्ञा प्राप्त करना		
13. त्रयोदशम	सुप्रतिष्ठ	अध्ययन	ख. वैराग्य की परीक्षा		
श्रावस्ती नगरी, सत्तावीस वर्ष का श्रमण-जीवन, विपुलगिरि पर निर्वाण			ग. माता-पिता व अतिमुक्त का वार्तालाप		
			घ. अतिमुक्त का राज्याभिषेक		

इ. अतिमुक्त का दीक्षा महोत्सव, ग्यारह अंगों का अध्ययन, गुणरत्न तप की आराधना, विपुलगिरि पर निर्वाण

16. षोडश अलक्ष अध्ययन

क. वाराणसी नगरी, काम महावन चैत्य, अलक्ष राजा
ख. भ. महावीर का समवसरण, प्रवचन श्रवण, अलक्ष राजा को वैराग्य, ज्येष्ठ पुत्र को राज्य देकर दीक्षा लेना, ग्यारह अंगों का अध्ययन-यावत्-विपुलगिरि पर निर्वाण

सप्तम वर्ग

1. प्रथम नंदा अध्ययन

क. उत्थानिका- 13 अध्ययन की संग्रहणी गाथा
ख. राजगृह नगर, गुणशील चैत्य, श्रेणिक राजा, नंदारानी
ग. भ. महावीर का समवसरण, प्रवचन, नंदादेवी को वैराग्य, प्रव्रज्या, ग्यारह अंगों का अध्ययन, बीस वर्ष का श्रमणी जीवन, सिद्ध गति
2. द्वितीय नंदवती अध्ययन
3. तृतीय नंदोत्तरा अध्ययन
4. चतुर्थ नंदश्रेणिका अध्ययन

5. पंचम मरुता अध्ययन
6. षष्ठ सुमरुता अध्ययन
7. सप्तम महामरुता अध्ययन
8. अष्टम मरुदेवा अध्ययन
9. नवम भद्रा अध्ययन
10. दशम सुभद्रा अध्ययन
11. एकादशम सुजाता अध्ययन
12. द्वादशम सुमनायिका अध्ययन
13. त्रयोदशम भूतदित्रा अध्ययन

ये 2-13 अध्ययन 'नंदा' रानी के समान

अष्टम वर्ग

क. उत्थानिका- दस अध्ययनों के नाम
1. प्रथम काली अध्ययन
ख. उत्थानिका, चंपानगरी, पूर्णभद्र चैत्य, कोणिक राजा, श्रेणिक राजा की रानी व कोणिक की माता काली देवी
ग. भ. महावीर का समवसरण, प्रवचन श्रवण, काली देवी को वैराग्य, प्रव्रज्या ग्रहण, ग्यारह अंगों का अध्ययन

2-3	क. आर्या चंदन बाला से आज्ञा प्राप्त करके रत्नावली तप की चार परिपाटी की आराधना करना	दश दशमिका भिक्षु प्रतिमा की आराधना, बारह वर्ष की दीक्षा पर्याय व सिद्ध गति
4	ख. आठ वर्ष का श्रमणी जीवन	6. षष्ठ महाकृष्ण अध्ययन
5	2. द्वितीय सुकाली अध्ययन	काली की तरह प्रव्रज्या व क्षुद्र सर्वतोभद्र प्रतिमा की आराधना, तेरह वर्ष का श्रमणी जीवन व सिद्ध गति
6	चंपानगरी, पूर्णभद्र चैत्य, कोणिक राजा, श्रेणिक राजा की रानी व कोणिक राजा की छोटी माता सुकाली, प्रव्रज्या, कनकावली तप की आराधना, नव वर्ष चारित्र पालन - यावत्- सिद्ध गति	7. सप्तम वीरकृष्णा अध्ययन
7	3. तृतीय महाकाली अध्ययन	काली की तरह प्रव्रज्या व महा सर्वतोभद्र प्रतिमा की आराधना, चौदह वर्ष का श्रमणी जीवन व सिद्ध गति
8-9	4. चतुर्थ कृष्णा अध्ययन	8. अष्टम रामकृष्णा अध्ययन
	काली की तरह प्रव्रज्या व महासिंह निष्क्रीडित तप की आराधना, ग्यारह वर्ष की दीक्षा पर्याय	काली की तरह प्रव्रज्या व भद्रोत्तर प्रतिमा की आराधना, पन्द्रह वर्ष का श्रमणी जीवन व सिद्ध गति
	5. पंचम सुकृष्णा अध्ययन	9. नवम पितृसेनकृष्णा अध्ययन
	काली की तरह प्रव्रज्या व सप्त सप्तमिका भिक्षु प्रतिमा की आराधना	काली की तरह प्रव्रज्या व मुक्तावली तप की आराधना, सोलह वर्ष का श्रमणी जीवन व सिद्ध गति
	अष्ट अष्टमिका भिक्षु प्रतिमा की आराधना	10. दशम महासेनकृष्णा अध्ययन
	नव नवमिका भिक्षु प्रतिमा की आराधना	काली की तरह प्रव्रज्या व आर्याबिल वर्धमान तप की आराधना, सत्रह वर्ष का श्रमणी जीवन, एक मास की संलेखना, सिद्ध पद प्राप्ति
		उपसंहार-एक श्रुत स्कंध, आठ वर्ग, आठ दिनों में पठन, आठ वर्गों के 90 अध्ययन

णमो तित्थयराणं

धर्मकथानुयोगमय अनुत्तरौपपातिकदशाङ्ग

श्रुतस्कंध	1	4	में रत
वर्ग	3		भ. महावीर का समवसरण, प्रवचन, जालिकुमार की
अध्ययन	33		वैराग्य, प्रव्रज्या, ग्यारह अंगों का अध्ययन, गुणरत्न तप
उद्देशक	10		की आराधना, सोलह वर्ष का श्रमण जीवन, विपुलगिरि
पद	46 लाख 8 हजार		पर समाधिमरण, विजय विमान में उत्पत्ति, मुनियों द्वारा
उपलब्ध पाठ	192 अनुष्टुप श्लोक-प्रमाण	5	निर्वाण का कायोत्सर्ग व आचार भांडों का लाना
गद्य सूत्र	29		क. जालि की उत्पत्ति के सम्बन्ध में भ. गौतम की जिज्ञासा
पद्य	2		ख. भ. महावीर द्वारा भविष्य कथन- बत्तीस सागरोपम
			की देव स्थिति, च्यवन, महाविदेह में जन्म और
			सिद्ध पद की प्राप्ति
			2. द्वितीय मयालि अध्ययन
			ग. 16 वर्ष का श्रमण जीवन, वैजयंत विमान में उत्पत्ति
			3. तृतीय उवयालि अध्ययन
			घ. 16 वर्ष का श्रमण जीवन, जयंत विमान में उत्पत्ति
			4. चतुर्थ पुरिससेण अध्ययन
			ङ. 16 वर्ष का श्रमण जीवन, अपराजित विमान में
			उत्पत्ति
			5. पंचम वारिसेण अध्ययन
			च. 16 वर्ष का श्रमण जीवन, सवार्थसिद्ध विमान में
			उत्पत्ति

9 अनुत्तरौपपातिकदशाङ्ग विषय-सूची

प्रथम श्रुतस्कंध

प्रथम वर्ग

1-2	उत्थानिका- दस अध्ययनों के नाम
	1. प्रथम जालि अध्ययन
3	उत्थानिका- राजगृहनगर, गुणशील चैत्य, श्रेणिक राजा, धारिणी रानी, जालीकुमार, आठ कन्याओं के साथ पाणिग्रहण, आठ-आठ करोड़ का प्रीतिदान, भोगोपभोगों

6. षष्ठ्य	दीर्घदत्त	अध्ययन	2. द्वितीय	महासेन	अध्ययन
छ. बारह वर्ष का श्रमण पर्याय, सवार्थसिद्ध विमान में उत्पत्ति			क. उत्थानिका- राजगृहनगर, गुणशील चैत्य, श्रेणिक राजा, धारिणी देवी, दीर्घसेन कुमार		
7. सप्तम	लष्टदंत	अध्ययन	ख. भ. महावीर का समवसरण, प्रवचन, दीर्घसेन कुमार		
ज. बारह वर्ष का श्रमण पर्याय, अपराजित विमान में उत्पत्ति			को वैराग्य-प्रव्रज्या-सोलह वर्ष की श्रमण-पर्याय, एक मास की संलेखना-यावत्-दीर्घसेन व महासेन की विजय विमान में उत्पत्ति		
ये सातों धारिणी देवी के पुत्र थे			3. तृतीय	लष्टदंत	अध्ययन
8. अष्टम	वेहल्ल	अध्ययन	4. चतुर्थ	गूढदंत	अध्ययन
झ. चेलना माता, बारह वर्ष का श्रमण पर्याय, जयंत विमान में उत्पत्ति			लष्टदंत व गूढदंत की वैजयंत विमान में उत्पत्ति		
9. नवम	वेहायस	अध्ययन	5. पंचम	शुद्धदंत	अध्ययन
ज. चेलना माता, पाँच वर्ष का श्रमण पर्याय, वेजयंत विमान में उत्पत्ति			6. षष्ठ्य	हल्ल	अध्ययन
			शुद्धदंत व हल्ल की जयंत विमान में उत्पत्ति		
10. दशम	अभय	अध्ययन	7. सप्तम	द्रुम	अध्ययन
ट. नंदा माता, पाँच वर्ष का श्रमण जीवन, विजय विमान में उत्पत्ति			8. अष्टम	द्रुमसेन	अध्ययन
			द्रुम व द्रुमसेन की अपराजित विमान में उत्पत्ति		
			9. नवम	महाद्रुमसेन	अध्ययन
क. उत्थानिका-तेरह अध्ययनों के नाम			10. दशम	सिंह	अध्ययन
1. प्रथम	दीर्घसेन	अध्ययन	11. एकादशम	सिंहसेन	अध्ययन

12. द्वादशम	महासिद्धसेन अध्ययन	9	भ. महावीर के साथ धन्य मुनि का काकंदी से विहार,
13. त्रयोदशम	पुण्यसेन अध्ययन	10	ग्यारह अंगों का अध्ययन
	तेरह ही राजकुमारों का राजगृह नगर, पिता श्रेणिक राजा,		धन्य मुनि की शारीरिक दशा- पैर और अंगुलियों का
	माता धारिणी, प्रवज्या ग्रहण व १६-१६ वर्ष की दीक्षा व		वर्णन
	पांचों की सर्वार्थसिद्ध विमान में उत्पत्ति	11	धन्य मुनि की जंघाएं, जानु एवं ऊरू का वर्णन
	तृतीय वर्ग	12	धन्य मुनि के कटि, उदर व पसलियों का वर्णन
	उत्थानिका- दस अध्ययनों के नाम	13	धन्य मुनि के बाहु, हाथ व अंगुलियां, ग्रीवा, दाढ़ी, होठ
1. प्रथम	धन्य अध्ययन		एवं जिह्वा का वर्णन
2	उत्थानिका- काकंदी नगरी, सहस्राप्रवन उद्यान, जितशत्रु	14	धन्य मुनि की नासिका, नेत्र एवं मस्तक का वर्णन
	राजा, भद्रा सार्थवाही, धन्य पुत्र, पांच धायमाताओं द्वारा	15	धन्य मुनि की आंतरिक तेजस्विता
	पालन, ७२ कलाओं का अध्ययन	16	क. राजगृह नगर, गुणशील चैत्य, भगवान् महावीर का
3	बत्तीस कन्याओं से पाणिग्रहण, बत्तीस-बत्तीस वस्तुओं		समवसरण, श्रेणिक राजा का आगमन व प्रवचन
	का प्रीतिदान		तथा धन्य की प्रशंसा
4	भगवान् महावीर का समवसरण, धन्य कुमार को वैराग्य,		ख. श्रेणिक की चौदह हजार श्रमणों में अति उत्कृष्ट
	धन्यकुमार द्वारा माता-पिता को समझाकर दीक्षा की		तपश्चर्या करने वाले श्रमण को जानने की जिज्ञासा
	आज्ञा प्राप्त		ग. भ. महावीर द्वारा धन्य अणगार का नाम निर्देश
5	दीक्षा महोत्सव	17	क. धन्य अणगार को श्रेणिक द्वारा वंदन व स्तुति
6-8	धन्य मुनि द्वारा यावज्जीवन छठु तप व पारणे में सर्वथा		ख. श्रेणिक का स्वस्थान गमन
	नीरस (फेंकने योग्य) अन्न लेने की प्रतिज्ञा	18	क. स्थविरों के साथ धन्य अणगार की विपुलगिरि पर
			अंतिम आराधना, एक मास की संलेखना,

समाधिमरण, नव मास का श्रमण जीवन, सर्वार्थसिद्ध

विमान में उत्पत्ति

- ख. स्थविरों द्वारा धन्य अणगार के आचार भांड लाना
ग. च्यवन, महाविदेह में जन्म, सिद्धपद की प्राप्ति
घ. उपसंहार

2. द्वितीय सुनक्षत्र अध्ययन

19-20 काकंदी नगरी, जितशत्रु राजा, भद्रा सार्थवाही, पुत्र सुनक्षत्र,
भ. महावीर का पदार्पण, प्रव्रज्या, बहुत वर्षों तक श्रमण
पर्याय का पालन, ग्यारह अंगों का अध्ययन, कठिन
तपश्चर्या, संलेखना, सर्वार्थ सिद्ध विमान में उत्पत्ति,
तेतीस सागरोपम की स्थिति

3. तृतीय ऋषिदास अध्ययन

21 राजगृह नगर, भद्रा माता, बहुत वर्षों का दीक्षा पर्याय, एक
मास की संलेखना, सर्वार्थ सिद्ध विमान में उत्पत्ति

4. चतुर्थ पेल्लक अध्ययन

राजगृह नगर, बहुत वर्षों का श्रमण पर्याय

5. पंचम रामपुत्र अध्ययन

साकेत नगर, भद्रा माता, बहुत वर्षों का श्रमण पर्याय

6. षष्ठ चन्द्र अध्ययन

साकेत नगर, बहुत वर्षों का श्रमण पर्याय

7. सप्तम पृष्ठिम अध्ययन

वाणिज्य ग्राम नगर, बहुत वर्षों का श्रमण पर्याय

8. अष्टम पेढालपुत्र अध्ययन

वाणिज्य ग्राम नगर, बहुत वर्षों का श्रमण पर्याय

9. नवम पोट्टिल अध्ययन

हस्तिनापुर नगर, बहुत वर्षों का श्रमण पर्याय

10. दशम वेहल्ल अध्ययन

राजगृह नगर, पिता द्वारा दीक्षा महोत्सव, छह मास की
श्रमण पर्याय, दस ही कुमारों द्वारा एक-एक मास का
संलेखना तप, सर्वार्थ सिद्ध विमान में उत्पत्ति, सिद्ध गति
प्राप्त

क. उपसंहार- धर्म की आदि करने वाले -यावत्-

सिद्धगति प्राप्त भ. महावीर द्वारा कथित

ख. इस सूत्र में 1 श्रुतस्कंध, तीन वर्ग, तीन दिन में
अध्ययन

ग. प्रथम वर्ग के 10 अध्ययन, द्वितीय वर्ग के 13

अध्ययन व तृतीय वर्ग के 10 अध्ययन कुल 33



जन्मो जिजाणां

चरणानुयोगमय प्रश्नव्याकरणांग

श्रुतस्कंध	2	ग. पाँच प्रकार का आश्रव	2
अध्ययन	10	क. प्राणवध का स्वरूप	2
उद्देशक	10	ख. प्राणवध स्वरूप परिचायक बाबीस पर्यायवाची नाम	3
पद	92 लाख 16 हजार	प्राणवध रूप तीस नाम	4
उपलब्ध पाठ	2300 श्लोक परिमाण	पापियों के पाप कर्म व उनके भेद-प्रभेद	5
गद्य सूत्र	171	जलचर जीव	6
पद्य सूत्र	9	स्थलचर चतुष्टय जीव	7
आश्रव श्रुतस्कंध	संवर श्रुतस्कंध	उरपरिसर्प जीव	8
अध्ययन 5	अध्ययन 5	भुजपरिसर्प जीव	9
उद्देशक 5	उद्देशक 5	खेचर (नभचर) जीव	10
सूत्र 102	सूत्र 68	द्विन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय आदि विविध प्राणी	11-12
गाथा 3	गाथा 6	हिंसा करने के प्रयोजन	13
		पृथ्वीकाय की हिंसा के प्रयोजन	14
		अपकाय की हिंसा के प्रयोजन	15
		तेजस्काय की हिंसा के प्रयोजन	16
		वायुकाय की हिंसा के प्रयोजन	17
		वनस्पतिकाय की हिंसा के प्रयोजन	18
		क. हिंसक जीवों की मानसिक स्थिति	19
		ख. हिंसा के कुछ और प्रयोजन	
		हिंसक वन्य जातियाँ	

10 प्रश्नव्याकरणांग विषय-सूची

प्रथम आश्रव श्रुतस्कंध

1. प्रथम प्राणातिपात अध्ययन

- 1 क. उत्थानिका- संग्रहणी गाथाएं
- ख. आश्रव और संवर का वर्णन करने की प्रतिज्ञा

20-21	हिंसक म्लेच्छ जातियाँ	46	विविध प्रकार के व्यापारों के लिए मृषावाद
22	हिंसकों की नरक व तिर्यच गति	47-49	कुदर्शनों की सिद्धि के लिये मृषावाद
23	नरक का वर्णन	50	दुराचारों के सेवन के लिये मृषावाद
24	नरकों का बीभत्स शरीर	51	झूठा दोषारोपण करने वाले निंदक
25-26	नरकों को दिया जाने वाला लोमहर्षक दुःख	52	लौभजन्य अनर्थकारी झूठ
27	नरक जीवों की करुण पुकार	53	मृषावाद-उभय घातक
28-29	नरकपालों द्वारा दिये जाने वाले घोर दुःख	54-55	पाप का परामर्श देने वाले
30	नरकों की विविध पीड़ाएँ	56	हिंसक उपदेश-आदेश
31-32	नरकों के शस्त्र	57	युद्धादि के उपदेश-आदेश
33	नरकों के मरने के बाद तिर्यच गति	58	मृषावाद का भयानक फल
34-36	तिर्यच योनि दुःख	59	क. फल विपाक की भयंकरता
37	चतुरिन्द्रिय जीवों के दुःख		ख. द्वितीय अधर्म द्वारा का उपसंहार
38	त्रीन्द्रिय जीवों के दुःख		3. तृतीय अदत्तादान अध्ययन
39	द्वीन्द्रिय जीवों के दुःख	60	अदत्तादान का परिचय
40-41	एकेन्द्रिय जीवों के दुःख	61	अदत्तादान के तीस नाम
42	मनुष्य भव के दुःख	62	चौर्यकर्म के विविध प्रकार
43	प्रथम अधर्म द्वारा का उपसंहार	63	धन के लिए राजाओं द्वारा आक्रमण
	2. द्वितीय मृषावाद अध्ययन	64	युद्ध के लिए शस्त्र-सजा
44	मृषावाद का स्वरूप	65	युद्ध स्थल की बीभत्सता
45	मृषावाद के तीस नाम	66	वनवासी चोर

67	समुद्री डाके	88	अकर्मभूमिज मनुष्यों के भोग
68-70	ग्रामादि लूटने वाले चोर	89	अकर्मभूमिज नारियों की शरीर सम्पदा
71-72	चोर को बंदीगृह में होने वाले दुःख	90	पर स्त्री में लुब्ध जीवों की दुर्दशा
73-74	चोर को दिया जाने वाला दण्ड	91	अब्रह्मचर्य का दुष्परिणाम
75	चोरों को दी जाती हुई भीषण यातनाएं	92	चतुर्थ अधर्म द्वारा का उपसंहार
76	पाप और दुर्गति की परंपरा	5. पंचम परिग्रह अध्ययन	
77	संसार-सागर का स्वरूप	93	परिग्रह का स्वरूप
78	भोगे बिना छुटकारा नहीं	94	परिग्रह के तीस नाम
79	तृतीय अधर्म द्वारा का उपसंहार	95	परिग्रह के पाश में देव एवं मनुष्य भी बंधित
80	अब्रह्मचर्य का स्वरूप	96	परिग्रह के लिए विविध कलाएं
81	अब्रह्मचर्य के तीस नाम	97	क. परिग्रह पाप का कटु फल
82	अब्रह्मसेवी देवादि		ख. पंचम अधर्म द्वारा का उपसंहार
83	चक्रवर्ती के विशिष्ट भोग	98-102	आश्रवद्वारा उपसंहार की संग्रहणी गाथाएं
84	चक्रवर्ती का राज्य विस्तार	द्वितीय संवर श्रुतस्कंध	
85	क. चक्रवर्ती के विशेषण	103	पाँच संवर कथन प्रतिज्ञा
	ख. चक्रवर्ती के लक्षण	104	पाँच संवर के नाम
	ग. चक्रवर्ती की ऋद्धि	105	सर्वप्रथम अहिंसा के सम्बन्ध में कथन करने की प्रतिज्ञा
86	बलदेव और वासुदेव के भोग	1. प्रथम अहिंसा अध्ययन	
87	माण्डलिक राजाओं के भोग	106	पाँच संवरों का संक्षिप्त परिचय एवं महिमा

107	अहिंसा भगवती के 60 नाम	इ. ऐसा सत्य भी वर्जनीय	
108	अहिंसा महिमा की कुछ उपमायें	च. सत्य के दस प्रकार	
109	अहिंसा के विशुद्ध दृष्टा और आराधक	छ. भाषा के बारह प्रकार	
110	क. अहिंसा के उपासकों के कुछ कर्तव्य	ज. सोलह प्रकार के वचन	
	ख. आहार की निर्दोष विधि	सत्य महाव्रत का प्रभाव	121
111	साधु की भिक्षा शुद्धि की विधि	सत्य महाव्रत की प्रथम भावना- अनुवीचि भाषण	122
112	क. अहिंसा का स्वरूप	द्वितीय भावना- अक्रोध	123
	ख. प्रवचन का उद्देश्य और फल	तृतीय भावना- निलोभता	124
113	अहिंसा महाव्रत की प्रथम भावना ईयासमिति	चतुर्थ भावना- निर्भयता	125
114	द्वितीय भावना मनः समिति	पंचम भावना- हास्य त्याग	126
115	तृतीय भावना वचन समिति	असत्य बोलने के पाँच कारण	127
116	चतुर्थ भावना आहार-एषणा समिति	द्वितीय संवर द्वार का उपसंहार	128
117	पंचम भावना आदान निक्षेपण समिति	3. तृतीय अस्तेय अध्ययन	
118	अहिंसा के साधक का अप्रमत्त जीवन	दत्त अनुज्ञात (अस्तेय) का स्वरूप	129
119	प्रथम संवर द्वार का उपसंहार	दत्त अनुज्ञात व्रत के विराधक	130
	2. द्वितीय सत्य अध्ययन	दत्त अनुज्ञात व्रत के आराधक कौन ?	131-132
120	क. सत्य की महिमा	व्रत आराधना का फल	133
	ख. सदोष सत्य का त्याग	अस्तेय महाव्रत की पाँच भावना	134
	ग. बोलने योग्य वचन	प्रथम भावना- निर्दोष उपाश्रय	135
	घ. सत्य की कुछ उपमाएं	द्वितीय भावना- निर्दोष संस्कारक	136

137	तृतीय भावना- शय्या परिकर्म वर्जन	ख. एक से लेकर तैतीस बोल का संकलन
138	चतुर्थ भावना- अनुज्ञात भक्तादि	संवर्धर्म वृक्ष का रूपक
139	पंचम भावना- साधर्मिक विनय	155
140	तृतीय संवर द्वार का उपसंहार	156-158 परिग्रह विरत के अकल्पनीय-अनाचरणीय कार्य
	4. चतुर्थ ब्रह्मचर्य अध्ययन	159 शुद्ध निर्दोष भिक्षा लेने का विधान
141	ब्रह्मचर्य का स्वरूप एवं महिमा	160 औषधादि के संग्रह का तथा समीप में रखने का निषेध
142	ब्रह्मचर्य की बतीस उपमायें	161 धर्म साधना में उपयोगी उपकरण रखने का विधान
143-145	ब्रह्मचर्य का प्रभाव	162 निर्ग्रन्थों का आंतरिक स्वरूप
146	ब्रह्मचर्य विघातक निमित्त	163 निर्ग्रन्थों की 31 उपमायें
147	ब्रह्मचर्य रक्षक नियम	164 अपरिग्रही के जीवन की महिमा
148	चतुर्थ ब्रह्मचर्य महाव्रत की प्रथम भावना- विविक्त शयनासन	165 अपरिग्रह महाव्रत की प्रथम भावना- श्रोत्रेन्द्रिय संयम
149	द्वितीय भावना- स्त्री कथा वर्जन	166 द्वितीय भावना- चक्षुःन्द्रिय संयम
150	तृतीय भावना- स्त्रियों के रूप दर्शन त्याग	167 तृतीय भावना- घ्राणेन्द्रिय संयम
151	चतुर्थ भावना- पूर्वभोग-चिंतन त्याग	168 चतुर्थ भावना- रसनेन्द्रिय संयम
152	पंचम भावना- स्निग्ध सरस भोजन त्याग	169 पंचम भावना- स्पर्शनेन्द्रिय संयम
153	चतुर्थ संवर द्वार का उपसंहार	170 पंचम संवर द्वार का उपसंहार
	5. पंचम अपरिग्रह अध्ययन	171 क. पाँच संवरों की प्रशस्ति
154	क. परिग्रह का स्वरूप	ख. प्रश्नव्याकरण अंग का संक्षिप्त परिचय
		ग. प्रश्नव्याकरण अंग की पठनविधि
		घ. दस दिन में पाठन- एकांतर आर्यबिल के साथ



णमो वायणारियाणं

धर्मकथानुयोगमय विपाकश्रुताङ्ग

श्रुतस्कंध	2
अध्ययन	20
उद्देशक	20
पद	1 करोड़ 84 लाख 33 हजार
उपलब्ध पाठ	1216 अनुष्टुप श्लोक प्रमाण
गद्य सूत्र	185+39=224

दुःख विपाक श्रुतस्कंध

अध्ययन	10
उद्देशक	10
गद्य सूत्र	185

सुख विपाक श्रुतस्कंध

अध्ययन	10
उद्देशक	10
गद्य सूत्र	39

11 विपाकश्रुतांग विषय-सूची

1	उत्थानिका- चंपा नगरी, पूर्ण भद्र चैत्य
2	सुधर्मा स्वामी का आगमन
3	जम्बू स्वामी का पदार्पण
4	विपाकश्रुत के संबंध में जंबू द्वारा प्रश्न
5	प्रथम दुःख-विपाक श्रुतस्कंध क. सुधर्मा स्वामी का उत्तर

6	ख. उत्थानिका, श्रुतस्कंधों के नाम दस अध्ययनों के नाम की संग्रहणी गाथा प्रथम मृगापुत्र अध्ययन (कूर शासन का फल)
7	उत्थानिका- मृगग्राम नगर, चंदन-पादप उद्यान, सुधर्मयक्ष का यक्षायतन
8	क. विजय राजा, मृगादेवी, मृगापुत्र
9	ख. सर्वाङ्गोपाङ्ग विकल मृगापुत्र को तलघर में रखना एक जन्मांध भिखारी और उसका सहायक साथी
10	भ. महावीर का समवसरण, प्रवचन, विजय राजा का दर्शनार्थ जाना
11	अपने साथी सहित जन्मांध भिक्षुक का धर्म परिषद् में जाना
12	क. जन्मांध मृगापुत्र के सम्बन्ध में भ. गौतम की जिज्ञासा ख. भ. महावीर ने सर्वाङ्गोपाङ्ग विकल मृगापुत्र का परिचय दिया
13	मृगापुत्र को देखने के लिये भ. गौतम गणधर का जाना
14-18	मृगापुत्र को तथा उसके आहार परिणामन को देखना
19	कर्मफल का चिंतन, भ. महावीर के समक्ष मृगापुत्र विषयक प्रश्न

20	क. भगवान द्वारा समाधान ख. मृगापुत्र के पूर्वभव का वर्णन- जम्बूद्वीप, भरत क्षेत्र शतद्वार नगर, धनपति राजा ग. विजय वर्द्धमान खेड़ (एक धूलकोट- जागीरदार का राज्य) इकाई राष्ट्रकूट (एक जागीरदार) का क्रूर शासन इकाई के शरीर में सोलह रोगों की उत्पत्ति चिकित्सा के लिये किये गये प्रयत्नों की असफलता क. इक्काई की मृत्यु व नरक गति में उत्पत्ति ख. नरकायु भोग के पश्चात् मृगादेवी की कुक्षि में उत्पन्न होना	30-32	क. मृगापुत्र का पूर्णायु भोग के पश्चात् सिंह होना ख. मृगापुत्र द्वारा लाखों बार भवभ्रमण ग. सुप्रतिष्ठ नगर में एक मजदूर के घर जन्म लेना तथा गंगा तट की मिट्टी के नीचे दबकर मरना घ. पुनः सुप्रतिष्ठ नगर में एक सेठ के घर जन्म लेना ङ. युवावस्था में स्थविरों से धर्मश्रवण, वैराग्य-प्रव्रज्या, श्रमण पर्याय, समाधि-मरण, सौधर्म नामक प्रथम देवलोक में उत्पत्ति च. देवलोक से च्युत होकर धनाढ्य कुल में उत्पत्ति, प्रव्रज्या ग्रहण -यावत्- मोक्ष गमन छ. उपसंहार	विपाक. श्रु.1, अ.1, सूत्र 20-32, अ.2, सूत्र 1-4
21	इकाई राष्ट्रकूट (एक जागीरदार) का क्रूर शासन			
22	इकाई के शरीर में सोलह रोगों की उत्पत्ति			
23	चिकित्सा के लिये किये गये प्रयत्नों की असफलता			
24	क. इक्काई की मृत्यु व नरक गति में उत्पत्ति			
	ख. नरकायु भोग के पश्चात् मृगादेवी की कुक्षि में उत्पन्न होना			
25-26	मृगादेवी का अपमानित होना और गर्भ गिराने का प्रयत्न करना			
27	गर्भ में भस्मक रोग का होना			
28	जन्म के पश्चात् शिशु को उकरड़ी पर डालने के लिए दासी को कहना	1-2	(गोमाँस भक्षण, मद्यपान और वेश्यागमन का फल) उत्थानिका- वाणिज्य ग्राम, दूतिपलास उद्यान, सुधर्म यक्ष का यक्षायतन, मित्र नामक राजा, श्री नामक पट्टरानी कामध्वजा गणिका (72 कला, 64 गणिका कला, 29 विशेष गुण युक्त, 21 रतिकला, 32 वशीकरण, 9 अंग, 18 देशी भाषा विशारद)	
29	क. दासी का मृगादेवी के आदेश के सम्बन्ध में विजय राजा से निवेदन ख. मृगापुत्र को भूमिघर में रखने की व खाने-पीने की व्यवस्था	3 4		विजयमित्र सार्थवाह, सुभद्रा भार्या, उज्झितक पुत्र

5	भ. महावीर का समवसरण, प्रवचन		ख. उज्जितक का सर्वस्वहरण, गृह से निष्कासन
6	गौतम गणधर का भिक्षाचर्या के लिये जाना, राजमार्ग में उज्जितक के वध का दृश्य देखना	20	ग. सप्त व्यसन सेवन, काम ध्वजा वेश्या से काम क्रीड़ा श्रीदेवी के योनिशूल की वेदना, राजा द्वारा कामध्वजा की उपपत्ती के रूप में नियुक्ति
7	भ. महावीर से उज्जितक के वध का वृत्तांत कहना		कामध्वजा के घर में उज्जितक का गुप्त रूप से प्रवेश
8	पूर्वभव जिज्ञासा, जम्बूद्वीप, भरत क्षेत्र, हस्तिनापुर, सुनंद राजा, नगर में एक गौशाला	21	उज्जितक को कामध्वजा के साथ देखकर राजा द्वारा मृत्यु दण्ड का आदेश
9-12	भीम कूटग्राह-गुप्तचर, उत्पला भार्या का गौमाँस भक्षण का दोहद, भीम द्वारा दोहद की पूर्ति	23	क. उज्जितक की पूर्णायु, मृत्यु के पश्चात् भवभ्रमण, इन्द्रपुर नगर में गणिका कुल में उत्पत्ति, नपुंसक बनाना, प्रियसेन नामकरण, पूर्णायु भोग के पश्चात् नरक गति, अनेक भव भ्रमण पश्चात् चंपानरी में भैसे के रूप में उत्पत्ति, उद्दण्ड युवकों द्वारा मारना
13	पुत्र-जन्म, शिशु-रूदन से गोवर्ग का त्रसित होना, गोत्रास नाम देना		ख. उसी चंपानगरी में सेठ के घर में जन्म, युवावय में स्थविरों से धर्मश्रवण, वैराग्य, दीक्षा, श्रमण-जीवन, समाधिमरण, सौधर्म कल्प में उत्पत्ति, च्यवन, महाविदेह से मुक्ति
14	भीम की मृत्यु, सुनंद राजा द्वारा भीम के स्थान पर गोत्रास की नियुक्ति		ग. उपसंहार
15	गोत्रास का जीवन पर्यंत गोमाँस भक्षण, मृत्यु, नरक गमन		तृतीय अभग्न सेन अध्ययन
16	मृतवत्सा सुभद्रा की कुक्षि में गोत्रास की उत्पत्ति, जन्म होते ही उकरड़ी पर डालना, पुनः ग्रहण करना, उज्जितक नाम देना, पाँच धाय माताओं से पालन		(अण्डों के व्यापार का तथा मद्यपान का फल)
18	विजयमित्र सार्थवाह की व्यापार के निमित्त लवण समुद्र की यात्रा (चार प्रकार के विक्रय योग्य पदार्थ)		उत्थानिका- पुरिमताल नगर, अमोघ दर्शी नामक उद्यान,
19	क. पोत भंग, विजयमित्र सार्थवाह की मृत्यु, सुभद्रा सार्थवाही का विलाप, सुभद्रा की मृत्यु	1-2	

11 विपाकश्रुतांग विषय-सूची		विपाक. श्रु. 1, अ. 3, सूत्र 3-32, अ. 4, सूत्र 1-2
	अमोघ दर्शी यक्ष का यक्षायतन, महाबल राजा	पुकार
3-6	शालाटवी नामक चोरपल्ली, पाँच सौ चोरों का अधिपति	20
	“विजय”, स्कंद श्री नामक भार्या, पुत्र-अभग्नसेन	21
	युवावस्था	22-24
7-8	भ. महावीर का समवसरण, गौतम गणधर का भिक्षाचर्या के लिये जाना, राजमार्ग, अठारह चौराहों पर अभग्नसेन का वध देखना, संबंधियों के सम्मुख उसी के शरीर का मांस खिलाना व खून पिलाना	25
9	गौतम स्वामी द्वारा अभग्नसेन के पूर्वभव की जिज्ञासा पृच्छा	26
10	जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में, पुरिमताल नगर, उदित नामक राजा, अण्डों का व्यापारी निर्णय, जिसके अनेक प्रकार के अण्डों का व्यापार	27-31
11-12	क. अण्डे और मद्य के उपभोक्ता निर्णय की मृत्यु व नरक में उत्पत्ति	32
13-16	ख. निर्णय की आत्मा का स्कंदश्री की कुक्षि में आगमन क. स्कंदश्री का दोहद, पुत्र जन्म, अभग्नसेन नाम रखना, बाल्यकाल	ख. पुनः उसी वाराणसी में सेठ के घर में जन्म, स्थविरों से धर्मश्रवण, वैराग्य, दीक्षा, संयमाराधन, समाधिमरण, महाविदेह से मुक्ति ग. उपसंहार
17-18	ख. आठ कन्याओं से पाणिग्रहण, भोगमय जीवन	
19	विजय चोर की मृत्यु, अभग्नसेन का अभिषेक अभग्नसेन के उपद्रवों से त्रस्त जनता की महाबल राजा से	(माँस विक्रय और व्यभिचार का फल) उत्थानिका- साहंजनी नगरी, देवरमण उद्यान, अमोघ यक्ष का यक्षायतन, महचंद राजा, सुषेण अमात्य,

चतुर्थ शकट अध्ययन

(माँस विक्रय और व्यभिचार का फल)

उत्थानिका- साहंजनी नगरी, देवरमण उद्यान, अमोघ यक्ष का यक्षायतन, महचंद राजा, सुषेण अमात्य,

सुदर्शना गणिका	13	क. महचंद राजा की सम्पत्ति से शकट का प्रतप्त स्त्रीमूर्ति के साथ आलिंगन का दण्ड देना, 57 वर्ष की आयु भोगकर मृत्यु व नरक गति
3 सुभद्र सार्थवाह, भद्रा भार्या, शकट पुत्र		
4 भ. महावीर का समवसरण, धर्मकथा		ख. शकट की आत्मा का भव-भ्रमण
5 क. गौतम गणधर का गौचरी जाना, राजमार्ग के मध्य में नरवध का दृश्य देखना		ग. शकट और सुदर्शना की आत्मा का राजगृह के मातांग (भंगी) कुल में बहन-भाई होना, दोनों का पति-पत्नी के रूप में जीवन बिताना
6 ख. भ. महावीर से वध्य पुरुष का पूर्वभव पूछना		
पूर्वभव- जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में छगलपुर नामक नगर, सिंहगिरि राजा, छणिक नाम का छगलिक कसाई	14	क. शकट का गुप्तचर बनना, मृत्यु के पश्चात् भव भ्रमण करते हुए वाराणसी में मत्स्य के रूप में जन्म, मच्छी मारों द्वारा घात
7-8 मद्य माँस के आहारी छणिक की पूर्णायु, मृत्यु व नरक गति		ख. उसी आत्मा का वाराणसी में सेठ के घर में जन्म, प्रवज्या-यावत्-महाविदेह से मोक्ष प्राप्त करना -
9 क. छणिक की आत्मा का मृतवत्सा भद्रा की कुक्षि से जन्म, शिशु को शकट (गाड़े) के नीचे रखना और शकट नाम रखना		ग. उपसंहार
ख. सुभद्र सार्थवाह की लवण समुद्र यात्रा, जहाज का टूटना, सुभद्र का मरना, भद्रा का भी मरना	1	पंचम बृहस्पति दत्त अध्ययन (यज्ञ हिंसा तथा परस्त्री गमन का फल)
ग. शकट का सर्वस्व छीन लेना और घर से निकाल देना	2	उत्थानिका- कौशाम्बी नगरी, चन्द्रावतरण उद्यान, श्वेतभद्र यक्ष
घ. शकट का सुदर्शना गणिका से स्नेह		शतानीक राजा, मृगादेवी भार्या, पुत्र युवराज उदयनकुमार, पुत्रवधु पद्मावती देवी
10-12 सुषेण मंत्री का सुदर्शना के साथ शकट को देखना	3	चार वेदों में प्रवीण सोमदत्त पुरोहित, वसुदत्ता भार्या, पुत्र

4	बृहस्पतिदत्त भगवान महावीर का समवसरण, गौतम गणधर का भिक्षाचर्य के लिये जाना, राजमार्ग में प्राण दण्ड का दृश्य देखना		ख. उसी आत्मा का हस्तिनापुर में सेठ के घर में जन्म, प्रव्रज्या-यावत्-महाविदेह से मुक्ति ग. उपसंहार
5	पूर्वभव पृच्छा, जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में सर्वतोभद्र नगर, जितशत्रु राजा, चारों वेदों का ज्ञाता महेश्वर दत्त पुरोहित	1-2	षष्ठ नन्दिवर्धन अध्ययन (कठोर दण्ड और पितृवध संकल्प का फल)
6	जितशत्रु राजा की समृद्धि के लिये प्रतिदिन ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र बालक को मारकर महेश्वर दत्त द्वारा शांति होम करना	3	उत्थानिका- मथुरानगरी, भण्डीर उद्यान, सुदर्शन यक्ष, श्री दाम राजा, बन्धु श्री भार्या, युवराज नन्दिवर्धन कुमार, सुबन्धु अमात्य, बहुमित्र पुत्र, चित्र नामक अलंकारिक (नाई)
7	महेश्वर दत्त की पूर्णायु, मृत्यु, नरक गति, भव भ्रमण	4-5	भ. महावीर का समवसरण, धर्म प्रवचन, गौतम गणधर की भिक्षाचर्या, राजमार्ग में देह दाह दण्ड का दृश्य
8	क. महेश्वर दत्त की आत्मा का कोशांबी नगरी के सोमदत्त पुरोहित की पत्नी वसुदत्ता की कुक्षि में बृहस्पति दत्त के रूप में जन्म	6	पूर्वभव पृच्छा, जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में सिंहपुर नगर, सिंहरथ राजा, दुर्योधन नामक कारागृह अधीक्षक बर्दियों को दिये जाने वाले विविध प्रकार के कठोर दण्ड- जेलर का घोर अत्याचार
9	ख. उदयन राजकुमार के साथ बृहस्पति दत्त की मैत्री	7-8	
10-11	शतानीक राजा की मृत्यु, उदयन का राज्याभिषेक बृहस्पति दत्त का उदयन की पत्नी पद्मावती के साथ अनुचित सम्बन्ध, प्राण दण्ड	9	3100 वर्ष की आयु भोगकर मृत्यु, छट्टी नरक में गमन
12	क. बृहस्पति दत्त की आत्मा भवभ्रमण करती हुई हस्तिनापुर में मृग के रूप में जन्म, शिकारियों द्वारा वध	10	क. दुर्योधन की आत्मा का मथुरा नगरी में श्रीदाम राजा के बंधुश्री की कुक्षि से नन्दिषेण के रूप में जन्म ख. युवा नन्दिषेण की राज्यलिप्सा
		11	चित्र अलंकारिक को आधा राज्य का लोभ देकर पिता

12	श्रीदाम को मारने का षड्यंत्र क. चित्र अलंकारिक ने राजा श्रीदाम को नंदीषेण के षड्यंत्र की जानकारी दी ख. नंदीषेण के वध की राजज्ञा, 60 वर्ष की आयु भोगकर मृत्यु, पश्चात् नरक गमन ग. नंदीषेण की आत्मा का भवभ्रमण कर हस्तिनापुर में मत्स्य के रूप में जन्म, मच्छीमारों द्वारा वध घ. उसी आत्मा का हस्तिनापुर में सेठ के घर में जन्म, बोधि की प्राप्ति, आगार धर्म की आराधना, समाधि मरण, सौधर्म कल्प में उत्पत्ति, महाविदेह से निर्वाण पद की प्राप्ति ङ. उपसंहार	5-6 7-8 9 10 11 12	पश्चिम, दक्षिण और उत्तर द्वार से क्रमशः प्रवेश करने पर उसी कोढ़ी पुरुष को देखना क. पूर्वभव पृच्छा, जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में विजयपुर नगर, कनकरथ राजा, धनवन्तरी वैद्य ख. अष्टांग आयुर्वेद के नाम चिकित्सा के लिये अनेक प्रकार के माँसों का प्रयोग स्वयं धनवन्तरी द्वारा मद्य माँस आहार का आसक्तिपूर्वक प्रयोग, 3200 वर्ष की पूर्णायु भोगकर मृत्यु व नरक गमन संतान प्राप्ति के लिये मृतवत्सा गंगदत्त सार्थवाहिनी द्वारा यक्ष पूजा तथा चढ़ावा करने का संकल्प सार्थवाह की आज्ञा से विधिवत् यक्ष पूजा करना धनवन्तरी वैद्य की आत्मा का पाटलीखण्ड नगर में गंगदत्ता भार्या की कुक्षि में आगमन सार्थवाह पत्नी गंगदत्ता का दोहद और उसकी पूर्ति पुत्र जन्म, यक्ष के चढ़ावा, यक्ष की कृपा से प्राप्त पुत्र का उम्बरदत्त नामकरण क. सागरदत्त और गंगदत्त की मृत्यु, उम्बरदत्त को घर से निकाल देना, उम्बरदत्त के शरीर में सोलह रोगों की उत्पत्ति, सोलह रोगों के नाम
1-2	उत्थानिका- पाटलिखण्ड नगर, वनखण्ड उद्यान, उम्बरदत्त यक्ष, सिद्धार्थ राजा, सागरदत्त सार्थवाह, गंगदत्ता भार्या, उम्बरदत्त पुत्र	14 15	
3	भ. महावीर का समवसरण	16	
4	गौतम गणधर का भिक्षाचर्या के लिये नगर के पूर्व द्वार से प्रवेश व एक कोढ़ी पुरुष को देखना		

ख.	उम्बरदत्त 72 वर्ष की पूर्णायु भोगकर मृत्यु व नरक गमन तत्पश्चात् भव भ्रमण करता हुआ हस्तिनापुर में कूकड़े के रूप में जन्म, दुराचारियों द्वारा वध	7-8	राजा व राज परिवार के लिये विविध प्रकार के मांस पकाना, स्वयं श्रीयक रसोईये की माँसाहार में आसक्ति, 3300 वर्ष की आयु भोगकर मृत्यु व नरक गमन
17	उसी आत्मा का हस्तिनापुर में सेठ के घर में जन्म, सम्यक्त्व की प्राप्ति, श्रावक धर्म की आराधना, सौधर्म देवलोक में उत्पत्ति, च्यवन, महाविदेह से मुक्ति	9	मृतवत्सा समुद्रदत्ता का संतान प्राप्ति के लिये यक्ष पूजा का संकल्प-यावत्-शौरिकदत्त नाम रखना
18	उपसंहार	10	समुद्रदत्त की मृत्यु, शौरिकदत्त का मच्छीमारों का प्रमुख बनना, यमुना नदी आदि में से मच्छियाँ पकड़ना
	अष्टम शौरिकदत्त अध्ययन (मच्छीमार के व्यवसाय का फल)	11	क. मच्छियाँ पकड़ने के अनेक साधनों का उल्लेख
1-2	उत्थानिका- शौरिकपुर, शौरिकावतंसक उद्यान, शौरिक नामक यक्ष, सौरिकदत्त राजा	12-13	ख. मच्छियाँ सुखाना, मच्छियों के बने हुए विविध भोज्य पदार्थ
3	मच्छीमारों का मोहल्ला, समुद्रदत्त मच्छीमार, समुद्रदत्ता भार्या, शौरिकदत्त पुत्र	14	शौरिकदत्त के गले में मत्स्य कंटक लगाना, चिकित्सा के लिये अनेक प्रयत्न
4-5	भ. महावीर का समवसरण, गौतम गणधर का भिक्षाचर्या से लौटते समय मच्छीमारों के मोहल्ले के समीप एक रुग्ण मच्छीमार को कीड़ों से युक्त रक्त वमन करते हुए देखना		क. वेदना व्यथित शौरिकदत्त 70 वर्ष की पूर्णायु भोगकर मृत्यु व नरक गति, अनेक भव भ्रमण करते हुए हस्तिनापुर में मत्स्य रूप में उत्पत्ति, मच्छीमारों द्वारा वध
6	पूर्वभव पृच्छा, जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में नदीनार का मित्रराजा, उसका श्रीयक रसोईया	15	ख. उसी आत्मा का हस्तिनापुर में सेठ के घर में जन्म, बोधि की प्राप्ति, देश विरति की आराधना, सौधर्म कल्प में उत्पत्ति, च्यवन, महाविदेह से मोक्ष उपसंहार

नवम देवदत्ता अध्ययन

(ईर्ष्या-द्वेष का फल)

1-2	उत्थानिका- रोहीतक नगर, पृथ्वी अवतंसक उद्यान, धरण यक्ष, वैश्रमण दत्त राजा, श्रीदेवी रानी, युवराज पुष्पनंदी कुमार	14	मद्यपान कराया, वे नृत्य गान में मस्त होकर सो गई अर्ध रात्रि में 499 रानियों को कूटागार शाला में बंद करके जला देना
3	दत्त गाथापति, कृष्ण श्री भार्या, देवदत्ता पुत्री	15	क्रूरकर्मी सिंहसेन की 3400 वर्ष पूर्णायु भोगकर मृत्यु व नरक गति
4	भ. महावीर का समवसरण, गौतम गणधर की भिक्षाचर्या, राजमार्ग में एक स्त्री के शूली दण्ड का दृश्य देखना	16	रोहीतक नगर के दत्त सार्थवाह की कृष्ण श्री की कुक्षि में सिंहसेन की आत्मा का आगमन, पुत्री रूप में जन्म, देवदत्ता नाम रखना, अध्ययन, युवावस्था
5-7	पूर्वभव पृच्छा, जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में सुप्रतिष्ठ नगर, महसेन राजा, अन्तःपुर में धारिणी आदि एक हजार रानियाँ, धारिणी पुत्र सिंहसेन राजकुमार, श्यामा आदि पाँच सौ राज्य कन्याओं से पाणिग्रहण, दहेज	17-22	पुष्पनंदी राजकुमार के लिये वैश्रमणदत्त राजा द्वारा देवदत्ता की याचना, देवदत्ता से पुष्पनंदी का विवाह
8	महसेन राजा की मृत्यु	23	वैश्रमण राजा की मृत्यु, पुष्पनंदी राज सिंहसेन पर आरूढ़, पुष्पनंदी अपनी माता श्रीदेवी को प्रतिदिन प्रणाम करता, मालिश करवाता, स्नान करवाता व भोजन करने के पश्चात् ही स्वयं के कार्य करता, वह मातृ भक्त था
9	क. सिंहसेन की श्यामा रानी में अत्यासक्ति, अन्य 499 रानियों से विरक्ति	24	पत्नी देवदत्ता इस बात से रूष्ट व माता श्रीदेवी को मारने का संकल्प
10	ख. अन्य रानियों द्वारा श्यामा रानी को मारने का षड्यंत्र	25	देवदत्ता द्वारा श्रीदेवी की योनि में गर्म लोह शलाका डाली व प्राणों का संहार किया
11	श्यामा देवी को यह ज्ञात होने पर अन्य रानियों से दुर्भाव	26	माताश्री के अकाल मृत्यु के समाचार सुनकर देवदत्ता पर आक्रोश
12	प्राण रक्षा के लिये श्यामा का सिंहसेन से निवेदन	27	
13	सिंहसेन द्वारा कूटागारशाला बनाने का आश्वासन		
	कूटागार शाला में सब रानियों को रखा, भोजन कराया,		

	विपाक. श्रु. 1, अ. 9, सू. 28-29	11 विपाकश्रुतांग विषय-सूची	विपाक. श्रु. 1, अ. 10, सू. 1-10, श्रु. 2, अ. 1, सू. 1-4
28	पुष्पनदी का देवदत्ता के लिये सूली भेदन का आदेश, मरकर नरक गति प्राप्त	6	पृथ्वी श्री की आत्मा का वर्धमान नगर के धनदेव की भार्या प्रियंगु की कुक्षि में अंजुश्री के रूप में जन्म, युवावस्था विजय मित्र राजा का अंजुश्री से विवाह, अंजुश्री के योनिशूल वेदना, चिकित्सा की असफलता, अशोक वाटिका में अंजुश्री का रूदन व भयंकर वेदना
29	क. भवभ्रमण करती हुई गंगपुर में हंस रूप में जन्म, शिकारियों द्वारा वध ख. गंगपुर में उसी आत्मा का श्रेष्ठी के गृह में जन्म, श्रमणोपासक धर्म की आराधना, समाधिमरण, सौधर्म कल्प में उत्पत्ति, महाविदेह से मुक्ति ग. उपसंहार	7-9 10	क. अंजुश्री का 90 वर्ष की आयु भोगकर मृत्यु व नरक गति ख. भवभ्रमण करती हुई सर्वतोभद्र नगर में मयूर के रूप में जन्म, शिकारियों द्वारा वध ग. उसी आत्मा का सर्वतोभद्र नगर में सेठ के घर में पुत्र रूप में जन्म, सम्यक्त्व की प्राप्ति, प्रव्रज्या, सौधर्म कल्प में उत्पत्ति, च्यवन, महाविदेह से मुक्ति घ. प्रथम दुःख विपाक श्रुतस्कंध का उपसंहार
1-2	उत्थानिका- वर्द्धमानपुर नगर, विजय वर्धमान उद्यान, मणिभद्र यक्ष, विजयमित्र राजा, धनदेव सार्थवाह, प्रियंगु भार्या, अंजू नामक पुत्री		द्वितीय सुखविपाक श्रुतस्कंध उत्थानिका- दस अध्ययनों के नाम
3	भ. महावीर का समवसरण, भ. गौतम की भिक्षाचर्या, अशोक वाटिका में एक अतिरुण स्त्री को करुण क्रंदन करते हुए देखना	1	1. प्रथम सुबाहुकुमार अध्ययन उत्थानिका- हस्तिशीर्ष नगर, पुष्प करण्डक उद्यान, कृतवन माल प्रिय यक्ष का यक्षायतन, अदीन शत्रु राजा, धारिणी देवी प्रमुख एक हजार रानियाँ क. धारिणी का सिंह स्वप्न, सुबाहु कुमार का जन्म,
4	पूर्वभव की जिज्ञासा, जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में इन्द्रपुर नगर, इन्द्रदत्त राजा, पृथ्वी श्री गणिका, भोगों में रत	2-3	
5	पृथ्वी श्री गणिका 3500 वर्ष की पूर्णायु करके मृत्यु व नरक गति, तत्पश्चात् भवभ्रमण	4	

विपाक. श्रु.2, अ.1, सूत्र 5-21, अ.2, सूत्र 1-2	11 विपाकश्रुतांग विषय-सूची	वि. श्रु.2, अ.3, सूत्र 1-2	३८५
संवर्धन, अध्ययन			
ख. पाँच सौ कन्याओं से पाणिग्रहण, देहेज, भोगोपभोगों में व्यस्त		विहार, ग्यारह अंगों का अध्ययन, तपश्चर्या अनेक वर्षों का श्रमण जीवन, एक मास की संलेखना, सौधर्म देवलोक में उत्पत्ति	
5-6	भ. महावीर का समवसरण, सुबाहु कुमार द्वारा धर्मकथा श्रवण, गृहस्थ धर्म आराधन की प्रतिज्ञा	20	प्रत्येक देव भव के पश्चात् प्रत्येक मनुष्य भव में प्रव्रज्या ग्रहण करना, क्रमशः सर्वार्थ सिद्धि में उत्पत्ति, च्यवन, महाविदेह से सिद्धगति
7	सुबाहुकुमार की पुण्यवाणी से प्रभावित होकर गौतम स्वामी द्वारा पूर्वभव की जिज्ञासा	21	उपसंहार
8	भगवान द्वारा समाधान- पूर्वभव		2. द्वितीय भद्रनंदीकुमार अध्ययन
9	जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में हस्तिनापुर नगर, सुमुख गाथापति, सहस्राप्त्रवन उद्यान, पाँच सौ मुनियों के साथ स्थविर धर्मघोष का आगमन	1-2	उत्थानिका- ऋषभपुर नगर, स्तूप करण्डक उद्यान, धन्य यक्ष का यक्षायतन, धनावह राजा, सरस्वती देवी, भद्रनंदी कुमार, श्रीदेवी प्रमुख पाँच सौ देवियों के साथ विवाह, भगवान का पदार्पण, श्रावक धर्म अंगीकार, गौतम स्वामी द्वारा पूर्वभव पृच्छा, महाविदेह क्षेत्र, पुण्डरिकिणी नगरी, विजयकुमार, युगबाहु तीर्थंकर को दान देना, जिस कारण मनुष्य गति बंध, शेष सुबाहुकुमार के समान
10-11	महा तपस्वी सुदत्त अणगार को सुमुख गाथापति द्वारा शुद्ध आहार दान		3. तृतीय सुजातकुमार अध्ययन क. उत्थानिका- वीरपुरनगर, मनोरम उद्यान, वीर कृष्ण मित्र राजा, श्री देवी रानी, सुजात कुमार, बल श्री
12	आहारदान से सुमुख गाथापति का मनुष्य गति बंध		
13	वहाँ से च्यवकर दान के प्रभाव से यहां जन्म, पाँच दिव्यों की वर्षा		
14	भगवान के समीप श्रावक धर्मग्रहण		
15	सुबाहु कुमार का अष्टम तप-पौषध	1-2	
16	प्रव्रज्या लेने का संकल्प		
17-19	भ. महावीर के समीप प्रव्रज्या ग्रहण, भ. महावीर का		

३८६	विपाक. शु.2, अ.4, सूत्र 1-2 11 विपाकश्रुतांग विषय-सूची	विपाक. शु.2, , अ.5, सूत्र 1-2, अ.6, सूत्र 1-2
1-2	प्रमुख पाँच सौ कन्याओं से पाणिग्रहण, भगवान का पदार्पण, सुजातकुमार द्वारा श्रावक धर्म अंगीकार ख. गौतम स्वामी द्वारा पूर्वभव पृच्छा- इषुकार नगर, ऋषभदत्त गाथापति, पुष्पदत्त अणगार को आहार दान ,जिस कारण सिद्ध गति बंध, शेष सुबाहुकुमार के समान ग. उपसंहार	भार्या, पुत्र महचन्द कुमार, पुत्रवधु अरहदत्ता, पौत्र जिनदास, भ. महावीर का पदार्पण, जिनदास द्वारा बारह व्रत अंगीकार ख. गौतम स्वामी द्वारा पूर्वभव पृच्छा- मध्यमिका नगरी, मेघरथ राजा, सुधर्म अणगार को दान, जिस कारण सिद्ध गति बंध, शेष सुबाहुकुमार के समान, विशेष- उसी भव में ही मोक्ष ग. उपसंहार
	4. चतुर्थ सुवासवकुमार अध्ययन क. उत्थानिका- विजयपुर नगर, नंदन वन, अशोक यक्ष का यक्षायतन, वासव दत्त राजा, कृष्णा देवी, पुत्र सुवासव कुमार, भद्रा प्रमुख पाँच सौ कन्याओं से पाणिग्रहण, भ. महावीर का पदार्पण, सुवासवकुमार द्वारा श्रावक धर्म अंगीकार ख. गौतम स्वामी द्वारा पूर्वभव पृच्छा- कौशाम्बी नगरी, धनपाल राजा, वैश्रमण भद्र अणगार को दान, जिस कारण सिद्ध गति बंध, शेष सुबाहुकुमार के समान ग. उपसंहार	6. षष्ठ धनपतिकुमार अध्ययन क. उत्थानिका- कनकपुर नगर, श्वेताशोक उद्यान, वीरभद्र यक्ष का यक्षायतन, प्रिय चन्द्र राजा, सुभद्रा देवी रानी, पुत्र वैश्रमण कुमार, श्रीदेवी प्रमुख पाँच सौ कन्याओं के साथ पाणिग्रहण, भ. महावीर का पदार्पण, पौत्र धनपति द्वारा बारह व्रत अंगीकार ख. गौतम स्वामी द्वारा पूर्वभव पृच्छा- मणिचयिका नगरी, मित्र राजा, संभूतविजय अणगार को दान, जिस कारण सिद्ध गति बंध, शेष-सुबाहुकुमार के समान विशेष- उसी भव में ही मोक्ष ग. उपसंहार
	5. पंचम जिनदासकुमार अध्ययन क. उत्थानिका- सौगंधिका नगरी, नीलाशोक उद्यान, सुकाल यक्ष का यक्षायतन, अप्रतिहत राजा, सुकृष्णा	

7. सप्तम महाबलकुमार अध्ययन

1-2 क. उत्थानिका- महापुरनगर, रक्ताशोक उद्यान, रक्तपाद यक्ष का यक्षायतन, बल राजा, सुभद्रा देवी रानी, पुत्र महाबलकुमार, रक्तवती प्रमुख 500 कन्याओं से पाणिग्रहण, भ. महावीर का पदार्पण, महाबल द्वारा बारह व्रत अंगीकार

ख. गौतम स्वामी द्वारा पूर्वभव पृच्छा- मणिपुरनगर, नागदेव गाथापति, इन्द्रदत्त अणगार को दान, जिस कारण सिद्ध गति बंध, शेष- धनपतिकुमार के समान ग. उपसंहार

8. अष्टम भद्रनंदीकुमार अध्ययन

1-2 क. उत्थानिका- सुघोष नगर, देवरमण उद्यान, वीरसेन यक्ष का यक्षायतन, अर्जुन राजा, तत्त्ववती देवी रानी, पुत्र भद्रनंदी कुमार, श्रीदेवी प्रमुख पाँच सौ कन्याओं से विवाह, भ. महावीर का पदार्पण, भद्रनंदी द्वारा बारह व्रत अंगीकार

ख. गौतम स्वामी द्वारा पूर्वभव पृच्छा- महाघोष नगर, धर्मघोष गाथापति, धर्मसिंह अणगार को दान, जिस कारण सिद्ध गति बंध, शेष- धनपतिकुमार के समान ग. उपसंहार

9. नवम महचंद्रकुमार अध्ययन

क. उत्थानिका- चंपानगरी, पूर्णभद्र उद्यान, पूर्णभद्र यक्ष का यक्षायतन, दत्तराजा, रक्तवती देवी रानी, पुत्र महचंद्र कुमार, श्रीकांता प्रमुख पाँच सौ कन्याओं के साथ पाणिग्रहण, भ. महावीर का पदार्पण, महचन्द्र द्वारा बारह व्रत अंगीकार

ख. गौतम स्वामी द्वारा पूर्वभव पृच्छा- चिकित्सा नगरी, जितशत्रु राजा, धर्मवीर्य अणगार को दान, जिस कारण सिद्ध गति बंध, शेष- धनपतिकुमार के समान ग. उपसंहार

10. दशम वरदत्तकुमार अध्ययन

क. उत्थानिका- साकेत नगर, उत्तरकुरु उद्यान, पाशमृग यक्ष का यक्षायतन, मित्रनंदी राजा, श्रीकांता देवी रानी, पुत्र वरदत्तकुमार, वरसेना प्रमुख पाँच सौ कन्याओं से विवाह, भ. महावीर का पदार्पण, वरदत्त द्वारा बारह व्रत अंगीकार

ख. गौतम स्वामी द्वारा पूर्वभव पृच्छा- शतद्वार नगर, विमलवाहन राजा, धर्मरुचि अणगार को दान, शेष- सुबाहुकुमार के समान ग. उपसंहार

12 उपांग सूत्र

धर्मकथानुयोग प्रधान औपपातिक उपाङ्ग

अध्ययन	1
उद्देशक	1
उपलब्ध पाठ	1167 श्लोक प्रमाण
गद्य सूत्र	43
पद्य सूत्र	32

12 औपपातिक सूत्र विषय सूची

चम्पा नगरी के वैभव का वर्णन

1	क. कृषि भूमि
	ख. मुर्गे और सांड नागरिक पशु-पक्षी
	ग. ईख, जौ, चावल खाद्य पदार्थ
	घ. गायें, भैंसें, भेड़ें पालतू पशु
	ङ. सुन्दर चैत्य, वैश्यालय सार्वजनिक स्थान
	च. उत्कोचिक (रिश्तत लेने वाले) अपराधी वृत्ति वाले
	छ. नट आदि 13 कलाजीवी
	ज. आराम (उद्यान) सार्वजनिक क्रीड़ा स्थान
	झ. अगड़ आदि 4 सार्वजनिक जलाशय
	ञ. परिखा, चक्र आदि से इन्द्रकील पर्यंत
	नागरिक सुरक्षा के साधन

ट.	विपणि बाजार आदि क्रय-विक्रय के स्थान
ठ.	शृंगाटक आदि राजमार्ग में विशेष स्थान
ड.	तुरग हाथी आदि यातायात के साधन

पूर्णभद्र चैत्य वर्णन

2	क. काला गुरु आदि सुगंधित धूप
	ख. नट आदि कला जीवि

वनखण्ड वर्णन

3-4	क. मूल, कंद आदि वृक्ष के अंगोपांग
	ख. नित्य कुसुमिता आदि बारहमासी वनस्पतियाँ
	ग. शुक, बर्हि आदि वन्य पक्षी
	घ. गुच्छ आदि विविध वनस्पतियाँ
	ङ. वापी आदि सार्वजनिक जलाशय
	च. रथ आदि यातायात के साधन

अशोक वृक्ष वर्णन

5-9	क. तिल आदि विविध वनस्पतियाँ
	ख. लोध्र आदि सुगंधित वृक्ष
	ग. फनस, दाड़म आदि फल वाले वृक्ष
	घ. शिविकायान
	ङ. पद्मलता आदि विविध लता वर्ग

शिलापट्ट वर्णन

10	क. अंजन आदि विविध रंग

	ख. मरकत आदि	फर्श में लगाये जाने वाले	20	क. कुणिक द्वारा भगवान की स्तुति
	ग. ईहा मृग आदि	भित्ति चित्र		ख. प्रवृत्तिवादुक का सत्कार
11	चंपाधिपति कोणिक राजा का वर्णन		21	पूर्णभद्र चैत्य में भगवान के पधारने पर सूचना देने का आदेश
12	राजमहिषी धारिणी का वर्णन			भगवान महावीर का पूर्णभद्र चैत्य में पदार्पण
13-14	भ. महावीर के कार्यक्रमों की सूचना देने वालों का वर्णन		22	भ. महावीर के अंतेवासी
15	गणनायक, दण्डनायक आदि राज्य के अधिकारी वर्ग के साथ कोणिक का उपस्थानशाला में आगमन		23	क. अंतेवासियों का पूर्व-परिचय
16	क. भ. महावीर का चंपानगरी की ओर विहार			ख. अंतेवासियों का दीक्षा काल
	ख. भ. महावीर की ऊँचाई		24	क. अंतेवासियों की ज्ञान-संपदा
	ग. भगवान् के प्रत्येक अंगोपांग का वर्णन			ख. अंतेवासियों की इच्छा शक्ति
	घ. चौतीस बुद्ध वचनातिशय			ग. अंतेवासियों की विशिष्ट लब्धियाँ
	ड. पैतीस सत्य वचनातिशय			घ. अंतेवासियों की विविध तपश्चर्या
	च. चक्र आदि प्रतिहार्य			ड. विशिष्ट तपों व पंडिताओं के नामों का विस्तृत वर्णन
	छ. श्रमण-श्रमणी परिवार की संख्या			अंतेवासी स्थविरों का वर्णन
17-18	ज. भ. महावीर का चंपानगरी के बाहर पूर्णभद्र चैत्य के समीप आगमन		25	क. स्थविरों का पूर्व-परिचय
	प्रवृत्तिवादुक द्वारा कोणिक को चंपानगरी के उपनगर में			ख. स्थविरों की शरीर संपदा, व्यक्तित्व
	भ. महावीर के पदार्पण की सूचना देना			ग. स्थविरों का संयमी जीवन
19	क. भ. महावीर को स्व-स्थान से वंदना करने का कोणिक का उपक्रम		26	घ. स्थविरों का बौद्धिक परिचय
	ख. पाँच राज्य चिह्नों के नाम			ड. स्थविरों की अनुगामिता
				क. स्थविरों का बहुश्रुत ज्ञान
				ख. स्थविरों का सामर्थ्य

- ग. स्थविरों का स्व सिद्धांत ज्ञान
घ. स्थविरों की स्मरण शक्ति का परिचय

भगवान महावीर के अंतेवासी

- 27 क. अंतेवासियों की संयम आराधना
ख. अंतेवासियों का विरक्त जीवन
ग. अंतेवासियों के जीवन की 21 उपमायें
28 क. अंतेवासियों का निवृत्तिमय जीवन
ख. चार प्रकार के प्रतिबंध
29 क. विहार व वर्षावास समय
ख. अंतेवासियों की आध्यात्मिक स्थिति

अंतेवासियों की तपश्चर्या

- 30 क. आभ्यन्तर तप के छह प्रकार
ख. बाह्य तप के छह प्रकार

क. बाह्यतप के छह भेद

- 1-क. अनशन के दो भेद
ख. इत्वरिक अनशन के चौदह भेद
ग. यावत्कथिक अनशन के दो भेद
घ. पादपोषगमन के दो भेद
ड. भक्त प्रत्याख्यान के दो भेद
2-क. अवमोदरिका के दो भेद
ख. द्रव्य अवमोदरिका के दो भेद

- ग. उपकरण द्रव्य अवमोदरिका के तीन भेद
घ. भक्त पान द्रव्य अवमोदरिका के सात भेद (मुर्गी के अण्डों के परिमाण का उदाहरण)
ड. भाव अवमोदरिका के छह भेद
3 भिक्षाचर्या के तीस भेद
4 रस परित्याग के नव भेद
5 कायक्लेश के दस भेद
6-क. प्रतिसंलीनता के चार भेद
ख. इन्द्रिय प्रतिसंलीनता के पाँच भेद
ग. कषाय प्रतिसंलीनता के चार भेद
घ. योग प्रतिसंलीनता के तीन भेद
ड. मनोयोग प्रतिसंलीनता के दो भेद
च. वचनयोग प्रतिसंलीनता के दो भेद
छ. काययोग प्रतिसंलीनता के दो भेद
ज. विविक्त शय्या-आसन-सेवन की व्याख्या

(ख) आभ्यन्तर तप के छह भेद

- 1 प्रायश्चित्त के दस भेद
2-क. विनय के सात भेद
ख. ज्ञान विनय के पाँच भेद
ग. दर्शन विनय के दो भेद
घ. शुश्रूषा विनय के तीन भेद

ड. अनत्याशातना विनय के पैतालीस भेद	ट. शुक्लध्यान के चार लक्षण
च. चारित्रि विनय के पाँच भेद	ठ. शुक्लध्यान के चार आलंबन
छ. मन विनय के दो भेद	ड. शुक्लध्यान की चार अनुप्रेक्षाएँ
ज. वचन विनय के दो भेद	6-क. व्युत्सर्ग के दो भेद
झ. काय विनय के दो भेद	ख. द्रव्य व्युत्सर्ग के चार भेद
ञ. अप्रशस्त कायविनय के सात भेद	ग. भाव व्युत्सर्ग के तीन भेद
ट. प्रशस्त कायविनय के सात भेद	घ. कषाय व्युत्सर्ग के चार भेद
ठ. लोकोपचार विनय के सात भेद	ड. संसार व्युत्सर्ग के चार भेद
3 वैयावृत्य के दस भेद	च. कर्म व्युत्सर्ग के आठ भेद
4 स्वाध्याय के पाँच भेद	भ. महावीर के अंतेवासियों की उत्कृष्ट आराधना
5-क. ध्यान के चार भेद	क. अंतेवासियों का श्रुतज्ञान
ख. आर्तध्यान के चार भेद	ख. अंतेवासियों की चार प्रकार की धर्मकथाएँ
ग. आर्तध्यान के चार लक्षण	ग. अंतेवासियों की ध्यान साधना
घ. रौद्रध्यान के चार भेद	क. अंतेवासियों की संसार सागर पारणामिता
ड. रौद्रध्यान के चार लक्षण	ख. संसार सागर का शब्द चित्र
च. धर्मध्यान के चार भेद	ग. अंतेवासियों की स्थिति मर्यादा
छ. धर्मध्यान के चार लक्षण	भ. महावीर की प्रवचन परिषद् में असुरकुमार देवों का आगमन
ज. धर्मध्यान के चार आलंबन	क. असुरकुमारों की आकृति एवं शरीर के अंगों का वर्णन
झ. धर्मध्यान की चार अनुप्रेक्षाएँ	ख. असुरकुमारों की वय
ञ. शुक्लध्यान के चार भेद	

31

32

33

- ग. असुरकुमारों के चिह्न
घ. असुरकुमारों के वस्त्राभूषण
ङ. असुरकुमारों के विलेपन
च. असुरकुमारों की दिव्य उपलब्धियाँ
छ. भगवान को वंदना
- 34 **भ. महावीर की प्रवचन परिषद् में नागकुमार आदि नव प्रकार के भवनवासी देवों का आगमन**
क. नव भवनवासी देवों के नाम
ख. भवनवासी देवों के क्रमशः मुकुट चिह्न, आभरण, वस्त्र, माला आदि
ग. भ. महावीर की पर्युपासना
- 35 **भ. महावीर की प्रवचन परिषद् में व्यंतर देवों का आगमन**
क. सोलह व्यंतर देवों के नाम
ख. व्यंतर देवों का विनोदी जीवन
ग. व्यंतर देवों के वस्त्राभूषण- हार, माला आदि
घ. व्यंतर देवों के मुकुट चिह्न
ङ. भ. महावीर की पर्युपासना
- भ. महावीर की धर्मकथा में ज्योतिषी देवों का आगमन**
क. नव ग्रहों के नाम
- 36 **भ. महावीर की धर्मकथा में वैमानिक देवों का आगमन**
क. बारह कल्पोपपन्न देवलोक एवं उनके इन्द्रों के नाम
ख. वैमानिक देवों के विमानों के नाम
ग. वैमानिक देवों के मुकुट चिह्न
घ. वैमानिक देवों के शरीर का वर्ण
ङ. वैमानिक देवों के वस्त्राभूषण
च. भ. महावीर की पर्युपासना
छ. वैमानिक देवियों का आगमन एवं भ. महावीर की पर्युपासना
- जन समुदाय द्वारा भगवान् को वंदन**
क. भ. महावीर के पधारने की चंपानगरी में चर्चा
ख. धर्म परिषद् में भगवान की देशना
क. प्रवृत्तिवादुक ने पूर्णभद्र चैत्य में भगवान के पधारने की सूचना कूणिक को दी
ख. कूणिक द्वारा प्रवृत्तिवादुक को साढे बारह लाख स्वर्ण मुद्रा का प्रीतिदान व सम्मान
- 37 **असुरकुमारों के चिह्न**
ख. अट्टावीस नक्षत्र, तारे, चर-अचर ज्योतिषी देव
ग. ज्योतिषी देवों के मुकुट चिह्न
घ. भ. महावीर की पर्युपासना
- 38 **असुरकुमारों के विलेपन**
ख. भ. महावीर की पर्युपासना
- 39 **असुरकुमारों की दिव्य उपलब्धियाँ**
ख. भ. महावीर की पर्युपासना

40-45	कूणिक द्वारा सेनापति को पट्टहस्ती लाने का, सेना सुसज्जित करने का, सुभद्रा देवी प्रमुख को तैयार होकर आने का और नगर को सजाने का आदेश देना	55	क. सुभद्रा देवी आदि रानियों के सुसज्जित होने का वर्णन ख. अनेक देशों की दासियों के साथ पूर्णभद्र चैत्य में पहुँचना
46-47	आदेशानुसार कार्य होने पर कूणिक को सेनापति द्वारा निवेदन		ग. पाँच अभिगम विधि के पश्चात् भगवान को वंदना करना
48	क. कूणिक द्वारा व्यायाम, तेलमर्दन, स्नान, वस्त्र और आभूषण आदि से सुसज्जित होना ख. पट्टहस्ति पर बैठना	56	क. महावीर का धर्म परिषद् में योजन पर्यंत सुनाई देने वाले स्वर से अर्धमागधी भाषा में धर्मोपदेश ख. धर्म परिषद् में आर्यों और अनार्यों की उपस्थिति ग. अर्धमागधी भाषा का सभी आर्य-अनार्य भाषाओं में अनुवादित होकर सुनाई देना
49-51	क. अष्ट मांगलिक के नाम ख. राज्य चिह्नों के नाम ग. सबके यथाक्रम से व्यवस्थित होकर चलने का वर्णन घ. अश्व सेना, गज सेना, रथ सेना और पैदल सेना का वर्णन		घ. लोकालोक, जीवादि नव तत्व, उत्तम पुरुष, चार गति, माता-पिता व गुरुजनों की भक्ति, निर्वाण साधना, जगत की अठारह पाप प्रवृत्तियों का परिचय, समस्त पापमय प्रवृत्तियों से निवृत्ति, अस्ति-नास्तिवाद, शुभाशुभ कर्मफल के विषयों का धर्मोपदेश
52	विविध वाद्यों का वर्णन		
53	चांपानगरी के राजमार्ग से सपरिकर कूणिक का जाना		
54	क. स्तुति पाठकों एवं प्रजा के द्वारा अभिनन्दन ख. समवसरण के समीप आने पर पाँच राज्य चिह्न छोड़ना ग. पाँच अभिगम विधि के पश्चात् भगवान को वंदन करना		

निर्ग्रंथ-प्रवचन की महिमा

1. सर्वथा कर्मक्षय से मुक्ति, शुभकर्म अवशेष रहने पर स्वर्ग
2. नरकगति के चार कारण
3. तिर्यचगति के चार कारण

4.	मनुष्यगति के चार कारण		(आश्रव का बंध)
5.	देवगति के चार कारण	65	असंयत-यावत्-एकांत सुप्त के मोहकर्म का बंध
कर्मबंध का कारण राग		66	मोहनीय कर्म बंध के साथ वेदनीय कर्म का बंध
57	दो प्रकार का धर्म	67	असंयत-यावत्-प्राणघाती की नरक गति गमन
1.	पंच महाव्रत और रात्रि भोजन विरति रूप-अगार धर्म, अणगार धर्म के आराधक	68	असंयत की देवगति में उत्पत्ति की संभावना
		69	क. असंयत के वाणव्यंतर देव होने के कारण
बारह प्रकार का अगार धर्म			ख. वाणव्यंतर देवों की स्थिति
2.	(पाँच अणुव्रत, तीन गुणव्रत, चार शिक्षाव्रत, संलेखना)		ग. वाणव्यंतर देवों की ऋद्धि आदि
अगार धर्म के आराधक			घ. वाणव्यंतर देवों का आराधक न होना
58	धर्मकथा की समाप्ति, कई व्यक्तियों द्वारा अगार धर्म की प्रतिज्ञा करना, कईयों के द्वारा अणगार धर्म को स्वीकार करना	70	कठोर दण्ड सहने वाले अपराधियों तथा आत्मघातकों की वाणव्यंतर देवों में उत्पत्ति, स्थिति, ऋद्धि व अनाराधक होना
59	क. निर्ग्रन्थ प्रवचन की महिमा करना	71	प्रकृति भद्र-यावत्-अल्प आरंभ-समारंभ जीवी मनुष्यों की वाणव्यंतर देवों में उत्पत्ति व स्थिति
60	ख. धर्म, उपशम, विवेक और विरति का क्रम	72	गतपतिका-यावत्-अनिच्छा से ब्रह्मचर्य पालन करने वाली स्त्रियों की वाणव्यंतर देवों में उत्पत्ति व स्थिति
61	कोणिक का स्वस्थान गमन		द्विद्रव्यभोजी-यावत्-सर्षपतेलभोजी मनुष्यों की वाणव्यंतर देवों में उत्पत्ति व स्थिति
62	सुभद्रा प्रमुख रानियों का स्वस्थान गमन	73	क. अग्निहोत्री-यावत्-पंचाग्नि-आतापकों की ज्योतिषी देवों में उत्पत्ति (विविध तापस संप्रदायों के नाम)
63	गौतम गणधर का कायिक व आध्यात्मिक परिचय		
64	गौतम गणधर की जिज्ञासा, विनय भक्तिपूर्वक प्रश्न	74	
पापकर्म बंध के विविध प्रश्नोत्तर-			
	असंयत-यावत्-एकांत सुप्त जीव के पाप कर्मों का आगमन		

	ख. ज्योतिषी देवों की स्थिति	88	सभी परिव्राजकों की ब्रह्मलोक में उत्पत्ति, स्थिति, परलोक की आराधकता
	ग. इन ज्योतिषी देवों का अनाराधक होना		
75	कान्दर्पिक-यावत्-नृत्यरूचि श्रमणों की प्रथम देवलोक में उत्पत्ति व स्थिति	89 90-92	अंबड परिव्राजक की साधना क. अंबड द्वारा कंपिलपुर में वैक्रिय लब्धि का प्रदर्शन ख. अंबड परिव्राजक को अवधिज्ञान
	परिव्राजकों की ब्रह्मलोक में उत्पत्ति		
76	क. आठ ब्राह्मण परिव्राजकों के नाम	93-98	अंबड की आगार धर्म आराधना
	ख. आठ क्षत्रिय परिव्राजकों के नाम	99	अंबड का दूढ़ सम्यक्त्व
77	क. षट् शास्त्रों के नाम	100	अंबड का समाधिमरण, ब्रह्मलोक में उत्पत्ति, च्यवन महाविदेह के समृद्ध कुल में जन्म
	ख. संख्यान शास्त्र तथा अन्य ग्रंथ	101-104	लौकिक संस्कार-दूढ़ प्रतिज्ञा नामकरण
78-80	परिव्राजकों की संक्षिप्त आचार संहिता	105	क. 72 कलाओं का कलाचार्य के समीप अध्ययन
81	परिव्राजकों की पांचवें देवलोक तक उत्पत्ति व स्थिति	106-107	ख. बहत्तर कलाओं के नाम
82	क. अंबड परिव्राजक के सात सौ शिष्य		कलाचार्य को प्रीतिदान
	ख. कंपिलपुर से गंगा महानदी पार करके पुरिमताल नगर जाना	108	अठारह देशी भाषाओं का ज्ञान
83	अटवी में भटक जाना	109	काम भोगों से विरक्ति
84-85	सभी परिव्राजकों की पिपासा-पानी पाने की इच्छा-पानीदाता की शोध	110-111	विरक्ति के लिए कमल की उपमा
86	अदत्तादान की प्रतिज्ञा	112	स्थविरों से सम्यक्त्व की प्राप्ति, अण्णार धर्म की दीक्षा, रत्नत्रय की आराधना, केवलज्ञान
87	गंगा नदी की संतप्त बालुरेत पर संलेखना, पादपोगमन, समाधिमरण	113-115	दृढ़प्रतिज्ञा अंबड की आत्मा को निर्वाण पद की प्राप्ति
		116	क. आचार्य प्रत्यनीक आदि श्रमणों की छठे देवलोक के किल्बिषी देवों में उत्पत्ति
		117	

	ख. किल्बिषी देवों की स्थिति	126-129	क. श्रमण साधना का वर्णन
118	ग. परलोक में अनाराधक होना		ख. एक भवावतारी साधकों की सर्वार्थसिद्ध महाविमान में उत्पत्ति
	क. जाति स्मरण से देशविरत, संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यचों की सहस्रार कल्प पर्यंत उत्पत्ति		ग. इनकी स्थिति, परलोक में आराधक
119-120	ख. स्थिति, परलोक में आराधक होना	130	सर्व कामविरत-यावत्-क्षीण लोभ निर्ग्रथों की मुक्ति
	क. आजीवक श्रमणों की अच्युत कल्प बारहवें देवलोक पर्यन्त में उत्पत्ति	131	केवली समुद्धात के समय आत्मा का पूर्णलोक से स्पर्श
	ख. अच्युत कल्प में देवों की स्थिति, परलोक में आराधक न होना	132	केवली समुद्धात के समय निर्जरा पुद्गलों का पूर्णलोक से स्पर्श
121	क. आत्मोत्कर्ष अर्थात् अपनी बड़ाई करने वाले-यावत्-कौतुक करने वाले श्रमणों की अच्युतकल्प में आभियोगिक देव रूप में उत्पत्ति	133	छद्मस्थ के अदृष्ट निर्जरा पुद्गल
	ख. अच्युत कल्प में इन देवों की स्थिति, परलोक में अनाराधक	134-140	निर्जरा पुद्गलों को अति सूक्ष्म सिद्ध करने के लिये जम्बूद्वीप का आयाम-विष्कम्भ, परिधि, देवता की दिव्य गति, गंध पुद्गलों का पूर्णलोक से स्पर्श, छद्मस्थ के अदृष्ट गंध पुद्गल आदि उदाहरण
122	क. प्रवचन निह्रवों की ग्रैवेयक देव में उत्पत्ति	141	केवली समुद्धात करने का कारण
	ख. इन ग्रैवेयक देवों की स्थिति, परलोक में अनाराधक	142	सभी केवलियों द्वारा केवली समुद्धात न करना
123-124	क. अत्पारंभी-यावत्-देशविरत श्रमणोपासकों की अच्युत कल्प पर्यंत में उत्पत्ति	143	आवर्जीकरण समुद्धात अन्तर्मुहूर्त का
	ख. इन देवों की स्थिति, परलोक में आराधक	144	केवली समुद्धात के आठ समय
125	अनारंभी-यावत्-नग्नभाव वाले निर्ग्रथों की मुक्ति	145	केवली समुद्धात के समय मन व वचनयोग के प्रयोग का निषेध
		146	काययोग के प्रयोग का निश्चित क्रम

147	केवली समुद्धात के आठ समयों में मुक्त होने का निषेध	166	क. ईषत् प्राग्भारा पृथ्वी का वर्ण
148-150	केवली समुद्धात के पश्चात् मन, वचन, काय का प्रयोग		ख. ईषत् प्राग्भारा पृथ्वी का संस्थान
151	सयोगी की मुक्ति का निषेध		ग. ईषत् प्राग्भारा पृथ्वी की पौद्गलिक रचना
152	योग निरोध का क्रम		घ. ईषत् प्राग्भारा पृथ्वी का स्पर्श
153	क. मुक्त आत्मा की अविग्रह गति		ङ. ईषत् प्राग्भारा पृथ्वी की अनुपम सुंदरता
	ख. मुक्त होते समय एक साकारोपयोग अर्थात् ज्ञानोपयोग	167	क. ईषत् प्राग्भारा के पृथ्वी तल से लोकांत का अंतर
154-155	सिद्धों की सादि अपर्यवसित स्थिति का द्योतक-दग्ध बीज का उदाहरण		ख. लोकांत में गाड-कोश के छोटे भाग में सिद्धों की अवस्थिति
156	सिद्ध होने वाले जीव का संघयण		बावीस गाथाओं के विषय
157	सिद्ध होने वाले जीव के संस्थान	168-169(1-2)	सिद्ध अलोक के नीचे और लोक के अग्र भाग में शरीर त्याग कर तिरछे लोक में और सिद्ध सिद्धलोक में प्रतिष्ठित
158	सिद्ध होने वाले जीव की जघन्य-उत्कृष्ट अवगाहना अर्थात् ऊंचाई		
159	सिद्ध होने वाले जीव की जघन्य-उत्कृष्ट आयु	170(3)	सिद्धात्माओं का संस्थान
160-163	क. सिद्धों का निवास स्थान	171-175(4-8)	सिद्धों की जघन्य, मध्यम और उत्कृष्ट अवगाहना व आकार
	ख. सर्वार्थ सिद्ध विमान के ऊपरी भाग से ईषत् प्राग्भारा पृथ्वीतल अंतर	176-177(9-10)	एक में अनेक सिद्धात्मा, सिद्धात्माओं का लोकांत से स्पर्श, सिद्ध-आत्माओं का परस्पर स्पर्श
	ग. ईषत् प्राग्भारा पृथ्वी का आयाम विष्कम्भ	178(11)	सिद्धों का लक्षण
	घ. ईषत् प्राग्भारा पृथ्वी की परिधि	176(12)	सिद्धों का ज्ञान व सिद्धों की दृष्टि
164	ईषत् प्राग्भारा पृथ्वी के मध्य भाग की मोटाई		
165	ईषत् प्राग्भारा पृथ्वी के बारह नाम	180-189(13-22)	सिद्धों का सुख स्वरूप सोदाहरण



णमो णिगंथाणं

द्रव्यानुयोग-प्रधान राजप्रश्नीय-उपांग

अध्ययन

उद्देशक

उपलब्ध मूल पाठ

गद्य सूत्र

1

1

2100 श्लोक प्रमाण

65

देखना

8

भ. महावीर को आमलकल्या के आम्रशाल वन चैत्य में देखना व स्तुति

9

सूर्याभदेव का स्वस्थान से भगवद् वंदन

10-11

सूर्याभदेव की आभियोगिक देवों को आज्ञा

12

भगवान् के आसपास का एक योजन प्रदेश साफ करके

13

पुनः सूचित करने का आभियोगिक देवों को आदेश

13

क. आभियोगिक देवों द्वारा वैक्रेय समुद्धात, सोलह

14

प्रकार के रत्नों के नाम, वैक्रेय लब्धि से आमलकल्या आना

15

ख. आम्रशाल वन चैत्य में विराजमान भगवान् को वंदना

14

करना

15

अभियोगिक देव को देवताओं के कर्तव्य का निर्देश

15

क. आभियोगिक देव का वैक्रेय समुद्धात करना, सफाई

16

करने के लिये तैयार होना

17

ख. संवर्तक वायु की विकुर्वणा-रचना, एक तरुण कुशल

17

व्यक्ति के समान संवर्तक वायु द्वारा कचरे की सफाई

16

होना

17

अभ्र-मेघ की रचना, एक योजन प्रदेश का सिंचन

17

क. पुष्प बादल की रचना, एक योजन में पुष्पवर्षा

17

ख. एक योजन क्षेत्र को विविध प्रकार के धूपों से सुवासित

17

करना

13 राजप्रश्नीय सूत्र विषय-सूची

1

आमलकल्या नगरी वर्णन

2

आम्रशाल वन चैत्य वर्णन

3

अशोक वृक्ष व शिलापट्ट वर्णन (औपपातिक के

4-5

समान)

6

सेय राजा व धारिणी देवी का वर्णन

7

भ. महावीर का पदार्पण, राजा का दर्शनार्थ गमन व

7

पर्युपासना, पांच अभिगम

7

क. सूर्याभ देव, सौधर्म कल्प, सूर्याभ विमान, सुधर्मा

7

सभा

7

ख. चार हजार सामानिक देव, चार अग्रमहीषियाँ, तीन

7

परिषद्, सात सेना, सात सेनापति, सोलह हजार

7

आत्मरक्षक देव

7

ग. सूर्याभदेव का अवधिज्ञान से संपूर्ण जम्बूद्वीप को

18	भगवान् को वंदना करके आभियोगिक देव का स्वस्थान जाना और सूर्याभ देव को सविनय सफाई कार्य से अवगत करना	37-38 39-40 41-42 43-44	पीत वर्ण के प्रशस्त पदार्थों से हरिद्र मणियों की तुलना शुक्ल वर्ण के स्वच्छ द्रव्यों से श्वेत मणियों की तुलना सुगन्धित द्रव्यों से मणियों के गंध की तुलना अति मृदु स्पर्श वाले पदार्थों से मणियों के स्पर्श की समानता
19	क. सूर्याभ देव का पैदल सेनाध्यक्ष को बुलाना ख. आमलकल्पा चलने के लिये सभी देवों को शीघ्र उपस्थित होने की सुघोषा घंटा द्वारा सूचना दिलवाना	45	विमान के मध्य में प्रेक्षाघर मण्डप की रचना-विशाल वास्तु शिल्प का अंकन
20	पैदल सेनाध्यक्ष द्वारा सुघोषा घंटा वादन	46	प्रेक्षाघर मण्डप के मध्य में अखाड़े का निर्माण
21	सभी देव-देवियों को भगवद् वंदना के लिये आह्वान	47	आठ योजन लम्बी-चौड़ी व चार योजन मोटी मणिपीठिका का निर्माण
22	सुसज्जित देव-देवियों का सूर्याभ के सामने उपस्थित होना	48	सिंहासन की रचना (शिल्प कला)
23	सूर्याभ देव द्वारा आभियोगिक देव को दिव्य यान विमान की रचना का आदेश	49	विजय दूथ्य वस्त्र का विन्यास
24-26	दिव्य यानविमान की रचना का विस्तृत वर्णन (शिल्प वर्णन)	50-51	वज्रमय अंकुश और मुक्तामाला की रचना
27	आठ मंगलों के नाम और उनकी रत्न निर्मित रचना	52	क. वायव्य कोण, उत्तर व ईशान कोण में सामानिक देवों के चार हजार भद्रासन
28-29	विविध चामर ध्वजाओं की रचना		ख. पूर्व में चार अग्रमहीषियों के चार हजार भद्रासन
30	अनेक छत्रातिछत्रों, पताकातिपताकाओं, कमल झुमकों की रचना		ग. दक्षिण-पूर्व में आभ्यंतर परिषद् के आठ हजार भद्रासन
31-32	कृष्ण वर्ण के विविध पदार्थों से कृष्ण मणियों की तुलना		घ. दक्षिण में मध्य परिषद् के दस हजार भद्रासन
33-34	नील वर्ण के अनेक पदार्थों से नील मणियों की तुलना		ङ. दक्षिण-पश्चिम में बाह्य परिषद् के बारह हजार भद्रासन
35-36	रक्तवर्ण के नानाविध द्रव्यों से लोहित मणियों की तुलना		च. पश्चिम में सात सेनापतियों के सात भद्रासन

53-54	छ. चारों दिशाओं में आत्मरक्षक देवों के सोलह हजार भद्रासन अर्थात् प्रत्येक दिशा में चार-चार हजार भद्रासन	67	भ. महावीर का सूर्याभ को देव कृत्यों का निर्देश
55	विमान के वर्ण-गंध की उपमा	68	सूर्याभ का सविनय भगवान् के सम्मुख उपस्थित रहना
56	आभियोगिक देव द्वारा विमान की तैयारी की सूर्याभ देव को सूचना	69	भ. महावीर का सूर्याभ परिषद् में धर्म प्रवचन
57	गंधर्व और नर्तकों के साथ सूर्याभ का विमान में प्रवेश	70	भ. महावीर से सूर्याभ देव द्वारा अपने सम्बन्ध में कतिपय प्रश्न- 'मैं भवसिद्धिक, सम्यक्दृष्टि, परित्तसंसारी, सुलभ बोधि, आराधक और चरिम हूँ या इससे विपरीत'
58-64	देव परिवार का यथास्थान बैठना	71	भ. महावीर द्वारा स्पष्टीकरण
59	विमान के आगे अष्ट मंगल, दण्ड, महेन्द्र ध्वज, पाँच सेनापतियों के विमानों और आभियोगिक देवियों के विमानों का चलना	72	क. भगवान् के ज्ञान की महिमा करना
60	क. सौधर्म कल्प के उत्तर के निर्याण मार्ग से सूर्याभ देव का आमलकल्पा नगरी की ओर प्रस्थान	73	ख. गौतमादि श्रमण निर्ग्रंथों को बत्तीस प्रकार का दिव्य नृत्य दिखाने के लिये भ. महावीर से आज्ञा प्राप्त करने का प्रयत्न करना
61	ख. विमान की उत्कृष्ट गति	74	भ. महावीर द्वारा हाँ या ना नहीं करना, अपितु मौन रहना
62	ग. नदीश्वर द्वीप के रतिकर पर्वत पर दिव्य ऋद्धि को संक्षिप्त करना		क. नृत्य दिखाने के लिये आज्ञा प्राप्ति का पुनः प्रयत्न, भ. महावीर का पूर्ववत् मौन रहना
63	घ. आमलकल्पा के आम्र शालवन चैत्य में सूर्याभ का पहुँचना		ख. सूर्याभ का सविधि वंदन
64	ड. यान विमान से सूर्याभ का सपरिवार बाहर आना		ग. सूर्याभ का वैक्रेय समुद्घात
65	सूर्याभ देव द्वारा भ. महावीर को सविधि वंदन करना व परिचय देना	75	घ. नृत्य के लिये भूभाग का समीकरण
66			ड. नाट्यशाला-प्रेक्षाघर मण्डप की रचना
			क. भ. के सम्मुख अपने सिंहासन पर बैठने की भगवान् से आज्ञा प्राप्त करना

ख. सूर्याभ का आभूषणों से सुसज्जित दक्षिण भुजा प्रसारण, नृत्य के लिये सुसज्जित 108 देवकुमारों का प्रकट होना	93 94 95	चन्द्रसूर्यागमन नृत्य चन्द्रसूर्यावरण नृत्य चन्द्रसूर्यास्त नृत्य
76 सूर्याभ का आभूषणों से सुसज्जित वाम भुजा प्रसारण, नृत्य के लिये शृंगारयुक्त 108 देव कन्याओं का प्रकट होना	96 97 98-99	चन्द्रसूर्य मण्डलादि नृत्य वृषभ ललित-यावत्-द्रुत विलिखित नृत्य सागर विभक्ति-यावत्-नंदा चंपा विभक्ति नृत्य
77 उनपचास (59) प्रकार के वाद्य और उनके वादकों का एक सौ आठ-एक सौ आठ की संख्या में उपस्थित होना	100 101	मत्स्यण्डादि नृत्य पञ्चाक्षर वर्ग नृत्य
78 देवकुमार व देवकुमारियों द्वारा भगवान से वंदन की आज्ञा मांगना	102 103	अशोक पल्लवादि नृत्य पद्मलतादि नृत्य
79-80 देवकुमार और देव कुमारियों द्वारा भगवद् वंदना व गौतमादि के सम्मुख नृत्य प्रदर्शन के लिये उपस्थित होना	104 105	द्रुतादि गति नृत्य अंगचेष्टा नृत्य
81 देवकुमार और देव कुमारियों द्वारा पक्तिबद्ध नृत्य प्रदर्शन	106	क. भ. महावीर के पूर्वभवों का नृत्य द्वारा प्रदर्शन
82-84 उन देव-देवियों द्वारा भिन्न-भिन्न रूपों में नृत्य गान		ख. भ. महावीर के कल्याणकों का नृत्य
85-86 अष्ट मांगलिक नृत्य	107	चार प्रकार के वाद्यों का वादन
87-88 आवर्त-प्रत्यावर्त -यावत्- पद्मलता नृत्य	108	चार प्रकार के गवैयों का गायन
89 ईहामृग आदि 14 प्रकार के भित्तिचित्र नृत्य	109	चार प्रकार के नृत्यों का प्रदर्शन
90 चक्रवाल नृत्य	110	चार प्रकार के अभिनयों का प्रदर्शन
91 चन्द्रावली-यावत्-रत्नावली नृत्य	111	देवकुमार और देवकुमारियों का भगवान् को वंदना करके
92 चन्द्रोदय-सूर्योदय नृत्य		सूर्याभ के समीप पहुँचना

112	क. सूर्याभ द्वारा दिव्य ऋद्धि का उपसंहार ख. भगवद् वंदना, सौधर्म कल्प गमन	122	ख. द्वार कपाट का विस्तृत वर्णन द्वारों के दोनों ओर चंदन कलशों की पक्तियाँ
113	सूर्याभ प्रदर्शित दिव्य ऋद्धि विलय हेतु गौतम स्वामी की जिज्ञासा	123	द्वारों के दोनों ओर नाग दंतों (खूंटियाँ) की पक्तियाँ
114-116	कूटागारशाला के हेतु से समाधान	124	नागदंतों के ऊपर पाँच वर्ण की मालाएं
117-118	क. सूर्याभ विमान का स्थान ख. सूर्याभ विमान की विस्तार दिशाएँ ग. सूर्याभ विमान का संस्थान घ. सौधर्म कल्प के 32 लाख विमान ङ. पाँच अवतंसक विमानों के नाम च. सौधर्मावतंसक विमान से पूर्व में सूर्याभ विमान छ. सूर्याभ विमान का आयाम-विष्कम्भ ज. सूर्याभ विमान की परिधि	125	क. नागदंतों के ऊपर नागदंतों की पक्तियाँ
		126	ख. नागदंतों पर लटकने वाले सुगंधित धूप के छीके
		127	द्वारों के दोनों ओर सोलह पुतलियाँ
		128	द्वारों के दोनों ओर सोलह 2 जालियाँ
			क. द्वारों के दोनों ओर सोलह 2 घंटियाँ
			ख. घंटियों का मधुर स्वर
119	क. सूर्याभ विमान के प्राकार की ऊँचाई ख. सूर्याभ विमान के प्राकार के मूल का विष्कम्भ ग. सूर्याभ विमान के प्राकार के मध्य का विष्कम्भ	129	द्वारों के दोनों ओर निषिधिकाओं में सोलह 2 वनमालाएँ
		130	क. द्वारों के दोनों ओर सोलह 2 प्रकंडक-चबूतरे
			ख. प्रकंडकों का आयाम-विष्कम्भ और बाहल्य
		131	क. प्रत्येक प्रकंडक पर एक-एक प्रासाद
			ख. प्रासादों की ऊँचाई व विष्कम्भ
120	स्वर्णमय प्राकार, पाँच वर्ण वाले मणिमय कपि शीर्षक-कंगुरे, उनका आयाम-विष्कम्भ व ऊँचाई	132	क. द्वारों के दोनों ओर सोलह 2 तोरण
			ख. प्रत्येक तोरण पर दो-दो शालभजिकाएँ
121	क. सूर्याभ विमान के एक पार्श्व के द्वार, द्वारों की ऊँचाई, द्वारों का विष्कम्भ, द्वारों के शिखर, द्वारों के भित्तिचित्र		ग. प्रत्येक तोरण के आगे दो-दो हय-यावत्-वृषभ के समुदाय
			घ. प्रत्येक तोरण के आगे दो-दो पद्मलता-यावत्-

श्यामलताएँ		108-108 ध्वजाएँ	
इ. प्रत्येक तोरण के आगे दो-दो प्रशस्त स्वस्तिक		ख. सूर्याभ विमान पर कुल 1080 ध्वजाएँ	
च. प्रत्येक तोरण के आगे दो-दो प्रशस्त चंदन कलश	134	क. सूर्याभ विमान में 65-65 भौम तलघर	
छ. प्रत्येक तोरण के आगे दो-दो प्रशस्त भृंगार		ख. बीच-बीच में एक-एक सिंहासन	
ज. प्रत्येक तोरण के आगे दो-दो प्रशस्त आदर्श काँच व काँच की ऊँचाई तथा स्वरूप	135	क. तलघरों के द्वारों पर सोलह-सोलह रत्न	
झ. प्रत्येक तोरण के आगे दो-दो प्रशस्त थाल		ख. तलघरों के द्वारों पर अष्ट-अष्ट मंगल	
ञ. प्रत्येक तोरण के आगे दो-दो प्रशस्त पानी मात्र	136	ग. सूर्याभ विमान के चार दिशाओं के चार हजार द्वार	
ट. प्रत्येक तोरण के आगे दो-दो सुप्रतिष्ठक पात्र		क. सूर्याभ विमान के चार दिशाओं में चार वनखण्ड	
ठ. प्रत्येक तोरण के आगे दो-दो मनोगुलिकाएँ		ख. प्रत्येक वनखण्ड का आयाम-विक्रम्भ	
ड. प्रत्येक तोरण के आगे दो-दो प्रशस्त रत्नकरण्डक		ग. प्रत्येक वनखण्ड एक-एक परकोटे युक्त	
ढ. प्रत्येक तोरण के आगे दो-दो अश्वकंठ-यावत्-वृषभकंठ	137	घ. वनखण्ड काले एवं स्निग्ध छायायुक्त	
ण. प्रत्येक तोरण के आगे दो-दो पुष्प चणेरिकाएँ		वनखण्ड के मध्य आलिंग पुष्कर के समान रमणीय भूमिभाग	
त. प्रत्येक तोरण के आगे दो-दो प्रशस्त पुष्प पटलक	138-142	वनखण्ड की तृणमणियों के स्वर का विस्तृत वर्णन उदाहरण सहित	
थ. प्रत्येक तोरण के आगे दो-दो प्रशस्त सिंहासन		क. वनखण्ड की वापिकाओं का वर्णन	
द. प्रत्येक तोरण के आगे दो-दो प्रशस्त छत्र	143	ख. वापिकाएँ पद्मवरवेदिका तथा वनखण्ड से परिवेष्टित	
ध. प्रत्येक तोरण के आगे दो-दो प्रशस्त चामर		ग. उनमें आसव आदि जैसा जल	
न. प्रत्येक तोरण के आगे दो-दो प्रशस्त तेल समुद्गक पात्र	144	वापिकाओं-यावत्-कूप पंक्तियों में चारों दिशाओं में त्रिसोपान पंक्तियाँ	
क. सूर्याभ विमान के प्रत्येक द्वार पर विविध प्रकार की	133		

145	उनके मध्य में उत्पात पर्वतों, मण्डपों व झूलों का वर्णन	160	उपकारिकालयन का वर्णन
146	उत्पात पर्वतों पर शिलापट्टों का वर्णन	161	उपकारिकालयन मध्यवर्ती मुख्य प्रासाद की ऊँचाई, विष्कम्भ आदि
147	वनखण्डों में आलिंगह-यावत्-आदर्श गृह	162	मुख्य प्रासाद के पार्श्ववर्ती प्रासादों की ऊँचाई-विष्कम्भ आदि
148	आलिंगह आदि में हंसासन-यावत्-दिशा स्वस्तिक आसन		
149	वनखण्डों में जातिमण्डप-यावत्-मालुका मण्डप		
150	क. जातिमण्डप आदि में हंसासन-यावत्-स्वस्तिकासन	163	क. मुख्य प्रासाद के उत्तर-पूर्व (ईशान कोण) में सुधर्मा सभा
151	ख. चर्म निर्मित वस्त्र-यावत्-सर्वरत्नमय पृथ्वीशिलापट्टक सूर्याभ विमानवासी देव-देवियों का शयन-यावत्-आमोद-प्रमोद	164	ख. सुधर्मा सभा का आयाम-विष्कम्भ ऊँचाई आदि क. सुधर्मा सभा के तीन दिशाओं में तीन द्वार ख. प्रत्येक द्वार की ऊँचाई और विष्कम्भ ग. प्रत्येक द्वार के अग्रभाग में एक-एक मुख्य मण्डप घ. मुख-मण्डपों का आयाम-विष्कम्भ और ऊँचाई ङ. मुख-मण्डपों की तीन-तीन दिशाओं में तीन द्वार च. द्वारों की ऊँचाई और विष्कम्भ छ. प्रत्येक द्वार के अग्रभाग में एक-एक प्रेक्षाघर मण्डप क. प्रत्येक प्रेक्षाघर मण्डप के मध्य भाग में एक-एक अखाड़ा
152	क. वनखण्ड के प्रासादों की ऊँचाई, आयाम-विष्कम्भ ख. प्रत्येक प्रासाद में एक-एक देवता व उन देवताओं की स्थिति		
153	प्रत्येक वनखण्डवर्ती उपकारिकालयन का आयाम-विष्कम्भ, परिधि, बाहल्य, मोटाई		
154	उपकारिकालयन में पद्मवरवेदिका व वनखण्ड		
155-157	क. पद्मवरवेदिका की ऊँचाई, विष्कम्भ, परिधि ख. पद्मवरवेदिका का वर्णन	165	ख. प्रत्येक अखाड़े के मध्य भाग में एक-एक मणिपीठिका ग. मणिपीठिकाओं का आयाम-विष्कम्भ और ऊँचाई घ. प्रत्येक मणिपीठिका पर एक-एक सिंहासन
158	पद्मवरवेदिका कथंचित् नित्य और कथंचित् अनित्य		
159	क. पद्मवरवेदिका में वनखण्ड ख. वनखण्ड का चक्रवाल विष्कम्भ		

166	इ. प्रेक्षागृह मण्डपों के ऊपर आठ-आठ मंगल, ध्वजाएं, छत्रातिछत्र क. प्रत्येक प्रेक्षाघर मण्डप के अग्रभाग में एक-एक मणिपीठिका ख. प्रत्येक मणिपीठिका का आयाम-विष्कम्भ और बाहल्य क. प्रत्येक मणिपीठिका पर एक-एक महेन्द्रध्वज ख. प्रत्येक महेन्द्र ध्वज की ऊँचाई उद्देश और विष्कम्भ ग. महेन्द्र ध्वजा पर आठ-आठ मंगल, ध्वजा व छत्रातिछत्र	168	क. प्रत्येक चैत्य वृक्ष के सामने एक-एक मणिपीठिका ख. प्रत्येक मणिपीठिका का आयाम-विष्कम्भ और बाहल्य क. प्रत्येक मणिपीठिका पर एक-एक महेन्द्रध्वज ख. प्रत्येक महेन्द्र ध्वज की ऊँचाई उद्देश और विष्कम्भ ग. महेन्द्र ध्वजा पर आठ-आठ मंगल, ध्वजा व छत्रातिछत्र
167	ग. प्रत्येक मणिपीठिका पर एक स्तूप घ. प्रत्येक स्तूप का आयाम-विष्कम्भ और ऊँचाई इ. स्तूपों पर आठ-आठ मंगल, ध्वजाएं, छत्रातिछत्र -यावत्-झूमके च. प्रत्येक स्तूप के चारों दिशाओं में एक-एक मणिपीठिका छ. प्रत्येक मणिपीठिका पर चारों दिशाओं में स्तूपाभिमुख चार-चार जिन प्रतिमाएँ क. प्रत्येक स्तूप के सामने एक-एक मणिपीठिका ख. प्रत्येक मणिपीठिका का आयाम-विष्कम्भ और बाहल्य ग. प्रत्येक मणिपीठिका पर एक-एक चैत्य वृक्ष घ. प्रत्येक चैत्य वृक्ष की ऊँचाई और उद्देश इ. स्कंध गोलाई आदि का परिमाण च. चैत्य वृक्ष का विस्तृत वर्णन	170	क. प्रत्येक महेन्द्र ध्वज के सामने एक-एक नंदा पुष्करिणी ख. प्रत्येक पुष्करिणी का आयाम-विष्कम्भ और उद्देश ग. पुष्करिणियों में पद्मवर वेदिका, वनखण्ड आदि घ. पुष्करिणियों की तीन दिशाओं में त्रिसोपान पंक्तियाँ, तोरण, ध्वजा, छत्रातिछत्र क. सुधर्मा सभा में एक महामणिपीठिका ख. महामणिपीठिका का आयाम-विष्कम्भ आदि क. मणिपीठिका पर एक माणवक चैत्य स्तम्भ ख. चैत्य स्तम्भ की ऊँचाई, उद्देश, विष्कम्भ आदि ग. चैत्य स्तम्भ के मध्य भाग में नागदंत, नागदंतों के

छीकें पर डिब्बे, डिब्बों में जिन अस्थियाँ		उसका आयाम-विष्कम्भ और बाहल्य	
घ. सूर्याभ देव द्वारा अस्थियों की अर्चा		ख. मणिपीठिका पर एक देवछंदक, उसका आयाम-विष्कम्भ और ऊँचाई	
ङ. चैत्य स्तम्भ पर अष्ट मंगल, ध्वजा व छत्रातिछत्र		ग. देवछंदक पर 108 जिन प्रतिमाएँ, जिन प्रतिमाओं का विस्तृत वर्णन	
क. माणवक स्तम्भ के पूर्व में एक विशाल मणिपीठिका		क. जिन प्रतिमाओं के पृष्ठ भाग में छत्रधारी प्रतिमाएँ	179
ख. मणिपीठिका का आयाम-विष्कम्भ और बाहल्य		ख. दोनों पार्श्व में चमरधारी प्रतिमाएँ	
ग. पश्चिम में एक मणिपीठिका व उसका आयाम-विष्कम्भ और बाहल्य		ग. अग्रभाग में दो-दो नाग, भूत, यक्ष आदि की प्रतिमाएँ	
घ. मणिपीठिका पर एक देवशयनीय और उसका विस्तृत वर्णन		घ. जिन प्रतिमाओं के सामने 108 घंटे, कलश-यावत्-धूपकडुच्छुक	
क. देवशयनीय के उत्तर-पूर्व में एक महामणिपीठिका व उसका आयाम विष्कम्भ और बाहल्य		ङ. सिद्धायतन के ऊपर अष्ट मंगल आदि	
ख. महामणिपीठिका पर एक महेन्द्र ध्वज, उसकी ऊँचाई और विष्कम्भ	180	सिद्धायतन के उत्तर-पूर्व में एक उपपात सभा (सुधर्मा सभा के समान वर्णन करना)	
ग. महेन्द्र ध्वज के पश्चिम में सूर्याभ देव का एक शस्त्रागार, सुधर्मा सभा आदि	181	क. उपपात सभा के उत्तर-पूर्व में एक महाहृद	
घ. सुधर्मा सभा पर आठ-आठ मंगल, ध्वजा व छत्रातिछत्र		ख. महाहृद का आयाम-विष्कम्भ और उद्देश	
क. सुधर्मा सभा के उत्तर-पूर्व में एक महासिद्धायतन	182	ग. पद्मवरवेदिका व वनखण्ड से परिवेष्टित तथा त्रिसोपान पंक्तियाँ	
ख. सिद्धायतन का आयाम-विष्कम्भ और ऊँचाई		क. हृद के उत्तर-पूर्व में एक अभिषेक सभा (सुधर्मा सभा के समान वर्णन करना)	
क. सिद्धायतन के मध्य भाग में एक मणिपीठिका व	178	ख. अभिषेक योग्य पात्र व आठ-आठ मंगल द्रव्य से	

	युक्त		ग. चैत्यस्तूप की अर्चना
183	अभिषेक सभा के उत्तर-पूर्व (ईशान कोण) में एक अलंकारिक सभा (सुधर्मा सभा के समान वर्णन)		घ. जिन प्रतिमाओं की, चैत्य वृक्षों की और महेन्द्र ध्वज की अर्चना
184	अलंकार सभा के उत्तर-पूर्व में एक व्यवसाय सभा (उपपात सभा के समान वर्णन)	201	ङ. चैत्य स्तम्भ का प्रमार्जन, जिन अस्थियों की अर्चना बली विसर्जन व आभियोगिक देवों को आदेश आभियोगिक देवों द्वारा आज्ञा पालन
185	क. व्यवसाय सभा में धर्मशास्त्रों का एक महापुस्तक रत्न (पुस्तक रत्न का विस्तृत वर्णन)	202	सूर्याभ देव द्वारा नंदा पुष्करणी में शुद्धि व सुधर्मा सभा की ओर प्रस्थान
	ख. व्यवसाय सभा पर अष्ट मंगल	203	सूर्याभ का सुधर्मा सभा में सामानिक देव आदि सहित सिंहासनासीन होना
186	ग. व्यवसाय सभा के उत्तर-पूर्व में एक नंदा पुष्करिणी	204	क. सूर्याभ के परिवार का यथा स्थान उपवेशन
187	घ. नंदा पुष्करिणी से उत्तर-पूर्व में एक पाद पीठ सिंहासन	205	ख. आत्मरक्षकों का कर्तव्य पालन
188-193	क. सूर्याभ देव का संकल्प, पांच प्रकार की पर्याप्ति सामानिक देवों द्वारा सूर्याभ के कर्तव्य का निर्देश	206	क. सूर्याभ देव की स्थिति
194-195	सूर्याभ का स्नान और अभिषेक का विस्तृत वर्णन अभिषेक के पश्चात् सूर्याभ देव का अलंकरण		ख. सामानिक देवों की स्थिति
196	सूर्याभ देव द्वारा कार्य निश्चय		ग. सूर्याभ के सम्बन्ध में गौतम की जिज्ञासाएँ
197	सूर्याभ देव के साथ-साथ सामानिक आदि देव, सिद्धायतन		घ. दिव्य ऋद्धि की प्राप्ति के कारण?
198	सूर्याभ देव द्वारा सिद्धायतन का प्रमार्जन, प्रक्षालन व अर्चन		ङ. पूर्वभव के नाम, गौत्र व स्थान
199	सूर्याभ देव द्वारा अरिहंत-सिद्ध भगवतों की स्तुति		च. पूर्वभव के सुकृत्य?
200	क. सूर्याभ देव द्वारा देवच्छंदक आदि की अर्चना, स्तुति पाठ, वंदना	207	मृगवन उद्घान, प्रदेशी राजा
	ख. सिंहासन, अखाड़े आदि का प्रमार्जन		क. भ. महावीर द्वारा सूर्याभ देव के पूर्वभव का वर्णन

		स्वरूप समझना
ख. केकय अर्ध जनपद, सेयविया नगरी, मृगवन उद्यान, प्रदेशी राजा	223	जितशत्रु राजा का चित्त के साथ प्रदेशी राजा को भेंट देने के लिये बहुमूल्य उपहार भेजना
ग. नगर, राजा आदि का विस्तृत वर्णन		
रानी सूर्यकांता, युवराज सूर्यकांत कुमार	224-225	केशीकुमार श्रमण को श्रावस्ती पधारने का आग्रह करना
प्रदेशी राजा के बड़े भाई चित्त सारथी का राजनीतिक जीवन	226	केशी द्वारा सेयविया नगरी को सोपसर्ग वनखण्ड की उपमा देकर अनिच्छा प्रगट करना
कुणाला जनपद, श्रावस्ती नगरी, कौष्ठक चैत्य, जितशत्रु राजा	227	क. सेयविया में अनेक श्रमणोपासकों के होने से किसी भी प्रकार का कष्ट न होने का आश्वासन दिलाना
प्रदेशी राजा का चित्त सारथी के साथ जितशत्रु राजा को महर्ध्य उपहार भेजना	228	ख. चित्त की विनंती स्वीकार करना
महर्ध्य उपहार लेकर श्रावस्ती नगरी पहुँचना और जितशत्रु राजा को भेंट करना	229	चित्त का मृगवन के उद्यानपालक को केशी कुमार श्रमण की भक्ति करने का तथा आने पर सूचना देने का सूचन
कौष्ठक चैत्य में 500 शिष्यों के साथ पार्श्वार्पत्य केशी कुमारश्रमण का पधारना	230	जितशत्रु का भेजा हुआ उपहार प्रदेशी राजा को भेंट करना
दर्शनार्थ परिषदा का गमन और चित्त की जिज्ञासा	231	केशी कुमार श्रमण का सेयविया नगरी के मृगवन उद्यान में पधारना
धर्मपरिषद् में चित्त का जाना और चातुर्याम धर्म एवं द्व्यदशविध गृहीधर्म का श्रवण करना	232	उद्यान पालक द्वारा चित्त को सूचना देना
पाँच अणुव्रत, सप्त शिक्षाव्रत रूप द्वादशविध गृहीधर्म धारण करना		क. सूचन सुनकर चित्त का हृदय प्रसन्न
चित्तसारथी का श्रमणोपासक बनना व जीव आदि का	233	ख. सुसज्जित होकर व रथारूढ़ होकर वंदन के लिए प्रस्थान
		ग. केशीकुमार द्वारा चित्त को उपदेश
		राजा प्रदेशी को धर्मोपदेश देने के लिए चित्त की प्रार्थना

234	केशी कुमार श्रमण द्वारा केवली प्रज्ञप्त धर्म श्रवण न कर सकने के चार कारण तथा केवली प्रज्ञप्त धर्म श्रवण कर सकने के चार कारणों का कथन	244	क. अधर्मी पितामह का नरक से और धर्मात्मा पितामही का स्वर्ग से आकर पाप-पुण्य का फल कथन ख. देह और आत्मा की भिन्नता का हेतु स्वीकार करना
235	चित्त की ओर से प्रदेशी राजा को लाने का आश्वासन	245	केशी कुमार श्रमण द्वारा नरक से आने में बाधक चार कारणों का सहेतुक कथन
236	राजा प्रदेशी को कम्बोज देश के अश्वों की गति दिखाने के बहाने वन में ले जाना	246	धर्मी दादी मां का स्वर्ग से आकर पाप-पुण्य के फल का कथन
237	क. विश्रान्ति के लिये राजा प्रदेशी को मृगवन उद्यान में ले जाना	247	स्वर्ग से आने में बाधक चार कारणों का सहेतुक कथन
238	ख. केशी कुमार श्रमण के सम्बन्ध में प्रदेशी की जिज्ञासा चित्त को साथ लेकर प्रदेशी का केशी कुमार श्रमण के समीप जाने के लिए उद्यत होना	248	देह और आत्मा की अभिन्नता के सम्बन्ध में राजा प्रदेशी द्वारा दिया गया लोह कुंभी में बंद चोर की मृत्यु का उदाहरण
239	राजकर की चोरी करने वाले वणिक् के समान अविनय से प्रश्न न पूछने के लिये केशी कुमार श्रमण का कथन तथा राजा के मनोगत भावों का कथन	249	देह और आत्मा की भिन्नता सिद्ध करने के लिये केशी कुमार श्रमण द्वारा दिया गया-कूटागार शाला से आने वाली वाद्य ध्वनि का उदाहरण
240	मनोगत भावों को जानने वाले केशीकुमार से ज्ञान व दर्शन के सम्बन्ध में राजा प्रदेशी की जिज्ञासा	250	देह और आत्मा की अभिन्नता के सम्बन्ध में राजा प्रदेशी द्वारा दिया गया लोह कुंभी में बंद चोर के मृत शरीर में कृमियों की उत्पत्ति का उदाहरण
241	केशीकुमार श्रमण द्वारा पाँच ज्ञानों का संक्षिप्त परिचय और स्वयं को चार ज्ञान होने का कथन	251	देह और आत्मा को भिन्न सिद्ध करने के लिये केशी कुमार श्रमण द्वारा दिया गया संतप्त लोह गोलक में अग्नि प्रवेश का उदाहरण
242-243	देह और आत्मा के भिन्न होने का हेतु जानने के लिये प्रदेशी द्वारा प्रश्न		

252	देह और आत्मा की अभिन्नता के सम्बन्ध में राजा प्रदेशी द्वारा दिया हुआ तरुण और बालक का लक्ष्यवेधन की असमानता का उदाहरण	261	केशी कुमार श्रमण द्वारा चार परिषदाओं और उनके अपराधियों के दण्ड-विधान का ज्ञापन
253	देहात्मा की भिन्नता के सम्बन्ध में केशीकुमार श्रमण का दिया हुआ-नवीन और प्राचीन धनुष का उदाहरण	262	जिज्ञासा-शांति हेतु राजा प्रदेशी द्वारा विपरीत आचरण को स्वीकार
254	राजा प्रदेशी की ओर से दिया गया वृद्ध और युवा के असमान लोह भारवहन का उदाहरण	263	चार प्रकार के व्यवहारियों का प्ररूपण व राजा प्रदेशी की व्यवहारिकता
255	केशीकुमार श्रमण की ओर से दिया गया नवीन और प्राचीन कावड़ से भारवहन का उदाहरण	264	क. जीव को कर कंकणवत् प्रत्यक्ष दिखाने के लिये प्रदेशी की केशी कुमारश्रमण से प्रार्थना
256	राजा प्रदेशी की ओर से जीवित और मृत चोर को तोलने का उदाहरण		ख. राजा प्रदेशी से वायु को हस्तामलकवत् दिखाने के लिये केशी कुमारश्रमण का कथन
257	केशी कुमार श्रमण की ओर से खाली और हवा से भरी हुई मशक के तोलने का उदाहरण		ग. सर्वज्ञ के लिये दस स्थानों की पूर्ण जानकारी की शक्यता और असर्वज्ञ के लिये अशक्यता का कथन
258	राजा प्रदेशी की ओर से चोर के छोटे-छोटे टुकड़े करके जीव को देखने के लिये किये गये प्रयत्न का उदाहरण	265	क. हाथी और कुंथुवे का जीव समान होने के सम्बन्ध में प्रदेशी का प्रश्न
259	केशी कुमारश्रमण की ओर से अरणी काष्ठ को खण्ड-खण्ड करके अग्नि देखने के लिये प्रयत्न करने वाले कठियारे का उदाहरण		ख. आवरणानुसार दीपक के प्रकाश का संकोच व विकास होने के समान हाथी और कुंथुवे के जीव की समानता का केशीकुमार श्रमण द्वारा प्रतिपादन
260	केशी कुमार श्रमण द्वारा कहे गये कठोर वचनों की युक्तता के सम्बन्ध में प्रदेशी का प्रश्न	266	प्रदेशी का परंपरागत मान्यता का निराकरण
		267	केशीकुमार श्रमण द्वारा प्रतिपादित लोह वाणिज्य के रूपक से मोह का निवारण

268	केशी कुमारश्रमण से धर्म श्रवण, व्रत धारणा, स्व स्थान गमन के लिए उद्यत होना	279	ख. सौधर्म कल्प के सूर्याभ विमान में उत्पत्ति क. सूर्याभ देव की स्थिति
269	केशी कुमारश्रमण द्वारा तीन प्रकार के आचार्यों का तथा उनके साथ किये जाने वाले विनयवानों का प्रतिपादन	280	ख. च्यवन के पश्चात् पुत्र रूप में उत्पत्ति होगी दस दिवसीय पुत्र जन्मोत्सव व दृढ़प्रतिज्ञ नामकरण
270	अविनय के लिये क्षमायाचना तथा प्रदेशी का स्वस्थान गमन	281	क. पांच धाय माताओं से लालन-पालन ख. नाना देशों की दासियों से संवर्धन
271	अंतःपुर व परिवार के साथ राजा प्रदेशी का आना	282	क. शुभ मुहूर्त में कलाचार्य के समीप गमन
272	केशी कुमारश्रमण द्वारा वनखण्ड, नृत्यशाला, इक्षुवाड़ा और खलिहान के रूपक से सदा रमणीय रहने का उपदेश देना	283	ख. बहत्तर कलाओं का अध्ययन करेगा कलाचार्य का सम्मान
273-274	सात हजार ग्रामों से प्राप्त होने वाले राज्यधन के चार विभाग करना	284	दृढ़प्रतिज्ञ की भोग समर्थता
275	प्रदेशी राजा श्रमणोपासक जीव-अजीव के ज्ञाता	285	भोग भोगने के लिए आमंत्रण
276	क. प्रदेशी को मारने के लिये रानी सूर्यकांता का सूर्यकांत कुमार से आग्रह ख. सूर्यकांत कुमार का मौन विरोध	286	क. दृढ़ प्रतिज्ञ का अलिप्त जीवन ख. स्थविरों के समीप प्रव्रज्या ग्रहण करके द्वादशांग का अध्ययन करेगा
277	ग. सूर्यकांता रानी को रहस्य खुलने का भय क. सूर्यकांता द्वारा भोजन आदि में विष प्रयोग ख. प्रदेशी राजा के शरीर में उग्रवेदना	287-288	ग. अनुत्तर धर्म आराधना से अनुत्तर केवल ज्ञान दर्शन की प्राप्ति करके सिद्धपद की प्राप्ति करेगा उपसंहार-जिन भगवान् को, श्रुत देवता को, प्रज्ञप्ति भगवती को, भ. पार्श्वनाथ को और प्रदेशी राजा के प्रदर्शक को नमस्कार
278	क. पौषधशाला में राजा प्रदेशी का समाधि मरण		

द्रव्यानुयोगमय जीवाभिगम उपाङ्ग

प्रतिपत्ति	9	8	क. संसार स्थित जीवों की नौ प्रतिपत्तियाँ
अध्ययन	1	9	ख. संसार स्थित जीव दो प्रकार के-यावत्-दस प्रकार के
उद्देशक	18	10	संसार स्थित जीव दो प्रकार के
उपलब्ध पाठ	4750 श्लोक प्रमाण		स्थावर जीव तीन प्रकार के
गद्य सूत्र	272	11	पृथ्वीकायिक जीव
पद्य गाथा	81	12	पृथ्वीकायिक जीव दो प्रकार के
		13	सूक्ष्म पृथ्वीकायिक जीव दो प्रकार के (सूक्ष्म पृथ्वी-कायिक जीवों के तेवीस द्वारों की संग्रहणी गाथाएं)

14 जीवाभिगम सूत्र विषय-सूची

प्रथम द्विविध जीव प्रतिपत्ति

1	जीवाभिगम कथन प्रतिज्ञा सूत्र
2	जीवाभिगम दो प्रकार का
3	अजीवाभिगम दो प्रकार का
4	अरूपी अजीवाभिगम दस प्रकार का
5	क. रूपी अजीवाभिगम चार प्रकार का
6	ख. अथवा रूपी अजीवाभिगम पाँच प्रकार का
7	जीवाभिगम का स्वरूप और प्रकार
	क. मोक्ष प्राप्त जीव दो प्रकार का
	ख. अनंतर मोक्ष प्राप्त जीव पंद्रह प्रकार का
	ग. परम्पर मोक्ष प्राप्त जीव अनेक प्रकार का

1	सूक्ष्म पृथ्वीकायिक जीवों के शरीर
2	सूक्ष्म पृथ्वीकायिक जीवों की शरीर अवगाहना
3	सूक्ष्म पृथ्वीकायिक जीवों के संहनन
4	सूक्ष्म पृथ्वीकायिक जीवों के संस्थान
5	सूक्ष्म पृथ्वीकायिक जीवों के कषाय
6	सूक्ष्म पृथ्वीकायिक जीवों की संज्ञा
7	सूक्ष्म पृथ्वीकायिक जीवों के लेश्या
8	सूक्ष्म पृथ्वीकायिक जीवों की इन्द्रियाँ
9	सूक्ष्म पृथ्वीकायिक जीवों के समुद्घात
10	सूक्ष्म पृथ्वीकायिक जीव असंज्ञी
11	सूक्ष्म पृथ्वीकायिक जीवों के वेद
12	क. सूक्ष्म पृथ्वीकायिक जीवों की पर्याप्तियाँ

12. ख. सूक्ष्म पृथ्वीकायिक जीवों की अपर्याप्तियां
13. सूक्ष्म पृथ्वीकायिक जीवों की दृष्टि
14. सूक्ष्म पृथ्वीकायिक जीवों के दर्शन
15. सूक्ष्म पृथ्वीकायिक जीवों के अज्ञान
16. सूक्ष्म पृथ्वीकायिक जीवों का योग
17. सूक्ष्म पृथ्वीकायिक जीवों का उपयोग
18. सूक्ष्म पृथ्वीकायिक जीवों का आहार
18. क. सूक्ष्म पृथ्वीकायिक जीवों का द्रव्य से आहार
- ख. सूक्ष्म पृथ्वीकायिक जीवों का क्षेत्र से आहार
- ग. सूक्ष्म पृथ्वीकायिक जीवों का काल से आहार
- घ. सूक्ष्म पृथ्वीकायिक जीवों का भाव से आहार
- ङ. सूक्ष्म पृथ्वीकायिक जीवों की अपेक्षा से वर्ण वाले पुद्गलों का आहार
- च. सूक्ष्म पृथ्वीकायिक विधान की अपेक्षा से वर्ण वाले पुद्गलों का आहार
- छ. सूक्ष्म पृथ्वीकायिक गंध-रस और स्पर्श की दो विवक्षा
- ज. सूक्ष्म पृथ्वीकायिकों द्वारा स्पृष्ट पुद्गलों का आहार
- झ. सूक्ष्म पृथ्वीकायिकों द्वारा अवगाढ पुद्गलों का आहार
- ञ. सूक्ष्म पृथ्वीकायिकों द्वारा अणु और स्थूल पुद्गलों का आहार
- ट. सूक्ष्म पृथ्वीकायिकों द्वारा ऊँचे-नीचे, तिरछे स्थित पुद्गलों का आहार
- ठ. सूक्ष्म पृथ्वीकायिकों द्वारा आदि-मध्य-अंत में स्थित पुद्गलों का आहार
- ड. सूक्ष्म पृथ्वीकायिकों द्वारा स्व विषय स्थित पुद्गलों का आहार
- ढ. सूक्ष्म पृथ्वीकायिकों द्वारा क्रम से स्थित पुद्गलों का आहार
- ण-1. सूक्ष्म पृथ्वीकायिकों द्वारा व्याघात न होने पर 6 दिशाओं से आहार
- ण-2. सूक्ष्म पृथ्वीकायिकों द्वारा व्याघात होने पर 3, 4, 5 दिशाओं में स्थित आहार
- त. सूक्ष्म पृथ्वीकायिकों द्वारा कारण से आहार
- थ. सूक्ष्म पृथ्वीकायिकों द्वारा विपरिणमन-परिवर्तन करके पुनः आहार
19. सूक्ष्म पृथ्वीकायिक जीवों में उत्पत्ति के भेद-प्रभेद
20. सूक्ष्म पृथ्वीकायिक जीवों की स्थिति
21. सूक्ष्म पृथ्वीकायिक जीवों का मरण
22. सूक्ष्म पृथ्वीकायिक जीवों का उद्वर्तन व उसके भेद-प्रभेद

14	23. सूक्ष्म पृथ्वीकायिक जीवों की गति-आगति	ग. एकास्थिक वृक्ष अनेक प्रकार के
15	बादर पृथ्वीकायिक जीव दो प्रकार के	घ. बहुबीज वृक्ष अनेक प्रकार के
	क. श्लक्ष्ण-पृथ्वीकायिक जीव सात प्रकार के	क. साधारण शरीर बादर वनस्पतिकायिक जीव अनेक प्रकार के
	ख. 1. श्लक्ष्ण-पृथ्वीकायिक जीव संक्षेप में दो प्रकार के	
	2. श्लक्ष्ण-पृथ्वीकायिक जीवों के तेवीस द्वारा	ख. साधारण शरीर बादर वनस्पतिकायिक जीव संक्षेप में दो प्रकार के
16	अप्कायिक जीव	ग. साधारण शरीर वनस्पतिकायिक जीवों के तेवीस द्वारा
	क. अप्कायिक जीव दो प्रकार के	
	ख. सूक्ष्म अप्कायिक जीव दो प्रकार के	त्रस जीव तीन प्रकार के
17	ग. सूक्ष्म अप्कायिक जीव संक्षेप में दो प्रकार के	तेजस्कायिक जीव
	घ. सूक्ष्म अप्कायिक जीवों के तेवीस द्वारा	तेजस्कायिक जीव दो प्रकार के
	क. बादर अप्कायिक जीव अनेक प्रकार के	सूक्ष्म तेजस्कायिक जीवों के तेवीस द्वारा
	ख. संक्षेप में बादर अप्कायिक जीव दो प्रकार के	क. बादर तेजस्कायिक जीव अनेक प्रकार के
	ग. बादर अप्कायिक जीवों के तेवीस द्वारा	ख. बादर तेजस्कायिक जीव संक्षेप में दो प्रकार के
18	वनस्पतिकाय जीव	ग. बादर तेजस्कायिक जीवों के तेवीस द्वारा
	क. वनस्पतिकायिक जीव दो प्रकार के	वायुकायिक जीव
	ख. सूक्ष्म वनस्पतिकायिक जीव दो प्रकार के	क. वायुकायिक जीव दो प्रकार के
19	सूक्ष्म वनस्पतिकायिक जीवों के तेवीस द्वारा	ख. सूक्ष्म वायुकायिक जीवों के तेवीस द्वारा
20	बादर वनस्पतिकायिक जीव दो प्रकार के	ग. बादर वायुकायिक जीव अनेक प्रकार के
	क. प्रत्येक बादर वनस्पतिकायिक जीव बारह प्रकार के	घ. बादर वायुकायिक जीव संक्षेप में दो प्रकार के
	ख. वृक्ष दो प्रकार के	

27	ड. बादर वायुकायिक जीवों के तेवीस द्वारा त्रसकाय जीव औदारिक त्रस जीव चार प्रकार के	33	पंचेन्द्रिय तिर्यच योनिक जीव दो प्रकार के संमूर्छिम पंचेन्द्रिय तिर्यच योनिक जीव तीन प्रकार के क. संमूर्छिम जलचर पाँच प्रकार के ख. संमूर्छिम मच्छ अनेक प्रकार के ग. संमूर्छिम मच्छ संक्षेप में दो प्रकार के घ. संमूर्छिम जलचर मच्छों के तेवीस द्वारा क. संमूर्छिम स्थलचर दो प्रकार के ख. संमूर्छिम चतुष्पद स्थलचर चार प्रकार के व संक्षेप में दो प्रकार के
28	क. द्वीन्द्रिय जीव अनेक प्रकार के ख. द्वीन्द्रिय जीव संक्षेप में दो प्रकार के ग. द्वीन्द्रिय जीवों के तेवीस द्वारा त्रीन्द्रिय जीव	34 35 36	
29	क. त्रीन्द्रिय जीव अनेक प्रकार के ख. त्रीन्द्रिय जीव संक्षेप में दो प्रकार के ग. त्रीन्द्रिय जीवों के तेवीस द्वारा चतुरिन्द्रिय जीव		ग. संमूर्छिम चतुष्पद स्थलचरों के तेवीस द्वारा घ. संमूर्छिम स्थलचर परिसर्प दो प्रकार के ड. संमूर्छिम उरग स्थलचर परिसर्प चार प्रकार के च. संमूर्छिम सर्प दो प्रकार के छ. संमूर्छिम दर्वी कर (फण) सर्प अनेक प्रकार के ज. संमूर्छिम मुकुली (फण सहित) सर्प अनेक प्रकार के
30	क. चतुरिन्द्रिय जीव अनेक प्रकार के ख. चतुरिन्द्रिय जीव संक्षेप में दो प्रकार के ग. चतुरिन्द्रिय जीवों के तेवीस द्वारा पंचेन्द्रिय जीव		इ. संमूर्छिम अजगर एक प्रकार का ज. संमूर्छिम आसालिक अनेक प्रकार के (प्रज्ञापना के अनुसार) ट. संमूर्छिम महोरग अनेक प्रकार के (प्रज्ञापना के
31	पंचेन्द्रिय जीव चार प्रकार के		
32	क. नैरयिक जीव सात प्रकार के ख. नैरयिक जीव संक्षेप में दो प्रकार के ग. नैरयिक जीवों के तेवीस द्वारा		

अनुसार)	39	क. गर्भज स्थलचर दो प्रकार के
ठ. समूह्मिम महोरग संक्षेप में दो प्रकार के		ख. गर्भज चतुष्यद चार प्रकार के
ठ. समूह्मिम महोरग के तेवीस द्वारा		ग. गर्भज चतुष्यद संक्षेप में दो प्रकार के
ढ. समूह्मिम भुजग परिसर्प अनेक प्रकार के		घ. गर्भज चतुष्यदों के तेवीस द्वारा
ण. समूह्मिम भुजग परिसर्प संक्षेप में दो प्रकार के		ङ. गर्भज परिसर्प दो प्रकार के
त. समूह्मिम भुजग के तेवीस द्वारा		च. गर्भज उरपरिसर्प दो प्रकार के
थ. समूह्मिम खेचर चार प्रकार के		छ. गर्भज उरपरिसर्पों के तेवीस द्वारा
द. समूह्मिम चर्मपक्षी अनेक प्रकार के		ज. गर्भज भुजपरिसर्प दो प्रकार के
ध. समूह्मिम रोमपक्षी अनेक प्रकार के		झ. गर्भज भुजपरिसर्पों के तेवीस द्वारा
न. समूह्मिम समुद्गकपक्षी एक प्रकार का (प्रज्ञापना के अनुसार)	40	क. गर्भज खेचर चार प्रकार के
प. समूह्मिम विततपक्षी अनेक प्रकार के (प्रज्ञापना के अनुसार)		ख. गर्भज खेचरों के तेवीस द्वारा
फ. समूह्मिम विततपक्षी एक प्रकार का (प्रज्ञापना के अनुसार)	41	मनुष्य जीव
ब. समूह्मिम स्थलचर परिसर्प के तेवीस द्वारा		क. मनुष्य दो प्रकार के
गर्भज तिर्यच पंचेन्द्रिय तीन प्रकार के		ख. समूह्मिम मनुष्यों की मनुष्यक्षेत्र में उत्पत्ति
क. गर्भज जलचर पाँच प्रकार (प्रज्ञापना के अनुसार)		ग. समूह्मिम मनुष्यों के तेवीस द्वारा
ख. गर्भज जलचर संक्षेप में दो प्रकार के		घ. गर्भज मनुष्य तीन प्रकार के
ग. गर्भज जलचरों के तेवीस द्वारा		ङ. गर्भज मनुष्य संक्षेप में दो प्रकार के
		च. गर्भज मनुष्यों के तेवीस द्वारा
		देव वर्णन
	42	क. देवता चार प्रकार के

37

38

ख. भवनवासी देव दस प्रकार के				ग. जलचरी स्त्रियाँ पाँच प्रकार की
ग. वाणव्यंतर देव आदि सभी देवों के भेद (प्रज्ञापना के अनुसार)				घ. स्थलचरी स्त्रियाँ दो प्रकार की
घ. सभी देव संक्षेप में दो प्रकार के				ङ. चतुष्पदी स्त्रियाँ चार प्रकार की
ङ. सभी देवों के तेवीस द्वार				च. परिसर्पी स्त्रियाँ दो प्रकार की
त्रस-स्थावर जीव भव स्थिति				छ. उरग परिसर्पी स्त्रियाँ तीन प्रकार की
क. स्थावर जीवों की स्थिति				ज. भुज परिसर्पी स्त्रियाँ अनेक प्रकार की
ख. त्रस जीवों की स्थिति		45(2)		झ. खेचर स्त्रियाँ चार प्रकार की
ग. स्थावर संस्थिति का जघन्य-उत्कृष्ट काल				मानव स्त्रियाँ तीन प्रकार की
घ. त्रस संस्थिति का जघन्य-उत्कृष्ट काल				क. अन्तर्द्वीपवासिनी स्त्रियाँ अष्टावीस प्रकार की
ङ. स्थावर पर्याय से पुनः स्थावर पर्याय प्राप्त होने का अंतर काल		45(3)		ख. अकर्मभूमिवासिनी स्त्रियाँ तीस प्रकार की
च. त्रस पर्याय से पुनः त्रस पर्याय प्राप्त होने का अंतर काल				ग. कर्मभूमिवासिनी स्त्रियाँ पन्द्रह प्रकार की
छ. त्रस और स्थावर जीवों का अल्प-बहुत्व				देवियाँ चार प्रकार की
द्वितीया त्रिविध जीव प्रतिपत्ति				क. भवनवासिनी देवियाँ दस प्रकार की
संसार स्थित जीव तीन प्रकार के		46		ख. वाणव्यंतर देवियाँ आठ प्रकार की
स्त्रियों का वर्णन				ग. ज्योतिष्क देवियाँ पाँच प्रकार की
क. स्त्रियाँ तीन प्रकार की		47(1)		घ. विमानवासिनी देवियाँ दो प्रकार की
ख. तिर्यच स्त्रियाँ तीन प्रकार की				स्त्रियों की काल स्थिति
				क. तिर्यच योनिक स्त्रियों की जघन्य उत्कृष्ट स्थिति
				ख. जलचर तिर्यच योनिक स्त्रियों की जघन्य उत्कृष्ट स्थिति

ग.	चतुष्पद स्थलचर तिर्यच योनिक स्त्रियों की जघन्य उत्कृष्ट स्थिति	ग.	धर्माचरण की अपेक्षा कर्मभूमिवासिनी स्त्रियों की जघन्य उत्कृष्ट स्थिति
घ.	उरग परिसर्प स्थलचर तिर्यच योनिक स्त्रियों की जघन्य उत्कृष्ट स्थिति	च.	अकर्मभूमिवासिनी (मानव) स्त्रियों की जघन्य उत्कृष्ट स्थिति
ङ.	भुजपरिसर्प स्थलचर तिर्यच योनिक स्त्रियों की जघन्य उत्कृष्ट स्थिति	छ.	संहरण की अपेक्षा (मानव) स्त्रियों की जघन्य उत्कृष्ट स्थिति
च.	खेचर तिर्यच योनिक स्त्रियों की जघन्य उत्कृष्ट स्थिति	ज.	हैमवत-हैरण्यवत क्षेत्र वासिनी (मानव) स्त्रियों की जघन्य उत्कृष्ट स्थिति
क.	मानव स्त्रियों की जघन्य उत्कृष्ट स्थिति	झ.	संहरण की अपेक्षा क्षेत्र वासिनी (मानव) स्त्रियों की जघन्य उत्कृष्ट स्थिति
ख.	धर्माचरण करने वाली (मानव) स्त्रियों की जघन्य उत्कृष्ट स्थिति	ञ.	हरिवर्ष-रम्यक्वर्ष क्षेत्र वासिनी मानव स्त्रियों की जघन्य उत्कृष्ट स्थिति
ग.	कर्मभूमिवासिनी (मानव) स्त्रियों की जघन्य उत्कृष्ट स्थिति	ट.	संहरण की अपेक्षा क्षेत्र वासिनी मानव स्त्रियों की जघन्य उत्कृष्ट स्थिति
घ.	धर्माचरण की अपेक्षा कर्मभूमिवासिनी स्त्रियों की जघन्य उत्कृष्ट स्थिति	ड.	देवकुरु-उत्तरकुरुवासिनी स्त्रियों की जघन्य उत्कृष्ट स्थिति
घ.	भरत-ऐरवत वासिनी (मानव) स्त्रियों की जघन्य उत्कृष्ट स्थिति	ण.	संहरण की अपेक्षा स्त्रियों की जघन्य उत्कृष्ट स्थिति
	धर्माचरण की अपेक्षा भरत ऐरवत वासिनी स्त्रियों की जघन्य उत्कृष्ट स्थिति	त.	अंतर्द्वीपवासिनी स्त्रियों की जघन्य उत्कृष्ट स्थिति
ङ.	पूर्वाविदेह-अपरविदेह कर्मभूमिवासिनी स्त्रियों की जघन्य उत्कृष्ट स्थिति	थ.	संहरण की अपेक्षा अंतर्द्वीपवासिनी स्त्रियों की जघन्य उत्कृष्ट स्थिति

47(3)	देव स्त्रियों की जघन्य उत्कृष्ट स्थिति	ख. तिर्यच स्त्री से पुनः तिर्यच स्त्री होने का जघन्योत्कृष्ट अंतर काल
	क. भवनवासिनी देवियों की जघन्य उत्कृष्ट स्थिति	ग. मनुष्य स्त्री से पुनः मनुष्य स्त्री होने का जघन्योत्कृष्ट अंतर काल
	ख. वाणव्यंतर देवियों की जघन्य उत्कृष्ट स्थिति	घ. देव स्त्री से पुनः देव स्त्री होने का जघन्योत्कृष्ट अंतर काल
	ग. ज्योतिष्क देवियों की जघन्य उत्कृष्ट स्थिति	
	घ (1) चन्द्र विमानवासिनी देवियों की जघन्य उत्कृष्ट स्थिति	
	(2) सूर्य विमानवासिनी देवियों की जघन्य उत्कृष्ट स्थिति	50(1-5)
	(3) ग्रह विमानवासिनी देवियों की जघन्य उत्कृष्ट स्थिति	51
	(4) नक्षत्र विमानवासिनी देवियों की जघन्य उत्कृष्ट स्थिति	
	(5) तारा विमानवासिनी देवियों की जघन्य उत्कृष्ट स्थिति	
	इ.(1) विमानवासिनी देवियों की जघन्य उत्कृष्ट स्थिति	
	(2) सौधर्मवासिनी देवियों की जघन्य उत्कृष्ट स्थिति	52
	(3) ईशानवासिनी देवियों की जघन्य उत्कृष्ट स्थिति	
48	(1) स्त्री संस्थिति काल की पाँच विवक्षा	
	(2) तिर्यचयोनिक स्त्रियों का संस्थिति काल	
	(3) मनुष्ययोनिक स्त्रियों का संस्थिति काल व उसके भेद-प्रभेद	53
	(4) देवियों का संस्थिति काल	
49	क. स्त्री पर्याय से पुनः स्त्री पर्याय के प्राप्त होने का जघन्योत्कृष्ट अंतर काल	54

पुरुषों का वर्णन

- क. पुरुष तीन प्रकार के
 ख. तिर्यच योनिक पुरुष तीन प्रकार के
 ग. मनुष्य योनिक पुरुष तीन प्रकार के
 घ. देव पुरुष चार प्रकार के
 क. पुरुष की जघन्योत्कृष्ट स्थिति
 ख. तिर्यचयोनिक पुरुष की जघन्योत्कृष्ट स्थिति
 ग. मनुष्ययोनिक पुरुष की जघन्योत्कृष्ट स्थिति
 घ. देवयोनिक पुरुष की जघन्योत्कृष्ट स्थिति
 क. पुरुष का पुरुष रूप में जघन्योत्कृष्ट स्थिति काल

- ख. तिर्यच योनिक पुरुषों का पुरुष रूप में स्थिति काल
 ग. मनुष्य योनिक पुरुषों का पुरुष रूप में स्थिति काल 59(1)
 घ. देव योनिक पुरुषों का स्थितिकाल
 क. पुरुष पर्याय से पुनः पुरुष पर्याय के प्राप्त होने का जघन्योत्कृष्ट अंतर काल
- ख. तिर्यच योनिक पुरुष पर्याय से पुनः मनुष्य योनिक पुरुष पर्याय प्राप्त होने का जघन्योत्कृष्ट काल
 ग. मनुष्य योनिक पुरुष पर्याय से पुनः मनुष्य योनिक पुरुष पर्याय प्राप्त होने का जघन्योत्कृष्ट अंतरकाल
 घ. देव योनिक पुरुष पर्याय से पुनः देव योनिक पुरुष पर्याय प्राप्त होने का जघन्योत्कृष्ट अंतरकाल
- क. देव पुरुषों का अल्प-बहुत्व
 ख. तिर्यच योनिक, मनुष्य योनिक और देव योनिक पुरुषों का परस्पर अल्प-बहुत्व
- क. पुरुष वेद कर्म की जघन्योत्कृष्ट बंध स्थिति
 ख. पुरुष वेद कर्म का अबाधा काल
 ग. पुरुष वेद कर्म का स्वभाव
- नपुंसकों का वर्णन**
- नपुंसक तीन प्रकार के
 क. नैरयिक नपुंसक सात प्रकार के
 ख. तिर्यच योनिक नपुंसक पाँच प्रकार के
- ग. मनुष्य योनिक नपुंसक तीन प्रकार के
 नपुंसकों की जघन्योत्कृष्ट स्थिति
 क. नैरयिक नपुंसकों की जघन्योत्कृष्ट स्थिति
 ख. तिर्यच योनिक नपुंसकों की जघन्योत्कृष्ट स्थिति
 ग. मनुष्य योनिक नपुंसकों की जघन्योत्कृष्ट स्थिति
- नपुंसकों का संस्थिति काल
 क. नैरयिक नपुंसकों का संस्थिति काल
 ख. तिर्यच योनिक नपुंसकों का संस्थिति काल
 ग. मनुष्य योनिक नपुंसकों का संस्थिति काल
- नपुंसकों का जघन्योत्कृष्ट अंतर काल
 क. नपुंसक से पुनः नपुंसक होने का जघन्योत्कृष्ट अंतर काल
 ख. नैरयिक नपुंसक से पुनः नैरयिक नपुंसक होने का जघन्योत्कृष्ट अंतर काल
- ग. तिर्यच योनिक नपुंसक से पुनः तिर्यच योनिक नपुंसक होने का जघन्योत्कृष्ट अंतर काल
 घ. मनुष्य योनिक नपुंसक से पुनः मनुष्य योनिक नपुंसक होने का जघन्योत्कृष्ट अंतर काल
- 60(1-5) नैरयिक तिर्यच और मनुष्य योनिक नपुंसकों का अल्प-बहुत्व

61	क. नपुंसक वेद कर्म की बंध स्थिति ख. नपुंसक वेद कर्म का अबाधा काल ग. नपुंसक वेद कर्म का स्वभाव		ख. खर काण्ड सोलह प्रकार के ग. रत्नकांड-यावत्-रिष्टकांड एक प्रकार का घ. पंकबहुलकांड एक प्रकार ङ. अपबहुलकांड एक प्रकार का च. शर्कराप्रभा-यावत्-तमस्तमा एक-एक प्रकार का क. सात नरकों के नरकावासों की संख्या ख. अधःसत्तम पृथ्वी में पांच महानरकावास सात नरक पृथ्वियों के नीचे घनोदधि, घनवात, तनुवात और अवकाशान्तर स्थित है क. रत्नप्रभा पृथ्वी के खरकाण्ड का बाहल्य ख. रत्नप्रभा पृथ्वी के रत्नकाण्ड का-यावत्-रिष्टकाण्ड का बाहल्य ग. रत्नप्रभा पृथ्वी के पंकबहुलकाण्ड का बाहल्य घ. रत्नप्रभा पृथ्वी के अपबहुलकाण्ड का बाहल्य ङ. रत्नप्रभा पृथ्वी के घनोदधि का बाहल्य च. रत्नप्रभा पृथ्वी के घनवात का बाहल्य छ. रत्नप्रभा पृथ्वी के तनुवात का बाहल्य ज. रत्नप्रभा पृथ्वी के अवकाशान्तर का बाहल्य झ. शर्कराप्रभा पृथ्वी के घनोदधि का बाहल्य ञ. शर्कराप्रभा पृथ्वी के घनवात का बाहल्य
62(1-9)	स्त्री, पुरुष और नपुंसकों के अल्प-बहुत्व के नौ सूत्र		
63	क. स्त्रीत्व, पुरुषत्व और नपुंसकत्व पर्याय का जघन्योत्कृष्ट संस्थिति काल ख. स्त्री, पुरुष और नपुंसक पर्याय का जघन्योत्कृष्ट अंतर काल	70 71	
64	क. तिर्यचयोनिक स्त्रियों से तिर्यचयोनिक पुरुषों की अधिकता ख. मनुष्य स्त्रियों से मनुष्य पुरुषों की अधिकता ग. देव स्त्रियों से देव पुरुषों की अधिकता उपसंहार की गाथाएं	72	
तृतीया चतुर्विध जीव प्रतिपत्ति			
प्रथम नैरयिक उद्देशक			
65	संसार स्थित जीव चार प्रकार के		
66	नैरयिक सात प्रकार के		
67	सात नरक पृथ्वियों के नाम और गौत्र		
68	सात नरक पृथ्वियों का बाहल्य		
69	क. रत्नप्रभा पृथ्वी के तीन काण्ड		

73	ट. शर्कराप्रभा पृथ्वी के तनुवात का बाहल्य ठ. शर्कराप्रभा पृथ्वी के अवकाशान्तर का बाहल्य ड. अधःसप्तम पृथ्वी पर्यंत बाहल्य जानना चाहिए सात नरकों और उनके अवकाशान्तरों में पुद्गल द्रव्यों की व्यापक स्थिति	77	च. सात नरकों के तनुवात वलयों का संस्थान छ. सात नरकों का आयाम-विष्कम्भ ज. सात नरकों का सर्वत्र समान बाहल्य क. सात नरकों में सर्व जीवों के उत्पन्न होने का प्रश्नोत्तर ख. सात नरकों से सर्व जीवों के निकलने का प्रश्नोत्तर ग. सात नरकों में सर्व पुद्गलों के प्रविष्ट होने का प्रश्नोत्तर घ. सात नरकों से सर्व पुद्गलों के परित्यक्त होने का प्रश्नोत्तर
74	सात नरक पृथिव्यों के संस्थान		
75	क. सातों नरक पृथिव्यों की अलोक से दूरी		
76(1)	ख. सात नरकों के चारों दिशाओं में तीन-तीन प्रकार के चरमान्त क. सात नरकों के घनोदधिवलय का बाहल्य ख. सात नरकों के घनवातवलय का बाहल्य ग. सात नरकों के तनुवातवलय का बाहल्य	78	क. सात नरकों के शास्वत-अशास्वत स्थिति का हेतु ख. सात नरकों की नित्यता-अनित्यता क. प्रत्येक नरक के ऊपर के चरमान्त से नीचे के चरमान्त का अंतर
76(2)	क. सात नरकों के घनोदधिवलयों में पुद्गल द्रव्यों की व्यापकता ख. सात नरकों के घनवातवलयों में पुद्गल द्रव्यों की व्यापकता ग. सात नरकों के तनुवात वलयों में पुद्गल द्रव्यों की व्यापकता घ. सात नरकों के घनोदधि वलयों का संस्थान ड. सात नरकों के घनवात वलयों का संस्थान	79	ख. प्रत्येक नरक काण्ड के चरमान्तों का अंतर ग. प्रत्येक नरक के घनोदधि के चरमान्तों का अंतर घ. प्रत्येक नरक के घनवात के चरमान्ताओं का अंतर ड. प्रत्येक नरक के तनुवात के चरमान्ताओं का अंतर च. प्रत्येक नरक के अवकाशान्तर का अंतर छ. प्रत्येक नरक के ऊपर के चरमान्त से अवकाशान्तर के नीचे के चरमान्त का अंतर
		80	सात नरकों के अपेक्षाकृत बाहल्य का अल्प-बहुत्व

द्वितीय नैरयिक उद्देशक

81	क. सात पृथ्वियों (नरकों) के नाम ख. सात पृथ्वियों के नरकावासों के विभाग की सीमा ग. सात नरकों के अंदर-बाहर का आकार	86 (1) (2)	ख. सात नरक शास्वत-अशास्वत? सात नरकों में चार गति की अपेक्षा से उपपात क. सात नरकों में एक समय में जीवों की उत्पत्ति ख. सात नरकों का जीवों से सर्वथा रिक्त न होना
82 (1)	क. रत्नप्रभा के नरकावासों का संस्थान दो प्रकार का ख. आवलिका प्रविष्ट नरकावासों का संस्थान तीन प्रकार का	(3) 87 (1)	सात नरकों में नैरयिकों की अवगाहना दो प्रकार की सात नरकों के नैरयिकों में संहननों का अभाव व पुद्गलों की अशुभ परिणति
	ग. आवलिका बाह्य नरकावासों के संस्थान अनेक प्रकार के घ. तमस्तामाप्रभा के नरकावासों का संस्थान दो प्रकार का	(2)	क. सात नरकों के नैरयिकों का संस्थान दो प्रकार का ख. सात नरकों में नैरयिकों के शरीरों का वर्ण ग. सात नरकों में नैरयिकों के शरीरों की गंध घ. सात नरकों में नैरयिकों के शरीरों का स्पर्श
(2)	क. सात नरकों के नरकावासों का बाहल्य ख. सात नरकों के नरकावासों का आयाम-विष्कम्भ और परिधि	88 (1) (2)	क. सात नरकों में नैरयिकों के श्वासोच्छ्वास के पुद्गल ख. सात नरकों में नैरयिकों के आहार के पुद्गल क. सात नरकों में नैरयिकों की लेखाएँ
83	क. सात नरकों का वर्ण ख. सात नरकों का गंध ग. सात नरकों का स्पर्श		ख. सात नरकों में नैरयिकों की दृष्टियाँ ग. सात नरकों के नैरयिक ज्ञानी या अज्ञानी घ. सात नरकों में नैरयिकों के योग
84	क. सात नरकों की लम्बाई-चौड़ाई ख. देवता की दिव्य गति से नरकों के विस्तार का माप		ङ. सात नरकों में नैरयिकों के उपयोग च. सात नरकों में नैरयिकों के अवधिज्ञान का प्रमाण
85	क. सात नरकों की पौद्गलिक रचना		छ. सात नरकों में नैरयिकों के समुद्घात

89	(1) सात नरकों में क्षुधा-पिपासा की वेदना	सर्व जीवों की उत्पत्ति
	(2) सात नरकों में नैरयिकों की विकुर्वणा	ख. पृथ्वीकाय-यावत्-वनस्पतिकाय में उत्पन्न जीव
	(3) सात नरकों में शीतोष्ण वेदना	महाकर्म, महाक्रिया, महाआश्रव व महावेदना वाले
	(4) क. नारकीय जीवन का वर्णन	उद्देशक विषयक संग्रहणी गाथाएं
	ख. तमस्तमा के पाँच नरकावासों के नाम	तृतीय नैरयिक उद्देशक
	ग. तमस्तमा में पाँच महापुरुषों की उत्पत्ति	क. नैरयिकों के अनिष्ट पुद्गल परिणामन
	घ. तमस्तमा में पाँच नैरयिकों का वर्णन	ख. ग्यारह गाथाओं में नैरयिकों का संक्षिप्त वर्णन
	ङ. तमस्तमा में पाँच नैरयिकों की वेदना	प्रथम तिर्यचयोनिक जीव उद्देशक
	(5) क. नारकीय उष्ण वेदना का वर्णन उदाहरण सहित	96 (1) क. तिर्यच योनिक जीव पाँच प्रकार के
	ख. मानवलोक की उष्णता से नारकीय उष्णता की तुलना	ख. एकेन्द्रिय तिर्यच योनिक जीव पाँच प्रकार के
	(6) क. नारकीय शीतवेदना का वर्णन उदाहरण सहित	ग. पृथ्वीकाय एकेन्द्रिय तिर्यच योनिक जीव दो प्रकार के
90	ख. मानवलोक की शीत से नारकीय शीत की तुलना	घ. सूक्ष्म पृथ्वीकाय एकेन्द्रिय तिर्यच योनिक जीव दो प्रकार के
91	सात नरकों में नैरयिकों की स्थिति	ङ. बादर पृथ्वीकाय एकेन्द्रिय तिर्यचयोनिक जीव दो प्रकार के
	सातों नरकों से नैरयिकों का उद्वर्तन व अन्यत्र उत्पत्ति-गति	च. अप्काय-यावत्-वनस्पतिकाय एकेन्द्रिय तिर्यच योनिक जीव दो प्रकार के
92	क. सात नरकों में पृथ्वी का स्पर्श	(2) क. द्वीन्द्रिय-यावत्-चतुरिन्द्रिय तिर्यच योनिक जीव दो प्रकार के
	ख. सात नरकों में पानी का स्पर्श	
	ग. सात नरकों में अग्नि, वायु और वनस्पति का स्पर्श	
	घ. सात नरकों की परस्पर एक-दूसरे से विशालता	
93	क. सात नरकों के पृथ्वीकाय-यावत्-वनस्पतिकायों में	

ख. पंचेन्द्रिय तिर्यच योनिक जीव तीन प्रकार के	द. खेचर पंचेन्द्रिय तिर्यचों की तीन प्रकार की योनियाँ
ग. जलचर पंचेन्द्रिय तिर्यच योनिक जीव दो प्रकार के	ण. अण्डज तीन प्रकार के
घ. संमूर्छिम जलचर पंचेन्द्रिय तिर्यच योनिक जीव दो प्रकार के	त. पोतज तीन प्रकार के
ङ. गर्भज जलचर पंचेन्द्रिय योनिक जीव दो प्रकार के	थ. संमूर्छिम एक प्रकार का
च. स्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यच योनिक जीव दो प्रकार के	द. सब सम्मूर्च्छिम जन्म लेने वाले नपुंसक
छ. चतुष्पद स्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यच योनिक जीव दो प्रकार के	क. खेचर पंचेन्द्रिय तिर्यचों के छहों लेश्याएं
ज. परिसर्प स्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यच योनिक जीव दो प्रकार के	ख. खेचर पंचेन्द्रिय तिर्यचों के तीनों दृष्टियाँ
झ. उरग परिसर्प स्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यच योनिक जीव दो प्रकार के	ग. खेचर पंचेन्द्रिय तिर्यच ज्ञानी व अज्ञानी
ञ. भुजग परिसर्प स्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यच योनिक जीव दो प्रकार के	घ. खेचर पंचेन्द्रिय तिर्यचों के तीनों योग
ट. खेचर पंचेन्द्रिय तिर्यच योनिक जीव दो प्रकार के	ङ. खेचर पंचेन्द्रिय तिर्यचों के दोनों योग
ठ. संमूर्छिम खेचर पंचेन्द्रिय तिर्यच योनिक जीव दो प्रकार के	च. खेचर पंचेन्द्रिय तिर्यच असंख्यात वर्ष की आयु वाले अकर्मभूमि व अंतर्द्वीप को छोड़कर सब जगह से उत्पन्न
ड. गर्भज खेचर पंचेन्द्रिय तिर्यच योनिक जीव दो प्रकार के	छ. खेचर पंचेन्द्रिय तिर्यचों की स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त, उत्कृष्ट पत्योपम का असंख्यात वां भाग
	ज. खेचर पंचेन्द्रिय तिर्यचों में पांचों समुद्रघात
	झ. खेचर पंचेन्द्रिय तिर्यच का मारणांतिक समुद्रघातों से मरण
	ञ. खेचर पंचेन्द्रिय तिर्यचों का मरण चारों गतियों में

97(2)	ट. खेचर पंचेन्द्रिय तिर्यच बारह लाख योनि प्रमुख कोटा कोटि क. भुजग परिसर्प की तीन योनियाँ, लेश्या आदि इग्यारह द्वार ख. उरग परिसर्प की तीन योनियाँ, लेश्या आदि इग्यारह द्वार ग. चतुष्पद स्थलचर दो प्रकार का घ. जरायुज स्थलचर तीन प्रकार के, इनके लेश्या आदि ग्यारह द्वार ङ. जलचरों के भेद और लेश्या आदि ग्यारह द्वार च. चतुरिन्द्रियों की कुल कोटी छ. त्रीन्द्रियों की कुल कोटी ज. द्वीन्द्रियों की कुल कोटी क. गंधाङ्ग सात प्रकार का ख. पुष्पों की सोलह लाख जाति कुल कोटी ग. वल्लरियाँ चार प्रकार की घ. लतायें आठ प्रकार की ङ. हरितकाय तीन प्रकार की च. त्रस-स्थावर जीवों की 84 लाख कुल कोटियाँ क. स्वस्तिकादि विमानों के नाम व विस्तार	ख. अर्ची आदि विमानों के नाम व विस्तार ग. काम, कामावर्त आदि विमानों के नाम व विस्तार घ. विजयादि विमानों के नाम व विस्तार
98	द्वितीय तिर्यचयोनिनिक जीव उद्देशक क. संसार स्थित जीव छह प्रकार के ख. पृथ्वीकायिक-यावत्-वनस्पतिकायिक जीव दो-दो प्रकार के ग. श्लक्ष्ण पृथ्वीकायिक जीवों के सात प्रकार घ. खर पृथ्वीकायिक जीवों के अनेक प्रकार ङ. त्रसकायिक जीव चार प्रकार के च. द्वीन्द्रिय जीव अनेक प्रकार के छ. सर्वार्थसिद्ध देव पर्यंत अनेक प्रकार के जीव (प्रज्ञापना अनुसार) क. पृथ्वियाँ छह प्रकार की ख. श्लक्ष्ण पृथ्वियों की जघन्योत्कृष्ट स्थिति ग. शुद्ध पृथ्वियों की जघन्योत्कृष्ट स्थिति घ. बालुका पृथ्वियों की जघन्योत्कृष्ट स्थिति ङ. मनःशिला पृथ्वियों की जघन्योत्कृष्ट स्थिति च. शर्करा पृथ्वियों की जघन्योत्कृष्ट स्थिति	
99		

एकोरुक मनुष्यों का एकोरुकद्वीप वर्णन	
छ. खर पृथ्वियों की जघन्योत्कृष्ट स्थिति	क. एकोरुक द्वीप का स्थान
ज. नैरयिक-यावत्-सर्वार्थसिद्ध देवों की स्थिति	ख. एकोरुक द्वीप का आयाम-विष्कम्भ और परिधि
झ. जीव का संस्थिति काल	ग. पद्मवर वेदिका, वनखण्ड
ञ. पृथ्वीकाय-यावत्-त्रसकाय का संस्थिति काल	घ. पद्मवर वेदिका की ऊँचाई और विष्कम्भ
102 प्रत्युत्पन्न पृथ्वीकायिक-यावत्-प्रत्युत्पन्न त्रसकायिक जीवों का जघन्योत्कृष्ट निर्लेप काल	ङ. पद्मवर वेदिका वर्णन (राजप्रश्रीय अनुसार)
103 क. कृष्णलेश्या आदि तीन अविशुद्ध लेश्या वाले अणगार का देव-देवियों को देख सकना (छ विकल्प)	क. वनखण्ड का चक्रवाल विष्कम्भ
ख. तेजो लेश्या आदि तीन विशुद्ध लेश्या वाले अणगार का देव-देवियों को देख सकना (छ विकल्प)	ख. वनखण्ड वर्णन (जम्बूद्वीप सूत्र अनुसार)
104 क. अन्यतीर्थिक मान्यता एक समय में दो क्रिया	111 (1) एकोरुक द्वीप के भूमितल का वर्णन
ख. स्वसिद्धांत प्रतिपादन-एक समय में एक ही क्रिया	(2) क. एकोरुक द्वीप में अनेक प्रकार के वृक्ष
प्रथम मनुष्ययोनिक जीव उद्देशक	ख. एकोरुक द्वीप में अनेक प्रकार की लताएँ
मनुष्य दो प्रकार के	ग. एकोरुक द्वीप में अनेक प्रकार के गुल्म
क. समूर्द्धिम मनुष्यों का एक ही प्रकार	घ. एकोरुक द्वीप में अनेक वनराजियाँ
ख. समूर्द्धिम मनुष्यों के 14 उत्पत्ति स्थान (प्रज्ञापना अनुसार)	(3) (1) एकोरुक द्वीप में मत्तांग नामक कल्प वृक्ष
105 गर्भज मनुष्य तीन प्रकार के	(4) (2) एकोरुक द्वीप में भृतांग नामक कल्प वृक्ष
106 अंतर्द्वीप के मनुष्य अठावीस प्रकार के	(5) (3) एकोरुक द्वीप में त्रुटितांग नामक कल्प वृक्ष
	(6) (4) एकोरुक द्वीप में दीप शिखा नामक कल्प वृक्ष
107	(7) (5) एकोरुक द्वीप में ज्योति शिखा नामक कल्प वृक्ष
108	(8) (6) एकोरुक द्वीप में चित्रांग नामक कल्प वृक्ष

- (9) (7) एकोरुक द्वीप में चित्ररस नामक कल्प वृक्ष
 (10) (8) एकोरुक द्वीप में मण्यंग नामक कल्प वृक्ष
 (11) (9) एकोरुक द्वीप में गेहाकार नामक कल्प वृक्ष
 (12) (10) एकोरुक द्वीप में अन्नग नामक कल्प वृक्ष
 (13) क. एकोरुक द्वीप के मनुष्यों का सर्वांगीण वर्णन
 ख. एकोरुक द्वीप के मनुष्यों की ऊँचाई
 ग. एकोरुक द्वीप के मनुष्यों की पसलियाँ
 घ. एकोरुक द्वीप के मनुष्यों की आहारेच्छा का काल
 (14) क. एकोरुक द्वीप की स्त्रियों का सर्वांगीण वर्णन
 ख. स्त्रियों के बत्तीस लक्षण
 ग. एकोरुकद्वीप स्थित स्त्रियों की शारीरिक स्थिति
 घ. एकोरुक द्वीप की स्त्रियों की आहारेच्छा का काल
 (15) क. एकोरुक द्वीपवासी मनुष्यों के भोज्य पदार्थ
 ख. एकोरुक द्वीप की पृथ्वी का आस्वाद
 ग. एकोरुक द्वीप के पुष्पों व फलों का आस्वाद
 घ. एकोरुक द्वीप के मनुष्यों का निवास स्थान
 ड. एकोरुक द्वीप के वृक्षों का संस्थान
 (16) क. एकोरुक द्वीप में घर, मार्ग आदि का अभाव
 ख. एकोरुक द्वीप में ग्राम-नगर आदि का अभाव
 ग. एकोरुक द्वीप में असि आदि कर्मों का अभाव
- घ. एकोरुक द्वीप में हिरण्य-सुवर्ण आदि धातुओं का अभाव
 ड. एकोरुक द्वीप के मनुष्यों में अल्प ममत्व
 च. एकोरुक द्वीप में राजा आदि-सामाजिक व्यवस्था का अभाव
 छ. एकोरुक द्वीप में दास्यकर्मों का अभाव
 ज. एकोरुक द्वीप में माता-पिता, भाई-बहिन, भार्या, पुत्र-पुत्री, पुत्रवधु आदि स्वजनों से अल्प प्रेम
 झ. एकोरुक द्वीप में शत्रु आदि में वैरभाव का अभाव
 ञ. एकोरुक द्वीप में मित्रादि का अभाव
 ट. एकोरुक द्वीप में सगाई, विवाह आदि का अभाव
 ठ. एकोरुक द्वीप में इन्द्र महोत्सव आदि का अभाव
 ड. एकोरुक द्वीप में नटादि के नृत्यों का अभाव
 ढ. एकोरुक द्वीप में गाड़ी आदि यान साधनों का अभाव
 ण. एकोरुक द्वीप में अश्वदि का सदभाव
 त. एकोरुक द्वीप में सिंहादि का सदभाव
 थ. एकोरुक द्वीप में शालि आदि धान्यों का सदभाव
 द. एकोरुक द्वीप में गर्त आदि का अभाव
 ध. एकोरुक द्वीप में स्थाणु आदि का अभाव
 न. एकोरुक द्वीप में डाँस मच्छर आदि का अभाव

प. एकोरुक द्वीप में सर्पादि का सदभाव	ज. दक्षिण के उल्कामुख द्वीप का स्थान आदि
फ. एकोरुक द्वीप में गृहदण्ड-यावत्-अनार्य उत्पात आदि का अभाव	झ. दक्षिण के घनदंत द्वीप का स्थान आदि
ब. एकोरुक द्वीप में डिंब आदि का अभाव	ञ. आदर्श मुख आदि द्वीपों का अवगाहन, विष्कम्भ, परिधि आदि
भ. एकोरुक द्वीप में महायुद्ध आदि का अभाव	ट. उत्तर दिशा के एकोरुक द्वीप आदि द्वीपों का वर्णन
म. एकोरुक द्वीप में रोगों का अभाव	ठ. शुद्धद्वीप पर्यंत 28 द्वीपों का वर्णन (एकोरुक द्वीप के समान)
य. एकोरुक द्वीप में अतिवृष्टि आदि का अभाव	क. अकर्मभूमि मनुष्य तीस प्रकार के
र. एकोरुक द्वीप में लोहे आदि की खानों का अभाव	ख. कर्मभूमि मनुष्य पंद्रह प्रकार के
(17) क. एकोरुक द्वीप के मनुष्यों की स्थिति	ग. प्रकारान्तर से कर्मभूमि मनुष्य के दो भेद
ख. एकोरुक द्वीप के मनुष्यों की गति-आगति	देवयोनिक जीव उद्देशक
(18) क. दक्षिण के आभासिक द्वीप का स्थान आदि	चार प्रकार के देव
ख. दक्षिण के लंगोलिक द्वीप का स्थान आदि	भवनवासी-यावत्-अनुत्तर विमानवासी देवों के भेद
ग. दक्षिण के वैषाणिक द्वीप का स्थान आदि	भवनवासी देवों के भवनों का स्थान
क. दक्षिण के हयकर्ण द्वीप का स्थान आदि	क. असुरकुमार देवों के भवनों का स्थान
ख. दक्षिण के गजकर्ण द्वीप का स्थान आदि	ख. दक्षिण दिशा के असुरकुमारों के भवनों का वर्णन (प्रज्ञापना स्थानपद अनुसार)
ग. दक्षिण के गोकर्ण द्वीप का स्थान आदि	क. अमुरेन्द्र चमर की तीन परिषद्
घ. दक्षिण के शङ्कुलीकर्ण द्वीप का स्थान आदि	ख-घ. आभ्यन्तर, मध्यम और बाह्य तीनों परिषदों के देवों की संख्या
ङ. दक्षिण आदर्शमुख द्वीप का स्थान आदि	
च. दक्षिण के अश्वमुख द्वीप का स्थान आदि	
छ. दक्षिण के अश्वकर्ण द्वीप का स्थान आदि	

119	ड-छ. तीनों परिषदों की देवियों की संख्या ज-ज. तीनों परिषद् के देव-देवियों की स्थिति ट-ड. तीनों परिषद् की भिन्नता का हेतु क. उत्तर दिशा के असुरकुमारों का वर्णन ख. वैरोचनेन्द्र बली की तीन परिषद् ग. तीन परिषद् के देव-देवियों की संख्या घ. वैरोचनेन्द्र की और तीन परिषद् के देव-देवियों की स्थिति	ग. द्वीप-समुद्रों का संस्थान घ. द्वीप-समुद्रों का स्वरूप
द्वीप-समुद्र अधिकार		
जम्बूद्वीप वर्णन		
120	क. दक्षिण-उत्तर दिशा के नागकुमारेन्द्र व उनकी तीन परिषद् के देव-देवियों का वर्णन ख. शेष दक्षिण-उत्तर दिशा के भवनेन्द्रों व उनकी परिषद् के देव-देवियों का वर्णन	क. जम्बूद्वीप के वृत्ताकार की उपमाएँ ख. जम्बूद्वीप के संस्थान की उपमाएँ ग. जम्बूद्वीप का आयाम-विष्कम्भ घ. जम्बूद्वीप की परिधि ड. जम्बूद्वीप की जगति की ऊँचाई च. जम्बूद्वीप की जगति के मूल, मध्य और ऊपर का विष्कम्भ
121	वाणव्यंतर देवों के भवन, इन्द्र, परिषद् और स्थिति का वर्णन	छ. जम्बूद्वीप का संस्थान ज. जगति की जाली की ऊँचाई व विष्कम्भ
122	क. ज्योतिष्क देवों के विमानों का स्थान ख. ज्योतिष्क देवों के विमानों का संस्थान ग. सूर्य-चन्द्र ज्योतिषी देवों के इन्द्रों की तीन-तीन परिषदाओं का वर्णन	क. पद्मवर वेदिका की ऊँचाई व विष्कम्भ ख. पद्मवर वेदिका का वर्णन ग. पद्मवर वेदिका की जालिकायें घ. पद्मवर वेदिका में हय आदि के भित्तिचित्र ड. पद्मवर वेदिका में पद्मलता आदि लताएँ च. पद्मवर वेदिका में अक्षय्य स्वस्तिक
123	क. द्वीप-समुद्रों का स्थान ख. द्वीप-समुद्रों की संख्या	

- छ. पद्मवर वेदिका में विविध प्रकार के कमल
 ज. पद्मवर वेदिका का शास्वत या अशास्वत होना
 झ. पद्मवर वेदिका की नित्यता
- 126 (1) क. वनखण्ड का चक्रवाल विष्कम्भ
 ख. वनखण्ड का विस्तृत वर्णन
 (2) काले वर्ण की तृण और मणियों का स्वरूप
 (3) नीले वर्ण की तृण और मणियों का स्वरूप
 (4) लाल वर्ण की तृण और मणियों का स्वरूप
 (5) पीले वर्ण की तृण और मणियों का स्वरूप
 (6) सफेद वर्ण की तृण और मणियों का स्वरूप
 (7) तृण और मणियों की गंध कैसी ?
 (8) तृण और मणियों का स्पर्श कैसा ?
 (9) तृण और मणियों की शब्द ध्वनि कैसी ?
- 127 (1) वनखण्ड में विविध वापिकायें
 (2) वापिकाओं के सोपान
 (3) क. वापिकाओं के समीप उत्पात आदि पर्वत
 ख. उत्पात पर्वत आदि पर हंसासन आदि
 ग. वापिकाओं पर तोरण
 घ. तोरणों पर अष्टमंगल
 ङ. तोरणों पर ध्वजाएं
- छ. तोरणों पर छत्र-चामर
 (4) क. पर्वतों पर विविध आलिघर
 ख. आलिघर आदि में हंसासन आदि
 ग. वनखण्ड में अनेक प्रकार के लतागृह
 घ. लतागृहों में आसन, शिलापट
 ङ. वनखण्ड में विविध प्रकार के मण्डप
 च. वनखण्ड में विविध प्रकार के शिलापट
 छ. शिलापटों पर देव-देवियों की क्रीड़ा
 (5) क. पद्मवर वेदिका पर बने वनखण्ड का विष्कम्भ
 ख. वनखण्ड में देव-देवियों की क्रीड़ा
 जम्बूद्वीप के चार द्वार
 128
 129 (1) क. जम्बूद्वीप के विजय द्वार का स्थान
 ख. जम्बूद्वीप के विजय द्वार की ऊँचाई
 ग. जम्बूद्वीप के विजय द्वार का विष्कम्भ
 घ. जम्बूद्वीप के विजय द्वार के कपाट रचना
 (2) क. विजयद्वार पर नैषधिकाएं
 ख. नैषधिकाओं पर नागदन्तक
 ग. नागदन्तकों पर पुष्प मालाओं की नागदन्त पंक्तियां
 घ. नागदन्तकाओं में छींके व धूपघटिकाएं
 (3) विजयद्वार की नैषधिकाओं में पुतलिकाएं

- (4) क. नैषधिकाओं में जालकटक
 ख. नैषधिकाओं में वनमाला पंक्तियां
 130 क. विजयद्वार की नैषधिकाओं में प्रकंटक
 ख. पद्मलता आदि लताएं
 ग. मणिपीठिकाएं व सिंहासन
 घ. सिंहासनों पर विजयदूष्य
 इ. विजयदूष्यों के मध्यभाग में वज्रमय अंकुश
 च. प्रासादावतंसकों पर अष्टमंगल
 131 (1) क. विजयद्वार की नैषधिकाओं में तोरण
 ख. तोरणों के आगे घोड़े, पद्मलताएं, स्वस्तिक आदि चित्र
 ग. तोरणों के आगे चन्दन कलश
 घ. तोरणों के आगे भृंगारक
 इ. तोरणों के आगे दर्पण
 च. तोरणों के आगे वज्रनाभ
 छ. तोरणों के आगे पात्रियां
 (2) क. तोरणों के आगे सुप्रतिष्ठक
 ख. तोरणों के आगे मनोगुलिकाएं
 ग. तोरणों के आगे रत्नकरण्डक
 घ. तोरणों के आगे हयकण्ठक-यावत्-वृषभ कंटक
- इ. तोरणों के आगे हयकण्ठक आदि पर चंगेरियां
 च. तोरणों के आगे पुष्पपटल-यावत्-लोमहस्त
 छ. तोरणों के आगे सिंहासन
 ज. तोरणों के आगे आच्छादन युक्त छत्र
 झ. तोरणों के आगे चामर
 ज. तोरणों के आगे तैल समुद्राक
 क. विजयद्वार पर एक हजार अस्सी ध्वजाएं
 ख. विजयद्वार के आगे नौ भौम
 ग. पांचवें भौम में विशाल सिंहासन
 घ. विजय देव के सामानिक देवों के भद्रासन
 इ. विजय देव की अग्रमहीषियों के भद्रासन
 च. विजय देव की तीन परिषदों के भद्रासन
 छ. विजय देव की सात सेनापतियों के भद्रासन
 ज. विजय देव की आत्मरक्षक देवों के भद्रासन
 133 विजय द्वार के ऊपरी भाग का वर्णन
 134 क. विजय द्वार नाम का हेतु
 ख. विजय देव का परिवार
 ग. विजय द्वार का शास्वत नाम
 135 (1) क. विजय देव की विजया राजधानी का स्थान
 ख. विजया राजधानी का आयाम-विक्रम

ग. विजया राजधानी की परिधि	छ. अन्य पार्श्ववर्ती प्रासादों की ऊँचाई, आयाम-विष्कम्भ
घ. विजया राजधानी के प्राकार की ऊँचाई	आदि
ङ. प्राकार के मूल, मध्य और ऊपरी भाग का विष्कम्भ	137 (1) क. विजय देव की सुधर्मा सभा
च. विजया राजधानी के प्राकार का संस्थान	ख. सुधर्मा सभा की ऊँचाई, आयाम-विष्कम्भ
छ. प्राकार के कपिशिर्षक का आयाम-विष्कम्भ और ऊँचाई	(2) क. सुधर्मा सभा के तीन द्वारों की ऊँचाई और विष्कम्भ
(2) क. विजया राजधानी के बाहों के द्वारों की ऊँचाई और विष्कम्भ	ख. मुखमण्डपों का आयाम-विष्कम्भ और ऊँचाई
ख. विजया राजधानी के द्वारों का वर्णन	ग. प्रेक्षाघर मण्डपों का आयाम-विष्कम्भ और ऊँचाई
136 (1) क. विजया राजधानी के चारों दिशाओं में चार वनखण्ड	घ. मणिपीठिकाओं का आयाम-विष्कम्भ और बाहल्य
ख. वनखण्डों का आयाम-विष्कम्भ	ङ. चैत्य स्तूपों का आयाम-विष्कम्भ और बाहल्य
ग. वनखण्डों में दिव्य प्रासाद	च. मणिपीठिकाओं का आयाम-विष्कम्भ और बाहल्य
घ. प्रासादों में चार महर्धिक देव	छ. चार जिन प्रतिमाओं की ऊँचाई
(2) क. विजया राजधानी के मध्य भाग में उपकारिकालयन	(3) क. चैत्य स्तूपों के आगे मणिपीठिकाएं और उनकी लंबाई-चौड़ाई
ख. उपकारिकालयन का आयाम-विष्कम्भ	ख. मणिपीठिकाओं पर स्थित चैत्य वृक्षों की ऊँचाई, उद्वेध, स्कंधों का विष्कम्भ, मध्य भाग, आयाम-विष्कम्भ, ऊपरी भाग का परिमाण, चैत्य वृक्षों का वर्णन
ग. उपकारिकालयन की परिधि	(4) क. चैत्य वृक्षों पर स्थित मणिपीठिकाओं का आयाम-विष्कम्भ और बाहल्य
घ. पद्मवर वेदिका, वनखण्ड, सोपान, तोरण	ख. महेन्द्र ध्वजाओं की ऊँचाई, उद्वेध और विष्कम्भ
ङ. मूल प्रासादावतंसक मणिपीठिका, सिंहासन परिवार, अष्टमंगल	
च. समीपवर्ती प्रासादों की ऊँचाई, आयाम-विष्कम्भ आदि	

ग.	महेन्द्र ध्वजाओं पर अष्ट मंगल, ध्वजा, छत्रातिछत्र	घ.	मणिपीठिका पर देवछंदक, आयाम-विष्कम्भ और उसकी ऊँचाई
घ.	नंदा पुष्करणियों का आयाम-विष्कम्भ और उद्वेध	ङ.	देवछंदक में जिन प्रतिमाओं की संख्या और ऊँचाई
ङ.	पद्मवरवेदिका व वनखण्डों का वर्णन	च.	जिन प्रतिमाओं का वर्णन
च.	मनोगुलिकाओं की संख्या	(2) क.	जिन प्रतिमाओं के पीछे छत्रधारिणी प्रतिमाएं
छ.	गोमानसिकाओं की संख्या	ख.	नाग, यक्ष, भूत आदि की प्रतिमाओं की संख्या
क.	मणिपीठिकाओं का आयाम-विष्कम्भ और बाहल्य	ग.	घंटा, चंदन कलश, भृङ्गारक आदि की संख्या
ख.	माणवक चैत्य स्तम्भों की ऊँचाई, उद्वेध और विष्कम्भ	घ.	अष्ट मंगल, ध्वजा, छत्रातिछत्र, सोलह रत्न
ग.	महामणिपीठिकाओं का आयाम-विष्कम्भ और बाहल्य 140	क.	सिद्धायतन के ईशानकोण में उपपात सभा
घ.	महामणिपीठिका पर देवशयनीय	ख.	सभा के मध्य में मणिपीठिका उसका आयाम विष्कम्भ और बाहल्य
ङ.	देवशयनीय का वर्णन	ग.	मणिपीठिका पर देवशयनीय व हृद
च.	देवशयनीय के ईशानकोण में विशाल मणिपीठिका	घ.	हृद का आयाम-विष्कम्भ और उद्वेध
छ.	मणिपीठिका पर महेन्द्रध्वज	ङ.	अभिषेक सभा का वर्णन
ज.	महेन्द्रध्वज की ऊँचाई, उद्वेध, विष्कम्भ	च.	मणिपीठिका का आयाम विष्कम्भ और बाहल्य
झ.	विजय देव का शस्त्रागार	छ.	सिंहासन वर्णन
ञ.	सुधर्मा सभा पर अष्ट मंगल, ध्वजाएं और छत्रातिछत्र	ज.	अलंकारिक सभा वर्णन
139 (1) क.	सुधर्मा सभा के ईशानकोण में सिद्धायतन	झ.	व्यवसाय सभा वर्णन
ख.	सिद्धायतन का आयाम, विष्कम्भ और ऊँचाई	ञ.	पुस्तक रत्न वर्णन
ग.	सिद्धायतन की मणिपीठिका का आयाम-विष्कम्भ और बाहल्य	ट.	विशाल बलिपीठ का आयाम-विष्कम्भ और बाहल्य

141 (1)	क. विजयदेव की उत्पत्ति व पर्याप्ति		ग. विजयदेव के सामानिक देवों की स्थिति
	ख. विजयदेव का मानसिक संकल्प	144	क. जम्बूद्वीप के वैजयंत द्वार का वर्णन
	ग. विजयदेव के सामानिक देवों का आगमन		ख. वैजयंती राजधानी, वैजयंत देव
	घ. जिन प्रतिमाओं और जिन अस्थियों की अर्चा के कर्त्तव्य का निर्देश		ग. जम्बूद्वीप के जयंत द्वार का वर्णन
(2)	क. विजयदेव द्वारा देवदूष्य धारण, हृद में जल मज्जन		घ. जयंत नामक महर्धिक देव
	ख. अभिषेक सभा में प्रवेश व पूर्व दिशा के सिंहासन पर बैठना	145	ङ. जम्बूद्वीप के अपराजित द्वार का वर्णन
(3,4,5)	विजयदेव के अभिषेक का विस्तृत वर्णन		च. अपराजित नामक महर्धिक देव
(6)	विजयदेव के सामानिक देव आदि द्वारा जय-जयकार	146	जम्बूद्वीप के एक द्वार से दूसरे द्वार का अंतर
142 (1)	क. विजयदेव का आलंकारिक भांड लाने हेतु आभियोगिक देवों को आदेश		क. जम्बूद्वीप से लवण समुद्र का और लवण समुद्र से जम्बूद्वीप का स्पर्श
	ख. विजयदेव का पुस्तक-स्वाध्याय	147	ख. जम्बूद्वीप के जीवों की लवण समुद्र में और लवण समुद्र के जीवों की जम्बूद्वीप में उत्पत्ति
(2)	क. विजयदेव का सिद्धायतन में आगमन		क. जम्बूद्वीप में उत्तर कुरुक्षेत्र का स्थान
	ख. जिन प्रतिमाओं की अर्चा का विस्तृत वर्णन		ख. उत्तर कुरुक्षेत्र का संस्थान और विष्कम्भ
(3)	जिन प्रतिमा व जिन अस्थियों की अर्चा-पूजा		ग. जीवा और वक्षस्कार पर्वत का स्पर्श
(4)	विजयदेव का सुधर्मा सभा में आगमन व सिंहासन पर पूर्वाभिमुख आसीन होना		घ. धनुष्य की परिधि
143	क. विजयदेव के समस्त परिवार का यथाक्रम से बैठना		ङ. उत्तर कुरुक्षेत्र के मनुष्यों की ऊँचाई, पसलियों, आहारेच्छा काल, स्थिति और शिशुपालन काल
	ख. विजयदेव की स्थिति	148	च. उत्तर कुरुक्षेत्र में छ प्रकार के मनुष्य
			क. उत्तर कुरु में दो यमक पर्वत

ख. यमक पर्वतों का स्थान, ऊँचाई, उद्देध, मूल, मध्य और ऊपरी भाग का आयाम, विष्कम्भ, परिधि	150	क. दस कंचनग पर्वतों का स्थान
ग. यमक पर्वतों पर प्रासाद और प्रासादों की ऊँचाई		ख. कंचनग पर्वतों की ऊँचाई, उद्देध, मूल, मध्य और सर्वोपरि भाग का विष्कम्भ
घ. यमक नाम होने का हेतु, दो यमक देव, उनकी स्थिति, उनका देव परिवार		ग. प्रासादों की ऊँचाई व विष्कम्भ
ङ. यमक पर्वतों की नित्यता सिद्धि		घ. कंचनग पर्वत नाम होने का हेतु
च. यमक राजधानियों का स्थान		ड. कंचनग देव व कंचनगा राजधानी
149 (1) क. उत्तरकुरु में नीलवन्तद्रह का स्थान, आयाम-विष्कम्भ और उद्देध	151	च. उत्तरकुरुद्रह का स्थान आदि
ख. पद्म का आयाम, विष्कम्भ, परिधि, बाहल्य, ऊँचाई और सर्वोपरि भाग		छ. चन्द्र द्रह, एरावण द्रह, माल्यवन्त द्रह भी इसी प्रकार
ग. पद्मकर्णिका का आयाम-विष्कम्भ, परिधि और बाहल्य		क. जम्बूपीठ का स्थान
घ. भवन का आयाम-विष्कम्भ और ऊँचाई		ख. जम्बूपीठ का आयाम-विष्कम्भ व परिधि तथा मध्य भाग का और अंतिम भाग का बाहल्य
ड. भवन के द्वारों की ऊँचाई और विष्कम्भ		ग. मणिपीठिका का आयाम-विष्कम्भ और बाहल्य
(2) क. मणिपीठिका का आयाम विष्कम्भ और बाहल्य		घ. जम्बू-सुदर्शन वृक्ष की ऊँचाई, उद्देध, स्कंध का विष्कम्भ, मध्य भाग और सर्वोपरि भाग का विष्कम्भ
ख. देवशयनीय वर्णन	152(1)	ङ. जम्बू सुदर्शन वृक्ष का वर्णन
ग. एक सौ आठ कमलों की ऊँचाई आदि		क. जम्बू-सुदर्शन वृक्ष की चार शाखायें
घ. कर्णिकाओं का आयाम-विष्कम्भ		ख. शाखाओं पर भवन, उनका आयाम-विष्कम्भ और ऊँचाई आदि
ड. पद्म का परिवार, सर्व पद्मों की संख्या		ग. भवन द्वारों की ऊँचाई, विष्कम्भ आदि
च. नीलवन्त द्रह नाम होने का हेतु		घ. जम्बू सुदर्शन वृक्ष के ऊपरी भाग में सिद्धायतन

सिद्धायतन का आयाम-विष्कम्भ, ऊँचाई, सिद्धायतन 153
 के द्वारों की ऊँचाई, विष्कम्भ आदि तथा देवछंदक,
 जिन प्रतिमा आदि

(2) क. पार्श्ववर्ती अन्य जम्बू-सुदर्शनों की ऊँचाई आदि

ख. अनाधृत देव और उसका परिवार

ग. जम्बू-सुदर्शन वृक्ष के चारों ओर तीन वनखण्ड

घ. प्रत्येक वनखण्ड में भवन

ङ. चार नंदा पुष्करिणियाँ, उनका आयाम-विष्कम्भ आदि

च. नंदा पुष्करिणी के मध्य प्रासाद की ऊँचाई आदि

छ. सर्व पुष्करिणियों के नाम

(3) क. जम्बू-सुदर्शन वृक्ष पर एक विशाल कूट

ख. कूटों की ऊँचाई विष्कम्भ आदि

ग. जम्बू-सुदर्शन वृक्ष के चारों दिशाओं में विशाल कूट

घ. कूटों पर सिद्धायतन का वर्णन

(4) क. जम्बू-सुदर्शन वृक्ष पर अष्टमंगल

ख. जम्बू-सुदर्शन वृक्ष के बारह नाम

ग. जम्बू-सुदर्शन नाम का हेतु

घ. अनाधृत देव की स्थिति

ङ. अनाधृता राजधानी का स्थान आदि

च. जम्बूद्वीप नाम की नित्यता

क. जम्बूद्वीप में चन्द्र संख्या

ख. जम्बूद्वीप में सूर्य संख्या

ग. जम्बूद्वीप में नक्षत्र संख्या

घ. जम्बूद्वीप में महाग्रह संख्या

ङ. जम्बूद्वीप में तारागण संख्या

लवण समुद्र वर्णन

154 क. लवण समुद्र का संस्थान

ख. लवण समुद्र का चक्रवाल-विष्कम्भ

ग. लवण समुद्र की परिधि

घ. लवण समुद्र की पद्मवर वेदिका की ऊँचाई और

वनखण्ड

ङ. लवण समुद्र के द्वार, द्वारों का अंतर

च. लवण समुद्र और धातकी खण्ड का परस्पर स्पर्श

छ. लवण समुद्र के जीवों की धातकी खण्ड में और

धातकी खण्ड के जीवों की लवण समुद्र में उत्पत्ति

ज. 'लवण समुद्र' नाम होने का हेतु

झ. लवणाधिपति सुस्थित देव की स्थिति

ञ. लवण समुद्र की नित्यता

155 क. लवण समुद्र में चन्द्र संख्या

ख. लवण समुद्र में सूर्य संख्या

ग.	लवण समुद्र में नक्षत्र संख्या	157	तीस मुहूर्त में लवण समुद्र की वेला-वृद्धि व वेला-हानि
घ.	लवण समुद्र में महाग्रह संख्या	158	क. लवण शिखा का चक्रवाल-विष्कम्भ
ङ.	लवण समुद्र में तारा संख्या		ख. लवण समुद्र की बाह्याभ्यन्तर वेला वृद्धि को रोकने वाले नागदेवों की संख्या
क.	अष्टमी आदि तिथियों में लवण समुद्र की वेला वृद्धि		
ख.	लवण समुद्र में चार पाताल कलश, पाताल कलशों के मूल, मध्य और ऊपरी भाग का विष्कम्भ	159 (अ)	क. चार वेलंधर नागराज
ग.	पाताल कलशों में जीवों और पुद्गलों का चयापचय		ख. नागराजाओं के आवास पर्वत
घ.	पाताल कलशों के तीन भाग		ग. गोस्तूभ वेलंधर नागराज का गोस्तूप आवास का पर्वत का स्थान, मूल, मध्य और ऊपरी भाग का परिमाण, पद्मवर वेदिका, वनखण्ड
ङ.	निचले त्रिभाग में वायुकाय, मझले त्रिभाग में वायुकाय और अक्काय, ऊपर के त्रिभाग में अक्काय		घ. प्रासादावतंसक का परिमाण
च.	अनेक क्षुद्र पाताल कलशों के मूल, मध्य और ऊपरी भाग का परिमाण		ङ. गोस्तूप नाम होने का हेतु, गोस्तूप देव की स्थिति, देव परिवार, गोस्तूपा राजधानी का परिमाण
छ.	क्षुद्र पाताल कलशों में जीवों और पुद्गलों का चयापचय		(आ) क. शिवक वेलंधर नागराज के दक्कभास आवास पर्वत की ऊँचाई आदि
ज.	प्रत्येक पाताल कलश में एक देव, देव की स्थिति		ख. शिवकदेव, शिविका राजधानी
झ.	प्रत्येक पाताल कलश के तीनों भाग में वायु, पानी का अस्तित्व		ग. शंख वेलंधर नागराज का शंख आवास पर्वत का स्थान व ऊँचाई आदि
ञ.	सर्व पाताल कलशों की संख्या		घ. शंखदेव, शंखा राजधानी
ट.	पाताल कलशों में वायु-पानी का घट्टन, स्पंदन		ङ. मनःशील वेलंधर नागराज का उदकसीम आवास पर्वत का स्थान व ऊँचाई आदि
ठ.	वेलावृद्धि का कारण		

च. मनःशील देव, मनःशीला राजधानी	घ. गौतम द्वीप नाम का हेतु
छ. वेलंधर नागराजों के पर्वत कनक, अंकरत्न, रजत व स्फटिकमय	ड. सुस्थित देव, सुस्थिता राजधानी
ज. अनुवेलंधर नागराज के पर्वत रत्नमय	जम्बूद्वीप के चन्द्रद्वीपों का वर्णन
क. चार अनुवेलंधर नागराज	162(1) क. चन्द्रद्वीप का स्थान
ख. अनुवेलंधर के चार आवास पर्वत	ख. चन्द्रद्वीप की ऊँचाई
ग. कर्कोटक अनुवेलंधर नागराज का कर्कोटक आवास पर्वत का स्थान, परिमाण, कर्कोटक नाम का हेतु, कर्कोटक देव, कर्कोटका राजधानी	ग. चन्द्रद्वीप का आयाम-विष्कम्भ
घ. कर्दम अनुवेलंधर नागराज का कर्दम आवास पर्वत का स्थान, परिमाण, कर्दम देव, विद्युत्प्रभा राजधानी	घ. ज्योतिषी देवों का क्रीड़ा स्थल
ड. कैलाश आवास पर्वत (गोस्तूप के समान) कैलाश राजधानी नैऋत्य कोण में	ड. प्रासादावतंसक का आयाम-विष्कम्भ
च. अरूणप्रभ पर्वत (गोस्तूप के समान) वायव्य कोण में	च. मणिपीठिका का परिमाण
लवणाधिप सुस्थित देव के गौतम द्वीप का वर्णन	जम्बूद्वीपगत सूर्यद्वीपों का वर्णन
161 क. गौतम द्वीप का स्थान, आयाम-विष्कम्भ, परिधि, पद्मवर वेदिका, वनखण्ड, सुस्थित देव	क. सूर्य द्वीप का स्थान
ख. सुस्थित देव के क्रीड़ावास की ऊँचाई, विष्कम्भ आदि	ख. सूर्य द्वीप का आयाम-विष्कम्भ और परिधि
ग. मणिपीठिका का आयाम-विष्कम्भ और बाहल्य	ग. पद्मवर वेदिका, वनखण्ड, प्रासादावतंसक, मणिपीठिका
	घ. सूर्यद्वीप नाम का हेतु, सूर्यदेव, सूर्या राजधानी
	163 लवण समुद्र के आभ्यंतर चन्द्र-सूर्य और उनके चन्द्र सूर्य द्वीपों का वर्णन
	164 धातकीखण्ड के चन्द्र सूर्य और उनके चन्द्र सूर्य द्वीप का वर्णन

- 165 क. कालोद समुद्र के चन्द्र सूर्य और उनके चन्द्र सूर्य द्वीपों का वर्णन 170 ड. मेघ आदि के अभाव का हेतु
ख. पुष्करवर द्वीप के चन्द्र सूर्य और उनके चन्द्र सूर्य द्वीपों का वर्णन 171 क. लवण समुद्र के उद्बेध का परिमाण
ख. लवण समुद्र के उत्सेध का परिमाण
क. लवण समुद्र के गोतीर्थ का परिमाण
ख. गोतीर्थ विरहित क्षेत्र का परिमाण
ग. लवण समुद्र की उदकमाल का परिमाण
क. लवण समुद्र के संस्थान 172 ख. लवण समुद्र का चक्रवाल-विष्कम्भ
ग. लवण समुद्र की परिधि
घ. लवण समुद्र का उद्बेध
ड. लवण समुद्र का उत्सेध
च. लवण समुद्र का सर्वाग्र भाग
(आ) क. स्वयंभूरमण द्वीप में चन्द्र-सूर्य द्वीप 173 लवण समुद्र के पानी को जम्बूद्वीप में फैलने से रोकने वाले निमित्त के कारण-हेतु
- 168 ख. स्वयंभूरमण समुद्र में चन्द्र-सूर्य द्वीप
क. लवण समुद्र के वेलंधर मच्छ, कच्छप
ख. बाह्य समुद्रों में वेलंधरों का अभाव
क. लवण समुद्र में उच्छ्रोतोदक है
ख. बाह्य समुद्रों में प्रस्तोटोदक है
ग. लवण समुद्र में मेघ आदि का सद्भाव
घ. बाह्य समुद्रों में मेघ आदि का अभाव
- 169 धातकीखण्ड का वर्णन
174 क. धातकीखण्ड का संस्थान
ख. धातकीखण्ड का चक्रवाल-विष्कम्भ
ग. धातकीखण्ड का चक्रवाल-परिधि
घ. धातकीखण्ड की पद्मवरवेदिका और वनखण्ड
ड. धातकीखण्ड के चार द्वार

च. प्रत्येक द्वार का अंतर	ज. कालोद समुद्र और पुष्करवर द्वीप के जीवों की एक दूसरे में उत्पत्ति
छ. धातकीखण्ड और कालोद समुद्र का परस्पर स्पर्श	झ. 'कालोद समुद्र' नाम होने का हेतु
ज. धातकीखण्ड और कालोद समुद्र के जीवों की धातकीखण्ड और कालोद समुद्र में उत्पत्ति	ञ. काल-महाकाल देव स्थिति
झ. धातकीखण्ड नाम होने का हेतु	ट. कालोद समुद्र की नित्यता
ञ. धातकी-महाधातकी वृक्ष पर रहने वाले देवों की स्थिति	ठ. कालोद समुद्र में चन्द्र
ट. धातकीखण्ड की नित्यता	ड. कालोद समुद्र में सूर्य
ठ. धातकीखण्ड के चन्द्र	ढ. कालोद समुद्र में महाग्रह
ड. धातकीखण्ड के सूर्य	ण. कालोद समुद्र में नक्षत्र
ढ. धातकीखण्ड के महाग्रह	त. कालोद समुद्र में तारा
ण. धातकीखण्ड के नक्षत्र	
त. धातकीखण्ड के तारा	

पुष्करवर द्वीप का वर्णन

176 (अ) क. पुष्करवर द्वीप का संस्थान

- ख. पुष्करवर द्वीप का चक्रवाल-विष्कम्भ
 ग. पुष्करवर द्वीप की चक्रवाल-परिधि
 घ. पुष्करवर द्वीप की पद्मवर वेदिका, वनखण्ड
 ङ. पुष्करवर द्वीप के चार द्वार
 च. पुष्करवर द्वीप के प्रत्येक द्वार का अंतर
 छ. कालोद समुद्र और पुष्करवर द्वीप के प्रदेशों का परस्पर स्पर्श
 ज. कालोद समुद्र और पुष्करवर द्वीप के जीवों की एक-

कालोद समुद्र का वर्णन

175

- क. कालोद समुद्र का संस्थान
 ख. कालोद समुद्र का चक्रवाल-विष्कम्भ
 ग. कालोद समुद्र की चक्रवाल-परिधि
 घ. कालोद समुद्र की पद्मवर वेदिका, वन खण्ड
 ङ. कालोद समुद्र के चार द्वार
 च. कालोद समुद्र के प्रत्येक द्वार का अंतर
 छ. कालोद समुद्र और पुष्करवर द्वीप का परस्पर स्पर्श

दूसरे में उत्पत्ति

- झ. 'पुष्करवर द्वीप' नाम होने का हेतु
- ञ. पद्म और महापद्म वृक्ष
- ट. पद्म और पुंडरिक देवों की स्थिति
- ठ. पुष्करवर द्वीप की नित्यता
- ड. पुष्करवर द्वीप में चन्द्र
- ढ. पुष्करवर द्वीप में सूर्य
- ण. पुष्करवर द्वीप में महाग्रह
- त. पुष्करवर द्वीप में नक्षत्र
- थ. पुष्करवर द्वीप में तारा

मानुषोत्तर पर्वत का वर्णन

(आ) क. मानुषोत्तर पर्वत से पुष्करवर द्वीप के दो विभाग

- ख. आभ्यन्तर पुष्करार्ध का चक्रवाल-विष्कम्भ
- ग. आभ्यन्तर पुष्करार्ध की चक्रवाल परिधि
- घ. 'आभ्यन्तर पुष्करार्ध' नाम होने का हेतु
- ङ. आभ्यन्तर पुष्करार्ध में चन्द्र
- च. आभ्यन्तर पुष्करार्ध में सूर्य
- छ. आभ्यन्तर पुष्करार्ध में महाग्रह
- ज. आभ्यन्तर पुष्करार्ध में नक्षत्र
- झ. आभ्यन्तर पुष्करार्ध में तारा

समय क्षेत्र (मनुष्य क्षेत्र) का वर्णन

177 (अ) क. समय क्षेत्र (मनुष्य क्षेत्र) का आयाम-विष्कम्भ

- ख. समय क्षेत्र (मनुष्य क्षेत्र) की परिधि
- ग. 'मनुष्य क्षेत्र' नाम होने का हेतु
- घ. मनुष्य क्षेत्र में चन्द्र
- ङ. मनुष्य क्षेत्र में सूर्य
- च. मनुष्य क्षेत्र में महाग्रह
- छ. मनुष्य क्षेत्र में नक्षत्र
- ज. मनुष्य क्षेत्र में तारा
- (आ) क. मनुष्यलोक के अंदर और बाहर के तारा, ताराओं का

आकार, ताराओं की गति

- ख. मनुष्य लोक में चन्द्र-सूर्य के पिटक
- ग. मनुष्य लोक के प्रत्येक पिटक में चन्द्र-सूर्य
- घ. मनुष्य लोक में नक्षत्रों के पिटक
- ङ. मनुष्य लोक के प्रत्येक पिटक में नक्षत्र
- च. मनुष्य लोक में महाग्रहों के पिटक
- छ. मनुष्य लोक के प्रत्येक पिटक में ग्रह
- ज. मनुष्य लोक में चन्द्र-सूर्य की पक्तियाँ
- झ. मनुष्य लोक में प्रत्येक पक्ति में चन्द्र-सूर्य
- ञ. मनुष्य लोक में नक्षत्रों की पक्तियाँ

ट. मनुष्य लोक में प्रत्येक पंक्ति में नक्षत्र	त. मनुष्य क्षेत्र के बाहर चन्द्र के साथी ग्रह
ठ. मनुष्य लोक में ग्रहों की पंक्तियाँ	थ. मनुष्य क्षेत्र के बाहर सूर्य के साथी ग्रह
ड. मनुष्य लोक के प्रत्येक पंक्ति में ग्रह	178 (अ) क. मानुषोत्तर पर्वत की ऊँचाई
ढ. मनुष्य लोक में चन्द्र-सूर्य-ग्रह के चरमण्डल	ख. मानुषोत्तर पर्वत का उद्वेध
(इ) क. मनुष्य लोक में नक्षत्र और ताराओं के अवस्थित मण्डल	ग. मानुषोत्तर पर्वत के मूल का विष्कम्भ
ख. मनुष्य लोक में चन्द्र-सूर्य का मण्डल संक्रमण	घ. मानुषोत्तर पर्वत के मध्य का विष्कम्भ
ग. मनुष्य लोक में मनुष्यों के सुख-दुःख का निमित्त	ङ. मानुषोत्तर पर्वत के ऊपर का विष्कम्भ
चन्द्र-सूर्य	च. मानुषोत्तर पर्वत के अंदर की परिधि
घ. नक्षत्र और ग्रहों की गति	छ. मानुषोत्तर पर्वत के बाहर की परिधि
ङ. ताप क्षेत्र की हानि-वृद्धि	ज. मानुषोत्तर पर्वत के मध्य की परिधि
च. ताप क्षेत्र का संस्थान	झ. मानुषोत्तर पर्वत के ऊपर की परिधि
छ. चन्द्र की हानि-वृद्धि का कारण	ञ. मानुषोत्तर पर्वत की पद्मवर वेदिका, वन खण्ड
ज. मनुष्य क्षेत्र में चर चन्द्रादि	(आ) क. 'मानुषोत्तर पर्वत' नाम होने का हेतु,
झ. मनुष्य क्षेत्र से बाहर स्थिर चन्द्रादि	ख. मनुष्य लोक सीमा का अंकन
ञ. अढाई द्वीप में चन्द्र-सूर्य	ग. मनुष्य लोक सीमा के अनेक विकल्प
ट. मनुष्य क्षेत्र में चन्द्र-सूर्य का अंतर	क. मनुष्य क्षेत्र में चन्द्रादि ज्योतिषी देवों की मण्डलाकार गति
ठ. मनुष्य क्षेत्र में सूर्य से सूर्य का अंतर	ख. इन्द्र के अभाव में सामानिक देवों द्वारा शासन
ड. मनुष्य क्षेत्र के बाहर चन्द्र, सूर्य एवं उनका अन्तर	ग. इन्द्र का जघन्य-उत्कृष्ट विरहकाल
ढ. एक चन्द्र का परिवार	घ. मनुष्य क्षेत्र बाहर के चन्द्रादि ज्योतिषी देवों की एक
ण. मनुष्य क्षेत्र के बाहर स्थिर चन्द्र-सूर्य	

स्थान	स्थिति	181	क. क्षीरवर द्वीप का वर्णन
ड. इन्द्र के अभाव में सामानिक देवों द्वारा शासन			ख. क्षीरोद समुद्र का वर्णन
च. इन्द्र का जघन्य-उत्कृष्ट विरहकाल		182 (अ)	क. घृतवर द्वीप का वर्णन
पुष्करोद समुद्र का वर्णन			ख. घृतोद समुद्र का वर्णन
180 (अ) क. पुष्करोद समुद्र का संस्थान		(आ)	क. क्षोदवर द्वीप का वर्णन
ख. पुष्करोद समुद्र का चक्रवाल विष्कम्भ			ख. क्षोदोद समुद्र का वर्णन
ग. पुष्करोद समुद्र की चक्रवाल परिधि			नंदीश्वर द्वीप-समुद्र का वर्णन
घ. पुष्करोद समुद्र के चार द्वार		183 (क)	क. नंदीश्वर द्वीप का वर्णन
ड. प्रत्येक द्वार का अंतर			ख. नंदीश्वर द्वीप में चार अंजनक पर्वत
च. पुष्करवर द्वीप और पुष्करवर समुद्र का परस्पर स्पर्श			ग. प्रत्येक का आयाम-विष्कम्भ आदि
छ. दोनों के जीवों की एक-दूसरे में उत्पत्ति			घ. प्रत्येक पर्वत पर सिद्धायतन
ज. 'पुष्करोद समुद्र' नाम होने का हेतु		(ख)	द्वार वर्णन, चार देव, स्थिति, मुखमण्डप, प्रेक्षाघर मण्डप, अखाड़े, मणिपीठिकायें, सिंहासन, चैत्यस्तूप, जिन प्रतिमायें
झ. पुष्करोद समुद्र में चन्द्र-यावत्-तारा			(ग) पूर्व दिशा के अंजनक पर्वत पर चार नंदा पुष्करण्यां
वरूणवरादि द्वीप-समुद्र का वर्णन			(घ) दक्षिण दिशा के अंजनक पर्वत पर चार नंदा पुष्करण्यां
(आ) क. वरुणवर द्वीप का संस्थान			(ङ) पश्चिम दिशा के अंजनक पर्वत पर चार नंदा पुष्करण्यां
ख. आयाम-विष्कम्भ, परिधि, स्पर्श, जीवोत्पत्ति, नाम हेतु, पद्मवर वेदिका, वनखण्ड			(च) उत्तर दिशा के अंजनक पर्वत पर चार नंदा पुष्करण्यां
ग. 'वरूणवर द्वीप' नाम का हेतु			(छ) देवों द्वारा पर्व तिथियों में व जन्म कल्याणक आदि कल्याणकों में अष्टाहिका महोत्सव
घ. वरुणवर द्वीप में चन्द्र-यावत्-तारा			
(इ) वरुणोद समुद्र का वर्णन			

(ज.) नंदीश्वर द्वीप में पल्योपम की स्थिति वाले दो महर्धिक देव

(झ.) 'नंदीश्वर द्वीप' नाम होने का हेतु

(ञ.) चन्द्र आदि संख्यात

184 नंदीश्वरोद समुद्र का वर्णन

अरूणादि द्वीप-समुद्र का वर्णन

185 (अ) अरुणद्वीप का वर्णन

(आ) क. अरुणोद समुद्र का वर्णन

ख. अरूणवर द्वीप का वर्णन

ग. अरूणवरोद समुद्र का वर्णन

घ. अरुणवरावभास द्वीप का वर्णन

ङ. अरुणावरावभास समुद्र का वर्णन

कुंडलादि द्वीप-समुद्र का वर्णन

क. कुंडलद्वीप का वर्णन

ख. कुंडलोद समुद्र का वर्णन

ग. कुंडलवर द्वीप का वर्णन

घ. कुंडलवरोद समुद्र का वर्णन

ङ. कुंडलवरावभास द्वीप का वर्णन

च. कुंडलवरावभास समुद्र का वर्णन

रूचकादि द्वीप-समुद्र का वर्णन

(इ) क. रूचक द्वीप का वर्णन

ख. रूचकोद समुद्र का वर्णन

ग. रूचकवर द्वीप का वर्णन

घ. रूचकवरोद समुद्र का वर्णन

ङ. रूचकवरावभास द्वीप का वर्णन

च. रूचकवरावभास समुद्र का वर्णन

हारादि द्वीप-समुद्र का वर्णन

क. हारद्वीप का वर्णन

ख. हार समुद्र का वर्णन

ग. हारवर द्वीप का वर्णन

घ. हारवरोद समुद्र का वर्णन

ङ. हारवरावभास द्वीप का वर्णन

च. हारवरावभास समुद्र का वर्णन

सूरादि द्वीप-समुद्र का वर्णन

क. सूर्य द्वीप का वर्णन

ख. सूर्य समुद्र का वर्णन

ग. सूर्यवर द्वीप का वर्णन

घ. सूर्यवरोद समुद्र का वर्णन

ङ. सूर्यवरावभास द्वीप का वर्णन

च. सूर्यवरावभासोद समुद्र का वर्णन

देव-यावत्-स्वयंभूमण द्वीप-समुद्र का वर्णन

(ई)	क. देवद्वीप का वर्णन ख. देवोद समुद्र का वर्णन ग. स्वयंभूरमण द्वीप का वर्णन घ. स्वयंभूरमण समुद्र का वर्णन	घ. कालोद समुद्र में मत्स्यों की कुलकोटी ङ. स्वयंभूरमण समुद्र में मत्स्यों की कुलकोटी च. लवण समुद्र में मत्स्यों की जघन्य-उत्कृष्ट अवगाहना छ. कालोद समुद्र में मत्स्यों की जघन्य-उत्कृष्ट अवगाहना
186 (अ)	एक नाम के द्वीप-समुद्रों का संख्या परिमाण	ज. स्वयंभूरमण समुद्र में मत्स्यों की जघन्य-उत्कृष्ट अवगाहना
समुद्रों के उदकों का आस्वाद		
(आ)	क. लवण समुद्र के पानी का आस्वाद ख. कालोद समुद्र के पानी का आस्वाद ग. पुष्करोद समुद्र के पानी का आस्वाद घ. वरुणोद समुद्र के पानी का आस्वाद ङ. क्षीरोद समुद्र के पानी का आस्वाद च. घृतोद समुद्र के पानी का आस्वाद छ. क्षोदोद समुद्र के पानी का आस्वाद ज. शेष समुद्र के पानी का आस्वाद झ. प्रत्येक रस वाले चार समुद्र ञ. उदक रस वाले तीन समुद्र ट. शेष समुद्र इक्षुरस वाले	क. नाम की अपेक्षा द्वीप-समुद्र ख. उद्धार समय की अपेक्षा द्वीप-समुद्र ग. द्वीप-समुद्रों का पृथ्वी परिणाम-यावत्-पुद्गल परिणाम घ. सर्वद्वीप समुद्रों में सर्व जीवों की उत्पत्ति
187	क. बहुत मच्छ-कच्छ वाले तीन समुद्र ख. अल्प मच्छ-कच्छ वाले शेष समुद्र ग. लवण समुद्र में मत्स्यों की कुलकोटी	इन्द्रियों के विषय क. पाँच इन्द्रियों के विषय व उनका पुद्गल परिणाम ख. श्रोत्रेन्द्रिय के दो विषय-यावत्-स्पर्शेन्द्रिय के दो विषय ग. सुशब्द का दुःशब्द रूप में परिणमन-यावत्-सुस्पर्श का दुःस्पर्श रूप में परिणमन क. देवता की दिव्य शक्ति ख. देवता की दिव्य गति ग. बाह्य पुद्गलों के ग्रहण से ही विकुर्वणा का होना घ. सूक्ष्म देव वैक्रिय को छद्मस्थ द्वारा न देख सकना

- 191
- इ. बालक का छेदन-भेदन किये बिना बालक का ह्रस्व-दीर्घकरण सामर्थ्य
- ज्योतिष्क उद्देशक
- क. चन्द्र सूर्यो के नीचे और ऊपर ताराओं का अस्तित्व
- ख. चन्द्र-सूर्य व ताराओं के हीन और बड़ा होने का क्या कारण?
- ग. एक-एक चन्द्र-सूर्य, ग्रह, नक्षत्र, तारा का परिवार परिमाण
- 192
- क. जम्बूद्वीप के मेरु से ज्योतिषी देवों के गति क्षेत्र का अंतर
- ख. लोकांत से ज्योतिषी देवों के गति क्षेत्र का अंतर
- ग. रत्नप्रभा के ऊपरी भाग से ताराओं का अंतर
- घ. रत्नप्रभा के ऊपरी भाग से सूर्य विमान का अंतर
- ङ. रत्नप्रभा के ऊपरी भाग से चन्द्र विमान का अंतर
- च. रत्नप्रभा के ऊपरी भाग से सर्वोपरि तारे का अंतर
- छ. अधोवर्ती तारे से सूर्य विमान का अंतर
- ज. अधोवर्ती तारे से चन्द्र विमान का अंतर
- झ. अधोवर्ती तारे से सर्वोपरि तारे का अंतर
- ञ. सूर्य विमान से चन्द्र विमान की दूरी
- ट. सूर्य विमान से सर्वोपरि तारा विमान की दूरी
- 193
- क. चन्द्र विमान-यावत्-तारा विमान का संस्थान
- ख. चन्द्र विमान-यावत्-तारा विमानों का आयाम-विष्कम्भ, परिधि और बाहल्य
- 194
1. चन्द्र विमान का परिवहन करने वाले सोलह हजार देव
- अ. चार हजार सिंह रूपधारी देव एवं उनका विशद वर्णन
- आ. चार हजार हाथी रूपधारी देव एवं उनका विशद वर्णन
- इ. चार हजार वृषभ रूपधारी देव एवं उनका विशद वर्णन
- ई. चार हजार अश्व रूपधारी देव एवं उनका विशद वर्णन
- उ-2. सूर्य विमान का परिवहन करने वाले देवों की संख्या
3. ग्रह विमानों का परिवहन करने वाले देवों की संख्या

4. नक्षत्र विमानों का परिवहन करने वाले देवों की संख्या	शक्ति, ग्रह देव द्वारा जिन अस्थियों का सम्मान
5. तारा विमानों का परिवहन करने वाले देवों की संख्या	ड. नक्षत्रों और ताराओं का ग्रहों के समान वर्णन क. चन्द्र विमान में देवों की स्थिति-यावत्-तारा विमानों में देवों की स्थिति
195 क. चन्द्रादि की एक-दूसरे से शीघ्र गति ख. ताराओं से चन्द्र एक-दूसरे से महर्धिक	ख. चन्द्रादि का अल्प-बहुत्व
196 (अ) क. जम्बूद्वीप में एक तारा से दूसरे तारे का अंतर ख. चन्द्र की चार अग्रमहिषियाँ	प्रथम वैमानिक देव उद्देशक वैमानिक देवों का वर्णन
(आ) क. चन्द्र-चन्द्र नामक सिंहासन पर दिव्य भोग भोगने में असमर्थ	198 क. शक्रेन्द्र की तीन परिषद् 199 (अ) ख. परिषदों के देव-देवियों की संख्या ग. परिषदों के देव-देवियों की स्थिति
ख. सुधर्मा सभा के माणवक चैत्यस्तम्भ में स्थित जिन अस्थियों की चन्द्र देव द्वारा अर्चना	(आ) क. ईशानेन्द्र की तीन परिषद् ख. परिषदों के देव-देवियों की संख्या ग. परिषदों के देव-देवियों की स्थिति
ग. ज्योतिषराज चन्द्र देव-देवियों के साथ शब्दों से भोगपभोग	(इ) क. सनकुमारेन्द्र की तीन परिषद् ख. परिषदों के देवों की संख्या ग. परिषदों के देवों की स्थिति
घ. मैथुन बुद्धि से अन्तःपुर के साथ भोग भोगने में असमर्थ	घ. माहेन्द्र की तीन परिषद् ड. परिषदों के देवों की संख्या च. परिषदों के देवों की स्थिति
(इ) क. सूर्य की अग्रमहिषियाँ ख. अग्रमहिषियों की विकुर्वणा शक्ति ग. सूर्य देव द्वारा जिन अस्थियों का सम्मान घ. ग्रहों की अग्रमहिषियाँ, अग्रमहिषियों की विकुर्वणा	(ई) क. ब्रह्मेन्द्र, लन्तेकेन्द्र, महाशुक्रेन्द्र, सहस्रारेन्द्र की तीन-

तीन परिषद्

ख. परिषदों के देवों की संख्या

ग. परिषदों के देवों की स्थिति

199(उ) क. आणत-पाणत व आरण-अच्युत देवों की तीन-तीन

परिषद्

ख. परिषदों के देवों की संख्या

ग. परिषदों के देवों की स्थिति

घ. अहमेन्द्र ग्रैवेयक देवों का वर्णन

ङ. अहमेन्द्र अनुत्तर देवों का वर्णन

द्वितीय वैमानिक देव उद्देशक

200 क. सौधर्म-ईशानकल्प के विमानों का आधार

ख. सनत्कुमार-माहेन्द्र-ब्रह्मलोककल्प के विमानों का

आधार

ग. लांतक-यावत्-सहस्रारकल्प के विमानों का आधार

घ. आनत-यावत्-अच्युतकल्प के विमानों का आधार

ङ. ग्रैवेयक-यावत्-अनुत्तरकल्प के विमानों का आधार

201 (अ) क. सौधर्म-यावत्-अनुत्तर विमान पृथ्वी का भिन्न-भिन्न

बाहल्य

ख. सौधर्म-यावत्-अनुत्तर विमानों की भिन्न-भिन्न ऊँचाई

(आ) क. सौधर्म-यावत्-अनुत्तर विमानों का भिन्न-भिन्न संस्थान

ख. सौधर्म-यावत्-अनुत्तर विमानों का भिन्न-भिन्न आयाम-विष्कम्भ और परिधि

ग. सौधर्म-यावत्-अनुत्तर विमानों के भिन्न-भिन्न वर्ण, प्रभा, गंध और स्पर्श

(इ) क. सौधर्म-ईशान कल्प के विमानों की विशालता

ख. सर्व विमानों की पौद्गलिक रचना

ग. सर्व विमानों में जीवों और पुद्गलों का चयोपचय

घ. सर्व विमानों की नित्यता

ङ. सर्व विमानों में जीवों की उत्पत्ति का भिन्न-भिन्न क्रम

च. सर्व विमानों का जीवों से सर्वथा रिक्त न होना

(ई) क. सौधर्म-यावत्-अनुत्तर देवों की भिन्न-भिन्न अवगाहना

ख. ग्रैवेयक और अनुत्तर देवों का भव धारणीय शरीर, उत्तर वैक्रिया नहीं

ग. सौधर्म-यावत्-अनुत्तर देवों के संघयण का अभाव-पुद्गलों का शुभ परिणमन

घ. सौधर्म-यावत्-अनुत्तर देवों का संस्थान

ङ. सौधर्म-यावत्-अनुत्तर देवों के शरीरों का भिन्न-भिन्न

वर्ण, गंध, स्पर्श

च. वैमानिक देवों के श्वासोच्छ्वास के पुद्गल

छ.	वैमानिक देवों के आहार के पुद्गल	घ.	सर्व देवों की जघन्य-उत्कृष्ट स्थिति
ज.	वैमानिक देवों के लेश्या	ड.	नैरयिकों का जघन्य-उत्कृष्ट संस्थिति काल
झ.	वैमानिक देवों की दृष्टियां	च.	तिर्यचों का जघन्य-उत्कृष्ट संस्थिति काल
ञ.	वैमानिक देवों में ज्ञान-अज्ञान	छ.	मनुष्यों का जघन्य-उत्कृष्ट संस्थिति काल
ट.	वैमानिक देवों में योग-उपयोग	ज.	देवों का जघन्य-उत्कृष्ट संस्थिति काल
202	वैमानिक देवों के अवधिज्ञान की भिन्न-भिन्न अवधि	झ.	नैरयिक, मनुष्य और देवों का जघन्य-उत्कृष्ट अंतर काल
203	क. वैमानिक देवों के भिन्न-भिन्न समुदायात	ज.	तिर्यचों का जघन्य-उत्कृष्ट अंतर काल
	ख. वैमानिक देवों में क्षुधा-पिपासा वेदन का अभाव	ट.	नैरयिक, तिर्यच, मनुष्य और देवों का अल्प-बहुत्व
	ग. वैमानिक देवों की भिन्न-भिन्न प्रकार की वैक्रिय शक्ति	चतुर्थ पंचविध जीव प्रतिपत्ति	
	घ. वैमानिक देवों का साता वेदन	क.	संसार स्थित जीव पाँच प्रकार के
	ड.	ख.	एकेन्द्रिय-यावत्-पंचेन्द्रिय दो-दो प्रकार के
	महाप्रभावशाली	ग.	पर्याप्त एकेन्द्रिय-यावत्-पंचेन्द्रिय की स्थिति
204	क. वैमानिक देव-देवियों की वेशभूषा	घ.	अपर्याप्त एकेन्द्रिय-यावत्-पंचेन्द्रिय की स्थिति
	ख. वैमानिक देवों के काम भोग	क.	एकेन्द्रिय-यावत्-पंचेन्द्रियों की जघन्य-उत्कृष्ट स्थिति
	ग. वैमानिक देवों की भिन्न-भिन्न स्थिति	ख.	एकेन्द्रिय-यावत्-पंचेन्द्रियों का भिन्न-भिन्न जघन्य-उत्कृष्ट संस्थिति काल
	घ. वैमानिक देवों की भिन्न-भिन्न गति	ग.	एकेन्द्रिय-यावत्-पंचेन्द्रियों का भिन्न-भिन्न जघन्य-उत्कृष्ट अंतर काल
205	सर्व विमानों में षट्काय रूप में सर्वजीवों की उत्पत्ति		
206	क. सर्व नैरयिकों की जघन्य-उत्कृष्ट स्थिति		
	ख. सर्व तिर्यचों की जघन्य-उत्कृष्ट स्थिति		
	ग. सर्व मनुष्यों की जघन्य-उत्कृष्ट स्थिति		

209 एकेन्द्रिय-यावत्-पंचेन्द्रियों का अल्प-बहुत्व

पंचम षड्विध जीव प्रतिपत्ति

210 क. संसार स्थित जीव छह प्रकार के

ख. पृथ्वीकाय-यावत्-त्रसकाय प्रत्येक के दो-दो भेद

211 पृथ्वीकायिक-यावत्-त्रसकायिक जीवों की भिन्न-भिन्न स्थिति

212 क. षट्कायिक जीवों का भिन्न-भिन्न संस्थिति काल

ख. षट्कायिक जीवों का भिन्न-भिन्न अंतर काल

213 षट्कायिक जीवों का अल्प बहुत्व

214 सूक्ष्म षट्कायिक जीवों की स्थिति

215 सूक्ष्म षट्कायिक जीवों का संस्थिति काल

216 सूक्ष्म षट्कायिक जीवों का अंतर काल

217 सूक्ष्म षट्कायिक जीवों का अल्प-बहुत्व

218 बादर षट्कायिक जीवों की स्थिति

219 बादर षट्कायिक जीवों का संस्थिति काल

220 बादर षट्कायिक जीवों का अंतर काल

221 (अ) बादर षट्कायिक जीवों का अल्प-बहुत्व

(आ) सूक्ष्म-बादरों का समुदित अल्पबहुत्व

निगोद वर्णन

222 क. निगोद दो प्रकार के

ख. निगोदाश्रय दो प्रकार के

ग. सूक्ष्म निगोदाश्रय दो प्रकार के

घ. बादर निगोदाश्रय दो प्रकार के

ङ. निगोद जीव दो प्रकार के

च. सूक्ष्म निगोद जीव दो प्रकार के

छ. बादर निगोद जीव दो प्रकार के

क. द्रव्य-प्रदेश की अपेक्षा निगोद

ख. पर्याप्त-अपर्याप्त निगोद

ग. अनन्त-सूक्ष्म निगोद

घ. पर्याप्त-अपर्याप्त सूक्ष्म निगोद

ङ. बादर निगोद पूर्ववत्

च. पर्याप्त-अपर्याप्त बादर निगोद

छ. निगोद जीव पूर्ववत्

224(अ-आ) निगोदों का अल्प-बहुत्व

षष्ठा सप्तविध जीव-प्रतिपत्ति

225 क. संसार स्थित नैरयिक आदि जीव सात प्रकार के

ख. सात प्रकार के संसारी जीवों की स्थिति

ग. सात प्रकार के संसारी जीवों का संस्थिति काल

घ. सात प्रकार के संसारी जीवों का अंतर काल

ङ. सात प्रकार के संसारी जीवों का अल्प-बहुत्व

सप्तमा अष्टविध जीव-प्रतिपत्ति

- 226 क. संसार स्थित प्रथम समय नैरधिक आदि जीव आठ प्रकार के
- ख. आठ प्रकार के संसारी जीवों की स्थिति
- ग. आठ प्रकार के संसारी जीवों का संस्थिति काल
- क. आठ प्रकार के संसारी जीवों का अंतर काल
- ख. आठ प्रकार के संसारी जीवों का अल्प-बहुत्व

अष्टमा नवविध जीव-प्रतिपत्ति

- 228 क. संसार स्थित पृथ्वीकाय-यावत्-पंचेन्द्रिय जीव नौ प्रकार के
- ख. नौ प्रकार के संसारी जीवों की स्थिति
- ग. नौ प्रकार के संसारी जीवों का संस्थिति काल
- घ. नौ प्रकार के संसारी जीवों का अंतर काल
- ङ. नौ प्रकार के संसारी जीवों का अल्प-बहुत्व

नवमा दसविध जीव-प्रतिपत्ति

- 229 क. संसार स्थित प्रथम समय एकेन्द्रिय आदि जीव दस प्रकार के
- ख. दस प्रकार के संसारी जीवों की स्थिति
- ग. दस प्रकार के संसारी जीवों का संस्थिति काल

- 230 क. दस प्रकार के संसारी जीवों का अंतर काल

- ख. दस प्रकार के संसारी जीवों का अल्प-बहुत्व

द्विविध सर्वजीव

- 231 क. द्विविध सर्व जीवों का संस्थिति काल

- ख. असिद्ध जीव दो प्रकार के

- ग. द्विविध सर्व जीवों का अंतर काल

- घ. द्विविध सर्व जीवों का अल्प-बहुत्व

- क. द्विविध सर्वजीव-सेन्द्रिय, अनिन्द्रिय

- ख. द्विविध सर्वजीवों का संस्थिति काल

- ग. द्विविध सर्वजीवों का अंतर काल

- घ. द्विविध सर्वजीवों का अल्प-बहुत्व

- ङ. द्विविध सर्वजीव सकाधिक, अकाधिक पूर्ववत्

- च. द्विविध सर्वजीव-सवेदक, अवेदक

- छ. सवेदक तीन प्रकार के

- ज. सवेदकों का संस्थिति काल

- झ. अवेदक दो प्रकार के

- ञ. सवेदकों का अंतर काल

- ट. अवेदकों का अंतर काल

- ठ. सवेदक-अवेदकों का अल्प-बहुत्व

- ड. द्विविध सर्वजीव सलेश्य, अलेश्य

233	क. द्विविध सर्वजीव ज्ञानी, अज्ञानी ख. ज्ञानी दो प्रकार के-सादि अपर्यवसित व सादि सपर्यवसित ग. दो प्रकार के ज्ञानियों का संस्थिति काल घ. अज्ञानियों का संस्थिति काल ङ. ज्ञानियों का अंतर काल च. अज्ञानियों का अंतर काल छ. ज्ञानी-अज्ञानी दोनों का अल्प-बहुत्व ज. द्विविध सर्वजीव-साकारोपयोग, अनाकारोपयोग झ. द्विविध सर्वजीवों का संस्थिति काल ञ. द्विविध सर्वजीवों का अंतर काल ट. द्विविध सर्वजीवों का अल्प-बहुत्व क. द्विविध सर्वजीव-आहारक, अनाहारक ख. आहारक दो प्रकार के ग. छद्मस्थ काल कितने प्रकार का घ. केवली आहारक कितने समय का ङ. अनाहारक काल कितने समय का च. छद्मस्थ अनाहारक कितने काल का छ. सिद्ध केवली अनाहारक कितने काल का ज. भवस्थ केवली अनाहारक कितने प्रकार का	झ. सयोगी भवस्थ केवली कितने समय का ञ. छद्मस्थ आहारक का अन्तर ट. सिद्ध केवली अनाहारक का अन्तर ठ. अयोगी भवस्थ केवली का अन्तर ड. आहारक-अनाहारक का अल्प बहुत्व क. द्विविध सर्वजीव-सभाषक अभाषक ख. द्विविध सर्व जीवों का संस्थिति काल ग. भाषक-अभाषक का अन्तर घ. भाषक-अभाषक का अल्प बहुत्व ङ. द्विविध सर्वजीव-सशरीर, अशरीर च. अशरीर की काल स्थिति, अन्तर, अल्पबहुत्व सिद्धों के समान छ. सशरीर की काल स्थिति आदि असिद्धों के समान क. द्विविध सर्वजीव-चरम व अचरम ख. चरम अनादि अपर्यवसित ग. अचरम दो प्रकार का घ. चरम-अचरम अन्तर रहित ङ. चरम-अचरम का अल्पबहुत्व	235
234		त्रिविध सर्वजीव क. त्रिविध सर्वजीव-1 सम्यग्दृष्टि, 2 मिथ्यादृष्टि,	236
237			

3 सम्यग्मिथ्या दृष्टि			
ख. सम्यग्दृष्टि के दो प्रकार		झ. तीनों का अंतर	
ग. मिथ्यादृष्टि के तीन प्रकार	239	ज. तीनों का अल्पबहुत्व	
घ. सम्यग्मिथ्या दृष्टि का जघन्य व उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त		क. त्रिविध सर्व जीव-1 पर्याप्तक, 2 अपर्याप्तक, 3 नो पर्याप्तक-नो अपर्याप्तक	
ङ. सम्यग्दृष्टि व मिथ्यादृष्टि में अंतर अभाव		ख. पर्याप्तक की कार्यस्थिति	
च. सम्यग्मिथ्यादृष्टि का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त व उत्कृष्ट अंतर अनंतकाल		ग. अपर्याप्तक की कार्यस्थिति	
		घ. नो पर्याप्तक - नो अपर्याप्तक की कार्यस्थिति	
छ. त्रिविध सर्वजीवों का अल्पबहुत्व		ङ. तीनों का अंतर	
238 क. त्रिविध सर्वजीव-1 परित्त, 2 अपरित्त, 3 नो परित्त-नो अपरित्त	240	च. तीनों का अल्पबहुत्व	
		क. त्रिविध सर्वजीव-1 सूक्ष्म, 2 बादर, 3 नो सूक्ष्म-नो बादर	
ख. परित्त के दो प्रकार		ख. सूक्ष्म की कार्यस्थिति	
ग. काय परित्त जघन्य अंतर्मुहूर्त, उत्कृष्ट-यावत्-असंख्येय लोक		ग. बादर की कार्यस्थिति	
घ. संसार परित्त जघन्य अंतर्मुहूर्त, उत्कृष्ट-यावत्-अपार्धपुद्गल परावर्तन		घ. नोसूक्ष्म-नो बादर की कार्यस्थिति	
ङ. अपरित्त दो प्रकार का		ङ. तीनों का अंतर	
च. काय अपरित्त जघन्य अन्तर्मुहूर्त, उत्कृष्ट अनंतकाल	241	च. तीनों का अल्पबहुत्व	
छ. संसार अपरित्त दो प्रकार का		क. त्रिविध सर्वजीव-1 संज्ञी, 2 असंज्ञी, 3 नो संज्ञी-नो असंज्ञी	
ज. नो परित्त-नो अपरित्त सादि अपर्यवसित व भेद-प्रभेद		ख. संज्ञी की कार्यस्थिति	
		ग. असंज्ञी की कार्यस्थिति	

242	घ. नो संज्ञी - नो असंज्ञी की कायस्थिति ङ. तीनों का अंतर च. तीनों का अल्पबहुत्व क. त्रिविध सर्वजीव- 1 भवसिद्धिक, 2 अभवसिद्धिक, 3 नो भवसिद्धिक-नो अभवसिद्धिक	ख. 3 नपुंसकवेदक, 4 अवेदक चारों की कायस्थिति ग. चारों का अंतर घ. चारों का अल्पबहुत्व क. सर्व जीव चार प्रकार के- 1 चक्षुदर्शनी, 2 अचक्षुदर्शनी, 3 अवधिदर्शनी, 4 केवलदर्शनी
243	ख. तीनों की कायस्थिति ग. तीनों का अंतर घ. तीनों का अल्पबहुत्व क. त्रिविध सर्व जीव- 1 त्रस, 2 स्थावर, 3 नो त्रस-नो स्थावर	ख. चारों की कायस्थिति ग. चारों का अंतर घ. चारों का अल्पबहुत्व क. सर्व जीव चार प्रकार के- 1 संयत, 2 असंयत, 3 संयता-संयत, 4 नो संयत-नो असंयत- नो संयता-संयत
चतुर्विध सर्वजीव		
244	क. सर्व जीव चार प्रकार के- 1 मनयोगी, 2 वचनयोगी, 3 काययोगी, 4 अयोगी ख. चारों की कायस्थिति ग. चारों का अंतर घ. चारों का अल्पबहुत्व	ख. चारों की कायस्थिति ग. चारों का अंतर घ. चारों का अल्पबहुत्व
245	क. सर्व जीव चार प्रकार के- 1 स्त्रीवेदक, 2 पुरुषवेदक,	क. सर्व जीव पाँच प्रकार के- 1 क्रोध कषायी, 2 मान कषायी, 3 माया कषायी, 4 लोभ कषायी, 5 अकषायी ख. पाँचों की कायस्थिति

पंचविध सर्वजीव

248 क. सर्व जीव पाँच प्रकार के- 1 क्रोध कषायी, 2 मान

कषायी, 3 माया कषायी, 4 लोभ कषायी,

5 अकषायी

ख. पाँचों की कायस्थिति

सप्तविध सर्वजीव	
ग. पाँचों का अंतर	क. सर्व जीव सात प्रकार के- 1 पृथ्वीकायिक,
घ. पाँचों का अल्पबहुत्व	2 अप्कायिक, 3 तेजस्कायिक, 4 वायुकायिक,
क. सर्व जीव पाँच प्रकार के- 1 नैरयिक,	5 वनस्पतिकायिक, 6 त्रसकायिक, 7 अकायिक
2 तिर्यक्प्रेयोनिक, 3 मनुष्य, 4 देव, 5 सिद्ध	ख. सातों की कार्यस्थिति पूर्ववत्
ख. पाँचों की कार्यस्थिति पूर्ववत्	ग. सातों का अंतर पूर्ववत्
ग. पाँचों का अंतर पूर्ववत्	घ. सातों का अल्पबहुत्व
घ. पाँचों का अल्पबहुत्व पूर्ववत्	
षड् विध सर्वजीव	
क. सर्व जीव छह प्रकार के- 1 आभिनिबोधिक ज्ञानी,	क. सर्वजीव सात प्रकार के- 1 कृष्णलेश्यी,
2 श्रुतज्ञानी, 3 अवधिज्ञानी, 4 मनःययायज्ञानी,	2 नीललेश्यी, 3 कापोतलेश्यी, 4 तेजोलेश्यी,
5 केवलज्ञानी, 6 अज्ञानी	5 पद्मलेश्यी, 6 शुक्ललेश्यी, 7 अलेश्यी
ख. छहों की कार्यस्थिति	ख. सातों की कार्यस्थिति
ग. छहों का अंतर	ग. सातों का अंतर
घ. छहों का अल्पबहुत्व	घ. सातों का अल्पबहुत्व
क. सर्व जीव छह प्रकार के- 1 औदारिक शरीर,	अष्टविध सर्वजीव
2 वैक्रिय शरीर, 3 आहारक शरीर, 4 तेजस् शरीर,	क. सर्वजीव आठ प्रकार के- 1 आभिनिबोधिक ज्ञानी,
5 कामण शरीर, 6 अशरीर	2 श्रुत ज्ञानी, 3 अवधि ज्ञानी, 4 मनःपर्य ज्ञानी,
ख. छहों की कार्यस्थिति	5 केवल ज्ञानी, 6 मति-अज्ञानी, 7 श्रुत-अज्ञानी,
ग. छहों का अंतर	8 विभंग ज्ञानी
घ. छहों का अल्पबहुत्व	ख. आठों की कार्यस्थिति

255	ग. आठों का अंतर घ. आठों का अल्पबहुत्व क. सर्वजीव आठ प्रकार के- 1 नैरयिक, 2 तिर्यग्योनिक, 3 तिर्यग्योनिकी, 4 मनुष्य, 5 मनुष्यनी, 6 देव, 7 देवी, 8 सिद्ध ख. आठों की कायस्थिति ग. आठों का अंतर घ. आठों का अल्पबहुत्व	ख. नव की कायस्थिति ग. नव का अंतर घ. नव का अल्पबहुत्व
		दसविध सर्वजीव
		258 क. सर्वजीव दस प्रकार के- 1 पृथ्विकायिक, 2 अप्कायिक, 3 तेजस्कायिक, 4 वायुकायिक, 5 वनस्पतिकायिक, 6 द्वीन्द्रिय, 7 त्रीन्द्रिय, 8 चतुरिन्द्रिय, 9 पंचेन्द्रिय, 10 अनिन्द्रिय
		ख. दस की कायस्थिति ग. दस का अंतर घ. दस का अल्पबहुत्व
		क. सर्वजीव दस प्रकार के- 1 प्रथम समय नैरयिक, 2 अप्रथम समय नैरयिक, 3 प्रथम समय तिर्यग्योनिक, 4 अप्रथम समय तिर्यग्योनिक, 5 प्रथम समय मनुष्य, 6 अप्रथम समय मनुष्य, 7 प्रथम समय देव, 8 अप्रथम समय देव, 9 प्रथम समय सिद्ध, 10 अप्रथम समय सिद्ध
		ख. दस की कायस्थिति ग. दस का अंतर घ. दस का अल्पबहुत्व

नवविध सर्वजीव

256 क. सर्वजीव नौ प्रकार के- 1 एकेन्द्रिय, 2 द्वीन्द्रिय,

3 त्रीन्द्रिय, 4 चतुरिन्द्रिय, 5 नैरयिक, 6 पंचेन्द्रिय

तिर्यग्योनिक, 7 मनुष्य, 8 देव, 9 सिद्ध

259

ख. नव की कायस्थिति

ग. नव का अंतर

घ. नव का अल्पबहुत्व

क. सर्वजीव नौ प्रकार के- 1 प्रथम समय नैरयिक,

2 अप्रथम समय नैरयिक, 3 प्रथम समय

तिर्यग्योनिक, 4 अप्रथम समय तिर्यग्योनिक,

5 प्रथम समय मनुष्य, 6 अप्रथम समय मनुष्य,

7 प्रथम समय देव, 8 अप्रथम समय देव, 9 सिद्ध

द्रव्यानुयोगमय प्रज्ञापना उपाङ्ग

अध्ययन	1	6	रूपी अजीव प्रज्ञापना के चार भेद
पद	36	7	रूपी अजीव प्रज्ञापना के संक्षेप में पाँच भेद
उद्देशक	44	8	1. वर्ण परिणत पुद्गलों के पाँच भेद
उपलब्ध मूल पाठ	7787 श्लोक प्रमाण		2. गंध परिणत पुद्गलों के दो भेद
गद्य सूत्र	614		3. रस परिणत पुद्गलों के पाँच भेद
पद्य सूत्र	195		4. स्पर्श परिणत पुद्गलों के आठ भेद
			5. संस्थान परिणत पुद्गलों के पाँच भेद
		9	1-5. वर्ण-परिणत पुद्गलों का गंध-रस-स्पर्श-संस्थान से सम्बन्ध
		10	1-2. गंध-परिणत पुद्गलों का गंध-रस-स्पर्श-संस्थान से सम्बन्ध
		11	1-5. रस-परिणत पुद्गलों का गंध-रस-स्पर्श-संस्थान से सम्बन्ध
		12	1-8. स्पर्श-परिणत पुद्गलों का गंध-रस-स्पर्श-संस्थान से सम्बन्ध
		13	1-5. संस्थान-परिणत पुद्गलों का गंध-रस-स्पर्श-संस्थान से सम्बन्ध
		14	जीव प्रज्ञापना के दो भेद
		15	असंसार समापन्नक अर्थात् मोक्ष प्राप्त जीवों के दो भेद
		16	अनन्तर सिद्ध अर्थात् वर्तमान समय में मोक्ष प्राप्त जीवों

15 प्रज्ञापना सूत्र विषय सूची

1	नमस्कार महामंत्र	
	क. महावीर वंदना	
	ख. जिन प्रज्ञप्त प्रज्ञापना	
	ग. प्रज्ञापना कथन प्रतिज्ञा-भ. महावीर द्वारा कथित वर्णन	
	श्यामाचार्य द्वारा गुंथित	
2	छत्तीस पदों के नामों की संग्रहणी गाथाएं	
	प्रथम प्रज्ञापना पद	
3	प्रज्ञापना के दो भेद	
4	अजीव प्रज्ञापना के दो भेद	
5	अरूपी अजीव प्रज्ञापना के दस भेद	

17	के पन्द्रह भेद	4-क. वर्ण-यावत्-स्पर्श प्राप्त अप्कायिक जीवों के हजारों भेद
(1) एकेन्द्रिय संसारी जीवों की प्रज्ञापना		ख. इन जीवों की योनियाँ
18	परंपर सिद्ध अर्थात् मोक्ष प्राप्त जीवों के अनेक भेद	ग. इन जीवों के आश्रित अनेक जीवों की उत्पत्ति
19	संसार स्थित जीवों के पाँच भेद	घ. एक जीव के साथ अनेक जीवों का अस्तित्व
20	एकेन्द्रिय संसारी जीवों के पाँच भेद	तेजस् कायिक जीवों के दो भेद
21	पृथ्वीकायिक जीवों के दो भेद	सूक्ष्म तेजस् कायिक जीवों के दो भेद
22	सूक्ष्म पृथ्वीकायिक जीवों के दो भेद	1. बादर तेजस्कायिक के अनेक भेद
23	बादर पृथ्वीकायिक जीवों के दो भेद	2-3. बादर तेजस्कायिक के संक्षेप में दो भेद
24	श्लक्ष्ण पृथ्वीकायिक जीवों के सात भेद	4-क. तेजस्कायिक जीवों के हजारों भेद
25	बादर पृथ्वीकायिक जीवों के अनेक भेदों की गाथाएं	ख. उनकी योनियाँ
	1-2. बादर पृथ्वीकायिक जीवों के संक्षेप में दो भेद	ग. अनेक जीवों की उत्पत्ति
	3-क. वर्ण-यावत्-स्पर्श प्राप्त पृथ्वीकायिक जीवों के हजारों भेद	घ. एक जीव के साथ अनेक जीवों का अस्तित्व
	ख. इन जीवों की योनियाँ	वायुकायिक जीवों के दो भेद
	ग. इन जीवों के आश्रित अनेक जीवों की उत्पत्ति	सूक्ष्म वायुकायिक जीवों के दो भेद
	घ. एक जीव के साथ अनेक जीवों का अस्तित्व	1. बादर वायुकायिक जीवों के अनेक भेद
26	अप्कायिक जीवों के दो भेद	2-3. बादर वायुकायिक के संक्षेप में दो भेद
27	सूक्ष्म अप्कायिक जीवों के दो भेद	4-क. वायु कायिक जीवों के हजारों भेद
28	1. बादर अप्कायिक जीवों के अनेक भेद	ख. उनकी योनियाँ
	2-3. बादर अप्कायिक के संक्षेप में दो भेद	ग. अनेक जीवों की उत्पत्ति

35	घ. एक जीव के साथ अनेक जीवों का अस्तित्व	49	हरित वनस्पति के अनेक भेदों की गाथाएं
36	वनस्पतिकायिक जीवों के दो भेद	50	औषधियों (धान) के अनेक भेद
37	सूक्ष्म वनस्पतिकायिक जीवों के दो भेद	51	जलरुह (जल में उत्पन्न होने वाली वनस्पति) के अनेक भेदों की गाथाएं
38	बादर वनस्पतिकायिक जीवों के दो भेद		
	प्रत्येक बादर वनस्पतिकायिक जीवों के बारह भेदों की गाथाएं	52	कुहण के अनेक भेद
39	वृक्ष के दो भेद	53	प्रत्येक शरीरी बादर वनस्पतिकायिक जीव की नाना प्रकार की आकृतियां
40	क. एकास्थिक वृक्ष के अनेक भेद	54(1-11)	साधारण बादर वनस्पतिकायिक जीवों के अनेक भेदों की गाथाएं
	ख. मूलकन्द, स्कन्धकंद, छाल, शाखा व कोपल में असंख्यात जीव		
	ग. प्रत्येक पत्ते में एक-एक जीव	55	1-11. अनेक कायिक जीवों के स्वरूप की गाथाएं
	घ. गुठली एकास्थिक		1. वनस्पतिकायिक जीवों के दो भेद
41	बहु बीज वाले वृक्ष के अनेक भेदों की गाथाएं		2. अपर्याप्तक जीव असंप्राप्त
42	गुच्छ के अनेक भेदों की गाथाएं		3. पर्याप्तक वनस्पति के हजारों भेद, उनकी योजनाएं,
43	गुल्म के अनेक भेदों की गाथाएं		अनन्त अपर्याप्तक जीव, साधारण व प्रत्येक वनस्पति विषयक गाथाएं
44	लता के अनेक भेदों की गाथाएं		
45	वस्त्रियों के अनेक भेदों की गाथाएं		
46	इक्षु आदि पर्ववाली वनस्पतियों के अनेक भेदों की गाथाएं	56	1. द्वीन्द्रिय जीवों का स्वरूप
47	तृण वनस्पतियों के अनेक भेदों की गाथाएं		2-क. द्वीन्द्रिय जीवों के संक्षेप में दो भेद
48	वल्लय वनस्पति के अनेक भेदों की गाथाएं		ख. द्वीन्द्रियों के सात लाख जाति योनि प्रमुख

(2,3,4,5) द्वीन्द्रिय-त्रीन्द्रिय-चतुरिन्द्रिय-पंचोन्द्रिय जीवों की

प्रज्ञापना

57	1. त्रीन्द्रिय जीवों का स्वरूप व अनेक भेद 2-क. त्रीन्द्रिय जीवों के संक्षेप में दो भेद ख. त्रीन्द्रिय जीवों की आठ लाख कुलकोटी		3. गर्भज जीव तीन प्रकार के 4. जलचर पंचेन्द्रिय तिर्यचों की साढ़े बारह लाख योनियां स्थलचरों के दो भेद चतुष्पद स्थलचरों के चार भेद एकक्षुर वालों के अनेक भेद दो क्षुर वालों के अनेक भेद गंडीपदों के अनेक भेद
58	1. चतुरिन्द्रिय जीवों के अनेक भेद 2-क. चतुरिन्द्रिय के संक्षेप में दो भेद ख. चतुरिन्द्रिय जीवों की नौ लाख कुलकोटी	69 70 71 72	
59	पंचेन्द्रिय जीवों के चार प्रकार	73	
(1) नैरयिक जीवों की प्रज्ञापना		74	सनखपदों (श्वापदों) के अनेक भेद
60	क. नैरयिकों के सात भेद ख. नैरयिकों के संक्षेप में दो भेद	75	1. स्थलचर जीवों के संक्षेप में दो भेद 2. स्थलचर सम्मूर्च्छिम जीव नपुंसक 3. गर्भजों के तीन भेद 4. स्थलचरों की दस लाख कुलकोटी परिसर्पों के दो भेद उरपरिसर्पों के चार भेद अही (सर्पों) के दो भेद दर्वीकरो (फन वाले सर्पों) के अनेक भेद मुकलियों (बिना फन वाले सर्पों) के अनेक भेद अजगरों का एक भेद क. आसालिक का स्वरूप व उत्पत्ति स्थान ख. आसालिक के शरीर का जघन्य-उत्कृष्ट प्रमाण
(2) पंचेन्द्रिय तिर्यचयोनिक जीवों की प्रज्ञापना			
61	पंचेन्द्रिय तिर्यचों के तीन भेद		
62	जलचर पंचेन्द्रिय तिर्यचों के पाँच भेद	76	
63	मत्स्यों के अनेक भेद	77	
64	कच्छपों के दो भेद	78	
65	ग्राहों के पाँच भेद	79	
66	मगरों के दो भेद	80	
67	सुसुमारों का एक भेद	81	
68	1. जलचर जीवों के संक्षेप में दो भेद 2. जलचर सम्मूर्च्छिम जीव नपुंसक	82	

	ग. आसालिक असंज्ञी, मिथ्यादृष्टि व अज्ञानी		ख. अढ़ाई द्वीप के बाहर अन्य द्वीप-समुद्र में स्थित वितत पक्षियों का एक भेद
83	घ. आसालिक का अंतर्मुहूर्त आयु क. महारोगों के अनेक भेद ख. महारोगों के शरीर का प्रमाण ग. महारोग की स्थल में उत्पत्ति तथा जल व स्थल में विचरण	90 91	1. खेचर पंचेन्द्रिय के संक्षेप में दो भेद 2. खेचर पंचेन्द्रिय सम्मूर्च्छिम व नपुंसक 3. खेचर पंचेन्द्रिय गर्भजों के तीन भेद 4-क. खेचरों की बारह लाख कुलकोटी
	घ. अढ़ाई द्वीप के बाहर द्वीप-समुद्रों में स्थित		ख. कुलकोटी की संग्रहणी गाथा
84	1. महारोगों के संक्षेप में दो भेद 2. महारोग सम्मूर्च्छिम व नपुंसक 3. महारोगों के गर्भजों के तीन भेद 4. उर परिसर्पों की दस लाख कुलकोटी		(3) मनुष्य जीवों की प्रज्ञापना
	1. भुज परिसर्पों के अनेक भेद 2. भुज परिसर्पों के संक्षेप में दो भेद 3. भुज परिसर्प सम्मूर्च्छिम व नपुंसक 4. भुज परिसर्प गर्भजों के तीन भेद 5. भुज परिसर्पों की नव लाख कुलकोटी	92 93	मनुष्यों के दो भेद क. सम्मूर्च्छिम मनुष्यों के चौदह उत्पत्ति स्थान ख. सम्मूर्च्छिम मनुष्यों की अवागहना ग. सम्मूर्च्छिम मनुष्य असंज्ञी, मिथ्यादृष्टि व अपर्याप्त आयु घ. सम्मूर्च्छिम मनुष्यों की आयु गर्भज मनुष्यों के तीन भेद अंतर्द्वीपज मनुष्यों के अष्टावीस भेद अकर्मभूमिज मनुष्यों के तीस भेद
85		94 95 96	1. कर्मभूमिज मनुष्यों के पन्द्रह भेद 2. कर्मभूमिज मनुष्यों के संक्षेप में दो भेद म्लेच्छ मनुष्यों के अनेक भेद
86	खेचरों के चार भेद	97	आर्यों के दो भेद
87	चर्म पक्षियों के अनेक भेद		
88	लोम पक्षियों के अनेक भेद	98	
89	क. समुद्रगक पक्षियों का एक भेद	99	

100	ऋद्धि प्राप्त आयों के छह भेद	115	क. स्वयं बुद्ध छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग दर्शनार्थों के दो भेद
101	अनृद्धि प्राप्त आयों के नौ भेद		
102	क्षेत्रार्थों के संक्षेप में साढ़े पच्चीस भेदों की गाथाएं		ख. स्वयंबुद्ध क्षीण कषाय वीतराग के वैकल्पिक दो भेद
103	जात्यार्थों के संक्षेप में छह भेद की गाथा	116	क. बुद्ध बोधित छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग दर्शनार्थों के दो भेद
104	कुलार्थों के संक्षेप में छह भेद		
105	कर्मार्थों के अनेक भेद		ख. बुद्ध बोधित छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग दर्शनार्थों के वैकल्पिक दो भेद
106	सिल्पार्थों के अनेक भेद		
107	क. भाषा आयों का स्वरूप	117	केवली क्षीण कषाय वीतराग दर्शनार्थों के दो भेद
108	ख. ब्राह्मी लिपि के अठारह भेद	118	क. सजोगी केवली क्षीण कषाय वीतराग दर्शनार्थों के दो भेद
109	ज्ञानार्थों के पाँच भेद		
110	दर्शनार्थों के दो भेद		ख. सजोगी केवली क्षीण कषाय वीतराग दर्शनार्थों के वैकल्पिक दो भेद
	क. सराग दर्शनार्थों के दस भेद		
	ख. सराग दर्शनार्थों के स्वरूप की गाथाएं	119	क. अजोगी केवली क्षीण कषाय वीतराग दर्शनार्थों के दो भेद
	ग. सराग दर्शन के आठ आचार की गाथा		
111	वीतराग दर्शनार्थों के दो भेद		ख. अजोगी केवली क्षीण कषाय वीतराग दर्शनार्थों के वैकल्पिक दो भेद
112	क. उपशांत कषाय वीतराग दर्शनार्थों के दो भेद	120	चारित्रार्थों के दो भेद
	ख. उपशांत कषाय वीतराग दर्शनार्थों के वैकल्पिक दो भेद	121	सराग चारित्रार्थों के दो भेद
113	क्षीण कषाय वीतराग दर्शनार्थों के दो भेद	122	क. सूक्ष्म संपराय सराग चारित्रार्थों के दो भेद
114	क्षद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग दर्शनार्थों के दो भेद		ख. सूक्ष्म संपराय सराग चारित्रार्थों के वैकल्पिक दो भेद

123	ग. सूक्ष्म संपराय सराग चारित्र्याँ के पुनः वैकल्पिक दो भेद	130	केवली क्षीण कषाय वीतराग चारित्र्याँ के दो भेद
	क. बादर संपराय सराग चारित्र्याँ के दो भेद	131	क. सजोगी केवली क्षीण कषाय वीतराग चारित्र्याँ के दो भेद
	ख. बादर संपराय सराग चारित्र्याँ के वैकल्पिक दो भेद		ख. सजोगी केवली क्षीण कषाय वीतराग चारित्र्याँ के वैकल्पिक दो भेद
	ग. बादर संपराय सराग चारित्र्याँ के पुनः वैकल्पिक दो भेद	132	क. अजोगी केवली क्षीण कषाय वीतराग चारित्र्याँ के दो भेद
124	वीतराग चारित्र्याँ के दो भेद		ख. अजोगी केवली क्षीण कषाय वीतराग चारित्र्याँ के वैकल्पिक दो भेद
125	क. उपशांत कषाय वीतराग चारित्र्याँ के दो भेद		प्रकारान्तर से चारित्र्याँ के क्षीण कषाय वीतराग चारित्र्याँ के पाँच भेद
	ख. उपशांत कषाय वीतराग चारित्र्याँ के वैकल्पिक दो भेद	133	सामायिक चारित्र्याँ के दो भेद
126	क. क्षीण कषाय वीतराग चारित्र्याँ के दो भेद	134	छेदोपस्थापनीय चारित्र्याँ के दो भेद
127	छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग चारित्र्याँ के दो भेद	135	परिहार विशुद्धि चारित्र्याँ के दो भेद
128	क. स्वयं बुद्ध छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग चारित्र्याँ के दो भेद	136	सूक्ष्म संपराय चारित्र्याँ के दो भेद
	ख. स्वयं बुद्ध छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग चारित्र्याँ के वैकल्पिक दो भेद	137	यथाख्यात चारित्र्याँ के दो भेद
129	क. बुद्ध बोधित छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग चारित्र्याँ के दो भेद	138	(4) चतुर्विध देवों की प्रज्ञापना
	ख. बुद्ध बोधित छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग चारित्र्याँ के दो भेद	139	देवताओं के चार भेद
		140	1. भवनवासी देवों के दस भेद
			2. भवनवासी देवों के संक्षेप में दो भेद

141	1. वाणव्यंतर देवों के आठ भेद		छ. स्वस्थान की अपेक्षा पृथ्वीकायिकों के स्थान
	2. वाणव्यंतर देवों के संक्षेप में दो भेद	149	क. अपर्याप्त बादर पृथ्वीकायिकों के स्थान
142	1. ज्योतिषिक देवों के पाँच भेद		ख. उत्पत्ति की अपेक्षा अपर्याप्त बादर पृथ्वीकायिकों के स्थान
143	2. ज्योतिषिक देवों के संक्षेप में दो भेद		
	वैमानिक देवों के दो भेद		ग. समुद्रघात की अपेक्षा अपर्याप्त बादर पृथ्वीकायिकों के स्थान
144	1. कल्पोपपन्न वैमानिक देवों के बारह भेद		के स्थान
	2. कल्पोपपन्नक वैमानिक देवों के संक्षेप में दो भेद		घ. स्वस्थान की अपेक्षा अपर्याप्त बादर पृथ्वीकायिकों के स्थान
145	कल्पातीत वैमानिक देवों के दो भेद		
146	1. ग्रैवेयक देवों के नौ भेद	150	पर्याप्त-अपर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकायिकों के स्थान
	2. ग्रैवेयक देवों के संक्षेप में दो भेद	151	क. पर्याप्त बादर अप्कायिकों के स्थान
147	1. अनुत्तरोपपातिक देवों के पाँच भेद		ख. अधोलोक में बादर अप्कायिकों के स्थान
	2. अनुत्तरोपपातिक देवों के संक्षेप में दो भेद		ग. ऊर्ध्वलोक में बादर अप्कायिकों के स्थान

द्वितीय स्थान पद

तिर्यचों के स्थान

148	क. आठ पृथ्वियों में पर्याप्त पृथ्वीकायिकों के स्थान		छ. समुद्रघात की अपेक्षा अप्कायिकों के स्थान
	ख. अधोलोक में-पर्याप्त बादर पृथ्वीकायिकों के स्थान		छ. स्वस्थान की अपेक्षा अप्कायिकों के स्थान
	ग. ऊर्ध्वलोक में पर्याप्त बादर पृथ्वीकायिकों के स्थान	152	क. अपर्याप्त बादर अप्कायिकों के स्थान
	घ. तिर्यग्लोक में पर्याप्त बादर पृथ्वीकायिकों के स्थान		ख. उत्पत्ति की अपेक्षा अपर्याप्त बादर अप्कायिकों के स्थान
	ड. उत्पत्ति की अपेक्षा पृथ्वीकायिकों के स्थान		
	च. समुद्रघात की अपेक्षा पृथ्वीकायिकों के स्थान		ग. समुद्रघात की अपेक्षा अपर्याप्त बादर अप्कायिकों के स्थान

के स्थान		के स्थान	
घ.	स्वस्थान की अपेक्षा अपर्याप्त बादर अप्कायिकों के	घ.	स्वस्थान की अपेक्षा अपर्याप्त बादर तेजस्कायिकों के स्थान
153	पर्याप्त-अपर्याप्त सूक्ष्म अप्कायिकों के स्थान	156	पर्याप्त-अपर्याप्त सूक्ष्म तेजस्कायिकों के स्थान
154	क. पर्याप्त बादर तेजस्कायिकों के स्थान	157	क. पर्याप्त बादर वायुकायिकों के स्थान
	ख. निर्व्याघात की अपेक्षा पर्याप्त बादर तेजस्कायिकों के स्थान		ख. अधोलोक में पर्याप्त बादर वायुकायिकों के स्थान
	ग. व्याघात की अपेक्षा पर्याप्त बादर तेजस्कायिकों के स्थान		ग. ऊर्ध्वलोक में पर्याप्त बादर वायुकायिकों के स्थान
	घ. उत्पत्ति की अपेक्षा पर्याप्त बादर तेजस्कायिकों के स्थान		घ. तिर्यक्लोक में पर्याप्त बादर वायुकायिकों के स्थान
	ङ. समुद्घात की अपेक्षा पर्याप्त बादर तेजस्कायिकों के स्थान		ङ. उत्पत्ति की अपेक्षा बादर वायुकायिकों के स्थान
	च. स्वस्थान की अपेक्षा पर्याप्त बादर तेजस्कायिकों के स्थान		च. समुद्घात की अपेक्षा बादर वायुकायिकों के स्थान
	छ. उत्पत्ति की अपेक्षा अपर्याप्त बादर तेजस्कायिकों के स्थान		छ. स्वस्थान की अपेक्षा बादर वायुकायिकों के स्थान
	ज. समुद्घात की अपेक्षा अपर्याप्त बादर तेजस्कायिकों के स्थान		ज. अपर्याप्त बादर वायुकायिकों के स्थान
155	क. अपर्याप्त बादर तेजस्कायिकों के स्थान	158	ख. उत्पत्ति की अपेक्षा अपर्याप्त बादर वायुकायिकों के स्थान
	ख. उत्पत्ति की अपेक्षा अपर्याप्त बादर तेजस्कायिकों के स्थान		ग. समुद्घात की अपेक्षा अपर्याप्त बादर वायुकायिकों के स्थान
	ग. समुद्घात की अपेक्षा अपर्याप्त बादर तेजस्कायिकों के स्थान		घ. स्वस्थान की अपेक्षा अपर्याप्त बादर वायुकायिकों के स्थान
	ङ. अपर्याप्त बादर तेजस्कायिकों के स्थान		पर्याप्त-अपर्याप्त सूक्ष्म वायुकायिकों के स्थान
	च. समुद्घात की अपेक्षा अपर्याप्त बादर तेजस्कायिकों के स्थान		क. पर्याप्त बादर वनस्पतिकायिकों के स्थान
	छ. अपर्याप्त बादर वनस्पतिकायिकों के स्थान		ख. अधोलोक में पर्याप्त बादर वनस्पतिकायिकों के स्थान

ग.	ऊर्ध्वलोक में पर्याप्त बादर वनस्पतिकायिकों के स्थान		स्थान
घ.	तिर्यग्लोक में पर्याप्त बादर वनस्पतिकायिकों के स्थान		घ. स्वस्थान की अपेक्षा पर्याप्त-अपर्याप्त त्रीन्द्रियों के स्थान
ङ.	उत्पत्ति की अपेक्षा बादर वनस्पतिकायिकों के स्थान		स्थान
च.	समुद्घात की अपेक्षा बादर वनस्पतिकायिकों के स्थान	165	क. तीन लोक में पर्याप्त-अपर्याप्त चतुरिन्द्रियों के स्थान
छ.	स्वस्थान की अपेक्षा बादर वनस्पतिकायिकों के स्थान		ख. उत्पत्ति की अपेक्षा-पर्याप्त-अपर्याप्त चतुरिन्द्रियों के स्थान
क.	अपर्याप्त बादर वनस्पतिकायिकों के स्थान		ग. समुद्घात की अपेक्षा-पर्याप्त-अपर्याप्त चतुरिन्द्रियों के स्थान
ख.	उत्पत्ति की अपेक्षा अपर्याप्त बादर वनस्पतिकायिकों के स्थान		घ. स्वस्थान की अपेक्षा पर्याप्त-अपर्याप्त चतुरिन्द्रियों के स्थान
ग.	समुद्घात की अपेक्षा बादर वनस्पतिकायिकों के स्थान		क. तीन लोक में पर्याप्त-अपर्याप्त पंचेन्द्रियों के स्थान
घ.	स्वस्थान की अपेक्षा बादर वनस्पतिकायिकों के स्थान	166	ख. उत्पत्ति की अपेक्षा पर्याप्त-अपर्याप्त पंचेन्द्रियों के स्थान
पर्याप्त-अपर्याप्त सूक्ष्म वनस्पतिकायिकों के स्थान			ग. समुद्घात की अपेक्षा पर्याप्त-अपर्याप्त पंचेन्द्रियों के स्थान
क.	तीन लोक में पर्याप्त-अपर्याप्त द्वीन्द्रियों के स्थान		घ. स्वस्थान की अपेक्षा पर्याप्त-अपर्याप्त पंचेन्द्रियों के स्थान
ख.	उत्पत्ति की अपेक्षा पर्याप्त-अपर्याप्त द्वीन्द्रियों के स्थान		स्थान
ग.	समुद्घात की अपेक्षा पर्याप्त-अपर्याप्त द्वीन्द्रियों के स्थान		ग. स्वस्थान की अपेक्षा पर्याप्त-अपर्याप्त पंचेन्द्रियों के स्थान
घ.	स्वस्थान की अपेक्षा पर्याप्त-अपर्याप्त द्वीन्द्रियों के स्थान		स्थान
क.	तीन लोक में पर्याप्त अपर्याप्त त्रीन्द्रियों के स्थान		घ. स्वस्थान की अपेक्षा पर्याप्त-अपर्याप्त पंचेन्द्रियों के स्थान
ख.	उत्पत्ति की अपेक्षा पर्याप्त-अपर्याप्त त्रीन्द्रियों के स्थान	167	क. सात पृथिव्यों में पर्याप्त-अपर्याप्त नैरयिकों के स्थान
ग.	समुद्घात की अपेक्षा पर्याप्त-अपर्याप्त त्रीन्द्रियों के स्थान		ख. नैरयिकों के नरकावास

नैरयिकों के स्थान

174	इ. तमःप्रभा नैरयिकों के स्थान का वर्णन क. तमस्तम प्रभा में पर्याप्त-अपर्याप्त नैरयिकों के स्थान ख. तमस्तम प्रभा में पांच लाख नरकावास ग. तमस्तम प्रभा नरकावास की रचना घ. उत्पत्ति, समुद्घात व स्वस्थान की अपेक्षा असंख्यातवां भाग	ख. भवनवासी देवों के सर्वभवन ग. भवनों की रचना एवं महिमा घ. उत्पत्ति, समुद्घात व स्वस्थान की अपेक्षा असंख्यातवां भाग इ. दस भवनपतियों के नाम की गाथा च. दस भवनपतियों के परिचय चिह्न छ. दस भवनपतियों का वैभव	
175	इ. तमस्तम प्रभा नैरयिकों के स्थान का वर्णन च. नरकावासों की संख्या सूचक चार गाथाएं क. पर्याप्त-अपर्याप्त तिर्यच पंचेन्द्रियों के स्थान ख. उत्पत्ति, समुद्घात व स्वस्थान की अपेक्षा असंख्यातवां भाग	1-क. पर्याप्त-अपर्याप्त असुरकुमारों के स्थान ख. असुरकुमारों के भवन ग. भवनों की रचना एवं महिमा घ. उत्पत्ति, समुद्घात व स्वस्थान की अपेक्षा असंख्यातवां भाग	178
176	क. पर्याप्त-अपर्याप्त मनुष्यों के स्थान ख. उत्पत्ति की अपेक्षा पर्याप्त-अपर्याप्त मनुष्यों के स्थान ग. समुद्घात की अपेक्षा पर्याप्त-अपर्याप्त मनुष्यों के स्थान घ. स्वस्थान की अपेक्षा पर्याप्त-अपर्याप्त मनुष्यों के स्थान	इ. असुरकुमारों का वर्णन च. असुरकुमारों का वैभव एवं परिवार 2. चमरेन्द्र और बलेन्द्र के शरीर व परिवार का वर्णन 1-क. दक्षिण के पर्याप्त-अपर्याप्त असुरकुमारों के भवन ख. दक्षिण के असुरों के भवन ग. भवनों की रचना और महिमा 2-क. चमरेन्द्र का वर्णन ख. भवनों की संख्या	179
177	देवों के स्थान आदि का वर्णन भवनवासी देवों का वर्णन क. पर्याप्त-अपर्याप्त भवनवासी देवों के स्थान		

		15 प्रज्ञापना सूत्र विषय-सूची	प्रज्ञापना पद 2, सूत्र 180-194
ग.	सामानिक देवों, त्रायस्त्रिंशक, लोकपालों, अग्रमहिषियों, परिषदों, सेनाओं, सेनाधिपति देवों की संख्या	186	आदि का वर्णन
घ.	आत्मरक्षक देवों की संख्या		1-2. उत्तर के पर्याप्त-अपर्याप्त सुवर्णकुमारों के स्थान आदि का वर्णन
180	1-क. उत्तर के पर्याप्त-अपर्याप्त असुरों के स्थान	187	क. सुवर्णकुमार की तरह स्तनितकुमार पर्यंत शेष भवनपतियों के स्थान आदि
	ख. उत्तर के असुरों के भवन		ख. असुरकुमार आदि दस भवनवासी देवों के भवनों आदि की संग्रहणी गाथाएं
	ग. भवनों की रचना और महिमा		ग. दक्षिण दिशा के असुरकुमार आदि के भवनों की संख्या
	2-क. बलीन्द्र का वर्णन		
	ख. भवनों की संख्या		
	ग. सामानिक आदि देवों की संख्या		
	घ. अग्रमहिषियों की संख्या		
	इ. आत्मरक्षक आदि देवों की संख्या		
181	1. पर्याप्त-अपर्याप्त नागकुमार के स्थान, भवन, सामानिक देव आदि की संख्या का वर्णन		घ. उत्तर दिशा के असुरकुमार आदि के भवनों की संख्या
	2. धरणेन्द्र व भूतानेन्द्र का वर्णन		इ. सामानिक देवों और आत्मरक्षक देवों की संख्या
182	1-2. दक्षिण के पर्याप्त-अपर्याप्त नागकुमारों के स्थान, भवन व सामानिक देव आदि की संख्या का वर्णन		च. दक्षिण के दस इन्द्रों के नाम की गाथा
			छ. उत्तर के दस इन्द्रों के नाम की गाथा
			ज. भवनवासियों के वर्णों की गाथाएं
			झ. भवनवासियों के वस्त्रों के वर्णों की गाथाएं
183	1-2. उत्तर के पर्याप्त-अपर्याप्त नागकुमारों के स्थान, भवन व सामानिक देव आदि की संख्या का वर्णन		वाणव्यंतर देवों का वर्णन
			188-194 क. पर्याप्त-अपर्याप्त वाणव्यंतर देवों के नगरों का वर्णन
184	1-2. सुवर्णकुमारों के स्थान आदि का वर्णन		ख. सोलह वाणव्यंतर देवों के नाम और उनके वैभव का वर्णन
185	1-2. दक्षिण के पर्याप्त-अपर्याप्त सुवर्णकुमारों के स्थान		ग. वाणव्यंतर देवों के दक्षिण-उत्तर के बत्तीस इन्द्रों के नाम

घ. स्थान, विशेषता, प्रकृति, रूचि, शरीर वैभव, ऋद्धि
आदि का वर्णन

ङ. वाणव्यंतर देवों के आठ अवान्तर भेद की गाथाएं

ज्योतिषी देवों का वर्णन

195 (1) क. पर्याप्त-अपर्याप्त ज्योतिष्क देवों के स्थान

ख. इनके विमानों का वर्णन

ग. नवग्रहों के नाम

घ. अष्टावीस नक्षत्र

(2) चन्द्र-सूर्य, इन्द्र और इनका वैभव

वैमानिक देवों का वर्णन

196 क. पर्याप्त-अपर्याप्त वैमानिक देवों का वर्णन

ख. बारह देवलोक के नाम

ग. इनके सर्व विमानों की संख्या

घ. इनके मुकुट चिह्नों के नाम व धारण करने वालों का
विस्तृत वर्णन

197-206 क. सौधर्म-यावत्-अच्युतकल्प के विमानों का वर्णन

ख. प्रत्येक कल्पों में पाँच प्रमुख विमान

ग. सौधर्मेन्द्र के कुछ नाम

घ. सौधर्मेन्द्र दक्षिणार्ध लोक का अधिपति

ङ. सौधर्मेन्द्र का वाहन

च. ईशानेन्द्र के कतिपय नाम

छ. सौधर्मेन्द्र और ईशानेन्द्र की अग्रमहीषियों की संख्या

ज. प्रत्येक कल्प के विमानों की संख्या के उल्लेख की
गाथाएं

झ. प्रत्येक इन्द्र के सामानिक देव और आत्मरक्षक देवों
की संख्या के उल्लेख की गाथा

207-209 पर्याप्त-अपर्याप्त नवग्रहैयक देवों के स्थान

210 पर्याप्त-अपर्याप्त पाँच अनुत्तर देवों के स्थान

सिद्धों का वर्णन

211 क. सिद्धों का स्थान

ख. ईषत् प्राग्भारा पृथ्वी का आयाम-विष्कम्भ, परिधि

ग. मध्य भाग और अंतिम भाग का बाहल्य

घ. ईषत् प्राग्भारा पृथ्वी के बारह नाम

ङ. ईषत् प्राग्भारा पृथ्वी का वर्ण, संस्थान

च. सिद्धों की अवस्थिति की गाथाएं

छ. सिद्धों की अवगाहना की गाथा

ज. सिद्धों के आत्म-प्रदेशों का संस्थान की गाथा

झ. सिद्धों की अवगाहना और संस्थान की गाथा

ज. एक में अनेक सिद्ध की गाथाएं

ट. अनंतज्ञान-दर्शन के वर्णन की गाथाएं

212	ठ. सिद्धों के सुख के वर्णन की गाथाएं	226	नैरयिक-यावत्-सिद्ध इन आठ गतियों की अपेक्षा अल्प-बहुत्व
213	ड. सिद्ध सुखों की उदाहरण सहित तुलना की गाथाएं		
	तृतीय अल्प-बहुत्व पद		
214(1-5)	अल्पबहुत्व पद के सत्तावीस द्वारों की संग्रहणी गाथाएं	227	3 इन्द्रिय द्वार
215(1-3)	1 दिशा द्वार		
216(1-8)	चार दिशाओं में सर्वजीवों का अल्प-बहुत्व	228	सइन्द्रिय-यावत्-अनिन्द्रियों का अल्प-बहुत्व
217(1-6)	चार दिशाओं में पाँच स्थावर जीवों का अल्प-बहुत्व	229	सइन्द्रिय-यावत्-पंचेन्द्रिय के अपर्याप्त का अल्प-बहुत्व
218	चार दिशाओं में तीन विकलेन्द्रियों का अल्प-बहुत्व	230(1-6)	सइन्द्रिय-यावत्-अनिन्द्रियों के प्रत्येक के पर्याप्त-अपर्याप्त का अल्प-बहुत्व
219	चार दिशाओं में नैरयिकों का अल्प-बहुत्व	231	सइन्द्रिय-यावत्-अनिन्द्रियों के पर्याप्तों-अपर्याप्तों का संयुक्त अल्प-बहुत्व
220	चार दिशाओं में पंचेन्द्रिय तिर्यचों का अल्प-बहुत्व		
221	चार दिशाओं में मनुष्यों का अल्प-बहुत्व	232	4 काय द्वार
222	चार दिशाओं में भवनवासी देवों का अल्प-बहुत्व		
223(1-9)	चार दिशाओं में वाणव्यंतर देवों का अल्पबहुत्व	233	सकाय-यावत्-त्रसकाय जीवों का अल्प-बहुत्व
224	चार दिशाओं में ज्योतिषी देवों का अल्पबहुत्व	234	सकाय-यावत्-त्रसकाय के अपर्याप्तों का अल्प-बहुत्व
225	चार दिशाओं में वैमानिक देवों का अल्पबहुत्व	235(1-7)	सकाय-यावत्-त्रसकाय में प्रत्येक के पर्याप्तों-अपर्याप्तों का अल्प-बहुत्व
	2 गति द्वार		
226	नरक-यावत्-सिद्ध इन पाँच गतियों की अपेक्षा अल्प-बहुत्व	236	सकाय-यावत्-त्रसकाय में पर्याप्तों-अपर्याप्तों का संयुक्त अल्प-बहुत्व
227		237	सूक्ष्म पृथ्वीकायिकों-यावत्-सूक्ष्म निगोदों का अल्प-बहुत्व

238	सूक्ष्म पृथ्वीकायिकों-यावत्- का अल्प-बहुत्व	सूक्ष्म निगोदों में अपर्याप्तों	248	सूक्ष्म पृथ्वीकायिक-यावत्-सूक्ष्म निगोदों तथा बादर पृथ्वीकायिकों-यावत्-बादर त्रसकायिकों के अपर्याप्तों का अल्प-बहुत्व
239	सूक्ष्म पृथ्वीकायिकों-यावत्- अल्प-बहुत्व	सूक्ष्म निगोदों में पर्याप्तों का	249	सूक्ष्म पृथ्वीकायिक-यावत्-सूक्ष्म निगोदों तथा बादर पृथ्वीकायिकों-यावत्-बादर त्रसकायिकों के पर्याप्तों का अल्प-बहुत्व
240	सूक्ष्म पृथ्वीकायिकों-यावत्- पर्याप्तों-अपर्याप्तों का अल्प-बहुत्व	सूक्ष्म निगोदों में प्रत्येक के		
241	सूक्ष्म पृथ्वीकायिकों-यावत्- अपर्याप्तों का संयुक्त-अल्प-बहुत्व	सूक्ष्म निगोदों में पर्याप्तों-	250(1-7)	सूक्ष्म पृथ्वीकायिक-यावत्-सूक्ष्म निगोदों तथा बादर पृथ्वीकायिकों-यावत्-बादर त्रसकायिकों के प्रत्येक के पर्याप्तों-अपर्याप्तों का संयुक्त अल्प-बहुत्व
242	बादर पृथ्वीकायिकों-यावत्- बहुत्व	बादर त्रसकायिकों का अल्प-		
243	बादर पृथ्वीकायिकों-यावत्- का अल्प-बहुत्व	बादर त्रसकायिकों में अपर्याप्तों	251	सूक्ष्म पृथ्वीकायिक-यावत्-सूक्ष्म निगोदों तथा बादर पृथ्वीकायिकों-यावत्-बादर त्रसकायिकों के पर्याप्तों- अपर्याप्तों का संयुक्त अल्प-बहुत्व
244	बादर पृथ्वीकायिकों-यावत्- का अल्प-बहुत्व	बादर त्रसकायिकों में पर्याप्तों		
245(1-9)	बादर पृथ्वीकायिकों-यावत्- के पर्याप्तों-अपर्याप्तों का अल्प-बहुत्व	बादर त्रसकायिकों में प्रत्येक	252	संयोगी-यावत्-अयोगी जीवों का अल्प-बहुत्व
246	बादर पृथ्वीकायिकों-यावत्- अपर्याप्तों का संयुक्त अल्प-बहुत्व	बादर त्रसकायिकों में पर्याप्तों-	253	6 वेद द्वारा सर्वेदी-यावत्-अवेदियों का अल्प-बहुत्व
247	सूक्ष्म पृथ्वीकायिक-यावत्- पृथ्वीकायिकों-यावत्-बादर त्रसकायिकों का अल्प-बहुत्व	सूक्ष्म निगोदों तथा बादर	254	7 कषाय द्वारा सकषायी-यावत्-अकषायी जीवों का अल्प-बहुत्व
			255	8 लेश्या द्वारा सलेश्य-यावत्-अलेश्य जीवों का अल्प-बहुत्व

256	9 दृष्टि द्वार सम्यग्दृष्टि-यावत्-सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवों का अल्प-बहुत्व	265	परित्त-यावत्-नो परित्त-नो अपरित्त जीवों का अल्प-बहुत्व
257	10 ज्ञान-अज्ञान द्वार आभिनिबोधिक ज्ञानी-यावत्-केवल ज्ञानी जीवों का अल्प- बहुत्व	266	17 पर्याप्त द्वार पर्याप्त-यावत्-नो पर्याप्त-नो अपर्याप्त जीवों का अल्प- बहुत्व
258	मति अज्ञानी-यावत्-विभंग ज्ञानी जीवों का अल्प-बहुत्व	267	18 सूक्ष्म द्वार सूक्ष्म-यावत्-नो सूक्ष्म-नो बादर जीवों का अल्प-बहुत्व
259	आभिनिबोधिकज्ञानी -यावत्- विभंगज्ञानी जीवों का संयुक्त अल्प-बहुत्व	268	19 संज्ञी द्वार संज्ञी-यावत्-नो संज्ञी-नो असंज्ञी जीवों का अल्प-बहुत्व
260	11 दर्शन द्वार चक्षुदर्शनी-यावत्-केवलदर्शनी जीवों का अल्प-बहुत्व	269	20 भवसिद्धिक द्वार भवसिद्धिक-यावत्-नो भवसिद्धिक-नो अभवसिद्धिक जीवों का अल्प-बहुत्व
261	12 संयत द्वार संयत-यावत्- नो संयत-नो असंयत नो संयतासंयत जीवों का अल्प-बहुत्व	270	21 अस्तिकाय द्वार द्रव्य की अपेक्षा से धर्मास्तिकाय-यावत्-अद्धा समय का अल्प-बहुत्व
262	13 उपयोग द्वार साकारोपयोगी और अनाकारापयोगी जीवों का अल्प-बहुत्व	271	प्रदेशों की अपेक्षा से धर्मास्तिकाय -यावत्- अद्धा समय का अल्प-बहुत्व
263	14 आहारक द्वार आहारक और अनाहारक जीवों का अल्प-बहुत्व	272 (1-6)	द्रव्य और प्रदेश की अपेक्षा से धर्मास्तिकाय-यावत्-अद्धा समय प्रत्येक का अल्प-बहुत्व
264	15 भाषक द्वार भाषक और अभाषक जीवों का अल्प-बहुत्व	273	द्रव्य और प्रदेश की अपेक्षा से धर्मास्तिकाय-यावत्-अद्धा समय का संयुक्त अल्प-बहुत्व
	16 परित्त द्वार		

274	22 चरम द्वार चरम और अचरम जीवों का अल्प-बहुत्व	329	दिशाओं की अपेक्षा अधोदिशा-यावत्-उत्तर दिशा में सामान्यतः अल्प-बहुत्व
275	23 जीव द्वार जीव-यावत्-सर्वपर्यायों का अल्प-बहुत्व	330	संख्यात, असंख्यात और अनंत प्रदेशी पुद्गल स्कंधों का द्रव्य, प्रदेश और द्रव्य-प्रदेशों की अपेक्षा से संयुक्त अल्प-बहुत्व
276	24 क्षेत्र द्वार अधोलोक-यावत्-त्रैलोक्य में जीवों का अल्प-बहुत्व	331	एक प्रदेशावगाढ-यावत्-असंख्यात प्रदेशावगाढ पुद्गलों का द्रव्य की अपेक्षा, प्रदेशों की अपेक्षा तथा द्रव्य-प्रदेशों की अपेक्षा से संयुक्त अल्प-बहुत्व
277-291 292-306	अधोलोक-यावत्-त्रैलोक्य में गति की अपेक्षा अल्प-बहुत्व अधोलोक-यावत्-त्रैलोक्य में इन्द्रिय की अपेक्षा अल्प-बहुत्व	332	एक समय-यावत्-असंख्यात समय की स्थिति वाले पुद्गलों का द्रव्य, प्रदेश और द्रव्य-प्रदेश की संयुक्त अपेक्षा से अल्प-बहुत्व
307-324	अधोलोक-यावत्-त्रैलोक्य में काय की अपेक्षा अल्प-बहुत्व	333	एक गुण काले-यावत्-अनंत गुणकाले पुद्गलों का द्रव्य, प्रदेश व द्रव्य प्रदेश की संयुक्त अपेक्षा से अल्प-बहुत्व
325	25 बंध द्वार आयु कर्म के बंधक-यावत्-अनाकारोपयोगयुक्त जीवों का अल्प-बहुत्व	334	27 महादण्डक द्वार विभिन्न विवक्षाओं से चौबीस दण्डकों का अल्प-बहुत्व
326	26 पुद्गल द्वार क्षेत्र की अपेक्षा अधोलोक-यावत्-त्रैलोक्य में पुद्गलों का अल्प-बहुत्व	335	चतुर्थ स्थिति पद 1. नैरयिकों की स्थिति 2. अपर्याप्त नैरयिकों की स्थिति 3. पर्याप्त नैरयिकों की स्थिति
327	दिशाओं की अपेक्षा ऊर्ध्व दिशा -यावत्- उत्तर दिशा में पुद्गलों का अल्प-बहुत्व		
328	क्षेत्र की अपेक्षा अधोलोक-यावत्-त्रैलोक्य में सामान्यतः द्रव्य पुद्गलों का अल्प-बहुत्व		

336-342	सात नरक के अपर्याप्त-पर्याप्त नैरयिकों की स्थिति	448-451	विकेलेन्द्रिय व तिर्यच पंचेन्द्रिय जीवों के अनंत पर्यायों का कारण
343-344	अपर्याप्त-पर्याप्त देव-देवियों की स्थिति	452	मनुष्यों के अनंत पर्यायों की सयुक्तिक प्ररूपणा
345-353	अपर्याप्त-पर्याप्त भवनवासी देव-देवियों की स्थिति	453-454	वाणव्यंतर, ज्योतिष्क और वैमानिक देवों के अनंत पर्यायों का प्ररूपण
354-368	अपर्याप्त-पर्याप्त पृथ्वीकाय-यावत्-वनस्पतिकाय की स्थिति	455(1-3)	जघन्य-उत्कृष्ट, अजघन्य-अनुत्कृष्ट अवगाहना वाले नारकों में अनंत पर्याय होने का कारण
369	अपर्याप्त-पर्याप्त द्वीन्द्रिय जीवों की स्थिति	456(1-3)	जघन्य-उत्कृष्ट, अजघन्य-अनुत्कृष्ट स्थिति वाले नारकों में अनंत पर्याय होने का कारण
370	अपर्याप्त-पर्याप्त त्रीन्द्रिय जीवों की स्थिति	457-458	जघन्य-उत्कृष्ट वर्ण गंध रस स्पर्श परिणत नारक जीवों के अनंत पर्याय होने का कारण
371	अपर्याप्त-पर्याप्त चतुरिन्द्रिय जीवों की स्थिति	459-463	जघन्य-उत्कृष्ट, अजघन्य-अनुत्कृष्ट ज्ञान, अज्ञान और दर्शन संपन्न नारक जीवों के अनंत पर्याय होने का कारण
372-389	पंचेन्द्रिय तिर्यच अपर्याप्त-पर्याप्त जीवों की स्थिति	464-465	जघन्यादियुक्त अवगाहना वाले असुरकुमारादि भवनपति देवों के पर्याय
390-392	अपर्याप्त-पर्याप्त मनुष्यों की स्थिति	466-472	जघन्यादियुक्त अवगाहनादि विशिष्ट एकेन्द्रियों के पर्याय
393-394	अपर्याप्त-पर्याप्त वाणव्यंतर देवों की स्थिति	473-480	जघन्यादियुक्त अवगाहनादि विशिष्ट विकलेन्द्रियों के पर्याय
395-406	अपर्याप्त-पर्याप्त ज्योतिषी देवों की स्थिति	481-488	जघन्यादियुक्त अवगाहनादि वाले पंचेन्द्रिय तिर्यचों की विविध अपेक्षाओं से पर्याय
407-437	अपर्याप्त-पर्याप्त वैमानिक देवों की स्थिति	489-498	जघन्य-उत्कृष्ट-मध्यम अवगाहनादि वाले मनुष्यों की पर्याय
पंचम विशेष (पर्याय) पद			
438	पर्याय के दो भेद		
439	जीव पर्यायों के अनंत होने का हेतु		
440	नैरयिक में अनंत पर्याय होने का कारण		
441-442	भवनवासी देवों में अनंत पर्यायों का कारण		
443-447	पांच स्थावरों में अनंत पर्यायों का कारण		

499	वाणव्यंतर-ज्योतिष्क और वैमानिक देवों की पर्याय की प्ररूपणा	531	जघन्य, उत्कृष्ट अवगाहना वाले पुद्गल स्कंधों की अनंत पर्यायों होने का हेतु
500	अजीव पर्यायों के दो भेद	532-537	जघन्य, उत्कृष्ट स्थिति वाले पुद्गल स्कंधों की अनंत पर्यायों होने का हेतु
501	अरूपी अजीव पर्यायों के दस भेद		
502	रूपी अजीव पर्यायों के चार भेद	538-553	जघन्य, उत्कृष्ट वर्ण-गंध-रस-स्पर्श परिणत पुद्गल स्कंधों की अनंत पर्यायों होने का हेतु
503	रूपी अजीव पर्यायों के अनंत होने का कारण		
504-510	जघन्य-उत्कृष्ट अवगाहना, स्थिति और वर्ण-गंध-रस-स्पर्श परिणत पुद्गल-पर्यायों के अनंत होने का हेतु	534-558	जघन्यादि सामान्य पुद्गल स्कंधों की विविध अपेक्षाओं से पर्याय प्ररूपणा
511-514	एक प्रदेशावाढ-यावत्-असंख्य प्रदेशावाढ पुद्गल-पर्यायों के अनंत होने का हेतु		
515-518	एक समय की स्थिति वाले-यावत्-असंख्यात समय की स्थिति वाले पुद्गल-पर्यायों के अनंत होने का हेतु	559	व्युत्क्रांति पद के आठ द्वारों के नाम की गाथा
519-524	एक गुण-यावत्-अनंतगुण वर्ण-गंध-रस-स्पर्श परिणत पुद्गल पर्यायों के अनंत होने का हेतु		
525-528	जघन्यादि विशिष्ट अवगाहना एवं स्थिति वाले द्विप्रदेशिक-यावत्-अनंत प्रदेशिक स्कंधों की अनंत पर्यायों होने का हेतु	560-563	1. प्रथम गति की अपेक्षा उपपात-उद्धर्तन द्वादश द्वार
529-530	जघन्यादि अवगाहना वाले संख्यात-यावत्-अनंत प्रदेशी स्कंधों की अनंत पर्यायों होने का हेतु	564	क. चार गति का उपपात-विरहकाल
		565-568	ख. सिद्ध गति का उपपात-विरहकाल चार गति का उद्धर्तन-विरहकाल
			2. द्वितीय दण्डकापेक्षा उपपात-उद्धर्तन चतुर्विंशति द्वार
		569-605	चौबीस दण्डकों का उपपात-विरहकाल
		606	सिद्धों का उपपात-विरहकाल
		607-608	चौबीस दण्डकों का उद्धर्तन-विरहकाल

609-612	3. तृतीय सान्तर-निरंतर उपपात उद्वर्तन द्वारा चार गतियों में सान्तर-निरंतर उपपात	687-690	सर्वजीवों के षड्विध आयुबंध के आकर्ष
613-622	चौबीस दण्डकों में सान्तर-निरंतर उपपात	691-692	षड्विध आयुबंध के आकर्षों का अल्प-बहुत्व
623	सिद्धों में सान्तर-निरंतर उपपात		सप्तम श्वासोच्छ्वास पद
624-625	चौबीस दण्डकों में सान्तर-निरंतर उद्वर्तन	693-724	चौबीस दण्डक के जीवों का जघन्य-उत्कृष्ट श्वासोच्छ्वास काल
626-635	4. चतुर्थ एक समय में उपपात-उद्वर्तन द्वारा चौबीस दण्डकों में एक समय में उपपात	725	दस संज्ञाओं के नाम
636	सिद्धों में एक समय में उपपात	726-729	चौबीस दण्डक के जीवों में दस संज्ञाएं
637-638	चौबीस दण्डकों में एक समय में उद्वर्तन	730-731	नैरयिकों में बाह्य-आभ्यन्तर कारणों की अपेक्षा चार संज्ञाएं व अल्पबहुत्व
639-665	5. पंचम कुतो (आगति) द्वारा चौबीस दण्डकों में आगति कहाँ से (आकर उत्पन्न होने का) विस्तार से वर्णन	732-733	तिर्यचों में बाह्य-आभ्यन्तर कारणों की अपेक्षा चार संज्ञाएं व अल्पबहुत्व
666-676	6. षष्ठ उद्वर्तन द्वारा चौबीस दण्डकों से गति (कहाँ पर उत्पन्न होने) का वर्णन	734-735	मनुष्यों में बाह्य-आभ्यन्तर कारणों की अपेक्षा चार संज्ञाएं व अल्पबहुत्व
677-683	7. सप्तम परभवायुबंध द्वारा चौबीस दण्डकों में परभव के आयु-बंध की अवधि	736-737	देवों में बाह्य-आभ्यन्तर कारणों की अपेक्षा चार संज्ञाएं व अल्पबहुत्व
684	8. अष्टम आयुबंध आकर्ष द्वारा क. आयुबंध के छह भेद	738	तीन प्रकार की शीतादि योनियाँ
685-686	ख. चौबीस दण्डकों में छह प्रकार का आयुबंध	739-752	चौबीस दण्डक के जीवों की शीतादि योनियाँ

753	चौबीस दण्डक के जीवों की शीतादि योनियों का अल्प-बहुत्व	सौधर्म-यावत्-अनुत्तर विमान, ईषत्प्राग्भारा और लोक के चरमादि छह विकल्पों का अल्प-बहुत्व
754	तीन प्रकार की सचितादि योनियाँ	द्रव्य और प्रदेशों की अपेक्षा से अलोक के चरमादि छह विकल्पों का अल्प-बहुत्व
755-762	चौबीस दण्डक के जीवों में सचितादि योनियाँ	द्रव्य और प्रदेशों की अपेक्षा से लोकालोक के चरमादि छह विकल्पों का अल्प-बहुत्व
763	चौबीस दण्डक के जीवों में सचितादि योनियों का अल्प-बहुत्व	परमाणु पुद्गल के चरमादि तीन विकल्पों के छब्बीस भाँगे
764	सर्व जीवों में तीन प्रकार की संवृतादि योनियाँ	द्विप्रदेशिक स्कंधों-यावत्-अनंत प्रदेशिक स्कंधों के चरमादि तीन विकल्पों के भाँगे
765-771	चौबीस दण्डक के जीवों की संवृतादि योनियाँ	भंग संख्या सूचक छह गाथाएं
772	चौबीस दण्डक के जीवों की संवृतादि योनियों का अल्प-बहुत्व	पाँच संस्थानों के नाम
773	क. मनुष्यों की त्रिविध विशिष्ट योनियाँ	परिमण्डलादि पाँच संस्थान अनंत
	ख. कूर्मोन्नता योनि में उत्तम पुरुष	परिमण्डलादि पाँच संस्थानों के संख्यात प्रदेश-यावत्-अनंत प्रदेश
	ग. शंखावर्ता योनि में विशिष्ट जीव और पुद्गल	परिमण्डलादि पाँच संस्थान-संख्यात प्रदेशावगाढ़-यावत्-अनंत प्रदेशावगाढ़
	घ. वंशीपत्रा योनि में साधारण व्यक्ति उत्पन्न	द्रव्य और प्रदेशों की अपेक्षा संख्यात प्रदेशावगाढ़-यावत्-अनंत प्रदेशावगाढ़
774	आठ पृथ्वियों के नाम	पाँच संस्थानों के चरमाचरम का अल्प-बहुत्व
775-776	रत्नप्रभादि सात पृथ्वियाँ, सौधर्म-यावत्-अनुत्तर विमान, ईषत्प्राग्भारा, लोक और अलोक के संबंध में चरमादि छह विकल्प	
777-778	द्रव्य और प्रदेशों की अपेक्षा से रत्नप्रभादि सात पृथ्वियाँ,	

807	जीव के चरमाचरम का प्ररूपण	831	क. अवधारिणी भाषा के चार भेद
808-809	चौबीस दण्डक के जीव और जीवों का गति की अपेक्षा		ख. अवधारिणी भाषा के चार भेद होने का हेतु
810-811	चरमाचरम	832	पशु-पक्षी वाचक प्रज्ञापनी भाषा
812-813	चौबीस दण्डक के जीव और जीवों का स्थिति की अपेक्षा	833	स्त्री आदि लिंगवाचक प्रज्ञापनी भाषा
	चरमाचरम	834	स्त्री आज्ञापनी आदि प्रज्ञापनी भाषा
814-815	चौबीस दण्डक के जीव और जीवों का भव की अपेक्षा	835	स्त्री प्रज्ञापनी आदि प्रज्ञापनी भाषा
	चरमाचरम	836	स्त्री जाति आदि प्रज्ञापनी भाषा
816-817	चौबीस दण्डक के जीव और जीवों का भाषा की अपेक्षा	837	स्त्री जाति आदि आज्ञापनी प्रज्ञापनी भाषा
	चरमाचरम	838	स्त्री जाति आदि प्रज्ञापनी भाषा
818-819	चौबीस दण्डक के जीव और जीवों का आहार की अपेक्षा	839-843	अबोध बालक-बालिका की अपरिपक्वदशा की भाषा
	चरमाचरम	844-848	ऊंट, बैल, गधा, बकरा, भेड़ की अनुपयुक्तदशा की भाषा
820-821	चौबीस दण्डक के जीव और जीवों का भाव की अपेक्षा	849-850	एकवचन, बहुवचन से युक्त भाषा
	चरमाचरम	851-853	स्त्री, पुरुष और नपुंसक वाची भाषा
822-829	(1) चौबीस दण्डक के जीव और जीवों का वर्ण-गंध-रस-स्पर्श की अपेक्षा चरमाचरम	854-857	लिंगवाची भाषा बोलने वाला व्यक्ति की भाषा प्रज्ञापनी
	(2) गति आदि इत्याह द्वारों की सूचक गाथा	858	भाषा का मूल कारण, भाषा का उत्पत्ति स्थान, भाषा का संस्थान, भाषा का अंत कहाँ ?
830	अवधारिणी भाषा का स्वरूप	859	भाषा का उत्पत्ति स्थान, भाषा का समय, भाषा के भेद, दो भाषा अनुमत
	एकादशम भाषा पद	860	भाषा के दो भेद

861	पर्याप्त भाषा के दो भेद	898	भाषा जात के चार भेद
862	पर्याप्त सत्य भाषा के दस भेद	899	आराधक-विराधक की भाषा
863	पर्याप्त मृषा भाषा के दस भेद	900	चार प्रकार की भाषा के भाषकों और अभाषकों का अल्प-बहुत्व
864	अपर्याप्त भाषा के दो भेद		
865	सत्यामृषा भाषा के दस भेद		द्वादशम शरीर पद
866	असत्या मृषाभाषा के बारह भेद की गाथाएं	901	पाँच शरीरों के नाम
867	क. भाषक-अभाषक जीव प्ररूपणा	902-909	चौबीस दण्डक में जीवों के शरीर
	ख. जीव के भाषक-अभाषक होने का हेतु	910(1-5)	प्रत्येक शरीर के दो-दो भेद
868-869	चौबीस दण्डक के जीव भाषक-अभाषक	911(1-4)	नैरयिकों के बद्ध-मुक्त पंच शरीरों की प्ररूपणा
870-871	भाषा के चार भेद एवं जीवों में उनकी प्ररूपणा	912-913	भवनवासियों के बद्ध-मुक्त पंच शरीरों की प्ररूपणा
872-876	चौबीस दण्डक के जीवों की चार प्रकार की भाषा	914-917	एकेन्द्रियों के बद्ध-मुक्त पंच शरीरों की प्ररूपणा
877(1-23)	ग्रहण करने योग्य भाषा द्रव्यों के विभिन्न रूप	918-920	द्वीन्द्रिय से पंचेन्द्रिय तिर्यचों तक के बद्ध मुक्त पंच शरीरों की प्ररूपणा
878-879	भाषा द्रव्यों का सान्तर-निरंतर ग्रहण और निःसरण		
880	भिन्न-अभिन्न भाषा द्रव्यों का निकलना तथा ग्रहण-निःसरण-संबंधी प्ररूपणा	921(1-4)	मनुष्यों के बद्ध-मुक्त पंच शरीरों की प्ररूपणा
881-886	भाषा के पाँच भेद व प्रभेद	922-924	वाणव्यंतर, ज्योतिष्क और वैमानिक देवों के बद्ध-मुक्त पंच शरीरों की प्ररूपणा
887	पाँच भेदों का अल्प-बहुत्व		
888-895	चौबीस दण्डक के जीवों द्वारा भाषा द्रव्यों का ग्रहण व त्याग	925	परिणामों के दो भेद
896-897	सोलह प्रकार के वचन	926	जीव परिणाम के दस भेद
		927	गति परिणाम के चार भेद

त्रयोदशम परिणाम पद

928	इन्द्रिय परिणाम के पाँच भेद	949	क. गति परिणाम के दो भेद
929	कषाय परिणाम के चार भेद		ख. विकल्प से गति परिणाम के दो भेद
930	लेश्या परिणाम के छ भेद	950	संस्थान परिणाम के पाँच भेद
931	योग परिणाम के तीन भेद	951	भेद परिणाम के पाँच भेद
932	उपयोग परिणाम के दो भेद	952	वर्ण परिणाम के पाँच भेद
933	ज्ञान परिणाम के पाँच भेद	953	गंध परिणाम के दो भेद
934	अज्ञान परिणाम के तीन भेद	954	रस परिणाम के पाँच भेद
935	दर्शन परिणाम के तीन भेद	955	स्पर्श परिणाम के आठ भेद
936	चारित्र्य परिणाम के पाँच भेद	956	अगुरु लघु परिणाम का एक भेद
937	वेद परिणाम के तीन भेद	957	शब्द परिणाम के दो भेद
938	नैरयिकों में दशविध परिणामों की प्ररूपणा		चतुर्दशम-कषाय पद
939	भवनवासी देवों में दशविध परिणामों की प्ररूपणा	958	कषाय के चार भेद
940-942	एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय तक के जीवों के दशविध परिणामों की प्ररूपणा	959	चौबीस दण्डक में चार कषाय
943	मनुष्यों में दशविध परिणामों की प्ररूपणा	960	क. क्रोध के चार स्थान
944-946	वाणव्यंतर-ज्योतिष्क व वैमानिक देवों में दशविध परिणामों की प्ररूपणा		ख. चौबीस दण्डक में क्रोध के चार स्थान
947	अजीव परिणाम के दस भेद	961	ग. मान, माया, लोभ के भी चार स्थान
948	क. बंधन परिणाम के दो भेद की गाथाएं		क. क्रोध की उत्पत्ति के चार निमित्त
	ख. रक्षबंध और क्षिग्ध बंध की व्याख्या	962	ख. चौबीस दण्डक में क्रोध की उत्पत्ति के चार निमित्त
			ग. मान, माया, लोभ की उत्पत्ति के भी चार स्थान
			क. क्रोध के चार भेद

963	ख. चौबीस दण्डक में क्रोध के चार भेद ग. मान, माया, लोभ की उत्पत्ति के भी चार-चार भेद क. प्रकाशान्तर से क्रोध के चार भेद ख. प्रकाशान्तर से चौबीस दण्डक में क्रोध के चार भेद ग. इसी प्रकार मान, माया और लोभ के भी चार-चार भेद	980 981 982	पाँच इन्द्रियों के कर्कश और गुरु गुण का परिमाण पाँच इन्द्रियों के कर्कश व गुरू तथा लघु-मृदु गुण का परिमाण पाँच इन्द्रियों के कर्कश गुरु गुणों व मृदु-लघु गुणों का अल्प-बहुत्व
964-971	जीव व चौबीस दण्डक में तीन काल तथा एकवचन-बहुवचन की अपेक्षा से अष्टकर्म प्रकृतियों का चयन-उपचय, बंध, उदीरणा, वेदन और निर्जरा का चिंतन	983-989 990-991 992(1-4) 993	चौबीस दण्डक में पाँच इन्द्रियों के छह द्वारों का कथन पाँच इन्द्रियों में प्रायकारी और अप्रायकारी का कथन पाँच इन्द्रियों का विषय क्षेत्र मार्णान्तिक समुद्घात वाले अणगार के निर्जरा पुद्गलों की सूक्ष्मता और व्यापकता
972	पंचदसम इन्द्रिय पद प्रथम उद्देशक चौबीस द्वारों के नामों की गाथाएं	994	छद्मस्थ मनुष्य को निर्जरा पुद्गलों की भिन्नता आदि का अज्ञान व अज्ञान होने का हेतु
973	पाँच इन्द्रियों के नाम	995-998	चौबीस दण्डक के जीवों द्वारा निर्जरा पुद्गलों का जानना, देखना और आहार करना
974(1-5)	पाँच इन्द्रियों के संस्थान	999	काँच आदि में प्रतिबिम्ब का दर्शन
975(1-4)	पाँच इन्द्रियों का बाहल्य	1000	संकुचित और विस्तृत वस्त्र का आकाश प्रदेशों से स्पर्श
976	पाँच इन्द्रियों का विस्तार	1001	खड़े या पड़े स्तम्भ का आकाश प्रदेशों से स्पर्श
977	पाँच इन्द्रियों के प्रदेश	1002	धर्मास्तिकाय आदि से लोक का स्पर्श
978	पाँच इन्द्रियों के प्रदेशावगाह का परिमाण	1003	धर्मास्तिकाय आदि से जम्बूद्वीप-यावत्-स्वयंभूरमण समुद्र का स्पर्श
979	पाँच इन्द्रियों की अवगाहना और प्रदेशों की अपेक्षा से अल्प-बहुत्व		

1004	लोक का धर्मास्तिकाय आदि से स्पर्श		ख. चौबीस दंडक में इन्द्रिय अवाय
1005	अलोक का धर्मास्तिकाय आदि से स्पर्श	1016	क. इन्द्रिय ईहा पांच प्रकार का
	द्वितीय उद्देशक		ख. चौबीस दंडक में इन्द्रिय ईहा
1006	बारह अर्थाधिकारों के नामों की गाथाएं	1017	अवग्रह दो प्रकार का
1007	इन्द्रियोपचय के पांच भेद	1018	व्यंजनावग्रह पांच प्रकार का
1008	चौबीस दंडकों में इन्द्रियोपचय	1019	अर्थावग्रह छह प्रकार का
1009	क. इन्द्रिय-निर्वर्तना के पांच भेद	1020-1023	चौबीस दंडक में अवग्रह
	ख. चौबीस दंडकों में इन्द्रिय निर्वर्तना	1024	इन्द्रिय के दो प्रकार
1010	क. श्रोत्रेन्द्रिय निर्वर्तना-यावत्-स्पर्शनेन्द्रिय निर्वर्तना का स्वरूप तथा काल	1025	द्रव्येन्द्रिय के आठ प्रकार
	ख. चौबीस दंडकों में श्रोत्रेन्द्रिय-यावत्-स्पर्शनेन्द्रिय निर्वर्तना	1026-1029	चौबीस दंडक में द्रव्येन्द्रियां
	निर्वर्तना	1030-1055	चौबीस दंडक में अतीत-बद्ध-पुरस्कृत द्रव्येन्द्रियां
1011	क. इन्द्रिय लब्धि पांच प्रकार की	1056	भावोन्द्रियां पांच प्रकार की
	ख. चौबीस दंडक में इन्द्रिय लब्धि	1057-1067	चौबीस दंडक में अतीत-बद्ध-पुरस्कृत भावोन्द्रियां
1012	क. इन्द्रियों का उपयोग काल पांच प्रकार का		षड् दसम प्रयोग पद
	ख. चौबीस दंडक में इन्द्रियों का उपयोग काल	1068	प्रयोग के पन्द्रह भेद
1013	श्रोत्रेन्द्रिय-यावत्-स्पर्शेन्द्रिय के उपयोगाद्धा का अल्पबहुत्व	1069-1076	समुच्चय जीवों और चौबीस दंडकों में प्रयोग की प्ररूपणा
1014	क. इन्द्रिय अवग्रह पांच प्रकार का	1077	समुच्चय जीवों में विभाग से प्रयोग की प्ररूपणा
	ख. चौबीस दंडक में इन्द्रिय अवग्रह	1078-1079	नास्कों और भवनपतियों की विभाग से प्रयोग की प्ररूपणा
1015	क. इन्द्रिय अवाय पांच प्रकार का	1080-1082	एकेन्द्रियों, विकलेन्द्रियों और तिर्यचपंचेन्द्रियों की

1083	प्रयोग संबंधी प्ररूपणा	1143-1144	वाणव्यंतर, ज्योतिष्क एवं वैमानिकों में समाहारादि सात द्वारों की प्ररूपणा
1084	मनुष्यों में विभाग से प्रयोग प्ररूपणा	1145	सलेश्य चौबीस दंडकवर्ती जीवों में समाहारादि सात द्वारों का प्ररूपण
1085	वाणव्यंतरादि देवों की विभाग से प्रयोग प्ररूपणा	1146-1155	कृष्ण लेश्यादि विशिष्ट चौबीस दंडकों में समाहारादि सात द्वारों की प्ररूपणा
1086	गति प्रपात के पाँच भेद		
1087	प्रयोग गति के पन्द्रह भेद		
1088	जीवों की प्रयोग गति के प्रन्द्रह भेद		
1089	चौबीस दण्डक में प्रयोग गति के ग्यारह भेद		
1090	जीवों की प्रयोग गति का स्वरूप	1156	छह लेश्याओं के नाम
1091	ततगति की व्याख्या	1157-1169	चौबीस दण्डकों में छह लेश्याओं का कथन
1092-1104	बंधन-छेदन गति की व्याख्या	1170	सलेश्य-अलेश्य जीवों का अल्पबहुत्व
1105-1122	उपपात गति के भेद-प्रभेद	1171-1190	छह लेश्याओं की अपेक्षा चौबीस दण्डक के जीवों का विस्तार से अल्प-बहुत्व
	विहायो गति के सत्रह भेद का विस्तृत विवरण	1191-1198	सलेश्य सामान्य जीवों व चौबीस दण्डकों में अल्प ऋद्धिक और महर्द्धिकों का अल्प-बहुत्व
	सप्तदसम लेश्या पद		
	प्रथम उद्देशक		
1123	सात अधिकारों के नाम की गाथा		
1124-1130	नैरयिकों में समाहारादि सात द्वारों की प्ररूपणा	1199	चौबीस दण्डक में उत्पत्ति
1131-1136	भवनपतियों में समाहारादि सात द्वारों की प्ररूपणा	1200	चौबीस दण्डक में उद्वर्तन
1137-1141	पृथ्वीकायिकों से तिर्यचपंचेन्द्रियों तक में समाहारादि सात द्वारों की प्ररूपणा	1201-1207	छह लेश्याओं की अपेक्षा से चौबीस दण्डक में उत्पत्ति और उद्वर्तन
1142	मनुष्य में समाहारादि सात द्वारों की प्ररूपणा	1208-1214	सामूहिक लेश्या की अपेक्षा से चौबीस दंडकों में

1215	उत्पाद-उद्घर्तन का प्ररूपण लेश्याओं की अपेक्षा से उदाहरण पूर्वक नैरयिकों के अर्वाधिज्ञान का क्षेत्र	1246	छह लेश्याओं के स्थान 1247-1249 द्रव्य और प्रदेशों की अपेक्षा से छह लेश्या स्थानों का अल्प-बहुत्व
1216-1217	छह लेश्या वाले जीवों में पाँच ज्ञान का कथन	पंचम उद्देशक	
1218	चतुर्थ उद्देशक पन्द्रह अधिकारों के नामों की गाथा	1250	छह लेश्याओं के नाम
1219	लेश्याओं के छह प्रकार	1251	छह लेश्याओं के रूप, वर्ण, गंध, रस और स्पर्श का परिणामन दृष्टांत
1220-1221	क. पूर्व-पूर्व लेश्या का उत्तरोत्तर लेश्या के रूप में परिणामन	1252-1255	लेश्याओं के परिणामन के हेतु षष्ठ उद्देशक
1222-1225	ख. छाछ, वस्त्र आदि के उदाहरण छह लेश्याओं के रूप, वर्ण, गंध, रस, स्पर्श का एक-दूसरों में परिणामन	1256	छह लेश्याओं के नाम
1226-1232	छह लेश्याओं के वर्ण उदाहरण सहित	1257(1-16)	अढ़ाई द्वीप के (कर्मभूमि, अकर्म भूमि और अंतर्द्वीपों के) मनुष्यों में छह लेश्या
1233-1238	छह लेश्याओं का आस्वाद उदाहरण सहित	1258(1-8)	छह लेश्या की अपेक्षा से अढ़ाई द्वीप के मनुष्यों में गर्भ स्थिति के भांगे
1239-1240	छह लेश्याओं के गंध	अष्टादसम कायस्थिति पद	
1241	शेष पाँच अधिकारों का कथन	1259	कायस्थिति के बावीस अधिकारों के नामों की गाथाएं
1242	छह लेश्याओं के परिणाम	1260	जीव की जीव रूप में संस्थिति
1243	छह लेश्याओं के प्रदेश	1261	नैरयिक की नैरयिक रूप में संस्थिति
1244	छह लेश्याओं के प्रदेशावगाढ	1262	क. तिर्यच की तिर्यच रूप में संस्थिति
1245	छह लेश्याओं की वर्गणाएं		ख. तिर्यचनी की तिर्यचनी रूप में संस्थिति

1263	क. मनुष्य की मनुष्य रूप में संस्थिति	1331-1334	सकषाय की सकषायी रूप में और अकषायी की अकषायी रूप में संस्थिति
1264	ख. मनुष्यनी की मनुष्यनी रूप में संस्थिति	1335-1342	सलेशी की सलेशी रूप में और अलेशी की अलेशी रूप में संस्थिति
1265	क. देव की देव रूप में संस्थिति	1343-1345	सम्यदृष्टि की सम्यदृष्टि के रूप में, मिथ्यादृष्टि की मिथ्यादृष्टि के रूप में व सम्यग्मिथ्यादृष्टि की सम्यग्मिथ्यादृष्टि के रूप में संस्थिति
1266-1270	ख. देवी की देवी रूप में संस्थिति		
	सिद्ध की सिद्ध रूप में संस्थिति		
	चतुर्गति प्राप्त जीवों की अपर्याप्त एवं पर्याप्त रूप में संस्थिति		
1271-1276	सहन्द्रिय-यावत्-अन्द्रिय की सहन्द्रिय-यावत्-अन्द्रिय रूप में संस्थिति	1346-1353	ज्ञानी की ज्ञानी के रूप में और अज्ञानी की अज्ञानी के रूप में संस्थिति
1277-1284	सहन्द्रिय अपर्याप्त की सहन्द्रिय अपर्याप्त रूप में और सहन्द्रिय पर्याप्त की सहन्द्रिय पर्याप्त रूप में संस्थिति	1354-1357 1358-1361	दर्शनी की दर्शनी के रूप में संस्थिति संयत की संयत रूप में, संयतासंयत की संयतासंयत रूप में असंयत की असंयत रूप में व नो संयत की नोसंयत के रूप में संस्थिति
1285-1299	सकाय की सकाय रूप में और अकाय की अकाय रूप में संस्थिति	1362-1363	साकारोपयोग की साकारोपयोग के रूप में और अनाकारोपयोग की अनाकारोपयोग के रूप में संस्थिति
1300-1320	सूक्ष्म की सूक्ष्म रूप में और बादर की बादर रूप में संस्थिति	1364-1373	आहारक की आहारक के रूप में और अनाहारक की अनाहारक के रूप में संस्थिति
1321-1325	सयोगी की सयोगी रूप में और अयोगी की अयोगी रूप में संस्थिति	1374-1375	भाषक की भाषक के रूप में और अभाषक की अभाषक के रूप में संस्थिति
1326-1330	सवेदी की सवेदी रूप में और अवेदी की अवेदी रूप में संस्थिति	1375-1382	परित की परित के रूप में, अपरित की अपरित के रूप में, नो परित की नो परित के रूप में व नोअपरित

1383-1385	की नो अपरित के रूप में संस्थिति पर्याप्त की पर्याप्त के रूप में, अपर्याप्त की अपर्याप्त के रूप में, नो पर्याप्त की नो पर्याप्त के रूप में और नो अपर्याप्त की नो अपर्याप्त के रूप में संस्थिति सूक्ष्म की सूक्ष्म के रूप में, बादर की बादर के रूप में, नो सूक्ष्म की नो सूक्ष्म के रूप में व नो बादर की नो बादर के रूप में संस्थिति	1400-1404	चौबीस दण्डक में तीन दृष्टि
1386-1388	संज्ञी की संज्ञी के रूप में, असंज्ञी की असंज्ञी के रूप में, नो संज्ञी की नो संज्ञी के रूप में व नो असंज्ञी की नो असंज्ञी के रूप में संस्थिति	1405	सिद्धों में एक दृष्टि
1389-1391	भवसिद्धिक की भवसिद्धिक के रूप में अभवसिद्धिक की अभवसिद्धिक के रूप में, नो भव सिद्धिक की नो भवसिद्धिक के रूप में व नो अभवसिद्धिक की नो अभवसिद्धिक के रूप में संस्थिति	1406	विंशतितम अन्तक्रिया-पद
1392-1394	धर्मास्तिकाय की धर्मास्तिकाय के रूप में-यावत् अद्धासमय की अद्धासमय के रूप में संस्थिति चरिम की चरिम के रूप में और अचरम की अचरम के रूप में संस्थिति	1407	अंतःक्रिया के दस द्वारों के नाम की गाथा
1395-1396		ख.	क. कोई जीव अन्तक्रिया करता है व कोई नहीं भी करता है
1397-1398		ख.	चौबीस दण्डकों में अन्तक्रिया का कथन प्रत्येक दण्डक की प्रत्येक दण्डक में अन्तक्रिया चौबीस दण्डक में अनंतरागत या परंपरागत की अन्तक्रिया
1399	एकोनविंशतितम सम्यक्त्व पद समुच्चय जीवों में तीन दृष्टि	1414-1416	चौबीस दण्डक में अनंतरागतों की एक समय में जघन्य-उत्कृष्ट अन्तक्रिया
		1417-1443	चौबीस दण्डक में उद्वर्तन, अनंतर व उत्पत्ति
		1444-1458	चौबीस दंडकों में तीर्थकरत्व प्राप्ति
		1459-1463	चौबीस दंडकों में चक्रवर्तीत्व प्राप्ति
		1464	चौबीस दंडकों में बलदेवत्व प्राप्ति
		1465	चौबीस दंडकों में वासुदेवत्व प्राप्ति
		1466	चौबीस दंडकों में मांडलिकत्व प्राप्ति
		1467	सेनापति रत्न पद-यावत्-स्त्री रत्न पद प्राप्ति
		1468	अश्वरत्नत्व व हस्तिरत्नत्व की प्राप्ति

1469	चक्ररत्नत्व -यावत्- काकिणी रत्नत्व की प्राप्ति	1489-1501	एकेन्द्रिय औदारिक शरीर -यावत्- सम्पूर्णम मनुष्य
1470	क. असंयत भव्य द्रव्य देव, अविगृहीत संयम वाले, विगृहीत संयम वाले, अविगृहीत-देश विरति वाले, विगृहीत-देश विरति वाले का जघन्य-उत्कृष्ट उपपात का कथन ख. असंज्ञी, तापस, कांदर्पिक, चरकादिक परिव्राजक, किल्बिषिक, तिर्यच, आजीविक, आभियोगिक और दर्शन श्रष्ट स्वलिङ्गी के जघन्य-उत्कृष्ट उपपात का कथन	1502-1513 1514-1520 1521-1526 1527-1532 1533(1-10) 1534 1535	औदारिक शरीर के संस्थान औदारिक शरीर की जघन्य उत्कृष्ट अवगाहना वैक्रिय शरीर के भेद-प्रभेद वैक्रिय शरीर के संस्थान वैक्रिय शरीर की अवगाहना आहारक शरीर के भेद-प्रभेद आहारक शरीर के संस्थान आहारक शरीर की अवगाहना
1471	चार प्रकार का असंज्ञी आयुष्य	1536-1539	तैजस् शरीर के भेद
1472	असंज्ञी नैरयिक -यावत्- देव आयुष्य का प्रमाण	1540-1544	तैजस् शरीर के संस्थान
1473	असंज्ञी आयुष्य वालों का अल्प-बहुत्व	1545-1551	तैजस् शरीर की अवगाहना
एकविंशतितम अवगाहना संस्थान पद			
1474	सात अधिकारों के नामों की गाथा	1552	कर्मण शरीर के भेद, संस्थान और अवगाहना
1475	पाँच प्रकार के शरीर	1553-1558	पाँच शरीरों के पुद्गलों के आने की दिशाओं का कथन
1476	औदारिक शरीर के पाँच भेद	1559-1564	पाँच शरीरों का परस्पर सम्बन्ध
1477-1481	एकेन्द्रिय -यावत्- चतुरिन्द्रिय औदारिक शरीर के भेद-प्रभेद	1565	द्रव्य और प्रदेशों की अपेक्षा पाँच शरीरों का अल्प- बहुत्व
1482-1487	पंचेन्द्रिय औदारिक शरीर के भेद-प्रभेद	1566	पाँच शरीरों की जघन्य-उत्कृष्ट अवगाहना का अल्प- बहुत्व
1488	औदारिक शरीर के संस्थान		

द्वाविंशतितम-क्रिया-पद

		परस्पर स्पर्श	
1567	पाँच क्रियाओं के नाम	1621-1626	आरंभिका आदि पाँच क्रियाओं के कर्त्ता
1568-1572	पाँच क्रियाओं के भेद-प्रभेद	1627	चौबीस दण्डकों में आरंभिकादि पाँच क्रियाएँ
1573	जीव के सक्रिय या अक्रिय होने के कारण	1628-1636	जीवों में आरंभिकादि पाँच क्रियाओं का परस्पर सम्बन्ध
1574-1580	जीवों व चौबीस दण्डकों में प्राणातिपात-यावत्-मिथ्यादर्शनशल्य के विषयों का कथन	1637-1641	प्राणातिपात विरत-यावत्-मिथ्यादर्शनशल्य विरत के विषयों का कथन
1581-1584	जीवों व चौबीस दण्डकों में (एकवचन और बहुवचन की अपेक्षा) प्राणातिपात-यावत्-मिथ्यादर्शनशल्य से कितनी कर्म प्रकृतियों का बंध	1642-1649	प्राणातिपात विरत-यावत्-मिथ्यादर्शनशल्य विरत की कितनी-कितनी कर्म प्रकृतियों का बंध
1585-1587	चौबीस दण्डकों में एकवचन और बहुवचन की अपेक्षा से एक कर्म प्रकृति के बंधन के समय संभवित क्रियाओं की संख्या	1650-1662	प्राणातिपात विरत-यावत्-मिथ्यादर्शनशल्य विरत की आरंभिकादि पाँच क्रियाएँ
1588-1604	जीव व चौबीस दण्डकों में एकत्व और पृथक्त्व से क्रिया प्ररूपण	1663	आरंभिकादि पाँच क्रियाओं का अल्प-बहुत्व
1605	पाँच प्राकर की क्रियाएँ	1664	प्रतिपाद्य विषयों की संग्रहणी गाथा
1606	चौबीस दण्डक में पाँच क्रियाओं की व्याप्ति	1665	अष्ट कर्म प्रकृतियों के नाम
1607-1616	जीवादि में क्रियाओं के सहभाव की प्ररूपणा	1666	चौबीस दण्डक में अष्ट कर्म प्रकृतियाँ
1617-1619	जीव व चौबीस दण्डक में आयोजिता (जीव को संसार में जोड़ने वाली) क्रियाओं की संख्या	1667-1669	जीव व चौबीस दण्डकों में एक वचन-बहुवचन की अपेक्षा अष्ट कर्म प्रकृतियों के बंध हेतुओं का क्रम
1620	जीव में एक समय एक क्रिया से दूसरी क्रिया का	1670	अष्ट कर्म बंध के चार कारण

त्रयोविंशतितम कर्म प्रकृति पद**प्रथम उद्देशक**

1671-1674	चौबीस दण्डक में अष्ट कर्म बंध के चार कारण	1690	क. वेदनीय के दो भेद
1675-1678	जीव व चौबीस दण्डक में अष्ट कर्म प्रकृतियों का वेदन		ख. शाता वेदनीय के आठ भेद ग. अशाता वेदनीय के आठ भेद
1679(1)	ज्ञानावरणीय के दस अनुभाव	1691	क. मोहनीय के दो भेद
1680(2)	दर्शनावरणीय के नव अनुभाव		ख. दर्शन मोहनीय के तीन भेद
1681(3)	क. शाता वेदनीय के आठ अनुभाव ख. अशाता वेदनीय के आठ अनुभाव		ग. चारित्रि मोहनीय के दो भेद घ. कषाय वेदनीय के सोलह भेद ङ. नो कषाय वेदनीय के नव भेद
1682(4)	मोहनीय के पाँच अनुभाव	1692	आयुर्कर्म के चार भेद
1683(5)	आयु कर्म के चार अनुभाव	1693	नाम कर्म के बियालीस भेद
1684(6)	क. शुभ नाम कर्म के चौदह अनुभाव ख. अशुभ नाम कर्म के चौदह अनुभाव	1694(1-18)	बियालीस भेदों के भेद-प्रभेद
1685(7)	क. उच्च गोत्र के आठ अनुभाव ख. नीच गोत्र के आठ अनुभाव	1695	क. गोत्र कर्म के दो भेद ख. उच्च गोत्र के आठ भेद ग. नीच गोत्र के आठ भेद
1686(8)	अंतराय कर्म के पाँच अनुभाव द्वितीय उद्देशक	1696	अंतराय कर्म के पाँच भेद
1687	अष्ट कर्म प्रकृतियों के नाम	1697-1704	अष्ट कर्मों की जघन्य-उत्कृष्ट स्थिति का विस्तृत विवरण
1688	ज्ञानावरणीय के पाँच भेद		
1689	क. दर्शनावरणीय के दो भेद ख. निद्रा पंचक के पाँच भेद ग. दर्शन चतुष्क के चार भेद	1705-1714	एकेन्द्रिय जीवों के अष्ट कर्म की जघन्य-उत्कृष्ट बंध स्थिति
		1715-1720	द्वीन्द्रिय जीवों के अष्ट कर्म की जघन्य-अत्कृष्ट

बन्ध स्थिति	1763-1765	वेदनीय आदि कर्म बन्ध के समय अन्य कर्मप्रकृतियों के बन्ध की प्ररूपणा
1721-1724 त्रीन्द्रिय जीवों के अष्ट कर्म की जघन्य-उत्कृष्ट बन्ध स्थिति	1766-1768	मोहनीय आदि कर्म बन्ध के समय अन्य कर्म प्रकृतियों के बन्ध की प्ररूपणा
1725-1727 चतुर्गिन्द्रिय जीवों के अष्ट कर्म की जघन्य-उत्कृष्ट बन्ध स्थिति	पञ्चविंशतितम कर्म बन्ध वेद पद	
1728-1733 असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय जीवों के अष्ट कर्म की जघन्य-उत्कृष्ट बन्ध स्थिति	1769-1774	जीवादि द्वारा ज्ञानावरणीय आदि कर्म बन्ध के समय कर्म प्रकृति वेद का निरूपण
1734-1741 संज्ञी जीवों के अष्ट कर्म की जघन्य-उत्कृष्ट बन्ध स्थिति	षड्विंशतितम कर्म वेद बन्ध पद	
1742-1744 उपशमादि भावों की अपेक्षा अष्ट कर्म की जघन्य-उत्कृष्ट स्थिति बाँधने वालों का कथन	1775-1782	ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय व अंतराय कर्मों के वेदन के समय अन्य कर्म प्रकृतियों के बन्ध का निरूपण
1745-1753 चार गतियों में अष्ट कर्म की उत्कृष्ट स्थिति बाँधने वालों का कथन	1783-1784	वेदनीय कर्म वेदन के समय अन्य कर्म प्रकृतियों के बन्ध का निरूपण
चतुर्विंशतितम कर्मबन्ध पद		
1754 क. अष्ट कर्म प्रकृतियों के नाम	1785	आयुष्य-नाम- गोत्र कर्म वेदन के समय कर्मप्रकृतियों के बन्ध की प्ररूपणा
ख. चौबीस दण्डक में अष्ट कर्म प्रकृतियाँ	1786	मोहनीय कर्मवेदन के समय का कथन ज्ञानावरणीय कर्मवेदन के समान जानना चाहिए
1755-1761 ज्ञानावरणीय कर्म बन्ध के समय अन्य कर्मप्रकृतियों के बन्ध की प्ररूपणा	सप्तविंशतितम कर्म वेद पद	
1762 दर्शनावरणीय कर्म बन्ध के समय अन्य कर्मप्रकृतियों के बन्ध की प्ररूपणा	1787-1792	ज्ञानावरणीय आदि कर्मों के वेदन के साथ अन्य कर्म प्रकृतियों के वेदन का प्ररूपण

अष्टाविंशतितम आहार पद**प्रथम उद्देशक**

1793	ग्याह अधिकारों के नाम की गाथाएं	1870	अनेक सिद्ध अनाहारक
1794(1-3)	चौबीस दण्डक में तीन प्रकार के आहार का कथन	1871-1872	(2) चौबीस दण्डक में भवसिद्धिक एक जीव-अनेक जीव आहारक-अनाहारक
1795-1805	नैरयिकों में आहारार्थी आदि सात द्वार (2-8)	1873	चौबीस दण्डक में अभवसिद्धिक एक जीव अनेक जीव आहारक-अनाहारक
1806	भवनपतियों में आहारार्थी आदि सात द्वार (2-8)	1874	चौबीस दण्डक में एक जीव नो भवसिद्धिक नो अभवसिद्धिक अनाहारक
1807-1813	एकेन्द्रियों में आहारार्थी आदि सात द्वार (2-8)	1875	(1) बहुत से नो भवसिद्धिक नो अभवसिद्धिक अनाहारक
1814-1823	विकलेन्द्रियों में आहारार्थी आदि सात द्वार (2-8)		(2) बहुत से सिद्ध जीव अनाहारक
1824-1828	पंचेन्द्रिय तिर्यचों, मनुष्यों, ज्योतिष्कों एवं वाणव्यंतरो में आहारार्थी आदि सात द्वार (2-8)	1876-1877	(3) चौबीस दण्डकों में संज्ञी जीव (एक जीव-अनेक जीव) आहारक-अनाहारक
1829-1852	वैमानिक देवों में आहारार्थी आदि सात द्वार (2-8)	1878-1880	चौबीस दण्डकों में असंज्ञी जीव (एक जीव-अनेक जीव) आहारक-अनाहारक
1853-1858	चौबीस दण्डक में एकेन्द्रिय शरीरों का-यावत्-पंचेन्द्रिय शरीरों का आहार	1881	क. नो संज्ञी, नो असंज्ञी जीव आहारक-अनाहारक
1859-1861	चौबीस दण्डक में रोम आहार और प्रक्षेप आहार	ख. एक सिद्ध अनाहारक	
1862-1864	चौबीस दण्डक में ओज आहार और मन के अनुकूल आहार	1882	क. बहुत से जीव नो संज्ञी-नो असंज्ञी आहारक-अनाहारक

द्वितीय उद्देशक

1865	तेरह अधिकारों के नामों की संग्रहणी गाथा	ख. अनेक सिद्ध अनाहारक	
1866-1869	(1) एक जीव व अनेक जीव तथा एक सिद्ध एवं चौबीस दण्डक में आहारक-अनाहारक	1883-1886(4)	जीव व चौबीस दण्डक में सलेश्य-यावत्-अलेश्य जीव आहारक-अनाहारक

1887-1889(5)	जीव व चौबीस दण्डक में सम्यग् दृष्टि, मिथ्या दृष्टि और मिश्र दृष्टि आहारक-अनाहारक	1904-1907(13)	जीव व चौबीस दण्डकों में पांचों पर्याप्त व अपर्याप्त संबंधी कथन
1890-1892(6)	चौबीस दण्डक में संयत, असंयत, संयतासंयत जीव आहारक-अनाहारक	1908	उपयोग के दो भेद
1893	नो संयत-नो असंयत, नो संयता-संयत तथा जीव सिद्ध अनाहारक	1909	साकारोपयोग के आठ भेद
1894-1896(7)	चौबीस दण्डक में सकषायी-यावत्-अकषायी जीव आहारक-अनाहारक	1910	अनाकारोपयोग के चार भेद
1897-1899(8)	चौबीस दण्डक में ज्ञानी और अज्ञानी जीव आहारक	1911	समुच्चय जीवों में उपयोग के बारह भेद
1900	(9) चौबीस दण्डक में सयोगी-यावत्-अयोगी जीव आहारक-अनाहारक	1912-1927	चौबीस दण्डक में साकारोपयोग और अनाकारोपयोग का कथन
1901	(10) चौबीस दण्डक में साकारोपयुक्त अनाकारोपयुक्त जीव आहारक-अनाहारक	1928-1835	जीवों व चौबीस दण्डकों में साकारोपयुक्तता और अनाकारोपयुक्तता का निरूपण
1902	(2) सिद्ध जीव अनाहारक		त्रिंशत्तम पश्यता पद
	(11) क. चौबीस दण्डक में सवेदी-यावत्-नपुंसकवेदी जीव आहारक-अनाहारक	1936	पश्यता के दो भेद
	(4) ख. अवेदी सिद्ध अनाहारक	1937	साकार पश्यता के छह भेद
1903	(12) चौबीस दण्डक में सशरीरी जीव-यावत्-कार्माण शरीरी आहारक अशरीरी जीव व सिद्ध अनाहारक	1938	अनाकार पश्यता के तीन भेद
		1939-1953	जीवों व चौबीस दण्डकों में साकार-अनाकार पश्यता
		1954-1962	जीवों व चौबीस दण्डकों में साकारपश्यता व अनाकार पश्यता का निरूपण
		1963	केवली का एक समय में एक ही उपयोग

1964	क. ईषत्प्रागभारा-यावत्-रत्नप्रभा के जानने और देखने का भिन्न-भिन्न समय	2022-2026(5)	मध्यवर्ती या बाहर होने की विचारणा
	ख. परमाणु पुद्गल-यावत्-अनंत प्रदेशी स्कंध के जानने और देखने का भिन्न-भिन्न समय	2027-2031(6-7)	चौबीस दंडकों में देशावधि और सर्वावधि चौबीस दंडकों में आनुगामिक-यावत्-अनवस्थित अवधिज्ञान

एकत्रिंशत्तम संज्ञी पद

1965-1972	जीवों व चौबीस दण्डकों में संज्ञी-असंज्ञी	2032	सात अर्थाधिकारों के नाम की गाथा
1973	सिद्ध नो संज्ञी नो असंज्ञी	2033-2037(1)	चौबीस दण्डक में अनन्तराहार-यावत्-विकुर्वणा

द्वात्रिंशत्तम संयत पद

1974	सामान्य जीव व संयत-यावत् नो संयत-नो असंयत-नो संयता-संयत का कथन	2038-2039(2)	चौबीस दण्डक में-इच्छापूर्वक और अनिच्छापूर्वक आहार
1975-1979	चौबीस दण्डक में संयत, असंयत, संयता संयत, नो संयत, नो असंयत, नो असंयतासंयत	2040-2046(3) क.	चौबीस दण्डक में आहार रूप में गृहीत पुद्गलों का जानना एवं देखना
1980	सिद्ध संयत, असंयत, संयतासंयत नहीं किन्तु नो संयत-नो असंयत-नो संयतासंयत	ख.	जानने-देखने और न जानने व न देखने का हेतु

त्रायस्त्रिंशत्तम-अवधिपद

1981	सात अर्थाधिकारों के नाम की गाथा	2047-2048(4)	चौबीस दण्डक में जीवों के अध्यवसाय
1982	(1) अवधिज्ञान के भेद-प्रभेद	2049-2050(5)	चौबीस दण्डक के जीव सम्यक्की-यावत्-सम्यग्मिथ्यात्वी
1983-2007(2)	चौबीस दंडकों में अवधिज्ञान का क्षेत्र	2051 (6)	देवों की परिचारणा के भांगे
2008-2016(3)	चौबीस दंडकों में अवधिज्ञान का संस्थान	2052	क. परिचारणा के पाँच भेद
2017-2021(4)	चौबीस दंडकों में अवधि (ज्ञान) के	(1)	पाँच प्रकार की परिचारणा के हेतु

2053	(2) देवताओं के शुक्र का परिणमन (3-6) स्पर्श परिचारक देवों के मन का विकल्प देवों में पाँच प्रकार की परिचरणा का अल्प- बहुत्व	2069 (5) दुःख आदि तीन प्रकार की वेदना 2070-2071 चौबीस दण्डक में दुःख आदि तीन प्रकार की वेदना 2072 (6) आभ्युपगमिकी व ओपक्रमिकी दो प्रकार की वेदना 2073-2076 चौबीस दण्डक में आभ्युपगमिकी व ओपक्रमिकी में दो प्रकार की वेदना 2077 (7) निदा व अनिदा दो प्रकार की वेदना 2078-2084 चौबीस दण्डक में निदा व अनिदा दो प्रकार की वेदना	2085 सात समुद्धात अधिकार की गाथा 2086 सात प्रकार का समुद्धात 2087-2088 सात समुद्धातों का काल 2089-2092 चौबीस दण्डक में समुद्धातों का कथन 2093-2096 चौबीस दण्डक में एक जीव के अतीत और भविष्यत् के समुद्धात 2097-2100 चौबीस दण्डक में अनेक जीवों के अतीत और भविष्यत् के समुद्धात 2101-2120 क. चौबीस दण्डक में एक जीव के एक भाव में
पंचत्रिंशत्तम वेदना पद			
2054	क. वेदना पद के सात अधिकार की गाथा ख. साता-असाता वेदना सभी जीव को ग. विकलेन्द्रिय मानस वेदना से रहित		
2055	(1) शीत आदि तीन प्रकार की वेदना		
2056-2059	चौबीस दण्डक में शीत आदि तीन प्रकार की वेदना		
2060	(2) द्रव्य आदि चार प्रकार की वेदना		
2061-2062	चौबीस दण्डक में द्रव्य आदि चार प्रकार की वेदना		
2063	(3) शारीरिक आदि तीन प्रकार की वेदना		
2064-2065	चौबीस दण्डक में शारीरिक आदि तीन प्रकार की वेदना		
2066	(4) साता आदि तीन प्रकार की वेदना		
2067-2068	चौबीस दण्डक में साता आदि तीन प्रकार की वेदना		

षट्त्रिंशत्तम समुद्धात पद

समुद्घातों की संख्या		काल एवं क्रिया का प्ररूपण	
ख. चौबीस दण्डक में एक जीव के एक भाव में अतीत	2168	केवली समुद्घात से निर्जरित पुद्गलों की सूक्ष्मता और लोक व्यापकता	
2121-2124		क. छद्मस्थ द्वारा निर्जरित पुद्गलों का न देख सकना	
		ख. न देख सकने का कारण	
2125-2132		ग. गंध पुद्गलों का उदाहरण	
		केवली समुद्घात के बिना भी निर्वाण	
2133		आवर्जीकरण का समय	
2134-2146		क. केवली समुद्घात का समय	
2147		ख. प्रत्येक समय में की जाने वाली क्रिया का वर्णन	
2148-2152		केवली समुद्घात के समय योगों का व्यापार	
2153-2155		क. केवली समुद्घात के पश्चात् योग व्यापार का निषेध	
		ख. केवली समुद्घात के पश्चात् सिद्ध पद	
2156-2158		क. संयोगी को सिद्ध पद की प्राप्ति नहीं होती	
		ख. योग निरोध का क्रम, सैलेशी अवस्था का काल	
2159-2164		परिमाण	
		ग. अयोगी को सिद्ध पद की प्राप्ति	
2165		क. सिद्धों के शरीरादि न होने का कारण	
		ख. अग्नि दग्ध बीज का उदाहरण	
2166-2167		आहारक समुद्घात से समवहत जीवादि के क्षेत्र,	

णमो संजयानं

गणितानुयोग प्रधान जम्बूद्वीप-प्रज्ञप्ति उपाङ्ग

अध्ययन	1
वक्षस्कार	7
उपलब्ध मूलपाठ	4146 श्लोक प्रमाण
गद्य सूत्र	178
पद्य सूत्र	52

16 जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति विषय-सूची

प्रथम भरत क्षेत्र वक्षस्कार

1	क. परमेष्ठी वंदना	9
	ख. मिथिला नगरी, माणिभद्र चैत्य, जितशत्रु राजा, धारिणी देवी	10
	ग. भ. महावीर का पदार्पण, परिषद्, धर्मकथा	
2	गौतम गणधर का भ. महावीर के समीप पदार्पण व जिज्ञासा	
3	क. जम्बूद्वीप का प्रमाण, आयाम-विष्कम्भ, परिधि	
	ख. जम्बूद्वीप का संस्थान	11
	ग. जम्बूद्वीप का स्वरूप वर्णन	
4	क. जम्बूद्वीप की जगति के मूल का विष्कम्भ	
	ख. जम्बूद्वीप की जगति के मध्य का विष्कम्भ	

ग.	जम्बूद्वीप की जगति के ऊपर का विष्कम्भ	
घ.	गवाक्ष कटक-गोखड़ों की ऊँचाई	
ङ.	गवाक्ष कटक-गोखड़ों का विष्कम्भ	
च.	पद्मवरवेदिका की ऊँचाई आदि	
	वनखण्ड का विष्कम्भ और परिधि वर्णन	5
	वनखण्ड में देवताओं की क्रीड़ा	6
	जम्बूद्वीप के चार द्वार	7
क.	जम्बूद्वीप के विजय द्वार का स्थान	8
ख.	जम्बूद्वीप के विजय द्वार की ऊँचाई, विष्कम्भ	
ग.	विजया राजधानी का वर्णन	
	एक द्वार से दूसरे द्वार का अंतर	9
क.	भरत क्षेत्र का स्थान, दिशा निर्णय वर्णन, विष्कम्भ	10
ख.	भरत क्षेत्र का आयताकार और विस्तार	
ग.	भरत क्षेत्र के उत्तर-दक्षिण का संस्थान	
घ.	भरत क्षेत्र के छह विभाग	
ङ.	भरत क्षेत्र के प्रधान दो विभाग	
क.	दक्षिणार्ध भरत का स्थान, दिशा निर्णय, आयताकार और विस्तार संस्थान	11
ख.	दक्षिणार्ध भरत के तीन विभाग और विष्कम्भ	
ग.	दक्षिणार्ध भरत की जीवा का आयाम	

12	घ. दक्षिणार्ध भरत के धनुष्य की परिधि	14	क. विद्याधर श्रेणियों की भूमि का आकार स्वरूप
	ङ. दक्षिणार्ध भरत का स्वरूप		ख. दक्षिण में विद्याधरों के नगर
	च. दक्षिणार्ध भरत के मनुष्यों का संघयण-संस्थान, शरीर की ऊँचाई, आयु और गति		ग. उत्तर में विद्याधरों के नगर
			घ. विद्याधर राजाओं का वर्णन
13	क. वैताढ्य पर्वत का स्थान, दिशा निर्णय, आयत विस्तार	15	विद्याधर श्रेणियों का वर्णन
	ख. वैताढ्य पर्वत की ऊँचाई, उद्बेध और विष्कम्भ	16	क. आभियोगिक श्रेणियों के देवों का वर्णन
	ग. वैताढ्य पर्वत की बाहा का आयाम		ख. व्यंतर देवों का क्रीड़ा स्थल
	घ. वैताढ्य पर्वत की जीवा का आयाम		ग. शक्रेन्द्र के आभियोगिक देवों के भवन
	ङ. वैताढ्य पर्वत के धनुष्य की परिधि		घ. भवनों का वर्णन
	च. वैताढ्य पर्वत की पद्मवर वेदिका का विष्कम्भ		इ. आभियोगिक देवों का वर्णन
	छ. वैताढ्य पर्वत के वनखण्ड का विष्कम्भ		च. आभियोगिक देवों की स्थिति
	क. वैताढ्य पर्वत के पूर्व-पश्चिम में दो गुफा		छ. आभियोगिक श्रेणियों से शिखर की दूरी
	ख. गुफाओं का आयत, विस्तार, आयाम-विष्कम्भ		ज. शिखर का आयत-विस्तार, विष्कम्भ, आयाम
	ग. गुफाओं के कपाट की ऊँचाई		झ. शिखर की पद्मवर वेदिका और वनखण्ड
	घ. गुफाओं के नाम, दो देव, देवों की स्थिति	17	वैताढ्य पर्वत के शिखर तल का वर्णन, व्यंतर देवों का क्रीड़ा स्थल
	ङ. वैताढ्य पर्वत के दोनों पार्श्व में दो विद्याधर श्रेणियाँ		वैताढ्य पर्वत पर नौ कूट
	च. विद्याधर श्रेणियों का स्थान, आयत, विस्तार, विष्कम्भ	18	क. सिद्धायतन कूट का स्थान
	छ. विद्याधर श्रेणियों के दोनों पार्श्व में दो पद्मवर वेदिका, दो वनखण्ड	19	ख. सिद्धायतन कूट की ऊँचाई
	ज. पद्मवर वेदिकाओं की ऊँचाई, विष्कम्भ		ग. सिद्धायतन कूट के मूल, मध्य और ऊपर की चौड़ाई
	झ. वनखण्डों का आयाम-विष्कम्भ		घ. सिद्धायतन कूट के मूल, मध्य और ऊपर की परिधि

ड.	पद्मवर वेदिका-वनखण्ड वर्णन	ड.	देवों की राजधानियों का स्थान
च.	सिद्धायतन का आयाम-विष्कम्भ, ऊँचाई आदि वर्णन	क.	वैताढ्य पर्वत नाम होने का हेतु
छ.	सिद्धायतन के तीन द्वारों की ऊँचाई, विष्कम्भ आदि वर्णन	ख.	वैताढ्य गिरि कुमार देव और उसकी स्थिति
ज.	देवछंदक का आयाम-विष्कम्भ और ऊँचाई	ग.	वैताढ्य नाम शास्वत
झ.	एक सौ आठ जिन प्रतिमाओं की ऊँचाई आदि का विस्तृत वर्णन	क.	उत्तरार्ध भरत का स्थान
ञ.	दक्षिणार्ध भरतकूट का स्थान प्रमाण	ख.	उत्तरार्ध भरत के तीन विभाग
ख.	प्रासाद की ऊँचाई और विष्कम्भ	ग.	उत्तरार्ध भरत का आयाम
ग.	मणिपीठिका का आयाम-विष्कम्भ और ऊँचाई	घ.	उत्तरार्ध भरत की बाहा का आयाम
घ.	भरतकूट नाम हेतु	ड.	उत्तरार्ध भरत की जीवा का आयाम
ड.	दक्षिणार्ध भरत देव और उसकी स्थिति	च.	उत्तरार्ध भरत के धनुष्य की परिधि
च.	सामानिक देव, अग्रमहिषी, परिषद्, सेना, सेनापति, आत्तरक्षक देव आदि की संख्या	छ.	उत्तरार्ध भरत का स्वरूप
छ.	दक्षिणार्ध राजधानी का स्थान	ज.	उत्तरार्ध भरत के मनुष्यों का स्वरूप एवं गति
ज.	शेष कूटों का समान वर्णन	क.	ऋषभकूट पर्वत का स्थान
झ.	तीन कूट स्वर्णमय, छह कूट रत्नमय	ख.	ऋषभकूट पर्वत की ऊँचाई और उद्वेध
ञ.	दो कूट के देवों के नाम	ग.	ऋषभकूट पर्वत के मूल, मध्य और ऊपर का विष्कम्भ
ट	शेष छह कूटों के नामों के अनुसार देवों के नाम	घ.	मूल, मध्य और ऊपर की परिधि
ठ	देवों की स्थिति	ड.	पद्मवर वेदिका व वनखण्ड का वर्णन
		च.	प्रासाद की ऊँचाई व विष्कम्भ आदि
		छ.	ऋषभ नामक देव व राजधानी वर्णन

द्वितीय काल वक्षस्कार

24	क. काल के दो भेद	26	छ. उत्सर्पिणी-अवसर्पिणी काल प्रमाण
	ख. अवसर्पिणी काल के छह भेद	27	अवसर्पिणी के सुषमसुषमा काल का विस्तृत वर्णन
	ग. उत्सर्पिणी काल के छह भेद	28	दस कल्पवृक्ष वर्णन
	घ. एक मुहूर्त के श्वासोच्छ्वास		क. भरत क्षेत्र के मनुष्यों का वर्णन
	ङ. प्राण, स्तोक, लव, मुहूर्त, अहोरात्र, पक्ष, मास, ऋतु, अयन, संवत्सर, युग, शतवर्ष, सहस्रवर्ष, लक्षवर्ष, पूर्वांग पूर्व-यावत्-शीर्ष प्रहेलिका के प्रमाण	29	ख. भरत क्षेत्र के स्त्रियों का वर्णन
25	क. औपमिक काल के दो भेद		ग. बत्तीस लक्ष्णों के नाम
	ख. पल्योपम का स्वरूप		क. सुषम-सुषमा के मनुष्यों की आहारेच्छा का काल
	ग. परमाणु-यावत्-पल्य प्रमाण का वर्णन		ख. सुषम-सुषमा में मनुष्यों का आहार
	घ. सागरोपम का प्रमाण	30	ग. सुषम-सुषमा में पृथ्वी का आस्वाद
	ङ. अवसर्पिणी काल के छह भेद		घ. सुषम-सुषमा में पुष्प-फलों का आस्वाद
(1)	सुषमा-सुषमा काल का प्रमाण		ङ. सुषम-सुषमा के फल का आस्वाद सुखप्रद
(2)	सुषमा काल का प्रमाण		क. सुषम-सुषमा में मनुष्यों का निवास स्थान
(3)	सुषम-दुषमा काल का प्रमाण		ख. सुषम-सुषमा में वृक्षों का आकार
(4)	दुषम-सुषमा काल का प्रमाण	31	1. सुषम-सुषमा में गृह, ग्रामादि का अभाव
(5)	दुषमा काल का प्रमाण		2. सुषम-सुषमा में यथेच्छा क्रिया करने वाले मनुष्य
(6)	दुषम-दुषमा काल का प्रमाण		3. सुषम-सुषमा में असि, मसि, कृषि कर्मों का अभाव
च.	उत्सर्पिणी काल प्रमाण के 6 आरे		4. सुषम-सुषमा में सोना-यावत्-पुखराज होते हैं, उपयोग में नहीं आते
			5. सुषम-सुषमा में राजा-यावत्-सेठ नहीं होते
			6. सुषम-सुषमा में दास-यावत्-कर्मकर नहीं होते

7. सुषम-सुषमा में माता आदि से राग का अभाव	7. सुषम-सुषमा में मनुष्यों की अवगाहना (ऊंचाई)
8. सुषम-सुषमा में वैर का अभाव	8. सुषम-सुषमा में मनुष्यों का संहनन
9. सुषम-सुषमा में मित्रादि हैं, तीव्र राग नहीं होता	9. सुषम-सुषमा में मनुष्यों का संस्थान
10. सुषम-सुषमा में विवाहादि का अभाव	10. सुषम-सुषमा में मनुष्यों की पसलियाँ
11. सुषम-सुषमा में इन्द्रमहोत्सव आदि का अभाव	11. सुषम-सुषमा में प्रसवकाल
12. सुषम-सुषमा में नटादि का अभाव	12. सुषम-सुषमा में शिशु पालन का काल
13. सुषम-सुषमा में यानों का अभाव	13. सुषम-सुषमा में मनुष्यों की मरणोत्तर गति
14. सुषम-सुषमा में गाय आदि की उपयोगिता का अभाव	14. सुषम-सुषमा में मनुष्यों की छः जातियाँ
15. सुषम-सुषमा में अश्व आदि की उपयोगिता का अभाव	15. सुषम-सुषमा में मनुष्यों की छः जातियाँ
16. सुषम-सुषमा में सिंहादि श्वापदों की क्रूरता का अभाव	16. सुषम-सुषमा में मनुष्यों की छः जातियाँ
17. सुषम-सुषमा में धान्यों का अनुपयोग	17. सुषम-सुषमा में मनुष्यों की छः जातियाँ
18. सुषम-सुषमा में विषम भूमि का अभाव	18. सुषम-सुषमा में मनुष्यों की छः जातियाँ
19. सुषम-सुषमा में स्थाणु कंटकादि का अभाव	19. सुषम-सुषमा में मनुष्यों की छः जातियाँ
20. सुषम-सुषमा में दंसमशकादि उपद्रव रहित	20. सुषम-सुषमा में मनुष्यों की छः जातियाँ
21. सुषम-सुषमा में सांप, अजगर भद्र प्रकृति के	21. सुषम-सुषमा में मनुष्यों की छः जातियाँ
22. सुषम-सुषमा में युद्धादि का अभाव	22. सुषम-सुषमा में मनुष्यों की छः जातियाँ
23. क. सुषम-सुषमा में पैतृक रोगों का अभाव	23. क. सुषम-सुषमा में मनुष्यों की छः जातियाँ
ख. सुषम-सुषमा में महारोगों का अभाव	23. ख. सुषम-सुषमा में मनुष्यों की छः जातियाँ
ग. सुषम-सुषमा में भूतबाधा का अभाव	23. ग. सुषम-सुषमा में मनुष्यों की छः जातियाँ
1. सुषम-सुषमा में मनुष्यों की स्थिति (आयु)	23. ग. सुषम-सुषमा में मनुष्यों की छः जातियाँ

भ. श्री ऋषभदेव जीवन दर्शन

- क. भ. ऋषभदेव की उत्पत्ति
ख. भ. ऋषभदेव का कुमार काल

ग. भ. ऋषभदेव का राज्यपद काल	झ. भ. ऋषभदेव के गण-गणधर
घ. पुरुषों की बहतर कलाओं का उपदेश	ञ. भ. ऋषभदेव के उत्कृष्ट श्रमण प्रमुख ऋषभसेन
ङ. स्त्रियों की चौसठ कलाओं का उपदेश	ट. भ. ऋषभदेव के उत्कृष्ट श्रमणियाँ प्रमुख ब्राह्मी, सुंदरी
च. भ. ऋषभदेव द्वारा पुत्र का राज्याभिषेक	ठ. भ. ऋषभदेव के उत्कृष्ट श्रमणोपासक प्रमुख श्रेयांस
छ. भ. ऋषभदेव का अपगार प्रव्रज्या ग्रहण	ड. भ. ऋषभदेव के उत्कृष्ट श्रमणोपासिका प्रमुख सुभद्रा
ज. भ. ऋषभदेव का केशलोच	ढ. भ. ऋषभदेव के उत्कृष्ट चौदह पूर्वी मुनि
झ. भ. ऋषभदेव के दीक्षा-काल का तप	ण. भ. ऋषभदेव के उत्कृष्ट अवधिज्ञानी मुनि
ञ. भ. ऋषभदेव के साथ दीक्षित होने वालों की संख्या	त. भ. ऋषभदेव के उत्कृष्ट केवलज्ञानी मुनि
ट. भ. ऋषभदेव का एक देवदूथ	थ. भ. ऋषभदेव के उत्कृष्ट वैक्रियलब्धिधारी मुनि
क. भ. ऋषभदेव द्वारा वर्ष पर्यंत देव दूथ धारण	द. भ. ऋषभदेव के उत्कृष्ट मनःपर्यवज्ञानी मुनि
ख. भ. ऋषभदेव के उपसर्ग	ध. भ. ऋषभदेव के उत्कृष्ट वादलब्धिधारी मुनि
ग. भ. ऋषभदेव के संयमी जीवन का वर्णन	न. भ. ऋषभदेव के उत्कृष्ट अनुत्तरोपपातिक मुनि
घ. भ. ऋषभदेव के संयमी जीवन की उपमायें	प. भ. ऋषभदेव के उत्कृष्ट सिद्धपद प्राप्त करने वाले मुनि
ङ. भ. ऋषभदेव के चार प्रतिबंधों का अभाव	फ. भ. ऋषभदेव के उत्कृष्ट सिद्धपद प्राप्त आर्याएँ
च. भ. ऋषभदेव के केवलज्ञान का काल	ब. भ. ऋषभदेव के उत्कृष्ट सिद्धपद प्राप्त शिष्य-शिष्याओं की संयुक्त संख्या
छ. भ. ऋषभदेव के केवलज्ञान का स्थान	भ. भ. ऋषभदेव की दो प्रकार की अंतकृत भूमि
(पुरिमताल नगर, शकट मुख उद्यान, न्यग्रोध पादप के नीचे फाल्गुन कृष्ण एकादशी-पूर्वाह्न काल)	क. भ. ऋषभदेव के पाँच प्रधान जीवन प्रसंग उत्तराषाढा में
ज. भ. ऋषभदेव द्वारा पाँच महाव्रत और षड्जीवनिकाय का उपदेश	

- 40
- ख. भ. ऋषभदेव का निर्वाण अभिजित् नक्षत्र में
 क. भ. ऋषभदेव का संहनन, संस्थान व ऊंचाई
 ख. भ. ऋषभदेव का कुमार काल
 ग. भ. ऋषभदेव का राज्य काल
 घ. भ. ऋषभदेव का अनगर प्रव्रज्या काल
 ङ. भ. ऋषभदेव का छद्मस्थ जीवन
 च. भ. ऋषभदेव का केवली जीवन
 छ. भ. ऋषभदेव का निर्वाण काल
 ज. भ. ऋषभदेव का निर्वाण दिन माघकृष्णा त्रयोदशी
 झ. भ. ऋषभदेव का पूर्णायु
 ज. भ. ऋषभदेव का निर्वाण स्थान अष्टापद पर्वत
 ट. भ. ऋषभदेव के साथ निर्वाण होने वाले मुनि
 ठ. भ. ऋषभदेव के निर्वाण काल का तप
 ड. भ. ऋषभदेव का निर्वाण काल का आसन
 भ. ऋषभदेव का निर्वाणोत्सव करने के लिए अष्टापद पर्वत पर शक्र देवेन्द्र का आगमन
- 41
- क. ईशान देवेन्द्र का आगमन-यावत्-अच्युत देवेन्द्र का आगमन
- 42
- ख. भवनवासी, वाणव्यंतर व ज्योतिष्क इन्द्रों का आगमन
 क. देवों द्वारा नन्दनवन से चन्दन काष्ठ लाना
- ख. आभियोगिक देवों द्वारा क्षीरोदक लाना
 ग. शक्र द्वारा स्नान, चन्दन लेपन, श्वेत वस्त्र पहनाना, आभूषण पहनाना
 घ. शक्र द्वारा चित्रित एक तीर्थकर, एक गणधर और एक साधु के लिए तीन शीविकाएं मंगवाई
 ङ. शक्र के आदेश से अग्नि कुमार व वायु कुमार द्वारा चिता प्रज्ज्वलन
 च. भवनपति व वैमानिक देवों द्वारा चिता में अगर, तुरुष्क, घी
 छ. मेघ कुमार देवों द्वारा क्षीरोदक से अग्नि शांत
 ज. देवेन्द्रों द्वारा जिन अस्थियों का ग्रहण
 झ. देवेन्द्रों द्वारा तीन चैत्यस्तूपों के निर्माण का आदेश
 ज. नंदीश्वर द्वीप में अष्टान्हिका निर्वाण महोत्सव
 ट. शक्रेन्द्र द्वारा पूर्व अंजनक पर्वत पर अष्टान्हिका महोत्सव
 ठ. लोकपालों द्वारा चार दधिमुख पर्वतों पर अष्टान्हिका महोत्सव
 ड. ईशानेन्द्र द्वारा उत्तर के अंजनक पर्वत पर अष्टान्हिका महोत्सव
 ढ. लोकपालों द्वारा चार दधिमुख पर्वतों पर अष्टान्हिका

महोत्सव		ग. दुषमा काल के अंतिम भाग में धर्म-विच्छेद
ण. चमेन्द्र द्वारा दक्षिण के अंजनक पर्वत पर अष्टान्हिका	46	अवसर्पिणी काल के छठे आरे दुषमा-दुषमा काल का
महोत्सव		विस्तृत वर्णन
त. लोकपालों द्वारा चार दधिमुख पर्वतों पर अष्टान्हिका	47	क. उत्सर्पिणी काल के प्रथम आरे दुषम-दुषमा काल का वर्णन
महोत्सव		
थ. बलेन्द्र द्वारा पश्चिम के अंजनक पर्वत पर अष्टान्हिका		ख. उत्सर्पिणी काल के द्वितीय आरे दुषमा काल का वर्णन
महोत्सव		
द. लोकपालों द्वारा चार दधिमुख पर्वतों पर अष्टान्हिका	48	उत्सर्पिणी के द्वितीय आरे दुषम काल में-पंच मेघ वर्षा
महोत्सव		
ध. देवेन्द्रों द्वारा सुधर्मा सभा के माणवक चैत्य स्तम्भों में		1. पुष्कर संवर्तक मेघ वर्षा वर्णन
जिन अस्थियों की स्थापना व अर्चना		2. क्षीर मेघ वर्षा वर्णन
क. अवसर्पिणी काल के चौथे आरे दुषम-सुषमा काल		3. घृत मेघ वर्षा वर्णन
का वर्णन		4. अमृत मेघ वर्षा वर्णन
ख. दुषम-सुषमा काल में तीन वंशों की उत्पत्ति		5. रस मेघ वर्षा वर्णन
ग. दुषम-सुषमा काल में तेवीस तीर्थकर	49	क. बिलवासी मनुष्यों द्वारा वृक्ष छाल पत्र का उपयोग प्रारंभ
घ. दुषम-सुषमा काल में ग्यारह चक्रवर्ती		
ङ. दुषम-सुषमा काल में नव बलदेव, नव वासुदेव		ख. माँसाहार का सर्वथा निषेध
च. अवसर्पिणी काल के पांचवें आरे दुषमा काल का		ग. माँसाहारियों की छाया के स्पर्श का निषेध
वर्णन	50	क. उत्सर्पिणी के द्वितीय आरे दुषमा में भरत क्षेत्र व मनुष्यों का स्वरूप
ख. दुषमा काल के तीन विभाग		

ख. उत्सर्पिणी के तृतीय आरे में दुषम-सुषमा काल का वर्णन		ग. आयुधशाला के अध्यक्ष का भरत से निवेदन
ग. उत्सर्पिणी के चतुर्थ आरे में दुषम-सुषमा काल का वर्णन	54	घ. भरत का चक्ररत्न को वंदन
घ. उत्सर्पिणी के पंचम आरे में सुषमा काल का वर्णन	55	ङ. आयुधशाला के अध्यक्ष को प्रीतिदान
पूर्ववत्		विनीता नगरी को सजाने का आदेश
ग. उत्सर्पिणी के छठे आरे में सुषम-सुषमा काल का वर्णन	56	क. भरत चक्रवर्ती का स्नान, शृंगार
वर्णन		ख. भरत का चक्ररत्न के समीप जाना
		क. भरत के साथ राजा महाराजा आदि का तथा पीछे पूजा सामग्री लेकर दासियों का जाना
तृतीय भरत चक्रवर्ती वक्षस्कार		
क. भरत नाम होने का हेतु	51	ख. भरत द्वारा चक्ररत्न की पूजा
ख. विनीता नगरी वर्णन		ग. अष्ट दिक्सीय महोत्सव का आदेश
ग. विनीता राजधानी के स्थान का निर्णय		घ. अठारह श्रेणी-प्रश्रेणियों को कर मुक्ति आदि का आदेश
घ. विनीता राजधानी का आयात विस्तार दिशा	56	क. चक्ररत्न का मागध तीर्थ की ओर प्रयाण
ङ. विनीता राजधानी का आयाम-विक्रम		ख. अभिषेक हस्ति और सेना को सन्नद्ध होने का आदेश
क. भरत चक्रवर्ती वर्णन	52	ग. भरत का मागध तीर्थ के समीप पहुँचना
ख. भरत चक्रवर्ती देह वर्णन		घ. बढई रत्न श्रेष्ठ (शिल्पकार) को स्कंधावार-(छावनी) निर्माण का आदेश
ग. बत्तीस प्रशस्त लक्षण		ङ. भरत का पौषधशाला में अष्टम भक्त तप
घ. भरत चक्रवर्ती की कुछ उपमाएँ		क. चौथे दिन प्रातः भरत का अश्वरथ पर आरूढ़ होकर आगे बढ़ना
क. आयुधशाला में चक्ररत्न की उत्पत्ति	53	
ख. आयुधशाला के अध्यक्ष द्वारा चक्ररत्न को वंदना		

ख.	लवण समुद्र के किनारे से मागध तीर्थाधिपति देव के भवन में बाण का प्रक्षेपण	65	क.	चक्ररत्न का तमिस्रा गुफा की ओर बढ़ना
ग.	मागध तीर्थाधिपति देव द्वारा भरत का सत्कार, बहुमूल्य वस्त्राभरण और मागध तीर्थोदक का समर्पण		ख.	भरत का अष्टम भक्त तप
घ.	भरत द्वारा मागध तीर्थाधिपति देव का सत्कार		ग.	कृतमाल देव द्वारा भरत का सत्कार-सन्मान
ङ.	भरत का स्कंधावार में लौटकर आना		घ.	स्त्री रत्न के लिये चौदह प्रकार के आभूषणों का समर्पण
च.	अष्टम भक्त तप का पारणा	66	ड.	भरत द्वारा कृतमाल देव का अष्टान्हिका महोत्सव
छ.	मागध तीर्थ देव का अष्टान्हिका महोत्सव			सुषेण सेनापति को सिंधु नदी, समुद्र और वैताढ्य पर्यंत के सभी राज्यों को आधीन करने का भरत का आदेश
ज.	सुदर्शन चक्र का वरदाम तीर्थ की ओर बढ़ना	67		सुषेण का विजय प्रयाण, चर्मरत्न द्वारा सिंधु नदी को पार करना
59-62	वरदाम और प्रभास तीर्थ का वर्णन (मागध तीर्थ के समान)		क.	सिंहल, बर्बर, अंगलोक, बलावलोक, यवनद्वीप, अरब, रोम, अलसण्ड, पिकसुर, कालमुख, जोनक आदि म्लेच्छ देश और कच्छ देश आदि जनपदों को जीतकर सुषेण का ससैन्य वापिस लौटना
63	चक्ररत्न का सिंधुदेवी भवन की ओर बढ़ना	68	ख.	भरत को सब उपहार भेंट करना, तत्पश्चात् स्वयं के पटमण्डप में जाकर विश्राम करना
	ख. स्कंधावार और पौषधशाला का निर्माण, भरत द्वारा अष्टम भक्त तप		क.	भरत का सुषेण को तमिस्रा गुफा के दक्षिणी द्वारा खोलने का आदेश
	ग. सिंधुदेवी द्वारा भरत का सत्कार-सन्मान		ख.	सुषेण द्वारा कृतमाल देव की आराधनार्थ अष्टम भक्त तप करना
	घ. भरत द्वारा अष्टम तप का पारणा			
	ङ. सिंधुदेवी का अष्टान्हिका महोत्सव			
64	क. चक्ररत्न का वैताढ्य पर्वत की ओर बढ़ना, स्कंधावार पौषधशाला, अष्टम भक्त, वैताढ्य गिरिकुमार देव द्वारा भरत का सत्कार	69		
	ख. भरत द्वारा वैताढ्य देव का अष्टान्हिका महोत्सव			

70	ग. चौथे दिन सुषेण द्वारा तमिस्र गुफा के द्वार की पूजा घ. गुफा के द्वार पर दण्ड रत्न का प्रहार ङ. भरत को द्वार खुलने की सूचना देना क. काकणी रत्न के प्रकाश से गजरत्न पर आरूढ़ होकर मणिरत्न सहित भरत का तमिस्र गुफा में प्रवेश ख. मणिरत्न और काकणी रत्न का प्रमाण ग. मणिरत्न और काकणी रत्न के अचिन्त्य प्रभाव क. उन्मग्न जला, निमग्नजला नाम देने का हेतु ख. भरत द्वारा उन्मग्नजला और निमग्नजला के ऊपर से सुखपूर्वक संक्रमणार्थ पुल बाँधने का आदेश ग. तमिस्रा गुफा के उत्तर द्वार का स्वयं खुलना क. उत्तरार्ध भरत में आपातचिलातों के प्रदेशों में उत्पातों का होना	74	क. त्रस्त चिलातों द्वारा स्व-कुलदेव मेघमुख नागकुमार की आराधना ख. नाग कुमारों द्वारा भरत सेना पर मूसलाधार वर्षा क. सतत वर्षा से त्रस्त भरत सेना की नौका रूप चर्मरत्न और छत्ररत्न से रक्षा ख. चर्मरत्न और छत्ररत्न का प्रमाण क. मणिरत्न से प्रकाश ख. गाथापति रत्न से सेना की भोजन व्यवस्था ग. सात रात्रि की सतत वर्षा से भरत सेना की सुरक्षा घ. विविध धान्यों के नाम क. चिन्तित भरत के सहयोग के लिये सोलह हजार देवों का आना
71	ख. मेघमुख नागकुमार को वर्षा करने से रोकना ग. चिलातों द्वारा आत्म समर्पण और भरत से क्षमा याचना घ. भरत की आज्ञा से सुषेण सेनापति का सिंधु नदी के पश्चिम तटवर्ती प्रदेशों को आज्ञाधीन करना क. चुल्ल हिमवंत गिरि की ओर चक्ररत्न का बढ़ना ख. चुल्ल हिमवंत देव की आराधना के लिये भरत का अष्टम तप करना ग. चौथे दिन प्रातः हिमवंत देव की सीमा में बाण फेंकना	75	
72	ख. चिलात सेना का भरत सेना से युद्ध ग. भरत सेना की पराजय क. असिरत्न और दण्डरत्न लेकर सुषेण सेनापति का चिलात सेना को परास्त करना ख. कमलामेल अश्वरत्न की ऊंचाई आदि का विशद वर्णन ग. असिरत्न का प्रमाण	76	
73		77	
		78	

79	घ. बहत्तर योजन पर्यंत बाण का जाना	ख. नवनिधि के नाम व स्वरूप की गाथाएं
	ङ. चुल्ल हिमवतं देव द्वारा भरत का सत्कार सम्मान और उत्तरी सीमा की सुरक्षा का आश्वासन	ग. नवनिधियों की लम्बाई-चौड़ाई
	क. भरत का ऋषभकुट पर्वत के समीप पहुँचना और कांकणी रत्न से नामांकन करना	घ. हस्तीरत्न तैयार करने का आदेश
	ख. चुल्ल हिमवतं देव का अष्टान्हिका महोत्सव	ङ. भरत का नवनिधि आराधनार्थ अष्टम तप
80	ग. दक्षिण में वैताढ्य पर्वत की ओर चक्ररत्न का बढ़ना	च. नवनिधियों की प्राप्ति, अष्टान्हिका महोत्सव
	क. वैताढ्य पर्वत के समीप भरत का अष्टम तप	छ. भरत का विनीता के लिए प्रस्थान
	ख. विद्याधर राज नमि-विनमि द्वारा भरत का उचित आतिथ्य	क. भरत के वैभव का वर्णन
	ग. सुभद्रा नामक स्त्री रत्न का समर्पण	ख. विनीता के समीप भरत का अष्टम तप
81	घ. भरत द्वारा विद्याधर राज नमि-विनमि का मान संवर्धन	ग. भरत का विनीता प्रवेश
	क. खण्ड प्रपात गुफा के दक्षिण द्वार का उद्घाटन	घ. सेनापति आदि राज्याधिकारियों तथा 18 प्रकार की श्रेणी-प्रश्रेणी का योग्य सत्कार सम्मान
	ख. नृत्यमाल देव की आराधना	ङ. भरत चक्रवर्ती की विजय-यात्रा समापन
	ग. भरत की आज्ञा से गंगा तटवर्ती प्रदेशों को आज्ञाधीन करने के लिये सुषेण का सफल प्रयाण	क. भरत का राज्याभिषेक
82	घ. उन्मग्न-निमग्नजला नदियों को पार करना	ख. अभिषेक मण्डप और अभिषेक पीठ का निर्माण
	ङ. खण्ड प्रपात गुफा के उत्तर द्वार का उद्घाटन	ग. अष्टम तप आराधना
	क. गंगा के पश्चिमी किनारे पर भरत के आदेश से स्कंधवार का निर्माण	घ. सेनापति-यावत्-पुरोहित अन्य सभी नगर प्रमुखों द्वारा भरत का अभिसिंचन
		ङ. सोलह हजार देवों द्वारा मुकुट और माला पहनाना
		च. बारह वर्ष पर्यंत विजय महोत्सव मनाते रहने की घोषणा

85	छ. अभिषेक के पश्चात् तप का पारणा ज. भरत चक्रवर्ती द्वारा सबका यथोचित आदर-सत्कार क. चक्रादि चार रत्नों का उत्पत्ति स्थान-आयुधशाला ख. चर्मादि तीन रत्नों और नौ महानिधियों का उत्पत्ति स्थान-श्रीघर ग. सेनापति आदि चार रत्नों का उत्पत्ति स्थान-विनीता राजधानी घ. अश्व-गज रत्न का उत्पत्ति स्थान-वैताढ्य पर्वत की तलहटी ङ. सुभद्रा स्त्री रत्न का उत्पत्ति स्थान-उत्तर विद्याधर श्रेणी	ज. अश्व सेना संख्या ट. गज सेना संख्या ठ. रथ सेना संख्या ड. पैदल सेना संख्या ढ. पुरवर-श्रेष्ठ नगर संख्या ण. जनपद देश संख्या त. ग्राम संख्या थ. द्रोणमुख संख्या द. पट्टण संख्या ध. कर्बट संख्या न. मडम्ब संख्या प. आकर संख्या फ. खेट संख्या ब. संबाध संख्या भ. अंतरोदक-द्वीप संख्या म. कुराज्य-भिल्लिदि राज्य संख्या य. विनीता राजधानी के अधीन राज्य सीमा क. भरत का आदर्श घर में आत्म दर्शन ख. केवलज्ञान-दर्शन की उत्पत्ति ग. आभरणादि का त्याग
86	भरत चक्रवर्ती का वैभव- क. रत्न संख्या ख. निधि संख्या ग. देव संख्या घ. आज्ञाधीन राजा संख्या ङ. ऋतु कल्याणिका संख्या च. जनपद कल्याणिका संख्या छ. नाटक के पात्रों, नाटक-मंडलियों, नाटकों की संख्या ज. सूपकार-रसोइया संख्या झ. श्रेणी-प्रश्रेणी संख्या	87

- घ. पंच मुष्टिक लुँचन
 ङ. साथ में दीक्षित होने वाले साधक
 च. अष्टापद पर्वत पर अंतिम साधना
 छ. भरत का कुमार जीवन
 ज. भरत का मंडलिक राज जीवन
 झ. भरत का चक्रवर्ती जीवन
 ञ. भरत का गृहवास जीवन
 ट. भरत का केवली जीवन
 ठ. भरत का श्रमण जीवन
 ड. भरत का सर्वायु जीवन
 ढ. भरत का संलेखना काल
 ण. भरत का निर्वाण समय नक्षत्र
 त. भरत का निर्वाण-मरण समय

88

भरत क्षेत्र का शाश्वत नाम

चतुर्थ चुल्ल हिमवंत वक्षस्कार

चुल्लहिमवंत वर्षधर पर्वत वर्णन

- 89 क. चुल्ल हिमवंत वर्षधर पर्वत के स्थान का निर्णय
 ख. चुल्ल हिमवंत वर्षधर पर्वत की ऊँचाई, उद्वेध और विष्कम्भ
 ग. चुल्ल हिमवंत वर्षधर पर्वत की बाहा का आयाम

- घ. चुल्ल हिमवंत वर्षधर पर्वत की जीवा का आयाम
 ङ. चुल्ल हिमवंत वर्षधर पर्वत के धनुष्य की परिधि
 च. चुल्ल हिमवंत वर्षधर पर्वत का संस्थान
 छ. चुल्ल हिमवंत वर्षधर पर्वत की पद्मवर वेदिका और वनखण्ड
 ज. चुल्ल हिमवंत वर्षधर पर्वत का वर्णन
 झ. चुल्ल हिमवंत वर्षधर पर्वत-वाणव्यंतरो का क्रीड़ा स्थल

पद्मद्रह वर्णन

90

- क. पद्मद्रह का आयत-विस्तार
 ख. पद्मद्रह का आयाम-विष्कम्भ
 ग. पद्मद्रह का उद्वेध
 घ. पद्मद्रह की पद्मवर वेदिका-वनखण्ड

पद्म वर्णन

- ड. पद्म का आयाम-विष्कम्भ
 च. पद्म का उद्वेध-ऊँचाई और अग्र भाग का परिमाण
 छ. पद्म की कर्णिका का आयाम विष्कम्भ
 ज. भवन का आयाम विष्कम्भ और ऊँचाई
 झ. भवन के तीन द्वार
 ञ. द्वारों की ऊँचाई व विष्कम्भ
 ट. मणिपीठिका का आयाम-विष्कम्भ और बाहल्य

- ठ. शयनीय वर्णन
 ड. पद्म को घेरने वाले पद्म
 ढ. पद्मों का आयाम-विष्कम्भ, बाहल्य, उद्वेध और ऊँचाई
 ण. पद्मों की कर्णिका का आयाम-बाहल्य
 त. श्रीदेवी के सामानिक देवों के पद्म
 थ. श्रीदेवी की महत्तरिकाओं के पद्म
 द. श्रीदेवी की तीन परिषद् के पद्म
 ध. सात अनिकाधिपति देवों के पद्म
 न. आत्म-रक्षक देवों के पद्म
 प. सर्व पद्मों की संख्या
 फ. पद्मद्रह नाम होने का हेतु
 ब. श्रीदेवी की स्थिति
 भ. पद्मद्रह शाश्वत नाम
- गंगा नदी वर्णन
 91 क. गंगा नदी का उद्गम स्थान
 ख. गंगावर्त कुण्ड पर्यंत गंगा प्रवाह का परिमाण
 ग. जिह्विका का परिमाण
 घ. गंगावर्त कुण्ड से गंगा प्रपात कुण्ड पर्यंत गंगा प्रवाह का परिमाण
 ड. गंगा प्रपात कुण्ड का आयाम-विष्कम्भ, परिधि,

- उद्वेध
 च. पद्मवेदिका और वनखण्ड का वर्णन
 छ. तीन सोपानों का वर्णन
 ज. तोरणों का वर्णन
 झ. अष्ट मंगलों का वर्णन
- गंगाद्वीप वर्णन
 ज. गंगाद्वीप का आयाम विष्कम्भ और परिधि
 ट. गंगादेवी के भवन का आयाम विष्कम्भ और ऊँचाई
 ठ. मणिपीठिका का वर्णन
 ड. गंगाद्वीप का शाश्वत नाम
 ढ. उत्तरार्ध भरत में सात हजार नदियों का गंगा में मिलना
 ण. दक्षिणार्ध भरत में चौदह हजार नदियों का गंगा में संगम
 त. गंगा का लवण समुद्र में मिलना
 थ. गंगा नदी के उद्गम स्थान में प्रवाह का विष्कम्भ और उद्वेध
 द. समुद्र संगम में गंगा नदी के प्रवाह का विष्कम्भ और उद्वेध

सिंधु नदी वर्णन

- ध. सिंधु नदी में चौदह हजार नदियों का संगम

न. सिंधु आवर्त कुण्ड वर्णन

प. सिंधु प्रपात कुण्ड वर्णन

सिंधु द्वीप वर्णन

फ. सिंधु द्वीप गंगा द्वीप के समान

रोहितांशा नदी वर्णन

ब. रोहितांशा नदी में अट्टावीस हजार नदियों का संगम

भ. रोहितांशा प्रपात कुण्ड में नदियों का संगम

रोहितांशा द्वीप

म. रोहितांशा द्वीप की लम्बाई-चौड़ाई-ऊँचाई

य. रोहितांशा नदी के लवण समुद्र में मिलने पर उसकी

लम्बाई-गहराई

चुल्ल हिमवंत कूट

92 क. चुल्ल हिमवंत पर ग्यारह कूट

ख. सिद्धायतन कूट का स्थान

ग. सिद्धायतन कूट के मूल, मध्य और ऊपर का विष्कम्भ

घ. सिद्धायतन कूट के मूल, मध्य और ऊपर की परिधि

ङ. सिद्धायतन का आयाम-विष्कम्भ और ऊँचाई

च. चुल्ल हिमवंत कूट का स्थान, आयाम-विष्कम्भ

छ. प्रासादावतंसक की ऊँचाई और विष्कम्भ

ज. सिंहासन, परिवार

झ. चुल्लहिमवंत कूट का हेतु

ञ. चुल्ल हिमवंत राजधानी का स्थान

ट. शेष कूटों का चुल्ल हिमवंत कूट के समान वर्णन

ठ. चार कूटों पर देवता, शेष कूटों पर देवियाँ

ड. चुल्ल हिमवंत नाम का हेतु

ढ. चुल्लहिमवंत पर्वत शाश्वत

हेमवत वर्ष

93

क. हेमवत क्षेत्र का स्थान

ख. हेमवत क्षेत्र का आयत, विस्तार दिशा

ग. हेमवत क्षेत्र का संस्थान

घ. हेमवत क्षेत्र का विष्कम्भ

ङ. हेमवत क्षेत्र की बाहा का आयाम

च. हेमवत क्षेत्र की जीवा का आयाम

छ. हेमवत क्षेत्र के धनुष की परिधि

ज. हेमवत क्षेत्र में सुषम-दुषमा काल के समान सर्वदा

स्थिति

शब्दापातीवृत्त वैताढ्य पर्वत

94

क. शब्दापाती वृत्त वैताढ्य का स्थान

ख. शब्दापाती वृत्त वैताढ्य की ऊँचाई, उद्वेध, संस्थान,

आयाम विष्कम्भ और परिधि

- ग. पद्मवर वेदिका और वनखण्ड वर्णन
घ. प्रासादावतंसक की ऊँचाई, आयाम-विष्कम्भ और सिंहासन परिवार
ङ. शब्दापाती वृत्त वैताढ्य नाम होने का हेतु
च. शब्दापाती देव की स्थिति और देव परिवार
छ. शब्दापाती राजधानी का स्थान
क. हैमवत नाम होने का हेतु
ख. हैमवत देव और उसकी स्थिति

महाहिमवान् वर्षधर पर्वत

- क. महा हिमवत वर्षधर पर्वत का स्थान
ख. महा हिमवत वर्षधर पर्वत के आयत विस्तार की दिशा

- ग. महा हिमवत वर्षधर पर्वत की ऊँचाई, उद्देश, विष्कम्भ
घ. महा हिमवत वर्षधर पर्वत की बाहा का आयाम
ङ. महा हिमवत वर्षधर पर्वत की जीवा का आयाम
च. महा हिमवत वर्षधर पर्वत के धनुष की परिधि
छ. पद्मवर वेदिका और वनखण्ड वर्णन
ज. वाणव्यंतर देवों का क्रीड़ा स्थल

महापद्मदह वर्णन

- क. महापद्मदह का स्थान

- ख. महापद्मदह का आयाम-विष्कम्भ
ग. पद्म का प्रमाण
घ. ह्री देवी और उसकी स्थिति
ङ. महापद्म दह यह शास्वत नाम

रोहिता नदी वर्णन

- च. रोहिता नदी के उद्गम स्थान में प्रवाह का परिमाण
छ. जिहिका का परिमाण
ज. रोहिता प्रपात कुण्ड का आयाम-विष्कम्भ, परिधि और उद्देश
झ. रोहित द्वीप का स्थान आयाम विष्कम्भ, परिधि और ऊँचाई

- ञ. पद्मवर वेदिका और वनखण्ड का वर्णन

- ट. भवन का आयाम-विष्कम्भ
ठ. अट्टवीस हजार नदियों का रोहिता नदी में संगम
ड. शेष वर्णन रोहिताशा नदी के समान

हरिकांता नदी का वर्णन

- ढ. हरिकांता नदी का स्थान
ण. जिहिका का परिमाण
त. हरिकांता प्रपात कुण्ड का आयाम विष्कम्भ और परिधि

थ. हरिकांता द्वीप का आयाम विष्कम्भ, परिधि और ऊँचाई

द. शेष वर्णन सिंधु द्वीप के समान

ध. हरिकांता नदी में छप्पन हजार नदियों का संगम

महाहिमवंत वर्षधर पर्वत के कूट

98 क. महा हिमवंत वर्षधर पर्वत के आठ कूट

ख. कूटों का आयाम-विष्कम्भ

ग. महा हिमवंत देव और उसकी स्थिति

हरिवर्ष क्षेत्र वर्णन

99 क. हरि वर्ष क्षेत्र का स्थान

ख. हरि वर्ष क्षेत्र का विष्कम्भ

ग. हरि वर्ष क्षेत्र की बाहा का आयाम

घ. हरि वर्ष क्षेत्र की जीवा का आयाम

ङ. हरि वर्ष क्षेत्र के धनुष्य की परिधि

च. हरि वर्ष क्षेत्र में सुषमाकाल के समान सदा स्थिति

विकटापाती वृत्त वैताढ्य पर्वत

छ. विकटापाती वृत्त वैताढ्य पर्वत का स्थान

ज. अरुण देव और उसकी स्थिति

झ. विकटापाती राजधानी का स्थान

ज. हरिवर्ष क्षेत्र नाम होने का हेतु

ट. हरिवर्ष देव और उसकी स्थिति

निषध वर्षधर पर्वत

100

क. निषध वर्षधर पर्वत का स्थान

ख. निषध वर्षधर पर्वत के आयत और विस्तार की दिशा

ग. निषध वर्षधर पर्वत की ऊँचाई, उद्देश और विष्कम्भ

घ. निषध वर्षधर पर्वत की बाहा का आयाम

ङ. निषध वर्षधर पर्वत की जीवा का आयाम

च. निषध वर्षधर पर्वत के धनुष्य की परिधि

छ. निषध वर्षधर पर्वत का संस्थान

ज. पद्मवर वेदिका और वनखण्ड का वर्णन

तिगिच्छ द्रह

झ. तिगिच्छ द्रह का स्थान

ज. तिगिच्छ द्रह के आयत और विस्तार की दिशा

ट. तिगिच्छ द्रह का आयाम-विष्कम्भ

ठ. तिगिच्छ द्रह के चारों ओर तीन-तीन सीढ़ी

ड. धृति देवी और उसकी स्थिति

हरिसलिला पदी

101

क. हरि नदी का स्थान

ख. हरि प्रपात कुण्ड वर्णन

- ग. हरि द्वीप भवन वर्णन
घ. छप्पन हजार नदियों का हरि नदी में संगम
ङ. शेष वर्णन हरिकांता नदी के समान
- सीतोदा महानदी**
- च. सीतोदा महानदी का स्थान
छ. सीतोदा महानदी की जिहिका का प्रमाण
ज. उद्गम स्थान से कुण्ड पर्यंत प्रवाह का परिमाण
झ. सीतोदा प्रपात कुण्ड का आयाम विष्कम्भ और परिधि
ञ. सीतोदा द्वीप का आयाम-विष्कम्भ, परिधि और ऊँचाई
ट. सीतोदा में चौगसी हजार नदियों का संगम
ठ. प्रत्येक चक्रवर्ती विजय से अट्ठावीस हजार नदियों का सीतोदा में संगम
ड. सीतोदा में पांच लाख बत्तीस हजार नदियों का मिलना
ढ. उद्गम स्थान में सीतोदा नदी का विष्कम्भ और उद्ग्रेध
ण. समुद्र में मिलने के स्थान में सीतोदा नदी का विष्कम्भ और उद्ग्रेध
त. पद्मवर वेदिका और वनखण्ड वर्णन
थ. निषध पर्वत पर नौ कूट
द. प्रत्येक कूट का परिमाण (चुल्ल हिमवंत कूट के समान)

- ध. निषध राजधानी का स्थान
न. निषध पर्वत नाम होने का हेतु
प. निषध देव और उसकी स्थिति
- महाविदेह क्षेत्र**
- 102
- क. महाविदेह क्षेत्र का स्थान
ख. महाविदेह क्षेत्र के आयात और विस्तार की दिशा
ग. महाविदेह का विष्कम्भ
घ. महाविदेह की बाहा का आयाम
ङ. महाविदेह की जीवा का आयाम
च. महाविदेह के धनुष की परिधि
छ. महाविदेह के चार विभाग
ज. महाविदेह में मनुष्यों के संहनन, संस्थान, अवगाहना और गति
झ. महाविदेह नाम होने का हेतु
ञ. महाविदेह देव और उसकी स्थिति
ट. महाविदेह का शास्वत नाम
- गंधमादन वक्षस्कार पर्वत**
- 103
- क. गंधमादन वक्षस्कार पर्वत का स्थान
ख. गंधमादन वक्षस्कार पर्वत के आयत और विस्तार की दिशा

ग. गंधमादन वक्षस्कार पर्वत का आयाम	ख. उत्तरकुरु क्षेत्र के आयत और विस्तार की दिशा
घ. नीलवंत वर्षधर पर्वत के समीप गंधमादन की ऊँचाई और विष्कम्भ	ग. उत्तरकुरु क्षेत्र का संस्थान
ङ. मेरु पर्वत के समीप गंधमादन की ऊँचाई और विष्कम्भ	घ. उत्तरकुरु क्षेत्र की जीवा का आयाम
च. गंधमादन वक्षस्कार पर्वत का संस्थान	ड. उत्तरकुरु क्षेत्र के धनुष्य की परिधि
छ. दो पद्मवर वेदिका और दो वनखण्ड का वर्णन	च. उत्तरकुरु क्षेत्र में सुषम-सुषमा काल के समान सदा स्थिति
ज. देवों का क्रीड़ा स्थल	
झ. गंधमादन पर्वत पर सात कूट	यमक पर्वत
ञ. चुल्ल हिमवंत पर्वत के सिद्धायतन कूट के समान कूटों का परिमाण	105
ट. कूटों की विविध दिशा	क. उत्तर कुरू में यमक पर्वतों का स्थान
ठ. स्फटिक और लोहिताक्ष कूट पर दो विक्रुमारियों का निवास	ख. यमक पर्वतों की ऊँचाई और उद्वेध
ड. शेष कूटों पर देवों का निवास	ग. यमक पर्वतों के मूल, मध्य और ऊपर का विष्कम्भ
ढ. कूटों पर प्रासादावतंसक और राजधानियां	घ. यमक पर्वतों के मूल और ऊपर की परिधि
ण. गंधमादन नाम होने का हेतु	ड. यमक पर्वतों का संस्थान
त. गंधमादन देव और उसकी स्थिति	च. प्रत्येक पर्वत पर दो पद्मवर वेदिका और दो वनखण्डों का वर्णन
थ. गंधमादन शास्वत नाम	छ. प्रासादावतंसकों की ऊँचाई, विष्कम्भ और सिंहासन परिवार
उत्तरकुरु क्षेत्र	ज. यमक देवों के आत्मरक्षक देव
104	झ. यमक नाम होने का हेतु
	ञ. यमक देव और उनके सामानिक देव

ट. यमक पर्वत शाखत नाम	ल. मुखमण्डपों की मणिपीठिकाओं की लम्बाई-चौड़ाई
ठ. यमक देवों की यमिका राजधानियों का स्थान	व. प्रेक्षागृहों का वर्णन
ड. यमिका राजधानियों का आयाम-विष्कम्भ	श. मुखमण्डपों की मणिपीठिकाओं की लम्बाई-चौड़ाई
ढ. यमिका राजधानियों की परिधि	ष. प्रेक्षागृह की मणिपीठिकाओं की लम्बाई-चौड़ाई
ण. यमिका राजधानियों के प्राकारों की ऊँचाई	स. उनमें तीन स्तूप व उनकी लम्बाई-चौड़ाई
त. यमिका राजधानियों के प्राकारों का मूल, मध्य और ऊपर का विष्कम्भ	ह. चैत्य वृक्ष, महेन्द्र ध्वजाएँ, दिशा-पीठिकाएँ, फलक, खट्टिकाएँ, धूपदान, माणवक चैत्य स्तंभ, दो छोटे महेन्द्र ध्वज, प्रहरण कोष, उपपात सभा, अभिषेक सभा, पुस्तक रत्न व उनकी मणिपीठिकाओं का वर्णन
थ. कपिशिर्षकों की ऊँचाई और बाहल्य	क्ष. यमक द्रहों का अंतर
द. यमिका राजधानियों के द्वार	
ध. द्वारों की ऊँचाई और विष्कम्भ	
न. यमिका राजधानी के चारों दिशाओं के चार वनखण्डों का वर्णन	
	नीलवंत द्रह 106
प. प्रासादावतंसकों का वर्णन	क. नीलवंत द्रह का स्थान
फ. उपकारिकालयनों का आयाम, विष्कम्भ, परिधि और बाहल्य	ख. नीलवंत द्रह के आयत और विस्तार की दिशा
ब. प्रत्येक के पद्मवार वेदिका और वनखण्ड का वर्णन	ग. दो पद्मवार वेदिका और दो वनखण्डों का वर्णन
भ. प्रासादावतंसकों का परिमाण	घ. नीलवंत नागकुमार देव
म. तीन प्रासाद पत्तियाँ	ङ. नीलवंत द्रह के दोनों पार्श्व में बीस-बीस कांचनाग पर्वत
य. प्रासाद पत्तियों की लम्बाई-चौड़ाई, ऊँचाई	च. कांचनाग पर्वतों का परिमाण
र. यमक देवों की सुधर्मा सभाओं का वर्णन	छ. पाँच हवों के नाम
	ज. प्रत्येक में एक-एक देव और उनकी स्थिति

जम्बूपीठ वर्णन

- 107 क. जम्बूपीठ का स्थान
 ख. जम्बूपीठ की परिधि
 ग. जम्बूपीठ का अंदर व बाहर का बाहल्य
 घ. पद्मवर वेदिका, वनखण्ड, त्रिसोपान और तोरणों का वर्णन
 ङ. मणिपीठिका की ऊँचाई और बाहल्य

जम्बू सुदर्शन वृक्ष

- च. जम्बू सुदर्शन वृक्ष की ऊँचाई और उद्देश
 छ. जम्बू सुदर्शन के स्कंधों का बाहल्य
 ज. जम्बू सुदर्शन की शाखाओं का आयाम-विष्कम्भ और अग्र भाग
 झ. जम्बू सुदर्शन की चारों दिशाओं में चार शाखाएँ
 ञ. चार शाखाओं के मध्य भाग में एक सिद्धायतन
 ट. सिद्धायतन का आयाम-विष्कम्भ और ऊँचाई
 ठ. सिद्धायतन के द्वार, द्वारों की ऊँचाई-विष्कम्भ
 ड. मणिपीठिका का आयाम-विष्कम्भ और बाहल्य
 ढ. देवछंदक का परिमाण
 ण. जिन प्रतिमाओं का वर्णन
 त. पूर्व दिशा की शाखा में एक भवन

- थ. शेष शाखाओं में प्रासादावतंसक सिंहासनादि
 द. बारह पद्मवर वेदिकाओं का वर्णन
 ध. एक सौ आठ जम्बू वृक्षों की ऊँचाई आदि
 न. छह पद्मवर वेदिकाओं का वर्णन
 प. अनाधृत देव के सामानिक देव
 फ. प्रत्येक सामानिक देव के जम्बू वृक्ष
 ब. अनाधृत देव की अग्रमहीषियाँ
 भ. अग्रमहीषियों के पूर्व आदि आठ दिशाओं में जम्बू वृक्षों का परिमाण
 म. सात सेनापतियों के सात जम्बू वृक्षों का परिमाण
 य. आत्मरक्षक देवों के जम्बू वृक्षों का परिमाण
 र. जम्बू वृक्ष के वनखण्डों का वर्णन
 ल. प्रथम वनखण्ड के भवन और शयनीय का वर्णन
 व. शेष वनखण्डों के भवनों का वर्णन
 श. चार पुष्करिणियों के मध्य स्थित प्रासादों का वर्णन
 ष. पुष्करिणियों के मध्य स्थित प्रासादों का वर्णन
 स. सोलह पुष्करिणियों के नाम
 ह. प्रासाद कूटों का वर्णन
 क्ष. जम्बू सुदर्शन वृक्ष के बारह नाम
 त्र. जम्बू सुदर्शन नाम होने का हेतु

३. जम्बू सुदर्शन शास्वत नाम

1. अनाधृता राजधानी का वर्णन यमिका राजधानी के

समान

2. उत्तरकुरु नाम होने का हेतु

3. उत्तरकुरुदेव और उसकी स्थिति

4. उत्तरकुरु शास्वत नाम है

माल्यवन्त वक्षस्कार पर्वत

108 क. माल्यवन्त वक्षस्कार पर्वत का स्थान

ख. माल्यवन्त वक्षस्कार पर्वत के आयत और विस्तार की दिशा

ग. माल्यवन्त पर्वत पर नौ कूट

घ. सिद्धायतन कूट की लम्बाई-चौड़ाई

ङ. सागर कूट पर सुभोगा देवी, सुभोगा राजधानी

च. रजत कूट पर भोगमालिनी देवी और उसकी राजधानी

छ. शेष कूटों के सदृश नाम वाले देव

हरिस्सह कूट

109 क. हरिस्सह कूट का परिमाण

ख. हरिस्सहा राजधानी का वर्णन (चमर चंचा राजधानी के समान)

ग. माल्यवन्त नाम होने का हेतु

घ. माल्यवन्त देव और उसकी स्थिति

ङ. माल्यवन्त शास्वत नाम है

कच्छ विजय

110

क. महाविदेह क्षेत्र में कच्छ विजय का स्थान

ख. कच्छ विजय के आयत और विस्तार की दिशा

ग. कच्छ विजय के छ विभाग

घ. कच्छ विजय का विष्कम्भ

ङ. वैताढ्य पर्वत से कच्छ विजय के दो भाग

च. दक्षिणार्ध के कच्छ विजय का स्थान

छ. दक्षिणार्ध के कच्छ विजय का आयाम-विष्कम्भ

ज. दक्षिणार्ध के कच्छ विजय का संस्थान

झ. दक्षिणार्ध के कच्छ विजय के मनुष्यों का वर्णन

ञ. कच्छ विजय में वैताढ्य पर्वत का स्थान

ट. वैताढ्य पर्वत के आयत और विस्तार की दिशा

ठ. विद्याधर श्रेणियों का वर्णन

ड. विद्याधरों के नगर

ढ. वैताढ्य पर्वत के कूट

ण. उत्तरार्ध कच्छ विजय का वर्णन

त. उत्तरार्ध कच्छ विजय में सिंधु कुण्ड का स्थान

थ. सिंधु नदी में चौदह हजार नदियों का संगम

द. सिंधु नदी का सीता नदी में संगम	छ. चित्रकूट पर्वत के चार कूट
ध. उत्तरार्ध कच्छ विजय में ऋषभ कूट पर्वत का स्थान आदि	ज. चित्रकूट देव और उसकी स्थिति
न. उत्तरार्ध कच्छ विजय में गंगा कुण्ड का वर्णन	झ. चित्रकूटा राजधानी का स्थान
प. कच्छ विजय नाम होने का हेतु	सुकच्छ विजय
फ. क्षेमा राजधानी का वर्णन (विनीता राजधानी के समान)	112
ब. कच्छ राजा का वर्णन (भरत चक्रवर्ती के समान)	क. सुकच्छ विजय का स्थान व लम्बाई-चौड़ाई
भ. कच्छ देव और उसकी स्थिति	ख. क्षेमपुरा राजधानी
म. कच्छ विजय का शास्वत नाम होना	ग. सुकच्छ राजा का वर्णन (कच्छ राजा के समान)
चित्रकूट वक्षस्कार पर्वत	घ. ग्राहावती कुण्ड का वर्णन (रोहितांश कुण्ड के समान)
111	ङ. अट्टावीस हजार नदियों का ग्राहावती नदी में मिलना
क. चित्रकूट वक्षस्कार पर्वत का स्थान	च. ग्राहावती नदी का सीता नदी में मिलना
ख. चित्रकूट वक्षस्कार पर्वत की आयत और विस्तार की दिशाएं	छ. ग्राहावती नदी का उद्बेध और प्रवाह का विष्कम्भ
ग. नीलवंत वर्षधर पर्वत के समीप चित्रकूट पर्वत का आयाम-विष्कम्भ	ज. ग्राहावती नदी के दोनों पार्श्व में दो पद्मवर वेदिका और दो वनखण्ड का वर्णन
घ. सीता नदी के समीप चित्रकूट पर्वत का आयाम- विष्कम्भ	महाकच्छ विजय
ङ. चित्रकूट पर्वत का संस्थान	113
च. चित्रकूट पर्वत के दोनों पार्श्व में दो पद्मवर वेदिकायें और दो वनखण्ड	क. महाकच्छ विजय का स्थान
	ख. महाकच्छ नामक देव
	पद्मकूट वक्षस्कार पर्वत
	114
	क. पद्मकूट वक्षस्कार पर्वत का स्थान
	ख. पद्मकूट वक्षस्कार पर्वत के आयत और विस्तार की दिशाएँ

कच्छगावती विजय	
ग. पद्मकूट वक्षस्कार पर्वत के चार कूट	
घ. पद्मकूट देव और उसकी स्थिति	
कच्छगावती विजय	
115 क. कच्छगावती विजय का स्थान	पुष्कलावती विजय
ख. कच्छगावती विजय के आयत और विस्तार की दिशा	119 क. पुष्कलावती विजय का स्थान
ग. कच्छगावती देव- (शेष वर्णन कच्छ विजय के समान)	ख. पुष्कलावती देव और उसकी स्थिति
घ. द्रहावती कुण्ड का स्थान	एकशैल वक्षस्कार पर्वत
ङ. द्रहावती नदी का सीतोदा नदी में मिलना	120 क. एक शैल वक्षस्कार पर्वत का स्थान
आवर्त विजय	
116 आवर्त विजय का स्थान	ख. एक शैल वक्षस्कार पर्वत के चार कूट
नलिनकूट वक्षस्कार पर्वत	
117 क. नलिनकूट वक्षस्कार पर्वत का स्थान	ग. एक शैल देव और उसकी स्थिति
ख. नलिनकूट वक्षस्कार पर्वत की आयत और विस्तार की दिशा	पुष्कलावती विजय
ग. नलिनकूट पर्वत के चार कूट	121 क. पुष्कलावती विजय का स्थान
मंगलावर्त विजय	
118 क. मंगलावर्त विजय का स्थान	ख. पुष्कलावती विजय के आयत और विस्तार की दिशा
ख. मंगलावर्त देव	ग. पुष्कलावती देव और उसकी स्थिति
ग. पंकावती कुण्ड का स्थान	उत्तरी शीतामुख वन
घ. पंकावती नदी	122 क. उत्तरी शीतामुख वन का स्थान
	ख. शीतामुख वन के आयत और विस्तार की दिशा
	ग. सीता नदी के समीप शीतामुख वन का विष्क्रम
	घ. नीलवर्त वर्षधर पर्वत के समीप शीतामुख वन का विष्क्रम
	ङ. पद्मवर वेदिका और वनखण्ड का वर्णन
	च. आठ राजधानियों के नाम
	छ. सोलह विद्याधर श्रेणियाँ

ज. सोलह अभियोगिक श्रेणियाँ	ग. निषध वर्षधर पर्वत के समीप सौमनस पर्वत का विष्कम्भ
झ. विजय समान उन्हीं नामों के चक्रवर्ती राजा	घ. देवों का क्रीड़ा स्थल
ञ. सोलह वक्षस्कार पर्वत-(चित्रकूट के समान)	ड. सौमनस देव और उसकी स्थिति
ट. बारह नदियाँ-(ग्राहावती नदी के समान)	च. सौमनस नाम शाश्वत
ठ. दो पद्मवरवेदिका व दो वनखण्ड	छ. सौमनस वक्षस्कार पर्वत पर सात कूट
दक्षिणी सीतामुख वन	ज. दो कूटों पर देवियाँ, शेष कूटों पर देवता
123 क. दक्षिणी सीतामुख वन का स्थान	झ. प्रत्येक देव की राजधानियाँ
ख. उत्तरी सीतामुख के समान पूर्ण वर्णन	
वत्स आदि विजय	देवकुरू
124 क. वत्स विजय का स्थान	क. देवकुरू का स्थान
ख. सुसीमा राजधानी	ख. देवकुरू में छ प्रकार के मनुष्य
ग. उत्तर के आठ विजय	ग. शेष वर्णन उत्तरकुरू के समान
घ. उत्तर की आठ राजधानियाँ	चित्र-विचित्र कूट पर्वत
ड. उत्तर के चार वक्षस्कार पर्वत	127 क. चित्रकूट और विचित्रकूट पर्वत का स्थान
च. उत्तर की तीन नदियाँ	ख. राजधानियाँ मेरु पर्वत से दक्षिण में
सौमनस वक्षस्कार पर्वत	ग. शेष वर्णन यमक पर्वतों के समान
125 क. सौमनस वक्षस्कार पर्वत का स्थान	निषध द्रह आदि
ख. सौमनस वक्षस्कार पर्वत के आयत और विस्तार की दिशा	128 क. निषधद्रह, देवकुरू, सूरद्रह, सुलसद्रह तथा विद्युत्प्रभ द्रह का स्थान (नीलवतद्रह के समान)
	ख. इन द्रहों के देवों की राजधानियाँ मेरु से दक्षिण में

कूट शाल्मली पीठ

- 129 क. कूटशाल्मली पीठ का स्थान
 ख. गरूड़ देव और उसकी स्थिति
 ग. शेष वर्णन-जम्बू सुदर्शन पीठ के समान
 घ. राजधानी मेरु से दक्षिण में
 ङ. गरूड़देव और उसकी स्थिति
 च. देवकुरु शास्वत नाम

विद्युत्प्रभ वक्षस्कार पर्वत

- 130 क. विद्युत्प्रभ वक्षस्कार पर्वत का स्थान
 ख. शेष वर्णन-माल्यवन्त पर्वत के समान
 ग. विद्युत्प्रभ वक्षस्कार पर्वत पर नौ कूट
 घ. दो कूटों पर देवियाँ, शेष कूटों पर देवता
 ङ. इनकी राजधानियाँ मेरु से दक्षिण में
 च. विद्युत्प्रभ नाम होने का हेतु
 छ. विद्युत्प्रभ देव और उसकी स्थिति
 ज. विद्युत्प्रभ नाम शाश्वत नाम

पक्ष्मादि विजय

- 131 क. दक्षिण-उत्तर के आठ-आठ विजय
 ख. दक्षिण-उत्तर की आठ-आठ राजधानियाँ
 ग. दक्षिण-उत्तर के आठ वक्षस्कार पर्वत

घ. दक्षिण-उत्तर में अंतर नदियाँ**मेरु पर्वत**

- 132 (अ) क. मेरु पर्वत का स्थान
 ख. मेरु पर्वत की ऊँचाई
 ग. मेरु पर्वत के मूल का उद्बोध और विष्कम्भ
 घ. मेरु पर्वत के धरणीतल और ऊपर का विष्कम्भ
 ङ. मेरु पर्वत के मूल धरणीतल और ऊपर की परिधि
 च. मेरु पर्वत का संस्थान
 छ. मेरु पर्वत की पद्मवार वेदिका और वनखण्ड
 ज. मेरु पर्वत के ऊपर चार वन

भद्रशाल वन

- (आ) क. भद्रशाल वन का स्थान
 ख. भद्रशाल वन के आयत और विस्तार की दिशा
 ग. भद्रशाल वन के सिद्धायतन की लम्बाई-चौड़ाई
 घ. उसमें स्थित मणीपिठिका की लम्बाई-चौड़ाई
 ङ. भद्रशाल वन में चार नंदा पुष्करिणियों की लम्बाई-चौड़ाई
 च. उसमें ईशानेन्द्र के प्रासाद की लम्बाई-चौड़ाई
 छ. मंदर पर्वत के अग्नि कोण में चार पुष्करिण्यां
 ज. मंदर पर्वत के नैऋत्य कोण में चार पुष्करिण्यां

- झ. मंदर पर्वत के ईशान कोण में चार पुष्करण्यां
 ज. भद्रशाल वन में आठ दिक्हस्तिकूट और उनकी लम्बाई-चौड़ाई
 ट. भद्रशाल वन की पद्मवर वेदिका और वनखण्ड
 क. नंदन वन का स्थान
 ख. नंदन वन का चक्रवाल विष्कम्भ
 ग. नंदन वन के अंदर व बाहर का विष्कम्भ
 घ. नंदन वन में नवकूटों का विस्तृत वर्णन
 ङ. शेष वर्णन भद्रशाल वन के समान
 च. नन्दन वन के बलकूट का वर्णन

नन्दन वन

133

सौमनस वन

134

- क. सौमनस वन का स्थान
 ख. सौमनस वन का चक्रवाल विष्कम्भ
 ग. सौमनस वन का अंदर-बाहर का विष्कम्भ
 घ. शेष वर्णन नंदन वन के समान

पंडकवन

135

- क. पंडक वन का स्थान
 ख. पंडक वन का चक्रवाल विष्कम्भ
 ग. पंडक वन की परिधि

- घ. पंडक वन के बीच मेरू चूलिका
 ङ. मेरू चूलिका का मध्य भाग
 च. मेरू चूलिका की ऊँचाई
 छ. मेरू चूलिका के मूल का और ऊपर का विष्कम्भ
 ज. मेरू चूलिका के मूल की और ऊपर की परिधि
 झ. मेरू चूलिका के मध्य भाग में स्थित सिद्धायतन का वर्णन
 ज. तीन दिशाओं में तीन द्वार का वर्णन
 ट. मध्य में स्थित मणिपीठिका की लम्बाई-चौड़ाई
 ठ. शक्रेन्द्र और ईशानेन्द्र के प्रासादावतंसकों का वर्णन

अभिषेक शिलाएं

136

- क. पंडक वन में चार अभिषेक शिला
 ख. पाण्डुशिला का आयाम-विष्कम्भ और बाहल्य
 ग. पाण्डुशिला में चारों दिशाओं में तीन-तीन सीढ़ियां
 घ. पाण्डुशिला पर स्थित दो सिंहासनों की लम्बाई-चौड़ाई
 ङ. पाण्डुशिला के उत्तर के सिंहासन पर कच्छादि विजयों के तीर्थंकरों का अभिषेक
 च. पाण्डुशिला के दक्षिण के सिंहासन पर वत्सादि विजयों के तीर्थंकरों का अभिषेक
 छ. पाण्डुकंबल शिला का स्थान, आयाम-विष्कम्भ और

बाहल्य		मंदर पर्वत के नाम	
ज. पाण्डुकंबल के एक सिंहासन पर भरत क्षेत्र के तीर्थंकरों का अभिषेक	137	क. मेरु पर्वत के सोलह नाम	138
झ. रक्तशिला का स्थान, आयाम-विष्कम्भ और बाहल्य		ख. मेरु नाम का हेतु	
ञ. रक्तशिला पर दो सिंहासन		ग. मेरु देव और उसकी स्थिति	
ट. रक्तशिला के दक्षिण सिंहासन पर पक्ष्मादि विजयों के तीर्थंकरों का अभिषेक		घ. मंदर पर्वत शाश्वत	
ठ. रक्तशिला के उत्तर सिंहासन पर वप्रादि विजयों के तीर्थंकरों का अभिषेक		नीलवंत वर्षधर पर्वत	
ड. रक्तकंबलशिला का स्थान, आयाम-विष्कम्भ और बाहल्य		क. नीलवंत वर्षधर पर्वत का स्थान	139
ढ. रक्तकंबलशिला के एक सिंहासन पर ऐरावत क्षेत्र के तीर्थंकरों का अभिषेक		ख. नीलवंत वर्षधर पर्वत के आयत और विस्तार की दिशा	
		ग. शेष वर्णन निषध पर्वत के समान	
		घ. नीलवंत वर्षधर पर्वत में केसरी द्रह	
		ङ. नरीकांता नदी का वर्णन	
		च. नीलवंत वर्षधर पर्वत के नौ कूट और केशरी द्रह का वर्णन	
मंदर पर्वत के काण्ड		छ. नीलवंत नाम होने का हेतु	
क. मेरु पर्वत के तीन काण्ड	137	ज. नीलवंत शाश्वत नाम है	
ख. प्रथम काण्ड चार प्रकार का		रम्यक् वर्ष	
ग. मध्यम काण्ड चार प्रकार का		क. रम्यक्वर्ष का स्थान	140
घ. उपरिम काण्ड एक प्रकार का		ख. शेष वर्णन हरिवर्ष के समान	
ङ. तीनों काण्डों की ऊंचाई		ग. रम्यक् वर्ष में गंधापाति वृत्त वैताढ्य पर्वत का स्थान	
च. मेरु का कुल परिमाण			

- घ. शेष वर्णन विकटापाति के समान
 ङ. पद्मदेव और उसकी स्थिति
 च. रम्यक्वर्ष नाम का हेतु

रूक्मी वर्षधर पर्वत

- 141 क. रूक्मी वर्षधर पर्वत का स्थान
 ख. महापुंडरिक द्रह से नरकांता नदी व रूयकूला नदी का निकलना
 ग. रूक्मी वर्षधर पर्वत पर आठ कूट
 घ. रूक्मी वर्षधर पर्वत नाम होने का हेतु
 ङ. रूक्मी देव और उसकी स्थिति

ऐरावत वर्ष

- 144 क. ऐरावत वर्ष का स्थान
 ख. ऐरावत में चक्रवर्ती, ऐरावत देव, (भरत के समान वर्णन)

हैरण्यवत वर्ष

- 142 क. हैरण्यवत वर्ष का स्थान
 ख. हेमवत वर्ष के समान वर्णन
 ग. हैरण्यवत क्षेत्र में माल्यवन्त वृत्त वैताढ्य पर्वत का स्थान
 घ. शब्दापाती वृत्त वैताढ्य पर्वत के समान वर्णन
 ङ. हैरण्यवत वर्ष नाम होने का हेतु
 च. हैरण्यवत देव और उसकी स्थिति

शिखरी वर्षधर पर्वत

- 143 क. शिखरी वर्षधर पर्वत का स्थान

- ख. शिखरी वर्षधर पर्वत पर पुंडरिक द्रह और सुवर्णकूला नदी
 ग. शिखरी वर्षधर पर्वत के ग्यारह कूट
 घ. शिखरी देव और उसकी स्थिति
 ङ. शेष चुल्लहमवन्त पर्वत के समान वर्णन
 च. शिखरी वर्षधर पर्वत नाम होने का हेतु

पंचम जिन जन्माभिषेक वक्षस्कार

- 145 क. जिन जन्माभिषेक के समय अधोलोकवासी आठ दिक्कुमारियों का आगमन
 ख. चार हजार सामानिक देवों-यावत्-वाणव्यंतर-ज्योतिष्क देवों का ढोल-वीणा आदि वाद्यों के साथ जन्म भवन आगमन
 ग. तीर्थंकर व माता को तीन प्रदक्षिणा के साथ वंदन
 घ. दिक्कुमारियां ईशान कोण में वैक्रिय समुद्रघात कर चारों ओर से भू भाग को समर्पित करती हैं
 ङ. दिक्कुमारियां संवर्तक वायु द्वारा तिनके, पत्ते, कचरा,

- अशुचि पदार्थ दूर कर स्वच्छ करती है
- 146 क. जिन जन्माभिषेक के समय **ऊर्ध्वलोकवासी** आठ दिक्कुमारियों का चार हजार सामानिक देवों-यावत्-वाणव्यंतर देव-देवियों के साथ गीत वाद्य द्वारा आगमन ख. ईशानकोण में जाकर वैक्रिय समुद्रघात कर आकाश में बादल उत्पन्न कर झिरमिर-झिरमिर जल से भूमि सिंचित की
- ग. पुष्पों के बादलों की विकुवर्णा कर दिक्कुमारियों ने घुटने प्रमाण पुष्पों की वर्षा की
- घ. दिक्कुमारियां लोबान व धूप से वातावरण को सुगंधमय बना देती हैं
- 147 क. पूर्व दिशावर्ती रूचककूट निवासिनी आठ दिक्कुमारियां **हाथ में दर्पण** लेकर पूर्व की ओर खड़ी होकर भगवान का मंगलगान करती हैं
- ख. दक्षिण दिशावर्ती आठ दिक्कुमारियां **सजल कलश** लेकर दक्षिण की ओर से भगवान के आगान करती हैं
- ग. पश्चिम दिशावर्ती आठ दिक्कुमारियां **हाथ में पंखा** लेकर पश्चिम की ओर से भगवान के आगान करती हैं
- घ. उत्तर दिशावर्ती आठ दिक्कुमारियां **हाथ में चंवर** लेकर उत्तर की ओर से भगवान के आगान करती हैं
- ड. रूचककूट शिखरवर्ती द्वार की दिक्कुमारियां **हाथ में दीपक** लेकर चारों विदिशाओं में भगवान के आगान करती हैं
- च. रूचककूट के मध्य निवासिनी चार दिक्कुमारियां भगवान के नाभिनाल को काटती हैं, गड्ढा खोदकर गाड़ती हैं, गड्ढे को रत्नों व हीरों से भरती हैं, फिर दूब उगाती हैं व भवनों में सिंहासनों की रचना करती हैं
- छ. वे ही दिक्कुमारियां भगवान की माता को सिंहासन पर बिठाकर सहस्रपाक तैल से मालिश करती हैं, उबटन पीठी करती हैं, केशर मिश्रित जल, पुष्पोदक जल व शुद्ध जल से स्नान कराती हैं फिर अलंकारों से विभूषित करती हैं
- ज. आभियोगिक देवों से गोशीर्ष चंदन काष्ठ मंगवाकर अग्नि से जलाकर भस्म बनाती हैं व नजर आदि दोष से रक्षा के लिए भगवान के हाथ में भस्म पोटली बांधती हैं, टिट्टि जैसी ध्वनि कर माता के साथ शैल्या पर सुला देती हैं व मंगल गीत गाती हैं
- क. भोगों में आसक्त शक्रेन्द्र-देवेन्द्र का आसन चलायमान
- ख. अवधिज्ञान से भगवान का जन्म जानकर वंदन नमस्कार

- ग. जन्मोत्सव मनाने के लिए हरिणैगमेषी देव को सुघोषाघण्ट बजाने का आदेश
घ. रति क्रीड़ा में रक्त वैमानिक देव-देवी घण्टा की आवाज सुनकर जागृत हुए व शक्रेन्द्र के समीप पहुंचे
ङ. शक्रेन्द्र ने पालक नामक आभियोगिक देव को यान विमान की विकुर्वणा करने का आदेश
149 यान विमान का विस्तृत वर्णन
150 क. शक्रेन्द्र का उत्सवार्थ प्रयाण
ख. तीर्थंकर की माता को अवस्वापिनी निद्रा देना
ग. पाँच शक्रेन्द्र द्वारा रूपों की विकुर्वणा करना
घ. पंडक वन में अभिषेक शिला पर अभिषेक करना
151 क. ईशानेन्द्र आदि सभी इन्द्रों का मेरु पर्वत पर आगमन
ख. यान विमान बनाने वाले दस देव
ग. सुघोषा घंटा, महाघोषा घंटा बजाना
152 चमरेन्द्रों और ज्योतिष्केन्द्रों का मेरु पर्वत पर आगमन
153 क. देवेन्द्र द्वारा आभियोगिक देवों को महार्थ, महार्घ, महार्ह विपुल साम्रगी लाने का आदेश
ख. आभियोगिक देवों द्वारा एक हजार आठ स्वर्ण कलशों -यावत्-एक हजार आठ धूपदानों की विकुर्वणा
- ग. आभियोगिक देवों द्वारा क्षीरोदक समुद्र से जल -यावत्- गोशीर्ष चन्दन आदि द्रव्य अच्युतेन्द्र के सममुख उपस्थित करना
क. अच्युतेन्द्र द्वारा भगवान का अभिषेक करना
ख. वाद्य, गीत, नृत्य आदि करके जन्मोत्सव मनाना
क. अष्टमंगल व भगवद् वंदना
ख. प्राणतेन्द्र -यावत्- ईशानेन्द्र तथा भवनपति, वाणव्यंतर व ज्योतिष्केन्द्र द्वारा भगवान का अभिषेक
ग. चार वृषभों की विकुर्वणा व वृषभ शृंगों से जलधारा का पतन
क. कुण्डल युगल को तीर्थंकर की माता के समीप रखना
ख. अभिषेक के पश्चात् तीर्थंकरों को मेरु पर्वत से जन्म भवन में लाना
ग. क्षेम युगल और कुण्डल युगल का तीर्थंकर माता के समीप रखना
घ. तीर्थंकर के भवन में हिरण्य, सुवर्ण कोटी से भंडार भरने के लिये शक्रेन्द्र का वैश्रमण को आदेश
ङ. तीर्थंकर और तीर्थंकर माता का अनिष्ट न करने के लिये घोषणा
च. देवों द्वारा अष्टाहिका महोत्सव

षष्ठ जम्बूद्वीपगत पदार्थ संग्रह वर्णन वक्षस्कार

- 157 क. जम्बूद्वीप के प्रदेशों का लवण समुद्र से स्पर्श
 ख. लवण समुद्र के प्रदेशों से जम्बूद्वीप का स्पर्श
 ग. जम्बूद्वीप के जीवों का लवण समुद्र में जन्म
 घ. लवण समुद्र के जीवों का जम्बूद्वीप में जन्म
 जम्बूद्वीप के मध्यवर्ती दस पदार्थों की संग्रहणी गाथा
- 158 1. जम्बूद्वीप के भरत प्रमाण खण्ड,
 2. जम्बूद्वीप के वर्ग-योजन,
 3. जम्बूद्वीप में वर्ष-क्षेत्र कितने हैं ?
 4. जम्बूद्वीप में वर्षधर पर्वत, मेरु पर्वत, चित्रकूट पर्वत,
 विचित्रकूट पर्वत, यमक पर्वत, कांचनक पर्वत,
 वक्षस्कार पर्वत, दीर्घवैताढ्य पर्वत, वृत्तवैताढ्य पर्वत
 कितने-कितने ?
 5. जम्बूद्वीप में वर्षधर कूट, वक्षस्कार कूट, वैताढ्य
 कूट, मंदर कूट कितने-कितने ?
 6. क. जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में तीर्थ
 ख. जम्बूद्वीप के ऐरावत क्षेत्र में तीर्थ
 ग. जम्बूद्वीप के महाविदेह क्षेत्र में तीर्थ
 7. जम्बूद्वीप में विद्याधर श्रेणियाँ व आभियोगिक श्रेणियाँ
 8. जम्बूद्वीप में चक्रवर्ती विजय, राजधानियाँ, तमिस्रा

- गुफा, खण्ड प्रपात गुफा, कृतमाल देव, नृत्यमाल
 देव व ऋषभकूट कितने-कितने ?
9. जम्बूद्वीप में महाद्रह
 10. क. जम्बूद्वीप में क्षेत्रवाही व कुण्डवाही महानदियाँ
 ख. जम्बूद्वीप में नदियों की संयुक्त संख्या
 11 क. जम्बूद्वीप के भरत-ऐरावत में चार महानदियाँ व
 उनका परिवार
 12 क. जम्बूद्वीप के भरत-ऐरावत में चार महानदियों
 का परिवार
 ख. जम्बूद्वीप के हेमवत-हैरण्यवत में चार महानदियाँ
 13 क. जम्बूद्वीप के हेमवत-हैरण्यवत में चार महानदियों
 का परिवार
 ख. जम्बूद्वीप के हरिवर्ष-रम्यक् वर्ष में चार महानदियाँ
 14 क. जम्बूद्वीप के हरिवर्ष-रम्यक् वर्ष में चार महानदियों
 का परिवार
 ख. जम्बूद्वीप के महाविदेह में दो महानदियाँ
 15 क. जम्बूद्वीप के महाविदेह में दोनों महानदियों का
 परिवार
 ख. जम्बूद्वीप में मेरु से दक्षिण में बहने वाली नदियाँ
 16 जम्बूद्वीप में मेरु से उत्तर में बहने वाली नदियाँ

17 जम्बूद्वीप में पूर्वाभिमुख बहने वाली नदियाँ

18 क. जम्बूद्वीप में पश्चिमाभिमुख बहने वाली नदियाँ

ख. जम्बूद्वीप में बहने वाली नदियों की संयुक्त संख्या

सप्तम ज्योतिष्क वक्षस्कार

159 जम्बूद्वीप में चन्द्र, सूर्य, नक्षत्र, ग्रह व तारा कितने-
कितने ?

सूर्य-वर्णन

160 क. जम्बूद्वीप में सूर्य मण्डल

ख. जम्बूद्वीप में सूर्य मण्डलों की दूरी

ग. लवण समुद्र में सूर्य मण्डलों की दूरी

161 सर्व आभ्यन्तर मण्डल से सर्व बाह्य मण्डल की दूरी

162 प्रत्येक सूर्य मण्डल की दूरी

163 प्रत्येक सूर्य मण्डल का आयाम-विष्कम्भ, परिधि और
बाहल्य

164 क. मेरु से प्रथम मण्डल की दूरी

ख. मेरु से द्वितीय मण्डल की दूरी

ग. मेरु से प्रत्येक सूर्य मण्डल की दूरी

घ. मेरु से अंतिम सूर्य मण्डल की दूरी

ड. मेरु से अंतिम सूर्य मण्डल से दूसरे सूर्य मण्डल की
दूरी

च. मेरु से अंतिम सूर्य मण्डल से तीसरे सूर्य मण्डल
की दूरी

छ. अंतिम सूर्य मण्डल से प्रत्येक सूर्य मण्डल की दूरी

क. जम्बूद्वीप में प्रथम सूर्य मण्डल का आयाम-विष्कम्भ
और परिधि

ख. जम्बूद्वीप में द्वितीय सूर्य मण्डल का आयाम-विष्कम्भ
और परिधि

ग. जम्बूद्वीप में तृतीय सूर्य मण्डल का आयाम-विष्कम्भ
और परिधि

घ. जम्बूद्वीप में अंतिम सूर्य मण्डल का आयाम-विष्कम्भ
और परिधि

ड. जम्बूद्वीप के अंतिम से द्वितीय मण्डल की दूरी

च. जम्बूद्वीप के अंतिम से तृतीय मण्डल की दूरी

छ. प्रत्येक सूर्य मण्डल का आयाम-विष्कम्भ व परिधि

क. प्रथम सूर्य मण्डल में एक मुहूर्त में सूर्य की गति
और सूर्य दर्शन की दूरी का परिमाण

ख. द्वितीय सूर्य मण्डल में एक मुहूर्त में सूर्य की गति
और सूर्य दर्शन की दूरी का परिमाण

ग. तृतीय सूर्य मण्डल में एक मुहूर्त में सूर्य की गति

और सूर्य दर्शन की दूरी का परिमाण		अंधकार क्षेत्र का संस्थान	
घ. अंतिम सूर्य मण्डल में एक मुहूर्त में सूर्य की गति	169	क. जम्बूद्वीप में प्रातः, मध्याह्न और सायंकाल में सूर्य दर्शन का प्रमाण	
ङ. अंतिम से द्वितीय सूर्य मण्डल में एक मुहूर्त में सूर्य की गति और सूर्य दर्शन की दूरी का परिमाण	170	क. जम्बूद्वीप में सूर्य वर्तमान क्षेत्र में गति करता है	
च. अंतिम सूर्य मण्डल से तृतीय सूर्य मण्डल में एक मुहूर्त में सूर्य की गति और सूर्य दर्शन का परिमाण	171	ख. जम्बूद्वीप में सूर्य वर्तमान क्षेत्र का स्पर्श करता है	
छ. प्रत्येक अयन मण्डल में एक मुहूर्त में सूर्य की गति और सूर्य दर्शन की दूरी का परिमाण	172	ग. आहारादि अधिकारों का कथन	
क. प्रथम सूर्य मण्डल में दिन-रात्रि का जघन्य-उत्कृष्ट परिमाण	173	जम्बूद्वीप में सूर्य वर्तमान क्षेत्र में क्रिया करता है-यावत्-वर्तमान क्षेत्र का स्पर्श करता है	
ख. द्वितीय सूर्य मण्डल में दिन-रात्रि का जघन्य-उत्कृष्ट परिमाण	174	जम्बूद्वीप में सूर्य का ऊर्ध्व, अधो और तिर्यक् ताप क्षेत्र	
ग. इस प्रकार प्रत्येक सूर्य मण्डल में दिन-रात्रि का जघन्य-उत्कृष्ट दूरी का परिमाण		क. मानुषोत्तर पर्वत पर्यंत ज्योतिषी देवों का उत्पत्ति स्थान	
घ-च. अंतिम सूर्य मण्डल में दिन-रात्रि का जघन्य-उत्कृष्ट परिमाण विपरीत क्रम से		ख. मानुषोत्तर पर्वत पर्यंत ज्योतिषी देवों की मेरु प्रदक्षिणा	
क. प्रथम सूर्य मण्डल में सूर्य के ताप क्षेत्र का संस्थान और अंधकार क्षेत्र का संस्थान		क. ज्योतिष्केन्द्रों के च्यवन-मरण के पश्चात्-सामानिक देवों द्वारा व्यवस्था	
ख. अंतिम सूर्य मण्डल के ताप क्षेत्र का संस्थान और		ख. इन्द्र का जघन्य-उत्कृष्ट उपपात-विरहकाल	
		ग. मानुषोत्तर पर्वत के पश्चात् ज्योतिषी देवों का उत्पत्ति स्थान, ताप क्षेत्र, गति अभाव	
		घ. इन्द्र के अभाव में सामानिक देवों द्वारा व्यवस्था	
		ङ. इन्द्र का जघन्य-उत्कृष्ट उपपात-विरहकाल	
		क. सर्व चन्द्र मण्डल संख्या	

चन्द्र वर्णन

175

	जम्बूद्वीप में चन्द्र मण्डल संख्या	और परिधि
176	ख. जम्बूद्वीप में चन्द्र मण्डल संख्या ग. लवण समुद्र में चन्द्र मण्डल संख्या प्रथम चन्द्र मण्डल से अंतिम चन्द्र मण्डल का अंतर	छ. इस प्रकार प्रत्येक चन्द्र मण्डल का आयाम-विष्कम्भ और परिधि
177	प्रत्येक चन्द्र मण्डल का अंतर	181
178	चन्द्र मण्डल का आयाम-विष्कम्भ, परिधि और ऊंचाई	क. प्रथम चन्द्र मण्डल में एक मुहूर्त में चन्द्र की गति
179	क. मेरु से प्रथम चन्द्र मण्डल का अंतर ख. मेरु से द्वितीय चन्द्र मण्डल का अंतर ग. मेरु से तृतीय चन्द्र मण्डल का अंतर घ. मेरु से अंतिम चन्द्र मण्डल का अंतर ङ. मेरु अंतिम से द्वितीय मण्डल का अंतर च. मेरु अंतिम से तृतीय मण्डल का अंतर छ. प्रत्येक चन्द्र मण्डल का अंतर	ख. द्वितीय चन्द्र मण्डल में एक मुहूर्त में चन्द्र की गति ग. तृतीय चन्द्र मण्डल में एक मुहूर्त में चन्द्र की गति और वृद्धि घ. अंतिम चन्द्र मण्डल में एक मुहूर्त में चन्द्र की गति ङ. अंतिम से द्वितीय चन्द्र मण्डल में एक मुहूर्त में चन्द्र की गति च. अंतिम से तृतीय चन्द्र मण्डल में एक मुहूर्त में चन्द्र की गति
180	क. प्रथम चन्द्र मण्डल का आयाम-विष्कम्भ और परिधि ख. द्वितीय चन्द्र मण्डल का आयाम-विष्कम्भ और परिधि	छ. इस प्रकार प्रत्येक चन्द्र मण्डल में एक मुहूर्त में चन्द्र की हीन गति

नक्षत्र वर्णन

ग. तृतीय चन्द्र मण्डल का आयाम-विष्कम्भ और परिधि	182	क. सर्व नक्षत्र मण्डल संख्या
घ. अंतिम चन्द्र मण्डल का आयाम-विष्कम्भ और परिधि		ख. जम्बूद्वीप में नक्षत्र मण्डल संख्या
ङ. अंतिम से द्वितीय चन्द्र मण्डल का आयाम-विष्कम्भ और परिधि		ग. लवण समुद्र में नक्षत्र मण्डल संख्या
च. अंतिम से तृतीय चन्द्र मण्डल का आयाम-विष्कम्भ		घ. प्रथम और अंतिम नक्षत्र मण्डल का अंतर
		ङ. प्रत्येक नक्षत्र मण्डल का अंतर

च. नक्षत्र मण्डल का आयाम-विष्कम्भ परिधि और उंचाई	च. नक्षत्र मण्डल का आयाम-विष्कम्भ परिधि और उंचाई	(1) नक्षत्र संवत्सर के बारह भेद (2) युग संवत्सर के पाँच भेद (2-1) प्रथम चन्द्र संवत्सर के चौबीस पर्व (2-2) द्वितीय चन्द्र संवत्सर के चौबीस पर्व (2-3) तृतीय अभिवर्द्धित संवत्सर के छब्बीस पर्व (2-4) चतुर्थ चन्द्र संवत्सर के चौबीस पर्व (2-5) पांचवें अभिवर्द्धित चन्द्र संवत्सर के छब्बीस पर्व पाँच भेदों में विभक्त युग संवत्सर के सर्व पर्व की संयुक्त संख्या 124 पर्व
छ. मेरु पर्वत से प्रथम नक्षत्र मण्डल का अंतर	छ. मेरु पर्वत से अंतिम नक्षत्र मण्डल का अंतर	(3) प्रमाण संवत्सर के पाँच भेद
ज. मेरु पर्वत से अंतिम नक्षत्र मण्डल का अंतर	ज. मेरु पर्वत से अंतिम नक्षत्र मण्डल का अंतर	(4) लक्षण संवत्सर के पाँच भेद और उनका स्वरूप
झ. प्रथम नक्षत्र मण्डल का आयाम-विष्कम्भ और परिधि	झ. प्रथम नक्षत्र मण्डल का आयाम-विष्कम्भ और परिधि	(5) शनैश्चर संवत्सर के अष्टावीस भेद
ञ. अंतिम नक्षत्र मण्डल का आयाम विष्कम्भ और परिधि	ञ. अंतिम नक्षत्र मण्डल का आयाम विष्कम्भ और परिधि	
ट. प्रथम मण्डल में एक मुहूर्त में नक्षत्र की गति	ट. प्रथम मण्डल में एक मुहूर्त में नक्षत्र की गति	
ठ. अंतिम मण्डल में एक मुहूर्त में नक्षत्र की गति	ठ. अंतिम मण्डल में एक मुहूर्त में नक्षत्र की गति	
ड. चन्द्र मण्डलों के साथ नक्षत्र मण्डलों का योग	ड. चन्द्र मण्डलों के साथ नक्षत्र मण्डलों का योग	
ढ. एक मुहूर्त में मण्डल का अवगाहन	ढ. एक मुहूर्त में मण्डल का अवगाहन	
ण. एक मुहूर्त में सूर्य द्वारा मण्डल का अवगाहन	ण. एक मुहूर्त में सूर्य द्वारा मण्डल का अवगाहन	
त. एक मुहूर्त में नक्षत्रों द्वारा मण्डल का अवगाहन	त. एक मुहूर्त में नक्षत्रों द्वारा मण्डल का अवगाहन	
सूर्यादि का उद्गम	सूर्यादि का उद्गम	मास
183	क. जम्बूद्वीप में दो सूर्यों की उदय दिशाएँ ख. जम्बूद्वीप में दो चन्द्रों की उदय दिशाएँ ग. शेष वर्णन भगवती श. 5 उद्देशक 1 एवं 10 के समान	क. प्रत्येक संवत्सर के बारह मास ख. लौकिक मासों के नाम ग. लोकोत्तर मासों के नाम घ. मास के दो पक्ष ङ. एक पक्ष के पन्द्रह दिन च. पन्द्रह दिनों के नाम
संवत्सर के भेद-प्रभेद	संवत्सर के भेद-प्रभेद	पक्ष
184	संवत्सर के पाँच भेद	

- छ. पन्द्रह दिनों की तिथियों के नाम 189 क. चन्द्र के साथ दक्षिण से योग करने वाले छह नक्षत्र
ज. एक पक्ष की पन्द्रह रात्रियाँ ख. चन्द्र के साथ उत्तर से योग करने वाले बारह नक्षत्र
झ. पन्द्रह रात्रियों के नाम ग. चन्द्र के साथ दक्षिण और उत्तर से प्रमर्द योग करने वाले सात नक्षत्र
ञ. पन्द्रह रात्रियों की तिथियों के नाम घ. चन्द्र के साथ दक्षिण से प्रमर्द योग करने वाले दो नक्षत्र

अहोरात्र

- ट. एक अहोरात्र के तीस मुहूर्त व उनके नाम

करण

- 186 क. ग्यारह करण के नाम 190 नक्षत्रों के देवता
ख. सात चर करण व स्थिर करण 191 अठावीस नक्षत्रों के प्रत्येक के कितने-कितने तारे
ग. शुक्ल पक्ष के करण 192 क. अठावीस नक्षत्रों के गोत्र की गाथाएं
घ. कृष्ण पक्ष के करण ख. अठावीस नक्षत्रों के संस्थान की गाथाएं
187 क. आदि संवत्सर, आदि अयन, आदि ऋतु, आदि मास, आदि पक्ष, आदि अहोरात्र, आदि मुहूर्त, आदि करण व आदि नक्षत्र कौन सा ? 193 क. चन्द्र के साथ अठावीस नक्षत्रों के योग काल की गाथाएं

- ख. सूर्य के साथ अठावीस नक्षत्रों के योग काल की गाथाएं

- ख. पाँच संवत्सर के युग में अयन, ऋतु, मास, पक्ष, 194

अहोरात्र, मुहूर्त, करण व नक्षत्र कितने-कितने ?

योग

- क. दस प्रकार के योग सूचक संग्रहणी गाथा

188

नक्षत्र

- ख. अठावीस नक्षत्र नाम

- ग. नक्षत्रों के चार कुलोपकुल
घ. बारह पूर्णिमायें
ङ. बारह अमावस्याएँ
च. बारह पूर्णिमाओं में नक्षत्रों का योग

- छ. बारह पूर्णिमाओं में कुलों का योग
 ज. बारह पूर्णिमाओं में उपकुलों का योग
 झ. बारह पूर्णिमाओं में कुलोपकुलों का योग
 ञ. बारह पूर्णिमाओं में व बारह अमावस्याओं में नक्षत्रों का योग
 ट. बारह पूर्णिमाओं में व बारह अमावस्याओं में कुलों का योग
 ठ. बारह पूर्णिमाओं में व बारह अमावस्याओं में उपकुलों का योग
 ड. बारह पूर्णिमाओं में व बारह अमावस्याओं में कुलोपकुलों का योग
 ढ. छह पूर्णिमा और छह अमावस्या के नक्षत्र

पौरुषी प्रमाण

- 195 1. वर्षा ऋतु के प्रथम मास को पूर्ण करने वाले चार नक्षत्र व प्रत्येक नक्षत्र के दिन तथा पौरुषी प्रमाण
 2. वर्षा ऋतु के द्वितीय मास को पूर्ण करने वाले चार नक्षत्र व प्रत्येक नक्षत्र के दिन तथा पौरुषी प्रमाण
 3. वर्षा ऋतु के तृतीय मास को पूर्ण करने वाले तीन नक्षत्र व प्रत्येक नक्षत्र के दिन तथा पौरुषी प्रमाण
 4. वर्षा ऋतु के चतुर्थ मास को पूर्ण करने वाले तीन

- नक्षत्र व प्रत्येक नक्षत्र के दिन तथा पौरुषी प्रमाण
 5. हेमन्त ऋतु के प्रथम मास को पूर्ण करने वाले तीन नक्षत्र व प्रत्येक नक्षत्र के दिन तथा पौरुषी प्रमाण
 6. हेमन्त ऋतु के द्वितीय मास को पूर्ण करने वाले चार नक्षत्र व प्रत्येक नक्षत्र के दिन तथा पौरुषी प्रमाण
 7. हेमन्त ऋतु के तृतीय मास को पूर्ण करने वाले तीन नक्षत्र व प्रत्येक नक्षत्र के दिन तथा पौरुषी प्रमाण
 8. हेमन्त ऋतु के चतुर्थ मास को पूर्ण करने वाले तीन नक्षत्र व प्रत्येक नक्षत्र के दिन तथा पौरुषी प्रमाण
 9. ग्रीष्म ऋतु के प्रथम मास को पूर्ण करने वाले तीन नक्षत्र व प्रत्येक नक्षत्र के दिन तथा पौरुषी प्रमाण
 10. ग्रीष्म ऋतु के द्वितीय मास को पूर्ण करने वाले तीन नक्षत्र व प्रत्येक नक्षत्र के दिन तथा पौरुषी प्रमाण
 11. ग्रीष्म ऋतु के तृतीय मास को पूर्ण करने वाले चार नक्षत्र व प्रत्येक नक्षत्र के दिन तथा पौरुषी प्रमाण
 12. ग्रीष्म ऋतु के चतुर्थ मास को पूर्ण करने वाले तीन नक्षत्र व प्रत्येक नक्षत्र के दिन तथा पौरुषी प्रमाण

सोलह अधिकांश

- 196 क. सोलह द्वार की गाथाएं
 ख. चन्द्र-सूर्य के नीचे तारागण

ग.	चन्द्र-सूर्य के सम तारागण	ज.	नक्षत्र विमान का संस्थान
घ.	चन्द्र-सूर्य के ऊपर तारागण	झ.	तारा विमान का संस्थान
ड.	नीचे, सम और ऊपर तारागण होने का कारण	ञ.	चन्द्र विमान का आयाम-विष्कम्भ व ऊंचाई
197	प्रत्येक चन्द्र का महाग्रह, नक्षत्र व तारागण परिवार	ट.	सूर्य विमान का आयाम-विष्कम्भ व ऊंचाई
198	क. मेरु पर्वत से ज्योतिष चक्र का अंतर	ठ.	ग्रह विमान का आयाम-विष्कम्भ व ऊंचाई
	ख. लोकांत से ज्योतिष चक्र का अंतर	ड.	नक्षत्र विमान का आयाम-विष्कम्भ व ऊंचाई
	ग. धरणीतल से ताराओं का अंतर	ढ.	तारा विमान का आयाम-विष्कम्भ व ऊंचाई
	घ. धरणीतल से सूर्य का अंतर	क.	पूर्व, दक्षिण, पश्चिम और उत्तर दिशा में चन्द्र विमान का वहन करने वाले देवों का विस्तृत विवरण
	ड. धरणीतल से चन्द्र का अंतर	ख.	सूर्य विमान का वहन करने वाले देव
	च. धरणीतल से सर्वोपरि तारे का अंतर	ग.	ग्रह विमान का वहन करने वाले देव
	छ. सूर्य विमान से चन्द्र विमान का अंतर	घ.	नक्षत्र विमान का वहन करने वाले देव
	ज. सूर्य विमान से सर्वोपरि तारे का अंतर	ड.	तारा विमान का वहन करने वाले देव
	झ. चन्द्र विमान से सर्वोपरि तारे का अंतर		ज्योतिषी देवों की शीघ्र गति
199	क. मण्डल में गति करने वाले नक्षत्र	201	ज्योतिषी देवों में अल्प ऋद्धि वाले और महान् ऋद्धि वाले देव
	ख. मण्डल से बाहर गति करने वाले नक्षत्र	202	जम्बूद्वीप में एक तारे से दूसरे तारे का जघन्य-उत्कृष्ट अंतर
	ग. मण्डल से नीचे गति करने वाले नक्षत्र	203	क. चन्द्र की चार अग्रमहिषियाँ
	घ. मण्डल से ऊपर गति करने वाले नक्षत्र		ख. प्रत्येक अग्रमहिषी का परिवार
	ड. चन्द्र विमान का संस्थान	204	
	च. सूर्य विमान का संस्थान		
	छ. ग्रह विमान का संस्थान		

ग. प्रत्येक अग्रमहिषी की वैक्रिय शक्ति		घ. जम्बूद्वीप में जघन्य-उत्कृष्ट वासुदेव
घ. चन्द्र का चन्द्र विमान में मैथुन सेवन न करने का कारण		ङ. जम्बूद्वीप में उत्कृष्ट निधान
ङ. प्रत्येक ग्रह की चार-चार अग्रमहिषियाँ		च. जम्बूद्वीप में कितनी निधियों का परिभोग
च. प्रत्येक अग्रमहिषी का परिवार		छ. जम्बूद्वीप में कितने पंचेन्द्रिय रत्न
छ. ग्रहों के नाम व उनकी अग्रमहिषियों की गाथाएं		ज. जम्बूद्वीप में कितने पंचेन्द्रिय रत्न का परिभोग
क. चन्द्र विमानों में देवों की स्थिति		झ. जम्बूद्वीप में कितने एकेन्द्रिय रत्न
ख. चन्द्र विमानों में देवियों की स्थिति	205	ञ. जम्बूद्वीप में कितने एकेन्द्रिय रत्नों का परिभोग
ग. सूर्य विमानों में देवों की स्थिति		जम्बूद्वीप का आयाम-विक्रम, परिधि, उद्देश्य, ऊंचाई व पूर्ण परिमाण कितना?
घ. सूर्य विमानों में देवियों की स्थिति		क. जम्बूद्वीप शाश्वत या अशाश्वत
ङ. ग्रह विमानों में देवों की स्थिति	209	ख. जम्बूद्वीप के शाश्वत-अशाश्वत कथन की अपेक्षा
च. ग्रह विमानों में देवियों की स्थिति		ग. जम्बूद्वीप की नित्य अवस्थिति
छ. नक्षत्र विमानों में देवों की स्थिति	210	क. जम्बूद्वीप का पृथ्वी आदि में परिणमन
ज. नक्षत्र विमानों में देवियों की स्थिति		ख. जम्बूद्वीप में सर्व जीवों की पाँच स्थावर कार्यों में अनंतवार उत्पत्ति
झ. तारा विमानों में देवों की स्थिति	211	क. जम्बूद्वीप नाम होने का हेतु
ञ. तारा विमानों में देवियों की स्थिति		ख. जम्बू सुदर्शन पर अनाहत देव
नक्षत्र के अधिष्ठातृ देवों के नाम की गाथाएं	212	उपसंहार- मिथिला नगरी के मणिभद्र चैत्य में चतुर्विध संघ और देव-देवियों के समक्ष भ. महावीर द्वारा जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति का प्रतिपादन
ज्योतिषी देवों का अल्प-बहुत्व	213	
क. जम्बूद्वीप में जघन्य-उत्कृष्ट तीर्थंकर		
ख. जम्बूद्वीप में जघन्य-उत्कृष्ट चक्रवर्ती		
ग. जम्बूद्वीप में जघन्य-उत्कृष्ट बलदेव		

णमो णिगंथाणं

गणितानुयोगमय चन्द्रप्रज्ञप्ति-सूर्यप्रज्ञप्ति

अध्ययन	1	4	प्रथम प्राभृत के आठ प्राभृत-प्राभृतों का विषय निर्देश
प्राभृत	20	5	प्रथम प्राभृत में अन्य प्रतिपत्तियों की संख्या
प्राभृत प्राभृत	31	6	द्वितीय-तृतीय प्राभृत में अन्य प्रतिपत्तियाँ व विषय प्ररूपण
उपलब्ध मूल पाठ	2200 श्लोक परिमाण	7	दसवें प्राभृत के बावीस प्राभृत-प्राभृतों के विषय प्ररूपण की गाथाएं
गद्य सूत्र	107	8	मास के मुहूर्तों की हानि-वृद्धि
पद्य गाथा	103	9	सर्व सूर्य मण्डलों के मार्ग में सूर्य के गमनागमन से रात-दिनों का प्रमाण
		10	सूर्य मण्डलों में सूर्य की एक बार अथवा दो बार गति
		11	क. आदित्य संवत्सर में अहोरात्र के जघन्य-उत्कृष्ट मुहूर्त ख. अहोरात्र के मुहूर्तों की हानि वृद्धि का हेतु ग. उपसंहार सूत्र

17-18 चन्द्रप्रज्ञप्ति-सूर्यप्रज्ञप्ति विषय सूची

प्रथम-प्राभृत

प्रथम प्राभृत-प्राभृत

1	क. प्रथम उत्थानिका-वीर स्तुति	12	सूर्य की दक्षिणार्ध मण्डल संस्थिति
	ख. पंच पद वंदन 'ज्योतिष गणराज प्रज्ञप्ति' की प्ररूपण प्रतिज्ञा	13	सूर्य की उत्तरार्ध मण्डल संस्थिति
2	ग. द्वितीय उत्थानिका, गौतम गणधर को नमस्कार		तृतीय प्राभृत-प्राभृत
	क. मिथिला वर्णन, मणिभद्र चैत्य वर्णन	14	सूर्यो के संचरण क्षेत्र
	ख. जितशत्रु राजा वर्णन, धारणी रानी वर्णन		चतुर्थ प्राभृत-प्राभृत
	ग. भ. महावीर का समवसरण, धर्मकथा	15	क. आदित्य संवत्सर के दोनों अयनों में प्रथम से अंतिम और अंतिम से प्रथम पर्यंत एक सूर्य की गति का अंतर
3	घ. इन्द्रभूति गौतम की जिज्ञासा		
	बीस प्राभृतों का विषय निर्देश		

द्वितीय प्राभृत-प्राभृत

12	सूर्य की दक्षिणार्ध मण्डल संस्थिति
13	सूर्य की उत्तरार्ध मण्डल संस्थिति
	तृतीय प्राभृत-प्राभृत
14	सूर्यो के संचरण क्षेत्र
	चतुर्थ प्राभृत-प्राभृत
15	क. आदित्य संवत्सर के दोनों अयनों में प्रथम से अंतिम और अंतिम से प्रथम पर्यंत एक सूर्य की गति का अंतर

५४०		17-18 चन्द्र-सूर्यप्रज्ञप्ति विषय-सूची		चन्द्र-सूर्य. प्रा. 1-4, सूत्र 16-25	
		ख. अंतर के सम्बन्ध में छह अन्य प्रतिपत्तियाँ-मान्यताएँ		द्वितीय-प्राभृत	
		ग. स्व मान्यता का सहेतुक समर्थन		प्रथम प्राभृत-प्राभृत	
पंचम प्राभृत-प्राभृत					
16-17	क. प्रथम से अंतिम और अंतिम से प्रथम मण्डल पर्यंत सूर्य द्वारा द्वीप-समुद्रों के अवगाहन के सम्बन्ध में पाँच अन्य प्रतिपत्तियाँ			21	क. सूर्य की तिरछी गति के सम्बन्ध में अन्य आठ प्रतिपत्तियाँ
		ख. स्व मान्यता का कथन		ख.	स्वमत का स्पष्टीकरण
षष्ठ प्राभृत-प्राभृत				द्वितीय प्राभृत-प्राभृत	
18	क. आदित्य संवत्सर के दिन में-अर्थात् एक अहोरात्र में (प्रत्येक मण्डल में) सूर्य द्वारा स्पर्शित क्षेत्र के सम्बन्ध में अन्य सात प्रतिपत्तियाँ			22	सूर्य का एक मण्डल से दूसरे मण्डल में संक्रमण के सम्बन्ध में अन्य दो प्रतिपत्तियाँ
		ख. स्वमत समर्थन		तृतीय-प्राभृत-प्राभृत	
				23	क. एक मुहूर्त में सूर्य की गति का परिमाण व इस सम्बन्ध में अन्य चार प्रतिपत्तियाँ
		ख. स्वमत समर्थन		ख.	स्व मान्यता का विशद समर्थन
सप्तम प्राभृत-प्राभृत				तृतीय प्राभृत	
19	चन्द्र-सूर्य मण्डलों के संस्थान के सम्बन्ध में अन्य आठ प्रतिपत्तियाँ व स्व मान्यता का निरूपण			24	क. चन्द्र-सूर्य का अवभास क्षेत्र, उद्योत क्षेत्र, ताप क्षेत्र व प्रकाश क्षेत्र की अन्य बारह प्रतिपत्तियाँ
				ख.	स्वमत निरूपण
अष्टम प्राभृत-प्राभृत				चतुर्थ प्राभृत	
20	क. सूर्य मण्डलों के आयाम-विष्कम्भ और बाहल्य के सम्बन्ध में अन्य तीन प्रतिपत्तियाँ			25	क. चन्द्र और सूर्य का संस्थान दो प्रकार का व इस संबंध में अन्य सोलह मान्यताएँ
		ख. आदित्य संवत्सर के प्रत्येक अयन में प्रत्येक मण्डल का आयाम विष्कम्भ और बाहल्य की भिन्नता से अहोरात्र के मुहूर्तों की हानि-वृद्धि		ख.	सूर्य के ताप क्षेत्र की संस्थिति की अन्य सोलह प्रतिपत्तियाँ

मान्यताएं		ख. स्व पक्ष प्रतिपादन
पंचम प्राभृत		अष्टम प्राभृत
ग. स्वमत से प्रत्येक मण्डल में उद्योत और ताप क्षेत्र का संस्थान	29	क. सूर्य की उदय दिशा के सम्बन्ध में अन्य तीन प्रतिपत्तियाँ
घ. ताप क्षेत्र संस्थिति की दो बाह्यां		ख. स्वमत में-भिन्न-भिन्न क्षेत्रों की अपेक्षा सूर्योदय की भिन्न-भिन्न दिशाओं का कथन
ङ. ताप क्षेत्र संस्थिति की परिधि		ग. दक्षिणायन और उत्तरायण में सूर्य की उदय दिशा तथा जघन्य-उत्कृष्ट अहोरात्र का परिमाण
च. ताप क्षेत्र और अंधकार क्षेत्र के आयामादि का प्ररूपण		घ. जम्बूद्वीप के दक्षिणार्ध और उत्तरार्ध में वर्षा, हेम व ग्रीष्म ऋतु अयन आदि का कथन
छ. सूर्य के ऊर्ध्व, अधो एवं तिर्यक् ताप क्षेत्र का परिमाण		ङ. जम्बूद्वीप के मंदर पर्वत से दक्षिणार्ध व उत्तरार्ध में उत्सर्पिणी-अवसर्पिणी
षष्ठ प्राभृत		च. लवण समुद्र के दक्षिण-उत्तर में जिस समय दिन है उस समय पूर्व-पश्चिम में रात्रि है
क. सूर्य के तेज को अवरुद्ध करने वाले पर्वत के संबंध में अन्य बीस प्रतिपत्तियाँ	26	छ. भिन्न-भिन्न क्षेत्रों की अपेक्षा उत्सर्पिणी-अवसर्पिणी काल का कथन
ख. स्वमत का प्रतिपादन		ज. धातकी खण्ड में दिन-रात्रि तथा उत्सर्पिणी-अवसर्पिणी
सप्तम प्राभृत		झ. कालोद समुद्र में लवण समुद्र के समान उत्सर्पिणी-अवसर्पिणी
क. सूर्य से प्रकाशित पर्वत के संबंध में अन्य बीस मान्यताएं	27	
ख. अवगाहित मण्डल की अपेक्षा अवस्थित और अनवगाहित मण्डल की अपेक्षा अनवस्थित तथा ओज संस्थिति के संबंध में स्वमत सापेक्ष कथन	28	

ज. आभ्यन्तर पुष्करार्ध में दिन रात्रि तथा उत्सर्पिणी-अवसर्पिणी		द्वितीय प्राभृत-प्राभृत
30	नवम प्राभृत	33 चन्द्र के साथ योग करने वाले नक्षत्रों का मुहूर्त परिमाण
	क. पौरुषी छाया का मूल कारण व इस विषय में अन्य तीन प्रतिपत्तियाँ	34 सूर्य के साथ योग करने वाले नक्षत्रों का मुहूर्त परिमाण
31	चतुर्थ प्राभृत-प्राभृत	35 पूर्व भाग, पश्चिम भाग, नक्तं भाग और उभय भाग से चन्द्र के साथ योग करने वाले नक्षत्र व काल प्रमाण
	क. सूर्य से पौरुषी छाया के मूल विभाग में अन्य पच्चीस प्रतिपत्तियाँ	36 युग के प्रारंभ में चन्द्र के साथ योग करने वाले नक्षत्रों का पूर्वादि विभाग व काल प्रमाण
	ख. स्वमत का सम्यक् प्रतिपादन	पंचम प्राभृत-प्राभृत
	ग. पौरुषी छाया निवर्तन की दो प्रतिपत्तियाँ	37 नक्षत्रों के कुल, उपकुल और कुलोपकुल
	घ. दिन के विभागों के अनुसार पौरुषी छाया व इस विषय में अन्य छियानवें प्रतिपत्तियाँ	38 क. बारह पूर्णिमाओं में चन्द्र के साथ योग करने वाले नक्षत्रों की संख्या
	ङ. स्वमत का सम्यक् समर्थन	ख. बारह अमावस्याओं में चन्द्र के साथ योग करने वाले नक्षत्रों की संख्या
	च. पौरुषी छाया का प्रमाण	षष्ठ प्राभृत-प्राभृत
	छ. पच्चीस प्रकार की छाया	39 क. बारह पूर्णिमाओं में नक्षत्रों के कुल, उपकुल और कुलोपकुलों की नक्षत्र-योग संख्या
	ज. गोल छाया के आठ प्रकार	ख. बारह अमावस्याओं में नक्षत्र योग संख्या
	दशम प्राभृत	ग. बारह अमावस्याओं में नक्षत्रों के कुल, उपकुल और कुलोपकुलों की नक्षत्र-योग संख्या
32	प्रथम प्राभृत-प्राभृत	
	क. नक्षत्रों का योग (क्रम) व आवलिका नियात की अन्य पाँच प्रतिपत्तियाँ	
	ख. स्वमत कथन	

सप्तम प्राभृत-प्राभृत	ख. पन्द्रह रात्रियों के नाम
40 बारह पूर्णिमाओं और अमावस्याओं में चन्द्र के साथ नक्षत्रों का योग	पन्द्रहवाँ प्राभृत-प्राभृत
	49 क. पन्द्रह दिवस तिथियों के नाम
अष्टम प्राभृत-प्राभृत	ख. पन्द्रह रात्रि तिथियों के नाम
41 नक्षत्रों के संस्थान	सोलहवाँ प्राभृत-प्राभृत
नवम प्राभृत-प्राभृत	50 नक्षत्रों के गोत्र
42 नक्षत्रों के ताराओं की संख्या	सत्तरहवाँ प्राभृत-प्राभृत
दशम प्राभृत-प्राभृत	51 नक्षत्रों में भोजन और कार्यसिद्धि का विधान
43 वर्षा, हेमन्त और ग्रीष्म ऋतुओं में मासक्रम से नक्षत्रों का योग तथा पौरुषी प्रमाण	अठारहवाँ प्राभृत-प्राभृत
इग्यारहवाँ प्राभृत-प्राभृत	52 क. एक युग में चन्द्र के साथ नक्षत्रों का योग
44 दक्षिण, उत्तर और उभय मार्ग से चन्द्र के साथ योग करने वाले नक्षत्रों की संख्या	ख. एक युग में सूर्य के साथ नक्षत्रों का योग
45 सूर्य, चन्द्र और नक्षत्रों से अविरहित, विरहित तथा सामान्य चन्द्र मण्डलों की संख्या	उन्नीसवाँ प्राभृत-प्राभृत
बारहवाँ प्राभृत-प्राभृत	53 क. एक संवत्सर के मास
46 नक्षत्रों के देवता	ख. लौकिक मास के नाम
तेरहवाँ प्राभृत-प्राभृत	ग. लोकोत्तर मासों के नाम
47 तीस मुहूर्तों के नाम	बीसवाँ प्राभृत-प्राभृत
चौदहवाँ प्राभृत-प्राभृत	54 पाँच प्रकार के संवत्सर
48 क. पन्द्रह दिनों के नाम	55 नक्षत्र संवत्सरों के बारह भेद और उनका काल प्रमाण
	56 क. पाँच प्रकार का युग संवत्सर और उनका काल प्रमाण
	ख. चन्द्रादि पाँच संवत्सर के पर्व
	57 पाँच प्रकार का प्रमाण व उनके संवत्सर

58	क. पाँच प्रकार का लक्षण संवत्सर	संक्रमण
	ख. अष्टावीस प्रकार का शनैश्चर संवत्सर	पाँच संवत्सर की अमावस्याओं में चन्द्र का मण्डल व
	ग. नक्षत्र संवत्सर के लक्षण की गाथा	विभागों में संक्रमण
	घ. चन्द्र संवत्सर के लक्षण की गाथा	पाँच संवत्सर की अमावस्याओं में सूर्य का मण्डल व
	ङ. ऋतु (क्रम) संवत्सर के लक्षण की गाथा	विभागों में संक्रमण
	च. आदित्य संवत्सर के लक्षण की गाथा	पाँच संवत्सर की पूर्णिमाओं में चन्द्र-सूर्य के साथ नक्षत्रों
	छ. अभिवर्धित संवत्सर के लक्षण की गाथा	का योग
	इक्कीसवाँ प्राभृत-प्राभृत	
59	क. नक्षत्रों के दिशा द्वार व पाँच प्रतिपत्तियाँ	पाँच संवत्सर की अमावस्याओं में चन्द्र-सूर्य के साथ
	ख. स्वमत निरूपण	नक्षत्रों का योग
	बावीसवाँ प्राभृत-प्राभृत	
60	क. नक्षत्रों के स्वरूप का प्ररूपण	चन्द्र और सूर्य से नक्षत्रों का योग काल
	ख. दो चन्द्र के साथ योग करने वाले नक्षत्रों का मुहूर्त	क. चन्द्र-सूर्य-ग्रह और नक्षत्रों की गतियुक्ता
	ग. दो सूर्यों के साथ योग करने वाले नक्षत्रों का मुहूर्त	ख. चन्द्र-सूर्य-ग्रह और नक्षत्रों का योग
	परिमाण	इग्यारहवाँ प्राभृत
	परिमाण	पाँच संवत्सरों का आदि अंत काल और चन्द्र-सूर्य के
	नक्षत्रों का सीमा विष्क्रम्य	साथ नक्षत्रों का योग काल
61	प्रातः सायं और उभयकाल में चन्द्र के साथ योग करने	बारहवाँ प्राभृत
62	वाले नक्षत्र	पाँच संवत्सरों और मासों के अहोरात्रों के मुहूर्तों का प्रमाण
63-64	पाँच संवत्सर के एक युग की बांसठ पूर्णिमा और बांसठ	एक युग के अहोरात्र और मुहूर्त का प्रमाण
	अमावस्याओं में चन्द्र-सूर्य का मण्डल व विभागों में	पाँच संवत्सरों का आदि अंत काल तथा उनके समत्व
		का प्ररूपण

75	क. ऋतुओं के नाम और काल प्रमाण ख. छ क्षय तिथियाँ ग. छ अधिक तिथियाँ घ. क्षय तिथियां चन्द्र मास में और अधिक तिथियां आदित्य मास में	84	चन्द्रादि ज्योतिषी देवों की एक मुहूर्त में गति का प्ररूपण क. चन्द्र-सूर्य-नक्षत्रों की गति की विशेषता का प्ररूपण ख. चन्द्र और नक्षत्रों की योग-गति का प्ररूपण ग. चन्द्र और ग्रहों की योग-गति के काल की प्ररूपणा घ. सूर्य और नक्षत्रों की योग-गति के काल की प्ररूपणा ङ. सूर्य और ग्रहों की योग-गति के काल की प्ररूपणा क. नक्षत्रमास में चन्द्र-सूर्य नक्षत्र की मण्डल गति ख. चन्द्रमास में चन्द्र-सूर्य नक्षत्र की मण्डल गति ग. ऋतु मास में चन्द्र-सूर्य नक्षत्र की मण्डल गति घ. आदित्य मास में चन्द्र-सूर्य नक्षत्र की मण्डल गति ङ. अभिवर्धित मास में चन्द्र-सूर्य नक्षत्र की मण्डल गति
76	वार्षिकी आवृत्तियों में चन्द्र-सूर्य से नक्षत्रों का योग काल		
77	क. हेमतिकी आवृत्तियों में चन्द्र-सूर्य से नक्षत्रों का योग काल	85	
78	ख. छत्रातिष्ठत्र योग का स्वरूप क. दस प्रकार से योग प्ररूपण		
79	तेरहवाँ प्राभृत कृष्ण और शुक्ल पक्ष में चन्द्र की हानि-वृद्धि		गति
80	बासठ पूर्णिमा और बासठ अमावस्याओं में चन्द्र-सूर्यों का योग	86	क. चन्द्र-सूर्य के साथ की एक अहोरात्र में मण्डल गति ख. एक-एक मण्डल में चन्द्र-सूर्य-नक्षत्रों की अहोरात्र-गति
81	चन्द्र-सूर्य अर्द्धमास में चन्द्र-सूर्य मण्डल गति चौदहवाँ प्राभृत		ग. चन्द्र-सूर्य के साथ की एक युग में मण्डल गति
82	कृष्ण और शुक्ल पक्ष में चन्द्रिका और अंधकार का प्रमाण	87	सोलहवाँ प्राभृत क. चन्द्रिका के पर्याय/लक्षण ख. आतप के पर्याय/लक्षण ग. छाया के पर्याय/लक्षण
83	चन्द्रादि ज्योतिषी देवों की गति का प्ररूपण		पन्द्रहवाँ प्राभृत

88	घ. अंधकार के पर्याय/लक्षण सत्रहवाँ प्राभूत क. चन्द्र-सूर्य का च्यवन (मरण) और उपपात (जन्म) की पच्चीस प्रतिपत्तियाँ ख. स्वमत का प्रतिपादन		ख. चन्द्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र और ताराओं के विमानों का आयाम-विष्कम्भ, परिधि और बाह्यत्व ग. चन्द्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र और ताराओं के विमानों का वहन करने वाले देवों की संख्या और उनका दिशा क्रम से रूप
89	अठारहवाँ प्राभूत क. भूमि से चन्द्र सूर्यादि की ऊँचाई के परिमाण की पच्चीस प्रतिपत्तियाँ	95	क. पाँच ज्योतिष्क देवों में शीघ्र या मंद गति की अपेक्षा से अल्प-बहुत्व
90	ख. स्वमत का यथार्थ प्रतिपादन क. चन्द्र-सूर्य के विमान के नीचे व ऊपर तथा सम विभाग में ताराओं के विमान	96	ख. पाँच ज्योतिष्क देवों का अल्प ऋद्धि-महाऋद्धि की अपेक्षा से अल्प-बहुत्व जम्बूद्वीप में एक तारा विमान से दूसरे तारा विमान का जघन्य-उत्कृष्ट अंतर
91	ख. नीचे, ऊपर और सम विभाग में तारा विमानों के होने का हेतु	97	क. चन्द्र की अग्रमहिषियाँ, प्रत्येक अग्रमहिषी का परिवार व विकुर्वणा शक्ति
92	एक चन्द्र का ग्रह, नक्षत्र और ताराओं का परिवार क. मेरु पर्वत से ज्योतिष चक्र का अंतर		ग. चन्द्रावतंसक विमान की सुधर्मा सभा में जिन अस्थियों का सम्मान
93	ख. लोकांत से ज्योतिष चक्र का अंतर जम्बूद्वीप में सर्वाभ्यन्तर, सर्वबाह्य, सर्वोपरि और सबसे नीचे चलने वाले नक्षत्र		घ. सूर्य की अग्रमहिषियाँ व उनके देवों आदि परिवार की विकुर्वणा
94	क. चन्द्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र और ताराओं के विमानों के संस्थान	98	क. ज्योतिषी देव-देवियों की जघन्य-उत्कृष्ट स्थिति ख. चन्द्र विमान के देव-देवियों की जघन्य-उत्कृष्ट स्थिति ग. सूर्य विमान के देव-देवियों की जघन्य-उत्कृष्ट स्थिति

घ.	ग्रह विमान के देव-देवियों की जघन्य-उत्कृष्ट स्थिति	झ.	कालोद समुद्र में चन्द्र-सूर्य, ग्रह, नक्षत्र और तारे
ङ.	नक्षत्र विमान के देव-देवियों की जघन्य-उत्कृष्ट स्थिति	ञ.	पुष्करवर द्वीप का संस्थान, आयाम-विष्कम्भ और परिधि
च.	तारा विमान के देव-देवियों की जघन्य-उत्कृष्ट स्थिति	ट.	पुष्करवर द्वीप में चन्द्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र और तारे
99	पाँच ज्योतिषी देवों का अल्प-बहुत्व	ठ.	पुष्करवर द्वीप के मध्य में स्थित माणुषोत्तर पर्वत का संस्थान व विभाग
	उन्नीसवाँ प्राभूत	ड.	आभ्यन्तर पुष्करार्ध का संस्थान, आयाम-विष्कम्भ और परिधि
100	क. चन्द्र-सूर्य सारे लोक को प्रकाशित करते हैं या लोक के एक विभाग को, इस सम्बन्ध में अन्य बारह प्रतिपत्तियाँ	ढ.	आभ्यन्तर पुष्करार्ध में चन्द्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र और तारे
	ख. स्वमत का सम्यक् निरूपण	ण.	समय क्षेत्र (मनुष्य क्षेत्र) का आयाम-विष्कम्भ और परिधि
	ग. जम्बूद्वीप में चन्द्र-सूर्य-ग्रह-नक्षत्र और तारे का परिमाण	त.	समय क्षेत्र (मनुष्य क्षेत्र) में चन्द्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र और तारे
	घ. लवण समुद्र का संस्थान, आयाम-विष्कम्भ और परिधि	थ.	मनुष्य लोक से बाहर असंख्य तारे
	ङ. लवण समुद्र में चन्द्र-सूर्य, ग्रह, नक्षत्र और तारे	द.	ज्योतिष चक्र कदम्ब पुष्प के आकार में चलायमान
	च. धातकी खण्ड का संस्थान, आयाम-विष्कम्भ और परिधि	ध.	मनुष्य लोक में करोड़ा-करोड़ तारे
	छ. धातकी खण्ड में चन्द्र-सूर्य-ग्रह नक्षत्र और तारे	न.	ज्योतिष्कों के पिटक की गाथाएं
	ज. कालोद समुद्र का संस्थान, आयाम-विष्कम्भ और परिधि	प.	ज्योतिष्कों के पत्तियों की गाथाएं
		फ.	ज्योतिष्कों के मण्डल की गाथाएं

बीसवाँ प्राभूत	
ब. ज्योतिष्कों के मण्डल-संक्रमण की गाथा	
भ. सुख-दुःख का निमित्त कारण ज्योतिष्कों का संचरण	102
म. चन्द्र की हानि-वृद्धि की गाथाएं	
य. अनवस्थित और अवस्थित ज्योतिष्क	103
र. अढ़ाई द्वीप-समुद्र में ज्योतिष्कों का प्रमाण	
ल. मानुषोत्तर पर्वत के बाहर ज्योतिष्कों का प्रमाण	
व. मानुषोत्तर पर्वत के बाहर ज्योतिष्कों का अन्तर	
श. मानुषोत्तर पर्वत के बाहर एक चन्द्र का परिवार	
ष. मनुष्य क्षेत्र में ज्योतिष्कों के ऊर्ध्वोपपन्नकादि का प्ररूपण	
स. पूर्व इन्द्र के च्यवन के अनन्तर अन्य इन्द्र की उत्पत्ति का प्ररूपण	104
ह. मनुष्य क्षेत्र के ज्योतिष्कों का ऊर्ध्वोपपन्नकादि का प्ररूपण	105
क. पुष्करोद समुद्र का संस्थान, आयाम-विष्कम्भ और परिधि	106
ख. पुष्करोद समुद्र में चन्द्र, सूर्य, ग्रह नक्षत्र और तारे	
ग. स्वयंभूरमण पर्यंत द्वीप समुद्रों का संस्थान, आयाम-विष्कम्भ और परिधि	107
घ. स्वयंभूरमण पर्यंत चन्द्र, सूर्य, ग्रह नक्षत्र और तारे	
क. चन्द्र और सूर्यो का स्वरूप व अन्य दो प्रतिपत्तियाँ	
ख. स्वमत प्रतिपादन	
क. राहु का वर्णन व अन्य दो प्रतिपत्तियाँ	
ख. पन्द्रह प्रकार के कृष्ण वर्ण वाले पुद्गलों से राहु ग्रसित	
ग. स्वमत का विस्तार से कथन	
घ. राहु के नौ नाम	
ङ. राहु विमान के पांच वर्ण	
च. दो प्रकार के राहु	
छ. राहु का जघन्य-उत्कृष्ट काल	
क. चन्द्र को 'शशि' कहने का हेतु	
ख. सूर्य को 'आदित्य' कहने का हेतु	
क. चन्द्र-सूर्यादि के काम-भोगों का प्ररूपण	
ख. चन्द्र-सूर्य के काम भोगों की मानव भोगों से तुलना	
क. अठ्यासी महाग्रहों के नाम	
ख. अठ्यासी महाग्रहों की संग्रहणी गाथाएं	
क. उपसंहार गाथाएं	
ख. चन्द्र-सूर्य प्रज्ञप्ति के पात्र-अपात्र	
ग. भगवान महावीर वंदना	

णमो सव्वोसहिपत्ताणं

धर्मकथानुयोगमय निरयावलिकादि

पाँच उपांग

श्रुत स्कंध	1	ख. चंपा नगरी, पूर्ण भद्र चैत्य, श्रेणिक राजा, चेलणा,
वर्ग	5	रानी कूणिक राजा, पद्मावती देवी
अध्ययन (उद्देशक)	52	ग. काली देवी का पुत्र काल कुमार
मूल पाठ	1100 श्लोक प्रमाण	काल कुमार का रथ-मूशल संग्राम हेतु युद्धार्थ गमन
		काल कुमार के सम्बन्ध में काली देवी के संकल्प-विकल्प
		चिंता निवारण हेतु काली देवी का भगवान के समीप गमन

19-23 निरयावलिकादि पाँच

उपांग-विषय सूची

प्रथम निरयावलिका वर्ग

प्रथम काल अध्ययन

1	उत्थानिका-राजगृह नगर, गुणशील चैत्य, अशोक वृक्ष, पृथ्वीशिलापट्टक	10	ख. काली देवी की काल कुमार के सम्बन्ध में जिज्ञासा
2	आर्य सुधर्मा स्वामी का पदार्पण, धर्मकथा	11	ग. महावीर द्वारा काली देवी की जिज्ञासा का समाधान
3	क. जम्बू अणगार की जिज्ञासा		घ. चेटक राजा के बाण प्रहार से काल कुमार की मृत्यु शोक-विह्वल काली देवी का स्व-स्थान गमन
	ख. उपांगों के सम्बन्ध में सुधर्मा स्वामी का कथन		क. भ. गौतम की जिज्ञासा-काल कुमार की मृत्यु के पश्चात् कौनसी गति?
ग. उपांगों के पाँच वर्ग			ख. भ. महावीर द्वारा समाधान- कालकुमार का चौथी नरक में गमन
4	प्रथम वर्ग के दस अध्ययन		ग. गमन का कारण?
5	क. प्रथम अध्ययन का वर्णन		चेलणा का दोहद
			श्रेणिक का आश्वासन
			क. अभयकुमार की श्रेणिक राजा से जिज्ञासा

	संस्कार	
ख. अभयकुमार द्वारा दोहद की पूर्ति का उपाय		
15 चेलणा का गर्भपात के लिए प्रयत्न	ग. मानसिक दुःख से दुःखी होकर कूणिक द्वारा राजगृही	
16 बालक का जन्म, एकांत उकरड़े पर फिंकवाना	नगरी त्यागना व चंपानगरी राजधानी बनाना	
17 क. श्रेणिक द्वारा भर्त्सना	घ. काल आदि राजकुमारों को राज्य आदि का भाग देना	
ख. शिशु की उंगली पर मुर्गे की चोंच का प्रहार	क. अंतपुर सहित बेहल्लकुमार की क्रीड़ा और सेचनक	22-23
ग. श्रेणिक द्वारा शिशु को उकरड़ी से मंगवाना	गंध हस्ती की जल क्रीड़ा से पद्मावती को ईर्ष्या	
घ. शिशु की अंगुली का पकना	ख. पद्मावती की प्रेरणा से हार, हाथी लौटाने की	
इ. अंगुली की चिकित्सा	बेहल्लकुमार से कूणिक की माँग	
च. बालक का कूणिक नाम देना, पालन-पोषण, शिक्षा, आठ कन्याओं के साथ विवाह	बेहल्लकुमार का विदेह जनपद की वैशाली राजधानी में राजा चेटक से संरक्षण चाहना	24
क. कूणिक का श्रेणिक को बंदी बनाने का तथा अपने राज्याभिषेक का कुविचार	कूणिक द्वारा चेटक को संरक्षण में रहे हुए बेहल्लकुमार आदि को लौटाने हेतु दूत द्वारा संकेत	25
ख. काल आदि दस भ्राताओं को राज्य विभाग देने का प्रलोभन	चेटक द्वारा बेहल्ल आदि को लौटाने से इन्कार	26
श्रेणिक को बंदी बनाने के पश्चात् कूणिक का राज्याभिषेक	कूणिक राजा बेहल्ल आदि को द्वारा नहीं लौटाने पर युद्ध की चेतावनी	27
क. कूणिक का चेलना देवी के पाद वंदनार्थ गमन	काल आदि दस कुमारों की युद्ध की तैयारी	28-29
ख. चेलना का कूणिक को पूर्व वृत्तांत सुनाना	तेतीस हजार हाथी, तेतीस हजार घोड़ों, तेतीस हजार रथों	30
ग. कूणिक का श्रेणिक को बंधन मुक्त करने के लिये जाना	व तेतीस करोड़ मनुष्यों के साथ कूणिक का युद्धार्थ प्रस्थान	
क. श्रेणिक द्वारा तालपुट विष से आत्मघात	चेटक द्वारा अठारह गण राजाओं से परामर्श	31
ख. कूणिक द्वारा आर्तध्यान व श्रेणिक राजा का अग्नि	सत्तावन हजार हाथी, सत्तावन हजार घोड़े, सत्तावन हजार	32

रथों व सत्तावन करोड़ मनुष्यों के साथ चेटक राजा का युद्ध क्षेत्र में आगमन		का वर्णन जानना चाहिए	
33	क. कूणिक व चेटक राजा द्वारा रण भूमि को सुसज्जित करना व जय-विजय हेतु अर्चना करना ख. रथमूसल संग्राम में कूणिक द्वारा गरूडव्यूह की रचना व चेटक राजा द्वारा शकटव्यूह की रचना द्वारा भयंकर युद्ध ग. भयंकर युद्ध में कालकुमार का मरण व चौथी पंकप्रभा नरक में उत्पत्ति	1 2 3	प्रथम पद्म अध्ययन क. उत्थानिका- दस अध्ययनों के नाम ख. प्रथम अध्ययन पद्मकुमार का वर्णन काल कुमार की रानी पद्मावती के सुपुत्र पद्म कुमार की भ. महावीर के समीप अणगार प्रव्रज्या क. पद्म अणगार की साधना ख. पद्मकुमार की सौधर्म विमान में उत्पत्ति ग. देवलोक से च्यवन, महाविदेह में जन्म, वैराग्य प्रव्रज्या, साधना व मोक्ष
34	कालकुमार का नरक से उद्वर्तन कर महाविदेह क्षेत्र में जन्म, वैराग्य, प्रव्रज्या, साधना और मोक्ष		द्वितीय महापद्म अध्ययन चंपानगरी, पूर्णभद्र चैत्य, कूणिक राजा, विमाता सुकाली, सुकाल राजकुमार, पत्नी महापद्मा व पुत्र महापद्म द्वारा दीक्षा ग्रहण, ईशान कल्प में उत्पत्ति
35	क. चंपानगरी, पूर्णभद्र चैत्य, कूणिक राजा, पद्मावती पट्टरानी, कूणिक की सौतेली माता सुकाली, ख. सुकाली पुत्र सुकाल का युद्ध में मरण व चौथी नरक में उत्पत्ति ग. सुकालकुमार का नरक से उद्वर्तन कर महाविदेह क्षेत्र में जन्म, वैराग्य, प्रव्रज्या, साधना और मोक्ष	4 5	तृतीय से दशम अध्ययन क. शेष आठों का पद्म के समान वर्णन ख. शेष आठों की दीक्षा पर्याय ग. शेष आठों की क्रम से ऊपर के देवलोकों में उत्पत्ति घ. सबका महाविदेह में जन्म और निर्वाण
36	कालकुमार की तरह शेष महाकाल आदि आठ राजकुमारों		तृतीय से दसम अध्ययन

तृतीय पुष्पिका वर्ग		7	उपसंहार
प्रथम चन्द्र अध्ययन			द्वितीय सूर्य अध्ययन
1	उत्थानिका-दस अध्ययनों के नाम	8	उत्थानिका-
2	क. प्रथम अध्ययन-राजगृह नगर, गुणशील चैत्य, श्रेणिक राजा, राजा	9	क. राजगृह नगर, गुणशील चैत्य, श्रेणिक राजा, भ. महावीर का पदार्पण
	ख. भ. महावीर का पदार्पण, धर्म परिषद्, प्रवचन		ख. सूर्य का आगमन, भगवान के सामने नृत्य
	ग. ज्योतिष्केन्द्र चन्द्र का जम्बूद्वीप अवलोकन		ग. सूर्य का पूर्वभव वर्णन, श्रावस्ती नगर, सुप्रतिष्ठ गाथापति, भ. पार्श्वनाथ के समीप अनगर प्रव्रज्या, श्रामण्य विराधना, सूर्यावतंसक विमान में उपपात और च्यवन
3	ड. भ. गौतम की चन्द्र के पूर्व भव सम्बन्धी जिज्ञासा	10	घ. महाविदेह में जन्म और निर्वाण उपसंहार
	क. भ. महावीर द्वारा समाधान, पूर्वभव वर्णन		
	ख. श्रावस्ती नगरी, कोष्ठक चैत्य		
4	ग. अंगती नामक गाथापति का वर्णन	11	तृतीय शुक्र अध्ययन
	क. भ. पार्श्वनाथ का पदार्पण-धर्म कथा		उत्थानिका-
	ख. अंगती का धर्म श्रवण, वैराग्य, ज्येष्ठ पुत्र को गृहभार सौंपना, अनगर प्रव्रज्या	12	क. राजगृह नगर, गुणशील चैत्य श्रेणिक राजा, शुक्र देवता
5	क. संयम साधना, संलेखना-संधारा ग्रहण		ख. चार हजार सामानिक देवों के साथ शुक्र द्वारा भगवान के सामने नृत्य
	ख. चन्द्रावतंसक विमान में उपपात		
6	ग. चन्द्र पांच प्रकार की पर्याप्तियों से पर्याप्त चन्द्र की स्थिति, च्यवन, महाविदेह में जन्म, वैराग्य, संयम साधना, अंतिम आराधना, निर्वाण	13	शुक्र महाग्रह का पूर्वभव- वाराणसी नगरी, सोमिल ब्राह्मण, भ. पार्श्वनाथ का पदार्पण, धर्मकथा
		14	क. सोमिल की जिज्ञासा-प्रश्नोत्तर

	ख. श्रावक धर्म की स्वीकृति	योजन ऊँचे वैक्रिय शरीर बनाकर समवशरण में उपस्थित
15	ग. भ. पार्श्वनाथ का वाराणसी के आम्रशाल वन से विहार	ग. बहुपुत्रिका देवी द्वारा दाहिनी भुजा पर 108 देवकुमार
16	घ. सोमिल का पुनः मिथ्यात्व होना आम्र आराम-यावत्-पुष्प आराम का निर्माण क. जाति भोज, ज्येष्ठ पुत्र को कुटुम्ब भार सौंपना, वान प्रस्थ-तापस बनना	व बायीं भुजा पर 108 देवकुमारियों की विक्रवणा कर भगवान के सामने नाट्य विधि
	ख. अनेक प्रकार के वानप्रस्थ तापस	क. भ. गौतम की जिज्ञासा
	ग. सोमिल द्वारा दिशा प्रोक्षिका प्रव्रज्या स्वीकार करना	ख. भ. महावीर द्वारा पूर्वभव वर्णन-वाराणसी नगरी, आम्रशालवन, भद्र सार्थवाह, सुभद्रा भार्या
	घ. सोमिल का अभिग्रह	सुभद्रा का आर्तध्यान, वंध्यापन से व्याकुलता
17	सोमिल द्वारा पूर्व आदि चारों दिशाओं में आह्वान	सुव्रता आर्या का पदार्पण
18	सोमिल का काष्ठमुद्रा से मुख बाँधना	क. एक साध्वी सिंघाड़ा का भिक्षार्थ जाना
19-23	सोमिल के समीप एक देव का आगमन-दुष्प्रव्रज्या कथन	ख. उनके सन्मुख वंध्यापन दूर करने के लिए प्रयोग
24	सोमिल का पुनः श्रावक धर्म आराधन	बताने हेतु निवेदन
25	सोमिल का शुक्रावतंसक विमान में उपपात	सुभद्रा की निर्ग्रथ प्रवचन में रूचि उत्पन्न करना
26	देवलोक से च्यवन, महाविदेह में जन्म और निर्वाण	सुभद्रा द्वारा श्रमणोपासिका व्रत ग्रहण
27	उपसंहार	सुभद्रा का दीक्षा लेने का संकल्प
	चतुर्थ बहुपुत्रिका अध्ययन	सुभद्रा की अनगार प्रव्रज्या, संयम साधना
28	उत्थानिका-	सुभद्रा की शिशु पालन पोषण में अभिरूचि
29	क. राजगृह नगर, गुणशील चैत्य, श्रेणिक राजा, महावीर का समवसरण, धर्म-देशना	सुभद्रा का पृथक् उपाश्रय में निवास, स्वच्छन्द जीवन, श्रमण्य-विराधना
	ख. ऋद्धि वैभव के साथ बहुपुत्रिका देवी एक हजार	बहुपुत्रिका देवी के रूप में सौधर्मकल्प में उपपात

45	क. बहुपुत्रिका देवी का नाट्य प्रदर्शन ख. बहुपुत्रिका देवी की स्थिति ग. देवलोक से च्यवन घ. जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में विंध्यगिरि पर्वत, बिभेल सन्निवेश, ब्राह्मण कुल में जन्म, सोमा नाम देना युवा होने पर भाणेज राष्ट्रकूट से विवाह सोमा का बत्तीस पुत्रों के पालन-पोषण से व्यथित होना सुव्रता आर्या का पदार्पण सोमा का धर्मश्रवण, श्रमणोपासिका बनना क. सोमा का राष्ट्रकूट से दीक्षा के लिए पूछना ख. सुव्रता आर्या का विहार क. सुव्रता का पुनः पदार्पण ख. सोमा की अणगार प्रव्रज्या-संयम साधना शक्रेन्द्र के सामानिक देवरूप में उपपात देवलोक से च्यवन-महाविदेह में जन्म और निर्वाण उपसंहार		ग. भ. गौतम की जिज्ञासा घ. भ. महावीर द्वारा पूर्वभव वर्णन- जम्बूद्वीप, भरत क्षेत्र, मणिपदिका नगरी, चन्द्र राजा, ताराकीर्ण उद्यान इ. पूर्णभद्र गाथापति क. बहुश्रुत स्थविरों का आगमन, धर्म श्रवण, वैराग्य, अणगार प्रव्रज्या, संयम साधना ख. सौधर्मकल्प के पूर्णभद्र विमान में उपपात ग. पूर्णभद्र देव की स्थिति घ. देवलोक से च्यवन, महाविदेह में जन्म और निर्वाण उपसंहार	58
46				
47-48				
49				
50				
51				
52				
53				
54				
55				
56				

षष्ठ मणिभद्र अध्ययन

उत्थानिका-

- क. राजगृह नगर, गुणशील उद्यान, राजा श्रेणिक
ख. भगवान महावीर का पदार्पण
ग. मणिभद्र देव ने समवसरण में पहुंच कर भगवान के सामने नृत्य किया

- घ. भ. गौतम ने पूर्व भव के विषय में पूछा
इ. भ. द्वारा पूर्वभव- मणिपदिका नगरी, मणिभद्र गाथापति, दीक्षा अंगीकार, संयम साधना, संलेखना
च. मणिभद्र विमान में उपपात
छ. मणिभद्र देव की स्थिति

पंचम पूर्णभद्र अध्ययन

उत्थानिका-

- क. राजगृह नगर, गुणशील चैत्य, भ. महावीर का समवसरण, धर्मदेशना
ख. पूर्णभद्र देव का आगमन-नाट्य प्रदर्शन

62	ज. देवलोक से च्यवन, महाविदेह क्षेत्र में जन्म और मोक्ष उपसंहार	गुणशील चैत्य जितशत्रु-राजा इ. सुदर्शन गाथापति, प्रिया-भार्या, भूता-पुत्री च. भूता का अविवाहित रहना
63	सप्तम अध्ययन से दशम अध्ययन क. दत्त गाथापति-चंदना नगरी ख. शिव गाथापति-मिथिला नगरी ग. बल गाथापति-हस्तिनापुर नगरी घ. अनाधृत गाथापति-काकंदी नगरी इ. चारों का वर्णन पूर्णभद्र के समान	भ. पार्श्वनाथ का समवसरण-धर्मकथा, भूता का धर्म श्रवण, वैराग्य भूता द्वारा प्रवज्या ग्रहण क. भूता की शरीर सुश्रुषा ख. भूता का अलग उपाश्रय में निवास, स्वच्छन्द जीवन, श्रामण्य विराधना क. सौधर्म कल्प में उपपात, स्थिति, च्यवन ख. महाविदेह में जन्म और निर्वाण उपसंहार
1	उत्थानिका-	
2	दस अध्ययनों के नाम	द्वितीय से दसम अध्ययन
3	प्रथम अध्ययन का क्या आशय?	नव ही अध्ययनों का भूता के समान वर्णन
4	आर्य सुधर्मा स्वामी ने आर्य जम्बू से कहा-	पंचम वर्णित दशा वर्ग
5	क. राजगृह नगर, गुणशील चैत्य, श्रेणिक राजा, भ. महावीर का समवसरण-धर्मदिशना ख. सौधर्म कल्प से श्रीदेवी का आगमन, नाट्य दर्शन ग. भ. गौतम द्वारा पूर्वभव पृच्छा घ. महावीर द्वारा पूर्वभव का वर्णन-राजगृह नगर,	प्रथम निषध अध्ययन उत्थानिका- बारह अध्ययनों के नाम प्रथम अध्ययन वर्णन द्वारिका नगरी वर्णन

6	रैवतक पर्वत वर्णन	15	क. देवलोक से च्यवन व निषधकुमार रूप में जन्म
7	नंदन वन उद्यान व सुरप्रिय यक्ष का यक्षायतन वर्णन		ख. भ. अरिष्टनेमि के पास श्रावक धर्म अंगीकार
8	क. द्वारिका नगरी में कृष्ण वासुदेव का शासन	16	निषध का प्रव्रज्या लेने का संकल्प
	ख. बलदेव राजा, रेवती रानी, निषधकुमार	17	क. भ. अरिष्ट नेमिनाथ का 18 हजार साधुओं के साथ पदार्पण, धर्मदेशना
9	ग. युवावस्था में पचास कन्याओं के साथ विवाह		ख. निषध की अनगार प्रव्रज्या
10	भ. अरिष्ट नेमिनाथ का समवसरण-धर्म देशना	18	निषधकुमार ने नव वर्ष संयम पाला व 21 दिन का
11	श्री कृष्ण वासुदेव का दर्शनार्थ गमन		संलेखना संधारा लिया
	क. निषधकुमार का दर्शनार्थ गमन	19	निषध का सर्वार्थ सिद्ध विमान में उपपात, स्थिति तेतीस
12	ख. निषध का धर्म श्रवण, श्रावक धर्म की स्वीकृति		सागरोपम की, तत्पश्चात् च्यवन
	क. वरदत्त अणगार द्वारा निषध के पूर्वभव की पृच्छा	20	क. महाविदेह क्षेत्र के उत्राक नगर में जन्म, दीक्षा और निर्वाण
	ख. भ. अरिष्ट नेमिनाथ द्वारा पूर्वभव वर्णन-जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में रोहितक नगर, मेघवन उद्यान, मणिदत्त यक्ष का यक्षायतन, महाबल राजा, पद्मावती देवी, वीरगंद कुमार		ख. उपसंहार
	ग. वीरगंदकुमार का बत्तीस कन्याओं के साथ विवाह		द्वितीय से दशम अध्ययन
	घ. सिद्धार्थ आचार्य का आगमन		शेष इयारह अध्ययनों का वर्णन-निषध अध्ययन के समान
13	वीरगंदकुमार का दर्शनार्थ गमन, धर्म श्रवण, दीक्षा अंगीकार	21	क. निरयावलिंकादि में श्रुतस्कंध एक, पाँच वर्ग, पाँच दिनों में अध्ययन
14	क. वीरगंद अणगार ने 45 वर्ष दीक्षा पाली, 2 मास का संलेखना संधारा लिया व 120 भक्त अनशन किया		ख. चार वर्गों में दस-दस उद्देशक व पाँचवें वर्ग में बारह उद्देशक
	ख. ब्रह्मलोक कल्प के मनोरम विमान में उपपात, स्थिति दस सागरोपम		

णमो समणानं		6(1)	काम निवारण के अभाव में श्रामण्य पालन असंभव
चार मूल सूत्र		7-8(2-3)	अत्यागी और त्यागी का लक्षण
चरणानुयोगमय दशवैकालिक		9-10(4-5)	कामभोग निवारण के उपाय
अध्ययन	10	11-14(6-9)	क. काम पराजित रथनेमि को संयम में स्थिरता हेतु राजीमती का उपदेश
चूलिका	2		ख. अगंधनकुल के सर्प का उदाहरण
उद्देशक	14	15(10)	रथनेमि का संयम में पुनः स्थिरीकरण-हाथी का उदाहरण
उपलब्ध मूल पाठ	700 श्लोक प्रमाण	16(11)	समस्त साधकों के लिए प्रेरणा
पद्य सूत्र	514		
गद्य सूत्र	31		

24 दशवैकालिक सूत्र विषय-सूची

प्रथम द्रुमपुष्पिका अध्ययन
(धर्म प्रशंसा और माधुकरी वृत्ति)

गाथा		17(1)	निर्ग्रथ के अनाचारों का निरूपण
1	धर्म का स्वरूप और लक्षण तथा धार्मिक पुरुष का महत्व	18-25 (2-9)	52 अनाचीर्णों के नाम
2-4	श्रमण धर्म भिक्षाचरी और मधुकर वृत्ति उदाहरण- भ्रमर, फूल	क. (1-9)	औद्देशिक आदि अनाचार
5	श्रमण धर्म पालक भिक्षाजीवी साधुओं के चार गुण	ख. (10-17)	सन्निधि आदि अनाचार
	द्वितीय श्रामण्यपूर्वक अध्ययन (संयम में धृति और उसकी साधना)	ग. (18-22)	जुआ, शतरंज आदि खेलना अनाचार
		घ. (23-27)	शय्यातरपिंड आदि लेना अनाचार
		ङ. (28-31)	गृहस्थ की सेवा करना आदि अनाचार
		च. (32-38)	सचित्त मूला आदि अनाचार
		छ. (39-44)	सचित्त नमक आदि अनाचार

तृतीय क्षुल्लिकाचार-कथा अध्ययन
(आचार और अनाचार का विवेक)

17(1)	निर्ग्रथ के अनाचारों का निरूपण
18-25 (2-9)	52 अनाचीर्णों के नाम
क. (1-9)	औद्देशिक आदि अनाचार
ख. (10-17)	सन्निधि आदि अनाचार
ग. (18-22)	जुआ, शतरंज आदि खेलना अनाचार
घ. (23-27)	शय्यातरपिंड आदि लेना अनाचार
ङ. (28-31)	गृहस्थ की सेवा करना आदि अनाचार
च. (32-38)	सचित्त मूला आदि अनाचार
छ. (39-44)	सचित्त नमक आदि अनाचार

26 (10)	ज. (45-52) धोति-नेति-वमन आदि अनाचार निर्ग्रथों के लिए पूर्वोक्त अनाचीर्ण अनाचाराणीय	45(14)	अब्रह्मचर्य-विरमण- ब्रह्मचर्य महाव्रत का निरूपण और स्वीकार-पद्धति
27-29 (11-13)	निर्ग्रथों का विशिष्ट आचार	46(15)	परिग्रह-विरमण- अपरिग्रह महाव्रत का निरूपण और स्वीकार-पद्धति
30-31(14-15)	शुद्ध श्रमणाचार पालन का फल	47(16)	रात्रि भोजन-विरमण- व्रत का निरूपण और स्वीकार- पद्धति
32(1)	चतुर्थ षड् जीवनि का अध्ययन (जीव-संयम और आत्म-संयम) जीवाजीवाभिगम	48(17)	पाँच महाव्रत और रात्रि-भोजन विरमण व्रत के स्वीकार करने का हेतु-यतना
33-34(2-3)	षड्जीवनिकाय नाम निर्देश	49(18)	पृथ्वीकाय की हिंसा के विविध साधनों से बचने का उपदेश
35-38(4-7)	पृथ्वी, पानी, अग्नि और वायु की चेतना का निरूपण	50(19)	अपकाय की हिंसा के विविध साधनों से बचने का उपदेश
39(8)	वनस्पति की चेतनता और उसके प्रकारों का निरूपण	51(20)	तेजस्काय की हिंसा के विविध साधनों से बचने का उपदेश
40(9)	क. त्रसजीवों के प्रकार व लक्षण ख. षड्जीवनिकाय पर अश्रद्धा-श्रद्धा के परिणाम की बारह गाथाएँ	52(21)	वायुकाय की हिंसा के विविध साधनों से बचने का उपदेश
41(10)	जीववध न करने का उपदेश	53(22)	वनस्पतिकाय की हिंसा के विविध साधनों से बचने का उपदेश
42(11)	प्राणातिपात-विरमण- अहिंसा महाव्रत का निरूपण और स्वीकार-पद्धति	54(23)	त्रसकाय की हिंसा से बचने का उपदेश
43(12)	मृषावाद-विरमण सत्य महाव्रत का निरूपण और स्वीकार-पद्धति	अयतना से पाप कर्म का बंध और यतना से अबंध की गाथाएँ	
44(13)	अदत्तादान-विरमण- अचौर्य महाव्रत का निरूपण और स्वीकार-पद्धति	55(24)	अयतनापूर्वक चलने से हिंसा, बंधन और परिणाम

56(25)	अयतनापूर्वक खड़े रहने से हिंसा, बंधन और परिणाम	73(42)	मुनिपद को स्वीकार करने वाले को अनुत्तर धर्म का स्पर्श
57(26)	अयतनापूर्वक बैठने से हिंसा, बंधन और परिणाम	74(43)	चारित्रिक भावों की वृद्धि से कर्म रज की निर्जरा
58(27)	अयतनापूर्वक सोने से हिंसा, बंधन और परिणाम	75(44)	क. पूर्वसंचित कर्मरज का निर्जरण
59(28)	अयतनापूर्वक भोजन करने से हिंसा, बंधन और परिणाम		ख. केवलज्ञान और केवल दर्शन की संप्राप्ति
60(29)	अयतनापूर्वक बोलने से हिंसा, बंधन और परिणाम	76(45)	लोक-अलोक का प्रत्यक्षीकरण
61(30)	चलना, खड़ा होना, बैठना, सोना, खाना, बोलना यदि अविवेकपूर्वक होगा तो पापकर्म बंध	77(46)	योग निरोध से सिद्धि
		78(47)	शैलेशी अवस्था की प्राप्ति
62(31)	यदि विवेकपूर्वक चलना, खड़ा होना, बैठना, सोना, खाना, बोलना होगा तो पापकर्म बंध नहीं	79(48)	क. कर्मों का संपूर्ण क्षय
			ख. शाश्वत सिद्धि की प्राप्ति
63(32)	आत्मौपम्य-बुद्धि संपन्न व्यक्ति के पापकर्म बंध नहीं	80(49)	सुगति की दुर्लभता
64(33)	ज्ञान और दया (संयम) का पौर्वापर्य और अज्ञानी की भर्त्सना	81(50)	क. सुगति की सुलभता
65(34)	श्रुति का माहात्म्य और श्रेयस् के आचरण का उपदेश		ख. पिछली अवस्था में प्रव्रजित मुनि भी तप-संयम की
66(35)	जो जीव-अजीव को नहीं जानता वह संयम से अनभिज्ञ		उत्कृष्ट आराधना करने पर देवलोक में
67(36)	संयम के ज्ञान का अधिकारी		यतना का उपदेश और उपसंहार
68(37)	जीव-अजीव को जानने वाला वह जीवों की गतियों का ज्ञाता	82(51)	
69-70(38-39)	पुण्य-पाप तथा बंध और मोक्ष का ज्ञाता-भोगों से विरक्त		पंचम पिण्डैषणा अध्ययन
			प्रथम उद्देशक
			(एषणा- गवैषणा, ग्रहणैषणा और भोगैषणा) की शुद्धि
			(1) गवैषणा
71(40)	आसक्ति व वस्तु-उपभोग का त्याग	83-85(1-3)	भोजन, पानी की गवैषणा के लिये कब, कहाँ और कैसे जाया जाये?
72(41)	अन्तःबाह्य के संयोग के त्यागी का अणगर-धर्म ग्रहण	86(4)	विषम मार्ग से जाने का निषेध

87(5)	विषम मार्ग में जाने से होने वाले दोष	104(22)	भेड़, बकरी, बालक, कुत्ता या बछड़े आदि को लौंघकर जाने का निषेध
88(6)	क. सन्मार्ग के अभाव में विषम मार्ग से जाने की विधि ख. हिलते हुए काष्ठ, पत्थर, ईंट, कच्चे पुल पर से जाने का निषेध	105(23)	क. घर में प्रविष्ट साधु आसक्तिपूर्वक कोई पदार्थ न देखे ख. भिक्षा प्राप्त न होने पर बिना कुछ बोले वहां से लौट जाए
89(7)	अंगार आदि के अतिक्रमण का निषेध	106(24)	गोचरी के लिए गया हुआ मुनि गृहस्थ के चौंके की मर्यादा का उल्लंघन करके न जाए
90(8)	वर्षा, कुहरा, अंधड़ आदि में भिक्षा के लिये जाने का निषेध	107(25)	क. मर्यादित भूमि में ही उचित स्थान पर प्रतिलेखन कर खड़ा रहे
91-93(9-11)	वेश्या के पाड़े में भिक्षाटन करने का निषेध और वहाँ पर होने वाले दोषों का निरूपण	108(26)	ख. स्नान व शौच के स्थान की ओर दृष्टिपात न करे सचित मिट्टी और पानी लाने का मार्ग तथा बीज व हरी वनस्पति को छोड़कर खड़ा रहे
94(12)	कुत्ता, नई ब्याई हुई गाय, मदयुक्त बैल, घोड़ा, हाथी तथा खेलने का मैदान व युद्ध के मैदान से होकर जाने का निषेध	(2) ग्रहणैषणा- भक्तपान लेने की विधि	
95(13)	गमन की विधि	109(27)	आहार-ग्रहण का विधि-निषेध
96(14)	अविधि-गमन का निषेध	110(28)	नीचे गिरते हुए आहार दे तो लेने का निषेध
97(15)	शंका-स्थल के अवलोकन का निषेध	111(29)	प्राणी, बीज, हरियाली जीव विराधना करते हुए दाता से भिक्षा लेने का निषेध
98(16)	मंत्रणागृह के समीप से जाने का निषेध	112(30)	एक से दूसरे बर्तन में डालकर, सचित पर रखकर या स्पर्श करके दे तो लेने का निषेध
99(17)	प्रतिक्रुष्ट अप्रीतिकर आदि कुलों से भिक्षा लेने का निषेध	113(31)	सचित जल को हिलाकर-अवगाहन कर या चालित कर भोजन-पान लिए तो लेने का निषेध
100(18)	साणी (चिक) आदि को खोलने का विधि-निषेध		
101(19)	मल-मूत्र की बाधा को रोकने का निषेध		
102(20)	अंधकारमय स्थान में भिक्षा लेने का निषेध		
103(21)	पुष्प, बीज आदि बिखरे हुए, तत्काल लीपे हुए या गीले आंगन में जाने का निषेध		

- 114(32) देने से पूर्व हाथ, कड़छी या बर्तन से आहार दे तो लेने का निषेध
- 115(33) सचित्त जल से युक्त गीले हाथ, कड़छी या बर्तन से आहार दे तो लेने का निषेध
- 116(34) स्निग्ध हाथ, कड़छी या बर्तन से आहार दे तो लेने का निषेध
- 117-119(35-37) सचित्त रज मिट्टी से, क्षार मिट्टी से व भरे हुए हाथ आदि से आहार दे तो लेने का निषेध
- 120-123(38-41) हस्तिाल, हिंगलू, मेनसिल व अंजन से युक्त हाथ से आहार दे तो लेने का निषेध
- 124-128(42-46) सचित्त लवण, गेरू, पीली मिट्टी, सफेद मिट्टी, फिटकरी से युक्त हाथ से आहार दे तो लेने का निषेध
- 129(47) तत्काल पीसे हुए आटे से सने हुए हाथ से आहार दे तो लेने का निषेध
- 130(48) तत्काल कूटे हुए धान्य के भूसे या छिलके से युक्त हाथ आदि से आहार दे तो लेने का निषेध
- 131(49) चाकू से ताजे काटे हुए फलों के कोमल टुकड़ों से युक्त हाथ आदि से आहार दे तो लेने का निषेध
- 132(50) जहां पश्चात् कर्म अर्थात् आहार देने के बाद असंसृष्ट हाथ आदि धोने पड़े तो ऐसा आहार न ले
- 133(51) संसृष्ट (भोजन-पानी से लिप्त) हाथ आदि से आहार देवे और वह एषणीय हो तो ग्रहण करे
- 134(52) दो की भागीदारी का भोजन हो, उसमें से एक ही व्यक्ति निमंत्रित करे तो वह आहार न ले
- 135(53) दोनों यदि सहमत होकर दे व एषणीय हो तो लेवे
- 136(54) क. गर्भवती स्त्री के लिए विशेष रूप से तैयार पेय पदार्थ, भोज्य पदार्थ जो उसके उपयोग में आ रहे हैं वे न ले
- ख. उसके खाने से बचे हुए पदार्थ ग्रहण कर ले
- 137-138(55-56) क. पूरे महिने वाली गर्भवती स्त्री खड़ी हो व आहार देते समय बैठे या बैठी हो व खड़ी होवे तो उसके हाथ से आहार-पानी न ले
- ख. गर्भवती स्त्री बैठी हो तो बैठे-बैठे व खड़ी हो तो खड़े-खड़े आहार दे
- 139-140(57-58) बालक-बालिका को स्नानपान कराती हो उस समय वह छोड़कर या बच्चे को रोता हुआ छोड़कर आहार दे तो लेने का निषेध
- 141(59) जिस भक्त पान में कल्पनीय-अकल्पनीय की शंका हो वैसे आहार-पानी न ले
- 142-143(60-61) पानी के घड़े से, पत्थर की चक्री से, चौकी से, शिला-लाद से, मिट्टी आदि के लेप से अथवा लाख

आदि से जिसे ढंका हो या लीपा हो तो ऐसा आहार खोलकर दे तो न ले	180-182(98-100) दे तो लेने का निषेध और उसके कारण
144-145(62-63) दानार्थ तैयार किया हुआ आहार लेने का निषेध	183(101) निषेदी, पाटिया, चौकी, मचान आदि पर चढ़कर आहार दे तो लेने का निषेध और उसके कारण
146-147(64-65) पुण्यार्थ तैयार किया हुआ आहार लेने का निषेध	184-185(102-103) सचित्त रज संसृष्ट आहार आदि लेने का निषेध
148-149(66-67) वनीपकों (भिखमंगों) के लिए तैयार किया हुआ आहार लेने का निषेध	186-187(104-105) जिसमें खाने का भाग थोड़ा हो और फेंकना अधिक पड़े तो ऐसी वस्तुएं लेने का निषेध
150-151(68-69) श्रमणों आदि के लिए तैयार किया हुआ आहार लेने का निषेध	188(106) तत्काल का बना हुआ धोवन लेने का निषेध
152(70) औद्देशिक, क्रीतकृत, पूतिकर्म, आहत, अध्यवतर, ग्रामित्य, मिश्रजात आदि दोष युक्त आहार न ले	189(107) परिणत धोवन लेने का विधान
153(71) क. भोजन के उद्गम की परीक्षा विधि	190-191(108-109) धोवन की उपयोगिता में संदेह होने पर चखकर लेने का विधान
ख. शुद्ध भोजन लेने का विधान	192(110) घ्यास-शमन के लिए अनुपयोगी जल लेने का निषेध
154-155(72-73) यदि आहार-पानी पुष्पों व हरियाली से युक्त अथवा संसृष्ट हो तो वह लेने का निषेध	193(111) असावधानी से लब्ध अनुपयोगी जल पीने का निषेध
156-157(74-75) यदि आहार -पानी सचित्त पानी पर, कीड़ी नगरे पर या लीलन-फूलन पर रखा हुआ हो तो लेने का निषेध	194(112) अनुपयोगी जल के परठने की विधि
158-177(76-95) अग्नि पर निक्षिप्त आहार ग्रहण निषेध	(3) भोगैषणा- भोजन करने की आपवादिक विधि
178-179(96-97) अस्थिर शिला, काष्ठ आदि पर पैर रखकर व अंधेरे या पोले रास्ते में से जाकर आहार	195-196(113-114) भिक्षा-काल में भोजन करने की विधि
	197-199(115-117) आहार में पड़े हुए तिनके आदि की परठने की विधि

200(118) क. उपाश्रय में भोजन करने की विधि	विधान
ख. स्थान-प्रतिलेखनपूर्वक भिक्षा के विशेषण का संकेत	217(4) यथा समय कार्य करने का निर्देश
201(119) क. उपाश्रय में प्रवेश करने की विधि	218(5) अकाल भिक्षाचारी श्रमण को उपालम्भ
ख. इयापथिकी पूर्वक कायोत्सर्ग करने का विधान	219(6) भिक्षा के लाभ और अलाभ में समता का उपदेश
202-203(120-121) गोचरी में लगने वाले अतिचारों की यथाक्रम	220(7) भिक्षा की गमन विधि, भक्तार्थ एकत्रित पशु-पक्षियों को
से स्मरण और उनकी आलोचना करने की विधि	लौघकर जाने का निषेध
204(122) सम्यग् आलोचना न होने पर पुनः-पुनः प्रतिक्रमण का	221(8) गोचराग्र के समय कहीं भी बैठकर अथवा खड़ा रह कर
विधान	कथा आदि न कहे
205(123) कायोत्सर्ग काल का चिंतन	222(9) अर्गला आदि का सहारा लेकर खड़े होने का निषेध
206(124) कायोत्सर्ग पूरा करने की और उसकी उत्तरकालीन विधि	223-226(10-13) क. भिखारी आदि को लौघकर भिक्षा के
207-208(125-126) क. विश्राम-कालीन चिंतन	लिए घर में जाने का निषेध
ख. साधुओं को भोजन के लिए निमंत्रण	ख. उसके दोषों का निरूपण
ग. सह-भोजन करने का विधान	ग. उनके लौट जाने पर प्रवेश का विधान
209(127) एकाकी भोजन, भोजनपात्र और खाने की विधि	227-231(14-18) हरियाली फूल-फल आदि को कुचलकर
210-212(128-130) मनोज्ञ या अमनोज्ञ भोजन में समभाव रखने	देने वाले से भिक्षा लेने का निषेध
का उपदेश	232-233(19-20) अपक्व सजीव फल आदि लेने का निषेध
213(131) मुधादायी और मुधाजीवी की दुर्लभता और उनकी सुगति	2234(21) बिना भुने हुए शमी-धान्य को लेने का निषेध
पिण्डैषणा (दूसरा उद्देशक)	235(22) चांवलों का आटा, विकृत व निर्वृत जल, तिलकूट आदि
214(1) झूठन न छोड़ने का आदेश	अपक्व (कच्चे) न ले
215-216(2-3) भिक्षा में पर्याप्त आहार न आने पर आहार-गवेषणा	236(23) अपक्व, अपरिणत कैथ, बिजोरा, मूला आदि लेने का

निषेध	
237(24) बेर आदि का चूर्ण, जो आदि का चूर्ण व बेहड़ा आदि न ले	258(45) प्रणीतरस और मद्यपानवर्जी तपस्वी के कल्याण का उपदर्शन
238(25) सामुदानिक शिक्षा का विधान	259-262(46-49) तप आदि से सम्बन्धित माया-मृषा से होने वाली दुर्गति का निरूपण और उसके वर्जन का उपदेश
239(26) अदीन भाव से शिक्षा लेने का उपदेश	263(50) पिण्डैषणा का उपसंहार, समाचारी के सम्यग् पालन का उपदेश
240-241(27-28) अदाता के प्रति कोप न करने का उपदेश	षष्ठ महाचार कथा अध्ययन
242(29) क. स्तुति करने वाले से याचना करने का निषेध	
ख. आहार न देने वाले को कठोर वचन कहने का निषेध	264-265(1-2) राजा आदि द्वारा निर्ग्रथों के आचार-गोचर की पृच्छा
243(30) क. वंदना करने वाले पर क्रोध न करे	266-269(3-6) आचार्य द्वारा निर्ग्रथों के आचार की दुश्चरता और ख. राजा आदि वंदना करे तो गर्व न करे
244-245(31-32) रस लोलुपता और तज्जन्तित दुष्ट परिणाम	सर्वसामान्य आचरणीयता का प्रतिपादन
246-247(33-34) एकांत में सरस-आहार और मण्डली में विरस आहार करने वाले की मनोभावना का चित्रण	270(7) आचार के अठारह स्थानों का निर्देश-
248(35) यश-कीर्ति व मान-सम्मान की अभिलाषा करने वाला बहुत पापकर्मी का उपाजन करता है	1. पहला स्थान-अहिंसा
249(36) मद्यपान करने का निषेध	271-273(8-10) क. अहिंसा की परिभाषा
250-254(37-41) स्तैन्य-वृत्ति से मद्यपान करने वाले मुनि के दोषों का प्रदर्शन	ख. जीव-वध न करने का उपदेश
255-257(42-44) गुणानुप्रेक्षी की संवर-साधना और आराधना का निरूपण	ग. अहिंसा के विचार का व्यावहारिक आधार
	2. दूसरा स्थान-सत्य
	274-275(11-12) क. मृषावाद के कारण
	ख. मृषा न बोलने का उपदेश

ग. मृषावाद वर्जन के कारणों का निरूपण	अनुमोदन भी नहीं करते
3. तीसरा स्थान-अचौर्य 276-277(13-14) क. अदत्त ग्रहण का निषेध ख. ग्रहण करना, कराना व अनुमोदन इन तीनों कारणों से अल्प या बहुत पदार्थ लेने का निषेध	290-291(27-28) दोष-दर्शनपूर्वक पृथ्वीकाय की हिंसा का निषेध और उसका परिणाम
4. चौथा स्थान-ब्रह्मचर्य 278-279(15-16) क. अब्रह्मचर्य सेवन का निषेध ख. महादोषों का पुंज समझकर मैथुन के आसेवन का त्याग	8. आठवाँ स्थान-अप्काय की यतना 292(29) श्रमण अप्काय की हिंसा नहीं करते, नहीं कराते व अनुमोदन भी नहीं करते 293-294(30-31) दोष-दर्शनपूर्वक अप्काय की हिंसा का निषेध और उसका परिणाम
5. पाँचवाँ स्थान-अपरिग्रह 280-281(17-18) सन्निधि (संग्रह करने)का निषेध, सन्निधि चाहने वाले श्रमण की गृहस्थ से तुलना	9. नवाँ स्थान-तेजस्काय की यतना 295(32) श्रमण अग्नि की हिंसा नहीं करते, नहीं कराते व अनुमोदन भी नहीं करते
282(19) धर्मोपकरण रखने के कारणों का विधान 283(20) परिग्रह की परिभाषा 284(21) निर्ग्रथों के अममत्व का निरूपण	296(33) तेजस्काय की भयानकता का निरूपण 297-298(34-35) दोष-दर्शनपूर्वक तेजस्काय की हिंसा का निषेध और उसका निरूपण
6. छठवाँ स्थान-रात्रि-भोजन का त्याग 285(22) एक भक्त भोजन का निर्देश 286-288(23-25) रात्रि-भोजन का निषेध और उसके कारण	10. दसवाँ स्थान-वायुकाय की यतना 299(36) श्रमण वायु का समारंभ नहीं करते, नहीं कराते व अनुमोदन भी नहीं करते
7. सातवाँ स्थान-पृथ्वीकाय की यतना 289(26) श्रमण पृथ्वीकाय की हिंसा नहीं करते, नहीं कराते व	300(37) पंखा आदि विभिन्न साधनों से वायु उत्पन्न करने का निषेध 301-302(38-39) दोष-दर्शन पूर्वक वायुकाय की हिंसा का निषेध और उसका परिणाम

- 11. ग्यारहवाँ स्थान-वनस्पतिकाय की यतना**
 303(40) श्रमण वनस्पतिकाय की हिंसा नहीं करते, नहीं कराते व अनुमोदन भी नहीं करते
 304-305(41-42) दोष-दर्शनपूर्वक वनस्पतिकाय की हिंसा का निषेध और उसका परिणाम
- 12. बारहवाँ स्थान-त्रसकाय की यतना**
 306(43) श्रमण त्रसकाय की हिंसा नहीं करते, नहीं कराते व अनुमोदन भी नहीं करते
 307-308(44-45) दोष-दर्शनपूर्वक त्रसकाय की हिंसा का निषेध और उसका परिणाम
- 13. तेरहवाँ स्थान-अकल्य वर्जन**
 309-310(46-47) अकल्पनीय वस्तु लेने का निषेध, कल्पनीय लेने का विधान
 311-312(48-49) नित्याग्र आदि लेने से उत्पन्न होने वाले दोष और उसका निषेध
- 14. चौदहवाँ स्थान-गृहि भाजन में परिभोग निषेध**
 313-315(50-52) गृहस्थ के भाजन (पात्र) में भोजन करने से उत्पन्न होने वाले दोष और उसका निषेध
- 15. पन्द्रहवाँ स्थान-पर्यक आदि पर सोने-बैठने का निषेध**
 316(53) आसदी, पर्यक आदि पर बैठने, सोने का निषेध
- 16. सोलहवाँ स्थान-गृह निषद्या वर्जन**
 319-321(56-58) गृहस्थ के घर में बैठने से होने वाले दोष व उसका निषेध
- 17. सत्रहवाँ स्थान-स्नान वर्जन**
 322(59) बुढ़ापे से ग्रस्त, व्याधि से पीड़ित व उग्र तपस्वी के लिए गृहस्थ के घर में बैठना कल्पनीय
- 18. अठारहवाँ स्थान-विभूषावर्जन**
 323-324(60-61) स्नान से उत्पन्न दोष और उसका निषेध
 325(62) आजीवन शीतल व उष्ण जल से स्नान का निषेध
 326-328(63-65) विभूषा का निषेध और उसके कारण
 329(66) उपसंहार
 330-331(67-68) आचारनिष्ठ श्रमण की गति
- सप्तम वाक्य शुद्धि अध्ययन (भाषा-विवेक)**
 332(1) क. भाषा के चार प्रकार
 ख. दो के प्रयोग का विधान व दो के प्रयोग का निषेध
 333(2) अवक्तव्य सत्य, सत्यामृषा, मृषा और असत्यामृषा ये अनाचीर्ण हैं ऐसी भाषा बोलने का निषेध
 334(3) अनवद्य आदि विशेषण युक्त व्यवहार और सत्य भाषा

बोलने का विधान	351(20)	नाम और गौत्र द्वारा पुरुषों को संबोधित करने का विधान
335(4) संदेह में डालने वाली भाषा या भ्रामक भाषा के प्रयोग का निषेध	352(21)	स्त्री या पुरुष का संदेह होने पर तत्सम्बन्धित जातिवाचक शब्दों द्वारा निर्देश करने का विधान
336(5) सत्यामृषा भाषा को सत्य कहने का निषेध	353(22)	अप्रीतिकर और उपघातकर वचन द्वारा संबोधित करने का निषेध
337-338(6-7) जिसका होना सदिग्ध हो, उसके लिए निश्चयात्मक भाषा में बोलने का निषेध	354(23)	शारीरिक अवस्थाओं के निर्देशन द्वारा उपयुक्त शब्दों के प्रयोग का विधान
339(8) अज्ञात विषय को निश्चयात्मक भाषा में बोलने का निषेध	355-356(24-25)	गाय और बैल के बारे में बोलने का विवेक
340(9) शक्ति भाषा का प्रतिषेध	357-364(26-33)	वृक्ष और वृक्षावयवों के बारे में बोलने का विवेक
341(10) निःशक्ति भाषा बोलने का विधान	365-366(34-35)	औषधि (अनाज) के बारे में बोलने का विवेक
342-344(11-13) कठोर और हिंसात्मक सत्य भाषा का निषेध	367-370(36-39)	संखड़ि (जीमनवार) एवं नदी के बारे में बोलने का विवेक
345(14) तुच्छ और अपमानजनक संबोधन का निषेध		
346(15) पारिवारिक ममत्व-सूचक शब्दों से स्त्रियों को संबोधित करने का निषेध	371-373(40-42)	सावद्य प्रवृत्ति के सम्बन्ध में बोलने का विवेक
347(16) गौरव वाचक या चाटुता-सूचक शब्दों से स्त्रियों को संबोधित करने का निषेध	374(43)	विक्रय आदि के सम्बन्ध में वस्तुओं के उत्कर्ष सूचक शब्दों के प्रयोग का निषेध
348(17) नाम और गौत्र द्वारा स्त्रियों को संबोधित करने का विधान	375(44)	चिंतनपूर्वक भाषा बोलने का उपदेश
349(18) पारिवारिक ममत्व-सूचक शब्दों से पुरुषों को संबोधित करने का निषेध	376-377(45-46)	लेने-बेचने की परामर्शदात्री भाषा के प्रयोग का निषेध
350(19) गौरव-वाचक या चाटुता-सूचक शब्दों से पुरुषों को संबोधित करने का निषेध	378(47)	असंयमी को गमनागमन आदि प्रवृत्तियों का आदेश देने वाली भाषा के प्रयोग का निषेध

379(48)	असाधु को साधु कहने का निषेध	उच्चार भूमि का प्रतिलेखन करे	406(18)	मल, मूत्र, कफ, नाक का मैल व पसीना प्रासुक भूमि का प्रतिलेखन कर यतनापूर्वक उस पर परटे
380(49)	गुण संपन्न संयति को ही साधु कहने का विधान		407(19)	गृहस्थ के घर में प्रविष्ट होने के बाद के कर्तव्य का उपदेश
381(50)	किसी की जय-पराजय के बारे में अभिलाषात्मक भाषा बोलने का निषेध		408-409(20-21)	दृष्ट व श्रुत के प्रयोग का विवेक और गृहयोग-गृहस्थ की घरेलू प्रवृत्तिओं में भाग लेने का निषेध
382(51)	पवन आदि होने या न होने के बारे में अभिलाषात्मक भाषा बोलने का निषेध		410(22)	गृहस्थ को भिक्षा की सरसता, नीरसता तथा प्राप्ति और अप्राप्ति के निर्देश करने का निषेध
383-384(52-53)	मेघ, आकाश और राजा के बारे में बोलने का विवेक		411(23)	भोजनगृद्धी और अप्रासुक-भोजन का निषेध
385(54)	सावधानामोदनी आदि विशेषण युक्त भाषा बोलने का निषेध		412(24)	खान-पान के संग्रह का निषेध
386-387(55-56)	भाषा विषयक विधि-निषेध		413(25)	रक्षवृत्ति आदि विशेषण युक्त मुनि के लिये क्रोध न करने का उपदेश
388(57)	परीक्ष्यभाषी और उससे प्राप्त होने वाले फल का निरूपण		414(26)	प्रिय शब्दों में राग न करने और कर्कश शब्दों को सहने का उपदेश
अष्टम आचार-प्रणिधि अध्ययन			415(27)	भूख-प्यास-शीत-उष्ण आदि शारीरिक कष्ट सहने का उपदेश
389(1)	आचार-प्रणिधि के प्ररूपण की प्रतिज्ञा		416(28)	रात्रि-भोजन का सर्वथा निषेध
390(2)	जीव के भेदों का निरूपण		417(29)	क. अल्प लाभ में शांत रहने का उपदेश
391(3)	स्थावर-त्रस जीवों के प्रति दया भाव रखने वाला संयमी			ख. थोड़ा पाकर निंदा न करे
392-400(4-12)	षड्जीवनिकाय की यतना-विधि का निरूपण		418(30)	पर-तिरस्कार और आत्मोत्कर्ष न करने का उपदेश
401-404(13-16)	आठ सूक्ष्म जीवों का निरूपण और उनकी यतना का उपदेश			
405(17)	मनोयोगपूर्वक पात्र, कंबल, शैय्या संस्कारक, आसन व			

419(31)	वर्तमान पाप के संवरण और उसकी पुनरावृत्ति न करने का उपदेश	434-436(46-48)	वाणी का विवेक
420(32)	अनाचार को न छिपाने का उपदेश	437(49)	वाणी की खलना होने पर उपहास करने का निषेध
421(33)	आचार्य-वचन के प्रति शिष्य का कर्तव्य	438(50)	गृहस्थ को नक्षत्र, स्वप्न आदि का फल व मंत्र-तंत्र-यंत्र बताने का निषेध
422(34)	क. जीवन की क्षणभंगुरता और भोग-निवृत्ति का उपदेश ख. अपनी शारीरिक शक्ति, श्रद्धा, आरोग्य देखकर व क्षेत्र-काल को जानकर धर्म करे	439(51)	उपाश्रय की उपयुक्तता का निरूपण
423(35)	जब तक वृद्धावस्था पीड़ित न करे, रोग उत्पन्न न हो तथा इन्द्रियां क्षीण न हो तब तक ही धर्माचरण संभव	440(52)	क. अकेला मुनि केवल स्त्रियों के बीच धर्म कथा न कहे
424(36)	कषाय के प्रकार और उनके त्याग का उपदेश	441(53)	ख. गृहस्थ के साथ अति परिचय का निषेध
425(37)	कषाय विजय से लाभ	उदाहरण	ब्रह्मचारी के लिये स्त्री की भयोत्पादकता-बिल्ली का
426(38)	कषाय विजय के उपाय	442(54)	क. स्त्रियों के चित्रों से चित्रित दीवार अथवा सुसज्जित नारी को टक-टकी लगाकर न देखे
427(39)	क्रोध आदि चारों कषाय पुनर्जन्म की जड़ का सिंचन	443(55)	ख. दृष्टि-संयम का उपदेश-सूर्य का उदाहरण
428(40)	विनय, आचार और इन्द्रिय-संयम में प्रवृत्त रहने का उपदेश-कछुए का उदाहरण	444(56)	स्त्री मात्र से बचने का उपदेश
429(41)	निद्रा आदि दोषों को वर्जन करने का और सदा स्वाध्याय में रत रहने का उपदेश	445(57)	आत्मगवेषी पुरुष के लिए विभूषा, स्त्री संसर्ग, स्निग्ध भोजन तालपुट विष के समान
430(42)	अनुत्तर अर्थ मोक्ष उपलब्धि का मार्ग	446-447(58-59)	कामरागवर्धक अंगोपांग देखने का निषेध
431(43)	बहुश्रुत की पर्युपासना का उपदेश	आसक्त न होने का उपदेश	पुद्गल-परिणाम की अनित्यता जानकर उसमें
432-433(44-45)	गुरु के समीप बैठने की विधि	448(60)	निष्क्रमण-कालीन श्रद्धा के निर्वाह का उपदेश
		449(61)	तपस्वी, संयमी और स्वाध्यायी के सामर्थ्य का निरूपण-

शस्त्रों से सुसज्जित शूरवीर के समान

450(62) पुराकृत-मल के विशेष का उपाय- जैसे अग्नि में तपाये हुए सोने-चांदी का मल

451(63) आचार-प्रणिधि के फल का प्रदर्शन और उपसंहार

नवम विनय-समाधि अध्ययन

(प्रथम उद्देशक)

(विनय से होने वाला मानसिक स्वास्थ्य)

452(1) आचार-शिक्षा के बाधक तत्त्व और उनसे ग्रस्त श्रमण की दशा का निरूपण व बांस का उदाहरण

453-455(2-4) अल्प-प्रज्ञ, अल्पवयस्क या अल्पश्रुत मानकर गुरू की अवहेलना का फल

456-561(5-10) क. आचार्य (गुरू) की प्रसन्नता और

अवहेलना का फल

ख. उनकी अवहेलना की भयंकरता का

उपमापूर्वक निरूपण और उनको प्रसन्न

रखने का उपदेश

462(11) अनंत-ज्ञानी को भी आचार्य की उपासना करने का उपदेश

463(12) धर्मपद-शिक्षक गुरु के प्रति विनय करने का उपदेश

464(13) विशेषाधि के स्थान बताने वाले अनुशास्ता गुरू के प्रति

पूजा (आदर) का भाव

465-466(14-15) आचार्य की गरिमा और भिक्षु-परिषद् में आचार्य का स्थान- जैसे देवों के बीच इन्द्र, तारागण से परिवृत चन्द्र

467(16) आचार्य की आराधना करने का उपदेश व विनय भक्ति से आचार्य को सदा प्रसन्न रखे

468(17) आचार्य की आराधना का फल

(द्वितीय उद्देशक)

(अविनीत-सुविनीत की आपदा-संपदा)

469-470(1-2) वृक्ष की उपमा से विनय का माहात्म्य और फल का निरूपण

471(3) अविनीत आत्मा का संसार भ्रमण- जैसे जल में पड़ा हुआ काष्ठ

472(4) अनुशासन के प्रति कोप और तज्जनित अहित

473-479(5-11) अविनीत और सुविनीत की आपदा और

संपदा का तुलनात्मक निरूपण

480(12) शिक्षा-प्रवृद्धि का हेतु-आज्ञानुवर्तिता- जैसे जल से सिंचे हुए वृक्ष

481(13) गृहस्थ के शिल्पकला सम्बन्धी अध्ययन और नियम का उदाहरण

482(14)	शिल्पाचार्य कृत यातना का सहन	496(5)	बिछौना, शैथ्या, आसन, भोजन व पानी में संतोष
483(15)	यातना के उपरांत भी गुरु का सत्कार आदि की प्रवृत्ति का निरूपण	497(6)	वचनरूपी काँटों को सहने की क्षमता
484(16)	धर्माचार्य के प्रति आज्ञानुवर्तिता की सहजता का निरूपण	498(7)	वचनरूपी काँटों की सुदुस्सहता का प्रतिपादन
485(17)	गुरु के प्रति नम्र व्यवहार की विधि	499(8)	दौर्मनस्य का हेतु मिलने पर भी सौमनस्य को बनाये रखना
486(18)	अविधिपूर्वक स्पर्श होने पर क्षमा-याचना की विधि	500(9)	सदोष भाषा का परित्याग
487(19)	अविनीत शिष्य की मनोवृत्ति का निरूपण व उदाहरण	501(10)	लोलुपता आदि का परित्याग
488(20)	विनीत की सूक्ष्म-दृष्टि और विनय पद्धति का निरूपण	502(11)	आत्म निरीक्षण, मध्यस्थ भाव
489(21)	शिक्षा का अधिकारी	503(12)	स्तब्धता और क्रोध का परित्याग
490(22)	अविनीत के लिये मोक्ष की असंभवता का निरूपण	504(13)	पूज्यों का सम्मान, जितेन्द्रियता और सत्य-परायणता
491(23)	विनय-निपुण के लिये मोक्ष की सुलभता का प्रतिपादन	505(14)	पांच महाव्रत में रत, तीन गुप्ति से गुप्त व चार कषायों से रहित है वह पूज्य
492(1)	आचार्य की सेवा के प्रति जागरूकता और उनके अभिप्राय की आराधना	506(15)	गुरु की परिचर्या और उसका फल
493(2)	क. आचार के लिए विनय का प्रयोग	चतुर्थ उद्देशक	
494(3)	ख. आदेश का पालन और आशातना का वर्जन	507-510(1-4)	समाधि के प्रकार
	क. रत्निकों के प्रति विनय का प्रयोग	511-512(5-6)	विनय-समाधि के चार प्रकार
	ख. गुणाधिक्य के प्रति नम्रता	513-514(7-8)	श्रुत-समाधि के चार प्रकार
	ग. वंदनशीलता और आज्ञानुवर्तिता	515-516(9-10)	तप-समाधि के चार प्रकार
495(4)	भिक्षा-विशुद्धि और लाभ-अलाभ में समभाव	517-518(11-12)	आचार-समाधि के चार प्रकार
		519-520(13-14)	समाधि-चतुष्टय की आराधना और उसका फल

दसवां सभिक्षु अध्ययन**(भिक्षु कौन? भिक्षु के लक्षण और उसकी अर्हता का उपदेश)**

- 521(1) चित्त-समाधि, स्त्री-मुक्तता और वमन किये हुए विषय भोगों का अनासेवन
- 522-524(2-4) जीव-हिंसा, सचित्त व औद्देशिक आहार और पचन-पाचन का परित्याग
- 525(5) श्रद्धा, आत्मौपम्यबुद्धि, महाव्रत-स्पर्श और आश्रव का संवरण
- 526(6) कषाय-त्याग ध्रुव-योगिता, अकिंचनता और गृहस्थ संसर्ग का परिवर्जन
- 527(7) सम्यग्-दृष्टि, अमूढता, तपस्विता और प्रवृत्ति-शोधन
- 528(8) आहार संचय वर्जन
- 529(9) सार्धमिकसाधु को निमंत्रणपूर्वक भोजन और भोजनोत्तर स्वाध्याय-रतता का उपदेश
- 530(10) कलह-कारक कथा का वर्जन, प्रशान्त भाव आदि
- 531(11) आक्रोश वचन, तर्जना, भयोत्पादक अट्टहास आदि में व सुख-दुख में समभाव
- 532(12) प्रतिमा-स्वीकार, उपसर्ग काल में निर्भयता और शरीर की अनाशक्ति
- 533(13) देह विसर्जन, सहिष्णुता और अनिदानता

534(14) परिषह-विजय और श्रामण्य-रतता

535(15) संयत, अध्यात्म-रतता और सूत्रार्थ-विज्ञान

536(16) अमूर्च्छा, अज्ञात-भिक्षा, क्रय-विक्रय वर्जन और निस्संगता

537(17) अलोलुपता, उच्छारिता और ऋद्धि आदि का त्याग

538(18) वाणी का संयम और आत्मोत्कर्ष का त्याग

539(19) जाति, रूप, लाभ व श्रुत मद-वर्जन तथा धर्म ध्यान में रत

540(20) आर्यपद की घोषणा और कुशीललिंग का वर्जन

541(21) उपसंहार- भिक्षु की गति का निरूपण

प्रथमा रतिवाक्या चूलिका**(संयम में अस्थिर होने पर पुनः स्थिरीकरण का उपदेश)**

- 542(1) संयम में पुनः स्थिरीकरण के अठारह स्थानों के अवलोकन का उपदेश और उनका निरूपण
- 543-549(2-8) भोग के लिये संयम को छोड़ने वाले के भविष्य की अनभिज्ञता और पश्चात्तापपूर्ण मनोवृत्ति का उपमापूर्वक निरूपण
- 550(9) मैं बहुश्रुत होकर श्रमण-पर्याय में रमण करता तो आज मैं आचार्य होता
- 551(10) व्यक्ति-भेद से श्रमण-पर्याय में सुख-दुःख का निरूपण और श्रमण-पर्याय में रमण करने का उपदेश
- 552(11) श्रमण-पर्याय की स्वर्गीयता और नारकीयता का सकारण निरूपण

- 553(12) दाढ़ रहित सर्प की अज्ञान जैसे अवहेलना करते हैं वैसे ही धर्म से भ्रष्ट तन रूपी लक्ष्मी से रहित निस्तेज साधु की निंदा होती है
- 554(13) संयम-भ्रष्ट श्रमण के होने वाले ऐहिक और पारलौकिक दोषों का निरूपण
- 555(14) संयम-भ्रष्ट की भोगासक्ति और उसके फल का निरूपण
- 556-557(15-16) संयम में मन को स्थिर करने का चिंतन-सूत्र
- 558(17) इन्द्रिय द्वारा अपराजेय मानसिक संकल्प का निरूपण
- 559(18) विषय का उपसंहार
- 565(6) आकीर्ण और अवमान संखंडि भोज-वर्जन आदि भिक्षा-विशुद्धि के अंगों का निरूपण व उपदेश
- 566(7) श्रमण के लिये आहार-विशुद्धि और कायोत्सर्ग आदि का उपदेश
- 567(8) स्थान आदि के प्रतिबंध व गाँव आदि में ममत्व न करने का उपदेश
- 568(9) क. गृहस्थ की वैयावृत्य आदि करने का निषेध
ख. असांक्लिष्ट मुनिगण के साथ रहने का विधान
- 569(10) विशिष्ट संहनन-युक्त और श्रुत-संपन्न मुनि न मिलने पर एकाकी विहार का विधान
- 570(11) क. चातुर्मास और मासकल्प के बाद पुनः चातुर्मास और मासकल्प करने का व्यवधान-काल
ख. सूत्र और उसके अर्थ के अनुसार चर्या करने का विधान

द्वितीया विविक्त चर्या चूलिका

(विविक्त चर्या का उपदेश)

- 560(1) चूलिका के प्रवचन की प्रतिज्ञा और जिसके सुनने से धर्म में श्रद्धा उत्पन्न होना
- 561(2) अनुस्रोत-गमन को बहुमताभिमत दिखाकर मुमुक्षु के लिये प्रतिस्नोत-गमन का उपदेश
- 562(3) क. अनुस्रोत और प्रतिस्नोत के अधिकारी
ख. संसार और मुक्ति की परिभाषा
- 563(4) साधु के लिये चर्या, गुण और नियमों की आवश्यकता का निरूपण
- 564(5) अनियतवास-अज्ञात कुलों से भिक्षा ग्रहण, एकांत में निवास, अल्प उपधि आदि चर्या का निरूपण
- 571-572(12-13) आत्म-निरीक्षण का समय, चिंतन-सूत्र
- 573(14) दुष्प्रवृत्ति होते ही सम्हल जाने का उपदेश- जैसे लगाम खिंचने पर अश्व संभल जाता है
- 574(15) प्रतिबुद्ध जीवी, जागरूक भाव से जीने वाले की परिभाषा
- 575(16) आत्म-रक्षा का उपदेश और अरक्षित तथा सुरक्षित आत्मा की गति का निरूपण

णमो लोगुत्तमाणं

सर्वानुयोगमय उत्तराध्ययन सूत्र

अध्ययन	36
उपलब्ध मूल पाठ	2100 श्लोक प्रमाण
पद्य सूत्र	1656
गद्य सूत्र	89

25 उत्तराध्ययन सूत्र विषय-सूची

प्रथम विनय अध्ययन

1	विनय निरूपण प्रतिज्ञा
2-3	विनीत-अविनीत के लक्षण
4	क. अविनीत दुःशील का निष्कासन एवं स्वभाव
	ख. दुःशील को कृमीयुक्त कुतिया की उपमा
	ग. बहुभाषी का सर्वत्र अनादर
5	दुःशील को ग्राम शूकर की उपमा
6	आत्महित के लिए विनय आवश्यक
7	क. विनय से शील की प्राप्ति
	ख. बुद्ध पुत्र का सर्वत्र आदर
8	क. सार्थक अध्ययन के लिये प्रेरणा
	ख. निरर्थक अध्ययन का निषेध

9	क. कठोर अनुशासन के समय क्षमा रखना
	ख. बाल दुश्चरित्र के संसर्ग का निषेध
10	क. क्रोध और बहुभाषण का निषेध
	ख. यथा समय स्वाध्याय तथा ध्यान करने का विधान
11	दोष छिपाने का निषेध व गुरुजनों के समक्ष दोष प्रगट करने का विधान
12	क. अविनयी को अड़ियल टट्टू की उपमा
	ख. विनयी को अश्व की उपमा
	ग. गुरुजनों के अभिप्रायानुसार आचरण करने का आदेश
13	क. अविनयी मृदु स्वभाव वाले गुरुजनों को भी कठोर बना देता है
	ख. विनयी कठोर स्वभाव वाले गुरुजनों को भी मृदु बना लेता है
14	क. अकारण बोलने का और मिथ्या बोलने का निषेध
	ख. प्रिय-अप्रिय वचनों में समान रहने का विधान
15	क. आत्म दमन-निग्रह का उपदेश
	ख. दान्त आत्मा ही इस लोक और परलोक में सुखी होते हैं
16	दमन की परिभाषा
17	प्रतिकूल आचरण का निषेध

		द्वितीय परीषह अध्ययन	
		सूत्र	
18-19	गुरुजनों के समीप बैठने की विधि	1-3	क. भ. महावीर द्वारा परीषहों का उपदेश
20-22	गुरुजनों के बुलाने पर शीघ्र उपस्थित होने का विधान		
23	क. विनयी को सूत्रार्थ की प्राप्ति	गाथा 1	ख. बावीस परीषहों के नाम
24-25	ख. गुरुजनों के पूछने पर यथार्थ कहने का विधान	2-3	परीषहों का वर्णन सुनने के लिये प्रेरणा
26	विनीत शिष्य द्वारा करणीय भाषा-विवेक	4-5	(1) क्षुधा परीषह का वर्णन
	अकेली स्त्री के समीप बैठने का तथा उसके साथ आलाप-संलाप करने का निषेध	6-7	(2) पिपासा परीषह का वर्णन
27-29	गुरुजनों के कठोर अनुशासन से स्वहित	8-9	(3) शीत परीषह का वर्णन
30	गुरू समक्ष बैठने का विवेक	10-11	(4) उष्ण परीषह का वर्णन
31	जिस समय की जो क्रिया हो वह उसी समय करे	12-13	(5) दंश मशक परीषह का वर्णन
32-35	भिक्षा-ग्रहण और आहार-सेवन की विधि	14-15	(6) अचेल परीषह का वर्णन
36	भोजन के समय में सावद्य-वचनों के प्रयोग का निषेध	16-17	(7) अरति (अरूचि) परीषह का वर्णन
37	क. विनयी को अच्छे अश्व की और अविनयी को अड़ियल टट्टू की उपमा	18-19	(8) स्त्री परीषह का वर्णन
	ख. गुरुजनों को विनयी से सुख, अविनयी से दुःख	20-21	(9) चर्या परीषह का वर्णन
38-44	गुरुजनों के कठोर अनुशासन से स्वहित	22-23	(10) निषद्या परीषह का वर्णन
45	विनयी की सर्वत्र प्रशंसा	24-25	(11) शय्या परीषह का वर्णन
46	विनयी को सार्थ श्रुत का लाभ	26-27	(12) आक्रोश परीषह का वर्णन
47-48	विनयी को मोक्ष प्राप्ति अथवा ऋद्धि संपन्न देव सुख	28-29	(13) वध परीषह का वर्णन
		30-31	(14) याचना परीषह का वर्णन
		32-33	(15) अलाभ परीषह का वर्णन
			(16) रोग परीषह का वर्णन

34-35	(17)	तृण स्पर्श परीषह का वर्णन	20	उपसंहार-चार अंगों की प्राप्ति से सिद्ध पद
36-37	(18)	जल्ल-मल परीषह का वर्णन		चतुर्थ प्रमाद-अप्रमाद अध्ययन
38-39	(19)	सत्कार परीषह का वर्णन	1	अप्रमाद त्याग का उपदेश
40-41	(20)	प्रज्ञा परीषह का वर्णन	2-5	क. पाप कर्मों से उपार्जित धन से पाप कर्मों का बंध
42-43	(21)	अज्ञान परीषह का वर्णन		ख. चोर का उदाहरण
44-45	(22)	दर्शन परीषह का वर्णन		ग. दीपक का उदाहरण
46		उपसंहार-परीषह सहने के लिये प्रेरणा	6-7	क. प्रतिक्षण अप्रमाद का उपदेश
		तृतीय चातुर्गीय अध्ययन		ख. भारण्ड पक्षी का उदाहरण
1		चार अंगों की दुर्लभता	8	क. स्वच्छन्दता का निषेध
2-7	(1)	विविध घाटियां पार करने के बाद-दुर्लभ मनुष्यत्व की प्राप्ति	9	ख. अप्रमत्त को शिक्षित एवं कवचधारी अश्व की उपमा
8	(2)	श्रुति-धर्म श्रवण की दुर्लभता	10	प्रमत्त का अंतिम समय में दुःखी होना
9	(3)	धर्म श्रद्धा की दुर्लभता	11-12	लोक को समत्वदृष्टि से जानकर अप्रमत्त रहे
10	(4)	संयम में पुरुषार्थ की दुर्लभता		क. राग-द्वेष एवं कषाय की निवृत्ति के लिये उपदेश
11		दुर्लभ चार अंगों की प्राप्ति का पारलौकिक फल	13	ख. समभाव की साधना के लिये उपदेश
12		क. सरल व्यक्ति की शुद्धि व उसी में धर्म स्थिर		अधर्मीजनों से दूर रहकर अंतिम समय तक आत्म-गुण आराधना
13		ख. घृत सिक्त अग्नि का उदाहरण		पंचम अकाम-मरण अध्ययन
14-15		कर्मबंध के कारणों को जानने का फल	1-2	मरण के दो प्रकार
16-19		चार अंगों की प्राप्ति का वैकल्पिक फल-देव गति	3	क. देहधारियों का बालमरण अनेक बार
		चार अंगों की प्राप्ति का वैकल्पिक फल-मानव भव		ख. देहधारियों का उत्कृष्ट पंडित मरण एक बार

4	बाल-व्यक्ति क्रूर कर्म करने वाला होता है	20	भिक्षु और गृहस्थ के संयमी जीवन की तुलना
5-6	बाल-व्यक्ति का पुनर्जन्म में अविश्वास	21	दुःशील भिक्षुओं की दुर्गति
7	बाल-व्यक्ति की काम-भोगों में आसक्ति	22	सुव्रत गृहस्थ की सुगति-देवगति
8	बाल-व्यक्ति द्वारा त्रस-स्थावर जीवों की अर्थ-अनर्थ हिंसा	23-24	सामायिक साधना करने वाले की व दोनों (शुक्ल-कृष्ण)
9	क. बाल जीव हिंसा, झूठ, चुगली, धूर्तता को श्रेष्ठ मानता है	25	पक्षों में पौषध व्रत करने वाले गृहस्थ की देव गति
	ख. बाल-व्यक्ति मद्य-माँस के आहार को श्रेष्ठ मानता है	26-27	संवृत भिक्षु की दो गति-मोक्ष अथवा महर्द्धिक देव
10	क. बाल-व्यक्ति की आसक्ति	28	दिव्य जीवन का वर्णन
	ख. शिशुनाग-अलसिया का उदाहरण	29	उपशम से परिनिर्वृत भिक्षु और गृहस्थ की देवगति
11	बाल-व्यक्ति की तरुण अवस्था में परलोक गति		शीलवान् और बहुश्रुत साधक अंतिम समय में उद्धिग्न नहीं होते
12	बाल-व्यक्ति की नरक गति	30-32	सकाम-मरण प्राप्त करने का उपदेश और उपाय
13	बाल-व्यक्ति को अंतिम समय में पश्चात्ताप		षष्ठ क्षुल्लक निर्गृथ अध्ययन
14-15	विषम पथगामी गाड़ीवान् का उदाहरण	1	अज्ञानियों का दुःखःमय जीवन
16	क. बाल-व्यक्ति की अकाम-मृत्यु	2	मैत्री भावना का उपदेश
	ख. द्यूतकार का उदाहरण	3-4	अशरण भावना का उपदेश
17	क. बाल-व्यक्तियों के अकाम-मरण का वर्णन पूर्ण	5	त्याग का फल
	ख. पंडितों के सकाम-मरण का वर्णन प्रारंभ	6	चल-अचल सम्पत्ति व धन-धान्य आदि सब पदार्थ दुःख
18	संयत जितेन्द्रिय व पुण्यशाली आत्माओं का पंडित मरण		से मुक्त करने में असमर्थ
19	सभी भिक्षुओं और सभी गृहस्थों का पंडित मरण अर्निश्चित	7	सभी प्राणियों को अपना जीवन प्रिय है तो प्राणियों के प्राणों का हनन निषेध

५७८	उत्तरा. अ.6, गाथा 8-18	25 उत्तराध्ययन सूत्र विषय-सूची	उत्तरा. अ.7, गाथा 1-30, अ.8, गाथा 1-2
8	बिना दिया हुआ एक तिनका भी ग्रहण न करे, गृहस्थों द्वारा ही गृहित भोजन करे		देता है, आम्रफल खाकर राजा राज्य गंवा देता है वैसे ही काम भोगों में लुब्ध होकर दिव्य भोग खो देता है
9-10	अक्रियावाद से मुक्ति की भ्रांत मान्यता	12-13	देवताओं और मनुष्यों के काम-भोगों की तुलना
11	केवल भाषा ज्ञान या मंत्र विद्या से मुक्ति नहीं	14-15	तीन वणिकों का उदाहरण
12	आसक्ति से दुःख	16	चार गतियों की लाभ-हानि से तुलना
13	अप्रमत होकर विचरण करने की प्रेरणा	17-18	बाल जीव की दो प्रकार की गति
14-15	केवल कर्मक्षय के लिये निर्दोष आहार-पानी से देह धारण करे	19	बाल और पंडित की तुलना का उपदेश
16	क. अत्यल्प संग्रह का भी निषेध	20	सुव्रती की-मनुष्य गति
17	ख. पक्षी का उदाहरण	21-22	भिक्षु और गृहस्थ को तीन वणिकों के उदाहरण का चिंतन करने के लिये-उपदेश
18	क. लज्जावान् साधु गावों में अनियत होकर विचरण करे ख. गवेषणा करने का उपदेश	23	क. देव और मानव भोगों की तुलना
19	उपसंहार-ज्ञात पुत्र वैशालीक भ. महावीर का पूर्वोक्त उपदेश	24	ख. समुद्र का उदाहरण कुश के अग्रभाग पर स्थित जल बिन्दु के समान ये काम भोग
सप्तम औरभ्रीय अध्ययन			
1-3	क्षणिक विषय सुखों के विषय में अल्प जीवी परिपुष्ट मेढे का उदाहरण	25-27	काम भोगों से अनिवृत्त और निवृत्त की गति
4-9	मेण्डे के समान अधर्मिष्ठ व्यक्ति की मृत्यु	28	बाल और पंडित, धर्म और अधर्म की तुलना
10	हिंसा करने वाले जीव आयुष्य पूर्ण कर व शरीर से च्युत होकर कर्मवश नरक गमन	29-30	बाल और पंडित की गति
11	जैसे काकिणी के लिए मूर्ख मनुष्य हजार कर्षापण खो	1	अष्टम कापिलीय अध्ययन
		2	
			दुर्गति-निषेध के उपाय की जिज्ञासा
			पूर्व संयोग को सर्वथा त्यागकर किसी पर भी स्नेह न

	करने वाला भिक्षु दोषों-प्रदोषों से मुक्त हो जाता है		दो माशा सोने का उदाहरण
3	समाधान के लिये कपिलमुनि का कथन-	18-19	स्त्री की आसक्ति का निषेध
4	क. सभी परिग्रहों तथा कलह का त्याग करे	20	उपसंहार-कपिल का आख्यान, धर्म आराधकों की उभय लोक आराधना
5	ख. आत्मरक्षक मुनि काम भोगों में लिप्त न हो		
	क. बाल मंद और मूढ़ व्यक्ति की आसक्ति		नवम नमि-प्रव्रज्या अध्ययन
	ख. मक्षिका का उदाहरण	1	नमि राजा का जन्म व जाति स्मरण ज्ञान
6	क. काम भोगों का त्याग अति कठिन	2	पुत्र को राज्य भार देकर नमि राजा का अभिनिक्रमण
	ख. सुव्रती साधु भवसागर से वैसे ही तिर जाते हैं जैसे वणिक्जन समुद्र को तैर जाते हैं	5	अभिनिक्रमण के समय मिथिला में कोलाहल
7	बाल-व्यक्ति की दुर्गति		शकेन्द्र तथा नमि राजर्षि के दस प्रश्नोत्तर
8-10	क. हिंसा से सर्वथा विरत होने का उपदेश	6-7	1. मिथिल की दशा पर ध्यान देने के लिये ब्राह्मण रूप में शकेन्द्र की प्रार्थना
	ख. पानी के प्रवाह का उदाहरण	8-10	नमि राजा का उत्तर
11-12	रसासक्ति से दूर रहकर एषणा समितिपूर्वक आहार ग्रहण करने का उपदेश	11-12	2. आग से जलते हुए अन्तःपुर की ओर ध्यान देने के लिये इन्द्र का निवेदन
13	लक्षण शास्त्र, स्वप्न शास्त्र और अंग विद्या के प्रयोग का निषेध	13-16	नमि राजा का उत्तर
14-15	क. विद्या प्रयोग करने वालों की असुरों में उत्पत्ति	17-18	3. नगर की सुरक्षा के लिये इन्द्र की प्रार्थना
	ख. संसार परिश्रमण	19-22	नमि राजा का उत्तर
	ग. बोधी धर्म की दुर्लभता	23-24	4. प्रासादादि निर्माण कराने की प्रार्थना
	लौभी की दशा- जैसे-जैसे लाभ, वैसे-वैसे लोभ,	25-26	नमिराजा का उत्तर
16-17		27-28	5. चोर डाकुओं से नगर रक्षा करने की प्रार्थना

29-30	नमि राजा का उत्तर		दशम द्रुम-पत्रक अध्ययन
31-32	6. उद्दंड राजाओं को वश में करने के लिये इन्द्र की प्रार्थना	1	मनुष्य जीवन को द्रुम-पत्र की उपमा
33-36	नमि राजा का उत्तर	2	मनुष्य जीवन को कुशाग्र बिन्दु की उपमा
37-38	7. यज्ञ, ब्रह्म-भोज, दान और भोग करने के लिये इन्द्र की प्रार्थना	3	पुराकृत कर्मज को दूर करने के लिये उपदेश
39-40	नमि राजा का उत्तर	4	मनुष्य भव की दुर्लभता बताकर प्रमाद त्याग का उपदेश
41-42	8. गृहस्थाश्रम में ही धर्म की आराधना करते रहने के लिये प्रार्थना	5	पृथ्वीकाय में गया हुआ जीव उत्कृष्टतः असंख्यात उत्सर्पिणी-अवसर्पिणी काल तक रहता है
43-44	नमि राजा का उत्तर	6	अपुकाय में गया हुआ जीव उत्कृष्टतः असंख्यात उत्सर्पिणी-अवसर्पिणी काल तक रहता है
45-46	9. कोष की वृद्धि के लिये प्रार्थना	7	तेजस्काय में गया हुआ जीव उत्कृष्टतः असंख्यात उत्सर्पिणी-अवसर्पिणी काल तक रहता है
47-49	नमि राजा का उत्तर	8	वायुकाय में गया हुआ जीव उत्कृष्टतः असंख्यात उत्सर्पिणी-अवसर्पिणी काल तक रहता है
50-51	10. प्राप्त काम भोगों का परित्याग न करने के लिये प्रार्थना	9	वनस्पतिकाय में गया हुआ जीव उत्कृष्टतः असंख्यात अनन्त काल तक रहता है
52-53	नमि राजा का उत्तर	10	द्वीन्द्रिय जीव उत्कृष्टतः संख्यात काल तक रहता है
54	क्रोधादि कषाय वालों की दुर्गति	11	त्रीन्द्रिय जीव उत्कृष्टतः संख्यात काल तक रहता है
55-60	ब्राह्मण रूप त्याग कर इन्द्र द्वारा नमि राजा से क्षमा याचना, प्रशंसा एवं वंदना	12	चतुर्गिन्द्रिय जीव उत्कृष्टतः संख्यात काल तक रहता है
61-62	उपसंहार-नमि राजा के समान बुद्ध पुरुषों की भोगों से निवृत्ति	13	पंचेन्द्रिय जीव उत्कृष्टतः संख्यात काल तक रहता है

ग्यारहवाँ बहुश्रुत पूज्य अध्ययन

14	देवयोनि या नरक योनि में गया हुआ जीव एक-एक भव तक भ्रमण करता है	1	अणगार-आचार-कथन प्रतिज्ञा
15	शुभाशुभ कर्मों से भव भ्रमण	2	अबहुश्रुत का स्वरूप
16	आर्य जीवन दुर्लभ	3	जिज्ञासु के पाँच अवगुण
17	परिपूर्ण इन्द्रियाँ दुर्लभ	4-5	जिज्ञासु के आठ गुण
18	धर्म श्रवण दुर्लभ	6-9	अविनीत के चौदह लक्षण
19	श्रद्धा परम दुर्लभ	10-13	सुविनीत के पन्द्रह लक्षण
20	आचरण दुर्लभ	14	योग्य जिज्ञासु के लक्षण
21-26	श्रोत्रेन्द्रियादि सर्व बलों की हानि	15	बहुश्रुत को शंख-पय की उपमा
27	रोगों की प्रचूरता	16	बहुश्रुत को श्रेष्ठ अक्ष की उपमा
28	क. मोह विजय का उपदेश ख. शारदीय कमल का उदाहरण	17	बहुश्रुत को अश्वारोही वीर की उपमा
29-30	त्यक्त भोगों का पुनः न ग्रहण करने का उपदेश	18	बहुश्रुत को गजराज की उपमा
31	मोक्ष मार्ग पर चलने का उपदेश	19	बहुश्रुत को वृषभराज की उपमा
32	कण्टकाकीर्ण मार्ग का उदाहरण	20	बहुश्रुत को सिंह की उपमा
33	दुर्बल भारवाहक का उदाहरण	21	बहुश्रुत को वासुदेव की उपमा
34	विशाल समुद्र तट का उदाहरण	22	बहुश्रुत को चक्रवर्ती की उपमा
35	सिद्धपद की प्राप्ति के लिये प्रयत्नशील रहने का उपदेश	23	बहुश्रुत को इन्द्र की उपमा
36	सदुपदेश देने का विधान	24	बहुश्रुत को दिवाकर की उपमा
37	उपसंहार-राग-द्वेष का छेदन कर गौतम स्वामी की सिद्धि	25	बहुश्रुत को चन्द्र की उपमा
		26	बहुश्रुत को कोष्ठागार की उपमा

27	बहुश्रुत को सुदर्शन जम्बू वृक्ष की उपमा		यक्ष का उद्घोष
28	बहुश्रुत को शीता नदी की उपमा	18-19	ब्राह्मण कुमारों द्वारा मुनि पर प्रहार
29	बहुश्रुत को मेरु पर्वत की उपमा	20-23	क्रुद्ध ब्राह्मण कुमारों को कौशल राजकन्या भद्रा का निवेदन
30	बहुश्रुत को स्वयंभूरमण समुद्र की उपमा	24-25	तिन्दुक यक्ष द्वारा ब्राह्मण कुमारों की दुर्दशा
31	क. बहुश्रुत के ज्ञान को समुद्र की उपमा ख. बहुश्रुत को उत्तम गति की प्राप्ति	26-28 29	भद्रा राजकन्या द्वारा मुनि की तेजोलब्धि का परिचय मुनि को प्रताड़ित करने से छात्रों के मुख से रक्त बहने
32	उपसंहार-श्रुत के अध्ययन से शिवपद		लगा, जिह्वा-आखें बाहर निकल आईं
	बारहवाँ हरिकेशी अध्ययन		
1	श्वपाक कुलोत्पन्न हरिकेशी श्रमण	30-31	यज्ञ-प्रमुख द्वारा क्षमा याचना तथा आहार के लिए प्रार्थना
2-3	पांच समिति- तीन गुप्ति के आराधक हरिकेशी का भिक्षार्थ ब्रह्म-यज्ञ में गमन	32 33	मुनि द्वारा तिन्दुक यक्ष का परिचय यज्ञ-प्रमुख द्वारा पुनः क्षमा याचना
4-7	ब्राह्मणों द्वारा हरिकेशी का उपहास और अनादर युक्त वचन कथन	34-35 36 37	यज्ञ प्रमुख का हरिकेशी श्रमण को भिक्षादान दान के समय देवों द्वारा दिव्य वर्षा दिव्य वर्षा से ब्राह्मणों को आश्चर्य
8-9	यक्ष के द्वारा मुनि का परिचयात्मक उत्तर	38-39	भाव शुद्धि के बिना बाह्य शुद्धि की विफलता के सम्बन्ध
10	श्रमणचर्या के सम्बन्ध में तिन्दुक यक्ष का कथन		में हरिकेशी श्रमण के विचार
11	ब्राह्मणों का भिक्षा न देने का निश्चय	40	आत्म शुद्धि एवं श्रेष्ठ यज्ञ के सम्बन्ध में यज्ञ प्रमुख की
12-13	तिन्दुक यक्ष द्वारा पुण्य क्षेत्र का प्रतिपादन		जिज्ञासा
14-15	तिन्दुक यक्ष द्वारा पुण्य और पाप क्षेत्रों का पुनः प्रतिपादन	41-47	हरिकेशी द्वारा अध्यात्म यज्ञ एवं अध्यात्म ज्ञान का
16	ब्राह्मणों द्वारा भिक्षा न देने के निश्चय को दुहराना		प्रतिपादन
17	भिक्षा न देने पर यज्ञ की असफलता के सम्बन्ध में तिन्दुक		

तेरेहवाँ चित्तसंभूति अध्ययन		34	ब्रह्मदत्त की नरक में उत्पत्ति
1	सम्भूतमुनि द्वारा हस्तिनापुर में निदान करने पर नलिनी गुल्म विमान में उत्पत्ति	35	चित्त की मुक्ति
2	क. वहाँ से च्यवनकर कमिलपुर में चुलिनी की कुक्षी से सम्भूत (ब्रह्मदत्त) की उत्पत्ति ख. पुरिमतालपुर में चित्त की उत्पत्ति व धर्म श्रवण कर दीक्षित होना	1-3	चौदहवाँ इषुकारीय अध्ययन क. पुरोहित पुत्रों आदि छह जीवों का पूर्वभव एवं इषुकार नगर में उत्पत्ति ख. इषुकार राजा, कमलावती रानी, भृगु पुरोहित, यशा भार्या और दो पुत्र इन छह द्वारा जिनोक्त मार्गानुसरण क. पुरोहित पुत्रों को जाति स्मरण ज्ञान ख. संसार से विरक्ति ग. माता-पिता से प्रव्रज्या के लिये अनुमति माँगना गृहस्थ के आवश्यक कृत्य पूर्ण करके प्रव्रज्या लेने का पिता का सुझाव पुरोहित पुत्रों का अविलंब प्रव्रज्या ग्रहण करने का दृढ़ संकल्प पुरोहित का पुनः पुत्रों को समझाना पौद्गलिक सुख की प्राप्ति प्रव्रज्या का उद्देश्य नहीं, अपितु आध्यात्मिक सुख की प्राप्ति प्रव्रज्या का उद्देश्य है पिता द्वारा आत्मा के अभाव का प्रतिपादन अग्नि, घी व तेल के उदाहरण पुत्रों द्वारा आत्मा के अस्तित्व की सिद्धि
3	चित्त और ब्रह्मदत्त (सम्भूत) का कमिलपुर में मिलना	4-7	
4-7	ब्रह्मदत्त मुनि द्वारा पूर्व जन्म के वृत्तों का वर्णन		
8-12	चित्त और सम्भूति का परस्पर एक दूसरों को खींचने का प्रयास	8-11	
13-14	ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती की चित्त मुनि से प्रार्थना		
15-26	क. चित्त मुनि का ब्रह्मदत्त को उपदेश ख. मृत्यु को सिंह की उपमा ग. अशरण भावना का उपदेश क. ब्रह्मदत्त की भोगों में आसक्ति ख. स्वयं को कीचड़ में फँसे हुए गज की उपमा देना क. मुनि द्वारा ब्रह्मदत्त को पुनः आर्य कर्मों के लिये प्रेरित करना	12-15	
27-30		16	
31-33		17	
	ख. चित्त मुनि का जाना	18	
		19	

20	अज्ञान अवस्था में की हुई भूल की पुनरावृत्ति न करने का संकल्प	49-53	क. राजा आदि छहों का दीक्षित होना ख. छहों मुमुक्षु आत्माओं की क्रमशः मुक्ति
21-25	पुत्रों द्वारा जीवन को सफल करने का निश्चय		पन्द्रहवाँ सभिक्षु अध्ययन
26	वृद्ध होने पर सहदीक्षा का पिता का प्रस्ताव		भिक्षु के लक्षण
27-28	भविष्य को अनिश्चित समझकर अविलंब प्रव्रजित होने का पुत्रों का निश्चय	1	क. निदान न करना ख. प्रशंसा न चाहना
29-30	भृगु पुरोहित का यशा भार्या को समझाना		ग. काम-भोगों की चाहना न करना
31	वृद्धावस्था में दीक्षित होने के लिये यशा भार्या का निवेदन		घ. अज्ञात कुल से आहारादि की एषणा करना
32	दीक्षा का उद्देश्य-मुक्ति है	2	क. विरक्त होकर विचरना
33	यशा द्वारा भिक्षुचर्या की कठिनाईयों का वर्णन		ख. आसक्ति न करना
34-35	क. भृगु पुरोहित का दृढ़ निश्चय ख. भोगों को सर्प कंचुक और मत्स्य जाल की उपमा	3	आक्रोश और वध परीषह सहन करना
36	यशा का भी दीक्षित होने का निश्चय	4	क. निकृष्ट उपकरणों की प्राप्ति होने पर भी समभाव रखना
37-40	कमलावती रानी का राजा को उपदेश		ख. शीत-उष्ण और दंस मशक परीषह सहना
41-48	क. आत्मा को पक्षी की और भोगों को पिंजरे की उपमा ख. अरण्य में दग्ध पक्षियों को देखकर अन्य पक्षियों के प्रमुदित होने के रूपक से राग-द्वेष का स्वरूप समझना ग. भोगों को आमिष की उपमा घ. स्वयं को उरग की और मृत्यु को गरुड़ की उपमा ङ. बन्धन मुक्त गजराज के समान स्वस्थान-शिवपद को प्राप्त करने का प्रस्ताव	5 6 7 8 9	पूजा-प्रतिष्ठा न चाहना क. मोह जीतना ख. स्त्री से विरक्त रहना ग. हैसी-मजाक न करना आहार के लिये विद्या आदि प्रयोग न करना आहार के लिये मंत्रादि का प्रयोग न करना क्षत्रिय आदि की प्रशंसा न करना

उत्तरा. अ.15, गाथा 10-16, अ.16, सूत्र 1-17 25 उत्तराध्ययन सूत्र विषय-सूची			उत्तरा. अ.17, गाथा 1-5	५८५
10	लौकिक कामनाओं के लिये किसी का परिचय न करना	10	8. अतिमात्रा में आहारादि का न करना	
11	शयन-आसन आदि के न देने वाले पर द्वेष न करना	11	9. शृंगार विभूषा न करना	
12	भिक्षु दूसरों (गृहस्थों) से अशन-पान प्राप्त कर, पूर्ण संवृत होकर, उस आहार के द्वारा अनुकंपा नहीं करता	12	10. मनोज्ञ शब्दादि का सेवन न करना	
13	शीत और नीरस आहार मिलने पर भी निंदा न करे व साधारण घरों में भिक्षा के लिए जावे	गाथा 1-10	उक्त दस स्थानों की दस गाथाएँ	
14	भयावह शब्दों में से भयभीत न होना	11-13	ब्रह्मचारी के लिये दस स्थानों का सेवन, तालपुट विष के समान है	
15	विविध वादों-विचारों से विचलित न होना	14	ब्रह्मचारी के लिये सभी शंका स्थानों का निषेध	
16	अशिल्प जीवी आदि प्रशस्त गुणों का धारक होना	15	ब्रह्मचर्य में सुसमाहित होकर धर्म में आचरण	
1-2	सोलहवाँ ब्रह्मचर्य समाधि अध्ययन	16	ब्रह्मचर्य की महिमा	
3	भ. महावीर द्वारा दस ब्रह्मचर्य समाधि स्थानों का प्ररूपण	17	उपसंहार-ब्रह्मचर्य से शिवपद की प्राप्ति	
4	1. स्त्री-पशु-पंडक रहित शयनासन का सेवन करना, सेवन न करने से होने वाली हानियाँ	1	सत्रहवाँ पाप श्रमण अध्ययन	
5	2. स्त्री कथा न करना, करने से होने वाली हानियाँ	2	निर्ग्रन्थ धर्म को जानकर के भी स्वच्छन्द घूमने वाला पाप श्रमण	
6	3. स्त्री के साथ एक आसन पर न बैठना	3	शयनासन में प्रमत्त, अध्ययन से विमुख होने वाला पाप श्रमण	
7	4. स्त्री के अंगोपांगों की ओर दृष्टि न डालना	4	अधिक आहार और अधिक निद्रा-लेने वाला पाप श्रमण	
8	5. स्त्री के हास्य विलासादि का भित्ति के पीछे से भी न सुनना	5	जिनसे ज्ञान प्राप्त किया उनकी ही निंदा करने वाला पाप श्रमण	
9	6. भुक्त भोगों का स्मरण न करना		अविनयी और अभिमानी पाप श्रमण	
	7. उत्तेजक पदार्थों का आहार न करना			

6	प्राणियों का उत्पीड़क, बीजादि वनस्पतियों का संहारक पाप श्रमण	19	द्रव्योपार्जन करने वाला पाप श्रमण
7	अप्रमार्जित संस्कारक आदि का उपभोक्ता पाप श्रमण		सर्वदा स्वजाति के गृहस्थों से भिक्षा लेने वाला और गृहस्थ के घर में बैठने वाला पाप श्रमण
8	अविवेक से चलने वाला व अति क्रोधी पाप श्रमण	20	उपसंहार-पंचाश्रवसेवी श्रमणवेषी उभयलोक भ्रष्ट होता है
9	अविधि से प्रतिलेखन करने वाला पाप श्रमण	21	सर्वदोष वर्जित सुव्रत श्रमण उभयलोक का आराधक होता है
10	गुरुजनों का तिरस्कार करने वाला पाप श्रमण		
11	मायावी, बहुभाषी, अभिमानी, लोभी, अनिग्रही, असांविभागी व अविश्वनीय पाप श्रमण	1-3	अठारहवाँ संयंती अध्ययन
12	कलह प्रिय, अधर्मी, विवादों को भड़काने वाला पाप श्रमण	4-5	संजय राजा का शिकार के लिए प्रस्थान एवं मृगवध ध्यानस्थ अणगार के समीप राजा द्वारा मृगवध
13	अस्थिर-चंचल, विकृत चेष्टाएं करने वाला, अविवेकी पाप श्रमण	6-8	मुनि को देखते ही राजा द्वारा पश्चात्ताप और क्षमायाचना
14	प्रमार्जन न करने वाला, प्रतिलेखन न करने वाला, आसन आदि करने में लापरवाह पाप श्रमण	9-10	मुनि के मौन से राजा की भयाकुलता
15	विकारवर्द्धक आहार करने वाला और तपश्चर्या न करने वाला पाप श्रमण	11-17	मुनि के द्वारा अभयदान, अनासक्ति एवं अनित्यता आदि का उपदेश
16	अनियमित भोजी, प्रेरणा देने वाले को उलटे उपदेश देने वाला पाप श्रमण	18-19	विरक्त संजय राजा जिन शासन में प्रव्रजित
17	स्वच्छन्द, पर दर्शन प्रशंसक, बार-बार गण बदलने वाला, दुराचारी पाप श्रमण	20-21	क्षत्रिय मुनि द्वारा संजय ऋषि से प्रश्न
		22	संजय राजर्षि द्वारा परिचयात्मक उत्तर
		23-27	क्षत्रिय मुनि द्वारा क्रियावादी आदि के विषय में चर्चा विचारणा
18	गृहस्थों के कृत्य करने वाला, शुभाशुभ निमित्त बताकर	28-29	परलोक के अस्तित्व का प्रमाण- अपने अनुभव से

30-33	क्षत्रिय मुनि द्वारा क्रियावाद से संबंधित उपदेश	54	सर्वथा परिग्रह से मुक्त की मुक्ति
34	भरत चक्रवर्ती भी अर्थ-धर्म के उपदेश से प्रव्रजित		उन्नीसवाँ मृगापुत्र अध्ययन
35	सगर चक्रवर्ती को संयम साधना से निर्वाण	1-3	सुग्रीव नगर, बलभद्र राजा, मृगा रानी, बल श्री पुत्र,
36	मधवा चक्रवर्ती द्वारा प्रव्रज्या		देगुन्दक देव की तरह पत्नियों के साथ क्रीड़ा
37	सनत्कुमार चक्रवर्ती द्वारा तपश्चरण	4-8	मृगापुत्र को मुनि दर्शन से पूर्व जन्म की स्मृति
38	शांतिनाथ चक्रवर्ती की अनुत्तरगति	9-11	मृगापुत्र का माता-पिता से प्रव्रज्या के लिये अनुमति प्राप्त करना
39	कुंथुनाथ की अनुत्तरगति		
40	अरनाथ की अनुत्तरगति	12-24	मृगापुत्र द्वारा भुक्त भोगों का यथार्थ वर्णन
41	महापद्म चक्रवर्ती द्वारा तपश्चरण	25-44	माता-पिता द्वारा श्रमण जीवन की कठिनाईयों का प्रतिपादन
42	हरिषेण चक्रवर्ती की अनुत्तरगति	45-75	मृगापुत्र द्वारा पूर्व वेदित नरक वेदना का वर्णन
43	जय चक्रवर्ती की अनुत्तरगति	76	माता-पिता द्वारा श्रमण जीवन की असुविधाओं का वर्णन
44	दर्शार्णभद्र राजा का निष्क्रमण	77-84	मृगापुत्र द्वारा मृगचर्या का वर्णन
45	नमि राजर्षि की धर्म में सुस्थिरता	85-86	संयम की अनुमति और मृगचर्या का संकल्प
46-47	करकण्डू द्विमुख, नमिराज व नगति राजा प्रव्रजित	87-88	क. अनुमति प्राप्त मृगापुत्र का गृह त्याग
48	सौवीरनृप उदायन राजा की अनुत्तरगति		ख. गृह त्याग को नाग कंचुक की उपमा
49	काशीराज द्वारा कर्मक्षय		ग. परिग्रह को वस्त्र के लगी हुई रज की उपमा
50	विजय राजा द्वारा राज्य त्याग व प्रव्रज्या ग्रहण	89-94	क. मृगापुत्र के श्रामण्य जीवन का वर्णन
51	महाबल राजा द्वारा सिद्धि पद प्राप्ति	95-96	ख. एक मास की संलेखना और शिवपद की प्राप्ति
52	क्षत्रिय मुनि द्वारा सिद्धांत सम्मत उपदेश	97	क. मृगापुत्र के समान पंडितजनों की भोगों से निवृत्ति
53	जिनवाणी श्रवण से तीनों काल में तिरना	98-99	ख. मृगापुत्र का वर्णन सुनकर जीवन को प्रशस्त बनाना

बीसवाँ महानिर्ग्रथीय अध्ययन

1	क. सिद्धों और संयतों को नमस्कार	38	अन्य प्रकार की अनाथता
	ख. सत्य धर्मकथा सुनने के लिये प्रेरणा	39	क. श्रमण जीवन में शिथिलाचार
2-8	क. मगधाधिप श्रेणिक का मण्डिकुक्षि चैत्य में घूमने के लिये जाना	40	ख. श्रमण होने पर भी भोगासक्ति
	ख. चैत्य में मुनिदर्शन का होना	41-42	पाँच समितियों का सम्यक् पालन न करना
	ग. मुनि से श्रेणिक द्वारा कुछ प्रश्न-पृच्छा		व्रतभंग, अनियमित जीवन जैसे- पोली मुड़ी, खोटा सिक्का,
9	मुनि का अपने आपको अनाथ कहना	43	काच मणि निस्सार
10-11	मुनि के कथन से श्रेणिक को आश्चर्य, स्वयं नाथ बनने के लिये निवेदन	44	असंयत जीवन
	क. मुनि द्वारा श्रेणिक को अनाथ कहा जाना	45	विषयासक्ति जैसे कालकूट विष
12-16	ख. अनाथ कहने से श्रेणिक को आश्चर्य, श्रेणिक द्वारा अपना परिचय दिया जाना		मिथ्या आश्चर्य उत्पन्न करने वाली विद्याओं से आजीविका करने वाले को शरण नहीं
	क. मुनि द्वारा स्वयं की अनाथता का दिग्दर्शन	46	मुनि धर्म की विराधना करने वाला नरक तिर्यच गति में
17-30	ख. गृहस्थ जीवन में हुई चक्षुशूल की वेदना का वर्णन	47	सदोष आहार का सेवन, सर्वभक्षी की दुर्गति
	ग. उपचारों की असफलता	48-50	अंतिम समय में पश्चात्ताप और दुर्गति
31-35	क. अनागर प्रव्रज्या लेने के संकल्प से वेदना की उपशान्ति	51	कुशील को छोड़कर महानिर्ग्रथों के पथ पर चलने का उपदेश
	ख. अनागर बनने पर सनाथ होना	52	संयम साधना से शिवपद
36-37	सुख-दुःख का कर्ता भोक्ता आत्मा	53	उपसंहार-महानिर्ग्रथ के महाश्रुत का विस्तृत रूप से कथन
		54-59	अनाथी निर्ग्रथ से श्रेणिक की क्षमा याचना, स्वस्थान गमन
		60	मुनि जीवन की विहग पक्षी के जीवन से तुलना

इक्कीसवाँ समुद्रपालीय अध्ययन		5	अरिष्टनेमि एक हजार आठ लक्षण धारक गौतम गौत्रीय व श्याम वर्ण वाले
1	चंपा निवासी पालित श्रावक भ. महावीर का शिष्य	6	अरिष्टनेमि जिनका समचतुरस्र संस्थान व कोमल पेट था
2	पालित का समुद्र मार्ग से पिहुंडनगर पहुंचना		ऐसे अरिष्टनेमि के लिये केशव द्वारा राजिमती की याचना
3	पालित का विवाह, गर्भवती स्त्री को साथ लेकर स्वदेश के लिये प्रस्थान करना	7-13	विद्युत्प्रभा के समान प्रभा वाली राजीमती से विवाह हेतु उग्रसेन के महल की ओर प्रस्थान
4	समुद्र में प्रसव, समुद्रपाल नामकरण	14	विवाह-मण्डप के समीप अरिष्टनेमि ने वध के लिये एकत्रित पशु-पक्षियों का बाड़ा देखा
5	चंपा में समुद्रपाल का संवर्धन	15-16	बाड़े में बंधे हुए पशुओं को देखकर अरिष्टनेमि का सारथी से प्रश्न
6	72 कलाओं का अध्ययन	17	सारथी द्वारा उत्तर- 'ये पशु आपके विवाह में मांस भोजन हेतु बांधे गये'
7	रूपिणी के साथ विवाह	18-20	अरिष्टनेमि का आत्महित चिंतन, सारथी को पारितोषिक, रथ को वापिस लौटाना
8-10	वध्य भूमि की ओर ले जाते हुए चोर को झरोखे में से देखकर समुद्रपाल को वैराग्य, प्रव्रज्या ग्रहण	21-27	अरिष्टनेमि का चित्रा नक्षत्र में 1000 व्यक्तियों के साथ रैवतक पर्वत पर दीक्षा महोत्सव
11-22	समुद्रपाल द्वारा आत्मा को स्वयं स्फुरित मुनि धर्म शिक्षा	28-31	प्रथम शोक मग्न, तत्पश्चात् विरक्ता राजीमती की प्रव्रज्या व पंचमुष्ठी लोच
23	समुद्रपाल को केवल ज्ञान	32	बहुश्रुत होकर राजीमती द्वारा अनेक स्त्रियों को दीक्षा
24	समुद्रपाल का संसार समुद्र से पार होना		
बावीसवाँ रथनेमीय अध्ययन			
1	सोरियपुर में वसुदेव राजा		
2	वसुदेव के दो भार्या रोहिणी व देवकी और दो पुत्र राम व कृष्ण		
3	सोरियपुर में समुद्र विजय राजा		
4	शिवा रानी के पुत्र अरिष्टनेमि		

33-40	क. राजीमती का रैवतक पर्वत पर स्थित भ. अरिष्टनेमि के दर्शन के लिये जाना ख. मार्ग में वर्षा होना ग. आर्द्र वस्त्रों को सुखाने के लिये गुफा में जाना घ. गुफा में स्थित रथनेमि का संयम से विचलित होना राजीमती का रथनेमि को उपदेश रथनेमि का संयम में स्थिर होना राजीमती और रथनेमि को केवल ज्ञान और निर्वाण प्राप्ति उपसंहार-इस प्रकार भोगों से निवृत्त पंडित पुरुषोत्तम होता है	28-33	ख. भ. गौतम द्वारा समाधान क. केशी श्रमण का द्वितीय प्रश्न - भ. पार्श्वनाथ और भ. महावीर के अनुयायी श्रमणों की विभिन्न वेशभूषा क्यों? ख. भ. गौतम द्वारा समाधान क. केशी श्रमण का तृतीय प्रश्न - शत्रुओं पर विजय प्राप्ति का क्रम कौन सा है? ख. भ. गौतम द्वारा समाधान क. केशी श्रमण का चतुर्थ प्रश्न - स्नेह बंधन से मुक्ति किस प्रकार होती है? ख. भ. गौतम द्वारा समाधान क. केशी श्रमण का पंचम प्रश्न - तृष्णा रूपी लता का छेदन किस प्रकार? ख. भ. गौतम द्वारा समाधान क. केशी श्रमण का षष्ठ प्रश्न - कषाय अग्नि का शमन किस प्रकार? ख. भ. गौतम द्वारा समाधान क. केशी श्रमण का सप्तम प्रश्न - मन का दमन किस प्रकार? ख. भ. गौतम द्वारा समाधान
41-47		34-38	
48-49			
50			
51		39-43	
1-4	तेवीसवाँ केशी-गौतम अध्ययन श्रावस्ती के तिन्दुक उद्यान में भ. पार्श्वनाथ के शिष्य केशीकुमार श्रमण का आगमन	44-48	
5-8	भ. वर्धमान (महावीर) के शिष्य द्वादशींगी के ज्ञाता गौतम का श्रावस्ती के कोष्ठक चैत्य में उहरना	49-53	
9-13	दोनों के शिष्यों में चार याम, पाँच याम और अंचेल-संचेल के सम्बन्ध में जिज्ञासा		
14-20	केशीकुमार श्रमण और भ. गौतम का मिलन तथा चर्चा	54-58	
21-27	क. केशी श्रमण का प्रथम प्रश्न - चार याम और पाँच याम धर्म की भिन्नता का मुख्य हेतु क्या है?		

चौबीसवाँ समिति अध्ययन	
59-63 क. केशी श्रमण का अष्टम प्रश्न- सन्मार्ग गमन किस प्रकार?	1-3 अष्ट प्रवचन माता-पाँच समिति, तीन गुप्ति
ख. भ. गौतम द्वारा समाधान	4-8 क. इर्या समिति के चार भेद
64-68 क. केशी श्रमण का नवम प्रश्न- धर्म रूपी महाद्वीप में जन्म-जरा-मरण से मुक्ति किस प्रकार?	9-10 ख. यतना के चार भेद
ख. भ. गौतम द्वारा समाधान	11-12 भाषा समिति के आठ दोष
69-73 क. केशी श्रमण का दशम प्रश्न- संसार समुद्र से पार करने वाली नौका व नाविक कौन?	13-14 एषणा समिति के तीन भेद
ख. भ. गौतम द्वारा समाधान	क. आदान निक्षेपण समिति के दो भेद
74-78 क. केशी कुमार श्रमण का एकादशम प्रश्न- अंधकाराच्छन्न संपूर्ण लोक का प्रकाशक कौन?	ख. उपकरणों को सदा आँखों से प्रतिलेखन व प्रामर्जन कर रखे
ख. भ. गौतम द्वारा समाधान	15 उच्चार आदि परिष्ठापन योग्य वस्तु का स्थण्डिल भूमि में उत्सर्ग
79-84 क. केशी कुमार श्रमण का द्वादशम प्रश्न- क्षेम-शिव व शाश्वत स्थान कौन सा?	16 परिष्ठापनिका समिति के चार भेद
ख. भ. गौतम द्वारा समाधान	17-18 जिस भूमि पर कोई आवागमन न हो आदि ऐसे दस स्थानों पर परठने का विधान
85-87 केशी श्रमण द्वारा गौतम को अभिवन्दन एवं पाँच महाव्रत धारण	19 समितियों का उपसंहार और गुप्तियों का प्रारंभ
88 उपसंहार-केशी-गौतम के समागम से श्रुत और शील का उत्कर्ष	20-21 मन गुप्ति के चार भेद
89 जन साधारण में श्रद्धा की अभिवृद्धि	22-23 वचन गुप्ति के चार भेद
	24-25 काय गुप्ति के पाँच भेद
	26 उपसंहार-समिति, गुप्ति की परिभाषा
	27 अष्ट प्रवचन माता की सम्यक् आराधना से मुक्ति

पच्चीसवाँ यज्ञीय अध्ययन

1-3	जय घोष मुनि का वाराणसी के बाहर मनोरम उद्यान में ठहरना	33	वर्णाश्रम व्यवस्था का मूल आधार कर्म
4	उसी वाराणसी में विजय घोष का यज्ञ करना	34	कर्ममूलक व्यवस्था का प्रतिपादक ही सच्चा ब्राह्मण
5	मासोपवास (मासखमण) के पारणे के लिये जयघोष का विजयघोष के यज्ञ में जाना	35	गुणी ब्राह्मण से ही स्व-पर का कल्याण
6	यज्ञकर्ता विजय घोष द्वारा भिक्षा न देना	36-38	विजयघोष द्वारा कृतज्ञता प्रकाशन एवं गुणगान
7-8	यज्ञान्न के अधिकारियों का वर्णन	39	विजयघोष की जयघोष से भिक्षा के लिये प्रार्थना
9-12	क. जयघोष का समभाव ख. विजयघोष के कतिपय प्रश्न	40	जयघोष का विजयघोष को विरति का उपदेश
13-15	समाधान के लिये विजयघोष की प्रार्थना	41	भोगी और भोग मुक्त की गति
16	जयघोष द्वारा समाधान	42-43	भोगी और भोग मुक्त को दो गोलों की उपमा
17	भ. ऋषभदेव की महिमा	44	उपसंहार-विजयघोष की श्रमण प्रव्रज्या
18	यज्ञवादी ब्राह्मणों की दशा जैसे राख से ढकी हुई अग्नि	45	जयघोष-विजयघोष की सिद्धि
19-29	क. वास्तविक ब्राह्मण का वर्णन ख. जल में उत्पन्न पद्म जल से लिप्त नहीं होता आदि सच्चे ब्राह्मण के लक्षण	1	छब्बीसवाँ समाचारी अध्ययन समस्त दुःखों से मुक्त कराने वाली श्रमण-समाचारी का कथन
30	वेद विहित यज्ञ आत्म रक्षक नहीं	2-4	समाचारी के दस भेद
31-32	श्रमण, ब्राह्मण, मुनि और तापस की व्याख्या	5-7	दस समाचारियों का प्रयोजनात्मक स्वरूप
		8-10	दिवस-समाचारी
		11	दिन के चार भाग
		12	चार भागों में श्रमण के कृत्य
		13-16	पौरुषी प्रमाण का ज्ञान

17	रात्रि-समाचारी व रात्रि के चार भाग	43	स्तुति मंगल पाठ-काल विवेक
18-20	चार भागों में श्रमण के कर्तव्य	44	रात्रि-समाचारी-चार भाग के कर्तव्य
21-22	दिवस-समाचारी-प्रथम भाग में करने योग्य कार्य	45	चतुर्थ प्रहर में असंयत व्यक्तियों को न जगाता हुआ
23-25	प्रतिलेखना की विधि		स्वाध्याय करे
26	प्रतिलेखना के छह दोष	46	काल प्रतिक्रमण, काल प्रतिलेखन
27	प्रतिलेखना के अन्य दोष	47	कायोत्सर्ग का समय होने पर कायोत्सर्ग
28	प्रतिलेखना के तीन पदों के आठ भागों	48	रात्रि-अतिचारों-दोषों का चिंतन
29	प्रतिलेखना के समय निषिद्ध कृत्य	49	रात्रि-अतिचारों की आलोचना
30	प्रमत्त प्रतिलेखनकर्ता विराधक	50-51	कायोत्सर्ग-तप चिंतना, गुरू वंदना
31	अप्रमत्त प्रतिलेखनकर्ता आराधक	52	गुरू वंदन पश्चात् सिद्ध-स्तुति
32	तृतीय पौरुषी में भिक्षा	53	उपसंहार-समाचारी की आराधना से शिवपद की प्राप्ति
33	आहार लेने के छह कारण		सत्तावीसवाँ खलुंकीय अध्ययन
34-35	आहार त्याग के छह कारण	1	आचार्य गार्ग्य का आध्यात्मिक परिचय
36	भिक्षा-क्षेत्र का उत्कृष्ट प्रमाण-अर्ध योजन	2	वाहन और योग-संयम-वहन की तुलना
37	चतुर्थ पौरुषी के कर्तव्य	3-8	दुष्ट वृषभ और दुष्ट शिष्य की तुलना
38	शय्या की प्रतिलेखना का समय	9-13	दुष्ट शिष्यों के लक्षण
39	मलमूत्र विसर्जनार्थ भूमि का अवलोकन	14	गर्गाचार्य की चिंता- जैसे पंख आने पर हंस उड़ जाते हैं
40	दैवसिक अतिचारों-दोषों का चिंतन		वैसे ही शिक्षित-दीक्षित कुशिष्य गुरू को छोड़कर चले
41	दैवसिक अतिचारों-दोषों की आलोचना		जाते हैं
42	सर्व दुःखों से मुक्त करने वाला कायोत्सर्ग		

15	गर्गाचार्य की सारथी से तुलना	30	ज्ञानादि चार का परस्पर अनुबंध
16	क. दुष्ट शिष्यों को गर्दभ की उपमा	31	सम्यक्त्वी के आठ अंग
	ख. गर्गाचार्य द्वारा दुष्ट शिष्यों का परित्याग	32	चारित्र के पाँच भेद
17	गर्गाचार्य का एकाकी विहार	33	चारित्र की व्याख्या
	अठावीसवाँ मोक्ष मार्ग गति अध्ययन	34	तप के दो भेद व प्रत्येक के 6-6 भेद
1-3	मोक्ष मार्ग के चार कारण	35	ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप इन चारों का फल
4	ज्ञान के पाँच भेद	36	उपसंहार-तप व संयम से कर्मक्षय
5	ज्ञान का विषय		उनतीसवाँ सम्यक्त्व-पराक्रम अध्ययन
6	द्रव्य गुण और पर्याय का लक्षण	1	क. भ. महावीर द्वारा सम्यक्त्व पराक्रम अध्ययन का प्रतिपादन
7	षड् द्रव्यात्मक लोक		ख. आराधना से सिद्धि
8	क. धर्म, अधर्म और आकाश एक द्रव्यात्मक		ग. बहत्तर प्रश्नोत्तरों का विषय व उनका स्वरूप
	ख. काल, जीव और पुद्गल अनंत द्रव्यात्मक	2	1. संवेग का फल
9-12	षड् द्रव्य के लक्षण	3	2. निर्वेद का फल
13	पर्याय के लक्षण	4	3. धर्म श्रद्धा का फल
14	नव तत्त्व के नाम	5	4. गुरु और स्वधर्मी सुश्रुषा का फल
15	सम्यक्त्व का लक्षण	6	5. आलोचना का फल
16-27	सम्यक्त्व के दस भेद और उनका स्वरूप	7	6. आत्मनिन्दा का फल
28	सम्यक्त्वी के तीन प्रमुख कर्तव्य	8	7. गर्हा का फल
29	सम्यग्दर्शन की महत्ता		

9	8. सामायिक का फल	29	28. व्यवदान-कर्मक्षय का फल
10	9. चतुर्विंशतिस्तव का फल	30	29. सुखसाता का फल
11	10. वंदना का फल	31	30. अप्रतिबद्धता का फल
12	11. प्रतिक्रमण का फल	32	31. विविक्त शय्यासन सेवन का फल
13	12. कायोत्सर्ग का फल	33	32. विनिवर्तना का फल
14	13. प्रत्याख्यान का फल	34	33. संभोग-व्यवहार-त्याग का फल
15	14. स्तव-स्तुति-मंगल का फल	35	34. उपधि त्याग का फल
16	15. काल प्रतिलेखना-समयज्ञ होने का फल	36	35. आहार त्याग का फल
17	16. प्रायश्चित्त का फल	37	36. कषाय त्याग का फल
18	17. क्षमापना का फल	38	37. योग त्रय के त्याग का फल
19	18. स्वाध्याय का फल	39	38. शरीर त्याग का फल
20	19. वाचना का फल	40	39. सहायक के त्याग का फल
21	20. पृच्छना का फल	41	40. भक्त प्रत्याख्यान (आहार त्याग) का फल
22	21. परिवर्तना-आवृत्ति का फल	42	41. सद्भाव-प्रवृत्ति के त्याग का फल
23	22. अनुप्रेक्षा का फल	43	42. प्रतिरूपता-श्रमण वेशभूषा का फल
24	23. धर्मकथा का फल	44	43. वैयावृत्य सेवा का फल
25	24. श्रुत की आराधना का फल	45	44. सर्वगुण संपन्नता का फल
26	25. मन को एकाग्र करने का फल	46	45. वीतरागता का फल
27	26. संयम का फल	47	46. क्षमा का फल
28	27. तप का फल	48	47. मुक्ति-निर्लोभता का फल

49	48. ऋजुता-सरलता का फल	69	68. मान-विजय का फल
50	49. मृदुता का फल	70	69. माया-विजय का फल
51	50. भाव सत्य का फल	71	70. लोभ-विजय का फल
52	51. सत्य-यथार्थ क्रिया का फल	72	71. राग-द्वेष व मिथ्यादर्शन विजय का फल
53	52. सत्य योगों का फल	73	72. क. योगों के सर्वथा निरोध का फल
54	53. मन के निग्रह का फल		ख. कर्म क्षय का फल
55	54. वचन के निग्रह का फल	74	क. मोक्ष की ओर जीव की गति एवं स्थिति
56	55. काया के निग्रह का फल		ख. उपसंहार-सम्यक्त्व पराक्रम अध्ययन का भ. महावीर
57	56. मन को शांत करने का फल		द्वारा प्ररूपण
58	57. विवेकपूर्वक बोलने का फल		तीसवाँ तप-मार्ग अध्ययन
59	58. विवेकपूर्वक की गई कार्यात्मक क्रियाओं का फल	1	तप के द्वारा कर्मक्षय
60	59. ज्ञान युक्त होने का फल	2	आश्रव-शुभाशुभ कर्म-निरोध के लिए छह व्रतों का
61	60. श्रद्धा युक्त होने का फल		आचरण
62	61. चारित्र युक्त होने का फल	3	आश्रव निरोध के लिये आवश्यक कृत्य
63	62. श्रोत्रेन्द्रिय निग्रह का फल	4	आवश्यक कृत्यों से कर्मक्षय
64	63. चक्षु इन्द्रिय निग्रह का फल	5	जलाशय का उदाहरण
65	64. घ्राणेन्द्रिय निग्रह का फल	6	करोड़ों भवों से संचित कर्म तपस्या से क्षीण
66	65. जिह्वा इन्द्रिय निग्रह का फल	7	तप के दो भेद-प्रत्येक के छह-छह भेद
67	66. स्पर्शेन्द्रिय निग्रह का फल	8	बाह्य तप के छह भेद
68	67. क्रोध-विजय का फल	9	1. अनशन के दो भेद

10-11	क. इत्वरिक (अल्पकालिक) अनशन के छह भेद	37	उपसंहार-द्विविध (1. बाह्य 2. आभ्यन्तर) तप से निर्वाण-पद की प्राप्ति
12	ख. यावज्जीवन-अनशन के दो भेद		
13	प्रकारान्तर से दो-दो भेद		
14	2. अवमौढर्य (ऊनोदरी तप) के पाँच भेद	1	इकतीसवाँ चरण-विधि अध्ययन
15	क. द्रव्य ऊनोदरी तप		चरण विधि सेवन का माहात्म्य
16-19	ख. क्षेत्र ऊनोदरी तप	2	तेतीस बोल
20-21	ग. काल ऊनोदरी तप	3	1. असंयम से निवृत्ति व संयम में प्रवृत्ति
22-23	घ. भाव ऊनोदरी तप	4	2. राग-द्वेष इन दो पाप कर्मों से निवृत्ति
24	ङ. पर्यव ऊनोदरी तप-आराधक	5	3. दण्ड, गर्व और शल्य से निवृत्ति
25	3. भिक्षाचर्या के सात भेद	6	देव, तिर्यच, मनुष्य संबंधी उपसर्ग सहन
26	4. रस-परित्याग तप	7	4. विकथा, कषाय, संज्ञा और दुर्ध्यान द्वय से निवृत्ति
27	5. कायक्लेश तप		5. पांच महाव्रतों और पांच समितियों के पालन में प्रवृत्ति
28	6. विविक्त शयनासन प्रतिसल्लीत्रता तप		तथा पांच इन्द्रियों के विषयों से और पांच क्रियाओं से निवृत्ति
29-30	आभ्यन्तर तप और उसके प्रकार-	8	6. छह लेश्या, छह काय और आहार के छह कारणों में विवेक
31	1. प्रायश्चित्त तपःस्वरूप और प्रकार		7. सात पिण्ड अवग्रह में, आहार ग्रहण की सात प्रतिमाओं में प्रवृत्ति, सात भय स्थानों में विवेक
32	2. विनय तपःस्वरूप और प्रकार	9	8. क. आठ मद स्थानों से निवृत्ति
33	3. वैयावृत्य-परिचर्या-तपःस्वरूप और प्रकार	10	9-10. ख. नौ ब्रह्मचर्य गुप्तियाँ और दस भिक्षु-धर्मों में प्रवृत्ति
34	4. स्वाध्याय तपःस्वरूप और प्रकार		
35	5. ध्यान तपःस्वरूप और प्रकार		
36	6. व्युत्सर्ग (कायोत्सर्ग तपः) स्वरूप और विश्लेषण		

11	11-12. ग्यारह उपासक प्रतिमा और बारह भिक्षु-प्रतिमाओं में प्रवृत्ति	19	29-30. उन्नतीस पापश्रुत और तीस मोह स्थानों से निवृत्ति
12	13,14,15. तेरह क्रिया स्थान, चौदह भूतग्राम और पन्द्रह परमाधर्मिकों में प्रवृत्ति-निवृत्ति का विवेक	20	31-32. क. इकतीस सिद्धातिशयों में प्रवृत्ति ख. बत्तीस योग संग्रहों में प्रवृत्ति-निवृत्ति का विवेक
13	16. क. गाथा षोडशक में प्रवृत्ति	33.	ग. तेतीस अशातनाओं से निवृत्ति
14	17. ख. सत्रह असंयम से निवृत्ति		उपसंहार-तेतीस स्थानों की आराधना से भव-मुक्ति
	18,19. क. अठारह ब्रह्मचर्य और उन्नीस ज्ञाता अध्ययनों में प्रवृत्ति		बत्तीसवाँ प्रमाद स्थान अध्ययन
	20. ख. बीस असमाधि स्थानों से निवृत्ति	1	सर्व दुःख से मुक्त होने की विधि का श्रवण
15	21-22. इक्कीस सबल दोषों से और बावीस परीषह सहन करने में प्रवृत्ति व निवृत्ति	2-3	दुःख मुक्ति तथा सुख प्राप्ति का उपाय
16	23. क. तेवीस सूत्रकृतांग के अध्ययनों के स्वाध्याय में प्रवृत्ति	4	ज्ञानादि प्राप्ति रूप समाधि के लिए कर्तव्य
	24. ख. चौबीस देव विषयक प्रवृत्ति-निवृत्ति में विवेक	5	अपने से अधिक गुण वाला या समान गुण वाला न मिलने पर एकाकी रहने का निर्देश
17	25. क. पच्चीस भावनाओं में प्रवृत्ति	6-7	दुःख के मूल कारण
	26. ख. छब्बीस दशा-कल्प और व्यवहार के अध्ययनों में प्रवृत्ति	8	दुःख का समूल नाश
18	27. क. सत्तावीस अनगार गुणों में प्रवृत्ति	9	मोह से मुक्त होने के उपायों का कथन
	28. ख. अट्ठावीस आचार प्रकल्प के अध्ययनों में प्रवृत्ति	10	क. रस सेवन का निषेध, रस और काम का सम्बन्ध ख. कामी मनुष्य को वृक्ष की और रसों को पक्षी की उपमा
		11	क. इन्द्रियों की विषयाभिलाषा को दावाग्नि की उपमा ख. राग-द्वेष को जीतने के उपाय

	ग. राग को व्याधि की उपमा		ख. मनोज्ञ-अमनोज्ञ गंध के प्रति राग-द्वेष से मुक्त रहने का निर्देश
12	एकांत शयन आदि को औषधि की उपमा		
13	क. ब्रह्मचारी के लिये निषिद्ध स्थान	61-73	क. जिह्वा इन्द्रिय के विषयों से विरक्ति
	ख. ब्रह्मचारी को मूषक की उपमा और स्त्री को बिडाल की उपमा		ख. मनोज्ञ-अमनोज्ञ रस के प्रति राग-द्वेष से मुक्त रहने का निर्देश
14	स्त्री को विकृत दृष्टि से देखने का निषेध	74-86	क. स्पर्शेन्द्रिय के विषयों से विरक्ति
15	ब्रह्मचारी के लिए हितकारी निर्देश		ख. मनोज्ञ-अमनोज्ञ स्पर्श के प्रति राग-द्वेष से मुक्त रहने का निर्देश
16	ब्रह्मचारी के लिये एकांतवास प्रशस्त है		
17	मनोहर स्त्रियों का त्याग दुष्कर है	87-99	मनोज्ञ-अमनोज्ञ भावों के प्रति राग-द्वेष से मुक्त रहने का निर्देश
18	क. स्त्री-त्याग को समुद्र की उपमा		
19	ख. शेष वस्तुओं के त्याग को नदी की उपमा	100	दुःख के हेतु-इन्द्रियों के विषय, दुःख से मुक्त-वीतराग
20	दुःख का मूल काम और उसके विजेता-वीतराग	101	दुःख का मूल विषय नहीं, अपितु राग-द्वेष है
21	काम को किंपाकफल की उपमा	102-103	मानसिक विकार
22-34	विषयों से विरक्त होने का उपदेश	104-105	सावधान साधक के कर्तव्य
	क. चाक्षुष विषयों से विरक्ति	106	विरक्त पर अच्छे-बुरे पदार्थों का प्रभाव नहीं होता
	ख. मनोज्ञ-अमनोज्ञ रूपों में राग-द्वेष से दूर रहो	107	संकल्प विजय से तृष्णा विजय
35-47	ग. पद्म-पत्र के समान अलिप्त रहने का उपदेश	108	वीतरागी के सर्वथा कर्मक्षय
	क. श्रोत्रेन्द्रिय के विषयों से विरक्ति	109	जीवन्मुक्त की मुक्ति
	ख. मनोज्ञ-अमनोज्ञ शब्दों के प्रति राग-द्वेष से मुक्त रहने का उपदेश	110	मुक्त आत्मा का शाश्वत सुख
48-60	क. घ्राणेन्द्रिय के विषयों से विरक्ति	111	दुःख मुक्ति के उपायों का ज्ञाता ही सुखी है

तेतीसवाँ कर्म प्रकृति अध्ययन

1	अष्ट कर्मों के कथन का संकल्प	24	अष्ट कर्मों का अनुभाग-रस
2-3	अष्ट कर्मों के नाम	25	उपसंहार-कर्म विपाक ज्ञाता
चौतीसवाँ लेश्या अध्ययन			
4	(1) ज्ञानावरणीय कर्म की उत्तर प्रकृतियाँ	1	लेश्याओं के कथन का संकल्प
5-6	(2) दर्शनावरणीय कर्म की उत्तर प्रकृतियाँ	2	लेश्या सम्बन्धी ग्यारह अधिकार
7	(3) वेदनीय कर्म की उत्तर प्रकृतियाँ	3	1. लेश्याओं के नाम
8-11	(4) मोहनीय कर्म की उत्तर प्रकृतियाँ एवं उनके भेद	2.	लेश्याओं के वर्ण
12	(5) आयु कर्म की उत्तर प्रकृतियाँ	4	कृष्ण लेश्या का वर्ण
13	(6) नाम कर्म की उत्तर प्रकृतियाँ	5	नील लेश्या का वर्ण
14	(7) गोत्र कर्म की उत्तर प्रकृतियाँ एवं उनके भेद	6	कापोत लेश्या का वर्ण
15	(8) अंतराय कर्म की उत्तर प्रकृतियाँ	7	तेजो लेश्या का वर्ण
16	अष्ट कर्मों के प्रदेश-क्षेत्र-काल और भाव के कथन का संकल्प	8	पद्म लेश्या का वर्ण
17	अष्ट कर्मों के प्रदेश	9	शुक्ल लेश्या का वर्ण
18	अष्ट कर्म प्रदेशों का क्षेत्र	3.	लेश्याओं के रस
19-20	ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, वेदनीय और अंतराय कर्म की जघन्य-उत्कृष्ट स्थिति	10	कृष्ण लेश्या का रस
21	मोहनीय कर्म की जघन्य-उत्कृष्ट स्थिति	11	नील लेश्या का रस
22	आयु कर्म की जघन्य-उत्कृष्ट स्थिति	12	कापोत लेश्या का रस
23	नाम और गोत्र कर्म की जघन्य-उत्कृष्ट स्थिति	13	तेजो लेश्या का रस
		14	पद्म लेश्या का रस
		15	शुक्ल लेश्या का रस

4. लेश्याओं की गंध			
16	तीन अप्रशस्त लेश्याओं की गंध	36	कापोत लेश्या की जघन्य-उत्कृष्ट स्थिति
17	तीन प्रशस्त लेश्याओं की गंध	37	तेजो लेश्या की जघन्य-उत्कृष्ट स्थिति
		38	पद्म लेश्या की जघन्य-उत्कृष्ट स्थिति
5. लेश्याओं का स्पर्श		39	शुक्ल लेश्या की जघन्य-उत्कृष्ट स्थिति
18	तीन अप्रशस्त लेश्याओं का स्पर्श	40	चार गतियों में लेश्या-स्थिति कहने का संकल्प
19	तीन प्रशस्त लेश्याओं का स्पर्श	41	नरक गति में कापोत लेश्या की जघन्य-उत्कृष्ट स्थिति
6. लेश्याओं के परिणाम		42	नरक गति में नील लेश्या की जघन्य-उत्कृष्ट स्थिति
20	छहों लेश्याओं के परिणामों की संख्या	43	नरक गति में कृष्ण लेश्या की जघन्य-उत्कृष्ट स्थिति
7. लेश्याओं के लक्षण		44	क. नैरयिकों के लेश्या-संबंधी कथन का उपसंहार
21-22	कृष्ण लेश्या का लक्षण		ख. तिर्यच, मनुष्य और देव गति में लेश्याओं की स्थिति
23-24	नील लेश्या का लक्षण		कहने का संकल्प
25-26	कापोत लेश्या का लक्षण	45	तिर्यच और मनुष्य गति में कृष्ण से पद्म पर्यंत लेश्याओं
27-28	तेजो लेश्या का लक्षण		की जघन्य-उत्कृष्ट स्थिति
29-30	पद्म लेश्या का लक्षण	46	तिर्यच और मनुष्य गति में शुक्ल लेश्या की जघन्य-उत्कृष्ट स्थिति
31-32	शुक्ल लेश्या का लक्षण		
8. लेश्याओं के स्थान		47	क. मनुष्य और तिर्यच के लेश्या संबंधी वर्णन का उपसंहार
33	छहों लेश्याओं के स्थान		ख. देवगति में लेश्याओं की स्थिति कहने का संकल्प
9. लेश्याओं की स्थिति		48	देवगति में कृष्ण लेश्या की जघन्य-उत्कृष्ट स्थिति
34	कृष्ण लेश्या की जघन्य-उत्कृष्ट स्थिति	49	देवगति में नील लेश्या की जघन्य-उत्कृष्ट स्थिति
35	नील लेश्या की जघन्य-उत्कृष्ट स्थिति	50	देवगति में कापोत लेश्या की जघन्य-उत्कृष्ट स्थिति

51-53	देवगति में तेजो लेश्या की जघन्य-उत्कृष्ट स्थिति	8-9	गृह कर्म समारंभ के दोष
54	देवगति में पद्म लेश्या की जघन्य-उत्कृष्ट स्थिति	10-12	क. भोजन बनाने व बनवाने का निषेध
55	देवगति में शुक्ल लेश्या की जघन्य-उत्कृष्ट स्थिति		ख. भोजन के पकाने व पकवाने में पानी, धान्य, पृथ्वी व ईंधन आश्रित जीवों का वध
56	10. लेश्याओं की गति		
57	तीन अधर्म लेश्याओं की गति	13-15	क्रय-विक्रय का निषेध
	तीन धर्म लेश्याओं की गति	16	भिक्षावृत्ति का विधान
	11. लेश्याओं का आयुष्य	17	आहार ग्रहण (ग्रसैषणा) विधि
58-60	लेश्याओं की परिणति में परलोक गमन	18	सन्मान कामना का निषेध
61	उपसंहार-लेश्याओं के अनुभाव का ज्ञाता	19	साधना विधि
	पैतृसवाँ अनगर अध्ययन	20	अंतिम साधना विधि
1	बुद्ध कथित मार्ग कहने का संकल्प	21	उपसंहार-निर्वाण पथ का पथिक
2	संयत के लिए संगों-बंधनों का ज्ञान आवश्यक		छत्तीसवाँ जीवाजीव विभक्ति अध्ययन
3	हिंसादि आश्रवों का परित्याग	1	जीवाजीव-विभक्ति के ज्ञान से संयम साधना
4	साधु निवास के अयोग्य स्थान	2	लोक-अलोक का स्वरूप
5	अयोग्य स्थान में न ठहरने का कारण	3	जीव-अजीव की द्रव्य-क्षेत्र-काल और भाव द्वारा प्ररूपण
6	भिक्षु को श्मशान, शून्य गृह, वृक्ष के नीचे व परकृत (दूसरों के लिए बनाये गये) व प्रतिरिक्त (एकांत या खाली) स्थान में ठहरने का विधान	अजीव विभाग	
7	प्रासुक, अनाबाध, स्त्रियों के उपद्रव रहित स्थान में ठहरने का विधान	4	क. अजीव के दो भेद ख. अरूपी अजीव के दस भेद ग. रूपी अजीव के चार भेद

5-6	अरूपी अजीव निरूपण	की संख्या
7	धर्म, अधर्म, आकाश और काल का क्षेत्र	53
8	धर्म, अधर्म और आकाश अनादि अनंत	
9	क. काल-संतति अपेक्षा अनादि अनंत	54
	ख. आदेश अपेक्षा सादि-सान्त	संख्या
10	रूपी अजीव निरूपण	55-56
11-12	क. स्कंध और परमाणु का लक्षण	57-59
	ख. स्कंध और परमाणु का क्षेत्र	60-61
	ग. स्कंध और परमाणु की अपेक्षाकृत स्थिति	
13	रूपी अजीव द्रव्य की स्थिति	62
14	रूपी अजीव द्रव्य का अंतरकाल	63
15-46	रूपी अजीव द्रव्य के वर्ण, गंध, रस, स्पर्श और संस्थान	64
	की अपेक्षा परिणाम	65
जीव विभाग		
47	जीव विभाग का कथन	66
48	जीव के दो भेद	67
49	सिद्धों के अनेक भेद	68
50	सिद्धों की अवगाहना	69
51	एक समय में सिद्ध होने वाले जीवों की संख्या	70-77
52	एक समय में लिंग की अपेक्षा से सिद्ध होने वाले जीवों	78
		संख्या
	एक समय में अवगाहना की अपेक्षा से सिद्ध होने वाले जीवों की	
	जीवों की संख्या	
	एक समय में क्षेत्र की अपेक्षा से सिद्ध होने वाले जीवों की	
	संख्या	
	सिद्धों का वर्णन	
	ईषत् प्राग्भारा पृथ्वी अर्थात् सिद्ध स्थान का आयत विस्तार	
	क. सिद्ध स्थान की रचना	
	ख. लोकान्त का परिमाण	
	सिद्धों की अवगाहना	
	परम गति प्राप्त सिद्धों का स्थान	
	त्रिभाग न्यून सिद्धों की अवगाहना	
	एक की अपेक्षा-सादि अनन्त, बहुत की अपेक्षा-अनादि	
	अनन्त सिद्ध	
	जीवधन अरूपी व अतुल्य सुख प्राप्त	
	सिद्धि नामक श्रेष्ठ गति प्राप्त सिद्ध-लोक के एक देश में	
	संसारस्थ जीव के दो भेद	
	स्थावर जीवों के तीन भेद	
	पृथ्वीकाय के भेद-प्रभेद	
	सूक्ष्म पृथ्वीकाय की सम्पूर्ण लोक में व्यापकता	

79	प्रवाह की अपेक्षा पृथ्वीकाय की स्थिति	195-203	मनुष्यों का वर्णन
80	पृथ्वीकाय के जीवों की जघन्य-उत्कृष्ट स्थिति	204-247	चार प्रकार के देवों का वर्णन
81	पृथ्वीकायिक जीवों की काय स्थिति	248	उपसंहार
82	पृथ्वीकायिक जीवों का अंतर	249	नयों की अपेक्षा से जीव-अजीव का ज्ञान
83	वर्ण, गंध, रस, स्पर्श और संस्थान की अपेक्षा हजारों भेद	250	संलेखना का विधान
84-91	अष्काय और अष्कायिक जीवों का वर्णन	251	संलेखना के तीन भेद
92-106	वनस्पतिकाय और वनस्पतिकायिक जीवों का वर्णन	252-255	उत्कृष्ट संलेखना का वर्णन
107	त्रस जीवों के तीन भेद	256	अशुभ भावनाओं से दुर्गति और विराधना
108-116	तेजस्काय और तेजस्कायिक जीवों का वर्णन	257-259	दुर्लभ बोधि-सुलभ बोधि जीव
117-125	वायुकाय और वायुकायिक जीवों का वर्णन	260	जिन वचनों पर श्रद्धा करने का फल
126	उदार त्रस जीवों के चार भेद	261	जिन वचनों पर अश्रद्धा करने का फल
127-135	द्वीन्द्रिय जीवों का वर्णन	262	आलोचना सुनने के योग्य अधिकारी
136-144	त्रीन्द्रिय जीवों का वर्णन	263	कंदर्प (काम कथा) भावना वर्णन
145-154	चतुरिन्द्रिय जीवों का वर्णन	264	आभियोग भावना वर्णन
155	पंचेन्द्रिय त्रस जीवों का वर्णन	265	किल्बिषी भावना वर्णन
156-169	नैरयिक जीवों का वर्णन	266	आसुरी भावना वर्णन
170-171	पंचेन्द्रिय तिर्यचों का वर्णन	267	मोह भावना वर्णन
172-178	जलचर त्रस जीवों का वर्णन	268	उपसंहार-छत्तीस उत्तम अध्याओं के कथन के पश्चात् भ.
179-187	स्थलचर त्रस जीवों का वर्णन		महावीर को निर्वाण की प्राप्ति
188-194	खेचर त्रस जीवों का वर्णन		



णमो बुद्धानं

द्रव्यानुयोगमय नन्दीसूत्र

अध्ययन	1
मूल पाठ	700 श्लोक परिमाण
गद्य सूत्र	57
पद्य गाथा	97

20-21	चतुर्विंशति जिन वंदना
22-23	ग्यारह गणधर वंदना
24	जिन शासन स्तुति
25-50	युग प्रधान स्थविरावली
51	श्रोता की चौदह उपमाएं
52-54	तीन प्रकार की परिषद्

26 नन्दीसूत्र विषय-सूची

गाथा

1	अहंत्स्तुति
2-3	महावीर स्तुति
संघ के लिए विविध उपमाएं	
4	संघ को नगर की उपमा
5	संघ को चक्र की उपमा
6	संघ को रथ की उपमा
7-8	संघ को पद्मकमल की उपमा
9	संघ को चन्द्र की उपमा
10	संघ को सूर्य की उपमा
11	संघ को समुद्र की उपमा
12-18	संघ को महामेरु की उपमा
19	संघ स्तुति विषयक उपसंहार

सूत्र

1	ज्ञान के पाँच भेद
2	प्रकारान्तर से ज्ञान के दो भेद
3	प्रत्यक्ष ज्ञान के दो भेद
4	इन्द्रिय प्रत्यक्ष के पाँच भेद
5	नौ इन्द्रिय प्रत्यक्ष के तीन भेद
6	अवधि ज्ञान के दो भेद
7	भव-प्रत्ययिक अवधिज्ञान के अधिकारी-देव और नारक
8	क्षायोपशमिक अवधिज्ञान के अधिकारी-मनुष्य और तिर्यच-पंचेन्द्रिय
9	क्षायोपशमिक अवधिज्ञान के छह भेद
10	1. आनुगामिक अवधिज्ञान के दो भेद क. अंतगत अवधिज्ञान के तीन भेद ख. पुरतः अंतगत का स्वरूप

ग.	मार्गतः अंतगत का स्वरूप		ख.	मनःपर्यव ज्ञान-विषय विभाग की अपेक्षा से चार प्रकार का
घ.	पार्श्वगत अंतगत का स्वरूप		1.	मनःपर्यव ज्ञान का विषय-द्रव्य से
2.	मध्यगत अवधिज्ञान का स्वरूप		2.	मनःपर्यव ज्ञान का विषय-क्षेत्र से
अंतगत और मध्यगत में विशेषता			3.	मनःपर्यव ज्ञान का विषय-काल से
अनानुगामिक अवधिज्ञान का स्वरूप			4.	मनःपर्यव ज्ञान का विषय-भाव से
वर्धमान अवधिज्ञान का स्वरूप		38	मनःपर्यव ज्ञान का उपसंहार	
अवधिज्ञान का जघन्य क्षेत्र		39	क.	केवलज्ञान के दो भेद
अवधिज्ञान का उत्कृष्ट क्षेत्र			ख.	भवस्थ केवलज्ञान के दो भेद
अवधिज्ञान का मध्यम क्षेत्र			ग.	सयोगी भवस्थ केवलज्ञान के दो भेद
क्षेत्र और काल की अपेक्षा अवधिज्ञान का विस्तार			घ.	प्रकारान्तर से सयोगी भवस्थ केवलज्ञान के दो भेद
क्षेत्र और काल की वृद्धि का नियम			ङ.	अयोगी भवस्थ केवलज्ञान के दो भेद
काल और क्षेत्र की सूक्ष्मता			च.	प्रकारान्तर से अयोगी भवस्थ केवलज्ञान के दो भेद
हीयमान अवधिज्ञान का स्वरूप		40	सिद्ध केवलज्ञान के दो भेद	
प्रतिपाति अवधिज्ञान का स्वरूप		41	अनंतर सिद्ध केवलज्ञान के पन्द्रह भेद	
अप्रतिपाति अवधिज्ञान का स्वरूप		42	क.	परम्पर सिद्ध केवलज्ञान के अनेक भेद
द्रव्यादि क्रम से अवधिज्ञान का निरूपण			ख.	परम्पर सिद्ध केवलज्ञान के संक्षेप में चार भेद
अवधिज्ञान विषयक उपसंहार		43	केवलज्ञान का उपसंहार	
अबाह्य-बाह्य अवधिज्ञान		44	वचनयोग और श्रुत	
मनःपर्यव ज्ञान का अधिकारी		45	क.	परोक्ष ज्ञान के दो भेद
क.	मनःपर्यव ज्ञान के मुख्य दो भेद			

	ख. मति-श्रुत का साहचर्य	58	क. ईहा के छः भेद
	ग. मति-श्रुत की पूर्वापरता		ख. ईहा के पाँच समानार्थक नाम
46	क. मति-ज्ञान और मति अज्ञान के पात्र	59	क. अवाय के छः भेद
	ख. श्रुत-ज्ञान और श्रुत अज्ञान के पात्र		ख. अवाय के पाँच समानार्थक नाम
47	क. आभिनिबोधिक ज्ञान के दो भेद	60	क. धारणा के छः भेद
	ख. अश्रुत निश्चित आभिनिबोधिक ज्ञान के चार भेद		ख. धारणा के पाँच समानार्थक नाम
	ग. चार प्रकार की बुद्धि	61	अवग्रह, ईहा, अवाय और धारणा की काल मर्यादा
48	औत्पत्तिकी बुद्धि के लक्षण	62	व्यंजनावग्रह के प्रतिबोधक का दृष्टांत
49	औत्पत्तिकी बुद्धि की इगतालीस कथाएँ	63	मल्लक दृष्टांत का वर्णन
50	क. वैनयिकी बुद्धि के लक्षण	64	अवग्रह, ईहा, अवाय तथा धारणा के छह उदाहरण
	ख. वैनयिकी बुद्धि की पंद्रह कथाएँ	65	मति ज्ञान के चार भेद
51	क. कर्मजा बुद्धि के लक्षण	66	आभिनिबोधिक ज्ञान (मतिज्ञान) के संक्षेप में चार भेद
	ख. कर्मजा बुद्धि की बारह कथाएँ	67	अवग्रह आदि चारों की परिभाषा
52	क. पारिणामिकी बुद्धि की लक्षण	68	अवग्रह आदि चारों की स्थिति
	ख. पारिणामिकी बुद्धि की इक्कीस कथाएँ	69	शब्द, गंध, रस और स्पर्श प्राप्यकारी व रूप अप्राप्यकारी
53	श्रुतनिश्चित मतिज्ञान के चार भेद	70	सम श्रेणी और विषम श्रेणी में सुनने योग्य शब्द
54	अवग्रह के दो भेद	71	मति ज्ञान के समानार्थक नौ नाम
55	व्यंजनावग्रह के चार भेद	72	श्रुतज्ञान-परोक्ष के चौदह भेद
56	अर्थावग्रह के छः भेद	73	अक्षर श्रुत के तीन भेद व स्वरूप
57	अवग्रह के पाँच समानार्थक नाम	74	अनक्षर श्रुत के अनेक भेद

75	संज्ञी और असंज्ञी श्रुत के तीन भेद	81	कालिक श्रुत के अनेक भेद
	1. कालिकी उपदेश द्वारा संज्ञीश्रुत	82	अंग प्रविष्ट श्रुत के 12 भेद
	2. हेतु उपदेश द्वारा संज्ञीश्रुत	83	1. आचारांग सूत्र का स्वरूप
	3. दृष्टिवाद उपदेश द्वारा संज्ञीश्रुत	84	2. सूत्रकृतांग सूत्र का स्वरूप
76	क. सम्यक् श्रुत की व्याख्या	85	3. स्थानांग सूत्र का स्वरूप
	ख. द्वादशांग गणिपिटक के नाम	86	4. समवायांग सूत्र का स्वरूप
77	क. मिथ्या श्रुत की व्याख्या	87	5. व्याख्याप्रज्ञप्ति सूत्र का स्वरूप
	ख. मिथ्या ग्रन्थों के नाम	88	6. ज्ञातार्थकथांग सूत्र का स्वरूप
78	क. सादि, सान्त और अनादि- अनन्त श्रुत के चार भेद	89	7. उपासकदशांग सूत्र का स्वरूप
	ख. सादि सान्त और अनादि- अनन्त श्रुत के प्रकारान्तर	90	8. अंतकृतदशांग सूत्र का स्वरूप
	से दो भेद	91	9. अनुत्तरोपपातिकदशांग सूत्र का स्वरूप
	ग. ज्ञानावरण से अनावृत्त आत्म-प्रदेशों के आवृत्त होने	92	10. प्रश्नव्याकरण सूत्र का स्वरूप
	पर अजीव होने की आशंका	93	11. क. विपाकश्रुत का स्वरूप
	घ. मेघाच्छादित चन्द्र-सूर्य का उदाहरण		ख. दुःख विपाकश्रुत का स्वरूप
79	क. गमिक-अगमिक श्रुत	94	सुख विपाकश्रुत का स्वरूप
	ख. श्रुतज्ञान के प्रकारान्तर से दो भेद	95	विपाकश्रुत में परिमित वाचना-यावत्-संख्यात प्रतिपत्तियां
	ग. अंगबाह्य श्रुत के दो भेद	96	12. दृष्टिवाद के पाँच विभाग
	घ. आवश्यक के छः भेद	97	1. परिकर्म के सात विभाग
	क. आवश्यक व्यतिरिक्त के दो भेद	98	(1-1) सिद्ध श्रेणिका परिकर्म के चौदह प्रकार
80	ख. उत्कालिक श्रुत के अनेक भेद	99	(1-2) मनुष्य श्रेणिका परिकर्म के चौदह प्रकार
		100	(1-3) पृष्ठ श्रेणिका परिकर्म के ग्यारह प्रकार

जमो अणुओगधरणं शेरणं
द्रव्यानुयोग प्रधान अनुयोगद्वार सूत्र

101	(1-4) अवगाढ श्रेणिका परिकर्म के ग्यारह प्रकार	द्वार	13 (14)
102	(1-5) उपसंपादन श्रेणिका परिकर्म के ग्यारह प्रकार	उपलब्ध मूलपाठ	1899 श्लोक प्रमाण
103	(1-6) विप्रजहत श्रेणिका परिकर्म के ग्यारह प्रकार	गद्य सूत्र	152
104	(1-7) च्युताऽच्युत श्रेणिका परिकर्म के ग्यारह प्रकार	पद्य सूत्र	143
105	सूत्र के बावीस विभाग		1604 गाथाएं
106	पूर्व गत दृष्टिवाद के चौदह प्रकार		
107	क. अनुयोग के दो विभाग		

27 अनुयोग-द्वार विषय-सूची

108	ख. मूल प्रथमानुयोग का स्वरूप	1	पाँच प्रकार का ज्ञान
109	गण्डिकानुयोग का स्वरूप	2	श्रुतज्ञान के उद्देश आदि चार भेद
110	पूर्वों की चूलिका	3	अंग प्रविष्ट में उद्देश आदि की प्रवृत्ति
111	दृष्टिवाद का सौक्ष्म परिचय	4	कालिक-उत्कालिक श्रुत में उद्देश आदि, अनंगप्रविष्ट में उद्देश, समुद्देश आदि प्रवर्तित
112	द्वादशांग श्रुत की विराधना का कुफल	5	आवश्यक अनुयोग
113	द्वादशांग श्रुत गणिपिटक की आराधना का सुफल	6	आवश्यक के श्रुतस्कंध अध्ययन और उद्देशक
114	द्वादशांग गणिपिटक की नित्यता		
115	क. श्रुतज्ञान के चौदह भेद		
	ख. अष्टगुण युक्त को श्रुत का लाभ		
	ग. अष्टगुण का स्वरूप		
	घ. शास्त्र श्रवण करने वाले के सात कर्तव्य		
	ङ. व्याख्या करने की विधि		

1. आवश्यक निरूपण

7	आवश्यक और आवश्यक श्रुत, स्कंध व अध्ययन के निक्षेप कहने का संकल्प
8-9	आवश्यक के चार निक्षेप
10	नाम आवश्यक की व्याख्या और उदाहरण
11	स्थापना आवश्यक की व्याख्या और उदाहरण

12	नाम और स्थापना की विशेषता में अंतर	ख. आवश्यक की परिभाषा
13	द्रव्य आवश्यक के दो भेद	2. श्रुत निरूपण
14	आगम द्रव्य आवश्यक की व्याख्या	श्रुत के चार प्रकार
15	(1-5) आगम द्रव्य आवश्यक के सात नय	नाम श्रुत की व्याख्या और उदाहरण
16	नो आगम (भाव रहित) द्रव्य आवश्यक के तीन भेद	स्थापना श्रुत की व्याख्या और उदाहरण
17	(1) नो आगम ज्ञायक शरीर द्रव्यावश्यक की व्याख्या और उदाहरण	नाम और स्थापना की विशेषता में अंतर
18	(2) नो आगम भव्य शरीर द्रव्यावश्यक की व्याख्या और उदाहरण	द्रव्य श्रुत के दो भेद
19	(3) ज्ञायक शरीर-भव्य शरीर-व्यतिरिक्त द्रव्यावश्यक के तीन भेद	आगम से द्रव्य श्रुत की व्याख्या और उदाहरण
20	लौकिक द्रव्य आवश्यक की व्याख्या और उदाहरण	नो आगम द्रव्य श्रुत के तीन भेद
21	कुप्रावचनिक द्रव्य आवश्यक की व्याख्या और उदाहरण	ज्ञायक शरीर द्रव्य श्रुत की व्याख्या और उदाहरण
22	लौकोत्तरिक द्रव्य आवश्यक की व्याख्या और उदाहरण	भव्य शरीर द्रव्य श्रुत की व्याख्या और उदाहरण
23	भाव आवश्यक के दो भेद	ज्ञायक शरीर भव्य शरीर व्यतिरिक्त द्रव्य श्रुत की व्याख्या और उदाहरण
24	आगम भाव आवश्यक की व्याख्या	प्रकारान्तर से ज्ञायक शरीर भव्य शरीर व्यतिरिक्त द्रव्य श्रुत के पांच प्रकार
25	नो आगम भाव आवश्यक के तीन भेद	(1) अंडज द्रव्य श्रुत (सूत्र) का स्वरूप
26	लौकिक भाव आवश्यक की व्याख्या और उदाहरण	(2) बौडज द्रव्य श्रुत (सूत्र) का स्वरूप
27	कुप्रावचनिक भाव आवश्यक की व्याख्या और उदाहरण	(3) कीटज द्रव्य श्रुत (सूत्र) के पाँच भेद
28	लौकोत्तरिक भाव आवश्यक की व्याख्या और उदाहरण	(4) बालज द्रव्य श्रुत (सूत्र) के पाँच भेद
29	क. लौकोत्तर भाव आवश्यक के पर्यायवाची आठ नाम	(5) बल्कज द्रव्य श्रुत (सूत्र) का स्वरूप

46	भाव श्रुत के दो प्रकार	भेद
47	आगम भाव श्रुत की व्याख्या	सचित्त द्रव्य स्कंध के अनेक प्रकार
48	नो आगम भाव श्रुत के दो भेद	अचित्त द्रव्य स्कंध के अनेक प्रकार
49	नो आगम लौकिक भाव श्रुत (मिथ्याश्रुत) की व्याख्या	मिश्र द्रव्य स्कंध के अनेक प्रकार
50	और उदाहरण	ज्ञायक शरीर-भव्य शरीर व्यतिरिक्त द्रव्य स्कंध के प्रकारान्तर
51	नो आगम लोकोत्तर भाव श्रुत की व्याख्या (12 अंग आगम)	से तीन भेद
52	श्रुत के पर्यायवाची 10 नाम	(1) कृत्स्न (पूर्ण) द्रव्य स्कंध अनेक प्रकार का
53	स्कंध के चार प्रकार	(2) अकृत्स्न (अपूर्ण) द्रव्य स्कंध अनेक प्रकार का
54	नाम स्कंध का स्वरूप	(3) अनेक द्रव्य वाले स्कंध की व्याख्या
55	स्थापना स्कंध का स्वरूप और उदाहरण	भाव स्कंध के दो भेद
56	नाम- स्थापना की विशेषता का अन्तर	(1) आगम भाव स्कंध की व्याख्या
57	द्रव्य स्कंध के दो भेद	(2) नो आगम भाव स्कंध की व्याख्या
58	(1-5) आगम द्रव्य स्कंध की व्याख्या और भेद	स्कंध के पर्यायवाची बारह नाम
59	नो आगम द्रव्य स्कंध के तीन भेद	आवश्यक के छह अर्थाधिकारों के नाम
60	नो आगम ज्ञायक शरीर द्रव्य स्कंध की व्याख्या	आवश्यक के छह अध्ययन
61	नो आगम भव्य शरीर द्रव्य स्कंध की व्याख्या उदाहरण सहित	प्रथम सामायिक अध्ययन के चार अनुयोग-द्वार
		4. उपक्रम निरूपण
		उपक्रम के छह भेद
		नाम- स्थापना उपक्रम का स्वरूप
		क. द्रव्य उपक्रम के दो भेद

ख. ज्ञायक शरीर, भव्य शरीर व्यतिरिक्त द्रव्य उपक्रम के तीन भेद	95	द्रव्य आनुपूर्वी के दो भेद
क. सचित्त द्रव्य उपक्रम के तीन भेद	96	औपनिधिकी द्रव्यानुपूर्वी स्थाप्य है
ख. प्रत्येक द्रव्य उपक्रम के दो-दो भेद	97	अनौपनिधिकी द्रव्यानुपूर्वी के दो भेद
द्विपद उपक्रम की व्याख्या और उदाहरण	98	नैगम और व्यवहार नय से अनौपनिधिकी द्रव्यानुपूर्वी के पाँच भेद
चतुष्पद उपक्रम की व्याख्या और उदाहरण	99	नैगम-व्यवहार नय सम्मत अर्थपद प्ररूपणा द्रव्यानुपूर्वी की व्याख्या
अपद उपक्रम की व्याख्या और उदाहरण	100	अर्थपद प्ररूपणा का क्या प्रयोजन
अचित्त द्रव्य उपक्रम की व्याख्या और उदाहरण	101	नैगम-व्यवहार नय से अर्थपद प्ररूपणा के छब्बीस भंग
मिश्र द्रव्य उपक्रम की व्याख्या और उदाहरण	102	नैगम व्यवहार नय सम्मत भंग समुत्कीर्तनता का प्रयोजन
क्षेत्र द्रव्य उपक्रम की व्याख्या और उदाहरण	103	नैगम-व्यवहार नय से भंग कथन के आठ विकल्प
काल द्रव्य उपक्रम की व्याख्या और उदाहरण	104	(1-3) नैगम-व्यवहार नय से समवतार की व्याख्या
भाव उपक्रम के दो भेद	105	अनुगम के नौ भेद
आगम भाव उपक्रम की व्याख्या	106	क. नैगम-व्यवहार नय से आनुपूर्वी द्रव्यों की सत् पद प्ररूपणा
नो आगम भाव उपक्रम के दो भेद		ख. नैगम-व्यवहार नय से अनानुपूर्वी द्रव्यों की सत् पद प्ररूपणा
अप्रशस्त भावोपक्रम की व्याख्या		ग. नैगम-व्यवहार नय से अवक्तव्य द्रव्यों की सत् पद प्ररूपणा
प्रशस्त भावोपक्रम की व्याख्या		(1-3) नैगम-व्यवहार नय से आनुपूर्वी, अनानुपूर्वी और
प्रकारान्तर से उपक्रम के छह भेद		
5. आनुपूर्वी निरूपण		
आनुपूर्वी के दस भेद	107	
नाम- स्थापना आनुपूर्वी की व्याख्या		

अवक्तव्य द्रव्यों का प्रमाण	118	संग्रह नय सम्मत सप्तभंगी का कथन
108 (1-3) नैगम-व्यवहार नय से आनुपूर्वी, अनानुपूर्वी और अवक्तव्य द्रव्यों का क्षेत्र प्रमाण	119	भंग कथन का क्या प्रयोजन ?
109 (1-3) नैगम-व्यवहार नय से आनुपूर्वी, अनानुपूर्वी और अवक्तव्य द्रव्यों की क्षेत्र स्पर्शना	120	संग्रह नय सम्मत भंगोपदर्शना
110 (1-3) नैगम-व्यवहार नय से आनुपूर्वी, अनानुपूर्वी और अवक्तव्य द्रव्यों की क्षेत्र स्पर्शना	121	संग्रह नय से समवतार की व्याख्या
111 (1-3) नैगम-व्यवहार नय से आनुपूर्वी, अनानुपूर्वी और अवक्तव्य द्रव्यों की काल मर्यादा	122	संग्रह नय सम्मत अनुगम के आठ भेद
112 (1-3) नैगम-व्यवहार नय से आनुपूर्वी, अनानुपूर्वी और अवक्तव्य द्रव्यों का अंतर काल	123	संग्रह नय से सत्पद प्ररूपणा
113 (1-3) नैगम-व्यवहार नय से आनुपूर्वी, अनानुपूर्वी और अवक्तव्य द्रव्यों की छः भावों में विचारणा	124	(1) संग्रह नय सम्मत आनुपूर्वी, अनानुपूर्वी और अवक्तव्य द्रव्यों का प्रमाण
114 (1-3) नैगम-व्यवहार नय से आनुपूर्वी, अनानुपूर्वी और अवक्तव्य द्रव्यों के देश-प्रदेश और उभय की अपेक्षा	125	(2) संग्रह नय सम्मत आनुपूर्वी, अनानुपूर्वी और अवक्तव्य द्रव्यों का क्षेत्र प्रमाण
अल्प-बहुत्व	126	(3) संग्रह नय सम्मत आनुपूर्वी, अनानुपूर्वी और अवक्तव्य द्रव्यों की क्षेत्र स्पर्शना
संग्रह नय सम्मत अनौपधिकी द्रव्यानुपूर्वी के पाँच भेद	127	(4) संग्रह नय सम्मत आनुपूर्वी, अनानुपूर्वी और अवक्तव्य द्रव्यों की काल मर्यादा
संग्रह नय से आनुपूर्वी, अनानुपूर्वी और अवक्तव्य द्रव्यों व प्रदेशों की अर्थपद प्ररूपणा	128	(5) संग्रह नय सम्मत आनुपूर्वी, अनानुपूर्वी और अवक्तव्य द्रव्यों का अन्तर काल
अर्थ-पद प्ररूपणा का प्रयोजन	129	(6) संग्रह नय सम्मत आनुपूर्वी, अनानुपूर्वी और अवक्तव्य द्रव्यों की अपेक्षा भाग प्ररूपण
	130	(7) संग्रह नय सम्मत आनुपूर्वी, अनानुपूर्वी और अवक्तव्य द्रव्यों के छह भावों का प्ररूपण

131	औपनिधिकी द्रव्यानुपूर्वी के तीन भेद	149	(5) क. नैगम व्यवहार नय सम्मत क्षेत्रानुपूर्वी अनुगम-प्ररूपणा
132	पूर्वानुपूर्वी की व्याख्या		ख. अनुगम के नौ भेद
133	पश्चानुपूर्वी की व्याख्या		
134	अनानुपूर्वी की व्याख्या	150	(1) नैगम व्यवहार नय सम्मत आनुपूर्वी, अनानुपूर्वी और अवक्तव्य द्रव्यों की अनुगम संबंधी सत्पद प्ररूपणता
135	औपनिधिकी द्रव्यानुपूर्वी के प्रकारान्तर से तीन भेद		(2) नैगम व्यवहार नय सम्मत आनुपूर्वी, अनानुपूर्वी और अवक्तव्य द्रव्यों की अनुगम संबंधी द्रव्य प्ररूपणता
136	प्रकारान्तर से पूर्वानुपूर्वी का स्वरूप	151	(3) नैगम व्यवहार नय सम्मत आनुपूर्वी, अनानुपूर्वी और अवक्तव्य द्रव्यों की अनुगमन्तरवर्ती क्षेत्र प्ररूपणता
137	प्रकारान्तर से पश्चानुपूर्वी का स्वरूप		(4) नैगम व्यवहार नय सम्मत आनुपूर्वी, अनानुपूर्वी और अवक्तव्य द्रव्यों की अनुगमगत स्पर्शना प्ररूपणता
138	प्रकारान्तर से अनानुपूर्वी का स्वरूप	152	(5) नैगम व्यवहार नय सम्मत आनुपूर्वी, अनानुपूर्वी और अवक्तव्य द्रव्यों की अनुगमगत काल प्ररूपणता
139	क्षेत्रानुपूर्वी के दो भेद		(6) नैगम व्यवहार नय सम्मत आनुपूर्वी, अनानुपूर्वी और अवक्तव्य द्रव्यों की अनुगमगत अन्तर प्ररूपणता
140	औपनिधिकी क्षेत्रानुपूर्वी स्थाय है	153	(7) नैगम व्यवहार नय सम्मत आनुपूर्वी, अनानुपूर्वी और अवक्तव्य द्रव्यों की अनुगमगत भाग प्ररूपणता
141	अनौपनिधिकी क्षेत्रानुपूर्वी के दो भेद		(8) नैगम व्यवहार नय सम्मत आनुपूर्वी, अनानुपूर्वी और अवक्तव्य द्रव्यों की अनुगमगत भाव प्ररूपणता
142	नैगम-व्यवहार नय सम्मत अनौपनिधिकी क्षेत्रानुपूर्वी के पाँच भेद	154	(9) नैगम व्यवहार नय सम्मत आनुपूर्वी, अनानुपूर्वी और अवक्तव्य द्रव्यों की अनुगमगत अल्पबहुत्व प्ररूपणा
143-144	(1) नैगम व्यवहार नय सम्मत अर्थपद प्ररूपणा और प्रयोजन	155	
145-146	(2) नैगम व्यवहार नय सम्मत भंगसमुत्कीर्तनता और प्रयोजन	156	
147	(3) नैगम व्यवहार नय सम्मत भंगोपदर्शनता	157	
148	(4) नैगम व्यवहार नय सम्मत क्षेत्रानुपूर्वी की समवतार से प्ररूपणा	158	

159	संग्रह नय सम्मत अनौपनिधिकी क्षेत्रानुपूर्वी प्ररूपणा	193	(3) नैगम व्यवहार नय सम्मत क्षेत्र प्रमाण प्ररूपणा
160-163	औपनिधिकी क्षेत्रानुपूर्वी के तीन भेद (तीन लोक)	194	(4) नैगम व्यवहार नय सम्मत स्पर्शना प्ररूपणा
164-167	अधोलोक क्षेत्रानुपूर्वी के तीन भेद (सात नरक)	195	(5) नैगम व्यवहार नय सम्मत काल प्ररूपणा
168-171	तिर्यलोक क्षेत्रानुपूर्वी के तीन भेद (द्वीप-समुद्र)	196	(6) नैगम व्यवहार नय सम्मत अन्तर प्ररूपणा
172-175	ऊर्ध्वलोक क्षेत्रानुपूर्वी के तीन भेद (सौधर्म आदि)	197	(7) नैगम व्यवहार नय सम्मत भाग प्ररूपणा
176-179	औपनिधिकी क्षेत्रानुपूर्वी के प्रकारान्तर से तीन भेद	198	(8-9) नैगम व्यवहार नय सम्मत भाव व अल्पबहुत्व प्ररूपणा
6. कालानुपूर्वी निरूपण			
180-182	कालानुपूर्वी के दो भेद	199	संग्रह नय सम्मत अनौपनिधिकी कालानुपूर्वी के पांच भेद
183	नैगम-व्यवहार नय सम्मत अनौपनिधिकी कालानुपूर्वी के पाँच भेद	200	संग्रह नय सम्मत अनौपनिधिकी कालानुपूर्वी अर्थपद प्ररूपणा आदि
184-185	(1) नैगम व्यवहार नय सम्मत अर्थपद प्ररूपणा और प्रयोजनता	201	(1-4) औपनिधिकी कालानुपूर्वी के तीन भेद
186-187	(2) नैगम व्यवहार नय सम्मत भंगसमुत्कीर्तनता और प्रयोजनता	202	(1-4) औपनिधिकी कालानुपूर्वी के प्रकारान्तर से तीन भेद
188	(3) नैगम व्यवहार नय सम्मत भंगोपदर्शनता का स्वरूप	203	(1-4) उत्कीर्तनानुपूर्वी के तीन भेद (चौबीस तीर्थकर)
189	(4) नैगम व्यवहार नय सम्मत समवतार का स्वरूप	204	(1-4) गणना-आनुपूर्वी के तीन भेद (एक से दस अरब)
190	(5) नैगम व्यवहार नय सम्मत अनुगम के नौ भेद		
191	(1) नैगम व्यवहार नय सम्मत सत्पद प्ररूपणा	205	(1-4) संस्थान-आनुपूर्वी के तीन भेद (समचतुरस्र आदि संस्थान)
192	(2) नैगम व्यवहार नय सम्मत द्रव्य प्ररूपणा		

206	(1-4) समाचारी-आनुपूर्वी के तीन भेद (इच्छाकार आदि दस समाचारी)	223 (घ)	स्पर्श नाम के आठ भेद
		224 (ङ)	संस्थान नाम के पाँच भेद
207	(1-4) भाव-आनुपूर्वी के तीन भेद (औदयिक आदि छह भाव)	225 (3)	पर्याय नाम के अनेक भेद
		226	त्रिनाम की व्याख्या का दूसरा प्रकार उदाहरण सहित
		227	(4) चार नाम के चार भेद
208	नाम-आनुपूर्वी के दस भेद	228	आगम निष्पन्न नाम का स्वरूप
209	(1) एक नाम की व्याख्या	229	लोप निष्पन्न नाम का स्वरूप
210	(2) दो नाम के दो भेद	230	प्रकृति निष्पन्न नाम का स्वरूप
211	एकाक्षरिक द्विनाम का स्वरूप	231	विकार निष्पन्न नाम का स्वरूप
212	अनेकाक्षरिक द्विनाम का स्वरूप	232	(5) पाँच नाम के पाँच भेद
213	दो नाम प्रकारान्तर से दो भेद	233	(6) छः नाम के छः भेद
214	जीव नाम द्विनाम का स्वरूप	234	(1) औदयिक भाव के दो भेद
215	अजीव नाम द्विनाम का स्वरूप	235	औदयिक भाव का स्वरूप
216	(1-19) विशेषित-अविशेषित द्विनाम का विस्तृत वर्णन	236	उदय निष्पन्न औदयिक भाव के दो भेद
217	(3) तीन नाम आनुपूर्वी के तीन भेद	237	(1) जीवोदय निष्पन्न औदयिक भाव के अनेक प्रकार
218 (1)	द्रव्य नाम के छह भेद	238	(2) अजीवोदय निष्पन्न औदयिक भाव के अनेक प्रकार
219 (2)	गुण नाम के पाँच भेद	239	औपशमिक भाव के दो भेद
220 (2क)	वर्ण नाम के पाँच भेद	240	(1) उपशम भाव का स्वरूप
221 (ख)	गंध नाम के दो भेद	241	(2) उपशम निष्पन्न औपशमिक भाव के अनेक प्रकार
222 (ग)	रस नाम के पाँच भेद	242	क्षायिक भाव के दो प्रकार

नामाधिकार

243	(1) क्षय-क्षायिक भाव का स्वरूप	260	(1) क. सात नाम का स्वरूप व उसके भेद
244	(2) क्षय-निष्पन्न क्षायिक भाव के अनेक प्रकार		ख. सात प्रकार के स्वर
245	क्षायोपशमिक भाव के दो प्रकार		(2) सात स्वरों के सात स्वर (उच्चारण) स्थान
246	(1) क्षयोपशम भाव का स्वरूप		(3) जीव निश्चित सप्त स्वरों का स्वरूप
247	(2) क्षयोपशम-निष्पन्न क्षायोपशमिक भाव के अनेक प्रकार		(4) अजीव निश्चित सप्त स्वरों का स्वरूप
248	पारिणामिक भाव के दो प्रकार		(5) सप्त स्वरों के स्वर लक्षण फल
249	(1) सादि-पारिणामिक भाव के अनेक प्रकार		(6) सप्त स्वरों के तीन ग्राम
250	(1) अनादि-पारिणामिक भाव का स्वरूप और प्रकार		(7) षड्ज ग्राम की सात मूर्च्छनाएं
251	सान्निपातिक भाव का स्वरूप		(8) मध्यम ग्राम की सात मूर्च्छनाएं
252	द्विकसंयोगज-सान्निपातिक भाव के दस भंग		(9) गान्धार ग्राम की सात मूर्च्छनाएं
253	(1-10) औदयिक-औपशमिक भाव आदि द्विकसंयोगी दस भंगों का स्वरूप		(10-अ) सप्त स्वरोत्पत्ति विषयक जिज्ञासाएं व समाधान
254	त्रिकसंयोगज-सान्निपातिक भाव के दस भंग		(10-आ) गीत गायक की योग्यता
255	(1-10) त्रिकसंयोगज सान्निपातिक भाव के दस भंगों का स्वरूप		(10-इ) गीत के छह दोष
256	चतुःसंयोगज सान्निपातिक भाव के पांच भंग		(10-ई) गीत के आठ गुण
257 (1-5)	चतुःसंयोगज सान्निपातिक भाव के पांच भंगों का स्वरूप		(10-उ) प्रकारान्तर से गीत के आठ गुण
258	पंच संयोगज सान्निपातिक भाव एक प्रकार का		(10-ऊ) सप्त स्वर सींभर की व्याख्या
259	औदयिक-औपशमिक-क्षायिक-क्षायोपशमिक-पारिणामिक भाव निष्पन्न सान्निपातिक भाव का स्वरूप		(10-ए) गेय पदों के आठ गुण
			(10-ऐ) गीत के वृत्त छन्दों के तीन प्रकार
			(10-ओ) गीत की भाषाओं के दो प्रकार
			(10-औ) गीत गायिका के प्रकार

261	(10-अं) सप्त स्वर-सप्त नाम का उपसंहार	266	(3) आदान पद-निष्पन्न नाम का स्वरूप
	(1) क. आठ नाम का स्वरूप व उसके आठ भेद	267	(4) प्रतिपक्ष पद-निष्पन्न नाम का स्वरूप
	ख. आठ प्रकार की वचन विभक्तियां	268	(5) प्रधान पद-निष्पन्न नाम का स्वरूप
262	(2) आठ विभक्तियों की व्याख्या एवं उनके उदाहरण	269	(6) अनादि सिद्धांत- निष्पन्न नाम का स्वरूप
	क. नौ नाम का स्वरूप व उसके नौ भेद	270	(7) नाम-निष्पन्न नाम का स्वरूप
	ख. काव्य के नौ रसों के नाम	271	(8) अवयव-निष्पन्न नाम का स्वरूप
	(1) वीर रस का उदाहरण सहित लक्षण	272	(9) संयोग-निष्पन्न नाम का स्वरूप व उसके चार भेद
	(2) शृंगार रस का उदाहरण सहित लक्षण	273	(1 क) द्रव्य संयोग से निष्पन्न नाम का स्वरूप व उसके तीन भेद
	(3) अद्भुत रस का उदाहरण सहित लक्षण	274	(1 ख) सचित्त द्रव्य संयोग निष्पन्न नाम का स्वरूप
	(4) रौद्र रस का उदाहरण सहित लक्षण	275	(1 ग) अचित्त द्रव्य संयोग से निष्पन्न नाम का स्वरूप
	(5) ब्रीडनक रस का उदाहरण सहित लक्षण	276	(1 घ) मिश्र द्रव्य संयोग से निष्पन्न नाम का स्वरूप
	(6) बीभत्स रस का उदाहरण सहित लक्षण	277	(2) क्षेत्र द्रव्य संयोग से निष्पन्न नाम का स्वरूप
	(7) हास्य रस का उदाहरण सहित लक्षण	278	(3) काल द्रव्य संयोग से निष्पन्न नाम का स्वरूप
263	(8) करुण रस का उदाहरण सहित लक्षण	279	(4) भाव द्रव्य संयोग से निष्पन्न नाम का स्वरूप व उसके दो भेद
	(9) प्रशांत रस का उदाहरण सहित लक्षण		
	नव रस-रूप नव नाम की उपसंहार गाथा	280	(4 क) प्रशस्त भाव संयोग से निष्पन्न नाम का स्वरूप
	दस नाम का स्वरूप व उसके दस भेद	281	(4 ख) अप्रशस्त भाव संयोग से निष्पन्न नाम का स्वरूप
	(1) गौण गुण निष्पन्न नाम का स्वरूप	282	(10) प्रमाण निष्पन्न नाम का स्वरूप व उसके चार भेद
	(2) नौगौण नाम का स्वरूप	283	(10-1) नाम प्रमाण निष्पन्न नाम का स्वरूप
264			
265			

284	(10-2) स्थापना प्रमाण निष्पन्न नाम के सात प्रकार	303	(2 क) कर्म नाम तद्धित भाव प्रमाण का स्वरूप
285	क. नक्षत्र-स्थापित नाम का स्वरूप (28 नक्षत्र)	304	(2 ख) शिल्प नाम तद्धित भाव प्रमाण का स्वरूप
286	ख. देव-स्थापित नाम का स्वरूप (28 देवताओं के नाम)	305	(2 ग) श्लोक नाम तद्धित भाव प्रमाण का स्वरूप
		306	(2 घ) संयोग नाम तद्धित भाव प्रमाण का स्वरूप
287	ग. कुल-स्थापित नाम का स्वरूप	307	(2 ङ) समीप नाम तद्धित भाव प्रमाण का स्वरूप
288	घ. पाषंड-स्थापित नाम का स्वरूप	308	(2 च) संयुक्त नाम तद्धित भाव प्रमाण का स्वरूप
289	ङ. गण-स्थापित नाम का स्वरूप	309	(2 छ) ऐश्वर्य नाम तद्धित भाव प्रमाण का स्वरूप
290	च. जीवित हेतु नाम का स्वरूप	310	(2 ज) अपत्य तद्धित भाव प्रमाण का स्वरूप
291	छ. अभिप्रायिक नाम का स्वरूप	311	(3) धातुज नाम भाव प्रमाण का स्वरूप
292	(10-3) द्रव्य प्रमाण निष्पन्न नाम का स्वरूप	312	(4) निरुक्तिज नाम भाव प्रमाण का स्वरूप
293	(10-4) भाव प्रमाण निष्पन्न नाम के चार प्रकार	प्रमाणाधिकार	
294	(1) सामासिक भाव प्रमाण निष्पन्न नाम के सात प्रकार	313	प्रमाण निरूपण के चार भेद
295	(1 क) द्वन्द्व समास भाव प्रमाण का स्वरूप	314	(1) द्रव्य प्रमाण के दो भेद
296	(1 ख) बहुव्रीहि समास भाव प्रमाण का स्वरूप	315	क. प्रदेश निष्पन्न द्रव्य प्रमाण का स्वरूप
297	(1 ग) कर्म धारय समास भाव प्रमाण का स्वरूप	316	ख. विभाग निष्पन्न द्रव्य प्रमाण के पांच भेद
298	(1 घ) द्विगु समास भाव प्रमाण का स्वरूप	317	(1) मान प्रमाण द्रव्य के दो भेद
299	(1 ङ) तत्पुरुष समास भाव प्रमाण का स्वरूप	318-319	क. धान्यमान प्रमाण का स्वरूप व प्रयोजन
300	(1 च) अव्ययी भाव समास भाव प्रमाण का स्वरूप	320-321	ख. रसमान प्रमाण का स्वरूप व प्रयोजन
301	(1 छ) एक शेष समास भाव प्रमाण का स्वरूप	322-323	(2) उन्मान प्रमाण का स्वरूप व प्रयोजन
302	(2) तद्धित भाव प्रमाण नाम के आठ प्रकार	324-325	(3) अवमान प्रमाण का स्वरूप व प्रयोजन

326-327	(4)	गणिममान प्रमाण का स्वरूप व प्रयोजन	343	(1-5) व्यावहारिक परमाणु संबंधी विविध प्रश्नोत्तर
328-329	(5)	प्रतिमान प्रमाण का स्वरूप व प्रयोजन	344-345	व्यावहारिक परमाणु के कार्य
330	(2)	क्षेत्र प्रमाण के दो भेद	346	उत्सेधांगुल प्रमाण का प्रयोजन (चारों गतियों के जीवों के शरीर का माप)
331	प्रदेश निष्पन्न क्षेत्र प्रमाण का स्वरूप			
332	विभाग निष्पन्न क्षेत्र प्रमाण का स्वरूप		347	(1-6) नारकों के शरीर की अवगाहना
333	अंगुल के तीन प्रकार		348	(1-2) भवनपति देवों के शरीर की अवगाहना
334	क. आत्मांगुल का स्वरूप		349	(1-2) पृथ्वीकाय आदि पांच स्थावर जीवों की शरीर-अवगाहना
	ख. मान-उन्मान और प्रमाण से युक्त व शुभ लक्षणों वाला उत्तम पुरुष		350	(1-3) द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय व चतुरिन्द्रिय जीवों की शरीर-अवगाहना
	ग. उत्तम पुरुष 108 अंगुल ऊंचे, अधम पुरुष छियानवें अंगुल ऊंचे व मध्यम पुरुष 104 अंगुल ऊंचे		351	(1-5) क. जलचर, स्थलचर, उरपरिसर्प, भुजपरिसर्प, खेचर आदि पंचेन्द्रिय तिर्यच जीवों की शरीर-अवगाहना
	घ. मध्यम पुरुष शारीरिक सहनशीलता से हीन व उत्तम पुरुषों के दास			
335	आत्मांगुल से पाद, कुक्षि, धनुष व योजन आदि का माप			ख. अवगाहना संबंधी संग्रहणी गाथा
336	आत्मांगुल प्रमाण का प्रयोजन (माप प्रत्येक वस्तु का)		352	(1-3) सम्मूर्च्छिम, गर्भज मनुष्यों की शरीर-अवगाहना
337	आत्मांगुल प्रमाण के तीन भेद		353-354	वाणव्यांतर व ज्योतिष्क देवों की शरीर-अवगाहना
338	सूच्यंगुल, प्रतरांगुल व घनांगुल का अल्पबहुत्व		355	(1-5) वैमानिक देवों की शरीर-अवगाहना
339	उत्सेधांगुल के अनेक प्रकार		356-357	उत्सेधांगुल के तीन भेद और उनका अल्पबहुत्व
340-342	परमाणु का स्वरूप व उसके दो भेद		358-359	प्रमाणंगुल का स्वरूप
			360	प्रमाणंगुल का प्रयोजन

361-362	प्रमाणगुल के तीन भेद व उनका अल्पबहुत्व	388	(1-3) मनुष्यों की स्थिति
363-365	काल प्रमाण प्ररूपण	389	वाणव्यंतर देवों की स्थिति
366	उदाहरण सहित समय निरूपण	390	(1-5) चन्द्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र व तारे ज्योतिष्क देवों की स्थिति
367	समय समूह निष्पन्न काल विभाग		
368	औपमिक काल प्रमाण के दो भेद	391	(1) वैमानिक देव-देवियों की स्थिति
369	पल्योपम के तीन भेद		(2-7) सौधर्म आदि अच्युत पर्यंत कल्पों की स्थिति
370-371	उद्धार पल्योपम के दो भेद		(8-9) ग्रैवेयक और अनुत्तर देवों की स्थिति
372-373	व्यावहारिक उद्धार पल्योपम का स्वरूप व प्रयोजन	392-395	क्षेत्र पल्योपम का निरूपण और प्रयोजन
374-375	सूक्ष्म उद्धार पल्योपम का स्वरूप व प्रयोजन	396-397	सूक्ष्म क्षेत्र पल्योपम-सागरोपम का स्वरूप
376	कितने द्वीप-समुद्र उद्धार प्रमाण से प्रतिपादित ?	398	सूक्ष्म क्षेत्र पल्योपम-सागरोपम का प्रयोजन
377-382	अद्धा पल्योपम-सागरोपम का स्वरूप व प्रयोजन	399	द्रव्य के दो भेद
383	(1-4) नैरयिक जीवों की स्थिति (आयु)	400	अजीव द्रव्यों के दो भेद
384	(1-3) भवनपति देवों की स्थिति	401	अरूपी अजीव द्रव्य के दस भेद
385	(1-5) पृथ्वीकायिक आदि पांच स्थावर जीवों की स्थिति	402	रूपी अजीव द्रव्य के चार भेद
386	(1-3) द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय जीवों की स्थिति	403	अनंत अजीव द्रव्य
387	(1) पंचेन्द्रिय तिर्यच जीवों की स्थिति	404	जीव द्रव्यों का वर्णन
	(2) जलचर पंचेन्द्रिय तिर्यचों की स्थिति	405	शरीर के पांच प्रकार
	(3) स्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यचों की स्थिति	406-412	चौबीस दंडकवर्ती जीवों की शरीर प्ररूपणा
	(4) खेचर पंचेन्द्रिय तिर्यचों की स्थिति	413	पांच शरीरों का संख्या परिणाम
	(5) स्थिति संबंधी उपसंहार की संग्रहणी गाथा	414	बद्ध मुक्त वैक्रिय शरीरों की संख्या

415	बद्ध मुक्त आहारक शरीरों का परिमाण	431	ख. गंध गुण प्रमाण के दो भेद
416	बद्ध मुक्त तेजस् शरीरों का परिमाण	432	ग. रस गुण प्रमाण के पांच भेद
417	बद्ध मुक्त कार्मण शरीरों का परिमाण	433	घ. स्पर्श गुण प्रमाण के आठ भेद
418	(1-4) नारकों में बद्ध मुक्त पांच शरीरों की प्ररूपणा	434	ङ. संस्थान गुण प्रमाण के पांच भेद
419	(1-5) भवनवासियों के बद्ध मुक्त शरीर	435	जीव गुण प्रमाण के तीन भेद
420	(1-2) पृथ्वी-अप्-तेजस्कायिक जीवों के बद्ध मुक्त शरीर	436	ज्ञान गुण प्रमाण के चार भेद
	(3) वायुकायिकों के बद्ध मुक्त शरीर	437	प्रत्यक्ष ज्ञान गुण प्रमाण के दो भेद
	(4) वनस्पतिकायिकों के बद्ध मुक्त शरीर	438	क. इन्द्रिय प्रत्यक्ष ज्ञान गुण के पांच भेद
421	(1-2) द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुर्न्द्रिय जीवों के बद्ध मुक्त शरीर	439	ख. नोइन्द्रिय प्रत्यक्ष ज्ञान गुण के तीन भेद
	(1-2) पंचेन्द्रिय तिर्यचयोनिकों के बद्ध मुक्त शरीर	440	अनुमान प्रमाण के तीन भेद
	(1-4) मनुष्यों के बद्ध मुक्त शरीर	441	क. पूर्ववत् अनुमान प्रमाण का स्वरूप
422	(1-4) वाणव्यंतर देवों के बद्ध मुक्त शरीर	442-447	ख. शेषवत् अनुमान प्रमाण के पांच भेद व उनकी व्याख्या
423	(1-4) ज्योतिष्क देवों के बद्ध मुक्त शरीर	448-450	ग. दृष्टसाधर्म्यवत् अनुमान प्रमाण के दो भेद व उनकी व्याख्या
424	(1-4) वैमानिक देवों के बद्ध मुक्त शरीर	451-453	अतीत-वर्तमान व अनागत काल प्रमाण का स्वरूप
425	भाव प्रमाण के तीन भेद	454-457	प्रतिकूल विशेषदृष्ट साधर्म्यवत् अनुमान प्रमाण के उदाहरण
426	(1) गुण प्रमाण के दो भेद	458	उपमान प्रमाण के दो भेद
427	अजीव गुण प्रमाण के पांच भेद	459-462	क. साधर्म्योपनीत उपमान प्रमाण के तीन भेद व उनकी व्याख्या
428	क. वर्ण गुण प्रमाण के पांच भेद	463-466	ख. वैधर्म्योपनीत उपमान प्रमाण के तीन भेद व उनकी व्याख्या

	व्याख्या		द्रव्य संख्या के दो भेद
467	आगम प्रमाण के दो भेद	481	आगम द्रव्य संख्या का स्वरूप
468	क. लौकिक आगम का स्वरूप	483	(1-5) आगम द्रव्य संख्या की नय दृष्टियाँ
469	ख. लोकोत्तर आगम का स्वरूप	484	नो आगम द्रव्य संख्या के तीन भेद
470	प्रकारान्तर से आगम के तीन प्रकार	485	(1) उदाहरण सहित ज्ञायक शरीर द्रव्य संख्या का स्वरूप
471	दर्शन गुण प्रमाण के चार भेद व उनका स्वरूप	486	(2) उदाहरण सहित भव्य शरीर द्रव्य संख्या का स्वरूप
472	क. चारित्र गुण प्रमाण के पांच भेद	487-490	ज्ञायक शरीर भव्य शरीर व्यक्तिर्क्त द्रव्य शंख के तीन भेद
	ख. सामायिक चारित्र गुण प्रमाण के दो भेद	491	एक भविक आदि शंख विषयक नय दृष्टियाँ
	ग. छेदोपस्थापनीय चारित्र गुण प्रमाण के दो भेद	492	(1) औपम्य संख्या के चार भेद
	घ. परिहार विशुद्धिक चारित्र गुण प्रमाण के दो भेद		(2) सद्-सद् रूप औपम्य संख्या
	ङ. सूक्ष्म संपराय चारित्र गुण प्रमाण के दो भेद		(3) सद्-असद् रूप औपम्य संख्या
	च. यथाख्यात चारित्र गुण प्रमाण के दो भेद व प्रकारान्तर		(4) असद्-सद् रूप औपम्य संख्या
	से दो भेद		(5) असद्-असद् रूप औपम्य संख्या
473	नयप्रमाण के स्वरूप के तीन दृष्टांत	493	परिमाण संख्या के दो भेद
474	(1) प्रस्थक दृष्टांत द्वारा नय निरूपण	494	(1) कालिक श्रुत परिमाण संख्या के अनेक भेद
475	(2) वसति दृष्टांत द्वारा नय निरूपण	495	(2) दृष्टिवाद श्रुत परिमाण संख्या के अनेक भेद
476	(3) प्रदेश दृष्टांत द्वारा नय निरूपण	496	ज्ञान संख्या का स्वरूप
477	संख्या प्रमाण के आठ भेद	497	क. गणना संख्या का स्वरूप
478-479	नाम व स्थापना संख्या का स्वरूप	498	ख. संख्यात के तीन भेद
480	नाम व स्थापना में अंतर	499	ग. असंख्यात के तीन भेद

500	घ. परित्तासंख्यात के तीन भेद	523	(2) परसमय वक्तव्यता का स्वरूप
501	ङ. युक्ता संख्यात के तीन भेद	524	(3) स्वसमय-परसमय वक्तव्यता का स्वरूप
502	च. असंख्याता-संख्यात के तीन भेद	525	(1-3) वक्तव्यता के विषय में नय दृष्टियाँ
503	छ. अनंत के तीन भेद	8. अर्थाधिकार निरूपण	
504	ज. परित्तानंत के तीन भेद	526	अर्थाधिकार का स्वरूप
505	झ. युक्तानंत के तीन भेद	9. समवतार निरूपण	
506	ञ. अनंतानंत के दो भेद	527	समवतार के छह भेद
507	जघन्य संख्यात कितने परिमाण का	528-530	(1-2) नाम स्थापना द्रव्य समवतार का निरूपण
508	उत्कृष्ट संख्यात कितने परिमाण का	531	(3) क्षेत्र समवतार का स्वरूप
509-510	जघन्य-उत्कृष्ट परित्ता संख्यात का प्रमाण	532	(4) काल समवतार का स्वरूप
511-512	जघन्य-उत्कृष्ट युक्ता संख्यात का प्रमाण	533	(5) भाव समवतार का स्वरूप
513-514	जघन्य-उत्कृष्ट असंख्याता-संख्यात का प्रमाण	निक्षेपाधिकार	
515-516	जघन्य-उत्कृष्ट परित्तानंत का प्रमाण	534	निक्षेप के तीन भेद
517-518	जघन्य-उत्कृष्ट युक्तानंत का प्रमाण	535	क. ओघनिष्पन्न निक्षेप के चार भेद
519	जघन्य अनंतानंत का प्रमाण	536	ख. अध्ययन निक्षेप के चार भेद
520	भाव संख्या का क्या स्वरूप ?	537	ग-घ. नाम-स्थापना-अध्ययन निक्षेप का स्वरूप
7. वक्तव्यता निरूपण		538-543	द्रव्य अध्ययन के भेद-प्रभेद व व्याख्या
521	वक्तव्यता के तीन भेद	544-546	भाव अध्ययन के भेद-प्रभेद व व्याख्या
522	(1) स्वसमय वक्तव्यता का स्वरूप	547	क. ओघ निष्पन्न निक्षेप अक्षीण का स्वरूप

548	ख-ग. नाम-स्थापना अक्षीण पूर्ववत्	599	(अ) नौ आगमतः भाव सामायिक का स्वरूप
549-554	घ. द्रव्य अक्षीण के भेद-प्रभेद व व्याख्या		(आ) सामायिक के अधिकारी की संज्ञाएं
555-557	ङ. भाव अक्षीण के भेद-प्रभेद व व्याख्या		(इ) श्रमण की बारह उपमाएं
	10. आय निरूपण		(ई) प्रकारान्तर से श्रमण का निर्वचन
558	आय के चार भेद	600	सूत्र आलापक निष्पन्न निक्षेप का स्वरूप
559	क-ख. नाम-स्थापना आय का वर्णन पूर्ववत्		13. अनुगम निरूपण
560-574	ग. द्रव्य आय के भेद-प्रभेद व व्याख्या	601	अनुगम के दो भेद
575-579	घ. भाव आय के भेद-प्रभेद व व्याख्या	602	निर्युक्ति अनुगम के तीन भेद
	11. क्षपणा निरूपण	603	निक्षेप निर्युक्ति अनुगम का स्वरूप
580	क्षपणा के चार भेद	604	उपोद्घात निर्युक्ति अनुगम का दो गाथाओं के माध्यम से
581	क-ख. नाम-स्थापना क्षपणा का वर्णन पूर्ववत्		26 भेद
582-587	ग. द्रव्य क्षपणा के भेद-प्रभेद व व्याख्या	605	सूत्र स्पर्शिक निर्युक्ति अनुगम का स्वरूप (32 दोष)
588-592	घ. भाव क्षपणा के भेद-प्रभेद व व्याख्या		14. नय निरूपण
	12. सामायिक निरूपण		(अ) नय के सात भेद,
593	नाम निष्पन्न निक्षेप के चार भेद	606	(आ) नैगम आदि सात नयों के लक्षण
594	क-ख. नाम सामायिक-स्थापना सामायिक का वर्णन पूर्ववत्		(इ) नय वर्णन की प्ररूपणा से लाभ
			(ई) उपसंहार- अनुयोगद्वार में 1604 गाथाएं, 2000 अनुष्टुप छंद-परिमाण
595-596	ग. द्रव्य सामायिक के भेद-प्रभेद व व्याख्या		(उ) अक्षर बिन्दु मात्रा- ये सब सर्व दुःखों का नाश करने वाली
597	घ. भाव सामायिक के दो भेद		
598	आगमतः भाव सामायिक का स्वरूप		

णमो सव्वन्नूणं

चार छेद सूत्र

चरणानुयोगमय दशाश्रुत स्कंध सूत्र

आचार दशा

दशा

10

उपलब्ध मूल पाठ

1830 अनुष्टुप श्लोक प्रमाण

गद्य सूत्र

216

पद्य सूत्र

52

28 दशाश्रुतस्कंध विषय-सूची

प्रथमा दशा

1 उत्थानिका

2-21 स्थविरोक्त बीस असमाधिस्थान

द्वितीया दशा

1 उत्थानिका

2-35 स्थविरोक्त इक्कीस सबल दोष

तृतीया दशा

1-35 स्थविरोक्त तेतीस आशातनाएं

चतुर्थी दशा

1 उत्थानिका

2-9 स्थविरोक्त आठ गणि संपदा

10-14 क. शिष्य के प्रति आचार्य के कर्तव्य

ख. विनय शिक्षा के चार भेद

15-19 क. आचार्य व गण के प्रति शिष्य के कर्तव्य व उसके चार भेद

ख. उपकरण उत्पादन के चार भेद

ग. सहायता के चार भेद

घ. वर्ण संज्वलनता के चार भेद

इ. गणभार वहन के चार भेद

पंचमी दशा

1 वाणिज्य ग्राम, द्युतिपलाश चैत्य, जितशत्रु राजा, धारिणी रानी, भ. महावीर का समवसरण

2-11 स्थविरोक्त दस चित्त समाधि स्थान

12-28 दस चित्त समाधि स्थान की गाथाएं

षष्ठी दशा

1 उत्थानिका

2-12 स्थविरोक्त ग्यारह उपासक प्रतिमा

सप्तमी दशा

1 उत्थानिका

2 बारह भिक्षु-प्रतिमाएं

3	प्रतिमा आराधनकाल में उपसर्ग	24	त्रैमासिकी भिक्षुप्रतिमा
4	मासिकी भिक्षु प्रतिमा	25	चातुर्मासिकी भिक्षुप्रतिमा
5	प्रतिमाधारी के भिक्षुकाल	26	पंचमासिकी भिक्षुप्रतिमा
6	प्रतिमाधारी की गोचरीचर्या	27	षण्मासिकी भिक्षुप्रतिमा
7	प्रतिमाधारी का वसतिवास-काल	28	सप्तमासिकी भिक्षुप्रतिमा
8	प्रतिमाधारी की कल्पनीय भाषाएं	29	प्रथम सप्त-अहोरात्रिकी भिक्षुप्रतिमा
9	प्रतिमाधारी के कल्पनीय उपाश्रय	30	द्वितीय सप्त-अहोरात्रिकी भिक्षुप्रतिमा
10	प्रतिमाधारी के कल्पनीय संस्कारक	31	तृतीय सप्त-अहोरात्रिकी भिक्षुप्रतिमा
11	प्रतिमाधारी को स्त्री-पुरुष का उपसर्ग	32	अहोरात्रिकी भिक्षुप्रतिमा
12	प्रतिमाधारी को अग्नि का उपसर्ग	32	एकरात्रिकी भिक्षुप्रतिमा
13	प्रतिमाधारी को टूठा आदि निकालने का निषेध	34	उपसंहार
14	प्रतिमाधारी को प्राणी आदि निकालने का निषेध		
15	सूर्यास्त होने पर विहार का निषेध		
16	सचित्त पृथ्वी के निकट निद्रा लेने का निषेध		
17	मलावरोध का निषेध		
18	सचित्त रजयुक्त शरीर से गोचरी जाने का निषेध	1-40	
19	हस्तादि धोने का निषेध		
20	दुष्ट अश्वादि का उपद्रव होने पर भयभीत होने का निषेध		
21	सर्दी और गर्मी सहन करने का विधान		
22	भिक्षुप्रतिमाओं का सम्यग् आराधन		
23	द्विमासिकी भिक्षुप्रतिमा	1-2	

अष्टमी पर्यषणा दशा

भ. महावीर के पाँच कल्याणक

नवमी दशा

चंपानगरी, पूर्ण भद्र चैत्य, कौणिक राजा, धारिणी देवी,

भ. महावीर का समवसरण

तीस महामोहनीय स्थानों के वर्णन की गाथाएं

उपसंहार की गाथाएं

दशमी आयती दशा

राजगृहनगर, गुणशील चैत्य

3-4	श्रेणिक राजा भंभसार चेलना रानी				प्रथमो वायणाऱियाणं
5	भ. महावीर का पदार्पण				चरणानुयोगमय बृहत्कल्प सूत्र
6	श्रेणिक का सपरिवार भ. महावीर के दर्शन के लिये जाना				उद्देशक 6
7	श्रेणिक और चेलणा को देखकर निर्ग्रन्थ-निर्गर्थियों के मन में जो संकल्प पैदा हुए उनका वर्णन				अधिकार 81
8	निर्गन्थ का मनुष्य सम्बन्धी भोगों के लिए निदान करना				उपलब्ध मूल पाठ 473 श्लोक प्रमाण
9	निर्गन्थी का मनुष्य सम्बन्धी भोगों के लिए निदान करना				सूत्र संख्या 218
10	निर्गन्थ का स्त्रीत्व के लिए निदान करना				29 बृहत्कल्प सूत्र विषय-सूची
11	निर्गन्थी का पुरुषत्व के लिए निदान करना				प्रथम उद्देशक
12	निर्गन्थ-निर्ग्रन्थी द्वारा परदेवी-परिचारणा का निदान करना		1-5		क. साधु-साध्वी के ताल (केला, आम, अनार आदि फल) प्रलंब-ग्रहण करने का विधि-निषेध
13	निर्गन्थ-निर्ग्रन्थी द्वारा स्वदेवी-परिचारणा का निदान करना				ख. अखण्ड व बड़े-बड़े टुकड़े साध्वियों को लेने का निषेध
14	निर्गन्थ-निर्ग्रन्थी द्वारा सहज दिव्यभोग का निदान करना				क. ग्रामादि में साधु-साध्वी के रहने की कल्प मर्यादा
15	श्रमणोपासक होने के लिए निदान करना		6-9		ख. बड़े नगर के उपनगरों में एक-एक मास ठहर सकते हैं
16	श्रमण होने के लिए निदान करना				ग. उसी उपनगर में शिक्षा ग्रहण करे, अन्य उपनगर में नहीं
17	निदान रहित की मुक्ति				ग्रामादि में साधु-साध्वी को एक साथ ठहरने का विधि-निषेध
18	क. निदान रहित संयम का फल		10-11		आपणगह (बाजार) आदि में साधु-साध्वियों के रहने का
	ख. नव निदान कर्मों का वर्णन				12-13
	ग. निदान करने वालों की गति				
	घ. निदान रहित संयम का फल				
	ङ. निर्ग्रन्थ-निर्गर्थियों की आलोचना-यावत्-आराधना				

विधि-निषेध	42-43	रात्रि में आहारादि की गवेषणा का निषेध एवं अपवाद विधान
14-15	42-43	रात्रि में आहारादि की गवेषणा का निषेध एवं अपवाद विधान
16-17	44-45	रात्रि में गमनागमन का निषेध
18	46-47	रात्रि में स्थंडिल एवं स्वाध्याय भूमि में अकेले जाने का निषेध
19	48	आर्य क्षेत्र में विचरण करने का विधान
20	1-3	द्वितीय उद्देशक
21	4	धान्ययुक्त उपाश्रय में रहने के विधि-निषेध
22-23	5	सुरायुक्त मकान में रहने का विधि-निषेध व प्रायश्चित्त
24	6-7	जलयुक्त उपाश्रय में रहने का विधि-निषेध व प्रायश्चित्त
25-29	8-10	अग्नि या दीपकयुक्त उपाश्रय में रहने का विधि-निषेध व प्रायश्चित्त
30-31	11-12	खाद्यपदार्थयुक्त युक्त मकान में रहने का विधि-निषेध व प्रायश्चित्त
32-33	13	साधु-साध्वी के धर्मशाला आदि में ठहरने का विधि-निषेध
34	14-18	अनेक स्वामियों वाले मकान की आज्ञा लेने का विधि-निषेध
35-36	19-22	संसृष्ट-असंसृष्ट शय्यातर पिंडग्रहण के विधि-निषेध
37		शय्यातर के घर आये या भेजे गये आहार के ग्रहण का विधि-निषेध
38-41		

२३-२४	शय्यातार के यहां अंशयुक्त आहार ग्रहण का विधि-निषेध	१८	यथारत्नाधिक द्वारा वस्त्र ग्रहण करने का विधान
२५-२८	शय्यातार के पूज्यजनों को दिये गये आहार के ग्रहण करने का विधि-निषेध	१९	यथारत्नाधिक के शय्या-संस्कारक ग्रहण करने का विधान
२९	निर्ग्रन्थ-निर्ग्रन्थी के लिए पांच प्रकार के कल्पनीय वस्त्र	२०	यथारत्नाधिक कृतिकर्म (वंदना) करने का विधान
३०	निर्ग्रन्थ-निर्ग्रन्थी के लिए पांच प्रकार के कल्पनीय रजोहरण	२१	गृहस्थ के घर में ठहरने आदि का निषेध
		२२	गृहस्थ के घर में मर्यादित वार्ता का विधान
		२३	गृहस्थ के घर में मर्यादित धर्मकथा करने का विधान
		२४	गृहस्थ का शय्या-संस्कारक आदि लौटाकर ही विहार करने का विधान
१-२	निर्ग्रन्थ-निर्ग्रन्थी को परस्पर उपाश्रय में बैठने-खड़े रहने आदि का निषेध	२५-२६	शय्यातार का शय्या-संस्कारक आदि जहां से लिया हो वहीं व्यवस्थित करके लौटाने का विधान
३-६	साधु-साध्वी को चर्म खण्ड ग्रहण करने के विधि-निषेध	२७	खोये हुए शय्या-संस्कारक के अन्वेषण करने का विधान
७-१०	क. साधु-साध्वी को वस्त्र ग्रहण करने के विधि-निषेध	२८-२९	आगन्तुक श्रमणों को पूर्वाज्ञा में रहने का विधान
११-१२	ख. बहुमूल्य वस्त्र व अखण्ड थान लेने का विधि-निषेध	३०-३१	स्वामी रहित घर की पूर्वाज्ञा एवं पुनः आज्ञा का विधान
	साधु-साध्वी को अवग्रहान्तक और अवग्रहपट्टक (लंगोट, जाँघिया) धारण करने के विधि-निषेध	३२	पूर्वाज्ञा से मार्ग आदि में ठहरने का विधान
१३	साध्वी को अपनी निश्रा से वस्त्र ग्रहण करने का निषेध	३३	सेना के समीपवर्ती क्षेत्र में गोचरी जाने का विधान एवं रात रहने का प्रायश्चित्त
१४-१५	दीक्षा के समय ग्रहण करने योग्य उपधि व माप का विधान		
१६-१७	क. प्रथम समवसरण (चातुर्मास पूर्व) व द्वितीय समवसरण (चातुर्मास पश्चात्) में वस्त्र ग्रहण करने का विधि-निषेध	३४	अवग्रह क्षेत्र अढाई कोस अर्थात् एक दिशा में ७ किमी. व दोनों ओर की दिशा में १४ किमी. तक जाने का विधान

चतुर्थ उद्देशक

ख. चातुर्मास में वस्त्र ग्रहण करने का निषेध	१	अनुद्घातिक (जिस दोष की विशेष तप से शुद्धि की जा सके) प्रायश्चित्त के स्थान

2	पाराश्रिक (सबसे उत्कृष्ट) प्रायश्चित्त के स्थान	33-36	घास से ढकी हुई छत वाले उपाश्रय में रहने के विधि-निषेध
3	अनवस्थाप्य प्रायश्चित्त के स्थान		
4-9	दीक्षा आदि के अयोग्य तीन प्रकार के नपुंसक		पंचम उद्देशक
10-11	वाचना देने के योग्यायोग्य के लक्षण	1-4	विकुर्वित दिव्य शरीर के स्पर्श से उत्पन्न मैथुनभाव का प्रायश्चित्त
12-13	शिक्षा-प्राप्ति के योग्यायोग्य के लक्षण		
14-15	रत्नान को मैथुनभाव का प्रायश्चित्त	5	कलहकृत आगन्तुक भिक्षु के प्रति प्रायश्चित्त आदि के कर्तव्य
16	प्रथम प्रहर के आहार को चतुर्थ प्रहर में रखने का निषेध		
17	दो कोस से आगे आहार ले जाने का निषेध	6-9	रात्रि भोजन के अतिचार का विवेक एवं प्रायश्चित्त विधान
18	अनाभोग (असावधानी) से ग्रहण किये अनेषणीय (अचित्त) आहार की विधि	10	उद्गाल संबंधी (अधिक खा लेने व पी लेने पर) विवेक एवं प्रायश्चित्त विधान
19	औद्देशिक आहार के कल्याकल्य का विधान	11	सचित्त बीज, रज, जीव आदि से संसक्त आहार के खाने एवं परठने का विधान
20-22	श्रुतग्रहण के लिये अन्य गण में जाने का विधि-निषेध		
23-25	सांभोगिक (अपनी मंडली में उठना-बैठना, खाना-पीना आदि) व्यवहार के लिये अन्य गण में जाने की विधि	12	सचित्त जल बिन्दु मिले आहार को खाने एवं परठने का विधान
26-28	आचार्य आदि को वाचना देने के लिये अन्य गण में जाने का विधि-निषेध	13-14	पशु-पक्षी के स्पर्शादि से उत्पन्न मैथुनभाव के प्रायश्चित्त
29	काल धर्म प्राप्त भिक्षु के शरीर को परठने की विधि	15-17	साध्वी को एकाकी गमन व चातुर्मास करने का निषेध
30	कलह करने वाले भिक्षु से संबंधित विधि-निषेध	18-19	साध्वी को वस्त्र-पात्र रहित होने का निषेध
31	परिहार कल्प स्थित भिक्षु की वैयावृत्य करने का विधान	20-32	साध्वी को प्रतिज्ञाबद्ध होकर आसनादि करने का निषेध
32	महानदी पार करने के विधि-निषेध	33-34	आकुंचनपट्टक (वस्त्र की कुर्सी) के धारण करने का विधि-निषेध

अवलंबनयुक्त (आराम कुर्सी) के धारण करने का विधि-निषेध		णमो अभयदयाणां	
35-36	निषेध		
37-38	सविषाण पीठ (चौकी, पाटा) आदि लेने के विधि-निषेध	उद्देशक	10
39-40	सवृन्त तुम्ब पात्र के विधि-निषेध	उपलब्ध मूल पाठ	373 अनुष्टुप श्लोक प्रमाण
41-42	सवृन्त पात्र केसरिका के विधि-निषेध	सूत्र संख्या	281
43-44	दण्डयुक्त पादग्रौहण के विधि-निषेध		
45	परस्पर मोक (मूत्र) आदान-प्रदान के विधि-निषेध		
46-48	आहार-औषध परिवासित (रात्रि में) रखने के विधि-निषेध		
49	पारिहारिक भिक्षु का दोष सेवन एवं प्रार्थ्यश्चित्त	प्रथम उद्देशक	
50	पुलाक-भक्त (सरस आहार) ग्रहण हो जाने पर गोचरी जाने का विधि-निषेध	1-18	कपट सहित तथा कपट रहित आलोचक को प्रार्थ्यश्चित्त देने की विधि
1	छह प्रकार के अकल्प्य (निषिद्ध) वचन प्रयोग का निषेध	19	पारिहारिक और अपारिहारिकों का निषद्यादि व्यवहार
2	असत्य आक्षेपकर्ता को प्रार्थ्यश्चित्त का विधान	20-22	परिहार कल्प स्थित भिक्षु का वैयावृत्य (सेवा) के लिए विहार
3-6	साधु-साध्वी के परस्पर कण्टक, कांच, आँख में रज, जीव व पैर में कांटा आदि निकालने का विधान	23-25	अकेले विचरण करने वाले का गण में पुनरागमन
7-18	साधु द्वारा साध्वी को अवलम्बन (सहारा) देने का व परिचर्या करने का विधान	26-30	पार्श्वस्थ-विहारी आदि का गण में पुनरागमन
19	संयम नाशक छह स्थान	31	अन्य लिंग ग्रहण के बाद गण में पुनरागमन
20	छह प्रकार की कल्प स्थिति (आचार मर्यादा)	32	संयम छोड़कर जाने वाले का गण में पुनरागमन पर नई दीक्षा
		33	(1-7) आलोचना करने का क्रम

व्यव. उ.2, सूत्र 1-29, उ.3, सूत्र 1-29	29 व्यवहार सूत्र विषय-सूची	व्यव. उ.4, सूत्र 1-32, उ.5, सूत्र 1-10	६३३
द्वितीय उद्देशक			
1-5	विचरने वाले सार्धर्मिकों के परिहार तप का विधान	18-22	संयम त्यागकर पुनः दीक्षा लेने वालों को पद देने का विधि-निषेध
6-17	रुग्ण भिक्षुओं आदि को गण से निकालने का निषेध व अग्लान भाव से सेवा करने का सूचन	23-29	झूठ-कपट-प्रपंच आदि करने वालों को पद देने का निषेध
18-22	अनवस्थाप्य और पाराचिक भिक्षु की उपासना	1-10	चतुर्थ उद्देशक आचार्यादि के साथ रहने वाले निर्ग्रन्थों की संख्या
23	अकृत्य सेवन का आक्षेप और उसके निर्णय करने की विधि	11-12	अग्रणी साधु के काल करने पर शेष साधुओं का कर्तव्य
24	संयम त्यागने का संकल्प एवं पुनरागमन	13	ग्लान आचार्यादि के द्वारा पद देने का निर्देश
25	एक पक्षीय भिक्षु को पद देने का विधान	14	संयम त्यागकर जाने वाले आचार्यादि के द्वारा पद देने का निर्देश
26-29	पारिहारिक और अपारिहारिकों के परस्पर आहार संबंधी व्यवहार	15-17	उपस्थान (बड़ी दीक्षा) के विधान
तृतीय उद्देशक			
1-2	गण धारण करने का विधि-निषेध	18	अन्य गण में भिक्षु का विवेक
3-8	आचार्य, उपाध्याय, गणावच्छेदक आदि पद देने के विधि-निषेध	19	अभिनिचारिका (गोपाल बस्ती) में (दूध घी के लिए) जाने का विधि-निषेध
9-10	परिस्थितिवश अल्प दीक्षा पर्याय वाले को आचार्य-उपाध्याय पद देने का विधान	20-23	चर्या प्रविष्ट एवं चर्या निवृत्त भिक्षु के कर्तव्य
11-12	निर्ग्रन्थ-निर्ग्रन्थी को आचार्य-उपाध्याय आदि के नेतृत्व बिना रहने का निषेध	24-25	शैक्ष और रत्नाधिक का व्यवहार
13-17	अब्रह्मसेवी को पद देने के विधि-निषेध	26-32	रत्नाधिक को अग्रणी मानकर विचरने का विधान
पंचम उद्देशक			
		1-10	प्रवर्तिनी आदि के साथ विचरने वाली निर्ग्रन्थियों की संख्या

				सप्तम उद्देशक
11-12	अग्रणी साध्वी के काल करने पर साध्वी का कर्तव्य			
13-14	अग्रणी प्रवर्तिनी के द्वारा पद देने का निर्देश	1-2		अन्य गण से आयी साध्वी के रखने में परस्पर पृच्छा
15-16	आचार प्रकल्प (आचारांग व निशीथ सूत्र) विस्तृत को पद देने का विधि-निषेध	3-4		सम्बन्ध विच्छेद करने सम्बन्धी विधि-निषेध
		5-8		परस्पर प्रवर्जित करने आदि के विधि-निषेध
17-18	स्थविर के लिए आचार-प्रकल्प के पुनरावर्तन करने का विधान	9-10		दूरस्थ क्षेत्र में रहे हुए गुरु आदि के निर्देश का विधि-निषेध
19	परस्पर साधु-साध्वी के आलोचना करने के विधि-निषेध	11-12		कलह उपशमन के विधि-निषेध
20	परस्पर साधु-साध्वी की सेवा करने का विधि-निषेध	13-14		व्यतिकृष्ट काल (अस्वाध्याय काल) में निर्ग्रन्थ-निर्ग्रन्थियों के लिए स्वाध्याय का विधि-निषेध
21	सर्पदंश चिकित्सा के विधि-निषेध			
		15-16		निर्ग्रन्थ-निर्ग्रन्थी को स्वाध्याय करने का विधि-निषेध
1	स्वजन-परिजन-गृह में गोचरी जाने का विधि-निषेध	17		शारीरिक अस्वाध्याय होने पर स्वाध्याय का विधि-निषेध
2-3	आचार्य-गणावच्छेदक आदि के अतिशय (विशेषताएं)	18-19		निर्ग्रन्थी के लिए आचार्य-उपाध्याय की नियुक्ति की आवश्यकता
4-5	अगीतार्थों के रहने का विधि-निषेध और प्रायश्चित्त			
6-7	अकेले भिक्षु के रहने का विधि-निषेध	20		श्रमण के मृत शरीर को परठने की और उपकरणों को ग्रहण करने विधि
8-9	शुक्र पुद्गल निकालने का प्रायश्चित्त सूत्र			
10-11	अन्य गण से आये हुए को गण में सम्मिलित करने का निषेध	21-22		परिहरणीय शय्यातर का निर्णय
		23		आज्ञा ग्रहण करने की विधि
		24		मार्ग में बैठना हो तो भी आज्ञा लेना आवश्यक

व्यव. उ.7, सूत्र 25-26, उ.8, सूत्र 1-17	29 व्यवहार सूत्र विषय-सूची	व्यव. उ.9, सूत्र 1-46, उ.10, सूत्र 1-37	६३५
25-26	राज्य परिवर्तन में आज्ञा ग्रहण करने का विधान	43-44	दत्ति (अखण्ड धार से दिया जाने वाला) आहार परिमाण
	अष्टम उद्देशक		
1	शयन स्थान के ग्रहण की विधि	45	तीन प्रकार का खाद्य आहार
2-4	शय्या-संस्तारक व पाट आदि के लाने की विधि	46	अवगृहीत आहार के प्रकार
5	एकाकी स्थविर के देखरेख में भण्डोपकरण छोड़ना और गोचरी जाने की विधि	1-2	दशम उद्देशक दो प्रकार की चन्द्र प्रतिमाएं
6-9	शय्या-संस्तारक के लिए पुनः आज्ञा लेने का विधान	3	पांच प्रकार के व्यवहार
10-12	शय्या-संस्तारक, मकान पाट आदि ग्रहण करने की विधि	4-8	क. विविध प्रकार से गण की वैयावृत्य करने वाले
13-15	पतित या विस्मृत उपकरण मिले तो पूछताछ करके देना, अन्यथा परठ देना	9-11	ख. मान कषाय की पांच चौभंगियां
16	अतिरिक्त पात्र लाने का विधान	12-15	धर्म दृढ़ता की चौभंगियां
17	आहार की ऊनोदरी का विविध परिमाण	16	आचार्य एवं शिष्यों के प्रकार
	नवम उद्देशक	17	स्थविर के तीन प्रकार
1-16	शय्यातर के पाहुणे, नौकर एवं ज्ञातिजन के निमित्त से बने आहार के लेने का विधि-निषेध	18-19	बड़ी दीक्षा देने का काल प्रमाण
17-36	शय्यातर के भागीदारी वाली विक्रयशालाओं से आहार लाने का विधि-निषेध	20-21	बालक-बालिका को नव वर्ष पूर्व दीक्षा, बड़ी दीक्षा देने का विधि-निषेध
37-40	सप्तसप्ततिका -यावत्- दसदसमिका भिक्षु-प्रतिमाएं	22-36	बालक (16 वर्ष से कम उम्र वाले) को आचार प्रकल्प (आचारांग व निशीथ) के अध्ययन कराने का निषेध
41-42	मोक-प्रतिमा (मूत्र सेवन) विधान		दीक्षा पर्याय के साथ आगमों का अध्ययन क्रमशः कराने का विधान
		37	वैयावृत्य के दस प्रकार एवं महानिर्जरा



णमो आचारपकण्यधरणं धेराणं

चरणानुयोगमय निशीथ सूत्र

उद्देशक

20

उपलब्ध मूलपाठ

512 अनुष्टुप श्लोक प्रमाण

गद्य सूत्र

1405

31 निशीथसूत्र विषय-सूची

प्रथम उद्देशक

1	वेद मोहोदय से प्रादुर्भाव हस्त कर्म का प्रायश्चित्त	31-34	सूई, कैची आदि अपने लिए याचना करके लावे व दूसरे को उपयोग के लिए देवे तो प्रायश्चित्त
2-8	अंगादान का संचालन, संबाधन, अभ्यंगन, उबटन, प्रक्षालन, त्वचा अपवर्तन और जिघ्रण क्रियाएँ करने का प्रायश्चित्त	35-38	सूई, कैची आदि अविवेक पूर्वक देवे तो प्रायश्चित्त
9	अंगादान को अचित्त छिद्र में प्रविष्ट कर शुक्र पुद्गल निकालने का प्रायश्चित्त	39	स्वयं योग्य होते हुए भी अन्यतीर्थिक या गृहस्थ से पात्र-परिष्कार कराने का प्रायश्चित्त
10	सचित्त पदार्थ संधने का प्रायश्चित्त	40	स्वयं योग्य होते हुए भी अन्यतीर्थिक या गृहस्थ से दंडादि परिष्कार कराने का प्रायश्चित्त
11	अन्यतीर्थिक या गृहस्थ से मार्ग आदि निर्माण कार्य करवाने का प्रायश्चित्त	41-46	पात्र संधान बंधन प्रायश्चित्त
12	अन्यतीर्थिक या गृहस्थ से पानी की नाली निर्माण कार्य करवाने का प्रायश्चित्त	47-56	वस्त्र संधान बंधन प्रायश्चित्त
13	अन्यतीर्थिक या गृहस्थ से छींका या उसका ढक्कन निर्माण कार्य करवाने का प्रायश्चित्त	57	अन्यतीर्थिक या गृहस्थ से गृहधूम उतरवाने व अनुमोदन करने का प्रायश्चित्त

सूती या ऊनी डोरियां निर्माण कार्य करवाने का प्रायश्चित्त

अन्यतीर्थिक या गृहस्थ से सूई, कैची, नखकटर, कर्ण

शोधनक का उत्तरकरण करवाने का प्रायश्चित्त

सूई, कैची आदि निष्प्रयोजन याचना का प्रायश्चित्त

सूई, कैची आदि अविधि याचना का प्रायश्चित्त

सूई, कैची आदि जिस कार्य से लाये उससे भिन्न कार्य करने का प्रायश्चित्त

सूई, कैची आदि अपने लिए याचना करके लावे व दूसरे को उपयोग के लिए देवे तो प्रायश्चित्त

सूई, कैची आदि अविवेक पूर्वक देवे तो प्रायश्चित्त

स्वयं योग्य होते हुए भी अन्यतीर्थिक या गृहस्थ से पात्र-परिष्कार कराने का प्रायश्चित्त

स्वयं योग्य होते हुए भी अन्यतीर्थिक या गृहस्थ से दंडादि परिष्कार कराने का प्रायश्चित्त

पात्र संधान बंधन प्रायश्चित्त

वस्त्र संधान बंधन प्रायश्चित्त

अन्यतीर्थिक या गृहस्थ से गृहधूम उतरवाने व अनुमोदन करने का प्रायश्चित्त

58	सदोष आहार, उपधिव शैथ्या का उपयोग करने का प्रायश्चित्त	22	कृत्स्न अखण्ड चर्म धारण करने का प्रायश्चित्त
1-8	काष्ठ दंडयुक्त पादप्रोक्षण ग्रहण करने आदि का प्रायश्चित्त	23	कृत्स्न बहुमूल्य वस्त्र धारण करने का प्रायश्चित्त
9	अचित्त पदार्थयुक्त इत्रादि सूंघने का प्रायश्चित्त	24	अभिन्न अखण्ड वस्त्र धारण करने का प्रायश्चित्त
10	पदमार्ग पुल आदि बनाने का प्रायश्चित्त	25	तुम्बा, काष्ठ व मिट्टी पात्र परिकर्म करना व करवाने का प्रायश्चित्त
11	पानी निकालने की नाली आदि बनाने का प्रायश्चित्त	26	दण्ड, लाठी आदि के परिकर्म करने व अनुमोदन करने का प्रायश्चित्त
12	छोँका या उसका ढक्कन आदि बनाने का प्रायश्चित्त	27-31	स्वजन आदि गवेषित पात्र ग्रहण करने का प्रायश्चित्त
13	सूत की या रस्सी की चिलमिलिका (मच्छरदानी) बनाने का प्रायश्चित्त	32	नित्य अग्र पिण्ड आहार भोगने का प्रायश्चित्त
14-17	सूई, कैची, नखेछेदनक व कणछेदनक परिष्कार का प्रायश्चित्त	33-36	दान पिण्ड ग्रहण करने का प्रायश्चित्त
18	अल्प कठोर वचन बोलने का अर्थात् प्रथम महाव्रत के अतिचार का प्रायश्चित्त	37	एक स्थान पर नित्य निवास करने का प्रायश्चित्त
19	अल्प मृषावाद बोलना अर्थात् द्वितीय महाव्रत के अतिचार का प्रायश्चित्त	38	भिक्षा काल के पूर्व-पश्चात् दाता का संस्तव (प्रशंसा) करने का प्रायश्चित्त
20	अल्प अदत्त ग्रहण करना अर्थात् तृतीय महाव्रत के अतिचार का प्रायश्चित्त	39	भिक्षा काल के पहले परिचित घरों में आहार के लिए प्रवेश करने का प्रायश्चित्त
21	अल्प अचित्त या उष्ण जल से हाथ, पैर, कान, आँख, दाँत, नख या मुँह को धोने का प्रायश्चित्त	40	अन्यतीर्थिक या गृहस्थ आदि के साथ भिक्षाचर्यादि गमन करने का प्रायश्चित्त

41	अन्यतीर्थिक या गृहस्थ आदि के साथ स्वाध्याय भूमि में गमन करने का प्रायश्चित्त	52	रखता है तो प्रायश्चित्त
42	अन्यतीर्थिक या गृहस्थ आदि के साथ ग्रामानुग्राम विहार करने का प्रायश्चित्त	53	वर्षा से भीगते हुए शय्या संस्कारक को न हटाने का प्रायश्चित्त
43	मनोज्ञ जल पीने और अमनोज्ञ जल परठने का प्रायश्चित्त	54	शय्या संस्कारक बिना आज्ञा अन्यत्र ले जाने का प्रायश्चित्त
44	मनोज्ञ भोजन खाने और अमनोज्ञ भोजन परठने का प्रायश्चित्त	55	शय्या संस्कारक विधिवत् न लौटाने का प्रायश्चित्त
45	खाने के बाद बचा हुआ आहार सांभोगिक को पूछे बिना परठने का प्रायश्चित्त	56	शय्या संस्कारक पूर्व स्थिति में किए बिना या संभलाए बिना विहार करने का प्रायश्चित्त
46	शय्यातर पिण्ड ग्रहण करने का व अनुमोदन करने का प्रायश्चित्त	57	खोये गये शय्या संस्कारक की गवेषणा नहीं करने का प्रायश्चित्त
47	शय्यातर पिण्ड भोगने व भोगने वाले का अनुमोदन करने का प्रायश्चित्त	1-12	स्वल्प उपधि की भी प्रतिलेखना करने में उपेक्षा करे तो प्रायश्चित्त
48	शय्यातर के घर की जानकारी के बिना या पूछे बिना भिक्षा जाने का प्रायश्चित्त	13	धर्मशाला आदि में अन्यतीर्थिक आदि से अविधि याचना प्रायश्चित्त
49	शय्यातर की नेश्राय से आहार ग्रहण करने का प्रायश्चित्त	14	गृहस्वामी के मना करने पर भी पुनः उसके घर आहार आदि के लिए जाने का प्रायश्चित्त
50	शेषकाल के शय्या संस्कारक को पर्युषण के पश्चात् तक रखता है तो प्रायश्चित्त	15	सामूहिक भोज में आहार के लिए जाने का प्रायश्चित्त
51	चातुर्मास के शय्या संस्कारक को चौमासे के पश्चात् तक		तीन घर या तीन कमरे के अंतर से अधिक दूर का लाया हुआ आहार लेने का प्रायश्चित्त

16-21	पैरों का आमर्जन, मर्दन, अभ्यंगन, उबटन, प्रक्षालन व मेहंदी आदि से रंगने का प्रायश्चित्त	41	नख परिकर्म प्रायश्चित्त
22-27	काया का प्रमार्जन आदि करने का प्रायश्चित्त	42	जंघा के बाल काटने या संवारने का प्रायश्चित्त
28-33	व्रण का प्रमार्जन आदि करने का प्रायश्चित्त	43	गुह्य स्थान के बाल काटने या संवारने का प्रायश्चित्त
34	गंडमाल, गुमड़े, फुंसियां, मस्सा, भगंदर आदि के छेदन करने का प्रायश्चित्त	44	रोमराजि के बाल काटने या संवारने का प्रायश्चित्त
35	गंडमाल, गुमड़े, फुंसियां, मस्सा, भगंदर आदि से पीप, रक्तनिकालने का प्रायश्चित्त	45	बगल (कांख) के बाल काटने या संवारने का प्रायश्चित्त
36	गंडमाल, गुमड़े, फुंसियां, मस्सा, भगंदर आदि को धोने का प्रायश्चित्त	46	दाढ़ी के बाल काटने या संवारने का प्रायश्चित्त
37	गंडमाल, गुमड़े, फुंसियां, मस्सा, भगंदर आदि पर मल्हम लगाने का प्रायश्चित्त	47	मूँछ के बाल काटने या संवारने का प्रायश्चित्त
38	गंडमाल, गुमड़े, फुंसियां, मस्सा, भगंदर आदि पर तेल आदि लगाने का प्रायश्चित्त	48-50	दाँतों के घिसने, धोने व तेल आदि पदार्थ लगाने का प्रायश्चित्त
39	गंडमाल, गुमड़े, फुंसियां, मस्सा, भगंदर आदि पर सुगंधित पदार्थ लगाने का प्रायश्चित्त	51-56	होंठों का आमर्जन, मर्दन, अभ्यंगन, उबटन, प्रक्षालन व रंगने का प्रायश्चित्त
40	गुदा के बाह्य भाग या भीतरी भाग से कृमि निकालने का प्रायश्चित्त	57	चक्षु रोगों के काटने, संवारने का प्रायश्चित्त
		58-63	आँखों का आमर्जन, मर्दन, अभ्यंगन, उबटन, प्रक्षालन व रंगने का प्रायश्चित्त
		64	नाक के बाल काटने, संवारने का प्रायश्चित्त
		65	भोहों के केशों को काटने, संवारने का प्रायश्चित्त
		66	मस्तक के केशों को काटने, संवारने का प्रायश्चित्त
		67	शरीर पर पसीना, मैल, रज आदि को हटाने व धोने का प्रायश्चित्त

68	आँख, कान, दाँत व नख का मैल निकालने का प्रायश्चित्त	78	गन्ना, चावल व कपास के खेत में मल-मूत्र त्यागने का प्रायश्चित्त
69	साधु के ग्रामानुग्राम विहार करते हुए मस्तक ढाँकने का प्रायश्चित्त	79	अशोकवृक्ष, शक्तिपर्ण वृक्ष, चंपकवृक्ष, आम्र वृक्ष आदि वनों में मल-मूत्र त्यागने का प्रायश्चित्त
70	सन, ऊन, रुई व आक के कपास से वशीकरण सूत्र (डोरा) बनाने का प्रायश्चित्त	80	दिन में या रात्रि में धूप न आने के स्थान में मल-मूत्र त्यागने का प्रायश्चित्त
71	घर आंगन में मल-मूत्र त्यागने का प्रायश्चित्त	चतुर्थ उद्देशक	
72	श्मशान की भूमि व उसकी सीमा में मल-मूत्र त्यागने का प्रायश्चित्त	1-5	राजा, अंगरक्षक, नगर रक्षक, निगम रक्षक व सर्व रक्षक को वश में करने का प्रायश्चित्त
73	कोयले बनाने आदि के स्थान में या खान आदि में मल-मूत्र त्यागने का प्रायश्चित्त	6-10	राजा, अंगरक्षक, नगर रक्षक, निगम रक्षक व सर्व रक्षक की प्रशंसा करने का प्रायश्चित्त
74	तुरन्त हल चलायी हुई भूमि या मल-मूत्र परठने की भूमि में परठने का प्रायश्चित्त	11-15	राजा, अंगरक्षक, नगर रक्षक, निगम रक्षक व सर्व रक्षक को आकर्षित करने का प्रायश्चित्त
75	कीचड़ या फूलन वाली भूमि में मल-मूत्र त्यागने का प्रायश्चित्त	16-20	ग्राम रक्षक, देश रक्षक, सीमा रक्षक, राज रक्षक व सर्व रक्षक को वश में करने का प्रायश्चित्त
76	गूलर, बड़, पीपल के नीचे व फल संग्रह की भूमि में मल-मूत्र त्यागने का प्रायश्चित्त	21-25	ग्राम रक्षक, देश रक्षक, सीमा रक्षक, राज रक्षक व सर्व रक्षक की प्रशंसा करने का प्रायश्चित्त
77	भाजी, सब्जियाँ आदि उगाने की व संग्रह के स्थान में मल-मूत्र त्यागने का प्रायश्चित्त	26-30	ग्राम रक्षक, देश रक्षक, सीमा रक्षक, राज रक्षक व सर्व रक्षक

रक्षक को आकृष्ट करने का प्रायश्चित्त	49	गीले हाथ, मिट्टी के बर्तन, कुड़छी या धातु बर्तन से आहार लेता है तो प्रायश्चित्त
31 कृत्स्न (सचित्त धान्य) आदि औषधियों का आहार करने का प्रायश्चित्त	50-60	सचित्त मिट्टी, खार, हड़ताल, हिंगुल, मैनशिल, अंजन, नमक, गेरू, पीली मिट्टी, खडिया, फिटकरी से लिप्त हाथ -यावत्- बर्तन से आहार ग्रहण करता है तो प्रायश्चित्त
32 आचार्य या उपाध्याय की आज्ञा के बिना दुग्धादि विगय खाने का प्रायश्चित्त	61-62	हरी वनस्पति के छिलके, भूसे चूर्ण आदि से लिप्त हाथ - यावत्- बर्तन से आहार ग्रहण करता है तो प्रायश्चित्त
33 स्थापना (निषिद्ध) कुलों को जाने बिना भिक्षाचर्या जाने का प्रायश्चित्त	63	असंसृष्ट हाथ -यावत्- बर्तन से आहार ग्रहण करता है तो प्रायश्चित्त
34 साध्वी के उपाश्रय में अविधि (बिना सूचना किये) प्रवेश करे तो प्रायश्चित्त	64-69	पाँव परिकर्म प्रायश्चित्त
35 साध्वी के आगमन पथ में दंडादि उपकरण रखने का प्रायश्चित्त	70-75	काय परिकर्म प्रायश्चित्त
36 नये-नये झगड़े उत्पन्न करने वाले को प्रायश्चित्त	76-81	व्रण चिकित्सा प्रायश्चित्त
37 क्षमायाचना से उपशान्त कलह को पुनः उत्पन्न करने वाले को प्रायश्चित्त	82-87	गंडादि शल्य चिकित्सा प्रायश्चित्त
38 मुँह फाड़-फाड़ कर उपशान्त कलह को पुनः उत्पन्न करने वाले को प्रायश्चित्त	88	कृमि नीहरण प्रायश्चित्त
39-48 पार्श्वस्थ आदि को संघाटक (संघाड़) के आदान-प्रदान का प्रायश्चित्त	89	नख परिकर्म प्रायश्चित्त
	90-95	रोम परिकर्म प्रायश्चित्त
	96-98	दंत परिकर्म प्रायश्चित्त
	99-104	ओष्ठ परिकर्म प्रायश्चित्त

105-111	चक्षुः परिकर्म प्रायश्चित्त	127	उच्चार-प्रस्रवण कर तीन पसली (अंजली) से अधिक बार जल में आचमन करता है तो प्रायश्चित्त
112-114	रोम केश परिकर्म प्रायश्चित्त		
115	प्रस्वेद निवारण प्रायश्चित्त	128	प्रायश्चित्त वहन करने वाले के साथ भिक्षाचर्या जाने का प्रायश्चित्त
116	चक्षु-कर्ण-दंस-नह मल नीहरण प्रायश्चित्त		
117	विहार में मस्तक ढांकने का प्रायश्चित्त		
118-119	संध्या समय तीन उच्चार प्रस्रवण भूमि का प्रतिलेखन न करने का प्रायश्चित्त	1-11	पंचम उद्देशक वृक्ष स्कंध के समीप की सचित्त भूमि पर खड़े रहना, बैठना, आहार करना, मल-मूत्र करना, स्वाध्याय आदि करना, वाचना देना, वाचना ग्रहण करना व पुनरावर्तन करने का प्रायश्चित्त
120	एक हाथ से भी कम लम्बी-चौड़ी भूमि में मल-मूत्र त्यागने का प्रायश्चित्त		
121	मल-मूत्र को अविधि से त्यागने का प्रायश्चित्त	12	अन्यतीर्थिक या गृहस्थ से चद्दर सिलवाने का प्रायश्चित्त
122	मल-मूत्र त्याग कर मल द्वारा शुद्ध नहीं करने का प्रायश्चित्त	13	छोटी चादर आदि को लम्बी करने के लिए लम्बी डोरियां बांधने का प्रायश्चित्त
123	मल-द्वार को काष्ठ, खपच्ची, अंगुली या शलाका से पौछता है तो प्रायश्चित्त	14	अचित्त नीम के पत्ते, परवल के पत्ते, बिल्व के पत्ते अचित्त या उष्ण जल में धोकर खाने का प्रायश्चित्त
124	मल द्वार को जल आचमन से शुद्ध नहीं करता है तो प्रायश्चित्त	15-18	गृहस्थ या शय्यातर के पादप्रोष्ठन निर्दिष्ट समय पर नहीं लौटाये तो प्रायश्चित्त
125	उच्चार-प्रस्रवण कर उसी पर आचमन करता है तो प्रायश्चित्त		
126	उच्चार-प्रस्रवण कर बहुत दूर जाकर आचमन करता है तो प्रायश्चित्त	19-22	गृहस्थ या शय्यातर के दंड, लाठी, अवलेखनिका व बांस, सूई आदि समय पर नहीं लौटाये तो प्रायश्चित्त

23	शय्या संस्कारक लौटाने के बाद पुनः आज्ञा लिये बिना उपयोग में लेवे तो प्रायश्चित्त	41	परिपूर्ण, दृढ़, रखने योग्य व कल्पनीय वस्त्र, कंबल या पादप्रोष्ठन को खंड-खंड कर परठने का प्रायश्चित्त
24	सन, ऊन, पोंड व अमिल के कपास (रूई) को कातने का प्रायश्चित्त	42	परिपूर्ण दंड, लाठी, अवलेखनिका व बांस की सूई को तोड़-तोड़ कर परठने का प्रायश्चित्त
25-30	सचित्त काष्ठ, बांस, बेंत के दंड को रंगीन व आकर्षक बनाने व धारण करने का प्रायश्चित्त	43	रजोहरण प्रमाण से बड़ा बनाने का प्रायश्चित्त
31	नवनिर्मित ग्रामादि में प्रवेश करने का व भोजन आदि ग्रहण करने का प्रायश्चित्त	44	रजोहरण की फलियां सूक्ष्म-बारीक बनाने का प्रायश्चित्त
32	नवनिर्मित खानों में या समीप में प्रवेश करने व गोचरी जाने का प्रायश्चित्त	45	रजोहरण की फलियों को आपस में संबद्ध करने का प्रायश्चित्त
33-35	वीणा आदि वाद्य यंत्र बनाना व मुख आदि से वीणा आदि वाद्य यंत्र बजाने का प्रायश्चित्त	46	रजोहरण को अविधि से बांध कर रखने का प्रायश्चित्त
36-38	औद्देशिक, संप्राभृत व परिकर्म शय्या में प्रवेश करना या रहने का प्रायश्चित्त	47	रजोहरण के अनावश्यक एक भी बंधन करने का प्रायश्चित्त
39	संभोगिक साधु के यदि आहार आदि में कोई दोष लगता है तो उपयोग करने वाले को भी दोष लगता है अतः वह भी प्रायश्चित्त का भागी होता है	48	रजोहरण के आवश्यक हो तो भी तीन से अधिक बंधन बांधने का प्रायश्चित्त
40	परिपूर्ण, दृढ़, रखने योग्य व कल्पनीय पात्र के टुकड़े कर	49	ऊन आदि पाँच प्रकार के सिवाय अन्य द्रव्य का रजोहरण बनाने का प्रायश्चित्त
		50	रजोहरण शरीर प्रमाण से अधिक दूर रखने का प्रायश्चित्त
		51	रजोहरण को पाँव आदि के नीचे दबाने का प्रायश्चित्त
		52	रजोहरण को सिर के नीचे अर्थात् सिरहाने रखने का प्रायश्चित्त

छठा उद्देशक		सातवां उद्देशक	
1	कुशील सेवन के लिए स्त्री को कहने का प्रायश्चित्त	1-3	मैथुन सेवन के संकल्प से तृण की माला -यावत्- हरित की माला बनाता है, धारण करता है, पहनता है तो प्रायश्चित्त
2-10	कुशील सेवन के लिए हस्तकर्म, अंगादान संचालन-यावत्-शुक्रपात करने का प्रायश्चित्त	4-6	मैथुन सेवन के संकल्प से लोहे का कड़ा -यावत्- सोने का कड़ा बनाता है, धारण करता है, पहनता है तो प्रायश्चित्त
11	कुशील सेवन के लिए स्त्री को वस्त्र रहित करना या वस्त्र रहित होने के लिए कहने का प्रायश्चित्त	7-9	मैथुन सेवन के संकल्प से हार -यावत्- सुवर्ण सूत्र बनाता है, धारण करता है, पहनता है तो प्रायश्चित्त
12	मैथुन सेवन के संकल्प से कलह करना या कलह उत्पादक वचन कहने का प्रायश्चित्त	10-12	मैथुन सेवन के संकल्प से मूषक आदि के चर्म से निष्पन्न वस्त्र -यावत्- अनेक प्रकार के आभरणों से युक्त वस्त्र बनाता है, धारण करता है, पहनता है तो प्रायश्चित्त
13	मैथुन सेवन के संकल्प से पत्र लिखता है या लिखवाता है तो प्रायश्चित्त		
14-18	मैथुन सेवन के संकल्प से स्त्री की योनि या अपानद्वार का लेप, प्रक्षालन आदि करता है तो प्रायश्चित्त	13	मैथुन सेवन के संकल्प से स्त्री के अक्ष, उरु, उदर व स्तन आदि अंगोंपंग को संचालित करता है तो प्रायश्चित्त
19-23	मैथुन सेवन के संकल्प से बहुमूल्य, अखण्ड, धुले हुए, रंगीन व रंग-बिरंगे वस्त्र रखता है तो प्रायश्चित्त	14-67	मैथुन सेवन के संकल्प से शरीर परिकर्म आदि के परस्पर करने के प्रायश्चित्त
24-77	मैथुन सेवन के संकल्प से पांच परिकर्म, काय परिकर्म -यावत्- मस्तक ढांकने का कार्य करे तो प्रायश्चित्त	68-75	मैथुन सेवन के संकल्प से सचित्त पृथ्वी आदि पर बैठने या सुलाने का प्रायश्चित्त
78	मैथुन सेवन के संकल्प से दूध, दही, घी आदि पौष्टिक आहार करे तो प्रायश्चित्त	76-77	मैथुन सेवन के संकल्प से स्त्री को अर्ध पल्यंकादि आसन पर या जंघा पर बिठाता है अथवा सुलाता है तो प्रायश्चित्त

78-79	मैथुन सेवन के संकल्प से स्त्री को धर्मशाला, बगीचा या गृहस्थ के घर में बिठाता है, सुलाता है, खिलाता है या पिलाता है तो प्रायश्चित्त	92	मैथुन सेवन के संकल्प से अपने शरीर के किसी भी अंगोंपांग (अवयवों) से कामचेष्टा करता है तो प्रायश्चित्त
80	मैथुन सेवन के संकल्प से स्त्री की किसी भी प्रकार की चिकित्सा करता है या कराता है तो प्रायश्चित्त	1	आठवां उद्देशक धर्मशाला, उद्यानगृह, गृहस्थ के घर, परिव्राजक के आश्रम में अकेला भिक्षु अकेली स्त्री के साथ रहता है, स्वाध्याय करता है, आहार करता है, मल-मूत्र करता है व काम कथा करता है तो प्रायश्चित्त
81-82	मैथुन सेवन के संकल्प से अमनोज्ञ पुद्गलों को निकालता है या मनोज्ञ पुद्गलों का प्रक्षेप करता है तो प्रायश्चित्त		नगर के समीप स्थानों में, प्राकारों में, द्वारों में, जलाशयों के मार्ग में, शून्य गृह में, तृण गृह में, भूसा गृह में, यान गृह में, दुकान में, गौशाला आदि में अकेला भिक्षु अकेली स्त्री के साथ रहे, आहार करे, काम कथा करे तो प्रायश्चित्त
83	मैथुन सेवन के संकल्प से पशु-पक्षी के पांव, पंख, पूंछ व मस्तक को पकड़कर संचालित करता है तो प्रायश्चित्त	2-9	स्त्री परिषद् में या स्त्रीयुक्त पुरुष परिषदा में रात्रि में या संध्याकाल में कथा करता है तो प्रायश्चित्त
84	मैथुन सेवन के संकल्प से पशु-पक्षी के अपानद्वार या योनिद्वार में काष्ठ, खपच्ची, अंगुली या बेंत की खपच्ची प्रविष्ट करता है तो प्रायश्चित्त	10	निग्रंथी से अति सम्पर्क करने का प्रायश्चित्त
85	मैथुन सेवन के संकल्प से पशु-पक्षी को 'यह स्त्री है' इस संकल्प से आलिंगन या चुंबन आदि करता है तो प्रायश्चित्त	11	उपाश्रय में रात्रि काल में स्त्री निवास का प्रायश्चित्त
86-89	मैथुन सेवन के संकल्प से स्त्री को खान-पान, वस्त्र-पात्र व कंबल देता है या ग्रहण करता है तो प्रायश्चित्त	12	स्त्री के साथ रात्रि में गमनागमन करने का प्रायश्चित्त
90-91	मैथुन सेवन के संकल्प से स्त्री को सूत्रार्थ की वाचना देता है या लेता है तो प्रायश्चित्त	13	मूर्द्धाभिषिक्त राजा के महोत्सव आदि स्थलों में आहार आदि ग्रहण करे तो प्रायश्चित्त
		14	

15	मूर्द्धाभिषिक्त राजा की उत्तर शाला (मण्डप) में आहार ग्रहण करे तो प्रायश्चित्त		करे तो प्रायश्चित्त
16	मूर्द्धाभिषिक्त राजा की अश्वशाला, हस्तिशाला आदि में आहार ग्रहण करे तो प्रायश्चित्त	8-9	राजा-रानी आदि को देखने के लिए प्रयत्न करे व एक कदम भी आगे बढ़ावे तो प्रायश्चित्त
17	मूर्द्धाभिषिक्त राजा के दूध, दही आदि के संग्रह स्थानों से आहार ग्रहण करे तो प्रायश्चित्त	10	शिकार आदि के निमित्त निकले राजा का आहार ग्रहण करने का प्रायश्चित्त
18	मूर्द्धाभिषिक्त राजा के उत्सृष्टपिंड आदि दान निमित्त स्थापित आहार को ग्रहण करे तो प्रायश्चित्त	11	राजा भोजन करने गये हों उस स्थल में उस समय आहार के लिए जावे तो प्रायश्चित्त
	नवम उद्देशक	12	राजा जिस स्थान में ठहरे हों वहां या उसके समीप ठहरने, स्वाध्याय करने, आहार करने व मल-मूत्र त्यागने का प्रायश्चित्त
1-2	राजपिण्ड ग्रहण करे व भोगे तो प्रायश्चित्त		
3-5	अन्तःपुर में प्रवेश, भिक्षा ग्रहण व अन्तःपुर से पात्र में मंगवावे या लाकर देवे तो प्रायश्चित्त	13-18	युद्ध, नदी या पर्वत की यात्रा के लिए जाते हुए या आते हुए राजा से आहार-पानी ग्रहण करने का प्रायश्चित्त
6	मूर्द्धाभिषिक्त क्षत्रिय राजा के द्वारा द्वारपालों, पशुओं, नैकरों, सैनिकों, दासों-कर्मचारियों, घोड़ों, हाथियों, यात्रियों, दुर्भिक्ष-पीड़ितों, दुष्काल-पीड़ितों, दीनजनों, रोगियों, वर्षा-पीड़ितजनों व आगंतुकों के निमित्त बना भोजन ले तो प्रायश्चित्त	19	राज्याभिषेक के समय गमनागमन करे तो प्रायश्चित्त
		20	चंपा, मथुरा, वाराणसी, श्रावस्ती, साकेतनगर, कापिल्य-नगर, कोशांबी, मिथिला, हस्तिनापुर व राजगृही इन दस बड़ी राजधानियों में बार-बार गमनागमन करे तो प्रायश्चित्त
		21-27	राजा के अंगरक्षक आदि अधिकारी, नाटक आदि करने वाले, अश्व आदि पशु-पक्षियों का पालन करने वाले व
7	राजा के कोठार आदि छह स्थानों को जाने बिना भिक्षागमन		

1-4	उन्हें शिक्षित करने वाले, राजा के मालिश आदि करने वाले तथा नपुंसक, द्वारपाल, कुब्जा दासी, किरात आदि देशों में उत्पन्न दासी आदि के लिए बनाया हुआ आहार-पानी लेने का प्रायश्चित्त	13	अज्ञात (एकाकी) भिक्षु को तीन दिन से अधिक दिन पृष्ठताछ किये बिना रखता है तो प्रायश्चित्त जिसने क्लेश उपशांत नहीं किया व उसका प्रायश्चित्त भी नहीं लिया ऐसे भिक्षु के साथ तीन दिन से अधिक आहार-संभोग रखता है तो प्रायश्चित्त

दसवां उद्देशक

1-4	आचार्य आदि को रोष युक्त रुक्ष वचन बोलता है या किसी भी प्रकार की अविनय-आशातना करता है तो प्रायश्चित्त	15-18	प्रायश्चित्त का विपरीत प्ररूपण करे या विपरीत दे तो प्रायश्चित्त
5	अनंतकाय संयुक्त (आलु, लसण, कांदा, गाजर, मूला, अदरक, हल्दी, रतालु, शकरकंद, अरबी आदि) आहार व लीलन-फूलन युक्त आहार करता है तो प्रायश्चित्त	19-24	प्रायश्चित्त योग्य भिक्षु के साथ आहार करने का प्रायश्चित्त
6	आधाकर्मि आहार, उपधि या शय्या का उपयोग करता है तो प्रायश्चित्त	25-28	सूर्योदय या सूर्यास्त के सदिग्ध होने पर भी आहार करे व न परटे तो प्रायश्चित्त
7-8	वर्तमान व भविष्य संबंधी निमित्त कथन करे तो प्रायश्चित्त	29	रात्रि समय मुख में आये उद्गाल को निगल जावे तो प्रायश्चित्त
9-10	किसी के शिष्य का अपहरण करे या भाव परिवर्तन करे तो प्रायश्चित्त	30-33	ग्लान की सेवा में प्रमाद करने का व विधिपूर्वक सेवा न करने का प्रायश्चित्त
11-12	नवदीक्षित की दीक्षा का अपहार या विपरिणामित करे तो प्रायश्चित्त	34-35	वर्षा काल में चार मास न रह कर पयुर्षण बाद विहार करे तो प्रायश्चित्त
		36-37	पयुर्षण (संवत्सरी) निश्चित दिन न करे व अन्य दिन करे तो प्रायश्चित्त
		38	पयुर्षण के दिन (संवत्सरी) तक लोच नहीं करे तो प्रायश्चित्त

39	पर्युषण के दिन (संवत्सरी) को चौविहार उपवास न करे तो प्रायश्चित्त	67-68	स्वयं को या अन्य को विपरीत रूप में दिखाने या कहने का प्रायश्चित्त
40	अन्यतीर्थिक या गृहस्थ को पर्युषणा कल्प (साधु-समाचारी) सुनाता है तो प्रायश्चित्त	69 70	अन्य मत प्रशंसाकरण प्रायश्चित्त विरूद्धराज्य गमनागमन प्रायश्चित्त
41	चातुर्मास में वस्त्र ग्रहण करे तो प्रायश्चित्त	71-72	दिवस भोजन निंदा व रात्रि भोजन प्रशंसा करने का प्रायश्चित्त
1-2	ग्यासहवां उद्देशक	73	दिन में लाया हुआ आहार दूसरे दिन खाने का प्रायश्चित्त
	लोहा, तांबा, रांगा, शीशा, चाँदी, सोना, पीतल, मुक्ता रत्न	74	दिन में लाया हुआ आहार रात्रि में खाने का प्रायश्चित्त
	जड़ित, मणि कांच, कांसा, संख, सींग, दांत, वस्त्र, पत्थर	75	रात्रि में लाया हुआ आहार दिन में खाने का प्रायश्चित्त
	व चर्म के पात्र बनाता है या रखता है तो प्रायश्चित्त	76	रात्रि में लाया हुआ आहार रात्रि में खाना है तो प्रायश्चित्त
	लोहे आदि के बंधन युक्त पात्रे करता है या रखता है तो प्रायश्चित्त	77-78	रात्रि में आहार रखने व खाने का प्रायश्चित्त
3-4	प्रायश्चित्त	79	आहारार्थ अन्यत्र रात्रि निवास करने का प्रायश्चित्त
5-6	पात्र हेतु अर्ध योजन से आगे लेने जाता है या लाये हुए लेता है तो प्रायश्चित्त	80	नैवेद्य पिण्ड (देवी-देवता को चढ़ाया हुआ) ग्रहण करने का प्रायश्चित्त
7	धर्म की निंदा करने का प्रायश्चित्त	81-82	स्वच्छंदाचारी की प्रशंसा या वंदना करने का प्रायश्चित्त
8	अधर्म की प्रशंसा करता है तो प्रायश्चित्त	83-84	क. अयोग्य को दीक्षा देना या बड़ी दीक्षा देने का प्रायश्चित्त ख. दीक्षा के अयोग्य कौन ? योग्य कौन ? व दीक्षा दाता के लक्षण- भाष्य आधार से
9-62	गृहस्थ का शरीर परिकर्म करण प्रायश्चित्त		
63-64	स्वयं को या अन्य को भयभीत करता है तो प्रायश्चित्त		
65-66	स्वयं को या अन्य को विस्मित करने का प्रायश्चित्त	85	अयोग्य से वैयावृत्य कराने का प्रायश्चित्त

86-89	वस्त्र रहित या वस्त्र सहित साधु का, सचेल या अचेल साध्वियों का एक स्थान में रहने का प्रायश्चित्त	8	पृथ्वी, अप, अग्नि, वायु व वनस्पतिकाय की अल्प मात्रा में भी हिंसा करे तो प्रायश्चित्त
90	रात्रि में पीपर या उसका चूर्ण, लाल या काली मिर्च व उसका चूर्ण, सोंठ व सोंठ का चूर्ण, पक्का नमक व सभी प्रकार के नमक रखने व खाने का प्रायश्चित्त	9 10 11	सचित्त वृक्ष पर चढ़े तो प्रायश्चित्त गृहस्थ के पात्र (बर्तन) में आहार करे तो प्रायश्चित्त गृहस्थ के वस्त्र पहने तो प्रायश्चित्त
91	बाल मरण अर्थात् पर्वत आदि से गिरकर आत्म घात करने वालों की प्रशंसा करने का प्रायश्चित्त	12 13	गृहस्थ के खाट-पलंग आदि पर बैठने का प्रायश्चित्त गृहस्थ की चिकित्सा करता है या औषध आदि बताता है तो प्रायश्चित्त
1-2	त्रस प्राणियों को बांधने या खेलने का प्रायश्चित्त	14	पूर्वकर्म दोष युक्त अर्थात् आहार देने से पूर्व हाथ धोए या कुड़ली, कटोरी, मिट्टी या धातु आदि बर्तन धोकर दे और वह आहार ग्रहण करे तो प्रायश्चित्त
3	प्रत्याख्यान बारम्बार भंग करने का प्रायश्चित्त		सचित्त जल से गीले हाथ या बर्तन आदि से गृहस्थ या अन्यतीर्थिक दे तो प्रायश्चित्त
4	प्रत्येक काय अर्थात् सचित्त नमक, पानी, वनस्पति से मिश्रित आहार करने का प्रायश्चित्त	15	दर्शनीय स्थलों या पदार्थों को देखने जाने का प्रायश्चित्त मनोहर रूपों में आसक्त होने का प्रायश्चित्त
5	सरोम (केश) युक्त चर्म का उपयोग करने का प्रायश्चित्त		प्रथम प्रहर में लाया हुआ आहार-पानी चतुर्थ प्रहर में रखे या भोगे तो प्रायश्चित्त
6	गृहस्थ के वस्त्र से आच्छादित तृण, पराल, गोबर, बेंत व काष्ठ के पीढे (चौकी) पर बैठने, सोने व खड़े रहने आदि का प्रायश्चित्त	16-30 31 32	दो कोस (7 किलोमीटर) आगे ले जाकर आहार-पानी का उपयोग करे तो प्रायश्चित्त
7	साध्वी की चादर अन्यतीर्थिक या गृहस्थ से सिलवाने का प्रायश्चित्त	33	

34-41	गोबर या लेप्य पदार्थ रात्रि में लगावे या रात्रि में रखकर दिन में लगावे तो प्रायश्चित्त	12	अन्यतीर्थिकों या गृहस्थों को शिल्प कलादि सिखाने का प्रायश्चित्त
42-43	विहार में अन्यतीर्थिक या गृहस्थ से उपधि वहन करने व उसे आहार-पानी देने का प्रायश्चित्त	13-16	अन्यतीर्थिकों या गृहस्थों को आवेश युक्त कठोर वचन कहना या किसी भी प्रकार की आशातना करने का प्रायश्चित्त
44	गंगा, यमुना, सरयू, एरावती और माही इन पांच महानदियों को महिने में एक बार से अधिक बार उतरकर या तैरकर पार करे तो प्रायश्चित्त	17-18	अन्यतीर्थिकों या गृहस्थों के कौतुककर्म या भूतिकर्म करने का प्रायश्चित्त
	तेरहवां उद्देशक	19-20	अन्यतीर्थिकों या गृहस्थों के कौतुक-प्रश्न या उनके उत्तर देता है तो प्रायश्चित्त
1-5	सचित्त पृथ्वी, जल से सिग्ध भूमि आदि पर बैठता, सोता या खड़ा होता है तो प्रायश्चित्त	21	अन्यतीर्थिकों या गृहस्थों के भूतकाल संबंधी निमित्त बताने का प्रायश्चित्त
6-7	सचित्त शिला, शिलाखण्ड या पत्थर पर बैठता, सोता या खड़ा होता है तो प्रायश्चित्त	22-24	अन्यतीर्थिकों या गृहस्थों के लक्षण (तिल-मसा), व्यंजन या स्वप्न का फल बताने का प्रायश्चित्त
8	घुन या दीमक लगे हुए जीव युक्त काष्ठ पर तथा अण्डों -यावत् मकड़ी के जालों से युक्त स्थान पर खड़े होना, सोना व बैठने का प्रायश्चित्त	25-27	अन्यतीर्थिकों या गृहस्थों के लिए विद्या, मंत्र, योग (तंत्र) का उपयोग करने का प्रायश्चित्त
9-11	स्तम्भ, देहली, चौकी, भीत, शिला, स्कंध, फलक, मंच आदि जो अस्थिर हों उन पर खड़े होना, सोना व बैठने का प्रायश्चित्त	28	अन्यतीर्थिक या गृहस्थ जो मार्ग भूले हुए हैं व दिशा मूढ़ हैं उनको रास्ता बताने का प्रायश्चित्त
		29-30	अन्यतीर्थिकों या गृहस्थों को धातु और निधि बताने का प्रायश्चित्त

31-41	पात्र, अरीसा, तलवार, मणि, कुंडे, तेल, शहद, घी, गीला गुड़, मद्य व चर्बी में अपना प्रतिबिम्ब देखने का प्रायश्चित्त	2	पात्र उधार लेना या उधार लाया हुआ पात्र लेने का प्रायश्चित्त
42-45	स्वस्थ होते हुए भी वमन-विरचन करना या औषध लेने का प्रायश्चित्त	3	पात्र बदलना या पात्र बदलकर लाया हुआ पात्र लेने का प्रायश्चित्त
46-55	पार्श्वस्थ, कुशील, अवसन्न, संसक्त व नित्यक को वंदन व प्रशंसा करने वाले भिक्षु को प्रायश्चित्त	4	छीनकर लाया हुआ पात्र, भागीदार की आज्ञा बिना का पात्र या सामने लाये हुए पात्र को लेने का प्रायश्चित्त
56-57	विकथा करने वाले को वंदन व प्रशंसा करने वाले भिक्षु को प्रायश्चित्त	5	गणी (आचार्य) की आज्ञा के बिना किसी को अतिरिक्त पात्र देने का प्रायश्चित्त
58-59	नृत्यादि देखने वाले को वंदन व प्रशंसा करने वाले भिक्षु को प्रायश्चित्त	6	अविकलांग या समर्थ को अतिरिक्त पात्र की आज्ञा देवे तो प्रायश्चित्त
60-61	उपकरणों पर अत्यधिक ममत्व रखने वाले को वंदन व प्रशंसा करने वाले भिक्षु को प्रायश्चित्त	7	विकलांग या असमर्थ को अतिरिक्त पात्र की आज्ञा न देवे तो प्रायश्चित्त
62-63	असंयतों के आरंभ कार्यो का निर्देश करने वाले को वंदन व प्रशंसा करने वाले भिक्षु को प्रायश्चित्त	8-9	उपयोग में न आवे ऐसे पात्र को रखना व उपयोग में आवे ऐसे पात्र को छोड़ देवे तो प्रायश्चित्त
64-78	धातृपिंडादि दोष युक्त आहार करने व खाने के प्रायश्चित्त	10-11	सुन्दर पात्र को विवर्ण करना या विवर्ण पात्र को सुन्दर करने का प्रायश्चित्त
1	पात्र खरीदना या खरीदकर लाये हुए पात्र को लेने का प्रायश्चित्त	12-19	पुराने या दुर्गन्धयुक्त पात्र को बार-बार धोवे, लेप लगावे व रात में पानी भरकर अनेक दिनों तक रखे, उसे ठीक करे तो प्रायश्चित्त

चौदहवां उद्देशक

31 निशीथ सूत्र विषय-सूची		निशीथ. उ.14, सूत्र 20-41, उ.15, सूत्र 1-66	
20-26	सचित्त पृथ्वी, जल, रज, नई मिट्टी, शिला, शिला खण्ड पर पात्र सुखाता है तो प्रायश्चित्त	35	सचित्त जल निकालकर देवे, ऐसे पात्र को लेने का प्रायश्चित्त
27	दीमक आदि युक्त काष्ठ पर या मकड़ी के जाले युक्त स्थान पर सुखावे तो प्रायश्चित्त	36	सचित्त अग्नि खीरा आदि निकालकर देवे, ऐसे पात्र को लेने का प्रायश्चित्त
28	स्तम्भ, देहली, ऊखल, चौकी आदि जो चलाचल हो उस पर सुखावे तो प्रायश्चित्त	37	पात्र पर कोरनी करने का या कोरनी वाला पात्र लेने का प्रायश्चित्त
29	पर सुखावे तो प्रायश्चित्त	38	मार्ग आदि में स्वजन या अन्य जन आदि से पात्र याचना करने का प्रायश्चित्त
30	मिट्टी की या ईंट की दिवार, शिला, शिला खण्ड जो चलाचल हो उस पर सुखावे तो प्रायश्चित्त	39	परिषद् में बैठे हुए स्वजन आदि से पात्र की याचना करने का प्रायश्चित्त
31	स्कंध पर -यावत्- महल की छत पर जो अच्छी तरह बंधी न हो व चलाचल हो उस पर सुखावे तो प्रायश्चित्त	40-41	पात्र के लिए मास कल्प या वर्षवास कल्प रहने का प्रायश्चित्त
32	मकड़ी आदि त्रस जीव निकालकर देवे, ऐसे पात्र को लेने का प्रायश्चित्त	पन्द्रहवां उद्देशक	
33	धान्य आदि या बीज निकालकर देवे, ऐसे पात्र को लेने का प्रायश्चित्त	1-4	कठोर, रोष युक्त वचन आदि से अन्य भिक्षु की आशातना करने का प्रायश्चित्त
34	सचित्त कंद, मूल, पत्र, पुष्प, फल निकालकर देवे, ऐसे पात्र को लेने का प्रायश्चित्त	5-12	सचित्त आम या उनके खण्ड, छिलके आदि को खाता है या चूसता है तो प्रायश्चित्त
	नमक आदि सचित्त पृथ्वीकाय निकालकर देवे, ऐसे पात्र को लेने का प्रायश्चित्त	13-66	गृहस्थ से शरीर का परिकर्म कराने का प्रायश्चित्त

67-75	धर्मशाला, उद्यान, चबूतरा, जल मार्ग, शूय घर, घास घर, यानशाला, विक्रयशाला, बैलशाला आदि अकल्पनीय स्थानों पर मल-मूत्र परठने का प्रायश्चित्त	4-11	सचित्त इक्षु (गन्ना) या इक्षु खण्ड खाता है या चूसता है तो प्रायश्चित्त
76	अन्यतीर्थिक या गृहस्थ को आहार-पानी देता है तो प्रायश्चित्त	12	अरण्य या वन में गये हुए या रहे हुए अथवा वापस लौटते हुए से आहार-पानी ग्रहण करता है तो प्रायश्चित्त
77-86	पार्श्वस्थ आदि के साथ आहार-पानी का लेन-देन करने का प्रायश्चित्त	13	विशेष चारित्र गुण सम्पन्न को अल्प चारित्र गुण वाला कहने का प्रायश्चित्त
87	गृहस्थ को वस्त्र, पात्र, कंबल या पादप्रोच्छन को देता है तो प्रायश्चित्त	14	अल्प चारित्र गुण वाले को विशेष चारित्र गुण वाला कहने का प्रायश्चित्त
88-97	पार्श्वस्थ आदि के साथ वस्त्रादि के आदान-प्रदान करने का प्रायश्चित्त	15	सांभोगिक व्यवहार के लिए विशेष चारित्र गुण सम्पन्न गण से अल्प चारित्र गुण वाले गण में जाने का प्रायश्चित्त
98	वस्त्र को जाने बिना, पूछे बिना या गवेषणा क्रिये बिना वस्त्र ग्रहण करने का प्रायश्चित्त	16	कदाग्रही भाव से अलग विचरने वाले भिक्षुओं को आहार-पानी देता है तो प्रायश्चित्त
99-152	विभूषार्थ शरीर के परिकर्म करने का प्रायश्चित्त	17-24	कदाग्रही भिक्षुओं को आहार, वस्त्र, पात्र, कंबल, पादप्रोच्छन, उपाश्रय या वाचना देता है व लेता है तो प्रायश्चित्त
153-154	विभूषा के संकल्प से वस्त्र, पात्र, कंबल या पादप्रोच्छन आदि उपकरण धारण करता है या धोता है तो प्रायश्चित्त	25-26	सुखपूर्वक विचरने योग्य क्षेत्र होते हुए भी अनार्य क्षेत्रों में या विकट मार्गों में विहार करता है तो प्रायश्चित्त
1-3	गृहस्थ युक्त शय्या, पानी युक्त शय्या, अग्नि युक्त शय्या में ठहरने का प्रायश्चित्त	27-29	घृणित कुलों में से आहार, वस्त्र, पात्र, कंबल, पादप्रोच्छन लेता है या शय्या ग्रहण करता है तो प्रायश्चित्त

सोलहवां उद्देशक

30-32	घृणित कुलों में बैठकर स्वाध्याय की वाचना (मूल पाठ, सूत्रार्थ) देता है या लेता है तो प्रायश्चित्त	15-68	निर्ग्रन्थ-निर्ग्रन्थ का शरीर परिकर्म गृहस्थ द्वारा करवावे तो प्रायश्चित्त
33-35	पृथ्वी, शय्या, छीकें, खूंटी आदि पर आहार रखने का प्रायश्चित्त	69-122	निर्ग्रन्थ-निर्ग्रन्थी का शरीर परिकर्म गृहस्थ द्वारा करवावे तो प्रायश्चित्त
36-37	अन्यतीर्थिकों या गृहस्थों के साथ बैठकर आहार करने का या गृहस्थ देखें वहां आहार करने का प्रायश्चित्त	123-124	समान आचार वाले निर्ग्रन्थ-निर्ग्रन्थियों को स्थान न देने का प्रायश्चित्त
38	आचार्य, उपाध्याय आदि के आसन, शय्या पर पांव लगाने पर विनय किये बिना ही चले जावे तो प्रायश्चित्त	125	मालोपहत-अर्थात् ऊंचाई पर रखे हुए आहार को ग्रहण करने का प्रायश्चित्त
39	सूत्रोक्त संख्या या माप से अधिक चादर, पात्र आदि उपकरण रखे तो प्रायश्चित्त	126	कोठे में रखा हुआ आहार ऊंचा होकर या नीचे झुककर दे तो लेने का प्रायश्चित्त
40-50	पृथ्वी आदि की विराधना वाले स्थान तथा चलाचल शिला, दिवार, महल या घर की छत आदि निषिद्ध स्थानों पर मल-मूत्र परठने का प्रायश्चित्त	127	मिट्टी आदि से लिप्त बर्तन के लेप को तोड़कर आहार दे तो प्रायश्चित्त
1-2	कुतूहल से त्रस प्राणी को तृण पाश -यावत्- सूत्र पाश से बांधता है या खेलता है तो प्रायश्चित्त	128-131	सचित्त पृथ्वी, जल, अग्नि व वनस्पतियों पर रखा हुआ आहार ग्रहण करने का प्रायश्चित्त
3-14	कुतूहल से मालाएं, कड़े, आभूषण और मूषक आदि के चर्मवस्त्रादि बनाना, रखना और पहनने का प्रायश्चित्त	132	पंखे आदि से या मुंह से फूंक देकर गर्म आहार-पानी को ठण्डा करके दिया जाने वाला आहार ग्रहण का प्रायश्चित्त
		133	क. तत्काल बना हुआ, रस परिणत न हुआ हो, जीवों का अतिक्रमण न हुआ हो, शस्त्र परिणत न हुआ हो या

सत्रहवां उद्देशक

पूर्णरूप से अचित्त न हुआ हो ऐसे (धोवन) पानी को 10 नौका तक जाने के लिए दूसरी नौका में बैठता है तो ग्रहण करने का प्रायश्चित्त

ख. ग्यारह प्रकार के ग्राह्य धोवन पानी 11

ग. बारह प्रकार के अग्राह्य धोवन पानी विवेचन से-

134 अपने-आपको आचार्य-लक्षण युक्त कहने का प्रायश्चित्त 12

135 गाना, हंसना, बजाना, नृत्य करना, नाटक करना, हाथी, घोड़े, सिंह आदि जानवरों जैसी आवाज करने का प्रायश्चित्त 13-14

136-139 भेरी, वीणा, ताल, शंख आदि वाद्यों की ध्वनि सुनने का व उस हेतु जाने का प्रायश्चित्त 15

140-155 विभिन्न स्थलों पर शब्द सुनने हेतु जाने का व आसक्ति रखने का प्रायश्चित्त 16

अठारहवां उद्देशक

1 बिना प्रयोजन नौका विहार करने का प्रायश्चित्त 17-32

2-5 क्रीत आदि दोष युक्त नौका में चढ़ने का प्रायश्चित्त 33-73

6-9 नौका चढ़ने के लिए नौका को जल से स्थल में, स्थल से जल में व कीचड़ में से निकलवाना या नौका का जल निकलवाने का प्रायश्चित्त 1-7

नौका तक जाने के लिए दूसरी नौका में बैठता है तो प्रायश्चित्त

ऊंचाई की ओर या नीचाई की ओर जाने वाली नौका में बैठे तो प्रायश्चित्त

आधा योजन या एक योजन से अधिक लंबा मार्ग तय करने वाली नौका में बैठने का प्रायश्चित्त

नौका चलाना, लंगर डालकर बांधना, रस्सी से कसकर बांधना, चणू, बाँस या बल्ले से बांधने का प्रायश्चित्त

नौका में आने वाले जल को बाहर उलीचने का प्रायश्चित्त

नौका में छिद्र हो जाने पर हाथ, पैर, पीपल पत्ता, कुश पत्ता, मिट्टी या वस्त्र खण्ड से बंद करने का प्रायश्चित्त

नौका में रहा हुआ भिक्षु नाव, जल, कीचड़ या स्थल पर रहे हुए गृहस्थ से आहार लेता है तो प्रायश्चित्त

उन्नीसवां उद्देशक

औषधी खरीदे, उधार लेवे, बदलावे, छीनकर या सामने लाई हुई, रोगी के लिए तीन मात्रा से अधिक लावे, औषध साथ में रखकर विचरे या औषध गलावे तो प्रायश्चित्त

8	प्रातःकाल, मध्याह्न, सायंकाल व अर्धरात्रि में अर्थात् संधिकाल में स्वाध्याय करे तो प्रायश्चित्त	22	समान योग्यता वालों को वाचना देने में पक्षपात करने का प्रायश्चित्त
9-10	उत्काल में कालिक श्रुत (9 गाथा तक) की मर्यादा का उल्लंघन करने का प्रायश्चित्त	23	आचार्य-उपाध्याय द्वारा वाचना दिए बिना स्वयं वाचना लेता है या वाचना लेने वाले का अनुमोदन करता है तो प्रायश्चित्त
11-12	आषाढी, आसौजी, कार्तिक व चैत्री पूर्णिमा व दूसरे दिन की एकम को स्वाध्याय करने का प्रायश्चित्त	24-25	अन्यतीर्थिक या गृहस्थ (मिथ्या भावित) को वाचना देता है या उनसे वाचना लेता है तो प्रायश्चित्त
13	दिन व रात्रि की प्रथम पौरुषी व अन्तिम पौरुषी में कालिक सूत्र का स्वाध्याय नहीं करे तो प्रायश्चित्त	26-35	पार्ष्वस्थ आदि के साथ वाचना के आदान-प्रदान का प्रायश्चित्त
14	बत्तीस प्रकार के अस्वाध्याय के समय स्वाध्याय करे तो प्रायश्चित्त	1-14	बीसवां उद्देशक कपट सहित या कपट रहित आलोचक को एक बार या अनेक बार प्रायश्चित्त देने की विधि
15	अपने शारीरिक अस्वाध्याय के समय स्वाध्याय करे तो प्रायश्चित्त	15-18	प्रस्थापना में प्रतिसेवना करने पर आरोपणा
16-17	विपरीत क्रम से आगमों की वाचना देने का प्रायश्चित्त	19-24	दो मास प्रायश्चित्त की स्थापिता आरोपणा
18-19	अयोग्य को वाचना देने व योग्य को न देने का प्रायश्चित्त	25-29	दो मास प्रायश्चित्त की प्रस्थापिता आरोपणा एवं वृद्धि
20-21	अव्यक्त अर्थात् सोलह वर्ष से कम उम्र वाले को वाचना देने का व व्यक्त अर्थात् सोलह वर्ष की उम्र वाले को वाचना न देने का प्रायश्चित्त	30-35	एक मास प्रायश्चित्त की स्थापिता आरोपणा
		36-44	एक मास प्रायश्चित्त की प्रस्थापिता आरोपणा एवं वृद्धि
		45-51	मासिक व दो मासिक प्रायश्चित्त की प्रस्थापिता आरोपणा एवं वृद्धि



णमो सिद्धाणं

चरणानुयोगमय आवश्यक सूत्र

अध्ययन	6	द्वितीय चतुर्विंशतिस्तव अध्ययन
मूल पाठ	100 श्लोक प्रमाण	चतुर्विंशति स्तव (लोगस्स पाठ)
गद्य सूत्र	71	तृतीय वंदन अध्ययन
पद्य सूत्र	9	चतुर्थ प्रतिक्रमण अध्ययन

32 आवश्यक सूत्र विषय-सूची

1	गुरू वन्दन सूत्र	क 1. इर्यासमिति के अतिचार
2	नमस्कार मंत्र सूत्र	ख 2. भाषा समिति के अतिचार
	प्रथम सामायिक अध्ययन	ग 3. एषणा समिति के अतिचार
3	प्रतिज्ञा सूत्र (करेमि भंते) सामायिक व्रत ग्रहण करने का पाठ	घ 4. आयाण-भण्ड-मत्त-निकखेवणा समिति के अतिचार
4	मंगल सूत्र- अरिहत वंदना का पाठ	ङ 5. उच्चार-पासवण-खेल-जल्ल-सिंघाण-पट्टिवणिआ समिति के अतिचार
5	उत्तम चतुष्टय	च 1. मन गुप्ति के अतिचार
6	शरण सूत्र	छ 2. वचन गुप्ति के अतिचार
7	संक्षिप्त प्रतिक्रमण सूत्र (इच्छामि)	ज 3. काया गुप्ति के अतिचार
8	ऐर्यापथिक सूत्र (इच्छामि पडिक्कमिडं)	झ 1. पृथ्वीकाय के अतिचार
9	आगार सूत्र (तस्स उत्तरी)	ञ 2. अक्काय के अतिचार
10	ज्ञान के अचिार का पाठ (आगमे तिविहे)	ट 3. तेजस्काय के अतिचार

ठ 4.	वायुकाय के अतिचार	17	तेतीस बोल का पाठ
ड 5.	वनस्पतिकाय के अतिचार	(1)	असंयम संबंधी अतिचारों के प्रतिक्रमण का पाठ
ढ 6.	द्वीन्द्रिय पाठ	(2)	द्विविध बंधन संबंधी प्रतिक्रमण का पाठ
ण 7.	त्रीन्द्रिय पाठ	क.	त्रिविध दण्ड संबंधी प्रतिक्रमण का पाठ
त 8.	चतुरिन्द्रिय पाठ	ख.	त्रिविध गुप्ति संबंधी प्रतिक्रमण का पाठ
थ 9.	पंचेन्द्रिय पाठ	ग.	त्रिविध शल्य संबंधी प्रतिक्रमण का पाठ
द 1.	पहला महाव्रत के अतिचार	घ.	त्रिविध गर्व संबंधी प्रतिक्रमण का पाठ
ध 2.	दूसरे महाव्रत के अतिचार	ङ.	त्रिविध विराधना संबंधी प्रतिक्रमण का पाठ
न 3.	तीसरे महाव्रत के अतिचार	(4) क.	चतुर्विध कषाय संबंधी का प्रतिक्रमण का पाठ
प 4.	चतुर्थ महाव्रत के अतिचार	ख.	चतुर्विध संज्ञा संबंधी प्रतिक्रमण का पाठ
फ 5.	पांचवें महाव्रत के अतिचार	ग.	चतुर्विध विकथा संबंधी प्रतिक्रमण का पाठ
ब 6.	छट्ठा रात्रि भोजन व्रत के अतिचार	घ.	चतुर्विध ध्यान संबंधी प्रतिक्रमण का पाठ
भ	अठारह पाप का पाठ	(5) क.	पंचविध क्रिया संबंधी प्रतिक्रमण का पाठ
म	समुच्चय पाठ	ख.	पंचविध कामगुण संबंधी प्रतिक्रमण का पाठ
14	शय्या सूत्र (इच्छामि पडिक्कमिडं) शयन संबंधी अतिचारों का पाठ	ग.	पंचविध महाव्रत संबंधी प्रतिक्रमण का पाठ
15	भिक्षा दोष निवृत्ति सूत्र (गोयरण चरियाए) भिक्षाचरी अतिचारों का पाठ	घ.	पंचविध समिति संबंधी प्रतिक्रमण का पाठ
16	स्वाध्याय तथा प्रतिलेखना दोष निवृत्ति सूत्र (पडिक्कमामि चाउक्कालं) प्रतिलेखना संबंधी अतिचारों का पाठ	(6) क.	षड्विध जीवनीकाय संबंधी प्रतिक्रमण का पाठ
		ख.	षड्विध लेश्या संबंधी प्रतिक्रमण का पाठ
		(7)	सप्तविध भय स्थान के प्रतिक्रमण का पाठ
		(8)	अष्ट मद स्थान के प्रतिक्रमण का पाठ

(9) नव ब्रह्मचर्य स्थान के प्रतिक्रमण का पाठ	(25) पच्चीस महाव्रत भावना संबंधी अतिचारों के प्रतिक्रमण का पाठ
(10) दसविध श्रमण धर्म स्थान के प्रतिक्रमण का पाठ	(26) छब्बीस दशा, कल्प, व्यवहार के अध्ययन का पाठ
(11) ग्यारह उपासक प्रतिमा स्थान के प्रतिक्रमण का पाठ	(27) सताईस अणगार गुण व्यवहार के अध्ययन का पाठ
(12) बारह भिक्षु प्रतिमा स्थान के प्रतिक्रमण का पाठ	(28) अट्ठाईस आचार प्रकल्प व्यवहार के अध्ययन का पाठ
(13) तेरह क्रिया स्थान के प्रतिक्रमण का पाठ	(29) उनतीस पाप श्रुत व्यवहार के अध्ययन का पाठ
(14) चौदह भूतग्राम स्थान के प्रतिक्रमण का पाठ	(30) तीस महामोहनीय स्थान व्यवहार के अध्ययन का पाठ
(15) पन्द्रह परमाधार्मिक स्थान के प्रतिक्रमण का पाठ	(31) इकतीस सिद्धगुण व्यवहार के अध्ययन का पाठ
(16) गाथा षोडशक (सूत्राकृतांग के 16 अध्ययन) संबंधी अतिचारों के प्रतिक्रमण का पाठ	(32) बत्तीस योग संग्रह व्यवहार के अध्ययन का पाठ
(17) सत्रह असंयम संबंधी अतिचारों के प्रतिक्रमण का पाठ	(33) तेतीस आशातना व्यवहार के अध्ययन का पाठ
(18) अठारह अब्रह्मचर्य संबंधी अतिचारों के प्रतिक्रमण का पाठ	शेष सर्व अतिचारों के प्रतिक्रमण का पाठ
(19) उन्नीस ज्ञाताधर्म कथा अध्ययन संबंधी अतिचारों के प्रतिक्रमण के पाठ	18 प्रतिज्ञा सूत्र-निर्ग्रन्थ प्रवचन का पाठ (नमो चउवीसाए)
(20) बीस असमाधि संबंधी अतिचारों के प्रतिक्रमण का पाठ	19 बड़ी संलेखना का पाठ
(21) इक्कीस सबलदोष संबंधी अतिचारों के प्रतिक्रमण का पाठ	20 तस्स धम्मस्स का पाठ
(22) बावीस परिषह संबंधी अतिचारों के प्रतिक्रमण का पाठ	21 पांचों पद की वंदना
(23) तेवीस सूत्रकृतांग के अध्ययन संबंधी अतिचारों के प्रतिक्रमण का पाठ	(1) प्रथम पद अरिहंत वंदना
(24) चौबीस देव संबंधी अतिचारों के प्रतिक्रमण का पाठ	(2) द्वितीय पद सिद्ध वंदना
	(3) तृतीय पद आचार्य वंदना
	(4) चतुर्थ पद उपाध्याय वंदना
	(5) पंचम पद सर्व साधु वंदना

- 22 दर्शन सम्यक्त्व का पाठ (अरिहंतो महदेवो)
 23 गुरू गुण स्मरण सूत्र (पंचिदिय संवरणो)
 24 अनंत चौबीसी के दोहे
 25 क्षमणा सूत्र (आयए उवज्झाए)
 26 क्षमापना सूत्र (खामेमि सव्वे जीवा)
 27 चौरासी लाख जीव योनि का पाठ (सात लाख)
 28 कुलकोड़ी खमाने का पाठ
 29 प्रणिपात सूत्र (णमोत्थुणं का पाठ)
 30 बारह व्रतों के अतिचारों का प्रतिक्रमण
 (1) अहिंसा अणुव्रत के अतिचार
 (2) मृषावाद विरमण व्रत के अतिचार
 (3) अदत्तादान विरमण व्रत के अतिचार
 (4) ब्रह्मचर्य अणुव्रत के अतिचार
 (5) परिग्रह परिणाम व्रत के अतिचार
 (6) दिग्ब्रत के अतिचार
 (7) उपभोग-परिभोग परिमाण व्रत के अतिचार
 (8) अनर्थ दण्ड विरमण व्रत के अतिचार
 (9) सामाधिक व्रत के अतिचार
 (10) देशावगाशिक व्रत के अतिचार

- (11) पौषधव्रत के अतिचार
 (12) अतिथि संविभाग व्रत के अतिचार

पंचम कायोत्सर्ग अध्ययन

- 31 प्रार्थश्चित्त का पाठ
 32 कायोत्सर्ग- (तस्स उत्तरी)
षष्ठ प्रत्याख्यान अध्ययन
 33 (1) नमस्कार सहित- सूत्र (नवकारसी प्रत्याख्यान पाठ)
 (2) पौरुषी सूत्र (पोरसी प्रत्याख्यान पाठ)
 (3) पूर्वार्ध सूत्र (पुरिमड्ड पूर्वार्ध प्रत्याख्यान पाठ)
 (4) एकासन सूत्र (एकासन प्रत्याख्यान पाठ)
 (5) एगट्टण (एकस्थान प्रत्याख्यान पाठ)
 (6) आचाम्ल- (आर्यबिल प्रत्याख्यान पाठ)
 (7) अभक्तार्थ- (अभक्त उपवास सूत्र)
 (8) दिक्स चरिम (चरिम प्रत्याख्यान पाठ)
 (9) अभिग्रह सूत्र (अभिग्रह का पाठ)
 (10) निविकृतिक सूत्र (विगय प्रत्याख्यान पाठ)
 (11) प्रत्याख्यान पारणा सूत्र



धर्मकथानुयोग प्रधान कल्प सूत्र

अध्ययन	1	निवेदन	
मूल पाठ	1215 अनुष्टुप श्लोक प्रमाण	ऋषभदत्त का स्वप्नफल-कथन	7-10
गद्य सूत्र	312	देवानन्दा द्वारा स्वप्नफल अवधारण	11-12
पद्य सूत्र गाथा	14	शक्रेन्द्र को अवधिज्ञान द्वारा भ. महावीर का गर्भावतरण ज्ञात होना	13-14

33 कल्पसूत्र विषय-सूची ¹

वर्धमान भगवान महावीर-जीवन दर्शन

1	क. नमस्कार महामंत्र	शक्र का स्वकर्तव्य-चिंतन	19
2	ख. भ. महावीर के छह कल्याणक	हरिणैगमेषी देव को गर्भ साहरण का आदेश	20-25
	क. आषाढ़ शुक्ला षष्ठी की रात्रि में देवलोक से च्यवन	हरिणैगमेषी का वैक्रिय समुद्रात	26
	ख. चतुर्थ आरक के 75 वर्ष साढ़े आठ माह अवशेष	क. देवानन्दा के गर्भ का साहरण	27-29
	ग. माहणकुण्ड ग्राम का कोडाल-गोत्रीय ऋषभदत्त	ख. क्षत्रियकुण्डग्राम, काश्यप गोत्रीय सिद्धार्थ क्षत्रिय, वाशिष्ठ गोत्रिया त्रिशला क्षत्रियाणी	
3	भ. महावीर तीन ज्ञान से सम्पन्न	ग. त्रिशला को अवस्वापिनी निद्रा	
4-5	देवानन्दा को चौदह महास्वप्न दर्शन	घ. हरिणैगमेषी का स्वस्थान के लिए प्रस्थान और शक्रेन्द्र से गर्भ साहरण के सम्बन्ध में निवेदन	
6	ऋषभदत्त से स्वप्न दर्शन के सम्बन्ध में देवानन्दा का	आश्विन कृष्णा त्रयोदशी-तियासीवीं रात्रि में गर्भ-साहरण	30
		भ. महावीर को अवधिज्ञान	31
		देवानन्दा को स्वगर्भ साहरण का बोध	32

1. आचार्य श्री देवेन्द्रमुनिजी म. सा. सम्पादित कल्पसूत्र आधारित

३२ कल्प सूत्र विषय-सूची		महावीर चरित्र	कल्प. सूत्र ३३-४१
३३	त्रिशला को चौदह महास्वप्न दर्शन	५७	त्रिशला की धर्म जागरणा
३४	पहला स्वप्न हस्ति	५८-५९	बाह्य उपस्थानशाला को सजाने का आदेश
३५	दूसरा स्वप्न वृषभ	६०-६१	सिद्धार्थ के आवश्यक दैनिककृत्य-व्यायामकरण, स्नान-श्रृंगार
३६	तीसरा स्वप्न सिंह		
३७	चौथा स्वप्न लक्ष्मी	६२	बाह्य उपस्थानशाला में आगमन
३८	पांचवां स्वप्न पुष्प माला	६३	त्रिशला के लिये तथा स्वप्न-पाठकों के लिये भद्रासनादि की व्यवस्था
३९	छठ्ठा स्वप्न चन्द्र		
४०	सातवां स्वप्न सूर्य	६४-६७	स्वप्न पाठकों को आमंत्रण
४१	आठवां स्वप्न ध्वजा	६८-६९	स्वप्न पाठकों से सिद्धार्थ की स्वप्नफल पृच्छा
४२	नौवां स्वप्न कलश	७०	स्वप्न-पाठकों का स्वप्न-फल कथन
४३	दसवां स्वप्न पद्मद्रुह	७१	क. बयालीस स्वप्न, तीस महास्वप्न-सर्व बहत्तर स्वप्न
४४	ग्यारहवां स्वप्न क्षीर सागर		ख. तीर्थंकर और चक्रवर्ती की माता के चौदह स्वप्न
४५	बारहवां स्वप्न देव विमान	७२	वासुदेव की माता के सात स्वप्न
४६	तेरहवां स्वप्न रत्न राशि	७३	बलदेव की माता के चार स्वप्न
४७	चौदहवां स्वप्न निर्धूम अग्नि	७४	मौडलिक राजा की माता को एक स्वप्न
४८	स्वर्णों से माता को हर्ष	७५	त्रिशला के चौदह स्वप्नों का फल-पुत्र लाभ
४९	त्रिशला का सिद्धार्थ को जगाना	७६	युवा पुत्र का चक्रवर्ती या धर्म चक्रवर्ती होना
५०-५१	त्रिशला की स्वप्न-फल पृच्छा	७७	सिद्धार्थ की स्वप्न-फल धारणा
५२-५४	सिद्धार्थ का स्वप्न-फल कथन	७८	स्वप्न-पाठकों को प्रीतिदान
५५-५६	त्रिशला की स्वप्न-फल अवधारणा	७९-८१	सिद्धार्थ का त्रिशला को स्वप्न पाठकों के कथन से

कल्प. सूत्र 82-107		33 कल्प सूत्र विषय-सूची	महावीर चरित्र	६६३
	अवगत कराना	96-97	सिद्धार्थ द्वारा दस दिवस पर्यन्त पुत्र जन्मोत्सव	
82-83	त्रिशला का स्वस्थान गमन	98	राजा सिद्धार्थ के आदेश से बंदीमोचन	
84-85	तिर्यक् जृम्भक देवों द्वारा राज कुल में निधान की वृद्धि	99	क. मान-उन्मान की वृद्धि	
86	सिद्धार्थ और त्रिशला का संकल्प 'वर्धमान' नाम रखने का निश्चय		ख. शुल्क मुक्ति, कर मुक्ति	
	माता की अनुकम्पा के लिये गर्भ में भ. महावीर का स्थिर होना	100	ग. नगर की सफाई आदि	
87			घ. दण्ड निषेध, ऋण मुक्ति	
88	भ. महावीर के निश्चल होने से त्रिशला का चिन्तित होना	101	यागों (पूजा सामग्री) दान आदि कृत्य	
89	भ. महावीर द्वारा त्रिशला के मनोगत भावों को अवधिज्ञान से जानना		क. प्रथम दिन शिशु-स्थिति	
	क. भ. महावीर द्वारा स्वशरीर का स्पंदन		ख. तृतीय दिन चन्द्र-सूर्य दर्शन	
90	ख. त्रिशला की प्रसन्नता	102	ग. छठे दिन धर्म-जागरणा	
91	भ. महावीर का अभिग्रह	103	घ. ग्यारहवें दिन अशुचि से निवृत्ति	
92	क. सिद्धार्थ द्वारा त्रिशला के दोहद की पूर्ति	104	ङ. बारहवें दिन-जाति भोज	
	ख. त्रिशला का गर्भ-पोषण संरक्षण	105	स्वजनों-परिजनों का सम्मान	
93	चैत्र शुक्ला त्रयोदशी के दिन भ. महावीर का जन्म	106	वर्धमान नामकरण	
94	जन्मोत्सव के लिये देव-देवियों का आगमन		भ. महावीर के गुण निष्पन्न तीन नाम	
95	सिद्धार्थ के भवन में देवों द्वारा हिरण्य आदि की दिव्य वर्षा	107	भ. महावीर के पिता के तीन नाम	
			भ. महावीर की माता के तीन नाम	
			क. भ. महावीर के (पितृव्य) चाचा का नाम	
			ख. भ. महावीर के बड़े भ्राता का नाम	
			ग. भ. महावीर की बहिन का नाम	

महावीर चरित्र		32 कल्प सूत्र विषय-सूची	कल्प. सूत्र 108-127
108	घ. भ. महावीर की भार्या (पत्नी) का नाम		ख. भ. महावीर का अचेलक होना
109	भ. महावीर की पुत्री के दो नाम	116	क. भ. महावीर द्वारा बारह वर्ष पर्यंत उपसर्ग सहन करना
110	भ. महावीर की दोहित्री के दो नाम		ख. भ. महावीर की समिति-गुप्ति आराधना
	क. भ. महावीर की तीस वर्ष की वय होने पर	117	भ. महावीर की इक्षीस उपमा
	लोकान्तिक देवों का आगमन	118	क. प्रतिबंध के चार भेद
	ख. बोध प्रदान एवं तीर्थ प्रवर्तन के लिये प्रार्थना		ख. अठारह पाप से सर्वथा विरति
	ग. भ. महावीर को अप्रतिपाति अवधिज्ञान से निष्क्रमण	119	भ. महावीर का ग्रीष्म-हेमंत में ग्राम-नगर में ठहरने का काल
	काल का ज्ञान		दीक्षा काल के तेरहवें वर्ष में जुंभक ग्राम के बाहर ऋजुवालिका नदी के तट पर, चैत्य के समीप वैशाख शुक्ला दसमी के दिन भ. महावीर को केवल ज्ञान की प्राप्ति
111-113	घ. बड़े भ्राता नन्दीवर्धन द्वारा रुकने का आग्रह	120-121	क. भ. महावीर के 42 वर्षावास
	ङ. दो वर्ष गृहस्थाश्रम में रुककर अनेक प्रत्याख्यान		ख. भ. महावीर का अंतिम वर्षावास मध्यपावा में
	च. भ. महावीर द्वारा वर्षादान		कार्तिक कृष्णा अमावस्या की रात्रि में स्वाति नक्षत्र के योग में भ. महावीर का निर्वाण
	क. मार्गशीर्ष कृष्णा दसमी के दिन दीक्षा के लिये प्रस्थान	122	देवताओं द्वारा भ. महावीर का निर्वाण-महोत्सव
	ख. देव-दानव-मानव युक्त विशाल अभिनिष्क्रमण यात्रा	123	इन्द्रभूति गौतम गणधर को केवलज्ञान
114	ग. ज्ञात-खण्ड वन उद्यान में दीक्षा हेतु प्रवेश		क. कार्तिक कृष्णा अमावस्या के दिन अठारह गण
	क. आभरणादि का त्याग		
	ख. पंचमुष्टि लोच		
	ग. छठ तप की आराधना	124-125	
	घ. एक देव-दूथ्य वस्त्र का धारण करना	126	
	ङ. भ. महावीर की एकाकी अणगार प्रव्रज्या	127	
115	क. भ. महावीर का देव दूथ्य धारण काल		

कल्प. सूत्र 128-150	33 कल्प सूत्र विषय-सूची	पार्श्व चरित्र	६६५
	राजाओं का आहार व पानी त्याग कर पौषध करना	143	क. भ. महावीर के मुक्त होने वाले शिष्य
	ख. राजाओं द्वारा दीपोद्योत के कारण उस दिन दीपावली पर्व	144	ख. भ. महावीर की मुक्त होने वाली शिष्याएं अनुत्तर विमानों में उत्पन्न होने वाले मुनि
128	भस्मराशि नामक महाग्रह का भ. महावीर के जन्म नक्षत्र के साथ संक्रमण	145	भ. महावीर के पश्चात् मुक्त होने वाले मुनि
129-130	भस्म-राशि महाग्रह का प्रभाव	146	क. भ. महावीर का गृहवास काल
131	क. निर्वाण रात्रि में कुंशुओं की उत्पत्ति		ख. भ. महावीर का छद्मस्थ काल
	ख. निर्गर्थों का भक्त-प्रत्याख्यान		ग. भ. महावीर का केवलज्ञानयुक्त जीवन
132	कुंशुओं की उत्पत्ति का फलादेश		घ. भ. महावीर का श्रमण जीवन
133	भ. महावीर के अनुयायी श्रमण		ङ. भ. महावीर की सर्वायु
134	भ. महावीर की अनुयायी श्रमणियाँ		च. भ. महावीर का निर्वाण काल
135	भ. महावीर के अनुयायी श्रमणोपासक	147	कल्पसूत्र का लेखन काल
136	भ. महावीर की अनुयायी श्रमणोपासिकायें	148	पुरूषादांनी भ. पार्श्वनाथ जीवन दर्शन
137	भ. महावीर के अनुयायी चतुर्दशपूर्वी मुनि	149	भ. पार्श्वनाथ के पंच कल्याणक
138	भ. महावीर के अनुयायी अवधिज्ञानी मुनि		क. चैत्र कृष्णा चतुर्थी के दिन प्राणत देवलोक से भ. पार्श्वनाथ की आत्मा का च्यवन
139	भ. महावीर के केवलज्ञानी मुनि		ख. जम्बूद्वीप, भरत क्षेत्र, वाराणसी नगरी, अश्वसेन राजा, वामा रानी
140	भ. महावीर के अनुयायी वैक्रियलब्धिधारी मुनि		ग. वामा रानी की कुक्षी में भ. पार्श्वनाथ का अवतरण
141	भ. महावीर के अनुयायी विपुलमति मनः पर्यवज्ञानी मुनि	150	क. भ. पार्श्वनाथ तीन ज्ञान के धारक
142	भ. महावीर के अनुयायी वादलिब्ध वाले मुनि		

	32 कल्प सूत्र विषय-सूची	पार्श्व चरित्र	कल्प. सूत्र 151-160
151	ख. स्वप्न दर्शन आदि सर्व वृत्तांत क. पौष कृष्णा दसमी के दिन भ. पार्श्वनाथ का जन्म ख. देवताओं द्वारा भ. पार्श्वनाथ का जन्मोत्सव ग. पार्श्व कुमार नाम देने का हेतु भ. पार्श्वनाथ की तीस वर्ष की वय होने पर लोकान्तिक देवों का आगमन	छ. भ. पार्श्वनाथ के अनुयायी केवलज्ञानी मुनि ज. भ. पार्श्वनाथ के अनुयायी वैक्रिय लब्धि संपन्न मुनि झ. भ. पार्श्वनाथ के अनुयायी ऋजुमति मनः पर्यवज्ञानी मुनि ञ. भ. पार्श्वनाथ के मुक्त होने वाले शिष्य ट. भ. पार्श्वनाथ की मुक्त होने वाली शिष्याएँ ठ. भ. पार्श्वनाथ के अनुयायी विपुलमती मनः पर्यवज्ञानी मुनि ड. भ. पार्श्वनाथ के अनुयायी वादलब्धि संपन्न मुनि ढ. भ. पार्श्वनाथ के अनुयायी अनुर विमानों में उत्पन्न होने वाले मुनि	
152	क. भ. पार्श्वनाथ द्वारा वर्षीदान ख. पौष कृष्णा एकादशी के दिन भ. पार्श्वनाथ की तीन सौ पुरुषों के साथ अणगार प्रव्रज्या		
153	तियासी दिन का उपसर्ग सहन काल क. भ. पार्श्वनाथ की समिति गुप्ति आराधना		
154	ख. भ. पार्श्वनाथ को चैत्र कृष्णा चतुर्थी के दिन केवल ज्ञान-प्राकट्य	भ. पार्श्वनाथ के पश्चात् मुक्त होने वाले मुनि	158
155	भ. पार्श्वनाथ के आठ गण और आठ गणधर क. भ. पार्श्वनाथ के अनुयायी श्रमण ख. भ. पार्श्वनाथ के अनुयायी श्रमणियाँ ग. भ. पार्श्वनाथ के श्रमणोपासक घ. भ. पार्श्वनाथ की श्रमणोपासिकाएँ ङ. भ. पार्श्वनाथ के अनुयायी चौदह पूर्वी मुनि च. भ. पार्श्वनाथ के अनुयायी अवधिज्ञानी मुनि	क. भ. पार्श्वनाथ का गृहवास काल ख. भ. पार्श्वनाथ का छद्मस्थ जीवन ग. भ. पार्श्वनाथ का केवलज्ञानयुक्त जीवन घ. भ. पार्श्वनाथ का श्रमण जीवन ङ. भ. पार्श्वनाथ का सर्वायु च. श्रावण शुक्ला अष्टमी के दिन सम्मेद शिखर पर चौतीस पुरुषों के साथ भ. पार्श्वनाथ का निर्वाण	159
156		कल्प सूत्र का लेखन काल	160

अर्हत् अरिष्टनेमिनाथ भगवान जीवन दर्शन

- 161 भ. अरिष्ट नेमिनाथ के पाँच कल्याणक शिखर पर भ. अरिष्ट नेमिनाथ को केवल ज्ञान
- 162 क. कार्तिक कृष्णा द्वादशी के दिन अपराजित विमान
से भ. अरिष्ट नेमिनाथ की आत्मा का च्यवन
ख. जम्बूद्वीप, भरत क्षेत्र, सौर्यपुर नगर, समुद्रविजय
राजा, शिवा देवी रानी
ग. शिवा देवी की कुक्षि में भ. अरिष्टनेमि की आत्मा
का अवतरण
घ. चौदह स्वप्न, गर्भपालन आदि
क. श्रावण शुक्ला पंचमी के दिन भ. अरिष्ट नेमिनाथ
का जन्म
- 163 ख. अरिष्ट नेमिनाथ नाम देने का हेतु
क. अरिष्ट नेमिनाथ की तीन सौ वर्ष की वय होने पर
लोकान्तिक देवों का आगमन
ख. तीर्थ प्रवर्तन के लिये प्रार्थना
ग. भ. अरिष्टनेमि द्वारा वर्षोदान
घ. श्रावण शुक्ला षष्ठी के दिन भ. अरिष्ट नेमिनाथ की
अणगार प्रव्रज्या, पंचमुखि लोच, छट्ठ तप की आराधना
- 164 ख. भ. अरिष्ट नेमिनाथ का चौपन दिन का कायोत्सर्ग
क. भ. अरिष्ट नेमिनाथ के पश्चात् मुक्त होने वाले मुनि
ग. भ. अरिष्ट नेमिनाथ के अनुयायी अनुत्तर विमानों
में उत्पन्न होने वाले मुनि
घ. भ. अरिष्ट नेमिनाथ के अनुयायी सिद्ध होने वाले
मुनि
ङ. भ. अरिष्ट नेमिनाथ की अनुयायी सिद्ध होने वाली
शिष्याएं
- 165 ख. आश्विन कृष्णा अमावस्या के दिन उज्जयन्त शैल
भ. अरिष्ट नेमिनाथ के पश्चात् मुक्त होने वाले मुनि

168	क. भ. अरिष्ट नेमिनाथ का कुमार जीवन	179	भ. वासुपूज्य के पश्चात् कल्पसूत्र का वाचना काल
	ख. भ. अरिष्ट नेमिनाथ का छद्मस्थ जीवन	180	भ. श्रेयांसनाथ के पश्चात् कल्पसूत्र का वाचना काल
	ग. भ. अरिष्ट नेमिनाथ का केवलज्ञानयुक्त जीवन	181	भ. शीतलनाथ के पश्चात् कल्पसूत्र का वाचना काल
	घ. भ. अरिष्ट नेमिनाथ का श्रमण जीवन	182	भ. सुविधिनाथ के पश्चात् कल्पसूत्र का वाचना काल
	ङ. भ. अरिष्ट नेमिनाथ का पूर्णायु	183	भ. चन्द्रप्रभ के पश्चात् कल्पसूत्र का वाचना काल
	च. भ. अरिष्ट नेमिनाथ का आषाढ़ शुक्ला अष्टमी को उज्जयन्त शैल (सम्मेद) शिखर पर निर्वाण	184	भ. सुपार्श्वनाथ के पश्चात् कल्पसूत्र का वाचना काल
	छ. भ. अरिष्ट नेमिनाथ का पांच सौ छत्तीस अणगारों के साथ निर्वाण	185	भ. पद्मप्रभ के पश्चात् कल्पसूत्र का वाचना काल
169	भ. अरिष्ट नेमिनाथ के पश्चात् कल्पसूत्र का वाचना काल	186	भ. सुमतिनाथ के पश्चात् कल्पसूत्र का वाचना काल
		187	भ. अभिनन्दन के पश्चात् कल्पसूत्र का वाचना काल
		188	भ. संभवनाथ के पश्चात् कल्पसूत्र का वाचना काल
		189	भ. अजितनाथ के पश्चात् कल्पसूत्र का वाचना काल
170	भ. नेमिनाथ के पश्चात् कल्पसूत्र का वाचना काल		भ. ऋषभदेव जीवन दर्शन
171	भ. मुनिसुव्रत के पश्चात् कल्पसूत्र का वाचना काल	190	भ. ऋषभदेव के पाँच कल्याणक
172	भ. मल्लिनाथ के पश्चात् कल्पसूत्र का वाचना काल	191	क. आषाढ़ कृष्णा चतुर्थी के दिन भगवान की आत्मा का देव लोक से च्यवन
173	भ. अरनाथ के पश्चात् कल्पसूत्र का वाचना काल		ख. जम्बूद्वीप, भरत क्षेत्र, इक्ष्वाकुभूमि, नाभि कुलकर, मरुदेवी भार्या
174	भ. कुंथुनाथ के पश्चात् कल्पसूत्र का वाचना काल		ग. मरुदेवी भार्या की कुक्षि में भगवान की आत्मा का अवतरण
175	भ. शांतिनाथ के पश्चात् कल्पसूत्र का वाचना काल		
176	भ. धर्मनाथ के पश्चात् कल्पसूत्र का वाचना काल		
177	भ. अनन्तनाथ के पश्चात् कल्पसूत्र का वाचना काल		
178	भ. विमलनाथ के पश्चात् कल्पसूत्र का वाचना काल	192	क. भ. ऋषभदेव को तीन ज्ञान

ख. मरुदेवी को चौदह स्वप्न दर्शन	घ. भ. ऋषभदेव के अनुयायी श्रमणोपासकों की संख्या
ग. प्रथम स्वप्न वृषभ का	ङ. भ. ऋषभदेव की अनुयायी श्रमणोपासिकाओं की संख्या
घ. नाभि कुलकर द्वारा स्वप्न फल कथन	च. भ. ऋषभदेव के अनुयायी चौदह-पूर्वी मुनि
चैत्र कृष्णा अष्टमी को भ. ऋषभदेव का जन्म, जन्मोत्सव आदि	छ. भ. ऋषभदेव के अनुयायी अवधिज्ञानी मुनि
193	ज. भ. ऋषभदेव के अनुयायी केवलज्ञानी मुनि
भ. ऋषभदेव के पाँच नाम	झ. भ. ऋषभदेव के अनुयायी वैक्रियलब्धि संपन्न मुनि
194	ञ. भ. ऋषभदेव के अनुयायी विपुलमति मनःपर्यव-
क. भ. ऋषभदेव का कुमार जीवन	ज्ञानी मुनि
ख. भ. ऋषभदेव का राज्य काल	ट. भ. ऋषभदेव के अनुयायी वादलब्धि संपन्न मुनि
ग. भ. ऋषभदेव द्वारा कला व शिल्पकर्मों का उपदेश	ठ. भ. ऋषभदेव के मुक्त होने वाले शिष्य
घ. सौ पुत्रों का राज्याभिषेक	ड. भ. ऋषभदेव की मुक्त होने वाली शिष्याएं
ङ. लोकांतिक देवों का आगमन	ढ. अनुत्तर विमानों में उत्पन्न होने वाले मुनि
च. भ. ऋषभदेव द्वारा वर्षादान	भ. ऋषभदेव के पश्चात् मुक्त होने वाले शिष्यों की परंपरा
छ. चैत्र कृष्णा अष्टमी को चार हजार पुरुषों के साथ	क. भ. ऋषभदेव का कुमार जीवन
भ. ऋषभदेव की अणगरा प्रव्रज्या, चार मुष्टि लोच	ख. भ. ऋषभदेव का राज्य काल
196	एक हजार वर्ष पश्चात् फाल्गुन कृष्णा एकादशी को
पुरिमताल नगर के बाहर शकटमुख उद्यान में न्यग्रोध (बड़) वृक्ष के नीचे भ. ऋषभदेव को केवलज्ञान	ग. भ. ऋषभदेव का गृहवास काल
क. भ. ऋषभदेव के चौरासी गण और गणधर	घ. भ. ऋषभदेव का छद्मस्थ जीवन
ख. भ. ऋषभदेव के अनुयायी श्रमणों की संख्या	ङ. भ. ऋषभदेव का केवलज्ञान युक्त जीवन
ग. भ. ऋषभदेव की अनुयायी श्रमणियों की संख्या	च. भ. ऋषभदेव का श्रमण जीवन
197	

६७०	स्थाविरावली	३२ कल्प सूत्र विषय-सूची	कल्प. सूत्र २००-२०७
छ.	भ. ऋषभदेव का सर्वायु		घ. आर्य प्रभव शिष्य वात्स्य गोत्री आर्य स्वयंभव
ज.	भ. ऋषभदेव का माघ कृष्णा त्रयोदशी को अष्टापद पर्वत पर निर्वाण	२०६	ङ. आर्य स्वयंभव शिष्य तुंगियायन गोत्री आर्य यशोभद्र
झ.	भ. ऋषभदेव का दस हजार अणगारों के साथ निर्वाण		क. आर्य यशोभद्र के दो शिष्य- १. भद्रबाहु,
२००	भ. ऋषभदेव के पश्चात् कल्पसूत्र का वाचना काल		२. स्थूलिभद्र
गणधरादि स्थाविरावली			ख. आर्य स्थूलिभद्र के दो शिष्य- १. आर्य महागिरी,
२०१-२०२	क. भ. महावीर के नौ गण, ग्यारह गणधर होने का कारण		२. आर्य सुहस्ती
ख.	गणधरों के गोत्र		ग. आर्य सुहस्ती के दो शिष्य- १. सुस्थित,
२०३	ग. गणधरों ने जिन मुनियों को वाचना दी, उनकी संख्या		२. सुप्रतिबुद्ध
	क. इयारह गणधरों का आगम ज्ञान		घ. सुस्थित-सुप्रतिबुद्ध शिष्य आर्य इन्द्रदिन
ख.	इयारह गणधरों का निर्वाण-स्थल		ङ. आर्य इन्द्रदिन के शिष्य दिन
ग.	इयारह गणधरों का निर्वाण काल		च. आर्य दिन के शिष्य आर्य सिंहगिरी
२०४	क. वर्तमान में गणधर सुधर्मा का शिष्य परिवार		छ. आर्य सिंहगिरी को जाति स्मरण ज्ञान
ख.	अन्य गणधरों की शिष्य परम्परा विच्छिन्न		ज. आर्य सिंहगिरी के शिष्य वज्र
२०५	क. श्रमण भगवान महावीर के शिष्य अग्नि वैश्यायन गोत्री आर्य सुधर्मा	२०७	झ. आर्य वज्र के शिष्य आर्य वज्रसेन
ख.	आर्य सुधर्मा शिष्य काश्यप गोत्री आर्य जम्बू		ज. आर्य वज्रसेन के चार शिष्य व उनके नाम से चार शाखाएं
ग.	आर्य जम्बू शिष्य कात्यायन गोत्री आर्य प्रभव		क. आर्य भद्रबाहु के चार स्थविर शिष्य- १. गोदाम,
			२. अग्निदत्त, ३. यक्षदत्त, ४. सोमदत्त
			ख. स्थविर गोदाम से गोदासगण
			ग. गोदासगण की चार शाखाएं

208	क. स्थविर आर्य संभूतिविजय के बारह शिष्य		उसकी चार शाखाएं तथा चार कुल
	ख. स्थविर आर्य संभूतिविजय की बारह शिष्याएं	217	क. स्थविर सुस्थित और सुप्रतिबुद्ध के पांच सुविख्यात शिष्य
209	क. आर्य स्थूलिभद्र के दो प्रख्यात शिष्य- 1. आर्य महागिरी, 2. आर्य सुहस्ती		ख. स्थविर प्रियग्रन्थ से मध्यमा शाखा व स्थविर गोपाल से विद्याधरी शाखा
	ख. आर्य महागिरी के आठ प्रख्यात शिष्य		क. स्थविर आर्य इन्द्रदत्त के शिष्य स्थविर आर्य दिन्न
	ग. स्थविर षड्लुक रोहगुप्त से त्रैशिक सम्प्रदाय	218	ख. स्थविर आर्य दिन्न के दो शिष्य- 1. आर्य शांतिश्रेणिक, 2. आर्य सिंहगिरी
	घ. स्थविर उत्तर व स्थविर बलिस्सह से उत्तर बलिस्सह नामक गण व उसकी चार शाखाएं		ग. आर्य शांतिश्रेणिक से उच्चानागरी शाखा प्रारम्भ
210	स्थविर आर्य सुहस्ती के प्रख्यात बारह स्थविर		आर्य शांतिश्रेणिक के चार शिष्य व प्रत्येक की चार शाखाएं
211	स्थविर आर्य रोहण से उद्देहगण व उसकी चार शाखाएं तथा छह कुल	219	क. स्थविर आर्य सिंहगिरी के चार सुविख्यात शिष्य
212	स्थविर सिरिगुप्त से चारणगण व उसकी चार शाखाएं तथा सात कुल	220	ख. स्थविर आर्य समित से ब्रह्मदीपिका शाखा
213	स्थविर भद्रयश से उडुवाडियगण व उसकी चार शाखाएं तथा तीन कुल	221	ग. स्थविर आर्य वज्र से आर्य वज्री शाखा
214	स्थविर कामिड्डि से वेसवाडियगण व उसकी चार शाखाएं तथा चार कुल		क. स्थविर आर्य वज्र के तीन सुविख्यात सुशिष्य
215	स्थविर ऋषिगुप्त से मानवगण व उसकी चार शाखाएं तथा तीन कुल	222	ख. स्थविर आर्य वज्रसेन से आर्य नागिली शाखा
	स्थविर सुस्थित और सुप्रतिबुद्ध से कोडियगण व		ग. स्थविर आर्य पद्म से आर्य पद्मा शाखा
			घ. स्थविर आर्य रथ से आर्य जयंती शाखा
			क. स्थविर आर्य रथ के शिष्य आर्य पुष्प गिरि
216			ख. स्थविर आर्य पुष्पगिरि के शिष्य फल्गुमित्र

वर्षावास समाचारी		32 कल्प सूत्र विषय-सूची		कल्प. सूत्र 223-248	
223	सभी स्थविरों के वंदन नमस्कार की आठ गाथाएं ¹	239	क. प्रीतिपात्र आदि कुलों से वस्तु आदि की याचना करने का निषेध	क. प्रीतिपात्र आदि कुलों से वस्तु आदि की याचना करने का निषेध	
224	भ. महावीर का वर्षावास समय निश्चय		ख. याचना से होने वाली हानि	ख. याचना से होने वाली हानि	
225	पचास दिन पश्चात् वर्षावास निश्चित करने का हेतु	240	क. एक ही बार भिक्षा लाने का नियम	क. एक ही बार भिक्षा लाने का नियम	
226-230	भ. महावीर के गणधर, गणधर-शिष्य स्थविर निर्ग्रन्थ-निर्ग्रन्थी, आचार्य-उपाध्याय को अनुसरण करने का निर्देश		ख. आचार्य, उपाध्याय, तपस्वी, ग्लान या बाल साधु-साध्वी के निमित्त दूसरी बार भिक्षा लाने का विधान	ख. आचार्य, उपाध्याय, तपस्वी, ग्लान या बाल साधु-साध्वी के निमित्त दूसरी बार भिक्षा लाने का विधान	
231	वर्षावास में पचासवें दिन की रात्रि का उल्लंघन करना कल्पनीय नहीं	241	उपवास के पारणा के दिन आवश्यक हो तो दो बार भिक्षा लाने का विधान	उपवास के पारणा के दिन आवश्यक हो तो दो बार भिक्षा लाने का विधान	
232	वर्षावास में निर्ग्रन्थ-निर्ग्रन्थियों का अवग्रह क्षेत्र	242-243	दो उपवास और तीन उपवास के पारणा के दिन दो बार-तीन बार भिक्षा लाने का विधान	दो उपवास और तीन उपवास के पारणा के दिन दो बार-तीन बार भिक्षा लाने का विधान	
233	क. वर्षावास में निर्ग्रन्थ-निर्ग्रन्थियों का भिक्षाचर्या क्षेत्र	244	उत्कृष्ट तप के पारणा के दिन स्वेच्छानुसार भिक्षा लाने का विधान	उत्कृष्ट तप के पारणा के दिन स्वेच्छानुसार भिक्षा लाने का विधान	
234-236	ख. गहरे जल वाली नदियों के पार करने का निषेध ग. अल्प जल वाली नदियों के पार करने की विधि ग्लान के निमित्त लाई हुई वस्तु ग्लान को ही देने का विधान	245	वर्षावास में नित्यभोजी भिक्षु को सभी प्रकार का पानी लेने का विधान	वर्षावास में नित्यभोजी भिक्षु को सभी प्रकार का पानी लेने का विधान	
237	स्वस्थ सबल साधक को बारम्बार नौ प्रकार की विकृति लेने का निषेध	246	वर्षावास में उपवास वाले भिक्षु को आटे का, चावल का धोया हुआ पानी व उष्ण जल लेना कल्पता है	वर्षावास में उपवास वाले भिक्षु को आटे का, चावल का धोया हुआ पानी व उष्ण जल लेना कल्पता है	
238	क. ग्लान के निमित्त आवश्यक वस्तु लाने की विधि ख. ग्लान के निमित्त वस्तु अधिक लाने का निषेध	247	वर्षावास में बेले के तपस्वी को तिलों का तुष सहित चावलों का व जौ का धोवन लेना कल्पता है	वर्षावास में बेले के तपस्वी को तिलों का तुष सहित चावलों का व जौ का धोवन लेना कल्पता है	
		248	वर्षावास में तैले के तपस्वी को ओसामण पानी, कांजी का पानी व उष्ण पानी लेना कल्पता है	वर्षावास में तैले के तपस्वी को ओसामण पानी, कांजी का पानी व उष्ण पानी लेना कल्पता है	

1. संघवी प्रकाशन इन्दौर के कल्पसूत्र में 27 स्थविरों की 14 गाथाएं हैं

कल्प. सूत्र 249-274	33 कल्प सूत्र विषय-सूची	वर्षावास समाचारी	६७३
249	तेले से अधिक तप करने वाले को सिर्फ उष्ण जल अन्न कण रहित लेना कल्पता है	259	क. रक-रककर वर्षा हो तो निर्ग्रथ-निर्ग्रथी को एक स्थान पर रुकने का निषेध
250	वर्षावास में संलेखना लेने वाले सिर्फ उष्ण पानी परिमित लेना कल्पता है	260-261	ख. निर्ग्रथ-निर्ग्रथी के एकत्र रुकने के अनेक विकल्प साधु-साध्वी गृहस्थ-गृहस्थिनी एकत्र रुकने की चतुर्भंगी
251	आहार-पानी की (दत्ति) अखण्ड धारा की संख्या व विधि-निषेध	262	क. बिना पूछे आहार लाने का निषेध ख. निषेध का हेतु
252	क. उपाश्रय के पार्श्ववर्ती घरों से भिक्षा लेने का निषेध	263	पानी से शरीर गीला हो तो भोजन करने का निषेध
253	ख. गृह संख्या के तीन विकल्प करपात्री भिक्षु को वर्षा (अत्यल्प वर्षा में व धूम में भी) भिक्षा के लिये जाने का निषेध	264	क. गीले रहने वाले शरीर के सात स्थान
254	करपात्री भिक्षु को खुले आकाश के नीचे भोजन करने का निषेध	265	ख. पानी सूखने पर भोजन करने का विधान आठ प्रकार के सूक्ष्म
255	करपात्री भिक्षु को वर्षा (सूक्ष्म बिन्दु) में भी भिक्षार्थ जाने का निषेध	266	क. पाँच रंग के प्राण सूक्ष्म ख. कुंथुआ स्थिर होने पर अदृश्य
256	पात्रधारी भिक्षु-भिक्षुणी को अधिक वर्षा में भिक्षार्थ जाने का निषेध	267	पाँच रंग के पनक (लीलन-फूलन)
257	गृहस्थ के घर में प्रवेश से पूर्व पक्व आहार को ही लेने का विधान	268	पाँच रंग के बीज सूक्ष्म
258	क. रक-रककर वर्षा हो तो भोजन करने की विधि ख. सायंकाल से पूर्व ही उपाश्रय में आने का विधान	269	पाँच रंग के हरित सूक्ष्म
		270	पाँच रंग के पुष्प सूक्ष्म
		271	पाँच प्रकार के अण्ड सूक्ष्म
		272	पाँच प्रकार का लयन सूक्ष्म
		273	पाँच प्रकार का स्नेह सूक्ष्म
		274	क. आचार्यादि से पूछकर भिक्षा के लिये जाने का विधान

275	ख. पूछकर जाने का कारण स्वाध्याय, शौच व विहार के लिये आचार्यादि से पूछकर जाने का विधान	285	ग. स्थविरों को वर्ष में एक लोच घ. लोच के अन्य विकल्प संवत्सरी से पूर्व क्षमा याचना का निर्देश
276	क. आवश्यकता हो तो आचार्यादि से पूछकर ही विकृति सेवन का विधान ख. पूछने का हेतु	286	क. उपशम भाव से आराधना ख. अनुपशम भाव से विराधना ग. साधुता का सार-उपशम भाव
277	आचार्यादि से पूछकर ही चिकित्सा कराने का विधान	287	क. वर्षावास में तीन उपाश्रयों की याचना कर प्रतिलेखना करने का निर्देश
278	आचार्यादि से पूछकर ही तपश्चर्या करने का विधान		ख. अन्य स्थान में रात्रि निवास का निषेध
279	क. आचार्यादि से पूछकर ही संलेखना-भक्त प्रत्याख्यान करने का विधान ख. पूछने का कारण	288	क. भिक्षाचर्या के लिये निश्चित दिशा की गवेषणा करने का विधान
280	वस्त्रादि को धूप में सुखाकर भिक्षा व स्वाध्याय के लिये जाने का तथा कायोत्सर्ग करने का निषेध		ख. निश्चित दिशा-अभिग्रह का कारण
281	बिना आसन व शैल्या के सोने, बैठने का निषेध	289	क. रुग्ण श्रमण के लिये आवश्यक वस्तु निमित्त दूर जाने का परिमाण
282	क. मल-मूत्रादि से निवृत्त होने के लिये तीन स्थान		ख. रात्रि विश्राम स्वस्थान में करने का निर्देश
283	ख. तीन स्थान देखने का हेतु	290	उत्कृष्ट भावों से समाचारी की आराधना करने वालों की इसी भव में अन्यथा सात-आठ भव में मुक्ति निश्चित
284	वर्षावास में शौच, लघुशंका व कफ आदि के लिए तीन पात्र लेने का विधान क. संवत्सरी से पूर्व लोच का विधान ख. संवत्सरी पश्चात् गाय के रोम जितने भी केश रखने का निषेध	291	भ. महावीर का राजगृह नगर के गुणशिलक चैत्य में चतुर्विध संघ के समक्ष पर्युषणा कल्प पर प्रवचन

34 जीतकल्प सूत्र विषय सूची

गाथा 1	क. प्रवचन वंदना	43-44	निर्विकृति (निवी) प्रायश्चित्त योग्य एषणा समिति के अतिचार
2-3	ख. अभिधेय-प्रायश्चित्त का संक्षिप्त वर्णन	45-59	तप प्रायश्चित्त योग्य कर्म
4	प्रायश्चित्त का माहात्म्य	60-63	सामान्य तथा विशेष दोष के अनुसार प्रायश्चित्त
5-8	प्रायश्चित्त के दस भेद	64-65	द्रव्य के अनुसार तप प्रायश्चित्त
9-12	आलोचना प्रायश्चित्त के योग्य दोष	66	क्षेत्र के अनुसार तप प्रायश्चित्त
13-15	प्रतिक्रमण प्रायश्चित्त के योग्य दोष	67	काल के अनुसार तप प्रायश्चित्त
16-17	आलोचना और प्रायश्चित्त के योग्य दोष	68	मानसिक संकल्पों के अनुसार तप प्रायश्चित्त
18-22	विवेक प्रायश्चित्त के योग्य दोष	69	गीतार्थ-अगीतार्थ आदि सामान्य एवं विशिष्ट श्रमणों के अनुसार प्रायश्चित्त देना
23-27	कायोत्सर्ग प्रायश्चित्त के योग्य दोष	70	श्रमणों के सामर्थ्य के अनुसार प्रायश्चित्त देना
28-30	ज्ञानातिचारों के प्रायश्चित्त	71-72	कल्पस्थित और कल्पातीत को भिन्न-भिन्न प्रकार का तप प्रायश्चित्त
31	दर्शनातिचारों के प्रायश्चित्त	73	जीत यंत्र विधि
32-33	प्रथम महाव्रत के अतिचारों का प्रायश्चित्त	74-79	प्रतिसेवना के अनुसार प्रायश्चित्त
34	द्वितीय, तृतीय और पंचम महाव्रत के अतिचारों का प्रायश्चित्त	80-82	छेद प्रायश्चित्त योग्य दोष
35-36	रात्रि भोजन विरति के अतिचारों का प्रायश्चित्त	83-86	मूल प्रायश्चित्त योग्य दोष का सेवन
37-38	उपवास प्रायश्चित्त योग्य एषणा समिति के अतिचार	87-93	अनवस्थाय प्रायश्चित्त के योग्य दोष का सेवन
39	आर्यबिल प्रायश्चित्त योग्य एषणा समिति के अतिचार	94-102	अनवस्थाय और पारांचित का वर्तमान में निषेध
40-42	एकासन प्रायश्चित्त योग्य एषणा समिति के अतिचार	103	उपसंहार ¹
	पुरिमार्थ (डेढ पोरूषी) प्रायश्चित्त योग्य एषणा समिति के अतिचार		

1. गाथांक दीपरत्नसागरजी म. सा. की प्रति अनुसार है

णमो लोगुत्तमाणं

35-44 चरणानुयोगमय दस प्रकीर्णक

	गाथा	दस प्रकीर्णक विषय-सूची
		1 चतुःशरण प्रकीर्णक
1	चतुःशरण प्रकीर्णक	1 आवश्यक के छः अध्ययन
2	आतुर प्रत्याख्यान प्रकीर्णक	2 सामायिक आवश्यक से चारित्र शुद्धि
3	महा प्रत्याख्यान प्रकीर्णक	3 चतुर्विंशति जिनस्तव से दर्शन शुद्धि
4	भक्त परिज्ञा प्रकीर्णक	4 वंदना आवश्यक से ज्ञान शुद्धि
5	तन्दुल वैचारिक प्रकीर्णक	5 प्रतिक्रमण से ज्ञान-दर्शन-चारित्र शुद्धि
6	संस्तारक प्रकीर्णक	6 कायोत्सर्ग से यथाक्रम चारित्र शुद्धि
7	गच्छाचार प्रकीर्णक	7 पञ्चवखण से तप के अतिचारों और वीर्याचार की शुद्धि
8	गणिविद्या प्रकीर्णक	8 तीर्थकर माता द्वारा चौदह स्वप्न-दर्शन
9	देवेन्द्रस्तव प्रकीर्णक ¹	9 उपोद्घात-प्रारम्भिक
10	मरण-समाधि प्रकीर्णक ²	10 गण के कर्तव्य त्रय
		11-23 चार शरण-चार गति नाशक
		12-22 अहिंसा का शरण
		23-29 सिद्ध का शरण
		30-40 साधु का शरण
		41-48 केवली कथित धर्म का शरण
		49-54 दुष्कृत गहा
		55-58 सुकृत अनुमोदन
		59-63 चार शरण स्वीकार का फल

1. 9 प्रकीर्णक के सूत्रांक पूज्य श्री दीपरत्नसागरजी म. सा. संपादित (गुज.) भाग 11 के अनुसार दिये हैं
2. 10 वें प्रकीर्णक मरण समाधि के सूत्रांक अरुणा मुकुंदराय लढा संपादित (गुज.) संस्करण के दिये हैं

2 आतुर प्रत्याख्यान प्रकीर्णक

		26-28	एकत्व भावना
1	बाल पंडित मरण की व्याख्या	29-31	प्रतिक्रमण
2	देशयति (विरति) की व्याख्या	32-34	आलोचना
3	पाँच अणुव्रत की व्याख्या	35	क्षमा याचना
4	तीन गुणव्रत की व्याख्या	36	तीन प्रकार के मरण
5	चार शिक्षाव्रत की व्याख्या	37-38	विराधक
6-8	बाल पंडित मरण की व्याख्या	39-41	बोधि की दुर्लभता
9	क. बाल-पंडित का वैमानिकों में उपपात	42	बोधि की सुलभता
	ख. बाल-पंडित की सात भव में सिद्धि	43	अनंत संसारी
10	पंडित मरण	44	अल्प संसारी
11	गद्यपाठ अतिचार शुद्धि	45	बाल मरण से मरने वाले
12	क. जिन वंदना	46	बाल मरण
	ख. गणधर वंदना	47	पंडित मरण का संकल्प
13-15	सर्व प्राणातिपातविरति-यावत्-सर्वपरिग्रह विरति	48	पंडित मरण से मरने की सलाह
16-18	संस्तारक-संधारा प्रतिज्ञा	49	यदि दुःख उत्पन्न हो तो संसार के दुःखों का स्मरण करने का निर्देश
19	सामायिक		
20	सर्व बाह्याभ्यंतर उपधि का त्याग	50-51	काम भोग से अतृप्ति, लवण समुद्र व अग्नि का उदाहरण
21-24	अट्टारह पाप का त्याग	52	क. सचित्त आहार का फल
25	क. आत्मा का अवलंबन		ख. सचित्त आहार का त्याग
	ख. निश्चय दृष्टि से आत्मा ही ज्ञान-दर्शनादि रूप है	53	पंडित मरण की साधना की उत्सुकता

54	समाधि मरण से पीछे हटने से दुर्गति	2	सिद्ध व अरिहंत पर श्रद्धा तथा पाप-प्रत्याख्यान
55	मोक्ष मार्ग के साधक को अपनी आत्मा चन्द्रकवैध्य पुरुष	3-5	सर्व विरति-विविध प्रत्याख्यान
	समान ज्ञानादि गुणों से युक्त करनी आवश्यक	6-7	सर्वजीव क्षमा याचना
56	देह-त्याग	8	निन्दा, गर्हा व आलोचना
57	भव-मुक्ति	9-10	ममत्व त्याग
58	जिन-वचन पर श्रद्धा	11	निश्चय दृष्टि से आत्मा ही ज्ञान दर्शनादि रूप है
59	अंतिम समय में द्वादशांग श्रुत का चिंतन असंभव	12	मूल गुण और उत्तर गुणों का प्रतिक्रमण
60-61	आराधक मरण	13-16	एकत्व भावना
62	तीन भव में मुक्ति	17	संयोग संबंध परित्याग
63	श्रमण व संयम	18	ममत्व की निन्दा और गर्हा
64	मरण से भय नहीं	19	मिथ्यात्व व असंयम का त्याग तथा क्षमापना
65	धीर-अधीर की मृत्यु	20	अज्ञात अपराध की आलोचना
66	शीलवान् और शील रहित की मृत्यु	21	माया परित्याग का उपदेश
67	चारित्र सहित ज्ञान आदि में प्रयत्न करने वाला संसार से मुक्त	22	बालक के समान कपट-अहंकार रहित आलोचना
		23	घी से सिक्त अग्नि की तरह सरल चित्त वाले की ही शुद्धि
68	दीर्घ ब्रह्मचर्य धारण करने वाले को सिद्धि		क्रमशः निर्वाण प्राप्ति
69	कषाय रहित आत्मा का पच्छक्खण श्रेष्ठ	24	शल्य और क्लेश रहित जीव की ही सिद्धि
70	मरण के समय प्रत्याख्यान करने वाले का उत्तम स्थान	25	गुरू के समीप आलोचना करने वाला आराधक
		26	गुरू के समीप आलोचना नहीं करने वाला विराधक
1	3 महा प्रत्याख्यान प्रकीर्णक	27-29	सशल्य की शुद्धि नहीं
	अर्हत् सिद्ध और संयतों को वंदन		

30	आलोचना का फल, भारवाहक का उदाहरण	80-84	आत्म प्रयोजन की सिद्धि
31-32	प्रायश्चित्त अनुसरण	85-88	निदान रहित होकर मरण की प्रतीक्षा करना
33	प्राणी-हिंसा आदि का प्रत्याख्यान	89	सम्यक् तप का सामर्थ्य
34	अशन व बाह्य-आभ्यन्तर उपधि का त्रिविध परित्याग	90-92	पंडित मरण की प्ररूपणा
35	निर्दोष पालन-शुद्ध आराधना	93-94	आराधना की कठिनता
36	शुद्ध प्रत्याख्यान	95	आराधना की श्रेष्ठता
37	अतृप्ति	96	वास्तविक संथारा-विशुद्ध मन
38	अनंत रुदन	97	देह त्याग
39-40	सर्वत्र जन्म-मरण	98	इन्द्रियरूपी चोर-तप-संयम का हरण
41-42	पंडित मरण की भावना	99-100	ज्ञान से कर्म क्षय
43-44	एकत्व भावना	101	ज्ञानी और अज्ञानी के कर्म क्षय में अंतर
45-48	नरक आदि चारों गतियों में अनेक वेदनाएं	102	अंतिम समय में द्वादशांग श्रुत चिन्तन असंभव
49-50	पंडित मरण की भावना	103-106	क. संवेग की वृद्धि से वैराग्य ख. संवेगी के कर्तव्य
51-64	काम भोगों में अतृप्ति		
65	आसक्तिपूर्वक याचना करने वाले कार्यो की निन्दा-गर्हा	107	जिन धर्म में श्रद्धा
66	जन्म-मरण के चक्र को तोड़कर मुक्ति पाने का संदेश	108	श्रमण व संयत द्वारा त्याग
67	मृत्यु की प्रतीक्षा में	109-112	सर्व-प्रत्याख्यान से समाधि प्राप्ति
68-76	पंच महाव्रत रक्षा	113-119	चार मंगल, चार शरण ग्रहण करते हुए सर्व सावध का
77	सच्चा शरण		त्याग व सर्व पापों का त्याग
78-79	तप माहात्म्य	120	अरिहंत आदि चारों की अथवा किसी एक पद की शरण

121-125	ग्रहण करने वाला आराधक	2	जिनशासन स्तुति
126-127	वेदना सहन करने का उपदेश	3	ज्ञान संपादन
128	अप्रतिबुद्ध मरण की प्ररूपणा	4-5	वास्तविक सुख
129	तप का आराधन	6-8	जिनाज्ञा का आराधन
130	आराधन ध्वज प्राप्ति प्ररूपणा	9	पंडित मरण के तीन भेद
131	वास्तविक संधारे से सर्वथा कर्मक्षय	10	क. भक्त-परिज्ञा मरण के दो भेद
132-134	आराधक की तीन भव से मुक्ति	11	ख. सविचार मरण का स्वरूप
135-136	जय पताका वरण	12-15	अविचार भक्त-परिज्ञा का स्वरूप
137	भाव जागरण	16	क. भक्त परिज्ञा की उपादेयता
138-139	क. चार प्रकार की आराधना	17-18	ख. भक्त-परिज्ञा मरण के योग्य साधक
140	ख. तीन प्रकार की आराधना	19	दुःख भव-समुद्र
141	क. उत्कृष्ट आराधना से उसी भव से मोक्ष	20	भव-समुद्र तिरने का संकल्प
142	ख. जघन्य आराधना से सात-आठ भव से मोक्ष	21-22	भक्त परिज्ञा स्वीकार करने हेतु-गुरु का आदेश
1	सर्व जीवों से क्षमा याचना	23-28	गुरु वंदना
	धीर और अधीर की मृत्यु	29	सम्यक् आलोचना
	उपसंहार-सम्यक् आराधना का फल	30	महाव्रत स्थापना
	4 भक्त-परिज्ञा प्रकीर्णक	31	अणुव्रत आराधना
	क. महावीर वंदना	32-33	गुरु, संघ और स्वधर्मी की भक्ति
	ख. भक्त-परिज्ञा का कथन		द्रव्य का सदुपयोग
			सामायिक चारित्र को स्वीकारना

34-35	भक्त-परिज्ञा की आराधना	65-68	दर्शन भ्रष्ट और चारित्र भ्रष्ट में अंतर
36	आराधना द्वारा दोषों की आलोचना	69	क. अविरत का तीर्थकर नाम कर्म संपादन- श्रीकृष्ण-श्रेणिक के समान
37	क. अंतिम प्रत्याख्यान		ख. सम्यक् दर्शन महिमा
38-39	ख. तीन आहार का यावज्जीवन त्याग	70-75	भक्ति मार्ग महिमा. राजगृही के मणियार श्रेष्ठि का उदाहरण
40	चिन्तन-मनन	76-81	नमस्कार सूत्र आराधना का फल. सूली का सिंहासन, महावत का यक्ष के रूप में जन्म. अज्ञानी गोपाल का सेठ के घर में जन्म आदि उदाहरण
41	मल शुद्धि हेतु विरेचन		ज्ञान महिमा-कृष्ण सर्प उदाहरण
42	शीतल क्वाथ का पान		चंचल मन का बंधन-ध्यान, मन रूपी अस्थिर बन्दर का उदाहरण
43	मधुर विरेचन	82-83	श्रुत-महिमा. डोरे सहित सूई, यवराजा का मरण बचाव, चिलाति पुत्र का उदाहरण
44	यावज्जीवन के लिये तीन आहार के त्याग का आचार्य द्वारा संघ के समक्ष निवेदन	84-85	हिंसा का त्याग, जीव के भेदों को जानना
45-46	दो सौ छप्पन उच्छ्वास का कायोत्सर्ग		दयाधर्म की आराधना
47-50	चार आहार का त्याग	86-88	अहिंसा की महिमा, मेरूपर्वत, आकाश के उदाहरण
51-58	क्षमायाचना-मृगावती उदाहरण		जीव हिंसा स्वहिंसा है
59	आचार्य का उपदेश	89	हिंसा के फल
	क. मिथ्यात्व का त्याग	90	अहिंसा के फल
	ख. सम्यक्त्व में दृढ़ता	91	अहिंसा के फल
	ग. नमस्कार सूत्र का जाप	92-93	अहिंसा के फल
60-62	मिथ्यात्व का फल-तुरूमणी के दत्तराजा का उदाहरण	94	अहिंसा के फल
63	अप्रमाद का उपदेश	95-96	अहिंसा के फल
64	चार प्रकार का प्रशस्त राग	97-98	अहिंसा के फल

99	ख. झूठ बोलने के चार कारण	151-153	कषाय विजय. उदाहरण- नंद, परशुराम, पांडु आर्या, लोभानंद
100-101	सत्य की महिमा. माता, गुरू व स्वजन का उदाहरण	154	उपदेशामृत का पान
	असत्य भाषण का फल. उदाहरण- वसुराजा का नरक में गमन	155	आज्ञानुसार आचरण करने का संकल्प
102-106	अदत्तादान का त्याग. उदाहरण- श्रावक पुत्र को सुख प्राप्ति	156	वेदना सहन करना
107-130	ब्रह्मचर्य की आराधना. उदाहरण- कामगृद्ध वणिक् का, कुबेरदत्त सेठ का, देवर्ति राजा का	157-164	प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहना. उदाहरण- अर्वाति सुकुमाल, भ. सुकोशल, चाणक्य मंत्री, जलते हुए सुबंधु, बींधे हुए रोहिडग
131-134	परिग्रह त्याग उदाहरण- कुंचिक सेठ द्वारा मुनिपति को पीड़ित करना	165	भवसागर कष्टदायी. उदाहरण- समुद्रीयान
135	निश्शल्य और सशल्य	166-168	धर्म महिमा. चिंतामणिरत्न, कल्पवृक्ष व अमृत समान
136	शल्यों के हेतु के तीन प्रकार	169	नमस्कार सूत्र-स्मरण के साथ प्राण-त्याग
137	शल्यों के दृष्टांत- गंगदत्त, विश्वभूति, चंडपिंगल	170-172	उपसंहार-भक्त परिज्ञा का फल
138	निदान शल्य		क. जघन्य-सौधर्म देवलोक में महाद्धिक देव
139	साधक की चार कामनाएँ		ख. उत्कृष्ट गृहस्थ-अच्युत कल्प में
140	निदान शल्य का निषेध		ग. उत्कृष्ट साधु-निर्वाण अथवा सर्वार्थ सिद्ध देवलोक में
141	विषयी की दुर्दशा. उदाहरण- पंख रहित पंछी का		
142-144	विषय-सुख. उदाहरण- कुत्ते द्वारा सूखी हड्डियों को चबाना	173	भक्त परिज्ञा की आराधना से शाश्वत सुख-प्राप्ति
145-150	इन्द्रिय निग्रह उदाहरण- सार्थवाह स्त्री, मथुरा का वणिक्, राजपुत्र, सोदास व दुष्ट सोमालिका राजा. द्वीप की देवी को प्राप्त दो भाई	1	5 तन्दुल वैचारिक प्रकीर्णक क. महावीर वंदना, आदि वाक्य ख. अभिधेय-कथन-प्रतीज्ञा

2	क. सौ वर्ष की आयु की दस-दशा	18-19	गर्भस्थ जीव का आठ मास का वृद्धिक्रम
	ख. अतिरिक्त आयु: गर्भावास-काल	20	क. गर्भस्थ जीव के मल-मूत्र आदि का अभाव
3	क. गर्भस्थ जीव के अहोरात्र		ख. गर्भस्थ जीव के आहार का परिणाम
	ख. गर्भस्थ जीव के मुहूर्त	21	क. गर्भस्थ जीव के कवलाहार का अभाव
	ग. गर्भस्थ जीव के श्वासोच्छ्वास		ख. गर्भस्थ जीव का सभी ओर से निरन्तर तथा जल्दी-जल्दी आहार तथा श्वास-ग्रहण परिणाम एवं निस्सारण
4-6	गर्भस्थ जीव के काल प्रमाण: 270 दिन-रात व आधा दिन	22	गर्भस्थ जीव का ओज आहार
7	गर्भस्थ जीव के मुहूर्त	23	गर्भस्थ जीव के तीन मात्राङ्ग और तीन पित्र्यङ्ग
8	गर्भस्थ जीव के श्वासोच्छ्वास	24	गर्भस्थ जीव की नरक गति और उसका हेतु
9-11	गर्भ धारण के योग्य स्त्री योनि का स्वरूप	25	गर्भस्थ जीव की देवगति और उसका हेतु
12	उत्कृष्ट नौ लाख जीवों का उत्पत्ति स्थान	26	गर्भस्थ जीव के वैक्रिय लब्धि
13	स्त्री-पुरुष का अभीजकाल	27	गर्भस्थ जीव का संरक्षण
14	सौ वर्ष से क्रोड़ पूर्व की आयु वालों का अभीजकाल	28	गर्भस्थ जीव का शयनासनादि-माता के अनुसार
15	क. बारह मुहूर्त में जीवों की उत्पत्ति	29	माता द्वारा उसकी एवं अपनी रक्षा
	ख. बारह वर्ष पर्यंत गर्भस्थ जीव की उत्कृष्ट पितृ-संख्या	30-32	गर्भस्थ जीव का वर्णन
16	क. स्त्री, पुरुष और नपुंसक कुक्षी में स्त्री, पुरुष और नपुंसक का स्थान	33-34	स्त्री-पुरुष आदि होने का हेतु
	ख. तिर्यच का उत्कृष्ट गर्भ-स्थिति काल	35	गर्भ का निर्गमन
	गर्भस्थ जीव का सर्व प्रथम आहार	36	उत्कृष्ट गर्भ स्थिति
17		37	जन्म और मरण समय का दुःख और उसका विस्मरण

38-42	गर्भावास का स्वरूप और विविध रूप	68	वर्तमान काल में हुंडक संस्थान
43-44	सौ वर्ष की आयु के मनुष्य की दस दिशाएं	69	अवसर्पिणी काल (ह्रासकाल) का प्रभाव
45	(1) बाल दशा	70	साम्प्रतकालीन मनुष्यों की देह, संहनन आदि की हानि और धर्मजन-प्रशंसा
46	(2) क्रीड़ा दशा		
47	(3) मंदा दशा	71-72	सौ वर्ष की आयु में तन्दुल आहार का परिमाण
48	(4) बला दशा	73	तन्दुल आहार व अन्य भोज्य द्रव्य तथा पहनने के वस्त्रों का परिमाण
49	(5) प्रज्ञा दशा		
50	(6) हायनी दशा	74-80	समय आदि काल परिमाण का स्वरूप
51	(7) प्रपंचा दशा	81-86	काल परिमाण निवेदक घटिका यंत्र विधान विधि
52	(8) प्राग्भारा दशा	87	वर्ष के मास-पक्ष और रात-दिन का परिमाण
53	(9) मुन्मुखी दशा	88	एक अहोरात्र के श्वासोच्छ्वास
54	(10) शायनी दशा	89	एक मास के श्वासोच्छ्वास
55-57	सौ वर्ष की आयु की क्रमिक स्थिति	90	एक वर्ष के श्वासोच्छ्वास
58-62	सुख-दुःख के समय धर्माचरण का उपदेश	91	सौ वर्ष के श्वासोच्छ्वास
63	पुण्य करने के लिये प्रेक वचन	92	क. एक अहोरात्र के मुहूर्त
64	यौगलिक अर्हत् चक्रवर्ती आदि के देह के प्रत्येक अंगों की ऋद्धि		ख. एक मास के मुहूर्त
			ग. एक वर्ष के मुहूर्त
65	छः प्रकार का संघयण	94	सौ वर्ष के ऋतु
66	वर्तमान काल में सेवार्त संघयण	95-97	शतायु क्षय का क्रम
67	छः प्रकार का संस्थान	98-99	धर्माचरण का उपदेश

100-101	आयु क्षय का क्रम	16-30	संथारा करने वालों का अनुमोदन
102	क. प्रिय शरीर का वियोग	31-32	प्रशस्त संथारा
	ख. प्रत्येक अंगोपांग का प्रमाण	33-35	अप्रशस्त संथारा
	ग. शिरा आदि का प्रमाण	36-43	प्रशस्त संथारा
	घ. रोगों की उत्पत्ति का हेतु	44-50	संथारे से लाभ और सुख
	ङ. शरीरस्थ रक्तादि का प्रमाण	51-55	यथार्थ संथारा
103-104	मानव शरीर का अंतरंग दर्शन	56-57	अर्णिका पुत्र आचार्य ने लोगों द्वारा नाव से धक्का देने पर
105-116	देह की अपवित्रता का वर्णन		समभाव रखकर संथारा लिया
117-127	व्यक्ति की राग दृष्टि	58-60	पालक मंत्री द्वारा स्कंदक आदि 500 मुनिराजों को घाणी में पीलने पर समभाव रखा व संथारा लिया
128-142	राग निवारण का उपदेश	61-62	बाण से बींधे हुए यवन राजा ने संथारा लिया
143	क. स्त्रियों की विकृत दशा का वर्णन	63-64	मासखमणधारक सुकोशल ऋषि ने वाघण से काटने पर भी समभाव पूर्वक संथारा ग्रहण किया
144-150	ख. स्त्रियों के विकृत जीवन के सूचक 93 नाम	65-66	शियालण के आक्रमण से त्रासित अवन्ति सुकुमाल ने समभाव पूर्वक संथारा ग्रहण किया
151	स्त्रियों के कुटिल दृश्य का वर्णन	67-69	अजीर्ण रोग से पीड़ित कार्तिकार्य ऋषि ने वैरी द्वारा बींधने पर भी समभाव पूर्वक संथारा ग्रहण किया
152	मोहान्ध को उपदेश देना निरर्थक	70-72	हजारों जीवों द्वारा शरीर छेदे जा रहे धर्मसिंह मुनि ने समभाव पूर्वक संथारा ग्रहण किया
153-154	उपदेश के अयोग्य मनुष्य		
155-158	पिता-पुत्र आदि की अशरणा		
159-161	धर्म का फल		
	उपसंहार		
6 संस्तरक प्रकीर्णक			
1-15	संथारे (अंतिम साधना) की महिमा	73-75	गायों के बाड़े में कायोत्सर्ग स्थित चाणक्य ऋषि ने पूर्व

76-78	वैरी सुबंधु मंत्री के द्वारा छाणे जलाकर त्रास देने पर समभाव पूर्वक संथारा ग्रहण किया राजर्षि अमृतघोष अपनी जन्म भूमि कांकदी नगरी में पुनः आने पर पूर्व वैरी चंडवेग द्वारा शस्त्र से छेदने पर भी समभाव रखा व संथारा लिया	88-89 90-92 93-97 98-100 102-106	सागरी संथारा क्षमा याचना चिंतन-मनन ममत्व त्याग क्षमा याचना
79-80	ललित घटा आदि बत्तीस पुरूषों के नदी के पूर में फंसने पर उसी समय संथारा ग्रहण किया	107-109	संथारे से कर्म क्षय
81-83	वाद से पराजित रिष्ट मंत्री द्वारा अग्नि से जलाने पर सिंहसेन ऋषि द्वारा संथारा ग्रहण किया	110-111 112-114 115	संथारा करने वाले को उपदेश संथारा करने से कर्म क्षय तीन भव से मोक्ष
84	कायोत्सर्ग में स्थित कुरूदत्त ऋषि ने गोपालों द्वारा जलाने पर समभाव रखकर संथारा लिया	116-120 121	संथारे की महिमा उपसंहार
85	चिलाती पुत्र चोर दीक्षा ग्रहण कर कायोत्सर्ग में स्थित थे उस समय हजारों चींटियों द्वारा शरीर छीलने पर समभाव पूर्वक संथारा ग्रहण किया	1	महावीर वंदना-आदि वाक्य-
86	कायोत्सर्ग में स्थित गजसुकुमाल मुनि को पापिष्ठ द्वारा गीले चमड़े से बांधकर मारने पर समभाव पूर्वक संथारा ग्रहण किया	2 3-7 (8-40)	उन्मार्गगामियों के गच्छ में रहने से भव भ्रमण श्रेष्ठ गच्छ में रहने का फल आचार्य स्वरूप वर्णन
87	भ. महावीर शिष्य सुनक्षत्र व सर्वानुभूति अणगार को गोशालक द्वारा तेजोलेश्या से जलाने पर समाधि पूर्वक मरण	8-9 10-11 12-13 14	आचार्य लक्षण जिज्ञासा अधम आचार्य के लक्षण आचार्य अन्य आचार्य समक्ष आलोचना करे श्रेष्ठ आचार्य के लक्षण

7 गच्छाचार प्रकीर्णक

15-16	निकृष्ट आचार्य के लक्षण	50	अश्रेष्ठ गच्छ का अनुगमन निषिद्ध
17	श्रेष्ठ और निकृष्ट आचार्य	51	श्रेष्ठ गच्छ से लाभ
18	धर्म मार्ग में गुरू को स्थिर न करने वाला निकृष्ट शिष्य	52-58	श्रेष्ठ मुनि के लक्षण
19	प्रमादी श्रमण को उद्बोधन	59	आहार करने के छः कारण
20-22	श्रेष्ठ आचार्य	60-62	श्रेष्ठ गच्छ का वर्णन
23-24	निकृष्ट आचार्य	63-70	साध्वियों के अमर्यादित संसर्ग का निषेध
25-26	श्रेष्ठ आचार्य	71-75	श्रेष्ठ गच्छ का वर्णन
27-28	निकृष्ट आचार्य	76	उपाश्रय प्रमार्जन
29-31	कनिष्ठ आचार्य का त्याग	77-84	श्रेष्ठ गच्छ का वर्णन
32-36	संविग्न-पाक्षिक मुनि (साधु श्रावक से भिन्न तृतीय त्यागी वर्ग)	85	मूलगुण भ्रष्ट मुनि
		86	श्रेष्ठ गच्छ
37	निकृष्ट आचार्य का नाम लेने पर भी प्रायश्चित्त	87	मूलगुण से रहित मुनि का गच्छ निर्वासन
38	आचार्य का कर्तव्य	88-89	निकृष्ट गच्छ
39	आज्ञा विरोधक आचार्य	90	श्रेष्ठ गच्छ
40	गच्छ लक्षण का प्रज्ञापन	91-96	निकृष्ट गच्छ
(41-106) साधु स्वरूप वर्णन			
41-42	गीतार्थ उपासना	97-102	श्रेष्ठ गच्छ
43	अगीतार्थ परित्याग	103	निकृष्ट गच्छ
44-45	गीतार्थ आराधना	104-105	श्रेष्ठ गच्छ में निवास
46-49	अगीतार्थ परित्याग	106	निकृष्ट गच्छ

(107-134) साध्वी स्वरूप वर्णन

107-116	निकृष्ट साध्वी गच्छ	12-14	प्रस्थान के लिये नौ नक्षत्र
117	श्रेष्ठ साध्वी संघ	15	निषिद्ध सात नक्षत्र
118-122	निकृष्ट साध्वी संघ	16-20	निषिद्ध नक्षत्रों का फल
123	श्रेष्ठ साध्वी संघ	21	पादपोषणमन (अनशन) करने के नक्षत्र
124-126	असाध्वी लक्षण	22	दीक्षा वर्ज्य नक्षत्र
127-128	श्रेष्ठ साध्वी लक्षण	23	विद्या प्रारंभ करने के नक्षत्र
129	निकृष्ट साध्वी संघ	24-25	ज्ञान वृद्धि करने वाले दस नक्षत्र
130-131	श्रेष्ठ साध्वी संघ	26	लोच के लिए श्रेष्ठ नक्षत्र
132-134	निकृष्ट साध्वी लक्षण	27-28	क. दीक्षा, बड़ी दीक्षा के लिये श्रेष्ठ नक्षत्र ख. गणी और वाचक पद देने के लिये श्रेष्ठ नक्षत्र
135-137	उपसंहार	29	शीघ्र कार्य संपादन के लिए श्रेष्ठ नक्षत्र
		30	ज्ञान संपादन आदि के लिए श्रेष्ठ नक्षत्र
		31-34	मृदु कार्यों के लिए श्रेष्ठ नक्षत्र
		35-36	तप प्रारंभ करने के लिए श्रेष्ठ नक्षत्र
		37	संस्तारक ग्रहण करने के लिए श्रेष्ठ नक्षत्र
		38	उपकरण, वस्त्र धारण करने के नक्षत्र
		39-41	संघ के कार्यों के लिए श्रेष्ठ नक्षत्र
		42-46 (4)	करण के नाम, शुभ कार्यों के लिए करण
		47-48 (5)	शैक्षणिक्रमण, व्रत उपस्थापन व तपकर्म के वार व दिवस
		49-52 (6)	छाया मुहूर्त

8 गणिविद्या प्रकीर्णक

1	मंगलाचरण
2	दिवस तिथि नक्षत्रादि नौ प्रकार के बलों के नव द्वारा
3	(1) दिन के उद्देश्य से बलाबल प्ररूपण
4-7	शुभारंभ विहार आदि के लिए शुभाशुभ तिथियाँ
8	(2) दीक्षा प्रदान करने की तिथियाँ
9	तिथियों के नाम
10	दीक्षा प्रदान करने की व तप करने की श्रेष्ठ तिथियाँ
11	(3) नौ नक्षत्रों में गमन करना शुभ

53-54	शुभ कार्यों के लिए श्रेष्ठ मुहूर्त	ग. बत्तीस इन्द्रों की स्थिति
55	छाया प्रमाण	घ. बत्तीस इन्द्रों के अधिकार में भवन या विमान
56-58	दीक्षा, गणिवाचक पद, अनशन आदि के लिए योग	ङ. भवनों और विमानों की लंबाई, चौड़ाई, ऊँचाई, वर्ण, आहार, काल आदि
59-64 (7)	कार्य करने के लिए शकुन विचार	च. बत्तीस इन्द्रों के अर्वाधि ज्ञान का क्षेत्र
65-71 (8)	प्रशस्त और अप्रशस्त लग्न	
72	(9) मिथ्या और सत्य निमित्त	(1) भवनवासी देवों का वर्णन
73-77	निमित्त की सत्यता	11-19 बीस भवनेन्द्रों के नाम
78-79	प्रशस्त निमित्तों में प्रशस्त कार्य	20-27 भवनों के भवनेन्द्रों की संख्या
80-81	अप्रशस्त निमित्त में सर्व कार्यों का निषेध	28-31 भवनेन्द्रों की स्थिति व आयु
82-84	नव बलों में उत्तरोत्तर बलवान	32-38 भवनेन्द्रों के स्थान और ऊँचाई
85	उपसंहार	39-42 दक्षिणोत्तर भवनेन्द्रों के नगर और भवन
		43-44 त्रायस्त्रिंशक देव, लोकपाल परिषद् और सामानिक देव, सब इन्द्रों के सामानिक देव (संख्या में) समान हैं।
1	जिनेश्वरदेव वंदना	भवनेन्द्रों की अग्रमहीषियाँ
2	पति द्वारा भ. वर्धमान महावीर स्वामी की स्तुति	45
3	पत्नी का स्तुति श्रवण	46-50 भवनेन्द्रों के आवास स्थान और उत्पात पर्वत
4-6	पति-पत्नी की संयुक्त वर्धमान वंदना	51-65 भवनेन्द्रों का बल-वीर्य पराक्रम
7	बत्तीस देवेन्द्रों के सम्बन्ध में पत्नी की जिज्ञासा	(2) वाणव्यंतर देवों का वर्णन
8-10	बत्तीस देवेन्द्रों के सम्बन्ध में छः प्रश्न- क. बत्तीस इन्द्र कौन-कौनसे? ख. बत्तीस इन्द्रों के रहने के स्थान?	66-67 आठ प्रकार के वाणव्यंतर देव 68-70 वाणव्यंतर देवों के महर्द्धिक सोलह इन्द्र 71-72 वाणव्यंतरों के आठ अवंतर भेद

73	क. तीनों लोक में व्यन्तरेन्द्रों के स्थान	109-110	जम्बूद्वीप में चन्द्र आदि पाँच ज्योतिषी देव
74-78	ख. अधोलोक में भवनेन्द्रों के स्थान वाणव्यन्तरेन्द्रों के भवनों का जघन्य, मध्यम और उत्कृष्ट विस्तार	111-112 113-114 115-117	लवण समुद्र में चन्द्र आदि पाँच ज्योतिषी देव धातकी खण्ड में चन्द्र आदि पाँच ज्योतिषी देव कालोद समुद्र में चन्द्र आदि पाँच ज्योतिषी देव
79	वाणव्यन्तरेन्द्रों की स्थिति	118-120	पुष्करवर द्वीप में चन्द्र आदि पाँच ज्योतिषी देव
(3) ज्योतिषी देवों का वर्णन		121-123	पुष्करार्ध द्वीप में चन्द्र आदि पाँच ज्योतिषी देव
80-81	पाँच ज्योतिषी देव	124-126	मनुष्य लोक में चन्द्र आदि पाँच ज्योतिषी देवों की कुल संख्या
82	ज्योतिषी देवों के विमानों का संस्थान	127-129	क. मनुष्य लोक के बाहर चन्द्र आदि पाँच ज्योतिषी देव
83-86	धरणि तल से ज्योतिषी देवों की ऊँचाई		ख. ज्योतिषी देवों की गति का संस्थान
87-91	ज्योतिषी देवों के मण्डल, मण्डलों का आयाम -विष्कम्भ, बाहल्य, परिधि	130-135	ज्योतिषी देवों की पंक्तियाँ
92-93	ज्योतिषी देवों के विमानों को वहन करने वाले देवों की संख्या	136-137	चन्द्र-सूर्य और मण्डलों में प्रदक्षिणावर्त गति
94-95	ज्योतिषी देवों की गति	138	नक्षत्र और ताराओं के अवस्थित मण्डल
96	ज्योतिषी देवों की ऋद्धि	139	ज्योतिषी देवों की गति का मनुष्यों पर प्रभाव
97-98	सर्व आभ्यन्तर, सर्व बाह्य, सर्वोपरि और सबसे नीचे भ्रमण करने वाले नक्षत्र	140	चन्द्र-सूर्य का ताप क्षेत्र
99-100	ताराओं का अंतर	141-146	चन्द्र की हानि वृद्धि का कारण
101-104	चन्द्र के साथ योग करने वाले नक्षत्र	147-148	चर-स्थिर ज्योतिषी देव
105-108	सूर्य के साथ योग करने वाले नक्षत्र	149-151	मनुष्य क्षेत्र के चन्द्र-सूर्य
		152	द्वीप-समुद्र के नक्षत्र, ग्रह व ताराओं की संख्या
		153	चन्द्र-सूर्य का नक्षत्रों से योग

154-156	क. चन्द्र-सूर्य का अंतर	209-213	आवलिकादि विमानों का आकार और क्रम
	ख. सूर्य से सूर्य का अंतर	214-216	क. कल्पपति विमानों का स्वरूप
	ग. चन्द्र से चन्द्र का अंतर		ख. कल्पपति विमानों के द्वार
157-158	एक चन्द्र का परिवार	217-218	भवनपति, वाणव्यंतर, ज्योतिष्क के भवन और विमान संख्या
159-162	ज्योतिषी देवों की स्थिति		
(4) वैमानिक देवों का वर्णन		219	भवनपति, वाणव्यंतर, ज्योतिष्क देवों का अल्प-बहुत्व
163-166	बारह देवलोको के बारह इन्द्र	220	वैमानिक देवियों की विमान संख्या
167	अहमिन्द्र ग्रैवेयक देव	221-224	अनुत्तर देवों का स्वरूप
168	ग्रैवेयक देवों में उपपात	225-232	देवताओं की आहारेच्छा और श्वासोच्छ्वास का प्ररूपण
169-173	बारह देवलोको की विमान संख्या	233-240	वैमानिक देवों का अवधिज्ञान क्षेत्र
174-179	वैमानिक देवों की स्थिति	241-246	विमानों की ऊँचाई व वर्ण आदि का वर्णन
180-183	ग्रैवेयक देवों के नाम संख्या स्थिति आदि	247-272	वैमानिक देवों का सामान्य परिचय तथा प्रासादों का वर्णन
184-186	अनुत्तर देवों के नाम, विमान संख्या, स्थान, स्थिति आदि	273-280	ईषत्प्राग्भारा पृथ्वी का स्थान, संस्थान और प्रमाण
187-188	विमानों के संस्थान	281-291	सिद्धों के स्थान, संस्थान, अवगाहना और स्पर्श
189-190	विमानों का आधार	292-293	सिद्धों के उपयोग
191-193	देवताओं में लेश्या और वर्ण	294-302	सिद्धों के सुख और उपमा
194-198	देवताओं की ऊँचाई व अवगाहना	303-305	जिनेन्द्र देवों की ऋद्धि
199-202	देवताओं की कामक्रीड़ा	306-308	देवेन्द्रस्तव का उपसंहार
203-204	देवताओं की गंध, दृष्टि और स्पर्श		
204-208	प्रकीर्णक विमानों की श्रेणी संख्या और अंतर		

10 मरण समाधि प्रकीर्णक

1 मंगलाचरण

2-9	अभ्युद्यत मरण विषयक शिष्य की जिज्ञासा	63	(3) अभियोगी भावना
10-13	अभ्युद्यत मरण का गुरु द्वारा कथन	64	(4) आसुरी भावना
14-15	तीन प्रकार की आराधना	65	(5) समोही भावना
16-20	दर्शन आराधक अल्प संसारी	66-67	असंक्लिष्ट भावना से शुद्धि
21	अश्रद्धा करने वाले का बाल मरण	68-69	पाँच प्रकार की शुद्धि विवेक की अपेक्षा समाधि प्ररूपण
22-35	संक्षेप में पंडित मरण का निरूपण. कछुवे आदि के उदाहरण सहित	70-77	बाल-मरण स्वरूप वर्णन
36	आहार करने के छः कारण	79-80	अभ्युद्यत मरण निरूपण
37	आहार न करने के छः कारण	81-82	मरण विधि के चौदह स्थान
38-44	पंडित मरण आराधक के लाभ	83	मरण विधि के वैकल्पिक छ स्थान
45-50	पंडित मरण कर्तव्य निरूपण. कांटे के उदाहरण सहित	84-92	आचार्य के छत्तीस गुण
51-52	शल्य रहित की शुद्धि	93-95	आचार्य के समीप आलोचना विधि का प्ररूपण
53-54	संवृत और असंवृत की निर्जरा	96-99	त्रिविध-द्विविध शल्य भेद प्ररूपण
55	शील और संयम से भाव शुद्धि	100-120	उदाहरण सहित आलोचना का विस्तार पूर्वक प्ररूपण
56	विशुद्ध चारित्र से दुःख क्षय	121-122	विशुद्ध भाव से आलोचना करने वाले अनुपयोगी भी आराधक
57-58	निःशल्य होने से विशुद्ध चारित्र	123-124	आलोचना के दस दोष और उसके त्याग का प्ररूपण
59-60	क. पाँच संक्लिष्ट भावनाओं का त्याग ख. एक असंक्लिष्ट भावना का समादर	125-126	आलोचक के प्रति आचार्यों की शिखामण
61	(1) कंदर्प भावना	127-128	बाह्य-आभ्यंतर बारह प्रकार के तप का आचरण
62	(2) किल्बिषक भावना	129	स्वाध्याय की महिमा
		130	श्रुतहीन का बाह्य तप

131-133	नित्यभोजी ज्ञानी की अधिक निर्जरा	240-248	पंडित मरण स्वीकारने का उपदेश
134	वास्तविक अनशन	249-254	तृष्णा की दुर्निवारता
135	अज्ञानी और ज्ञानी की निर्जरा में अंतर	255-257	निंदा और गर्हा पूर्वक मरण की प्रतीक्षा
136-143	ज्ञान की महिमा	258-269	पांच महाव्रत रक्षा प्ररूपण
144-146	बहुश्रुत की महिमा	270-289	आराधना का उपदेश
147-149	ज्ञान और चारित्र्य से कर्मक्षय	290-296	ज्ञान सहित आराधना
150-153	सम्यक्त्व युक्त चरण-करण के गुण	297-302	बोसिराववा की क्रिया का निरूपण
154-175	आत्म शुद्धि के विषय में विस्तार से प्ररूपण	303	आराधना के प्रति सिद्ध-अरिहंत केवली पदों का माहृत्य
176	संलेखना के दो प्रकार	304-307	वेदना के समय सहिष्णुता का उपदेश
177-188	बाह्य संलेखना व शरीर संलेखना की विधि	308-309	अभ्युद्यत विहार-पंडित मरण का प्ररूपण
189-208	आभ्यंतर संलेखना से कषाय-विजय व राग-द्वेष निग्रह	310-317	आराधनापताका हरण आदि का उपदेश
209-211	अप्रमाद का उपदेश	318-324	आराधनापताका के भेद-प्रभेद और फल
212-214	उपधित्याग	325-334	निर्यामक मार्गदर्शक का स्वरूप
215-216	आत्मा का अवलंबन	335-365	कषाय आदि की क्षमापना और शल्य के उद्धरण का प्ररूपण
217-221	प्रमाद प्रतिक्रमण, मिथ्यात्व प्रतिक्रमण	366-385	वेदना में सहिष्णुता और निर्वेद का उपदेश
222-233	क. निःशल्य आलोचना ख. आराधक-विराधक	386-401	गर्भवास आदि के दुःख और विविध जाति की योनियों में जन्म के दुःख का प्ररूपण व निर्वेद का उपदेश
234-236	शुद्ध प्रत्याख्यान	402-405	शरीर ममत्व को छेदन करने का उपदेश
237-239	क. लोक में सर्वत्र जन्म-मरण ख. सर्व योनियों में जन्म-मरण	406-408	उपसर्ग-परीषह की सहिष्णुता, अशुभ ध्यान का वर्जन

409-412	तथा राग-द्वेष करने का निषेध रोग व पीड़ा में सहिष्णुता और सनत्कुमार चक्रवर्ती का उदाहरण	475-478	निर्वेद प्राप्त अर्हन्नक मुनि का उदाहरण
		479	निर्वेद प्राप्त चाणक्य का उदाहरण
	उदाहरण	480-485	निर्वेद प्राप्त इलापुत्र के उल्लेख पूर्वक परीषह आदि सहने हेतु उपदेश
विविध उपसर्गों के समय सहिष्णुता रखने का उपदेश व उदाहरण			
413-425	राजा के अवग्रह से निर्वेद प्राप्त जिनधर्म श्रेष्ठी का उदाहरण	486-503	बावीस परिषह की अपेक्षा से भिन्न-भिन्न बावीस दृष्टान्तों का निरूपण
426-427	निर्वेद प्राप्त मैतार्य मुनि का उदाहरण	504-506	परीषह आदि सहन करने का उपदेश
428-431	निर्वेद प्राप्त चिलाती पुत्र का उदाहरण	507-524	धर्म के पालन में तिर्यच योनि के उदाहरण आदि
432-433	निर्वेद प्राप्त गजसुकुमाल मुनि का उदाहरण	525-526	तीन प्रकार के उपसर्गों को सहन करवाने के विषय में
434-435	निर्वेद प्राप्त सागरचन्द्र का उदाहरण		इंगिति, पादपोषगमन मरण प्राप्त साधु का प्ररूपण
436-440	निर्वेद प्राप्त अर्वाति सुकुमाल का उदाहरण	527	पादपोषगमन मरण के दो भेद
441-442	निर्वेद प्राप्त चन्द्रावतंसक राजा का उदाहरण	528-550	पादपोषगमन मरण के स्वरूप का प्ररूपण
443	निर्वेद प्राप्त दमदांत महर्षि का उदाहरण	551-552	विषम स्थान पर स्थित आराधक मुनि की अपेक्षा से
444	निर्वेद प्राप्त खंधक मुनि के शिष्यों का उदाहरण		बस्ती में रहे हुए मुनि की आराधना की अनुकूलता का
445-449	निर्वेद प्राप्त धन्ना-शालिभद्र का उदाहरण		उदाहरण
450-465	निर्वेद प्राप्त पांच पांडव का उदाहरण	553-565	उपसर्ग महाभय के प्रसंग में अनुप्रेक्षा का निरूपण
466	निर्वेद प्राप्त दण्डक अणगार का उदाहरण	570-640	बारह भावनाओं का विस्तार से निरूपण
467-468	निर्वेद प्राप्त सुकोशल मुनि का उदाहरण	641-655	निर्वेद उपदेश पूर्वक पंडित मरण का निरूपण
469-474	निर्वेद प्राप्त ब्रजस्वामी का उदाहरण तथा रथावतीगिरी और कुञ्जरावर्त के नाम का हेतु	660-661	धर्मध्यान-शुक्लध्यान के माहत्म्य का निरूपण

45 पिण्ड निर्युक्ति विषय-सूची

पिण्ड. गा.	पिण्ड निर्युक्ति विषय-सूची	पिण्ड. गा.	पिण्ड निर्युक्ति विषय-सूची
गाथांक			
1	पिण्ड निर्युक्ति के आठ भेद	18	(4) तीनों मतों का निराकरण
2	पिण्ड शब्द के बारह पर्याय	19	आगम सम्मत मत का प्रतिपादन
3	पिण्ड के चार अथवा छः निक्षेप	20	अचित्त अप्काय का प्रयोग
4	पिण्ड के छः निक्षेप		क. अचित्त अप्काय और उनका प्रयोजन
5	नाम पिण्ड के चार प्रकार		ख. वर्षाकाल के प्रारंभ में वस्त्र धोने का विधान
6	स्थापना पिण्ड के दो प्रकार व उनके उदाहरण		ग. अन्य ऋतुओं में वस्त्र धोने का निषेध
7	द्रव्यपिण्ड के तीन भेद	21	घ. अन्य ऋतुओं में वस्त्र धोने से लगने वाले दोष
8	प्रत्येक के नौ-नौ भेद		वर्षाकाल के प्रारंभ में वस्त्र न धोने से लगने वाले दोष
9	क. पृथ्वीकाय के तीन भेद	22	(1) वर्षाकाल से पूर्व कितनी उपधि का प्रक्षालन आवश्यक
10	ख. सचित्त (सजीव) पृथ्वीकाय के दो भेद		(2) आचार्य व ग्लान के वस्त्र मलिन होने पर धोने का आदेश
11	निश्चय सचित्त पृथ्वी व व्यवहार सचित्त पृथ्वी की व्याख्या		विश्रमणा नहीं करने योग्य उपधियों के नाम
12-14	मिश्र पृथ्वीकाय की व्याख्या		(1-3) वस्त्र धाने से पूर्व विश्रमणा का निर्देश व उनकी विधि
15	(1) अचित्त (निर्जीव) पृथ्वीकाय और उनके प्रयोजन		(4) वस्त्र प्रक्षालन हेतु जल ग्रहण की विधि
16	अप्काय के भेद-प्रभेद		(5) वस्त्र पहले गुरु, तपस्वी, ग्लान, शैक्ष के धोवे फिर अपने धोवे
17	निश्चय और व्यवहार नय से सचित्त अप्काय		(6) क. वस्त्रों को शिला पर पटक-पटक कर या लकड़ी से पीट-पीट कर धोने का निषेध
	(1) मिश्र अप्काय का स्वरूप		ख. वस्त्रों को धोने के बाद अग्नि के ताप में सुखाने का निषेध
	(2) मिश्र अप्काय के सम्बन्ध में तीन विभिन्न मत		
	(3) तीन आदेश और उनकी समीक्षा		

23	ग. सुखाये गये वस्त्रों की निगरानी रखने का विधान	32	अचित्त वनस्पतिकाय से प्रयोजन
	घ. वस्त्र प्रक्षालन व सुखाने में असंयम के लिए कल्याणक तप के प्रायश्चित्त का विधान	33	द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और पंचेन्द्रियों के तीन भेद तथा उनके शरीरों से प्रयोजन
24	क. तेजस्काय के तीन भेद	34-35	द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और पंचेन्द्रिय से प्रयोजन
	ख. सचित्त तेजस्काय के दो भेद	36	पंचेन्द्रिय तिर्यच का उपयोग
25	क. निश्चय सचित्त तेजस्काय	37	सचित्त आदि तीनों प्रकार के मनुष्यों का उपयोग
	ख. व्यवहार सचित्त तेजस्काय	38	देवता विषयक उपयोग
	ग. मिश्र सचित्त तेजस्काय	39	मिश्र पिंड के भंग
26	अचित्त तेजस्काय के उदाहरण	40	मिश्रपिंड के उदाहरण
27	वायुकाय के भेद-प्रभेद	41-42	क्षेत्र पिंड का और कालपिंड का वर्णन
	सचित्त वायुकाय के चार भेद	43	भावपिंड का वर्णन
	(1) अचित्त वायुकाय के पांच भेद	44	(1-4) प्रशस्त-अप्रशस्त भावपिंड के भेद-प्रभेद
	(2) क. अचित्त वायुकाय की क्षेत्र एवं काल मर्यादा	45	अचित्त द्रव्यपिंड और प्रशस्त भावपिंड से प्रयोजन
	ख. नदी में द्रुति स्थित वायु के पुनः सचित्त होने का कारण	(1)	ज्ञान-दर्शन-चारित्र के पिंड
28	अचित्त वायुकाय से प्रयोजन	46	भाव पिंड की परिभाषा एवं निरुक्त
29	क. वनस्पतिकाय के तीन भेद	47-48	प्रस्तुत प्रकरण में अचित्त पिंड का अधिकार
	ख. सचित्त वनस्पतिकाय के दो भेद	49	(1-3) आहार और निर्वाण का कार्य-कारण भाव
30	मिश्र वनस्पतिकाय	50	पिंड का उपसंहार और एषणा का प्रारंभ
31	अचित्त वनस्पतिकाय	51	एषणा के समानार्थक शब्द
		52	क. एषणा के चार भेद

- ख. द्रव्य और भाव एषणा के तीन भेद
 (1) एषणा, गवेषणा, मार्गणा और उद्गोपना के उदाहरण
 (2) एषणा, गवेषणा, मार्गणा और उद्गोपना का संयोजन
 (3) भावेषणा के तीन भेद
 (4) गवेषणा, ग्रहणैषणा और ग्रासैषणा के क्रम की सार्थकता
 53 गवेषणा के चार भेद
 54-55 द्रव्य गवेषणा पर हरिण और हाथी का उदाहरण
 56 क. उद्गम शब्द के समानार्थक शब्द
 ख. उद्गम के चार भेद
 57 (1) द्रव्य और भाव उद्गम का स्वरूप
 (2-4) द्रव्य उद्गम में लङ्कुप्रियकुमार का उदाहरण
 (5) क. दर्शन शुद्धि से चारित्र शुद्धि
 ख. उद्गम शुद्धि से चारित्र शुद्धि
 58-59 सोलह उद्गम दोष
 60 आधाकर्म सम्बन्धी चार द्वार
 61 आधाकर्म के समानार्थक शब्द
 (1) द्रव्य आधा कर्म के उदाहरण
 62 आधा कर्म की व्याख्या
 63 द्रव्य अधःकर्म की व्याख्या
 64 भाव अधःकर्म की व्याख्या
- (1-2) आधाकर्म ग्राही की अधोगति एवं कर्म बंधन
 (3) आत्मघ्न की व्याख्या
 65-66 द्रव्य आत्मघ्न और भाव आत्मघ्न
 66 (1) चारित्र के नाश से ज्ञान और दर्शन का नाश
 67 क. द्रव्य आत्मकर्म का स्वरूप
 ख. भाव आत्मकर्म के दो भेद
 ग. भाव आत्मकर्म की व्याख्या
 (1) परकृत कर्म का आत्म कर्मरूप में परिणत होना
 (2) परक्रिया कैसे संक्रात होती है?
 (3-4) क. कूट उपमा का जिनवचनों से विरोध
 ख. भावकूट से कर्म बंध
 (5) आधा कर्म आहार ग्रहण करने से कर्म बंध
 प्रतिसेवना, प्रतिश्रवणा, संवासन और अनुमोदन की क्रमशः
 68 गुरुता-लघुता
 (1) प्रतिसेवना आदि चार द्वार
 (2-3) प्रतिसेवना की व्याख्या
 (4) प्रतिश्रवणा की व्याख्या
 (5) संवास और अनुमोदन की व्याख्या
 (6-8) प्रतिसेवना से संबंधित स्तेन का उदाहरण
 (9-11) प्रतिश्रवण से संबंधित राजसुत का उदाहरण

69	राजसुत दृष्टांत में प्रतिश्रवण आदि चारों पदों का कथन	77	आधाकर्म पेय का उदाहरण
	(1-2) संवास में पल्ली का उदाहरण	78	आधाकर्म खादिम-स्वादिम का उदाहरण
	(3) अनुमोदन में राजदुष्ट का उदाहरण	79	निष्ठित और कृत शब्द का अर्थ
	(4) प्रकारान्तर से अनुमोदना का स्वरूप	80	चांवल आदि से संबंधित निष्ठित और कृत में दुगुना आधाकर्म
70	आधाकर्म शब्द के समानार्थक शब्दों की अर्थ विषयक चतुर्भंगी		(1-5) वृक्ष की छाया के सम्बन्ध में कल्य-अकल्य का निर्णय
	(1-3) अर्थ और व्यंजन की चतुर्भंगी और उनके उदाहरण		
	(4-6) आधाकर्म शब्द के सम्बन्ध में चतुर्भंगी	81	(1) निष्ठित और कृत की चतुर्भंगी
	(7) आधाकर्म शब्द के समानार्थक शब्द	82	(1-3) अतिक्रमादि चार दोष व नुपूरण्डिता का उदाहरण
71	आधाकर्म आहार ग्रहण करने से आत्मा की अधोगति	83	आधाकर्म आहार ग्रहण में आज्ञा भंग आदि चार दोष
72	साधर्मिक के निमित्त बना हुआ आहार आधाकर्म है		(1) आज्ञा भंग दोष स्वरूप
73	साधर्मिक के बारह भेद		(2) अनवस्थाय दोष का स्वरूप
	(1-3) बारह प्रकार के लक्षण		(3-4) मिथ्यात्व दोष का स्वरूप
	(4-5) नाम साधर्मिक सम्बन्धी कल्य-अकल्य विधि		(5) विराधना दोष का स्वरूप
	(6) स्थापना साधर्मिक और द्रव्य साधर्मिक सम्बन्धी विधि	84	अकल्य आधाकर्म विषयक पांच द्वार
	(7) क्षेत्र साधर्मिक सम्बन्धी कल्य-अकल्य विधि		(1) आधाकर्म अभोज्य है
	(8-22) प्रवचन आदि सात पदों के इकवीस भंग और उनके उदाहरण	85-86	(1) अकल्य और अभोज्य हेतु वमन दृष्टांत
74	आधाकर्म का स्वरूप समझाने के लिए अशन आदि की व्याख्या		(2) भेड़, ऊंटनी का दूध, लहसुन, प्याज, मद्य व गोमांस
75	अशनादि सम्बन्धी कृत और निष्ठित के आधार पर चतुर्भंगी	87	अभक्ष्य उसी प्रकार आधाकर्म भोजन अभक्ष्य
76	(1-6) आधाकर्म अशन शाल्योदन का उदाहरण	88	आधाकर्म आहार से स्पृष्ट आहार भी अकल्य
			आधाकर्म आहार वाले पात्र में शुद्ध आहार भी अकल्य

89	वमन और उच्चार के समान आधाकर्म आहार के परिहार का निर्देश	96	(1-2) औघ औद्देशिक से संबंधित शंका और समाधान साधु को अमूर्च्छित रहकर भिक्षा करने का निर्देश
	(1-3) क. आधाकर्म आहार का विधि पूर्वक और अविधि पूर्वक त्याग		(1-3) गोवत्स का दृष्टांत एवं उपनय
	ख. अविधि परिहरण हेतु साधु का दृष्टांत		(4) विभाग औद्देशिक की संभाव्यता
	(4-7) द्रव्य कुल आदि की अपेक्षा से विधि परिहरण तथा उसकी सार्थकता	97-99	औद्देशिक आदि चार भेदों की व्याख्या
	(8) प्रश्न द्वारा आधाकर्म आहार का निर्णय	100	(1) अछिन्न द्रव्य औद्देशिक आहार
	(9) आत्मशुद्धि का मूल आधार आत्म परिणाम		(2) छिन्न द्रव्य औद्देशिक आहार
90	(1) शुद्ध आहार लेने पर भी अप्रशस्त आत्म परिणामों से अशुभ कर्मों का बंध एवं उसका दृष्टांत	101	कल्प्य और अकल्प्य उद्दिष्ट आहार
	(2-4) शुद्ध आहार गवेषी मुनि को आधाकर्म युक्त अशुद्ध आहार मिलने पर भी कैवल्य प्राप्ति व उदाहरण	102-103	सम्प्रदान विभाग की अपेक्षा कल्याकल्प्य विधि
	आज्ञा भंग को स्पष्ट करने वाला उद्यानद्वय कथानक	(1-2)	उद्दिष्ट औद्देशिक का स्वरूप
91	(1-4) क. आज्ञा के आराधक का सदोष आहार भी निर्दोष ख. आज्ञा विराधक का निर्दोष आहार भी सदोष	102-103	कृत औद्देशिक आहार का स्वरूप
	आधाकर्म भोजी की दुर्गति का उदाहरण	104	कर्म औद्देशिक आहार का स्वरूप
92	औद्देशिक आहार के दो भेद	105-106	कल्प्य और अकल्प्य कर्म औद्देशिक आहार व लेने वाले की निंदा
93	विभाग औद्देशिक के बारह भेद	107	क. पूतिकर्म के भेद-प्रभेद
95	औघ औद्देशिक के उदाहरण	ख.	द्रव्य पूतिकर्म की व्याख्या
		ग.	भाव पूतिकर्म के दो भेद
		108	(1-2) द्रव्य पूति कर्म की व्याख्या व गोबर का उदाहरण
		109	भाव पूति कर्म की व्याख्या
		110	आधा कर्म, औद्देशिक आदि छह दोषों का उद्गम कोटि में

समावेश

111	क. भावपूति के दो भेद	128	स्वस्थान स्थापना और परस्थान स्थापना के दो भेद
	ख. बादर भावपूति के दो भेद		(1) विकारी और अविकारी दो प्रकार के द्रव्य
112	भक्त-पान पूति की व्याख्या		(2-3) स्थापना दोष का उदाहरण
113	(1-2) उपकरण पूति के भंग	129	परंपरा स्थापित का उदाहरण
	(3) आहार पूति का स्वरूप	130	प्राभृतिका का स्वरूप
114	भक्त-पान पूति का स्वरूप	131	क. प्राभृतिका के दो भेद
	115-116 (1-3) सूक्ष्मपूति की व्याख्या		ख. प्रत्येक प्राभृतिका के दो-दो भेद
	(4) दो प्रकार के कार्य	132-135 (1)	प्राभृतिका के उदाहरण
117	(1-4) सूक्ष्मपूति का परिहार शक्य नहीं है	136	प्राभृतिका आहार करने वाले की दुर्गति
118	द्रव्यपूति के कल्य-अकल्य का विधान		(1-6) प्रादुष्करण दोष का उदाहरण
119	आधाकर्म और पूति की भिन्नता	137-138	प्रादुष्करण के दो भेद व व्याख्या
	(1) आधाकर्म और पूतिकर्म के जानने की विधि	138	(1) चुल्ली के तीन प्रकार
120	मिश्रजात के तीन भेद		(2) प्रगटीकरण के उदाहरण
	(1) यावदर्थिक मिश्र जानने की विधि		(3-5) कल्य और अकल्य प्रकाश करण
121	यावदर्थिक मिश्र जानने की विधि		(6) आहार परिष्ठान के साथ पात्र शुद्धि
122	पाखंडी मिश्र और साधु मिश्र जानने की विधि	139	क. क्रीतकृत के दो भेद
123-124	अकल्य मिश्रजात की भयंकरता का उदाहरण		ख. प्रत्येक क्रीतकृत के दो-दो भेद
125	पात्रशुद्धि की विधि		ग. परद्रव्य क्रीत के तीन भेद
126	स्थापना दोष के भेद-प्रभेद	140	आत्मक्रीत के दो भेद
127	परस्थान स्थापना के अनेक भेद	141	आत्मक्रीत दोष की व्याख्या

142	क. परभाव क्रीत दोष की व्याख्या	(1-4) परग्राम अभ्याहृत में मोदक का उदाहरण
ख.	परभाव क्रीत दोष के सहभावी मंख आदि तीन दोषों का उदाहरण	(5-6) स्वग्राम अभ्याहृत का उदाहरण
143	(1-3) आत्मभाव क्रीत के अनेक भेद	158 आचीर्ण अभ्याहृत के दो भेद
144	प्रामित्य दोष के दो भेद	159 देश और देश-देश की परिभाषा
	(1-4) लौकिक प्रामित्य दोष वाले भगिनि का उदाहरण	160 कल्प्य और अकल्प्य आचीर्ण अभ्याहृत
145	लोकोत्तर प्रामित्य के दोष	161 आचीर्ण अभ्याहृत के तीन भेद
146	लोकोत्तर प्रामित्य के अपवाद	162 क. उद्भिन्न के दो भेद
147	क. परिवर्तित दोष के दो भेद	ख. पिहित के दो भेद
	ख. प्रत्येक परिवर्तित दोष के दो-दो भेद	163 (1-7)-164 पिहितोद्भिन्न और कपाटोद्भिन्न की व्याख्या और दोष
148	(1-2) लौकिक परिवर्तित का उदाहरण	165 मालापहृत के दो भेद
149-150	लोकोत्तर परिवर्तित की व्याख्या	166 (1-2) -168 जघन्य मालापहृत में भिक्षु का और उत्कृष्ट मालापहृत में वसुन्धरा का उदाहरण
151	क. अभ्याहृत के दो भेद	169 मालापहृत के तीन भेद
ख.	प्रत्येक अभ्याहृत दोष के दो-दो भेद	170 मालापहृत का अपवाद
152	नौ निशीथ अभ्याहृत के भेद-प्रभेद	171 अनुच्चोत्क्षिप्त और उच्चोत्क्षिप्त मालापहृत का स्वरूप
153-154	जलमार्ग अभ्याहृत के अनेक भेद	172 आच्छेद्य के तीन भेद
155	स्व ग्राम अभ्याहृत के दो भेद	173 प्रभु आच्छेद्य में गोपालक का उदाहरण
156	नौ गृहांतक अभ्याहृत के अनेक भेद	174 (1-4) स्वामी आच्छेद्य का उदाहरण
	(1) नौ निशीथ अभ्याहृत की व्याख्या	175-177 (1-2) स्तेन आच्छेद्य के उदाहरण
157	निशीथ अभ्याहृत की व्याख्या	

178	निसृष्ट के भेद, स्वरूप व मोदक का उदाहरण	ख. मिश्र द्रव्योत्पादना
179-181	साधारण अनिसृष्ट का उदाहरण	194 (3) भाव उत्पादना के दो भेद
181 (1)	भोजन अनिसृष्ट के दो भेद	195-196 अप्रशस्त भावोत्पादना के सोलह भेद
182-185	कल्य और अकल्य अनिसृष्ट	197 क. पाँच प्रकार की धात्रियाँ
186	अध्यवपूरक के तीन भेद	ख. प्रत्येक धात्री के दो-दो भेद
187-188 (1)	कल्य और अकल्य अध्यवपूरक	198 धात्री शब्द की व्युत्पत्ति
189	सोलह भेद वाले उद्गम के दो भेद	(1-6) क्षीर धात्री दोष का वर्णन
190	अविशोधि कोटि का व्याख्या	(7) स्थूल स्तन वाली धात्री का दूध पीने से बालक का नाक
191	अविशोधि कोटि से स्पृष्ट अन्न के दोष	चपटा व कूपर स्तन वाली का दूध पीने से बालक लम्बे
192 (1)	विशोधि कोटि उद्गम (परित्याग) के चार भेद	मुख वाला
(2-5)	विशोधि कोटि की चतुर्भुगी	(8-9) क्षीर धात्री के वर्ण दोष वर्णन
(6) क.	कोटिकरण के दो भेद	(10-13) मज्जन धात्री आदि शेष धात्री दोष का वर्णन
ख.	उद्गम कोटि के छः भेद	(14) क्रीडन धात्री तेज बोलने वाली तो बालक क्लीन
ग.	विशोधि कोटि के अनेक भेद	मुख वाला, मृदु बोलने वाली तो अव्यक्त बोलने वाला
(7)	प्रकारान्तर से 9,18,27,54,90 व 270 भेद	(15) स्थूल क्रीडन धात्री से बालक चौड़े पैरों वाला, शुष्क
193	उद्गम और उत्पादन की भिन्नता	कटि वाली धात्री के गोद में बालक को कष्ट अनुभव
194 क.	उत्पादन के चार भेद	तथा कर्कश धात्री के पास रहने वाला बालक डरपोक
ख.	द्रव्य उत्पादना के तीन भेद	199 धात्री दोष में संगम स्थविर एवं दत्त शिष्य की कथा
ग.	भाव उत्पादना के सोलह भेद	200-201 क. दूती दोष के दो भेद
(1)	सचित्त द्रव्योत्पादना	ख. प्रत्येक दूती दोष के दो-दो भेद
(2) क.	अचित्त द्रव्योत्पादना	

ग. छन्न दूती के दो भेद		(3) अतिथि वनीपक
(1) स्वग्राम और परग्राम प्रकट दूतीत्व		(4-5) श्रान वनीपक
(2) स्वग्राम-परग्राम लोकोत्तर छन्न दूतीत्व	211	ब्राह्मण वनीपक आदि की दोष रूपता
(3) स्वग्राम लौकिक-लोकोत्तर छन्न दूतीत्व	212	काकादि वनीपक
202-203 प्रगट परग्राम दूती विषयक पिता-पुत्री की कथा	213	अपात्र प्रशंसा दोष
204 निमित्त दोष के छह प्रकार	214	चिकित्सा के तीन भेद
205 निमित्त दोष का ग्राम भोजक उदाहरण		(1-3) चिकित्सा के तीनों भेदों की व्याख्या
206 आजीविका के पाँच भेद	215	चिकित्सा में दोषों की संभावना-दुर्बल व्याघ्र का दृष्टांत
207 पाँच भेदों की व्याख्या	216	क्रोधादि चार प्रकार के पिंड, उनसे संबंधित दृष्टांत व नगर
(1) जाति उपजीविका	217-218 (1)	क्रोध पिंड की व्याख्या व उदाहरण
(2) जाति उपजीविका का उदाहरण	219 (1-5)	मानपिंड की व्याख्या व उदाहरण
(3) कुल आजीविका		(6) छह अधम पुरुषों के नाम व उदाहरण
(4) शिल्प आजीविका	(7-8)	मानपिंड पर सेवई दृष्टांत
पाँच प्रकार के वनीपक	(9-15)	मायापिंड पर आषाढ भूति का उदाहरण
(1) वनीपक शब्द की व्याख्या	220 (1-2)	लोभपिंड पर सिंह केशरक मोदक का उदाहरण
पाँच प्रकार के श्रमण	221	संस्तव के दो भेद
(1) श्रमण वनीपक	222	पूर्व संस्तव और पश्चात् संस्तव का स्वरूप
श्रमण वनीपक की दोष रूपता		(1) परिचय करने की विधि
(1) ब्राह्मण वनीपक		(2) पूर्व संस्तव का उदाहरण
(2) कृपण वनीपक	223	पश्चात् संस्तव का उदाहरण

224	पूर्व-पश्चात् संस्तव के दोष	237	भाव ग्रहणैषणा के दस भेद
225	वचन संस्तव की व्याख्या	238	क. शंक्ति दोष की चतुर्भंगी
	(1) पूर्व संस्तव की व्याख्या	ख. एक भंग शुद्ध है शेष भंग अशुद्ध है	
226	(1) पश्चात् संस्तव की व्याख्या	(1-2)	सोलह उद्गम दोष और नव म्रक्षितादि दोष ये 25 दोष
227	(1-2) विद्या प्रयोग- भिक्षु उपासक का उदाहरण	239	उपयोग युक्त छद्मस्थ श्रुतज्ञानी का लिया हुआ सदोष आहार भी शुद्ध है
228	(1) मंत्र प्रयोग- मुरुण्ड राजा और पादलिप्तसूरि कथानक		(1) श्रुतज्ञानी द्वारा लाये हुए आहार का केवली द्वारा ग्रहण करना
229	मंत्र प्रयोग करने के दोष	240	श्रुत के अप्रामाण्य होने पर चारित्र आराधना का व्यर्थ होना
230	चूर्ण योग के प्रयोग में क्षुल्लकद्वय एवं चाणक्य कथानक	(1-3)	ग्रहण और परिभोग सम्बन्धी चतुर्भंगी
231	चूर्ण प्रयोग दोष	(4)	सर्व दोषों की मूल शंका
	(1) योग के भेद-प्रभेद	241	एषणीय और अनेषणीय का मूल आधार शुद्धाशुद्ध परिणाम
	(2-4) आहार्य पाद लेपन में समित आचार्य का कथानक	242	म्रक्षित के दो भेद
	(5-6) मूलकर्म के विषय में भिन्नयोनिका कन्या का दृष्टांत	243	क. सचित्त म्रक्षित के तीन भेद
232	(7-11) मूलकर्म प्रयोग- विवाह दोष का उदाहरण	ख. अचित्त म्रक्षित के दो भेद	
233	गर्भ परिशाटन एवं आदान-राजपन्दिद्वय का दृष्टांत	ग. अचित्त म्रक्षित कल्प्य और अकल्प्य	
234	ग्रहणैषणा की विशुद्धि	(1) सचित्त पृथ्वीकाय म्रक्षित के दो भेद	
235	गवेषणा और ग्रहणैषणा की भिन्नता का कथन	(2) क. सचित्त अज्काय म्रक्षित के चार भेद	
	क. शक्ति और अपरिणत ये दो दोष साधु स्वयं लगाता है	ख. सचित्त वनस्पति म्रक्षित के चार भेद	
	ख. शेष आठ दोष गृहस्थ लगाते हैं		
236	ग्रहणैषणा के चार निक्षेप		
	(1-3) द्रव्य ग्रहणैषणा में वानर यूथ का उदाहरण		

244	(3) तेजस्काय, वायुकाय और त्रसकाय म्रक्षित का निषेध	253	(1-2) सात भेदों की व्याख्या
245	क. सचित्त पृथ्वीकाय आदि से म्रक्षित के चार विकल्प ख. प्रारंभ के तीन भंग अशुद्ध और एक भंग शुद्ध क. अचित्त पृथ्वीकाय म्रक्षित की चतुर्भंगी ख. अगर्हित म्रक्षित का ग्रहण और गर्हित का निषेध (1) अगर्हित म्रक्षित का निषेध (2) गर्हित म्रक्षित का निषेध		अचित्त तेजस्काय म्रक्षित से यतनापूर्वक लेने की विधि (1) कड़ाह से दीया जाने वाला उदक घटित न हो तो कल्पनीय (2-3) क. सोलह भंगों का विवरण ख. प्रथम भंग शुद्ध और शेष भंग अशुद्ध
246	क. षट्काय निक्षिप्त के दो भेद ख. प्रत्येक भेद के दो-दो भेद क. पृथ्वीकाय म्रक्षित के 6 भेद	254	क. अत्युष्ण इक्षुरस आदि लेने से दो प्रकार की विराधना ख. वायुकाय निक्षिप्त के दो भेद
247	ख. इसी प्रकार शेष पाँच काय म्रक्षित के 6-6 भेद सब मिलकर षट्काय म्रक्षित के 36 भेद ग. अश्रिकाय में सात निक्षेप	255	क. वनस्पतिकाय और त्रसकाय निक्षिप्त का वर्णन ख. अनंतर निक्षिप्त लेने का निषेध ग. परम्पर निक्षिप्त लेने का निषेध
248	सचित्त पृथ्वीकाय आदि म्रक्षित के भंगों का वर्णन	256	सचित्त-अचित्त और मिश्र पिहित की चतुर्भंगी
249	सचित्त पृथ्वीकाय म्रक्षित के 432 भांगे बनाने की विधि	257	अवान्तर भंग 432 बनाने की विधि
250	कल्प्य और अकल्प्य म्रक्षित सचित्त	258-259	अनन्तरा पिहित और परंपरा पिहित का वर्णन
251-251 (1)	(1) सचित्त-अचित्त के आधार पर चतुर्भंगी		(1) अचित्त पिहित की चतुर्भंगी
	(2) अनंतर व परंपर की मार्गणा	260	क. सचित्त, अचित्त, मिश्र और साधारण से संहत
	(3) अनंतर व परंपर निक्षिप्त की व्याख्या	261	ख. संहत की तीन चतुर्भंगी
252	तेजस्काय म्रक्षित के सात भेद	262	चार सौ बत्तीस अवान्तर भंग
		263	संहत की व्याख्या
			सचित्त-अचित्त की चतुर्भंगी
			(1) आर्द्र और शुष्क की चतुर्भंगी

(2-3) अल्प और अधिक की चतुर्भुगी	283	षट्काय व्यग्रहस्ता से आहारादि लेने का निषेध
264-264 (1) कल्प्य और अकल्प्य संहत की चतुर्भुगी	284	सरसों के फूल सिर में लगाये हुए के हाथ से आहारादि लेने का निषेध
265-270 वर्जनीय दायक के चालीस भेद		
271 क. अपवाद में 25 दायकों से लेना		(1) बदर आदि से युक्त दात्री से आहारादि लेना एक आचार्य का मत
ख. पन्द्रह दायकों से अपवाद में भी न लेना		
272 क. बालिका से आहारादि लेने का निषेध	285	दो प्रकार की दातृयों से आहारादि लेने का निषेध व कारण
ख. बालदायक-बालिका का दृष्टांत	286	साधारण तथा चोरी की वस्तु लेने का निषेध
273 वृद्ध से आहारादि लेने का निषेध	287	प्राभृतिका अपाय और स्थापित द्रव्य लेने का निषेध
274 मत्त और उन्मत्त से आहारादि लेने का निषेध	288	आभोगदायक और अनाभोगदायक की व्याख्या
275 कम्पित हाथ वालों से और ज्वर ग्रस्त से आहारादि लेने का निषेध		(1-8) निषिद्ध दाताओं से अपवाद में आहारादि लेने का विधान
276 अंध और गलित कुष्ठ वाले से आहारादि लेने का निषेध	289-291 (1)	उन्मिश्र की चतुर्भुगी और व्याख्या
277 पादुका पहने हुए से, बद्ध से और हस्तपाद छिन्न से आहारादि लेने का निषेध	292	क. अपरिणत द्रव्य के भेद ख. द्रव्य अपरिणत के 6 भेद
278 नपुंसक के हाथ से आहारादि लेने का निषेध	293	द्रव्य अपरिणत की व्याख्या
279 गर्भिणी और बालवत्सा से आहारादि लेने का निषेध	294	भाव अपरिणत दाता
280 भोजन करती हुई से तथा मंथन करती हुई से आहारादि लेने का निषेध	295	भाव अपरिणत ग्रहिता (1-10) क. लेपकृत द्रव्य लेने का विधान ख. लेपकृत द्रव्य के सम्बन्ध में प्रश्नोत्तर
281 आठ प्रकार की निषिद्ध दातृयों से आहारादि लेने का निषेध		
282 पाँच प्रकार की दातृयों से आहारादि लेने का निषेध	296	अलेप वाले द्रव्य

297	अल्प लेप वाले द्रव्य	312	प्रमाण दोष के पाँच भेद
298	बहु लेप वाले द्रव्य		(1-3) आहार प्रमाण के दोष एवं उनकी व्याख्या
299	संसृष्ट, असंसृष्ट, सावशेष और निरवशेष के आठ भंग	313	हितकारी परिमित व अल्प आहार करने वाला निरोगी
300	क. छर्दित की तीन चतुर्भंगी		(1) हित-अहित की व्याख्या
	ख. चार सौ बत्तीस अवान्तर भंग		(2) मिताहार की व्याख्या
301	क. छर्दित ग्रहण करने से लगने वाले दोष		(3) काल के तीन भेद
	ख. छर्दित दोष में मधुबिन्दु का दृष्टांत		(4-6) शीतकाल, उष्णकाल और साधारण काल में आहार
302	(1-4) क. ग्रासैषणा के चार निक्षेप		और पानी के विभाग
	ख. द्रव्य ग्रासैषणा में मत्स्य का उदाहरण	314	सांगार और सधूम दोष
	ग. भाव ग्रासैषणा के पाँच भेद		(1-3) अंगार और धूम की व्याख्या
	(5) ग्रासैषणा का उपदेश	315	भोजन के छयालीस दोष
303	भाव ग्रासैषणा के दो भेद	316	आहार करने का प्रयोजन
303 (1)	अप्रशस्त भाव ग्रासैषणा के पाँच भेद	317	क. आहार करने के 6 कारण
304-305	संयोजना के दो भेद		ख. आहार न करने के 6 कारण
306	द्रव्य संयोजना के दो भेद	318	(1-2) आहार करने के 6 कारणों का विवेचन
307	बाह्य संयोजना की व्याख्या	319	आहार त्यागने का उपदेश
308	भाव संयोजना की व्याख्या	320	(1-2)-321 आहार त्यागने के 6 कारणों का विवेचन
309	द्रव्य संयोजना की व्याख्या	322	एषणा के सैंतालीस दोष
310	आहार का प्रमाण	323	आहार-विधि की फलश्रुति
311	यात्रामात्राहार का प्रमाण तथा अवम आहार	324	सुविहित मुनि का अपवाद सेवन भी निर्जरा का हेतु



जैनागम निर्देशिका विषय सूची						
परिशिष्ट नं. 1						
32	आगमों की अध्ययन, उद्देशक, सूत्रांक की तालिका					
1.	आचारांग सूत्र श्रुतस्कंध, अध्ययन, उद्देशक,					
	सूत्रांक सूचक तालिका	4	1	2	6	
	प्रथम श्रुतस्कंध		2	3	6	
	उद्देशक		3	4	3	
1	सूत्र संख्या		4	4	4	
	1	9		1	5	
	2	9	5	2	5	
	3	13		3	5	
	4	8		4	4	
	5	7		5	6	
	6	7		6	5	
	7	7		1	6	
2	1	6	6	2	4	
	2	6		3	3	
	3	6		4	6	
	4	6		5	3	
	5	8				
	6	11	7 अनुपलब्ध			

अध्ययन	उद्देशक	सूत्र संख्या			
८	१	५	६	६	६
	२	५	७	८	८
	३	४	८	१७	१७
	४	३	९	९	९
	५	४	१०	८	८
	६	५	११	५	५
	७	४	१	१५	१५
	८	२५	२	१६	१६
	१	२३	३	२१	२१
	२	१६	१	२०	२०
	३	१४	२	२०	२०
९	४	१७	३	१६	१६
			४	१३	१३
			५	२०	२०
			६	२८	२८
			७	७	७
			८	१४	१४
			९	५	५
			१०	१४	१४
			११	१६	१६
			१२	१६	१६
			१३	१६	१६
द्वितीय श्रुतस्कंध					
अध्ययन	उद्देशक	सूत्र संख्या			
१	१	११	५	२८	२८
	२	५	६	१४	१४
	३	८	७	५	५
	४	४	८	१४	१४
	५	७	९	१६	१६

अध्ययन	उद्देशक	सूत्र संख्या			
8	0	4	3	1	22
9	0	4		2	17
10	0	24		3	22
11	0	20		4	21
12	0	1	4	1	22
13	0	40		2	31
14	0	3	5	1	22
15	0	57		2	27
16	0	11	6	0	25
2. सूत्रकृतांग सूत्र श्रुतस्कंध अध्ययन, उद्देशक, सूत्रांक,					
गाथांक सूचक तालिका					
प्रथम श्रुतस्कंध					
अध्ययन	उद्देशक	गाथा संख्या			
1	1	27	7	0	36
	2	32	8	0	24
	3	16	9	0	38
	4	13	10	0	22
2	1	22	11	0	23
	2	32	12	0	27
			13	0	25
			14	0	6 सूत्र
			15	0	
			16	0	

ଦ୍ଵିତୀୟ ଶ୍ରୁତସ୍କନ୍ଧ				
ଅଧ୍ୟୟନ	ଉଦ୍ଦେଶ୍ୟ	ଗାଥା ସଂଖ୍ୟା		
1	0	56	4	1-189
2	0	28	2	190-353
3	0	25	3	354-508
4	0	7	4	509-662
5	0	33	1	1-97
6	0	55	2	98-168
7	0	32 ସୂତ୍ର	3	169-240
3. ସ୍ଥାନାଂଗ ସୂତ୍ର ଅଧ୍ୟୟନ, ଉଦ୍ଦେଶ୍ୟ, ସୂତ୍ରାଂକ ସୂଚକ ତାଲିକା				
ଅଧ୍ୟୟନ	ଉଦ୍ଦେଶ୍ୟ	ସୂତ୍ରାଂକ		
1	0	256	6	132
2	1	1-169	7	155
	2	170-211	8	128
	3	212-386	9	73
	4	387-465	10	177
3	1	1-139		
	2	140-337		
	3	338-418		
	4	419-542		
4. ସମବାୟାଂଗ ସୂତ୍ର ସମବାୟ-ସୂତ୍ରାଂକ ସୂଚକ ତାଲିକା				
	ସମବାୟ	ସୂତ୍ର	ସୂତ୍ରାଂକ	
	1	8	1-8	
	2	6	9-14	
	3	5	15-19	
	4	5	20-24	
	5	6	25-30	

ସମ୍ବାୟ	ସୂତ୍ର	ସୂତ୍ରାଙ୍କ			
6	6	31-36	25	8	166-173
7	7	37-43	26	4	174-177
8	7	44-50	27	5	178-182
9	10	51-60	28	8	183-190
10	10	61-70	29	6	191-195
11	6	71-76	30	8	196-203
12	8	77-84	31	4	204-208
13	7	85-91	32	6	209-214
14	9	92-100	33	4	215-218
15	9	101-109	34	3	219-221
16	6	110-115	35	4	222-225
17	9	116-124	36	4	226-229
18	7	125-133	37	4	230-233
19	7	135-139	38	3	234-236
20	4	140-143	39	2	237-238
21	6	144-149	40	5	239-243
22	5	150-154	41	3	244-246
23	5	155-159	42	8	247-254
24	6	160-165	43	3	255-257
			44	4	258-261

ସମ୍ବାୟ	ସୂତ୍ର	ସୂତ୍ରାଙ୍କ	୬୪	୫	୩୨୪-୩୨୮
୪୫	୫	୨୬୨-୨୬୬	୬୫	୩	୩୨୯-୩୩୧
୪୬	୨	୨୬୭-୨୬୮	୬୬	୩	୩୩୨-୩୩୪
୪୭	୨	୨୬୯-୨୭୦	୬୭	୪	୩୩୫-୩୩୮
୪୮	୩	୨୭୧-୨୭୩	୬୮	୩	୩୩୯-୩୪୧
୪୯	୩	୨୭୪-୨୭୬	୬୯	୩	୩୪୨-୩୪୪
୫୦	୩	୨୭୭-୨୭୯	୭୦	୫	୩୪୫-୩୪୯
୫୧	୪	୨୮୦-୨୮୩	୭୧	୩	୩୫୦-୩୫୨
୫୨	୪	୨୮୪-୨୮୭	୭୨	୫	୩୫୩-୩୫୭
୫୩	୩	୨୮୮-୨୯୦	୭୩	୨	୩୫୮-୩୫୯
୫୪	୨	୨୯୧-୨୯୨	୭୪	୩	୩୬୦-୩୬୨
୫୫	୫	୨୯୩-୨୯୭	୭୫	୧	୩୬୩
୫୬	୨	୨୯୮-୨୯୯	୭୬	୧	୩୬୪
୫୭	୩	୩୦୦-୩୦୨	୭୭	୪	୩୬୫-୩୬୮
୫୮	୩	୩୦୩-୩୦୫	୭୮	୩	୩୬୯-୩୭୨
୫୯	୩	୩୦୬-୩୦୮	୭୯	୩	୩୭୩-୩୭୪
୬୦	୫	୩୦୯-୩୧୩	୮୦	୪	୩୭୫-୩୭୮
୬୧	୩	୩୧୪-୩୧୬	୮୧	୨	୩୭୯-୩୮୦
୬୨	୩	୩୧୭-୩୨୦	୮୨	୩	୩୮୧-୩୮୩
୬୩	୩	୩୨୧-୩୨୩	୮୩	୩	୩୮୪-୩୮୬

समवाय	सूत्र	सूत्रांक	250	2	455-456
84	13	387-399	300	3	457-459
85	3	400-402	350	1	460
86	2	403-404	400	4	461-464
87	3	405-407	450	1	465
88	4	408-411	500	4	466-469
89	3	412-414	600	2	470-471
90	3	415-417	700	3	472-474
91	4	418-421	800	5	475-479
92	3	422-424	900	3	480-482
93	2	425-426	1000	5	483-487
94	2	427-428	1100	2	488-489
95	3	429-431	2000	1	490
96	4	432-435	3000	1	491
97	3	436-438	4000	1	492
98	5	439-443	5000	1	493
99	3	444-446	6000	1	494
100	4	447-450	7000	1	495
150	1	451	8000	1	496
200	3	452-454	9000	1	497

ସମବାୟ	ସୂତ୍ର	ସୂତ୍ରାଙ୍କ			
10000	1	498	2	1-22	
100000	1	499	3	1-15	
200000	1	500	4	1-18	
300000	1	501	5	1-36	
400000	1	502	6	1-27	
500000	1	503	7	1-22	
600000	1	504	8	1-11	
700000	1	505	9	1-28	
800000	1	506	10	1-3	
900000	1	507	1	1-54	
1000000	1	508	2	1	
10000000	1	509	3	1	
100000000	1	510	4	1	
ଦ୍ଵାଦଶାଂଗ ପରିଚୟ	63	511-574	5	1-27	
ବିବିଧ ବିଷୟ	54	575-628	6	1	
ଅ. ଅ. ମହାପୁରୁଷ	48	629-677	7	1-2	
5. ଭଗବତୀ ସୂତ୍ର ଶତକ, ଉଦ୍ଦେଶକ, ସୂତ୍ରାଙ୍କ ସୂଚକ ତାଲିକା			8	1	
ଶତକ	ଉଦ୍ଦେଶକ	ସୂତ୍ରାଙ୍କ	9	1	
1	1	1-13	10	1-22	
			1	1-65	

शतक	उद्देशक	सूत्रांक			
4	2	1-45	7	1-44	
	3	1-17	8	1-28	
	4	1-19	9	1-17	
	5	1-16	10	1	
	6	1-15	1	1-14	
	7	1-7	2	1	
	8	1-6	3	1-29	
	9	1	4	1-25	
	10	1	5	1-43	
			6	1-8	
5	1-4	1-5	7	1-9	
	5-8	1	8	1-36	
	9	1	9	1-13	
	10	1	10	1-15	
	1	1-27	1	1-20	
	2	1-18	2	1-37	
	3	1-5	3	1-24	
	4	1-36	4	1-2	
	5	1-6	5	1-2	
	6	1-20	6	1-37	

शतक	उद्देशक	सूत्रांक			
8	7	1-28		33	1-112
	8	1-9	10	34	1-25
	9	1-24		1	1-19
	10	1-22		2	1-15
	1	1-91		3	1-19
	2	1-162		4	1-14
	3	1-8		5	1-35
	4	1-2		6	1-2
	5	1-15	11	7-34	1
	6	1-29		1	1-45
9	7	1-25		2	1
	8	1-47		3	1
	9	1-129		4	1
	10	1-61		5	1
	1	1-3		6	1
	2	1-5		7	1
	3-30	1-3		8	1
	31	1-44		9	1-33
	32	1-59		10	1-29
				11	1-61

ଶତକ	ଉद्ଦେଶକ	ସୂତ୍ରାଙ୍କ			
12	12	1-24		9	1-27
				10	1
	1	1-31	14	1	1-20
	2	1-22		2	1-17
	3	1-3		3	1-17
	4	1-54		4	1-10
	5	1-37		5	1-22
	6	1-8		6	1-9
	7	1-23		7	1-14
	8	1-7		8	1-28
	9	1-33		9	1-23
	10	1-33	15	0	1-151
13	1	1-30	16	1	1-33
	2	1-31		2	1-19
	3	1		3	1-10
	4	1-70		4	1-7
	5	1		5	1-18
	6	1-37		6	1-36
	7	1-44		7	1
	8	1		8	1-15

शतक	उद्देशक	सूत्रांक			
17	9	1	14	1	
	10	1	15	1	
	11	1-4	16	1	
	12	1	17	1	
	13	1	18	1-103	
	14	1	2	1-3	
	1	1-29	3	1-26	
	2	1-19	4	1-18	
	3	1-22	5	1-15	
	4	1-20	6	1-13	
	5	1	7	1-51	
	6	1-6	8	1-23	
	7	1	9	1-20	
19	8	1-2	10	1-29	
	9	1-2	1	1-3	
	10	1	2	1	
	11	1	3	1-37	
	12	1-4	4	1-22	
	13	1	5	1-7	
			6	1	

शतक	उद्देशक	सूत्रांक				
20	7	1-10	4	1-10	1	
	8	1-45	5	1-10	1	
	9	1-14	6	1-10	1	
	10	1	7	1-10	1	
	1	1-11	8	1-10	1	
	2	1-8	1	1-10	1-3	
	3	1-2	2	1-10	1	
	4	1	3	1-10	1	
	5	1-19	4	1-10	1	
	6	1-24	5	1-10	1	
21	7	1-20	6	1-10	1	
	8	1-17	1	1-10	1-4	
	9	1-9	2	1-10	1	
	10	1-56	3	1-10	1	
	वर्ग	उद्देशक सूत्रांक	4	1-10	1	
	1	1 1-16	5	1-10	1	
	2	2-10	1		1-117	
	3	1-10 1	2		1-27	
	4	1-10 1	3		1-16	
	5	1-10 1	4-11		1	

शतक	वर्ग	उद्देशक	सूत्रांक	शतक	उद्देशक	सूत्रांक
	12		1-55		7	1-255
	13		1-2		8	1-10
	14		1		9	1
	15		1		10	1
	16		1		11	1
	17		1		12	1
	18		1	26	1	1-88
	19		1		2	1-16
	20		1-65		3	1
	21		1-27		4	1
	22		1-9		5	1
	23		1-12	शतक	उद्देशक	सूत्रांक
	24		1-29		6	1
25	1		1-9		7	1
	2		1-26		8	1
	3		1-121		9	1
	4		1-250		10	1
	5		1-48		11	1
	6		1-233	27	1-11	1-2
				28	1	1-10

शतक	उद्देशक	सूत्रांक	शतक	एकेन्द्रिय शतक	उद्देशक	सूत्रांक
29	2	1-4	33	1	1	1-16
	3-11	1			2	1-10
	1	1-6			3	1-2
	2	1-7			4	0
	3-11	1			5	0
30	1	1-125			6	0
	2	1-16			7	0
	3	1			8	0
	4-11	1			9	0
	1	1-14			10	0
31	2	1-9			11	0
	3	1-4		2	1	1-6
	4	1-4			2	1-2
	5	1-4			3	1-2
	6	1-2			4-11	1
32	7-28	1		3	1-11	1
	1	1-6		4	1-11	1
	2-28	1		5	1-11	1
				6	1-11	1
				7	1-11	1

शतक	एकेद्विय शतक	उद्देशक	सूत्रांक	शतक	एके.महायुगम् शतक	उद्देशक	सूत्रांक	शतक	एके.महायुगम् शतक	उद्देशक	सूत्रांक
	8	1-11	1		11	1-9	1		11	1-9	1
	9	1-9	1		12	1-9	1		12	1-9	1
	10	1-9	1		35	1	1-23		35	1	1-23
	11	1-9	1			2	1-4			2	1-4
	12	1-9	1			3	1			3	1
						4	1			4	1
						5	1			5	1
						6	1			6	1
						7	1			7	1
						8	1			8	1
	2	1-11	1			9	1			9	1
	3	1-11	1			10	1			10	1
	4	1-11	1			11	1			11	1
	5	1-11	1			1-11	1-9			1-11	1-9
	6	1-11	1-6			1-11	1			1-11	1
	7	1-11	1			1-11	1			1-11	1
	8	1-9	1			1-11	1			1-11	1
	9	1-9	1			1-11	1			1-11	1
	10	1-9	1			1-11	1			1-11	1
						7	1			1-11	1
शतक	एकेद्वियश्रेणी शतक	उद्देशक	सूत्रांक								
34	1	1	1-33								
		2	1-5								
		3	1-3								
		4-11	1								
	2	1-11	1								
	3	1-11	1								
	4	1-11	1								
	5	1-11	1								
	6	1-11	1-6								
	7	1-11	1								
	8	1-9	1								
	9	1-9	1								
	10	1-9	1								

शतक	एके.महायुगम शतक उद्देशक	सूत्रांक	शतक	बेइ.महायुगम शतक उद्देशक	सूत्रांक
	8 1-11	1	40	1 1-11	1
	9-12 1-11	1		2 1-11	1
शतक	बेइ.महायुगम शतक उद्देशक	सूत्रांक		3 1-11	1
	1-231			4 1-11	1
36	1 1-11	1-4		5 1-11	1
	2 1-11	1-9		6 1-11	1
	3 1-11	1		7 1-11	1
	4 1-11	1		8 1-11	1
	5 1-11	1		9-14 1-11	1-3
	6 1-11	1		प्रत्येक के	
	7 1-11	1		15 1-11	1-4
	8 1-11	1		16 1-11	1
	9-12 1-11	1		17-21 1-11	1-4
				प्रत्येक के	
37	त्रीन्द्रिय महायुगम शतक	उद्देशक	41 राशियुगम	1 1-11	1-11
38	चउरिन्द्रिय महायुगम शतक	1-124		2 1-11	1-3
39	असंज्ञीपंचेन्द्रिय महायुगम शतक	1-124		3 1-11	1-3
40	संज्ञीपंचेन्द्रिय महायुगम शतक	1-124		4 1-11	1-3
				5-8 1-11	1-6

शतक	उद्देशक	सूत्रांक	अध्ययन	सूत्र संख्या
41	राशियुग्म	9-28 1-5	7	1-32
		29-56 1-8	8	1-196
		57-84 1-9	9	1-68
		85-112 1-4	10	1-7
		113-140 1	11	1-14
		141-168 1	12	1-30
		169-196 1-2	13	1-35
	उपसंहार	1-5	14	1-59
			15	1-18
			16	1-231
			17	1-31
			18	1-44
			19	1-33
6. ज्ञातार्थमकथा सूत्र अध्ययन, उद्देशक, सूत्रांक				
सूचक तालिका				
श्रुतस्कंध-1				
अध्ययन	सूत्र संख्या			
1	1-218			
2	1-54			
3	1-26			
4	1-14			
5	1-72			
6	1-8			
श्रुतस्कंध-2				
		वर्ग	अध्ययन	सूत्रांक
		1	1-5	1-43
		2	1-5	44-50
		3	1-54	51-59
		4	1-54	60-64
		5	1-32	65-68

वर्ग	अध्ययन	सूत्रांक	2	1-8	1
6	1-32	69	3	1-13	1-34
7	1-4	70-72	4	1-10	1
8	1-4	73-75	5	1-10	1-10
9	1-8	76-77	6	1-16	1-20
10	1-8	78-79	7	1-13	1
7. उपासकदशांग सूत्र अध्ययन, सूत्रांक सूचक तालिका					
अध्ययन	सूत्रांक		8	1-10	1-15
1	1-90		9. अनुत्तरोपपातिकदशांग सूत्र वर्ग, अध्ययन, उद्देशक,		
2	91-123		सूत्रांक सूचक तालिका		
3	124-149		श्रुतस्कंध-1		
4	150-156		वर्ग	अध्ययन	सूत्र संख्या
5	157-164		1	1-10	1-5
6	165-179		2	1-13	1
7	180-230		3	1-10	1-22
8	231-268		10. प्रश्नव्याकरण सूत्र श्रुतस्कंध, अध्ययन, सूत्रांक		
9	269-272		सूचक तालिका		
10	273-277		श्रुतस्कंध	अध्ययन	सूत्रांक
8. अंतकृद्दशांग सूत्र वर्ग, अध्ययन, सूत्रांक सूचक तालिका					
वर्ग	अध्ययन	सूत्र संख्या	1	1	1-43
1	1-10	1-10	1	2	44-59

श्रुतस्कंध	अध्ययन	सूत्रांक	1	10	1-10
1	3	60-79	2	1	1-21
1	4	80-92	2	2	1-2
1	5	93-102	2	3	1-2
2	1	103-119	2	4	1-2
2	2	120-128	2	5	1-2
2	3	129-140	2	6	1-2
2	4	141-153	2	7	1-2
2	5	154-171	2	8	1-2
11. विपाकश्रुतांग सूत्र श्रुतस्कंध, अध्ययन, सूत्रांक					
		सूचक तालिका	2	10	1-2
12. औपपातिक उपांग सूत्र सूत्रांक सूचक तालिका					
श्रुतस्कंध	अध्ययन	सूत्र संख्या	अध्ययन	सूत्रांक	
1	1	1-32	1	1-189	
1	2	1-23			
1	3	1-32			13. राजप्रश्नीय सूत्र सूत्रांक सूचक तालिका
1	4	1-14	अध्ययन	सूत्रांक	
1	5	1-12	1	1-288	
1	6	1-12			14. जीवाभिगम सूत्र प्रतिपत्ति उद्देशक सूचक तालिका
1	7	1-18	प्रतिपत्ति	उद्देशक	सूत्र संख्या
1	8	1-15	1		1-43
1	9	1-29			

प्रतिप्रति	उद्देशक	सूत्र संख्या	त्रिविध सर्वजीव	237-243
2		44-64	चतुर्विध सर्वजीव	244-247
3	नैरयिक 1	65-80	पंचविध सर्वजीव	248-249
3	2	81-94	षड्विध सर्वजीव	250-251
3	3	95	सप्तविध सर्वजीव	252-253
3	तिर्यच 1	96-99	अष्टविध सर्वजीव	254-255
3	2	100-104	नवविध सर्वजीव	256-257
3	मनुष्य 1	105-113	दसविध सर्वजीव	258-259
3	देव 1	114-123		
3	द्वीप-समुद्र	124-190		
3	ज्योतिष्क	191-197		
3	वैमानिक देव 1	198-199		
3	वैमानिक देव 2	200-206		
4		207-209		
5		210-224		
6		225		
7		226-227		
8		228		
9		229-230		
		231-236		
	द्विविध सर्वजीव			

15. प्रज्ञापना सूत्र पद सूत्रांक सूचक तालिका

सूत्र संख्या	पदनाम	सूत्र संख्या
1-147	1 प्रज्ञापना	1-147
148-211	2 स्थान	148-211
212-334	3 अल्पबहुत्व	212-334
335-437	4 स्थिति	335-437
438-558	5 विशेष (पर्याय)	438-558
559-692	6 व्युत्क्रांति	559-692
693-724	7 उच्छ्वास	693-724
725-737	8 संज्ञा	725-737
738-773	9 योनि	738-773
774-829	10 चरमाचरम	774-829

पदनाम	उद्देशक	सूत्र संख्या	24 कर्मबंधक	1754-1768
11 भाषा		830-900	25 कर्मवेदक	1769-1774
12 शरीर		901-924	26 कर्म वेदबंधक	1775-1786
13 परिणाम		925-957	27 कर्म वेदवेदक	1787-1792
14 कषाय		958-971	28 आहार	1793-1864
15 इन्द्रिय	1	972-1005	2	1865-1907
	2	1006-1067	29 उपयोग	1908-1935
16 प्रयोग		1068-1022	30 पश्यता	1936-1964
17 लेश्या	1	1123-1155	31 संज्ञा	1965-1973
	2	1156-1198	33 अवाधि	1981-2031
	3	1199-1217	34 प्रविचारणा	2032-2053
	4	1218-1249	35 वेदना	2054-2084
	5	1250-1255	36 समुद्घात	2085-2176
	6	1256-1258		
18 कायस्थिति		1259-1398	वक्षस्कार	16. जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति सूत्र वक्षस्कार सूत्रांक सूचक तालिका
19 सम्यक्त्व		1399-1405	1	सूत्रांक
20 अंतक्रिया		1406-1473	2	1-23
21 अवागाहना सं.		1474-1566	3	24-50
22 क्रिया		1567-1663	4	51-88
23 कर्मप्रकृति		1664-1753	5	89-144
				145-156

वक्षस्कार	सूत्रांक	7	0	28
6	157-158	8		29
7	159-213	9	0	30-31
17-18. चन्द्र-सूर्य प्रज्ञप्ति सूत्र प्राभृत सूत्रांक सूचक तालिका				
प्राभृत	प्राभृत-प्राभृत	सूत्र संख्या		
1	1	1-11		35
	2	12-13		36
	3	14		37-38
	4	15		39
	5	16-17		40
	6	18		41
	7	19		42
	8	20		43
2	1	21	11	44-45
	2	22	12	46
	3	23	13	47
3	0	24	14	48
4	0	25	15	49
5	0	26	16	50
6	0	27	17	51

प्राभृत	प्राभृत-प्राभृत	सूत्र संख्या	2	35
	18	52	3-10	36
	19	53	2	1-3
	20	54-58	2	4
	21	59	3-10	5
	22	60-70	1	1-7
11	0	71	2	8-10
12	0	72-78	3	11-27
13	0	79-81	4	28-55
14	0	82	5	56-59
15	0	83-86	6	60-62
16	0	87	7-10	63
17	0	88	1	1-10
18	0	89-99	2-10	11
19	0	100-101	1	1-20
20	0	102-107	2-10	21

19-23. निर्यावलिकादि पांच आगम के वर्ग, अध्ययन,

24. दशवैकालिक सूत्र अध्ययन, उद्देशक, सूत्रांक

वर्ग	अध्ययन	सूत्रांक	उद्देशक	सूत्र संख्या
1	1	1-34	1	1-5

सूत्रांक सूचक तालिका

सूचक तालिका

अध्ययन	उद्देशक	सूत्र संख्या	परीषह	46 गाथा	1-3 सूत्र
2	0	1-11	चतुरंगीय	20	
3	0	1-15	प्रमादाप्रमाद	13	
4		1-23 सूत्र	अकाम मरण	32	
		24-51 गाथा	क्षुल्लक निर्ग्रथीय	18	
5	1	1-131	औरध्रीय	30	
	2	1-50	कापिलिक	20	
6		1-68	नमि प्रव्रज्या	62	
7	0	1-57	द्रुम-पत्रक	37	
8	0	1-63	बहुश्रुत पूज्य	32	
9	1	1-17	हरिकेशीय	47	
	2	1-23	चित्त-संभूतीय	35	
	3	1-15	इषुकारीय	53	
	4	1-14	सभिक्षु	16	
10	0	1-21	ब्रह्मचर्य समाधि	17	1-12 सूत्र
चूलिका 1	0	1-18	पापश्रमणीय	21	
2	0	1-16	संयतीय	54	
			मृगापुत्रीय	99	
			महा निर्ग्रथीय	60	
			समुद्रपालीय	24	
25. उत्तराध्ययन सूत्र अध्ययन, सूत्रांक, गाथांक					
सूचक तालिका					
अध्ययन		गाथा संख्या			
1	विनयश्रुत	48			

27. अनुयोगद्वार द्वार, सूत्रांक सूचक तालिका

द्वार सूत्र संख्या

1	1-29
2	30-51
3	52-75
4	76-92
5	93-179
6	180-520
7	521-525
8	526
9	527-557
10	558-579
11	580-592
12	593-600
13	601-605
14	606

28. दशाश्रुत स्कंध सूत्र दशा सूत्र संख्या सूचक तालिका

दशा सूत्र संख्या

प्रथमा दशा 21

अध्ययन गाथा संख्या

22	रहनेमीय	51
23	केशी-गौतमीय	89
24	समिति	27
25	यज्ञीय	45
26	समाचारी	53
27	खलुंकीय	17
28	मोक्षमार्ग गति	36
29	सम्यक्त्व-पराक्रम	74 सूत्र
30	तप मार्ग	37
31	चरण विधि	21
32	प्रमाद स्थान	111
33	कर्म-प्रकृति	25
34	लेश्या वर्णन	61
35	अणगार	21
36	जीवाजीव विभक्ति	268

26. नंदीसूत्र सूत्र, सूत्रांक गाथांक सूचक तालिका

अध्ययन गाथा

1	1-54
	1-115 सूत्र

30. व्यवहार सूत्र उद्देशक, सूत्र संख्या सूचक तालिका

उद्देशक	सूत्र संख्या
1	33
2	29
3	29
4	32
5	21
6	11
7	26
8	17
9	46
10	37

29. बृहत्कल्प सूत्र अधिकार, उद्देशक, सूत्र संख्या

सूचक तालिका

उद्देशक	अधिकार	सूत्र संख्या
1	24	48
2	7	30
3	16	34
4	16	36
5	11	50
6	6	20

31. निशीथ सूत्र उद्देशक, प्रायश्चित्त, सूत्र संख्या

सूचक तालिका

उद्देशक	प्रायश्चित्त	सूत्र संख्या
1	गुरू मासिक	58
2	लघु मासिक	57
3	लघु मासिक	80
4	लघु मासिक	128
5	लघु मासिक	52
6	गुरू चौमासी	78

परिशिष्ट नं. 2

जैनागम निर्देशिका के प्रथम संस्करण में यत्र-तत्र कुछ

आगमिक जानकारीयां दी गई हैं वे यहां संकलित हैं

आगमों का अध्ययन काल सूचक तालिका

3	वर्ष के दीक्षित को आचार प्रकल्प
4	वर्ष के दीक्षित को सूत्र कृतांग
5	वर्ष के दीक्षित को दशाश्रुतस्कंध, बृहत्कल्प, व्यवहार
8	वर्ष के दीक्षित को स्थानांग, समवायांग
10	वर्ष के दीक्षित को भगवती सूत्र
11	वर्ष के दीक्षित को चुल्लिका विमानादि पाँच अध्ययन
12	वर्ष के दीक्षित को अरुणोपपात आदि पाँच अध्ययन
13	वर्ष के दीक्षित को उत्थान श्रुत आदि चार अध्ययन
14	वर्ष के दीक्षित को आशिविष भावना
15	वर्ष के दीक्षित को दृष्टिविष भावना
16	वर्ष के दीक्षित को चारण भावना
17	वर्ष के दीक्षित को महा स्वप्न भावना
18	वर्ष के दीक्षित को तेजो निसर्ग
19	वर्ष के दीक्षित को दृष्टिवाद
20	वर्ष के दीक्षित को शेष सर्व आगम

स्थानांग सूत्र के आधार पर

सूत्र संख्या

उद्देशक	प्रायश्चित्त	सूत्र संख्या
7	गुरू चौमासी	92
8	गुरू चौमासी	18
9	गुरू चौमासी	27
10	गुरू चौमासी	41
11	गुरू चौमासी	91
12	लघु चौमासी	44
13	लघु चौमासी	78
14	लघु चौमासी	41
15	लघु चौमासी	154
16	लघु चौमासी	50
17	लघु चौमासी	155
18	लघु चौमासी	73
19	लघु चौमासी	35
20	अरोपणा	51

32. आवश्यक सूत्र अध्ययन सूत्र संख्या सूचक तालिका

उद्देशक	सूत्र संख्या	उद्देशक	सूत्र संख्या
1	1-10	4	13-30
2	11	5	31-32
3	12	6	33

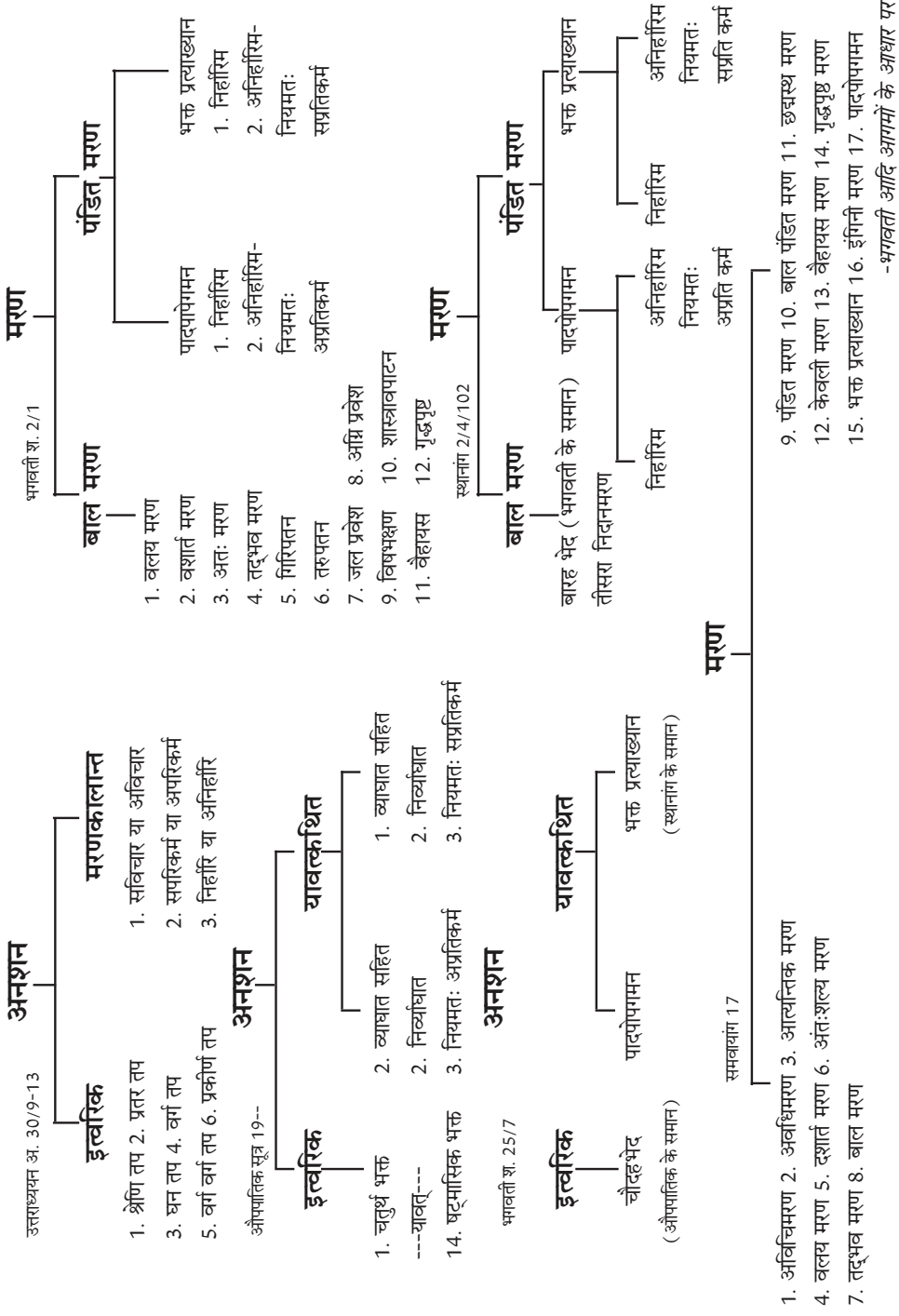
गणधर, नाम, ग्राम, नक्षत्र, पिता, माता, गोत्र आदि सूचक तालिका

गणधर	ग्राम	नक्षत्र	पिता	माता	गोत्र	गृहवास	छद्मस्थ केवली	सर्वायु	मोक्षगमन
						वर्ष	वर्ष	वर्ष	
1	इन्द्रभूति	गुब्बर ग्राम	ज्येष्ठा	वसुभूति पृथ्वी	गौतम	50	30	12	92
2	अग्निभूति	गुब्बर ग्राम	कृत्तिका	वसुभूति पृथ्वी	गौतम	46	12	16	74
3	वायुभूति	गुब्बर ग्राम	स्वाति	वसुभूति पृथ्वी	गौतम	42	10	18	70
4	व्यक्त	कोल्लाक-सन्निवेश	श्रवण	धन मित्र वारुणी	भारद्वाज	50	12	18	80
5	सुधर्मा	कोल्लाक-सन्निवेश	हस्तोत्तरा	धम्मिल भद्रिला	अग्निवैश्यायन	50	42	8	100
6	मंडितपुत्र	मोराक-सन्निवेश	मघा	धनदेव विजया	वशिष्ठ	53	14	16	83
7	मौर्यपुत्र	मोराक-सन्निवेश	रोहिणी	मौर्य विजया	काश्यप	65	14	16	95
8	अंकपित	मिथिला	उत्तराषाढा	देव जयंती	गौतम	48	9	21	78
9	अचलभ्राता	कौशला	मृगशिरा	वसु नंदा	हारित	46	12	14	72
10	मैतार्य	वत्सभूमि तुङ्गिक	अश्विनी	दत्त वरुणदेवा	कौडिन्य	36	10	16	62
11	प्रभास	राजगृह	पुष्य	बल अतिभद्रा	कौडिन्य	16	8	16	40

समवायांग सूत्र के आधार पर

नव बलदेव, वासुदेव, प्रतिवासुदेव, परिचयाङ्कन तालिका				
बलदेव-पूर्व भव	वासुदेव-पूर्व भव	पूर्वभव धर्माचार्य	निदानभूमि	निदान-हेतु
वर्तमान बलदेव				
1 विश्वनंदी	विश्वभूति	संभूत	मथुरा	गाय
2 सुबन्धु	पर्वतक	सुभद्र	कनकवस्तु	द्युत
3 सागरदत्त	धनदत्त	सुदर्शन	श्रावस्ती	संग्राम
4 अशोकललित	समुद्रदत्त	श्रेयांस	पोतनपुर	स्त्री
5 वराह	ऋषिपाल	कृष्ण	राजगृह	रंग-पराजय
6 धर्मसेन	प्रियमित्र	गंगदत्त	काकंदी	भार्यानुराग
7 अपराजित	ललितमित्र	आशाकर	कैशांबी	गोष्ठी
8 राजललित	पुनर्वसु	समुद्र	मिथिला	परऋद्धि
9 -	गंगदत्त	हुमसेन	हस्तिनापुर	माता
वासुदेव	बलदेव-वासुदेव पिता	बलदेव-माता	वासुदेव-माता	प्रतिवासुदेव
त्रिपृष्ठ	प्रजापति	भद्रा	मृगावती	अश्वग्रीव
द्विपृष्ठ	ब्रह्मा	सुभद्रा	उमा	तारक
स्वयंभू	सोम	सुप्रभा	पृथ्वी	मेरक
पुरुषोत्तम	रूद्र	सुदर्शना	सीता	मधुकैटभ
पुरुषसिंह	शिव	विजय	अमृता	निशुंभ
पुरुषपुंडरिक	महाशिव	वैजयंती	लक्ष्मीवति	बलि
दत्त	अग्निशिख	जयंती	शेषमति	प्रह्लाद
नारायण	दशरथ	अपराजिता	कैकेयी	रावण
कृष्ण	वसुदेव	रोहिणी	देवकी	जरासंध
				समवायांग सूत्र के आधार पर

अनशन तप व बालमरण-पंडित मरण संबंधी आगम आधारित तालिका



मुक्तावली आदि तेरह प्रकार के तपों की तालिकाएं

1. **मुक्तावली-तप**
 1 से 15 तक तपश्चर्या, मध्य में एक-एक उपवास
 एक उपवास, 16 की तपश्चर्या, एक उपवास
 15 से एक तक तपश्चर्या
 प्रत्येक के मध्य में एक-एक उपवास
 एक परिपाटी के कुल- 11 मास 15 दिन
 तपश्चर्या के 6 मास 16 दिन। पारणा के 59 दिन।
 चार परिपाटी के कुल- 3 वर्ष 10 मास
 तपश्चर्या के 9 वर्ष, 2 मास 4 दिन, पारणे के 236 दिन।
2. **रत्नावली-तप**
 1-2-3 उपवास, 8 बेलें, 1 से 16 तपश्चर्या, 34 बेलें
 16 से 1 तक तपश्चर्या, 8 बेलें, उपवास 3-2-1 ।
 एक परिपाटी के 472 दिन।
 तपश्चर्या 384 दिन, पारणा 88 दिन।
 चार परिपाटी के 5 वर्ष, दो मास, 28 दिन।
 तपश्चर्या 4 वर्ष, 3 माह, 6 दिन, पारणा 352 दिन।
3. **कनकावली-तप**
 1-2-3 उपवास, 8 तेलें, 1 से 16 तक तपश्चर्या
- प्रत्येक के मध्य में एक-एक उपवास
 34 तेलें, 16 से एक-एक तपश्चर्या
 प्रत्येक के मध्य में एक-एक उपवास
 8 तेलें, 3-2-1 उपवास
 एक परिपाटी- 1 वर्ष, 5 मास, 92 दिन
 तपश्चर्या 1 वर्ष, 2 मास, 14 दिन, पारणे के 88 दिन
 चार परिपाटी- 5 वर्ष, 9 मास, 26 दिन
 तपश्चर्या 4 वर्ष, 9 मास, 26 दिन, पारणे के 352 दिन।
4. **सप्त सप्तमिका-तप**
 प्रथम सप्ताह में एक-एक दात-यावत्-
 सप्तम सप्ताह में सात-सात दात।
 तपश्चर्या के दिन 49, दात संख्या 196
5. **अष्ट अष्टमिका-तप**
 प्रथम अष्टाह में एक-एक दात-यावत्-
 अष्टम-अष्टाह में 8-8 दात
 तपश्चर्या के 64 दिन, दात संख्या 288
6. **नवम-नवमिका-तप**
 प्रथम नवाह में एक-एक दात आहार-यावत्

- नवम्-नवाह्न में नौ-नौ दात आहार
तपश्चर्या के 81 दिन, दात संख्या 405
- 7. दशम-दशमिका-तप**
प्रथम दशाह्न में एक-एक दात आहार-यावत्-
दशम-दशाह्न में दस-दस दात आहार,
तपश्चर्या के 100 दिन, दात संख्या 550
- 8. लघुसिंह निष्क्रीडित-तप**
एक से 9 तक तपश्चर्या, मध्य में 8, 9 से एक-एक तपश्चर्या
एक परिपाटी- 6 मास 7 दिन, तपश्चर्या 5 मास 4 दिन
पारणे के 33 दिन, चार परिपाटी- दो वर्ष 28 दिन
तपश्चर्या के 1 वर्ष, 8 मास 16 दिन, पारणे के 132 दिन।
- 9. महासिंह निष्क्रीडित-तप**
एक से 16 तक तपश्चर्या,
प्रत्येक के मध्य में पूर्व तप की पुनरावृत्ति।
16 से एक तक तपश्चर्या,
प्रत्येक के मध्य में पूर्व तप की पुनरावृत्ति।
एक परिपाटी- 1 वर्ष, 6 मास, 18 दिन
तपश्चर्या के 1 वर्ष, 4 मास, 17 दिन, पारणे के 61 दिन
चार परिपाटी- 6 वर्ष, 2 मास, 12 दिन
तपश्चर्या के 5 वर्ष, 6 मास, 8 दिन, पारणे के 244 दिन।
- 10. लघु सर्वतोभद्र-तप**
एक परिपाटी- 100 दिन।
तपश्चर्या के 75 दिन, पारणे के 25 दिन,
चारपाटी 400 दिन।
तपश्चर्या के 300 दिन, पारणे के 100 दिन।
- 11. महा सर्वतोभद्र-तप**
एक परिपाटी 245 दिन।
तपश्चर्या के 196 दिन, पारणे के 49 दिन।
चार परिपाटी 2 वर्ष, 8 मास, 20 दिन।
तपश्चर्या के 2 वर्ष 4 दिन, पारणे के 196 दिन।
- 12. भद्रोत्तर-तप**
एक परिपाटी 200 दिन।
तपश्चर्या के 175 दिन, पारणे के 25 दिन,
चार परिपाटी 2 वर्ष, 2 मास, 20 दिन।
तपश्चर्या के 1 वर्ष, 21 मास, 10 दिन, पारणे के 100 दिन।
- 13. आयम्बिल वर्धमान-तप**
1 से 100 तक आयम्बिल, मध्य में एक-एक उपवास
तपश्चर्या काल 14 वर्ष, 3 मास, 20 दिन
-अंतकृद्दशांग-सूत्र के आधार पर

श्रमणोपासक के ग्राम आदि की जानकारी युक्त तालिका

ग्राम नाम	श्रमणोपासक	भार्या	गोधन	धन	उपसर्ग	विमान
1. वाणिज्य ग्राम	आनन्द	शिवानन्दा	4 व्रज	12 क्रोड़	देव का	अरूण
2. चम्पानगरी	कामदेव	भद्रा	6 व्रज	18 क्रोड़	देव का	अरूणाभ
3. वाराणसी	चुलनीपिता	श्यामा	8 व्रज	24 क्रोड़	देव का	अरूणप्रभ
4. वाराणसी	सुरदेव	धन्या	6 व्रज	18 क्रोड़	देव का	अरूणकांत
5. आलीभिका	चुल्लशतक	बहुला	6 व्रज	18 क्रोड़	देव का	अरूणश्रेष्ठ
6. काम्पिल्यपुर	कुण्डकोलिक	पुष्या	6 व्रज	18 क्रोड़	देव का	अरूणध्वज
7. पोलासपुर	सहलपुत्र	अग्निमित्रा	1 व्रज	3 क्रोड़	देव का	अरूणभूत
8. राजगृह	महाशतक	रेवती आदि	8 व्रज	24 क्रोड़	स्त्री का	अरूणावतंसक
9. श्रावस्ती	नन्दिनीपिता	अश्विनी	4 व्रज	12 क्रोड़	स्त्री का	अरूणगव
10. श्रावस्ती	सालिहीपिता	फाल्गुनी	4 व्रज	12 क्रोड़	स्त्री का	अरूणकील

-उपासकदशांग सूत्र के आधार पर

श्रमणोपासक पंचाचार अतिचार तालिका

ज्ञानाचार के अतिचार	दर्शनाचार के 13 अतिचार
संक्षेप में 8 अतिचार	8 दर्शनाचारों का अनाचरण
विस्तार से 14 अतिचार	5 दर्शनातिचारों का आचरण
चरित्राचार के 125 अतिचार	तपाचार के 70 अतिचार
60 द्वादश व्रतातिचार	15 बाह्य और आभ्यन्तर तपों का अनाचरण
15 कर्मादान	5 संलेखना के अतिचार
32 सामायिक के दोष	21 कायोत्सर्ग के दोष
18 पौषध के दोष	32 वन्दना के दोष

वीर्याचार के तीन अतिचार

मन, वचन, काया से सशक्त होते हुए

ज्ञान, दर्शन, चास्त्रि और

तपाचार का आचरण न करना

-उपासकदशांग व आवश्यक सूत्र के आधार पर

हिंसक आदि के उपपातों की तालिका

1. हिंसक का उपपात-	नरक में।
2. असंयत का उपपात-	व्यंतर देवों में।
3. मुक्ति की कामना से आत्मघात करने वालों का उपपात-	व्यंतर देवों में।
4. भद्र प्रकृति वाले मनुष्यों का उपपात-	व्यंतर देवों में।
5. विधवा या विरहिणी स्त्रियों का उपपात-	व्यंतर देवों में।
6. मिताहार करने वालों का उपपात-	व्यंतर देवों में।
7. वानप्रस्थ तापसों का उपपात-	उत्कृष्ट ज्योतिषी देवों में।
8. कांदर्पिक श्रमणों का उपपात-	उत्कृष्ट सौधर्मकल्प में।
9. परिव्राजकों का उपपात-	उत्कृष्ट ब्रह्मकल्प में।
10. प्रत्यनीकों (अविनयीजनों) का उपपात-	किल्बिषिक देवों में।
11. देशविरत संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यचों का उपपात-	उत्कृष्ट सहस्रारकल्प में।
12. आजीविक मतानुयायियों का उपपात-	उत्कृष्ट अच्युतकल्प में।
13. अभिमानी (आत्मोत्कर्षक) श्रमणों का उपपात-	उत्कृष्ट अच्युतकल्प में।
14. निन्हवों का उपपात-	उत्कृष्ट ग्रैवेयक देवों में।
15. अल्पारंभी गृहस्थों का उपपात-	उत्कृष्ट अच्युत कल्प में।
16. अनारंभी श्रमण का उपपात-	सर्वार्थसिद्धविमान या सिद्ध गति में।
17. सर्वकाम विरत श्रमण का उपपात-	सिद्ध गति में।

-औपपातिक सूत्र के आधार पर

प्रायश्चित्त संबंधी विशेष विवरण की तालिका

उद्देशक-1

प्रथम उद्देशक में निर्दिष्ट दोषों का परवश या अनुपयोग से सेवन करने पर प्रायश्चित्त जघन्य 4, मध्यम 15, उत्कृष्ट 30, निर्विकृतिक (निवी तप)

प्रथम उद्देशक में निर्दिष्ट दोषों का आतुरता या उपयोग पूर्वक सेवन करने पर प्रायश्चित्त जघन्य 4, मध्यम 15, उत्कृष्ट 30 आचाम्ल (आर्यबिल तप)

प्रथम उद्देशक में निर्दिष्ट दोषों का मोहोदय से सेवन करने पर प्रायश्चित्त जघन्य 4, मध्यम 15, उत्कृष्ट 30 उपवास।

उद्देशक-2

द्वितीय उद्देशक में निर्दिष्ट दोषों का परवश या अनुपयोग से सेवन करने पर प्रायश्चित्त जघन्य 4, मध्यम 15, उत्कृष्ट 27 एकाशन।

द्वितीय उद्देशक में निर्दिष्ट दोषों का आतुरता या उपयोग पूर्वक सेवन करने पर प्रायश्चित्त जघन्य 4, मध्यम 15, उत्कृष्ट 27 आचाम्ल (आर्यबिल तप)

द्वितीय उद्देशक में निर्दिष्ट दोषों का मोहोदय से सेवन करने पर प्रायश्चित्त जघन्य 4, मध्यम 15, उत्कृष्ट 28 उपवास।

उद्देशक-6

छठे उद्देशक में निर्दिष्ट दोषों का परवश या अनुपयोग से सेवन करने पर प्रायश्चित्त जघन्य 4 उपवास, मध्यम 4 षष्ठ भक्त (बेले-तप)

उत्कृष्ट 120 उपवास या चार मास का छेद।

छठे उद्देशक में निर्दिष्ट दोषों का आतुरता या उपयोग पूर्वक सेवन करने पर प्रायश्चित्त जघन्य 4 षष्ठ भक्त या चार दिन का छेद।

मध्यम 4 अष्टम भक्त या 6 दिन का छेद।

उत्कृष्ट 120 उपवास या चार मास का छेद।

छठे उद्देशक में निर्दिष्ट दोषों का मोहोदय से सेवन करने पर प्रायश्चित्त जघन्य 4 अष्टम भक्त, पारणा में आर्यबिल या 60 दिन का छेद।

मध्यम 15 अष्टम भक्त, पारणा में आर्यबिल या 60 दिन का छेद।

उत्कृष्ट 120 उपवास, पारणा में आर्यबिल या पुनः महाव्रतारोपण।

उद्देशक-12

बारहवें उद्देशक में निर्दिष्ट दोषों का परवश या अनुपयोग से सेवन करने पर प्रायश्चित्त जघन्य 4 आर्यबिल, मध्यम 60 निवी तप उत्कृष्ट 160 उपवास।

बारहवें उद्देशक में निर्दिष्ट दोषों का आतुरता या उपयोग पूर्वक सेवन करने पर प्रायश्चित्त जघन्य 4 उपवास, मध्यम 6 षष्ठ भक्त,

उत्कृष्ट 108 उपवास, पारणा में विगय त्याग।

बारहवें उद्देशक में निर्दिष्ट दोषों का मोहोदय से सेवन करने पर प्रायश्चित्त-

जघन्य 4 षष्ठ भक्त, मध्यम 4 अष्टम भक्त, उत्कृष्ट 108 उपवास, पारणा में आर्यबिल।

क. द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ और पंचम उद्देशक में निर्दिष्ट दोषों का प्रायश्चित्त समान है।

ख. षष्ठ से एकादशम उद्देशक पर्यन्त 6 उद्देशकों में निर्दिष्ट दोषों का प्रायश्चित्त समान है।

ग. बारहवें से उन्नीसवें उद्देशक पर्यन्त 8 उद्देशकों में निर्दिष्ट दोषों का प्रायश्चित्त समान है।

-निर्णीत सूत्र के आधार पर

३४७

विषय-निर्देशन में प्रयुक्त आगमों आदि सहायक ग्रन्थों की सूची

1. आचारांग सूत्र	आगमोदय समिति सूरत	31. अभिधान राजेन्द्रकोष	आचार्य श्री राजेन्द्रश्रीश्वरजी म.
2. सूत्रकृतांग सूत्र	जैनाचार्य श्री जवाहरलालजी म. संपादित	32. अर्धमागधी कोष	शतावधानी श्री रतनचंदजी म.
3. स्थानांग सूत्र	मुनि श्री वल्लभविजयजी संपादित	33. पांडुयसहस्रहणव	प्राकृत ग्रन्थ परिषद् वाराणसी
4. समवायांग सूत्र	जैन धर्म प्रसारक सभा भावनगर	34-65 सम्पूर्ण आगम बत्तीसी- युवाचार्य श्री मधुकर्ममुनिजी म. संपादित	
5. भगवती सूत्र	पं. बेचरदासजी दोशी संपादित	प्रकाशक- आगम	प्रकाशन समिति व्यावर (राज.)
6. ज्ञाताधर्म कथा सूत्र	आगमोदय समिति सूरत	66. आवारो (सानुवाद)	मुनि श्री नथमलजी म. संपादित
7. उपासकदशा सूत्र	आगमोदय समिति सूरत	67. सूगङ्गो (सानुवाद)	जैन विश्व भारती लाडनू
8. अन्तकृतदशा सूत्र	आगमोदय समिति सूरत	68. ठाण (सानुवाद)	जैन विश्व भारती लाडनू
9. अनुत्तरोपपातिक सूत्र	आगमोदय समिति सूरत	69. समवाओ (सानुवाद)	जैन विश्व भारती लाडनू
10. प्रसन्नव्याकरण सूत्र	आगमोदय समिति सूरत	70. भगवई (सानुवाद)	जैन विश्व भारती लाडनू
11. विपाक सूत्र	आगमोदय समिति सूरत	71. पणहवागण (सानुवाद)	जैन विश्व भारती लाडनू
12. औपपातिक सूत्र	आगमोदय समिति सूरत	72. दसवेअलियं (सानुवाद)	जैन विश्व भारती लाडनू
13. राजप्रश्नीय सूत्र	आगमोदय समिति सूरत	73. उत्तरङ्गवण (सानुवाद)	जैन विश्व भारती लाडनू
14. जीवाभिगम सूत्र	आगमोदय समिति सूरत	74. नंदी (सानुवाद)	जैन विश्व भारती लाडनू
15. प्रज्ञापना सूत्र	पं. भगवानदास हर्षचन्द्र संपादित	75. अणुओगह्वरो (सानुवाद)	जैन विश्व भारती लाडनू
16. जम्बूद्वीप प्रज्ञपति सूत्र	आगमोदय समिति सूरत	76. निसीहज्जवण (सानुवाद)	जैन विश्व भारती लाडनू
17. चन्द्रप्रज्ञपति-सूर्यप्रज्ञपति सूत्र	आगमोदय समिति सूरत	77. कल्प सूत्र (हिन्दी व्याख्या)	आचार्य श्री देवेन्द्रमुनिजी म.
18. निर्यावलिवाद सूत्र	आगमोदय समिति सूरत	78. पिण्डनिर्गुक्ति (सानुवाद)	जैन विश्व भारती लाडनू
19. दर्शनैकालिक सूत्र	जैनाचार्य श्री आत्मारामजी म. संपादित	79. मरण समाधि प्रकीर्णक (गुजराती)	श्री अरुणा मुकुन्दराय लठ्ठा अहमदाबाद
20. उत्तराध्ययन सूत्र	जैनाचार्य श्री आत्मारामजी म. संपादित	80. पड़णओ भाग 1-2	महावीर विद्यालय मुंबई
21. नन्दी सूत्र	पूज्य श्री हस्तीमलजी म. संशोधित	81. तंदुल वेयालिय पड़णव	डॉ. सुभाष कोठारी उदयपुर
22. अनुयोग द्वार सूत्र	जैनाचार्य श्री आत्मारामजी म. संपादित	82. देविदंथवो	डॉ. सुभाष कोठारी
23. व्यवहार सूत्र	पूज्य श्री अमोलकऋषिजी म. संपादित	83. संथारा पड़णव	डॉ. सुरेश सिसोदिया उदयपुर
24. बृहत्कल्प सूत्र	डॉ. जीवराज घेलाभाई दोशी संपादित	84. गच्छाचार पड़णव	डॉ. सुरेश सिसोदिया उदयपुर
25. दशा श्रुतस्कंध सूत्र	जैनाचार्य श्री आत्मारामजी म. संपादित	85. गणिविज्ञा पड़णव	डॉ. सुरेश सिसोदिया उदयपुर
26. निशीथ सूत्र	मुनि श्री जिनविजयजी म. संपादित	45 आगम (मूल, हिन्दी, गुजराती)	मुनि श्री दीपरत्नसागरजी म.
27. जीतकल्प सूत्र	मुनि श्री पुण्यविजयजी म. संपादित	32 आगम (सानुवाद)	पूज्य आचार्य श्री घासीलालजी म.
28. दस प्रकीर्णक	आगमोदय समिति सूरत	32 आगम (सानुवाद)	पूज्य आचार्य श्री अमोलकऋषिजी म.
29. पिण्डनिर्गुक्ति	गणिवर्य श्री हंसराजजी म. संपादित	32 आगम (गुजराती)	राजकोट (सौगष्ट) के
30. प्रवचन किरणाली	आचार्य श्री विजयपद्मजी म. लिखित	जैननागम (हिन्दी, इंग्लिश, संवित्र)	प्रवतक श्री अमरमुनिजी म.

उपाध्याय प्रवर अनुयोग प्रवर्तक पं. रत्न मुनि श्री कन्हैयालालजी म. 'कमल' द्वारा सम्पादित चार अनुयोग

- धर्मकथानुयोग - जैनागमों में वर्णित तीर्थंकर, चक्रवर्ती, बलदेव, वासुदेव, श्रमण, श्रमणियां, श्रावक, श्राविका, निहिव व प्रकीर्णक की कथाओं का दो भागों में छह खण्डों का सुन्दर संकलन **पृष्ठ-2000 मूल्य-1000/- रु.**
- गणितानुयोग - जैनागमों में वर्णित भूगोल-खगोल, लोक, अलोक, अधोलोक, मध्यलोक, ऊर्ध्वलोक, नरक, क्षेत्र, पर्वत, नदी, समुद्र, काल, चन्द्र, सूर्य, तारा आदि का विस्तृत वर्णन दो भागों में **पृष्ठ-1500 मूल्य-1000/- रु.**
- चरणानुयोग - जैनागमों में वर्णित ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चरित्राचार, तपाचार, वीर्याचार इन पांच मुख्य विभागों में साधु-साध्वियों का आचार-विचार, प्रायश्चित्त, संघ व्यवस्था आदि का सुन्दर संकलन दो भागों में **पृष्ठ-1500 मूल्य-900/- रु.**
- द्रव्यानुयोग - जैनागमों में वर्णित षड्द्रव्य, अस्तिकाय, पर्याय, परिणाम, जीव, अजीव, जीवाजीव, प्रथमाप्रथम, संज्ञा, योनि, संज्ञा, स्थिति, आहार, शरीर, विकुर्वण, इन्द्रिय, श्वासोच्छ्वास, भाषा, योग, प्रयोग, उपयोग, पश्यता, दृष्टि, ज्ञान, संयत, लेस्या, क्रिया, आश्रव, वेद, कषाय, कर्म, वेदना, गति, नरक गति, तिर्यच गति, मनुष्य गति, देवगति, व्युत्क्रांति, गर्भ, युग्मा, गम्मा, समुद्घात, चरमाचरम, पुद्गल, अजीव द्रव्य आदि तात्विक विषयों का 46 विभागों में बहुत ही सुन्दर संकलन तीन भागों में **पृष्ठ-2500 मूल्य-1500/- रु.**

अनुयोग आगम ग्रन्थों का कम्प्यूटर है जिस प्रकार कम्प्यूटर में- 1. मोनीटर, 2. की बोर्ड, 3. प्रिंटर, 4. सी.पी.यू. होता है वैसे ही हजारों वर्ष पूर्व बिना यांत्रिक सहायता के इस कम्प्यूटरईस अनुयोग की व्यवस्था का निर्माण हुआ था। कम्प्यूटर की तरह इसके भी चार विभाग हैं- 1. गणितानुयोग, 2. चरणानुयोग, 3. द्रव्यानुयोग, 4. धर्म कथानुयोग। इसमें 1. मोनीटर-गणितानुयोग, 2. प्रिंटर की बोर्ड-चरणानुयोग विधि निषेध परक, 3. सी.पी.यू.-द्रव्यानुयोग सम्पूर्ण विश्व की व्यवस्था को दर्पण की तरह प्रकट करता है। 4. माउस-धर्मकथानुयोग धर्म कथा के द्वारा विषय की स्पष्टता के कारण ये अनुयोग अत्यंत उपयोगी हैं। एक और मूल पाठ व ठीक सामने शब्दानुलक्षी हिन्दी अनुवाद। आचार्य श्री देवेन्द्रमुनिजी, डॉ. सागरमलजी, डॉ. धर्मचन्द्रजी, पं. हीरालालजी की विशद भूमिका, अनेक परिशिष्ट युक्त।

- ★ मूल एवं गुजराती अनुवाद सहित बड़े आकार के लगभग 7500 पेज जो ग्यारह भागों में संकलित है। सेट का मूल्य 6000/- रु. है। ज्ञान प्रचारार्थ सिर्फ 1100/- रु. में ही उपलब्ध है।
- ★ उपाध्याय श्री जी ने अपने संयमी जीवन के 50 से भी अधिक वर्षों में 32 आगमों में यत्र-तत्र बिखरे हुए द्रव्य संबंधी, गणित संबंधी, आचरण संबंधी एवं विभिन्न धर्मकथाओं को चार अनुयोगों में व्यवस्थित रूप से संकलित करने का अभूतपूर्व भगीरथ पुरुषार्थ किया है, जिससे एक विषय की आगमिक जानकारी एक ही जगह प्राप्त हो जाती है। प्रवचनकार, जिज्ञासुओं एवं शोधकर्ताओं के लिए अत्यंत उपयोगी है। अतः आपकी लायब्रेरी हेतु मंगवावें, जिससे चतुर्विध संघ में ज्ञान की अभिवृद्धि हो।

विशेष जानकारी के लिए सम्पर्क करें- महावीर 'स्फुरस्' मो. 7976339010 —::प्राप्ति स्थल::—

आगम अनुयोग ट्रस्ट	श्री वर्धमान महावीर केन्द्र	श्री अ. भा. श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस
28.29 स्थानकवासी सोसायटी, नाराणपुरा रेल्वे क्रोसिंग के पास	सब्जी मण्डी के पास, देलवाड़ा रोड, आबूपर्वत-307501	12 जैन भवन, शहीद भगतसिंह मार्ग, नई दिल्ली-110001
नाराणपुरा, अहमदाबाद-13 (गुज.) फोन नं. : 079 27551426	जि. सिरौही (राज.) फोन नं. 02974 235566, 6378921378	फोन : 23363729, 23365420
		राजेन्द्र मेहता मो. 9414227512



संपादक



उपप्रवर्तक श्री विनयमुनिजी म. 'वागीश'



जीवन परिचय

नाम	- उपप्रवर्तक श्री विनयमुनिजी म. सा. 'वागीश'
जन्म व जन्म भूमि	- मिंगसर सुदी 10, वि. सं. 2008, दि. 8.12. 1951 शनिवार, जयपुर के पास, टोंक (राज.)
माता-पिता	- श्रीमति कल्याणीबाई, श्री बागमलजी पाटनी (दिगम्बर सरावगी जैन)
धर्म माता-पिता	- परम श्रद्धालु श्रीमती चन्द्रादेवी श्री गंभीरमलजी बंब, टोंक
वैराग्य प्रदातृ	- महासतीजी श्री पानकंवरजी, श्री रतनकंवरजी
वैराग्य बीजारेपण	- वैशाख वदी 2, वि. सं. 2018 हरमाड़ा पूज्य गुरुदेव श्री फतेहचंदजी म. सा. द्वारा
दीक्षा व दीक्षा भूमि	- माघ सुदी 15 रविवार, वि. सं. 2025, दि. 2. 2.1969, पुष्कर के पास, पीह-मारवाड़, जि. नागौर (राज.)
दीक्षा माता-मिता	- श्रीमती चूकीदेवी श्री पूनमचंदजी बोहरा (मोरियाणावाले) पीह
दीक्षा मंत्र प्रदाता	- श्रमण सूर्य मरूधर केसरी पूज्य प्रवर्तक श्री मिश्रीमलजी म. सा.
दीक्षा गुरु	- पूज्य श्री फतेहचंदजी म. सा. के सुशिष्य उपाध्याय श्री कन्हैयालालजी म. सा. 'कमल'
पद	- सेवाभावी, आगम पिपासु, उपप्रवर्तक, परम पुरुषार्थी, संयम सुमेरू, महाश्रमण, आगम ज्ञाता, कमल कुल दिवाकर
भाषा	- हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, अंग्रेजी, गुजराती, राजस्थानी आदि
विहार क्षेत्र	- राजस्थान, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, दिल्ली, गुजरात, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, तेलंगाना, आन्ध्रप्रदेश, कर्नाटक, तमिलनाडू, पांडिचेरी
सहयोगी मुनि	- मधुर व्याख्यान उपप्रवर्तक श्री गौतममुनिजी म. 'गुणाकर'
गुरु भ्राता	- तपोकेसरी श्री संजयमुनिजी म. 'सरल'
शिष्य	- 1. साधकरत्न श्री फूलचंदजी म. सा. 'आत्मारथी', 2. तत्त्वचिंतक श्री सागरमुनिजी म. सा. 'शुभम्'
विशिष्टता	- परम सेवाभावी, करुणा सागर, आगमों में रूचि, अनुयोग लेखन के प्रमुख संयोजक, कमल सौरभ, कमल वाणी, बड़ी साधुवंदना कथा संग्रह के संपादक

पुरुषाकार चक्रम्

द्वादशांगी पुरुष

4 मूल - दशवैकालिक 1 उत्तराध्ययन 2
नंदी - 3 अनुयोगद्वार 4

4 छेद - निशित्थ 1 व्यवहार 2
बृहत्कल्प 3 दशाश्रुतस्कंध 4

आवश्यक सूत्र

पुष्पचूलिया दक्षिणनेत्र
कप्पिया, कप्पवडंसिया दक्षिण कर्ण
प्रश्नव्याकरण मुख
अणुत्तरोववाई कंठ
सूर्य प्रज्ञप्ति दक्षिण स्कंध
जंबुद्वीप प्रज्ञप्ति दक्षिण भुजा

वन्हिदशा वाम नेत्र
पुफिया वाम कर्ण

निरयावलिका
वाम स्कंध

चंद्र प्रज्ञप्ति
वामभुजा

जीवभिगम
दक्षिण कलाई

प्रज्ञापना
वाम

भगवती जी
दक्षिण जंघा

ज्ञाताधर्म कथांग
वामजंघा

ठाणांगजी
दक्षिण घुटना

समवायांगजी
वाम घुटना

औपपातिक
दक्षिण पैर
की अंगुलियाँ

दक्षिण (दायाँ) Right

राजप्रश्नीय
वाम पैर
की अंगुलियाँ

वाम (बायाँ) Left

